॥※॥ मुंबई श्री जैनपाठशाला ॥※॥

॥ ※ ॥ आचाररत्नाकर ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ प्रथम प्रकाश ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ सूचीपत्र ॥ ※ ॥

॥※॥ संख्या	॥ ※ ॥ प्रकरण ॥ ※ ॥	॥※॥ पत्रांक ॥※॥
॥ १ ॥	आचारदीपिका मगलाचरण	१
॥ २ ॥	आचारकी प्रमाणता	३
॥ ३ ॥	साधुपदका स्वरूप	६
॥ ४ ॥	श्रावक धर्मका स्वरूप	७
॥ ५ ॥	वृद्ध श्रावकाधिकार	७
॥ ६ ॥	लघु श्रावकाधिकार	९
॥ ७ ॥	सवेग पक्षी श्रावकाधिकार	११
॥ ८ ॥	देवतत्वका स्वरूप	१२
॥ ९ ॥	गुरुतत्वका स्वरूप ..	१३
॥ १० ॥	धर्मतत्वका स्वरूप	१४
॥ ११ ॥	गृहस्थ धर्मके १६ संस्कार नाममात्र: ..	१९
॥ १२ ॥	साधुधर्मके १६ संस्कार नाममात्र:	१९
॥ १३ ॥	साधु (और) जैन पन्डित, दोनुके योग्य १० संस्कार नाम:	१९
॥ १४ ॥	गृहस्थोंको १६ संस्कार करानेयोग्य गुरवाधिकार	२२
॥ १५ ॥	कुलगुरु कैसे आचारवान् चाहिये	२३
॥ १६ ॥	अनेकांत तत्वदीपक हितोपदेश	२३
॥ १७ ॥	कर्मोकी ८ मूल प्रकृति १५८ उत्तर प्रकृति सर्व नाम, स्वरूप	२३
॥ १८ ॥	श्री आदीश्वर नमस्कार रूप अंत्य मंगल	२६

॥ ※ ॥ इति आचाररत्नाकर दीपिका ॥ ※ ॥

॥*॥ अथ आचाररत्नाकर १६ संस्कार विधि ॥*॥

॥ १९ ॥ (प्रथम) गर्भाधान, पंचममास संस्कार ३६
॥ २० ॥ (दूसरा) पुंसवन, ८ मा मास संस्कार ३८
॥ २१ ॥ (तीसरा) जन्मकी वखतका संस्कार . . ४०
॥ २२ ॥ (चौथा) सूर्य, चंद्र, दर्शन संस्कार विधिः ४१
॥ २३ ॥ (पाचमा) क्षीराशन संस्कार विधिः ४३
॥ २४ ॥ (छठा) षष्टी संस्कार विधिः . ४४
॥ २५ ॥ (सातमा) १० में दिन शुचिकर्म संस्कार विधिः .. ४६
॥ २६ ॥ (आठमा) नामकरण संस्कार विधि. . .. ४७
॥ २७ ॥ (नवमा) अन्न प्राशन संस्कार विधिः ... ४९
॥ २८ ॥ (दशमा) कर्णवेध संस्कार विधि ५०
॥ २९ ॥ (११ मा) चूडाकर्म, मस्तक मुंडन संस्कार विधिः ५१
॥ ३० ॥ (१२ मा) उपनयन संस्कार विधि. . ५१
॥ ३१ ॥ जिनोपवीत बनानेकाविकार ५३
॥ ३२ ॥ जिनोपवीत धारन करनेंकी विधिः ५४
॥ ३३ ॥ व्रतादेश करनेंकी विधिः . ५७
॥ ३४ ॥ ब्राह्मण वर्ण, व्रतादेशाधिकार. . ५९
॥ ३५ ॥ क्षत्रिय वर्ण, व्रतादेश अधिकार. ५९
॥ ३६ ॥ वैश्यवर्ण व्रतादेश अधिकारः ६०
॥ ३७ ॥ चारों वर्ण समान आदेश अधिकारः . ६१
॥ ३८ ॥ व्रत विसर्ग विधिः . ६२
॥ ३९ ॥ शुद्रवर्णके उत्तरासन धारन विधि. .. ६४
॥ ४० ॥ रत्नसोनइत्यादि दान देनेंकी विधिः . ६५
॥ ४१ ॥ आचारभ्रष्ट ब्राह्मणकों, शुद्ध ब्राह्मण करनेकी विधिः ६७
॥ ४२ ॥ (१३ मा) विद्याध्ययनारम्भ संस्कार विधिः . . ६९
॥ ४३ ॥ ओंके, तथा, ककाको संपूर्ण अर्थ . ७१
॥ ४४ ॥ (१४ मा) विवाह संस्कार विधिः ७२
॥ ४५ ॥ (१५ मा) व्रतारोप संस्कार विधिः ९२

|| ४६ || (इसमें) प्रथम सम्यक्त उच्चरावण विधिः .. ९४
|| ४७ || १२ व्रत दण्डक उच्चरावण विधिः ९५
|| ४८ || सम्यक्त मूल १२ व्रत, टीप लिखानेकी विधिः ९८
|| ४९ || मुनिः कपूरचंदजीकृत १२ व्रतपूजा १०८
|| ५० || १२ व्रतपूजा विधि.... . १२१
|| ५१ || श्राद्ध दिनकृत्य १२२
|| ५२ || नित्य मन्त्रासहित जिन पूजन विधिः . १२४
|| ५३ || जिन मंदर जाणेंकी, १० त्रिक साचवनकी विधिः १२८
|| ५४ || नित्य भोजन करनेकी विधिः . . १३२
|| ५५ || श्रावकके २१ गुण, नामाधिकारः.. . .. १३४
|| ५६ || रात्री भोजन निषेधाधिकारः १३७
|| ५७ || सदैव धर्मकृत्य विधिः .. . १३९
|| ५८ || उपद्रव शान्त्यर्थः, शान्ति पूजा विधिः १४४
|| ५९ || १० दिग्पाल, ९ ग्रह स्थापन, पूजन विधिः . . १४६
|| ६० || १० दिग्पाल आव्हान मंत्रः . १५०
|| ६१ || १० दिग्पाल विशर्जन मन्त्रः .. १५३
|| ६२ || पाठक श्री बालचन्द्रजीकृत पंचकल्याणक पूजाः १५५
|| ६३ || पांच कल्याणककी विस्तारसें पूजन विधिः १६६
|| ६४ || पांच कल्याणककी संखेपसें पूजन विधिः १६८
|| ६५ || नवपद मण्डल, स्थापन पूजा विधिः . .. १६९
|| ६६ || संघमाला रोपण विधिः . . १७९
|| ६७ || उपधान तप, नित्य कर्त्तव्यताः १८३
|| ६८ || उपधान तप, धारन पालन विधि. .. १८४
|| ६९ || साधुकों आचार्यपद देनेंकी संक्षिप्त विधिः ... २०४
|| ७० || जैन ब्राह्मणकों, आचार्यपददेनेंकी विधिः . २०५
|| ७१ || जैन ब्राह्मणकों उपाध्यायपददेनेंकी विधिः २०६
|| ७२ || स्थानपति, कर्माधिकारीपद देनेंकी विधिः . . . २०८
|| ७३ || त्रिकाल जैन गायत्री मन्त्रासहित २०८

|| ७४ || कुपममल नाम, स्थापन पूजन विधिः ... २१०
|| ७५ || वीश थानक ममल, पूजन स्थापन विधि· २१५
|| ७६ || अष्टापद गिरि स्थापन पूजन विधिः · २२०
||७७|| मदरकी नीव भरानेंकी विधिः २२१
|| ७८ || पद्मावती देवी आराधन पूजन विधि· २२६
|| ७९ || श्री पार्श्व प्रभुको, ८ भय निवारण छंद · २२४
|| ८० || श्री स्थंभणा पार्श्वजिन वृद्ध स्तवन · २२७
|| ८१ || १६ मा अंत्य संस्कार विधि १९०
|| ८२ || अणशण करावण विधिः १९३
|| ८३ || पाठक श्री समें सुंदरजीकृत, श्राद्ध आराधना १९६
|| ८४ || उपदेश माला, मंत्राम्नाय· २३०
|| ८५ || सर्व मंत्र वीजाक्षर नाम माला २३१
|| ८६ || स्वकुलप्रकाशन कलश · २३२

॥※॥ इति आचाररत्नाकर प्रथम प्रकाशः ॥※॥

॥ श्री ॥

॥※॥ जैनपाठशाला ॥※॥

॥※॥ मोदन भापण ॥※॥

॥ ※ ॥ अहो धर्मरागी, गुणग्राही, विद्यावृद्धी करनेवाले, सर्वे जैन भाइयो, वर्त्तमान कालमें, इंग्रेज सरकारकी शोभनीक राज्य नीतिसें (और) आपेके प्रचारसें, सपूर्ण अन्य मतवाले विद्यापात्र होते जाते हैं (तथा) अपना २ धर्म आचारकी स्थितिकों सुधारते जाते हैं (और) अपना प्राय जैन भाइयोंकी तरफ देखते हैं (तो) थोमे वरषोंसें दिन २, विद्याहीन, आचारहीन, होते जाते हैं (इससें) जैन धर्मकी अपेक्षायें, वर्त्तमानमें अस्तकाल चल रहा है। विचारके देखो (कि) थोमा वरषा पहले, कैसा

जैनका उदय था। कैसे२ पंमित (और) कैसे२ धर्मवान्, धनवान्, लोक होते थे (और) वत्तमान कालमें देखो, तो बज्रतसे विद्याहीन, आचारहीन धनहीन, परवारहीन, होते जाते हैं (इसका) मुख्य कारण यही हे (कि) अपना धर्म आचारकों न जाणना (और) अपना धर्म आचारकों गेड के, अन्य धर्मका आचार करना ॥ अपना धर्म वालेकों उत्तेजन दैना गेमके एकेककी निंदा गर्हा करना ॥ आपसमें द्वेष वधाना (यही सर्व) धर्म, धन, विद्या आचारकी हानीके कारण हे ॥५॥

॥ ५ ॥ अहो देवानुप्रियो, जरा दिलमें विचारना चाहिये (कि) सपूर्ण मिथ्यामतवाले तो, अपना धर्म आचारकों गेमके, कोईन्नी जैन धर्म का आचारको न करते हैं (और) अपनें जैन धर्मवाले, ऐसे पतित होगए हैं (कि) जन्मसें, मरण पर्यंत, कुल आचार जैनका गेमके, अन्य मिथ्या त्वी ब्राह्मणोंके कह्ने मुजब, आचार करनें लग गए हे ॥ जन्म, विवाहादि संसारी मगलीक कार्मोंमें, अपना देव, गुरुकी, पूजा मानता गेमके, अन्य मतके देव, गुरुकी, पूजना ध्यावना करते हैं। अपना कुल गुरुकों, दान पुन्य ज्नोजन देना, पाप जानके वध करते हैं (और) अन्य मतके कुलगुरुवों कों, दान पुन्य ज्नोजनादिक पुन्य जाणके देते हे (इत्यादि) कारणोंसें बज्रत प्रकार, जैन धर्मकी हानी होती जाती है (देखो) प्रथमतो हीन कालके सबब, शुद्ध अनेकातिक साधु धर्म पालनेंवाले बज्रत थोमे मालुम होते हैं (इससें) बज्रत गिकाणें शुद्ध साधुवोंकी योगवाई नहि मिलती हे (और) जो कोई वखत कोई साधु कहाइ आते हैं (तो) थोमा दिन रह सक्ते हैं (और) साधुवोंसें निकेवल श्रावकके व्रत (वा) साधुके व्रत ले सक्ते हैं (परतु) और जन्मसें मरणपर्यंतका संपूर्ण अपनें धर्ममुजब, आचार करानेवाले, सिखानेंवालेतो, कुलगुरु होते हे (जवसें)अप ना धर्म आचारकों गेमके, अन्य मती ब्राह्मणोंकेपास, जन्मसे मरणपर्यंतका सपूर्ण आचार करनें लगगए (तवसें) कुलगुरु, महात्मा, जैन ब्राह्मणा दिक, बज्रतसे अपना धर्मसें भ्रष्ट, विद्याहीन, आचारहीन, प्रायें नास्तिवत् होते जाते हैं (और) रातदिन मिथ्यात्वी ब्राह्मणोंकी सोवत रहनेंसें, प्रायें जैन धर्मसें अज्ञ (और) मिथ्या धर्मनीतिमें प्रवीण होते जाते हैं

|| ७४ || ऋषभमल नाम, स्थापन पूजन विधिः .. २१८
|| ७५ || वीश थानक मन्त्र, पूजन स्थापन विधिः . २१५
|| ७६ || अष्टापद गिरि स्थापन पूजन विधिः . . २२०
||७७|| मदरकी नीव भरानेकी विधिः २२१
|| ७८ || पद्मावती देवी आराधन पूजन विधिः . २२६
|| ७९ || श्री पार्श्व प्रभुको, ८ भय निवारण छंद . २२४
|| ८० || श्री स्थम्भण पार्श्वजिन वृद्ध स्तवन २२७
|| ८१ || १६ मा अत्य सस्कार विधि १९०
|| ८२ || अणशण करावण विधिः १९३
|| ८३ || पाठक श्री समे सुदरजीकृत, श्राद्ध आराधना . १९६
|| ८४ || उपदेश माला, मत्राम्नाय २३०
|| ८५ || सर्व मत्र वीजाक्षर नाम माला २३१
|| ८६ || स्वकृतप्रकाशन कलश . २३२

॥※॥ इति आचाररत्नाकर प्रथम प्रकाशः ॥※॥

|| श्री ||

॥※॥ जैनपाठशाला ॥※॥

॥※॥ मोहन भापण ॥※॥

|| ※ || अहो धर्मरागी, गुणग्राही, विद्यावृद्धी करनेवाले, सर्वे जैन भाइयो, वर्त्तमान कालमें, इग्रेज सरकारकी शोभनीक राज्य नीतिसें (और) छापेके प्रचारसें, सपूर्ण अन्य मतवाले विद्यापात्र होते जाते हैं (तथा) अपना २ धर्म आचारकी स्थितिकों सुधारते जाते हे (और) अपना प्राय जैन भाइयोंकी तरफ देखते हैं (तो) थोमे वरषोंसें दिन २, विद्याही न, आचारहीन, होते जाते हैं (इससें) जैन धर्मकी अपेक्षायें, वत्तमानमें अस्तकाल चल रहा है। विचारके देखो (कि) थोमा वरषा पहले, कैसा

जैनका उदय था। कैसे२ पंमित (और) कैसे २ धर्मवान्, धनवान्, लोक होते थे (और) वर्त्तमान कालमें देखो, तो बहुतसे विद्याहीन, आचारहीन धनहीन, परवारहीन, होते जाते हैं (इसका) मुरय कारण यही हे (कि) अपना धर्म आचारकों न जाणना (और) अपना धर्म आचारकों छोड के, अन्य धर्मका आचार करना ॥ अपना धर्म वालेकों उत्तेजन दैना छोमके एकेककी निंदा गर्हा करना ॥ आपसमें द्वेष वधाना (यही सर्व) धर्म, धन, विद्या आचारकी हानीके कारण है ॥※॥

॥ ※ ॥ अहो देवानुप्रियो, जरा दिलमें विचारना चाहिये (कि) सपूर्ण मिथ्यामतवाले तो, अपना धर्म आचारकों छोमके, कोईभी जैन धर्म का आचारकों न करते हैं (और) अपनें जैन धर्मवाले, ऐसे पतित होगए हैं (कि) जन्मसें, मरण पर्यंत, कुल आचार जैनका छोमके, अन्य मिथ्या त्वी ब्राह्मणोंके कहे मुजव, आचार करनें लग गए हैं ॥ जन्म, विवाहादि ससारी मंगलीक कार्मोंमें, अपना देव, गुरुकी, पूजा मानता छोमके, अन्य मतके देव, गुरुकी, पूजना ध्यावना करते हैं। अपना कुल गुरुकों, दान पुन्य भोजन देना, पाप जानके वध करते हैं (और) अन्य मतके कुलगुरुवों कों, दान पुन्य भोजनादिक पुन्य जाणके देते हैं (इत्यादि) कारणोंसें वहुत प्रकारें, जैन धर्मकी हानी होती जाती है (देखो) प्रथमतो हीन कालके सवव, शुद्ध अनेकातिक साधु धर्म पालनेंवाले वहुत थोमे मालुम होते हैं (इससें) वहुत ठिकाणें शुद्ध साधुवोंकी योगवाई नहि मिलती हे (और) जो कोई वखत कोई साधु कदाइ आते हैं (तो) थोमा दिन रह सक्के हे (और) साधुवोंसें निकेवल श्रावकके व्रत (वा) साधुके व्रत ले सक्के हैं (परतु) और जन्मसें मरणपर्यंतका संपूर्ण अपनें धर्ममुजव, आचार करानेंवाले, सिखानेंवालेतो, कुलगुरु होते हैं (जवसें)अप ना धर्म आचारकों छोमके, अन्य मती ब्राह्मणोंकेपास, जन्मसें मरणपर्यंतका सपूर्ण आचार करनें लगगए (तवसें) कुलगुरु, महात्मा, जैन ब्राह्मणा दिक, वहुतसे अपना धर्मसें भ्रष्ट, विद्याहीन, आचारहीन, प्रायें नास्तिवत् होते जाते हैं (और) रातदिन मिथ्यात्वी ब्राह्मणोंकी सोवत रहनेंसें, प्राये जैन धर्मसें अज्ञ (और) मिथ्या धर्मनीतिमें प्रवीण होते जाते हैं

(तथा) कोई जैन आचार (कोई) अन्य मत आचार करनेसें, नहि जैन, नहि विष्णु, आस्थाविगर एककेई फलकों प्राप्त नहि होते हें (क्यु कि) जैनसिद्धांतोंका सार यहीहै, और असल जैनीकी श्रद्धा ऐसी होतीहै (कि) अपना जैनधर्मी देव, गुरु, धर्मकोंही वंदन पूजन करना (परंतु) अन्यमती कुदेव, कुगुरु, कुधर्मको, वंदन पूजन न करना (फेर) दिलकी आस्थाविगर जन्म विवाहादि संसारी मंगलीक कार्मोमें, अपना धर्ममु जब आचार छोडके, अन्यधर्ममुजब आचार करना (कैसें) शुभ फल दायक हो सकेगा ॥ (जैसे) दो देशके दो राजाहै । एक धर्मराजा । एक अधमराजा ॥ (जिसमें) जो प्रजा धर्मराजाको मानते हें (सो) जहांतक धर्मराजाकी आग्यामुजब संपूर्ण काम करते रहेंगे (तहां तक) संपूर्ण शुभ फलकों प्राप्त होवेंगे (इसी हेतुसें) वर्त्तमानमें प्राय बहुतसें जैन लोक, धर्मसें, धनसें, परिवारसें, विद्यासें, आचारसें, हीन होते जाते हें (इस उपरांत) अन्य मतवाले मिथ्यात्वी लोक, बहुत जैनधर्मकी हांसी करते है (और) अनेक तरहके विकल्प करते हें (कोई कहते है) जैनधर्मवाले शूद्रके समान होते हे। इनके कोइ धर्मसंबंधी आचार नही हें। कहते तो है (कि) हम जैन हें (और) आचार कोई जैनका करतेहै, कोइ अन्यमतका करतेहै(इससें) एककी गिणतीमें नहि आते हें (और) जन्मसें मरणपर्यंत आचारका जैनमें कोइ ग्रथभी मालुम न पडता हें (इत्यादि) अनेक तरहके विकल्प करनें लगगए हें (इससें) अहो सर्व जैन बांधवो ॥ आप सर्व गच्छ मतका, कदाग्रह छोडके, एकेकसें द्वेष, निंदा छोडके, एक्यतापणो धारण करो (तथा) कोई प्रकार जैनधर्मकी उन्नति करो ॥ बडे बडे सर्व ठिकाणें, बडी २ सभा भेली करके, बडे बडे विद्वज्जनोंकी संमत्ति लेके, पक्षपात रहित, आपसमें विचार करके, कितनेक प्रकारके ऐसे नियम बांधो (जिससें) जैन लोकोंकी स्थितिका सुधारा होवें ॥ (और) अन्यमत का आचार छोडके, अपना धर्ममुजब आचार करे (और) जैनविद्याकी वृद्धी होवें (इस कालमें) जैनविद्याकी बहुतसी हानी हो रही है । सर्व मतवाले, अपना धर्मकी विद्या प्रथम सीखते हें (पीछे) सर्व कला सीखते है (और) आजके जैनलोक, अपना लडकाको, प्रथमसेंही अन्यमतके

गुरुवोंकेपासे, अन्यधर्म आश्रित कला सिखातेहै । जिससें दोपैसा कमाकर लावे.(परतु) अनंतभवोंमें प्राप्त होना दुर्लभ, ऐसा मनुष्यपणा पायके, आत्माकों अक्षयसुख मिले, ऐसा जैनधर्मकों नहि सिखाते हे (ओर) अपना धर्म जाणेविगर, प्रथमसेंही अन्यधर्मकी कला सिखानेसें, बहुतसे जैन धर्माचारसें भ्रष्ट हो जाते है (ओर) हाथमें चिंतामण रत्न आया हुवा गमायके, फेर टलट्टीकेमुजब, नरक निगोदादिक गतिमें, अनतभव परिभ्रमण करते हें (इससें) अहो जैन भाइयो, अनेक कामोंमे, हजारो रुपिया वे अर्थ लगा देते हो । सो ओनके विद्यावृध्धीके काममें लगावो (ओर) जैन आचारके, नीतिके, जोतिषके, जो जैनशास्त्र विछेद होते जाते हैं (उसको) लिखायके प्रशिध्द करो (क्यु कि) बहुतसे जैन आचार, नीतिके ग्रथ, विछेद होगए है (इससें) जो ग्रथ मिलसक्ते है उनोको तो प्रशिध्द करो । नहिंतो यहभी विछेद हो जायगा (ओर) जो कोई सर्वोपयोगी ग्रथ अपनी उमेदसें महनत करके प्रशिध्द करे (वा) प्रशिध्द किया चाहे, उसकों संघ मिलके मदत देवो (ओर) साधु, श्रावक, गंध्रप, भोजक, महात्मा, इनमें जो कोई, विद्या पढने, पढानेंमें उमेदवान् होय, अच्छा बुध्धीवान् होय । उनको वनें जहातक सारी मदत देवो (जो कोई) धर्म उन्नतिका काम करे, उसकों संघ मिलके मान देवो । मदत करो । (इत्यादि प्रकारसें) कोईप्रकार जैन लोकोंकी स्थितिका सुधारा करो ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अहो देवानुप्रियो, में कुछ ऐसा पण्डित नहि हु, ओर संघकी मदत विगर, विशेष खरच करके, पाठशाला पुस्तक प्रगट करनेंमें शक्तिमान् नहि हु (तथापि) में मेरी अल्पमति, अल्प शक्ति प्रमाणें धर्मका तत्व जो ज्ञान, जिसकों उद्दीपन करनेवाले, कितनेक साधु श्रावकोंका, दिलमें आश्रय विचारके, आज पाच वरष आसरे हुवा ग्यान उद्दीपन करनेंको, तत्वदीपक मोहन मण्डली, स्थापन करी है ॥ इसका मुख्य नियम यही है (कि) जैन पाठशाला स्थापन करके विद्याकी वृध्धी करना (ओर) सर्वोपयोगी जैन पुस्तक छपायके प्रगट करना । (इससें) कलकत्ता, मुवईमें, [illegible] शाला स्थापन करी है ॥ ए पाठशालामें ऐसा नियम रक्खा [illegible] तवेर, साके, जो अपना [illegible]

शीखनेकों आवे, उनकों कुछभी मासिक पगार लिये विगर, शिखाते रहना (और) देश परदेशके, सर्व साधु श्रावकोंके वारेमास उपयोगमे आवे (ऐसा) सपूर्ण धमकृत्योंका सग्रह करके ज्ञानवृद्धीके अर्थ रत्नसागर प्रथम भाग छपायके प्रसिद्ध किया है । (और) अभी रत्नसागरका दूसरा भागमें, आचाररत्नाकर नामे ग्रथका, दो प्रकाश हिंदीभाषामें छपाय के प्रसिद्ध किया है ॥ इसका प्रथमप्रकाशमें जैनलोकका जन्मसें मरण पर्यंत कुल आचारविधिका सग्रह किया है ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (और दूसरा प्रकाशमें) जैनइतिहास छपाया है (इस वास्ते) सर्व जैनके यह दोनु पुस्तक उपयोगी है । जिसकों जैनधर्मका सपूर्ण आचार (तथा) सपूर्ण जिन धमका स्वरूप, सखेपमें जाणनेंकी इछा होय (तथा) खरतर गछ तपगछादिकका, वारे मास उपियोगमें आवे, ऐसा धर्मकृत्य करना, करावना होय, शीखना, शिखावना, होय (तो) अवश्य, रत्नसागर प्रथम भाग (तथा) रत्नसागर दूसरा भागकी एकेक पुस्तक लेके अपनें पास रखो, जो धर्मरागी (तथा) सर्व विद्या जाण नेंकी इछावाले सुज्ञ पुरुष एकेक पुस्तक लेके (तथा) साधू, वा साधर्मी भाईयोंकों ज्ञानवृद्धीनिमित्त देनें खातें, पाच पचीस पुस्तक लेकर पाठशालाकों मदत देवेंगे (तो) मेरा परिश्रम किया सफल होगा (और) उनकेभी एक पुस्तकसें, पचीस पुस्तकका काम सरैगा ॥ वारे मास उपगार होता रहेगा॥

॥ ※ ॥ (अव) सवसें वीनती करता हु (कि) आचार दिनकर, विधि प्रपादि, आचार ग्रथोंसें, कितनेक आचारका हिंदी भाषामें सग्रह करके, मैंनें यह, आचाररत्नाकर ग्रथ वनाया है (इसमें) जो कोई आगम विरुद्ध मदमतिपणासें (वा) छपेके दोषसें, (वा) भाषाके दोषसें अोछे, अधको, हीन अक्षर, लिखनेंमें आयो होय (तो) सर्व सघके सन्मुख, मैं मिछामि दुकड देता हु॥ (और) मेरी आशा हे (कि) सुज्ञ विद्वज्जन पुरुष, श्रेणक राजाके तुल्य गुणग्राहीपणा धारन करके गुण ग्रहण करेंगे (और) उपगार निमत्त सर्व ठिकाणें एकेककों प्रेरणा करके पुस्तक प्रवर्त्तन करेंगे (और) वनें जिस मुजव विद्यावृद्धीके निमत्त पाठशालाकों मदत देवेंगे ॥ इत्यलंविस्तरेण ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ * ॥ ॐ ह्रीं नमः ॥ * ॥

॥ * ॥ ॐ ह्रीं अ सि आ उ सा ॥ * ॥

॥ * ॥ ज्ञान दर्शन चारित्र तप पदेभ्यो नमः ॥ * ॥

॥ * ॥ ॐ ह्रीं श्रीऽर्हं श्री गौतमस्वामिने नमः ॥ * ॥

॥ * ॥ ॐ ह्रीं श्रीं वद वद वाग्वादिनी वागेश्वर्यै नमः ॥ * ॥

॥ * ॥ श्रीसरस्वत्यैनमः ॥ * ॥

॥ * ॥ ॐ ह्रीं श्रीऽर्हं श्री जिन कुशलसूरिभ्योनमः ॥ * ॥

॥ * ॥ अथ आचार रत्नाकर दीपिका लिख्यते ॥ * ॥

॥ * ॥ मंगलाचरण ॥ * ॥

तत्वज्ञान मयो लोके । यः आचारं प्रणीतवान् ।
केनापि हेतुना तस्मै । नमः आद्याययोगिने ॥

॥ (व्याख्या) ॥ ग्रंथकारक प्रथम मंगलाचरण कर्त्तेहैं ॥ [redacted] आद्ययोगीश्वरकुं, कैसाहै वो आद्य योगीश्वर, कि [redacted] ने वालेहैं (अर्थात्) केवलज्ञान केवलदर्शनसे लोका लोक[redacted] केनापि हे ऐसे आद्य योगीश्वर, श्रीआदिनाथ स्वामी। [redacted] आचारप्रते तुना) कोईभि कारणें, गृहिधर्म्म, यतिधर्म्म[redacted]रमैं चालने सें फलतेभए, क्यूं कि लोकमध्ये सर्व कार्य[redacted]नकरा (ऐसे प्र तीज होती है, इसके लिये भगवानूने[redacted]कार जव) ॥ १ ॥ थम तीर्थंकर श्रीऋ[redacted]देव, आदि यो[redacted] देखिनां ॥

॥ आत्मांतर्ध्यान हेतो वो[redacted]दिमम् ॥ २ ॥

॥ यः आचारं स्वयं च[redacted]

(व्याख्या) ॥ श्री भगवानूने आचार किस हेतुसे कहा है (सो अब हेतु लिखते है)—आत्माके अंतरध्यान उत्पन्न करनेके लियें (अर्थात्) सुख आचारमै चलनेसै आत्माका हृदयके बीचमें ध्यान हो सकताहै, इस हेतुसें (अथवा) सब भूत प्राणिमात्रकी दयाकेलिये, श्रीभगवान् आप आचारकु धारण कराहै (ऐसे आदि तीर्थंकर श्रीऋषभदेव स्वामीकु मैं नमस्कार करताहुं ॥ २ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ तत्प्रसादा त्सुखालोक्ये । पथि तत्वो पयोगिनः ॥
॥ यो लोकाचार माचख्यौ । तस्मै सर्वात्मने नमः ॥ ३ ॥

(व्याख्या) ॥ तिस आचारके प्रसादसें (सुखालोक्य पथि) सुखे देखनेमें आवे जो मोक्ष मार्ग, तिसमें चलनेंवाले जो तत्व उपयोगी पुरुष है, तिसके लिये भगवान् आचारकु कहतेभए (तिस सर्वात्मा चिदानंद परमेश्वरकों मेरा नमस्कार हुवो) ॥ ३ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※

॥ अनादितत्व ज्ञातापि । स्वस्थ मोक्षप्रदो पिच ॥
॥ स्वयं चचाराचार यो । नमस्तस्मै स्वयम्भुवे ॥ ४ ॥

॥ (व्याख्या) ॥ भगवान् आप अनादिकाल तत्वके [illegible]लोकों स्वस्थ निश्चल चित्तके धरनेवाले है. और मोक्षके [illegible]केभी एक भगवान् स्वयं आचारकु आचरण कर्तेभए (ऐसे [illegible]ता रहेगा॥ प्रतिबोध पामनेवाले भगवान्कु मेरा नमस्कार हु[illegible]चार दिनकर,

॥ यस्य श्रुतपरा वाणी । पूजनात् [illegible] भाषामें संग्रह
॥ तत्वालोकः परंध्याना । तस्यै [illegible] कोई आगम

॥ (व्याख्या) ॥ जिस भगवानकी श्रुत सि[illegible]के दोषसें ओछे, करुष्टी लक्ष्मीकी प्राप्ति होती हैं (और) ति[illegible]षके सन्मुख, मैं ज्ञानका देखना होताहै (ऐसी तिस अर्हंतवाणी) सुज्ञ विद्वज्जन

॥ सर्वदैयं शुभ ज्ञान । कीर्त्ति र्यस्या [illegible]हण करेंगे
॥ प्राप्यते क्षणमात्रेण । तामंबा प्रणमा[illegible] प्रवर्त्त

॥ (व्याख्या)॥ जिस अर्हंतकी वाणीके प्रसादसेती सर्वज्ञ[illegible]मदत

और कीर्त्ति, क्षणमात्रसै (अर्थात्) तत्काल प्राप्ति होतीहैं (तिस अवा मातारूप अर्हंतकी वाणीकु मै नित्यप्रति नमस्कार कर्त्ताऊं ॥ ६ ॥)

॥ विद्वत्पर्षत्सु गर्जंति । मादृशा यत्प्रसादतः ।
॥ नमोस्तु गुरुपादेभ्य । स्तेभ्यःएव प्रतिक्षणं ॥ ७ ॥

॥ (व्याख्या) ॥ अव गुरुकु नमस्कार कर्त्तेहै, जिस गुरुके चरणकमलकी कृपासे, मेरे सरीखेभि मनुष्य, विद्वज्जनोंकी सभाके वीचमें गाज रयेहै, (तिस गुरुके चरणारविंदकुं क्षण २ प्रति मेरा नमस्कार हुवो) ॥ ७ ॥

॥ उपाय कोटिभि नैव । प्राप्यं यत्तत्वमुत्तमं ।
॥ सुप्राप्यं यत्प्रसादात्त । तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥ ८ ॥

॥ (व्याख्या) ॥ क्रोडों उपायसें जो उत्तम तत्व प्राप्ति नहि होता है, (सो तत्व) जिस गुरुप्रसादसे सुखपूर्वक प्राप्ति हो जाता है, (तिस श्री युक्त गुरुकु मेरा नमस्कार हुवो) ॥ ८ ॥ ※ ॥ ॥※॥ ॥ ※ ॥

॥ सत्यज्ञानात्सुखालोक्यः । पंथा कैवल्यकारणं ॥
नआचारवतां नृणा । मुन्मीलति विशेषतः ॥ ९ ॥

तत्वज्ञा... ख्या) ॥ सत्यज्ञानसेति सुखसु देखनेमें आवे, ऐसो कैवल्य केनापि हेतु... मार्ग है । सो मार्ग आचारवान् पुरुषोंके विशेष करकें ... ॥ ९ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥ ॥※॥

॥ (व्याख्या) ॥ प्र... गर्भासात्ज्ञानात्मा । ऋषभःपरमःपुमान् ॥
आद्ययोगीश्वरकुं, कैसा ... यदाचारं । तत्सप्रामाण्यमंचति ॥ १० ॥

(अर्थात्) केवलज्ञान को ...

ऐसे आद्य योगीश्वर, श्री... ॥ गर्भावाससै लेके, ज्ञानवान् परमपुरुष श्रीऋषभदेव

तुना) कोईभि कारणों, गु... रकुं स्थापित करते भए, तिससेती यह आचार निश्चैसे

कहतेजए, क्यूं कि लोकमां ... पूजनें योग्य है ॥ १० ॥ ※ ॥ ॥ ※॥

हीज होती है, इसके लि... चारकी वि... प्रामाण्यता देखाते है ॥

पम तीर्थंकर श्रीऋतूमें) के इक दर्शनमोहनीय करके मुर्खबुद्धिवाले, आर्हत १

॥ आत्मांत... निक ३ नैयायिक ४ सांख्य ५ चार्वाक ६ (इत्यादिक) जो

॥ यः आ... परमार्थकु न जाणनेंवाले, केवल नामानुसारी, अपनें हृदयसेंहीज

कुयुक्तिया उपार्जन करके आचारकु तिरस्कार कर्ते हे (एसे पुरुषोंका वचन सत्पुरुषोंकु प्रमाण करना योग्य नही है) क्यु कि सर्व जगतके परमार्थकु जाणनेंवाले अरिहत भगवानूने पण गर्भाधानसें लेके राज्याभिषेकपर्यंत संस्कारोंकु आप धारण करे हैं (और तैसेंही) देशविरतिरूप गृहिधर्मके विषे सम्यक्तका आरोपण, व्रतादिकका धारण, प्रतिमोद्वहनादिक, आचारकुं आचरण किये हे (तथा) केवल ज्ञान तो निमेषमात्र शुक्ल ध्यानकरके प्राप्य हे (तथापि) साधु मुद्रा धारण करके तपश्चरणादिक दीर्घ कालतक किये हे (और) जब केवल ज्ञान प्राप्ति हुवा तब चिदानदरूप हुए, अरु अन्यकी अपेक्षारहित हुये (तो पण) देवादिकोंके किया हुवा छत्र चामरादिक अतिशययुक्त सिंहासनपर बेठके, धर्मका उपदेश करना, गणधरादिक पदकी स्थापना करनी, विहार करना, सब जीवोंके शसयादिक छेदन करना, इत्यादिक आचारकु धारण करेहें और सबकु आचारमें चलनेका उपदेश दिये हे (तदनतर) भगवान्के निर्वाण कल्याण होयेबाद, ६४ इद्रादिक देवता सर्व मिलके, प्राणरहित कर्त्ता कर्म रहित तिस भगवानके शरीरका अग्नि संस्कार करना, रत्नमइ स्तूपबनाना, दाढा प्रमुख आपापके विमानमें लेजाना, अठाई महोत्सव करना, इत्यादिक आचार करते हे (इससें) अद्यतम तमें पण निश्चेसेती मोटा पुरुषोंनें आचारकु आचीर्ण कर्या, इनसें आचार मुख्य प्रमाण हे ॥ (और तत्वानु वादेपि) आश्रव, सवर, यह दोनु तत्व आचाररूप हे ॥ (यथा) आश्रवके विषे मन वचन कायासें शुभाशुभ आचरणमें चलनेसें शुभाशुभ कर्मकु बाधते हे, इससें आश्रवतत्व आचाररूप भया (तथा) सवरतत्वमें द्रव्य भाव भेदसें तिस शुभाशुभ कर्मके त्याग करनेसें यह सवरभि आचार रूप हे, इससेति जैनधर्मम आचार मुख्य प्रमाण हे (अर्थात्) निश्चे, व्यवहार, ज्ञान, क्रिया, ७ नय, ४ निक्षेपा, सप्तभगी, इत्यादिक अनेकातिक भेदोसे आचार उत्तम मुख्य प्रमाण हे ॥ १ ॥ (और) बौद्धके मतमे पण सुखकी आशा प्रमुखसें शरीरके आचारकर्ते हे, आपके बुद्ध देवकी अर्चनरूप क्रिया मत्र स्मरणादिक करते हें, ऐसे क्षणकमति बौद्ध मतमेंभी आचार प्रमाण हे ॥ २ ॥ और वैशेषिक मतमें विशेष परीक्षारूप आचार हे

(अर्थात्) वैशेषिक मतकी क्रिया करनेवाले पुरुषाको परीक्षा विगर को इनि विशेष नहि मानते है, जो अच्छी क्रिया आचारमे चलते हे उसीकुंहीज प्रमाण मानते हें; इससेती वैशेषिक मतमेंभी आचार प्रमाण है ॥३॥ (और) नैयायिक मतमे प्रमाणोपलक्षरूप अनेक तत्व कहे हे (जिसमै) क्रियाहीज मुख्य प्रमाणहै, इससे नैयायिक मतमेभी आचार प्रमाण है॥ ४ ॥(और) सांख्यादिकके मतमे प्रकृतिकु आदिलेके २५ तत्वकु मानते हे (परतु)सा प्रकृति पुरुषके सयोगसै शुभ आचारादिकमे प्रवर्त्तमान होती है, अध पगु न्यायसें (जैसें) पगुके अध पुरुषके सयोगसें चलनरूप क्रिया होय तबक ष्टसें पार उतर जाते है, ऐसे सांख्य मतमें पण आचार प्रमाण है.॥ ५ ॥ (और) चार्वाकके मतवाले नास्तिक हे (अर्थात्) जीवादिकका परलोका दिकमे जाणा आणा नहि मानते हे (तथापि) प्रत्यक्ष प्रमाण मानता हुवा केवल शरीरके सुखनिमित्त, आचार आचरण करें है, अच्छा खाना, अच्छा पीना, जैसैशरीरकुसुखहोय ऐसी क्रियामेचलना ऐसे कहतेहें, इससें चार्वा क मतमे पणआचार प्रमाण हे ॥६॥ इस रीतिसै–षट्दर्शनमे आचारहीज मु ख्य प्रमाण है, तत् परमत चितनेनअल ॥ ※ ॥ इस प्रस्तुत कार्यके करनेके लिये स्वमतहीज प्रामाण्यताकु प्रातिहोते हे–(यदुक्तमागमे-) नाण सव्वत्थ मूलच । साहा खधो अ दसण । चारित्तच फल तस्स । सग्गे मु क्खोजिणो इनु ॥१॥ अब सिद्धात समुद्रके कल्लोलरूप, चारित्रोपाख्यानकु कोन केणेकु सामर्थ है (तथापि) श्रुतकेवली प्रणीत शास्त्रार्थके लेशकु अवलवन. करकै, किंचित् आचार योग वचन कहतेहे ॥※॥ प्रथम कृपाभा दिभगवान् दो प्रकारके आचारकहे हें–यतिके आचार १ तथा गृहस्थ के आचार २–॥ अब साधुश्रावकका आचार स्वरूप लिखतेहे ॥ ※ ॥

(यदुक्तं--) सावज्ज जोग परिवज्जणाउ । सव्वुत्तमो जई धम्मो । बीउ सावग धम्मो । तइउ संविग्ग पक्खपहो ॥ १ ॥

॥ व्याख्या॥ गुणस्थान चौथा, पाचमा, छठादिककी, अपेक्षाये जैनधर्म धारन करने वालाके तीन भेदकहेहें, ॥ सर्वे सावद्य योगके त्याग करनेसे, छठा गुणस्थानसे १४ मा गुणस्थान पर्यंत, रत्नत्रयी धारक,

सबसे उत्तम (प्रथम साधु धर्म कहा) ॥ १ ॥ (दूसरा) ५ मा गुणस्थान वर्त्ती, देशे व्रत पचरकाणादि चारित्र पालन करने वाला (श्रावकधर्म कहा) ॥२॥ (तीसरा) चौथे गुणस्थान वर्त्ती, व्रत पच्चक्खाणादि चारित्र रहित, निकेवल सुद्ध सम्यक्त गुण धारक (सवेग पक्षी कहा) ॥३॥ (अब तीनों भेदका किंचित विस्तारसें स्वरूप पाठक गणके हितार्थ लिखते हें ॥ ✱ ॥ जो भव्य मोटे पुन्य योगसे, अपनें सुद्ध भावसें, गृहस्थावास, ससार संबधी सपूर्ण सावद्य योगका त्याग करके, ठ्ठा प्रमत्त गुणस्थानसे लेके १४ मा अयोगी गुणस्थान पर्यंत, अधिक २ शातिरत्नि, सुभयोग, आचार, धारनेवाले सुसाधु होते है ॥ तिकेसाधु एक विधि दया धर्म पालनें वाले, द्विविध राग द्वेष कों जीतने वाले, ३ तत्वकों जाणनें वाले (तथा) तीन गुप्तीकों धारन करनें वाले, ४ कषाय जीतनें वाले, ५ महाव्रत, ५ सुमतिकों, धारन करनें वाले, (तथा) ५ प्रमादकों दूर करनें वाले, छकायजीवोंकी रक्षा करनें वाले (तथा) षट् द्रव्यकों जाणनें वाले, सप्त भयकों भजन करनें वाले, अष्ट मदकों जीतनें वाले, नववाडि ब्रह्म चर्य कों पालनें वाले, (तथा) नव तत्वका स्वरूप जाणनें वाले, दशविध यती धर्म सुद्ध पालनें वाले, ११ श्रावक प्रतिमा स्वरूप जाणनें वाले १२ अंग,१२ उपागका उपदेश करनें वाले, १३ काठिया दूर करनें वाले, १४ विद्याका स्वरूप जाणनें वाले, १५ भेदे सिद्धोंका स्वरूप जाणनें वाले, १६ कषाय भेदकों छेडनें वाले, १७ भेदे सजम पालने वाले, १८ भेदे शील व्रत पालनें वाले (इत्यादि) अनेक गुण सयुक्त होते हैं (गामे एगरा इय नगरे पचराइय) ऐसे अप्रतिवद्ध विहारी, कोई स्थानकमें बहुत परि चय दुकान दारी नहि जमातेहें (तथा) मानोपेत सपेद वस्त्र धारन करते हें (नारगिछा नाधोछा) नहि केसरा दिकमें रगते हें, नहि साजी सावण लगाय धोते हें, अप्रमादी भए थके, रात दिन स्वाध्यायादि धर्म कार्यमें मग्न रहते हें, सव भव्य जीवोंकों, उपगार बुद्धीसें, अक्षय सुख दायक, अनेकांतिक श्रीजिन धर्मका उपदेश करते हे, द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव, मुजव, वनें जहांतक पापपकसें अन्य जीवोंकों निर्मल करते हे (तथा) कोई जीवसें द्वेष कलहादिक न करते हे, स्वधर्मियोंके ऊपर प्रमोद

भाव (अन्य मति) पापीजीवोंपर मध्यस्थ भाव धारन करते हे, इनसाधु वोंमें गछ समुदायकी सारणा वारणादि करनेंवाले, निस परग्रही छत्र चाम रादि आम्बर रहित, आचार्य, उपाध्याय, वाचक, प्रवर्त्तक, थिवर, गणाव छेदक, गणि', मुनिः, ऋषि, साधू, यती, सवेगी, अनगार, निर्ग्रंथ, ऐसे नाम गुण धारक होते है॥ (इत्यादि) अनेक गुण सयुक्त, चारित्र पात्र, चिताम णि रत्नके समान, सर्व गुण निधान, जिनाज्ञा युक्त, रत्नत्रयी गुण धारक केवल ग्यान पायके जलदी मोक्ष जानें वाले होते हैं, (इससें) साधु मुनि राज सवसें उत्तम है॥ ५ भरत-५ऐरवत, ५ महा विदेह, एव १५ कर्म भूमि क्षेत्रोंमें, होते विचरते रहते हैं (ऐसे सव साधु मुनि राजकों मेरा नमस्कार हुवो, ॥※॥ यह साधु पदका स्वरूप किंचित् कहा ॥ १ ॥※॥ अव दूसरा श्रावक धर्मका स्वरूप किंचित् लिखते हैं ॥ ※ ॥ प्रथम श्रावक दो प्रकार के होते हैं, १ अविरती श्रावक, कृष्णश्रेणिकादिक (जिसका स्वरूप ती सरा भेदमें लिखेंगे) ॥ और दूसरा विरतिश्रावक होते है, ॥ तिके सर्व सावद्ययोग त्यागके दशविध यतीधर्म धारन पालन नहि कर सक्ते हे, (परतु) जिन वचनोंसें, सुद्ध सम्यक्त गुण पायके, देशे व्रत पञ्चक्खाण सुद्धश्रद्धासें धारण करनेंवाले होते हे। तिके श्रावक ४ अनतानवंधी। ४ अप्रत्याख्यानी, एव ८ कषाय भेदके क्षयोपशमपणासें देशविरति पाचमा गुणस्थान धारक होते हे, (ऐसे विरति श्रावकभी दो प्रकारके होते हैं) १वृद्ध श्रावक (दूसरा) लघुश्रावक (वृद्धश्रावक उनकों कहते हैं) जो खेतीवाणिज्यादिक महा पापकारी व्यापारादिकर्म छोडके। जिनोपवीत ब्राह्मणवर्णके सस्कार धारन करे। निकेवल यथाशक्ति धर्मकार्य उद्दीपन करे। रातदिन जैनविद्याका अभ्यास करें। अन्य जैनीयोंकों विद्याअभ्यास करावे। धर्मउपदेश करते रहे। जन्मसें मरन पर्यंत १६ सस्कार, गृहस्थाचार (तथा) पुजा प्रतिष्ठा दिक शास्त्रोक्त विधिसहित करावे। आपभी सुद्ध श्रावकधर्म देशचारित्र पाले। (यह वृद्धश्रावकभी दो प्रकारके होते हे) १ गृहस्थी जैनब्राह्मण स्त्री धारक होते हे, तिके तो [illegible] सरामे, देव गुरुकी सेवा पुजा भक्ति वेयाव च्चमें हमेशा रहते हे ॥ [illegible] के घरका जन्मसें विवाहादिपर्यंत शातिक पौष्टिक [illegible] नपंभिताचार्य गुरूकी

जैनी गृहस्थके घरका दानपुन्य लेतेहैं (ऐसे) कुलगुरु, महात्मा, गधप, सेवग, जेनब्राह्मणादि होते है ॥ १ ॥ (और दूसरा) सुद्धाचार धारक, ग्यान गुणमें अधिक, ब्रह्मचारी होते है (जिनोंमे) जो छत्र चामरादि आमवर धारक आचार्य उपाध्याय पदधारन करनवाले होतेह, तिके श्रीपूज, महाराज, पत्रपति, भट्टारक, जैनपन्डिताचार्य, परमकुलगुरु, (इत्यादि नामसें) अनेकानिक गुणग्राही जैनीयोंके अत्यत मान्यनीक पूज्यनीक होते हे (जिनोंकी आग्या मुजब) जन्मसें मरणपर्यंत १६ सस्कार, जैनशास्त्रोक्त विधिसे, धारन करते कराते हैं। विवाहादिकके उपरात, जिनोपवीत, सम्यक्त व्रतादि सब सस्कार, पूजा, प्रतिष्ठादिक, आचार्य, उपाध्याय, यति, सवेग पक्खी, ब्रह्मचारी, पदाधिकारी, कराते हे (जिसमे कइतो) पुर्वानुपुर्विये सम्यक्त, देशविरतिचारित्र पालके, फेर सुभकर्मों दयसें, उत्तम साधुआचाय पदकों प्राप्तहोते हे, सो उत्कृष्ट धन्य होते हे (तथा) कई भोगावल्यादि असुभ कर्मके उदयसें साधुपदकों विराधके देशचारित्रधारक जैनपन्डिताचाय हो जाते हे ॥ (परतु जो) सम्यक्तगुणसें भ्रष्ट न होय, और सुद्धअनेकातिक धर्मके दीपन करनेवाले होय, (तहातक) निस्सदेह, वदन, पूजन, सत्कार, सन्मानसें, गुणग्रहण करनेके योग्य होते हे (अब वृद्धश्रावकोंका पहरवेस व्यवहार कहतेहैं) ॥ मस्तक मुडादि मुन्डरक्खे (वा) एक चुट्टेके माफक केसरक्खे। वस्त्र रेसमी (वा) सूतू, पीला केसरिया (वा) सपेद, धारन करे,। धोतीकी एक लाग खुली रक्खे। गलेम, मोती मुगा चादी सोनेंकी १०८ दाणारी माला रक्खे। (तथा) सुद्धाचारसें जिनोपवीत सोनेंकी (तथा) सूतकी धारन करे,। लोह जड्या चामका जूता नपहरे। तिलक ऊर्ध्व (तथा) गोल मेरूके समान, केसरचदनको करे (जिसमें जो गृहस्थी जैन ब्राह्मण होय) सो मस्तकपरचोटी रक्खे, सोनेली मुगुटके समान टोपी (तथा) केसरिया, लाल, सपेद, फेटा रक्खै भोजन साधर्मी श्रावकके घरका (तथा) अपने कुल जातीके घरका (तथा अपने हाथका करे। अपना खरच दान पुण्य साधर्मी जैन लोकोंकेपास लेवे। याचना करे। (परतु) अन्य मिथ्यात्वीयोंके पास दान पुन्य न लेवे, याचना न करे। जिनेश्वर देवका वदन पूजन (तथा) धर्म्म उद्दीपन, हमेसा करते रहे। अरिहतादिक नवपद (तथा) नवपदके अधिष्टायक स

म्यक्ती देव टाल, अन्य मिथ्यात्वि देव गुरुवादिकका स्मरण पूजन (तथा) देषभावे निदन कदापि काले न करे। (तथा इनोंके) माहण ब्राह्मण, वृद्धश्रावक, जैनपन्डित, सिद्धपुत्र, सर्वज्ञपुत्र, महात्मा, कुलगुर, पन्हाकर, क्षुल्लक, यति, संवेग पक्खी, आचार्य, उपाध्याय, पदाधिकारी, कर्माधि कारी (इत्यादि नाम पद कहे है) इन सर्वका अने कातिक विवेकी जैनी लोक यथायोग्य मान्य करते है। (इन वृद्धश्रावकोंकी आदमें उत्पत्ति) श्री ऋषभदेव स्वामीकों केवल ज्ञान हुए बाद। भरतचक्रवर्तिने। इंदर्न इं द्रके वचनोंसे। धर्म्म वृद्धीके अर्थ करीहे ॥ (सो अधिकार) इनका प्रकाश, जैन इतिहासमें लिखेंगे ॥ ऐसे गुणयुक्त आचारवान [illegible] होते हे ॥ इनोंमें जिके सम्यक्तसे भ्रष्ट, एकाती मिथ्यात्वी. [illegible] नाचारी होय (तिके) जैनियोंमें अवदनीक होते है ॥ यह [illegible] श्रावकोंका स्वरूप कहा ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥१॥ अब दूसरा लघुश्रावक कैसे होते है सो लिखते हैं ॥२॥

॥ ※ ॥ जो क्षत्री, वैश्य, सुद्र, अपनें शुभ कर्मोदयसें, (तथा) [illegible] दयादी जैन गुरूके उपदेशसे, सुद्ध श्रावक धर्म अंगीकार [illegible] णे मुजब, जिनोपवीत, उत्तरासण, सम्यक्तादि व्रत, सुद्धा[illegible] के, अंतरंग सत्य श्रद्धासें पालै (और) सुद्धविणज [illegible] (तथा) रा ज्यपद, मंत्रीपद, सेठ, सेनापती, ममलीक, पदादि, धारण करके। धर्म, अ र्थ, काम, दान पुन्यादिकको साधन करै॥ देवभुवनके समान, [illegible] जि नमंदर बनावै ॥ द्रव्ये, भावे, अनेकप्रकारसें (देव, [illegible], वंदन, पूजन, महोत्सवादिक करे ॥ धर्मशाला, पाठशाला, [illegible], पुस्तकशा ला, स्थापन करै ॥ यथाशक्ति धर्मके सात क्षेत्रोंमें [illegible] खरच करै (तथा) धर्म उद्दीपन निमत्त, जैन विद्या जो पढे (उस) [illegible]। जिनों का वहुत मान्य करे। तन, मन, धनसें, मदद दे। (और) जन्मसे मरणपर्यंत पूजा प्रतिक्रमणादिक सर्व आचार, [illegible] विधिसें, उ न पंन्डितों पासे। विनय सयुक्त शीखै, धारन करे। [illegible] विद्या पढै (तथा) जिनोपवीत, सम्यक्त [illegible], धारन करके। यथाशक्ति उत्सवकेसाथ, गुरुकेपास जा[illegible] [illegible] करे (ऐसे

वक होते हैं) अभी वर्त्तमानकालमें अनेक जैनी लघुश्रावकके कुलगोत्र प्रसिद्ध हे (तिके सव) सुद्ध साधु आचार्य महाराजोंके प्रतिबोधकरके (जेसें) स । २-७२ केशी आचार्य सतानी, श्रीरत्नप्रभसूरिजी, महाप्रभावीक आचार्य हुए (सो) उसिया नगरीके राजादिक क्षत्री वैश्य सर्व लोकोंनें प्रतिबोधके जैनी किये ॥ तवसें ओशवाल हुए (तथा) कोटिक गणी खरतर विरुध धारक । श्री जिनचद्र सूरिजी, दिल्ली शहरमें । स । १०,९१ श्रीमाल महतियाण गोत्रको प्रतिबोधके जैनी किये (तवसें) श्रीमाल गोत्रीय श्रावक हुए (तिसपीछे) स । ११६९ खरतरगच्छी महा प्रभावीक युगप्रधान आचार्य श्रीजिनदत्तसूरजी पट धारक हुए (जिणोंनें) प्रथम तो सवाक्रोड ह्रींकारजीको जाप करकै । ५२ वीर, ६४ योगणीयादि, वहुतसे देवगणकों सेवक किये (और) पंजाव, जेशलमेर, मारवाड़ादि देशोंमे विहार करते । क्षत्री, ब्राह्मणादिकको प्रतिबोधके (सवालाख जैनी श्रावक किये) जिनोंका । सावण सुक्या, गोलछा, गजेड, गखेचा, नाहटा लुणिया, भडकतिया, बाफणा, चोरडिया, पारख, मागा, वेगवाणी ढढ्ढा, डूगड, लालाणी, गणधर चोपडा, कोठारी, मूणोंत, (इत्यादि) अनेक गोत्र प्रसिद्ध हुए (जिसपीछे) स । १२८५ चित्रवालगच्छके चैत्यवासी, जगचंद्राचार्यजी, सुनकमके योग, वर्ततपस्वी साधु हुए (जवसें) तपागच्छ प्रसिद्ध हुवा (इनोंके) वस्तुपाल तेजपालादि दश श्रावक हुए (इसी तरे) ओशवाल श्रीमाल पोरवाड़ादिक जैनी लघु श्रावक हुए ॥ सो वर्त्तमानमें प्रसिद्ध हे (ऐसे लघु श्रावक होते हैं) ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अव वृद्ध, लघु, दोनु श्रावक, जघन्य, मध्यम, उत्कृष्ट, तीन प्रकारके होतेहे ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ जो सुद्ध सम्यक्त गुण पायके । नवकारसी आदिक (किंचित) व्रत पच्चखाण भावसे धारन करनें वाला होय (सो जघन्य श्रावक होते हैं) १ (तथा) सुद्ध १२ व्रत धारक । २१ गुण सयुक्त होय (सो मध्यम श्रावक होते हे) २ ॥ (तथा) अतीचार रहित १२ व्रत, ११ प्रतिमा धारक होय । सर्व सचित्तके त्यागी, साधर्मियोंके (तथा) अपनें जात भाईयोके घरोंमें भिक्षा वृत्ति करने वाले होय ॥ साधुके तुल्य मोटा

अभिग्रह पच्चरकाण धारन करनें वाले होय ॥ सर्व ससारी कार्य छोडके आनदादिककी परे धर्म कार्य स्वाध्यायमें रातदिन मग्नरहे (सो उत्कृष्ट श्रावक होते हैं) ३ ॥ ※ ॥ ॥※॥ ॥※॥

॥ ※ ॥ अब सामान्य प्रकारे गुण लिखते हैं ॥ ※ ॥

॥ ॥ ※ ॥श्रावक कैसे होय। यथाशक्ति सुद्ध श्रावक धर्म पाले । एकात पक्षपात, कलहादि रहित, विनयादि गुण धारके, अनेकातिक सुद्ध गुरु धर्माचार्यकी सेवना करे (तथा) भवो भवमें नरक निगोदादिकके दुख देनें वाली, असुचि विष्टाके समान, कालकूट जहरसें अधिक, ऐसी परनिदा छोडे (और) स्वर्ग मोक्ष सुख दायनी, कृत कर्म विध्वंसनी, आत्म निदा करता रहे (तथा) १३ काठिया प्रमाद रूप महा शत्रुवोंकों दूर करके, सुद्ध साधु, श्रावक, सवेग पक्खी) सबके गुण ग्रहण करे । साधमीजाणके यथा योग्य भक्ति बहुमान करे ॥ श्रीजिनेश्वरदेवका, विनय मूल, दया मूल, चारित्र मूल, धर्मका उद्योत करता रहै (इत्यादि गुण युक्त श्रावक धर्महै (सोपिण सुगम पणासें दूर रस्ते मोक्ष जाणेंका वीज भूतहै ॥ ※ ॥ यह दूसरा देश चारित्र धारक श्रावक धर्मका स्वरूप कहा ॥

॥ ※ ॥ अब तीसरा संवेग पक्षी श्रावकोका स्वरूप आचारलिखते हैं ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अनादि कालसें मिथ्या मोहादि कर्मोंकेवस, चिदानदने जन्म मरण करते, आपना गुण न पाया (सो) काल, भावी, भव्यत्व स्वभावादिक, पाच सम वाय मिले थके । यथा प्रवृत्ति १, अपूर्व २, अनिवृत्ति ३, (यह) तीन करण, शुभानु योगसें, सर्व कर्मोंकी बहुतसी स्थिति खपाके, किंचित् न्यून एक कोडा कोडि सागरो पम प्रमाण शेष रक्खे (तब) रागद्वेषकी महा सचिक्कण निगड गाठ भेदन करे (और (अनतानुबधी) क्रोध १, मान २, माया ३, लोभ ४, कषाय चार (तथा मोहनी ३) सम्यक्त १, मिथ्यात्व २, मिश्र ३, ॥– यह सात प्रकृतिकों क्षयो पशम करके। उप शमादि ज्ञान [illegible] गुणकों प्राप्त होताहै (जब ऐसा ज्ञान, दर्शन, अपना गुण [illegible]) अनता पुद्गल परावर्त्त भव भ्रमण

दूर होके । जघन्य अंतर महूर्त्त (उत्कृष्ट) अर्द्ध पुद्गल परावर्त्त, भव स्थिति, रहै (तिस पीछे अवश्य मुक्ति पदकी प्राप्तिहोय (ऐसा) अक्षय सुखदाय क, चिंता मणि रत्नवत्, (ज्ञान, दर्शन, गुण) गुरूके उपदेशसें (तथा) अपनें स्वभावसें (जो) ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य, सुद्रके, शुभकर्म सुमताके योगसें प्राप्त होय (तब) राग, द्वेषादि, रहित। सर्वज्ञ, सवदर्शी, श्रीजिने श्वर देवके वचन अंतरंग श्रद्धासें सत्य मानें। श्रीजिन धर्मकी अनेक प्र कारसें उन्नति करे (ससारमें) सुदेव, सुगुरु, सुधर्म, (यह) तीन तत्व पदार्थ सत्य जानके परमभक्ती करता रहै ॥ ॥ ॥ ॥

॥४॥ अब तीन तत्वकी श्रद्धा लिखते है ॥४॥

॥ ॥ (प्रथम सुदेव किसकों कहिये) ॥ (जो) राग द्वेषादि १८ दूषण रहित, सर्व देव इंद्रोंके पुज्य, ३४ अतिशय, ३५ वचनगुण सो भित, मोक्ष उपवाद, ससारमें आगा गमन रहित, (ऐसे) जिन, सिद्धा दिक, ब्रह्मा, विष्णु, महादेव, अल्ला, अलखादि, जो होय। (उनकों) सं वेग पक्षी, अनेकांती, (ईश्वर, परमात्मा, मानें) और ऐसे सर्वज्ञ, सर्व दर्शी, लोका लोक भाव प्रकाशक, अरिहंत, सिद्धकों, सुदेव, ईश्वर, भगवा न, कहियै (परंतु) राग द्वेषादि सहित, पूर्वोक्त गुणा रहित, कोईभि दल द्रीनें, अपना ईश्वर नाम, (तथा) रातदिन आप काम विटवणामें फस रहाहे (उसनें) अपना ब्रह्मचारी नाम, (तथा) भणा चुगनें वालीहे (उसने) अपना लक्ष्मी नाम, स्थापन किया (इसीतरें) निर्गुण नाम धारककों, इश्वर, भगवान, सुदेव, न कहियै (क्युंकि) जो आपभी राग द्वेषादिक ससार विटवनामे फस रहे हे। कोईकों वर देरहेहे, कोइकों मार रहेहें (सोकभी) ईश्वर मोक्षदायक न होते हे ॥ (जहा तक) जो ब हुत ससारी जीव मोह मदिराके नस्सेमें व्याप्त होतेहैं (तहांतक) चौथी ग तिवाले १८ दूषण सहित (और) कुकर्म करने वाले। भय देखाने वालेकों। ईश्वरावतार, भगवान तुल्य, मोक्ष दायक जानते है ॥ (औरजब) मोह मदिराका नस्सा उतरताहे (तब) अपना सुद्ध ग्यान गुण, विवेकसें, मुद्रा, कृत्य, वचन, सिद्धांतादिक, देखके। राग द्वेषादि रहित, श्री अरिहंत देव कों, ईश्वर मोक्ष दायक जाणतेहें। ध्याते, पूजतेहें ॥ ॥ ॥

॥ ※ ॥ भगवानका स्वरूप लिखतेहे ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ प्रशम रस निमग्न दृष्टि युग्म प्रशर्नं । वदन कमल मकः का मनी सगसून्यः । करि युग मपि धत्ते शस्त्र सवध वध्य । तृदश जगति देवो वीतराग स्त्वमेवः ॥ १ ॥ ※ ॥ भवबीजा कुरु जनना । रागाद्याक्षय म पा गता यस्य । ब्रह्मावा विष्णुर्वा । हरो जिनोवा नम स्तस्मै ॥१॥ (ऐसे) गुण स्वरूपयुक्त , ईश्वर परमात्माको । नाम, स्थापना, द्रव्य, भाव, चारु निक्षेपै । अनेकाती जैनी, त्रिकालै, त्रिकरण सुधे, ध्यावन, पूजन, करै(तथा) ईश्वर परमात्माके आग्या कारी सम्यक्ती, इंद्रादिक सर्व देवगणको, अप ना मुख्य साधर्मी जाणके । बहुत मान्यसें, जन्मादिक संस्कारोमे (तथा) पूजा प्रतिष्टादिक सर्व धर्म कार्योमें, निमंत्रण पूजन नमस्कारादि करै ॥ (क्युंकि श्रेयासी बहु विघ्नानि) कल्याण कारक धर्म कार्य करते । मि थ्यात्वी देवादिक अनेक उपद्रव करतेहे (इसवास्ते) अवश्य सपूर्ण धर्म कार्यमे । साधर्मी देवकी, निमंत्रण, भक्ति, बहु मानादि करै । सहाज्यलेवै ॥ (परंतु) प्रथम गुण स्थान वर्त्ती । हरि, हरादि, मिथ्यात्वी देवका । वदन, पू जन, निमंत्रणादि, कोईप्रकार न करै (और) अन्य देवकी द्वेषसें निदना भी न करै (इसी तरे) सुध्द देव तत्वकी श्रध्दा धारन करे ॥१॥ ॥※॥

॥※॥ अब गुरुतत्वकी श्रध्दा लिखते हे ॥※॥

॥※॥ (तथा गुरु ऐसे माने) जो श्रीजिनेश्वरदेवकी आज्ञा सयुक्त, अनेकातिक सुध्दधर्म प्ररूपक, छकाय जीवोंकी दया करनेवाले, कालानुसा रे सुसाधु होय । आपतिरे अन्यको तारै (तथा) प्रथम जिसकेपास जैन धर्म सुध्द पाया हे । धर्म शीखा हे । जिसके प्रसाद, अनादि भव दुःखदाय क मिथ्या मोह दूर होके। थोडे कालमें अक्षय सुखदायक सम्यक्तरत्न, ग्यान रत्न मिला हैं ॥ ऐसे परम उपगारी । जैन पंडिताचार्यादि, श्रावक, सवेग पक्षीकोंभी । सुसाधु धर्माचार्यसें अधिक जाणके । वदन, पूजन, भक्ति, बहुमा नादि करे ॥ कृतज्ञपणासे अपना धर्म गुरु माने ॥ (कृतज्ञ उसकों कहतेहें) जो किये उपगारको जाणें। आप पीछा उपगार करे ॥ सो श्रीपालजीके समान उत्तम कृतज्ञ पुरुष [illegible] ॥ (तथा) ॥ किया कोईका उपगार भूले नहि । परंतु । आप [illegible] प्रतिउपगार कर शक्ता नहि ॥

मध्यम कृतज्ञ कहिये (अब कृतघ्न पुरुषका स्वरूप कहतेहैं) जो कोईका किया उपगार मानें नहि। और निंदा द्वेषभी करे नहिं (सो) मध्यम कृतघ्न पुरुष कहिये (तथा) जिसने अपने ऊपर उपगार कियाहै। सो उपगारकों भूलके। उलटा उपगारी पुरुषके ऊपर द्वेष धारन करै। निंदा अपगार करै दुःख देवें॥ ऐसा धवलसेठके समान, नरकगामी उत्कृष्ट कृतघ्न नीच पुरुष कहियें॥ (यदुक्त) परोपगाराय पुन्याय। पापाय परपीडन॥ इस वचन सेती। जिसके दिलमें सम्यक्तादिगुण होवेंगे (सो) अवश्य कृतज्ञ गुण धारक हूवेंगे॥ (इहायुगबाहू मेंणरेहाजी को दृष्टांत, उत्तराध्ययनादि सुत्रोंमें कथानुसार भावनकरना) इससें अनेकांतिक धर्म धारक। सुसाधु, धर्म उपदेशककों अपना धर्म गुरु मानें (परंतु) कुलिंगी, मिथ्यात्वी, अनेकांतिक धर्मद्वेषी, एकांत पक्ष थापी, जिनाज्ञा रहित, हिंसा धर्म प्ररूपक, निन्हवा दिककों गुरू करके न माने॥ वंदन नमस्कारादि न करै (द्वेषसें) अन्यमति कुलिंगियोंकी निंदाभी न करै॥ ॐ॥

॥ ऐसा सुद्ध गुरु तत्वकी श्रद्धा धारन करनेवाला होय॥ ॐ॥

॥ॐ॥ अब धर्मतत्वकी श्रद्धा लिखतेहैं ॥ॐ॥

॥ ॐ॥ जो पूर्वोक्त गुण वर्णन योग्य, सर्वज्ञ, सर्वदर्शी, श्री जिनेश्वर देवके वचनोंसे, आचारांगादि दृष्टिवाद पर्यंत द्वादशांगी सुत्रोकी, गौतमादि गणधरोंनें रचना करीहै (अर्थात्) प्रथम भगवान जगत् स्वरूप अर्थ से कहतेहैं। उससे बहुत अल्प, गणधर महाराज, ११ अंग प्राकृत मागधी भाषामें (और) १२ मा दृष्टिवाद अंग, संस्कृत भाषामें सुत्र सिद्धांतकी रचना करतेहैं। १२ मा दृष्टिवाद अंगका १४ पूर्व एक देश मात्रहै। (इन सुत्रोंकी) निर्युक्ति कर्त्ता, श्री भद्रबाहू स्वाम्यादि। भाष्य कर्त्ता, जिनभद्रगणिः क्षमा श्रमणादि। चूर्णी कर्त्ता श्रीदेवर्द्धिगणी क्षमा श्रमणादि। पूर्वधर प्रभावीक आचार्य हुए॥ (परंतु) प्रथमसें पुस्तकोंमें सुत्रादि लिखा हुवा नहीथा। इसीसें थोडे कालमें बहुत सिद्धांत भाग विच्छेद होगया (जब) एक पूर्वके आसरे सिद्धांत विद्या साधुवोंके पास रही॥ (तब) भगवान श्री महावीर स्वामीसें ९८० वरसे, महा प्रभावीक देवर्द्धिगणी क्षमा श्रमण, शासनदेवी कपर्दी यक्षके सहायसें, सब सिद्धांत पुस्तको

में लिखाया (तदनतर) श्री हरिभद्र सूरिजी, श्री अभयदेव सूरजी, श्री हेमाचार्यजी, श्री मलय गिरजी, आदिक आचार्य बऊतसे प्रकरण टीका कारक ऊए, जैन ग्रथकी बऊत वृद्धिकरी, (तथा) सन् १२ से, १३ से के मध्यमें हेमाचार्यजीके प्रतिबोधक, कुमारपाल राजा शेषमें जैनी ऊवा । जिसने बऊतसा जिनमदर बनाया (और) जैन पुस्तकका बऊत ठिकाणें भमार किया (जिस पीछे) कुमारपाल राजाके अन्याई पुत्र (तथा) गोरिये बादशाह प्रमुख, मिथ्यात्वी, म्लेच्छ राजावोंनें । बऊतसे जिनमदर जैन पुस्तकके नास करदिये (इसीसे) नीति, जोतष, आचारके जैन ग्रथ प्रायें विलुप्त होगये । शेष जो बचे (सो) जेशलमेर, पाटण, आदि सर्व जैन भमारोंमे रहेहैं ॥ अब वर्त्त मान कालमे जो जैन पुस्तक । सुत्र, निर्युक्ति, भाष्य, टीका, चूर्णी, प्रकरण, अनेकातिक प्रमाणीक आचार्योंके किये ऊवे प्रसिद्धहे (सो) सर्व जिनागमके वचन सत्य करके मानें (भगवानके वचन प्रमाणें) विनय मूल, दया मूल, चारित्र मूल, धर्म (तथा) दर्शन, ग्यान, चारित्र, तप, (तथा) दान, शील. तप, भाव, (तथा) ७ नय, ४ निक्षेपा, ६ द्रव्य, ए तत्व, ४ प्रमाण, ७ भगी, संयुक्त, धर्म तत्वका यथावस्थित स्वरूप । शका, काक्षा रहित, श्रद्धायुक्त सत्य जाणे (यथा शक्ति) अपना क्षयोपशम प्रमाणें धर्म तत्वके गुण धारन करै । ग्यान वृद्धी करै । अनेक प्रकारसें धर्म कों प्रदीपन करै । करावै । करताने अनुमोदै । मदत देवै ॥ इस अनेकातिक जैन धर्मको, चितामणि रत्नके समान, स्वर्ग, मोक्ष, फलदायक जाणके, अतरग भक्ति बऊमान करै ।। (और इसके) जैन आगम, जैन शाशन, जैनधर्म, जैनमत, जैनदर्शन, जिनाज्ञा, स्याद्वादी धर्म, अनेकातिक धर्म, इत्यादि पर्याय नाम सत्यकर जाणे ॥ (इससे अन्य) एकाती, मिथ्यात्वी, दृष्टिरागी, निन्हवादिकके मत धर्म असत्य जाणें ॥ (इत्यादि) तीन तत्वकी साची श्रद्धासें । ग्यान, दर्शन गुण, धारनकरे (परतु) अप्रत्याख्यानावरण कषाय चोकमी कर्मोंके उदयसें । किंचित् मात्र । नवकारस्यादि व्रत प्रत्याख्यान देशचारित्र, गु [illegible] दयमें न आवै (जैसें) नवमा वासुदेव (त [illegible] क राजा दिकके । व्रत,

द्ध भावसे कुछभी उदय न आया (निकेवल) जिनेश्वर देव, गुरु, धर्म, की अंतरंग भक्तिसें । तीर्थंकर गोत्र उपार्जन किया ॥ आवती चौवीसीमें भग वान हूवेंगे ॥ ऐसे गुण ग्राही, क्षायक सम्यक्त गुण धारक, निश्चल जैन धर्मी हूए(जिनोंकी)सौधर्म इद्रने सर्व देवगणके सन्मुख प्रससा करी(जव) कोई मिथ्यात्वी देवतायें इद्रका वचन सत्य न माना । (सो देव) द्वारका नगरी आयके।गलित अंग स्वानके रूपसें । श्रीकृष्ण महारायकी परिक्षा करके (सत्य गुणग्राही जाना) सो दृष्टांत इहा भावन करना (तथा) इसी तरे कोइ देव श्रेणिक राजाके वसतमें इद्रकी करी प्रसंसाकों सत्य न मानके राजग्रही नगर आया । उहा मछीगर साधु (और) गर्भधारक साध्वीका स्वरूप देखाके । श्रेणिक राजाकों (निश्चल सम्यक्ती जाना) सो दृष्टांत इहा भावन करना ॥ (इसीतरे) व्रत प्रत्याख्यानादि रहित। निकेवल चतुर्थ गुण स्थान सम्यक्त रत्न गुणधारक (जो) इद्रादि सव देवगण (तथा) राजादि मनुष्य गणमें होय (सो) जैन धर्मका तीसरा भेद, संवेगपक्षी श्रावक धर्मका छोटा भाईके तुल्य जाणना (क्युकि) यह संवेगपक्षी भी मोक्ष मार्गके वीजभूतहे ॥ निश्चय जिन वचन प्रमाणसें अर्द्ध पुद्गल पराव र्तके भीतर मोक्ष जाणें वाले हे ॥ सम्यक्त विगर कठिन चारित्र भी पाला हूवा । अभवी (तथा) जमाली आदिक कीयेरे भवनाशक न होताहे (यदुक्त आगमे) दशण भठो भठो । दशण भठस्स नत्थि निव्वाण । सि ज्झति चरण रहिया । दशण रहिया न सिज्झति ॥ १ ॥ (इसलसें) साधु श्रावक, संवेग पक्षी, तीनों भेद (यथा) अपना कर्म क्षयोपशम प्रमाणें मो क्षमार्ग साधक है (इसे) स्यादवादी जैन धर्मियोंके अत्यन्त मान्यनीक है ॥ वदन, पूजन, साधर्मी वात्सल्यादि करने योग्यहे (यदुक्त मागमे) विसमोवि नियडगमणो । मग्गो मुक्खस्स ईह जइधम्मो । सुगमोवि दूरगम णो । गिहत्थधम्मोवि मुक्खपहो ॥ १ ॥ इतिवचनात्, सुद्ध साधुधर्म, श्रावक धर्म, दोनु मोक्षदायक है (तथापि) साधू धर्म, श्रावक धर्मके, महान् अं तर हे (जसें) मेरु पर्वत, और, सरसुका दाणाके । सूर्य, और, खजुगा जानवरके । चद्रमा, और, ताराके । जैसा मोटा अंतर है ॥ ऐसा साधु धर्म, श्रावक धर्मके अंतर हे (यदुक्त) जह मेरु सरिसवाण । खज्जोय रवी

ण चंद ताराण । तद् अंतर महतं । जइधम्म गिहत्थ धम्माण ॥ १ ॥ इति वचनात् साधु धर्म मोटा हे । महा कठिन मार्ग है । वीस विस्वा दया पालनेवालाहे । निकट भवी जलदी मोक्ष जाणें वाले जीवोंके, महा पुन्य योगसे द्रव्ये, भावे, सुद्ध चारित्र उदयमें आवैहै । सिहकीपरे धारणकरे सिंहकीपरे पालै (तथा) स्यालकी पेरे धारन करै । सिहकीपरे पालै, ऐसा साधु धर्म धारन पालन वाला, महाधन्यहे, कृतपुन्यहे (परतु) भोगावली कर्मोंके उदय प्रवलतासें, जहातक, सर्वे सुद्ध चारित्र उदय न आवे (अथवा) सूरवीराईसें प्रथम साधु धर्म धारन कियाहै । कठन वृत्तिसें पालेहै (तथापि) भोगावली कर्मोंके उदयसे, नंदिखेणजी, (तथा) आद्रकुमर जीकी परे सर्वे सुद्ध चारित्र न पालसके (तब) सुद्ध श्रावक धर्म गृहस्थ आचार तो अवश्य धारन करना चाहिये (क्युकि) ऐसाही कर्म उदय होय । तव जीव आपही भोगवता हे । क्या सुःख । क्या दुःख (तथापि) सर्वतो भ्रष्ट न होना चाहियै । ११ मा उपशात मोह गुण ठाणें तक चढाहुवा जीव, कषाय कर्मोंके वस, पीछा पडतायका (कदास) चौथा गुणस्थान परभी, जीव स्थिर रहजाय । तो सर्वतो भ्रष्ट कभी न होय । (और) सम्यक्त गुणस्थानमें रहते । नरक निगोदादिक हीन गतिका वध कभी न होय ॥ ज्ञान, दर्शन, गुण, जहातक सुद्ध हे । तहातक सर्व सुद्ध हे (परतु) चउनाणी चउगइया ॥ ऐसाभी कहाहे ॥ ४ ज्ञान १४ पूर्वके धरनें वाले ११ गुणस्थान तक चढे हुवे साधूभी । कषाय, प्रमाद, कर्मोंकेवस, पीछा गिरतायका । पहला मिथ्यात्व गुणकों प्राप्त होके । नरक निगोदादिक गतिमे पभतेहैं । तिके सर्वतो भ्रष्ट हो जाते हैं । (परतु) ऐसे जीवभी । ग्यान, दर्शन, चारित्र, रत्न त्रयी गुण फरसा हुवा हे (इस्सें) उसी भवमें (वा) अन्य भवमें । अवश्य रत्नत्रयी गुण प्राप्त होते हैं ॥ सम्यक्त, मिथ्यात्व, कोई जान कारण नही हे ॥ सुद्ध, असुद्ध, गुण, परिणाम, कारण हे ॥ (इहा) नदी खेणजी, आद्र कुमरजी, का दृष्टात भावन करना ॥ (इस्से) श्रावक धर्महे सो साधु धर्मके पूर्व साधन भूत है ॥ देशे । सुभा चार धारण करनें वालाहे (तथा) सुरासुर सेवित अरिहंता दिक साधु पदके आराधकहे । वस्त्र, पात्र, सुद्ध आहारादिक से, विनय, वे

पावक, अत्यत भक्तिका करने वाला है (तथा) भगवान श्री जिनेश्वर देव कों । चारु निक्षेपै सत्य मानके । द्रव्ये, भावे, अनेक प्रकारसें वंदन, पूजन, करके । जैनधर्म दीपानें वाले है (तथा) साधू १। साध्वी २श्रावक ३। श्राविका ४ । जिनमदर नवीन (तथा) जीर्णोद्धार ५ । धर्म शाला (तथा) ज्ञानभंडार६ ।जीव दया, (तथा) दान शाला ७॥ ऐसे७ धर्म क्षेत्रोमें। दान पुन्यादिक करनें वाले । सम्प्रतिराजा, कुमारपाल राजाके तुल्य, महा प्रभावी क होते है ॥ अनता भवमें दश दृष्टाते डुलभ । आर्य देश । उत्तम कुल । पचेंद्री परगमी । लबा आयुष्य । जेनधर्म । गुरु संयोग युक्त मनुष्य जन्म पायके । देवपूजा टिक सत्कर्म करके सफल करनें वाले होतेहैं ॥

॥ ॥ अब सत्कर्म लिखतेहैं ॥ ॥

॥ ॥ देव पूजा १ दया २ दान ३ । तीर्थयात्रा ४ जप । ५ स्तपः ६ । श्रुत ७ परोपगारश्च ८ । मर्त्य जन्म फलाष्टक ॥ १ ॥ (इहा जैसें) कों टिक गणीय, आर्य सुहस्थिसूरि प्रतिबोधक, सम्प्रति राजा । (और) मलधा र गच्छी हेमाचार्यजी प्रतिबोधक, कुमारपाल राजा हुवा (सो) अनेक जिन मदर, जीर्णो द्धार, ग्यान शाला, दान शालादि, सत्कर्म करके महा प्र भावीक हुए । सो दृष्टात भावनकरना (इसी कारणसें), भगवान श्रीऋषभ देव स्वामी प्रमुख जिनेंद्रोनें । पूर्वानुपूर्वियें । प्रथम गृहस्थ श्रावक धर्म, चौथे, पाचमें, गुणस्थान वर्त्ती जीवोंका । जन्मसें मरण पर्यत पोभश सं स्कार, धारनरूप सुभाचार कहा है (तीस पीछे) साधु धर्मका पोभश स स्कार धारन रूप सुभाचार कहा है ॥ ॥ प्रथम गृहस्थ धर्मका सुभा चार कहनेंसें व्यवहार धर्मभी प्रमाण हुवा (यडुक्त आगमे) समणस्सण भगवओ महावीरस्स । अम्मापियरो पढमे दिवसे ठिइ पडिक्कमण करति । तइये दिवसे चदसूर दसण कुणति । छठे दिवसे धम्म जागरिय जागरति । सपत्ते वारसाहे दिवसे विरए–इत्यादिक व्यवहार कर्म भगवानके माता पि तायें (तथा) भगवान आपपिण आचर्ण कियेहैं (पुन आगमे वि नि द्दिष्ट) विवहारो विज्ञ बलव । जवदइ केवलीवि छउमत्थ । आहा क म्म भुजइ । तो ववहारं पमाणतु ॥ १ ॥ (अन्य मतेपि कथित) चतु र्णा मपि वेदाना । धारका यदि पारगा । तथापि लौकिका चार । मनसा

यह आठ उदय साधु श्रावकके समान कहेहै ॥ इनना विवेक, विनय गुण अवस्य चहिये (कि) अपना गुरू आचाय उपाध्यायकी आग्या विगर कोईभी धर्म कार्य नकरें । जो ग्यान गुणमें अधिक होय, सव विधीके जाण कार होय । आचार्य उपाध्यायादि पद धारक होय । जिस गुरूसें धर्म कार्य विधि जाणनें धारनेमें आई होय । (ऐसे) गुरू आचायादिककी आज्ञा सें सर्व धर्म कार्य विधि करनी चाहियै (आवस्यकादिक आचार सिद्धातोंमें) प्रथम अपना धर्म गुरु, कुलगुरुकी, आग्यासेंही सर्व कार्य करना कहा है सोप्रसिद्धहै ॥ कोईभी विद्या, गुरूके पास विनय सयुक्त धारन करनें से फलदायक होतीहै ॥ (जैसें) श्रेणकराजा, एकचमालके पास आक र्षणी विद्या, अविनयसें होकम करके सिहासण पर वेठा सीखनें लगा (त थापि) फलदायक नहि हुइ (तव) उत्पातकी१, विनयकी२, धर्मानकी, कर्मानकी, ऐसी चारबुद्धिके निधान । अभय कुमारजी कहनें लगे (कि महा राज) इस विद्या दाताकों, ऊचा सिघासण पर वैठाय खुसीकरके विनय सयु क्त विद्या ग्रहण करिये । तव फलदायक हुवेगी (क्युंकि) विद्या आनेंका, व धनेंका, फल दायक होनेंका, तीन प्रकार कहा है (यदुक्त)॥ गुरु शुश्रूषया विद्या । पुष्कले न धनेनवा । अथवा विद्यया विद्या । चतुर्थ नैवकारण ॥ १ ॥ तव श्रेणक राजा, उसकों वहुतसा खुसी करके, विनय सयुक्त स न्मुख वेठके, विद्या ग्रहण करी, तव फलदायक हुइ ॥ (इहा श्रेणक राजा, अभय कुमारजीका दृष्टात भावन करना) ॥ यह ४० उदय आ चारके नाम मात्र कहे हैं ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ अव इन ४० उदयोंमें जो साधुवोंके १६ सस्कार कहेहैं । सो प्रायें सव विधि साधुवोंमें होती है । साधु अपना आचार छोडके अन्यमत आचार न करतेहैं (इससें) जो साधु होते हैं (सोतो) प्रथम अपना गुरूके पास, अपना आचार ग्रथ सीखते हैं (परतु) वर्त्तमान कालमे प्रायें जैन गृहस्थाचार शास्त्रोक्तरीति मुजव दिनदिन विलुप्त होता जाताहै ॥ इस हु डा अवसर्पणी दुखमा कालके प्रभाव, चालनी प्राय धर्म होनेसें, मन मा फक आचार करनें लगगए हैं । (इससें दिन दिन) धनसें, धर्मसें, परि वारसें विद्यासें, सर्व ठिकाणें हीन पड़ते जातेहै ॥ हीनाचारी हुवाथका

(यदुक्तमागमे) ॥ व्रतारोपं परित्यज्य। सस्कारा दशपंचच ॥ गृहीणा नैव कर्त्तव्या। यतिभिः कर्मवर्जितैः ॥ १ ॥ विजय जोऽसं चैव। कम्म संसारिय तहा। विज्ञा मत कुणतोअ। साऊहोइ विराहउ ॥ २ ॥ (इसवास्ते) दूसरा देसविरति कुलगुरु, जैन व्राह्मण, क्षुल्लकादिककों, गृहस्थका १५ संस्कार कराणा उचित है ॥※॥ ॥※॥ ॥※॥

॥※॥ अव संस्कार कराणेवाले कुलगुरु कैसे आचारवान चहियै (सो लिखते है) ॥※॥

॥※॥ जो अर्हन् मन्त्रसे पवित्रित, जिनोपवीत, सम्यक्त व्रतादि, धारन किया थका होय (तथा) विनयवान्, बुद्धिवान्, शौचवान्, आचारवान्, दयावान्, शरल स्वभावी, शाति परिणामी, दृढ सम्यक्ती, अनेकाती, अर्हंत साधुकी आग्या धारक, विधि मार्गका जाणकार, अल्प कषाई, त्रिकालै देव वंदन, सामायक, करनेवाला। अनेक प्रकारसें धर्मवृद्धी करनेवाला, (इत्यादि) अनेक गुण धारक होय ॥※॥ ऐसे कुलगुरु जैन पन्डित व्राह्मणोकेपासे। जैन गृहस्थोंको सर्व सस्कार विधि, विनय संयुक्त धारन करनी चाहियै ॥ कोईभी विद्या विनयसे लीवी फलदायक होतीहै ॥ यह प्रथम प्रकाशका अधिकार दीपन करा ॥※॥

॥※॥ और दूसरा प्रकाश मध्ये ॥※॥

॥※॥ जैन इतिहास, (तथा) ५५ वोलगर्भित, ऋषभादि २४ भगवानका दृष्टात स्वरूप (तथा) १२ चक्रवर्त्ति, ९ वासुदेव, ९ प्रतिवासुदेव, ९ वलदेव, (इत्यादिकके) माता, पिता, नाम, नगर स्वरूप (तथा) भगवान महावीरस्वामीसें लेकर, वर्त्तमान काल तक, सुद्ध कोटिक गच्छ ... आचार्यादिकके स्वरूप, मत मतातरके स्वरूप, (तथा) सर्वके ... । स्वप्न, सुकन, मुहूर्त्तादिक, विचारण स्वरूप (इत्यादि) अ... सरा प्रकाशमे किंचित विस्तारसें वर्णन करुगा ॥※॥

※॥ अव हितोपदेश लिखताहूं ॥※॥

...हो देवाणुप्रियो। अहो प्यारा सर्व जैन भाइयो। अहो ...रागियो। अहो सज्जन पुरुषो। प्रेरणा मदत करके। सर्व

जन्मसे, ८ में वर्ष ब्राह्मणकों, १० मे वर्ष क्षत्रीकों, १२ में वर्ष वैश्यकों, शुभ मुहूर्त्ते जिनो पवीत धारन कराना (तथा) जिनो पवीत बनाना, व्रत उपदेश देना, व्रत विसर्ग कराना, भूम्यादि दानादिक देना, चारुं वर्णका सस्कार कराना, सुद्रकों उत्तरासन रूप जिनोपवीत धारन कराना (तथा) वटु करण विधि (अर्थात्) सस्कारसें ब्राह्मण करना ॥ इत्यादि अधिकार विधि मन्त्रादि कथन रूप द्वादशम उदय. ॥ १२ ॥ ※ ॥ (तथा) सुभ मुहूर्त्ते, प्रथम पुत्रको, जैनी पन्डितके पास विद्याध्ययन कराना । तद्विधि मन्त्रादि कथन रूप त्रयोदशम उदय. ॥ १३ ॥ ※ ॥ (तथा) जन्मसें ८ में वर्ष उपरात, ११ में वर्ष पर्यंत कन्याका विवाह, (और) जन्मसें १६ वर्ष उपरात पुरुषका विवाह करना (तिसमें) वेदी स्थापन विधि, ७ कुलकर गणपति स्थापन पूजन विधि (तथा) अग्निकी स्थापना अग्नीका तर्पण, दानादिक देना, लाजा कर्म, ॥ इत्यादिक विधि मन्त्रादि कथन रूप चतुर्दशम उदय: ॥ १४ ॥ ※ ॥ (तथा) साधु) वा) जैन पंडिताचार्यके पास सम्यक्त धारन करना, १२ व्रत उचरना, उपधान तपस्या करनी, सधमाला पहरनी (तथा) किस विधिसें भगवानके मंदर जाणा,। भगवानकी पूजा करना,। शातिक पोष्टिक पूजाकरना (तथा)सरस रागणीके गायन युक्त, १२ व्रत पूजा, पाच कल्याणक पूजा, । १४ स्वप्न पूजा, ए ग्रह, १० दिग्पाल पूजा । श्रावकका सविस्तर दिन कृत्य, ॥ इत्यादिक विधि मन्त्रादि कथन रूप, पंचदशम उदय. ॥ १५ ॥ ※ ॥(तथा) अत्य सस्कारके विषे श्राद्ध आराधना, चतु शरण क्षामणा, तद्विधि मन्त्रादि कथन रूप षोडशम उदय' ॥ १६ ॥ ※ ॥ इसी क्रमसें षोडस उदय सविस्तर प्रथम प्रकाशमें वर्णन करुंगा ॥ ※ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥※॥ अब गृहस्थीके १६ सस्कार साधु (वा) कुलगुरु, किसको कराना उचित है (सो लिखता हुं) ॥※॥

॥※॥ जो ससारकम परिग्रह छोडके । द्रव्ये, भावे, सुद्धसाधु हुए हैं । जिनोंकों तो एक व्रतारोप सस्कार (अर्थात्) धर्मोपदेश देना, सम्यक्तादि धारण कराना उचित है ॥ शेष १५ संस्कार कराना उचित नहि ।

(यडुक्तमागमे) ॥ व्रतारोप परित्यज्य। सस्कारा दशपंचच ॥ गृहीणा नैव कर्त्तव्या। यतिभिः कर्मवर्जितैः ॥ १ ॥ विज्ञय जोइसं चैव। कम्म संसारिय तहा। विज्ञा मतं कुणतोअ। साऊहोइ विराहत्तं ॥ २ ॥ (इसवास्ते) दूसरा देसविरति कुलगुरु, जैन ब्राह्मण, क्षुल्लकादिककों, गृहस्थका १५ सस्कार कराणा उचित है ॥※॥ ॥※॥ ॥※॥

॥※॥ अब संस्कार कराणेवाले कुलगुरु कैसे आचारवान चहियै (सो लिखते हे) ॥※॥

॥※॥ जो अर्हन् मन्त्रसें पवित्रित, जिनोपवीत, सम्यक्त व्रतादि, धारन किया थका होय (तथा) विनयवान्, बुद्धिवान्, शौचवान्, आचारवान्, दयावान्, शरल स्वभावी, शाति परिणामी, दृढ सम्यक्ती, अनेकाती, अर्हत साधुकी आग्या धारक, विधि मार्गका जाणकार, अल्प कषाई, त्रिकालै देव वंदन, सामायक, करनेवाला। अनेक प्रकारसें धर्मवृद्धी करनेवाला, (इत्यादि) अनेक गुण धारक होय ॥ ※ ॥ ऐसे कुलगुरु जैन पंडित ब्राह्मणोंकेपासे। जैन गृहस्थोंको सर्व सस्कार विधि, विनय संयुक्त धारन करनी चाहियै ॥ कोईभी विद्या विनयसें लीवी फलदायक होतीहै ॥ यह प्रथम प्रकाशका अधिकार दीपन करा ॥※॥

॥ ※ ॥ और दूसरा प्रकाश मध्ये ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ जैन इतिहास, (तथा) ५५ बोलगर्भित, ऋषभादि २४ भगवानका दृष्टात स्वरूप (तथा) १२ चक्रवर्त्ति, ९ वासुदेव, ९ प्रतिवासुदेव, ९ वलदेव, (इत्यादिकके) माता, पिता, नाम, नगर स्वरूप (तथा) भगवान महावीरस्वामीसें लेकर, वर्त्तमान काल तक, सुद्ध कोटिक गच्छ परपरा आचार्यादिकके स्वरूप, मत मतातरके स्वरूप, (तथा) सर्वके उपयोगी। स्वप्न, सुकन, मुहूर्त्तादिक, विचारण स्वरूप (इत्यादि) अधिकार दूसरा प्रकाशमें किंचित विस्तारसें वर्णन करुगा ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अब हितोपदेश लिखताहूं ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अहो देवाणुप्रियो। अहो प्यारा सर्व जैन भाइयो। अहो स्याद्वाद धर्म रागियो। अहो सज्जन पुरुषो। प्रेरणा मदत करके। सर्वं

जन्मसें, ८ में वर्ष ब्राह्मणकों, १० में वर्ष क्षत्रीकों, १२ मे वर्ष वैश्यकों, शुन्न महूर्त्तें जिनो पवीत धारन कराना (तथा) जिनो पवीत वनाना, व्रत उपदेश देना, व्रत विसर्ग कराना, भूम्यादि दानादिक दैना, चारु वर्णका सस्कार कराना, सुद्रकों उत्तरासन रूप जिनोपवीत धारन कराना (तथा) वटु करण विधि (अर्थात्) सस्कारसें ब्राह्मण करना ॥ इत्यादि अधिकार विधि मत्रादि कथन रूप द्वादशम उदय. ॥ १२ ॥ ※ ॥ (तथा) सुन्न महूर्त्तें, प्रथम पुत्रकों, जैनी पन्डितके पास विद्याध्ययन कराना । त द्विधि मत्रादि कथन रूप त्रयोदशम उदयः ॥ १३ ॥ ※ ॥ (तथा) जन्मसें ८ में वर्ष उपरात, ११ में वर्ष पर्यत कन्याका विवाह, (और) जन्मसें १६ वर्ष उपरात पुरुषका विवाह करना (तिसमें) वेदी स्थापन विधि, ७ कुलकर गणपति स्थापन पूजन विधि (तथा) अग्निकी स्थापना अग्नीका तर्पण, दानादिक दैना, लाजा कर्म, ॥ इत्यादिक विधि मत्रादि कथन रूप चतुर्द्दशम उदयः ॥ १४ ॥ ※ ॥ (तथा) साधु) वा) जैन पडिताचार्यके पास सम्यक्त धारन करना, १२ व्रत उचरना, उपधान तपस्या करनी, सघमाला पहरनी (तथा) किस विधिसें भगवानके मदर जाणा,। भगवानकी पूजा करना,। शातिक पोष्टिक पूजाकरना (तथा)सरस रागणीके गायन युक्त, १२ व्रत पूजा, पाच कल्याणक पूजा, । १४ स्वप्न पूजा, ए ग्रह, १० दिग्पाल पूजा । श्रावकका सविस्तर दिन कृत्य, ॥ इत्यादिक विधि मत्रादि कथन रूप, पचदशम उदयः ॥ १५ ॥ ※ ॥(तथा) अत्य सस्कारके विषे श्राद्ध आराधना, चतु शरण क्षामणा, तद्विधि मत्रादि कथन रूप षोडशम उदय· ॥ १६ ॥ ※ ॥ इसी क्रमसें षोडस उदय सविस्तर प्रथम प्रकाशमें वर्णन करुगा ॥ ※ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥※॥ अब गृहस्थीके १६ सस्कार साधु (वा) कुलगुरु, किसको कराना उचित है (सो लिखता हू) ॥※॥

॥※॥ जो ससारकर्म परिग्रह रहितके । द्रव्ये, भावे, सुद्धसाधु हुए हैं। जिनोंकों तो एक व्रतारोप सस्कार (अर्थात्) धर्मोपदेश दैना, सम्यक्तादि ~~ धारण कराना उचित है ॥ शेष १५ सस्कार कराना उचित नहिं ।

(यडुक्तमागमे) ॥ व्रतारोपं परित्यज्य। सस्कारा वगपंचच ॥ गृहीणा नैव कर्त्तव्या। यतिन्निः कर्मवर्जितैः ॥ १ ॥ विज्ञय जोइसं चैव। कम्म संसारिय तहा। विज्ञा मतं कुणतोञ्ज। साञ्जहोइ विराहुते ॥ २ ॥ (इसवास्ते) दूसरा देसविरति कुलगुरु, जैन ब्राह्मण, क्षुल्लकादिकको, गृहस्थका १५ संस्कार कराणा उचित है ॥※॥ ॥※॥ ॥ ※ ॥

॥※॥ अब संस्कार कराणेवाले कुलगुरु कैसे आचारवान चहिये (सो लिखते हैं) ॥※॥

॥※॥ जो अर्हन् मत्रसें पवित्रित, जिनोपवीत, सम्यक्त व्रतादि, धारन किया थका होय (तथा) विनयवान्, बुद्धिवान्, शौचवान्, आचारवान्, दयावान्, शरल स्वन्नावी, शांति परिणामी, दृढ सम्यक्ती, अनेकाती, अर्हंत साधुकी आग्या धारक, विधि मार्गका जाणकार, अल्प कषाई, त्रिकालै देव वंदन, सामायक, करनेवाला। अनेक प्रकारसें धर्मवृद्धी करनेवाला, (इत्यादि) अनेक गुण धारक होय ॥ ※ ॥ ऐसे कुलगुरु जैन पन्डित ब्राह्मणोंकेपासे। जैन गृहस्थोंको सर्व सस्कार विधि, विनय संयुक्त धारन करनी चाहियै ॥ कोईन्नी विद्या विनयसें लीवी फलदायक होतीहै ॥ यह प्रथम प्रकाशका अधिकार दीपन करा ॥※॥

॥ ※ ॥ और दूसरा प्रकाश मध्ये ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ जैन इतिहास, (तथा) ५५ बोलगर्न्नित, ऋषन्नादि २४ न्नगवानका दृष्टांत स्वरूप (तथा) १२ चक्रवर्त्ति, ए वासुदेव, ए प्रतिवासुदेव, ए बलदेव, (इत्यादिकके) माता, पिता, नाम, नगर स्वरूप (तथा) न्नगवान महावीरस्वामीसें लेकर, वर्त्तमान काल तक, सुध कोटिक गच्छ परंपरा आचार्यादिकके स्वरूप, मत मतांतरके स्वरूप, (तथा) सर्वके उपयोगी। स्वप्न, सुकन, महूर्त्तादिक, विचारण स्वरूप (इत्यादि) अधिकार दूसरा प्रकाशमे किंचित विस्तारसें वर्णन करुंगा ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अब हितोपदेश लिखताहूं ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अहो देवाणुप्रियो। अहो प्यारा सर्व जैन न्नाइयो। अहो स्याद्वाद धर्म रागियो। अहो सज्जन पुरुषो। प्रेरणा मदत करके। सर्व

स्थानके। बनैं जिस मुजब धर्म वृद्धी करो। धर्म वृद्धी ग्यान सेती होती है (इससेती) ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य, सुद्र, (जो) जैन विद्या, पढै प ढावै, (तथा) जैन आचार धारन करै, करावै, जिसकों मदत देवो। जिसका बहुत मान्यकरो। (और) जो निराश्रई होय (उसकों) वस्त्र आहारादिकका सहाय्य करके विद्या पढाउ॥ एकेकका गुण ग्रहण करो। एकेकका गुण बधाउ॥ कोई प्रकार जैन विद्याकी वृद्धी करो। अपना धर्म गुरु, कुलगुरुके पास, विनय सयुक्त धर्म कृत्य आचार शीखो। जन्मसें मरण पर्यंत जैन आचार धारन करो। शक्ति मुजब आचार व्यवहारमें चलो। शक्ति मुजब व्रतपच्चक्खाण धारन करो। सर्व नाश कारक निंदा क्लेष छोड़ो। सर्व गच्छ, सर्व जैनीभाइ आपसमें समता स्वभाव धारण करो। सद्बुद्धिसें विचार करके। एकांत दृष्टिराग पक्षपात छोड़ो॥ एकेकके द्वेष स। पर्वतिथीका नाश करके। लीलोती आदिक अनंता जीवोंका घाण मति करो॥ जीव दया सुद्ध पालो। सत्य वचन बोलो॥ अदत्त वस्तु ग्रहण मति करो। परस्त्री अभिलाषा कुशील छोड़ो। अंगीकार करी हुई अपनीस्त्रीपर सतोष धारन करो। परिग्रहकी मूर्छा अल्पकरो। तृष्णा अल्प करके परिग्रहका प्रमाण करो (तथा) पांचु व्रतकों गुणकारी दिग्दिशा परमाण करो। मद्य, मांशादि अभक्ष अनंत काय अवस्य त्यक्त करो। (तथा) १५ कर्मादानादि महा सावद्य व्यापार त्यक्त करके। निरवद्य व्यापार करो॥ भोगोपभोग वस्तुका प्रमाण करो। (अहो भाइयो) अनर्थ दंड त्यक्त करो (अर्थात्) वे अर्थ कोइ पापका भागी मतिहु वो। (तथा) सामायक, पोषध, प्रतिक्रमण, देव पूजन, दान, पुन्य, उप गारकों। करते, कराते, करनें वालाका अनुमोदना, करते रहो॥ अहो अहो चित्त आल्हाद कारक जिन मंदर बनवाउ (तथा) सप्रतिराजा, कुमार पाल राजा दिकका कराया हुवा जीर्ण मंदिरोका उद्धार कराउ। (औ र) कोइस्थानके मिथ्यावादिकके प्रसगसें जिन मंदर अपूज (वा) बंध र हता होय (तो) ऐसा मंदरोंकी अवश्य सभाल रक्खो। जिन द्रव्यकों बधाउ। देव, गुरु, द्रव्यका भक्षण मति करो। मांगके खाना दलद्री पना फेरभी अछा है (परंतु) देव गुरु द्रव्यका भक्षण करके अन

तिव्र क्रोधादि कषाय धारके, परगुण न जाणें १। परकी निंदा करै। अव गुण प्रकासै २। लोककी चाम्नी चुगली करै ३। अणसुनीको सुनीवात कहै। अण देखीको देखी कहै। झूठी शाख न्नरै ४॥ जीव हिंसादि महा पाप कर्म करै ५॥※॥ यह ५ प्रकारै जीव। म्लेछ, कसाई, इत्यादिक नीच गोत्र बाधै। लोकमें निंदनीक डुगछा योग्य हुवै॥※॥ (इस) गोत्र कर्मकी २०कोमा कोडि सागरोपम स्थिति॥ (यह) गोत्र कर्म कुम्नकार समान है (जैसें) कुम्नकार मट्टीका न्नाजन मोटा गेठा अनेक प्रकारका अपनी वुद्धी माफक बनावै (तैसे) गोत्र कर्म उदय। उच, नीच, न्नेदांतर अनेक गोत्र पावै॥ (तथा) गूयते शब्दते उचा वचैः शब्दैर्य तत्गोत्रं॥※॥ इति गोत्र कर्मका स्वरूप कहा॥※॥ ॥※॥ ॥※॥

॥※॥ अब ८ अंतराय कर्मका स्वरूप कहते है॥※॥

॥※॥ अंतराय कर्मकी उत्तर प्रकृति ५॥ दानांतराय १। लाम्नांतराय २। न्नोगांतराय ३। उपन्नोगांतराय ४। वीर्यांतराय ५॥※॥

॥※॥ अथ १८ प्रकारे जीव अंतराय कर्म बन्ध करै॥※॥

॥※॥ करुणा दया रहित हुवै १। दीन दयामणा जीवोंके अंतराय देवै २। असमर्थ जीवोंपर कोप करै ३। अनेकांति गुरूको वदन पूजन निषेध करै ४। तपस्वीको नमस्कार न करै (तथा) वदन, पूजन, निषेध करै ५। जिन न्नक्ति निषेध करै ६। जिन सिद्धांत उत्थापै ७। जिन धर्म धारता विघन करै ८। सिद्धांतकी अवहीलना आशातना करै ९। सुन्नार्थ न्नणता अंतराय करै १०। दान न देवै, (तथा) औरको देता निषेध करै ११। अपना धर्मके मार्ग चालता अंतराय करै १२। परमार्थ कहता हासीकरै १३। विपरीत उपदेशकरै १४। असत्यवचन बोलै १५। अदत्त वस्तु ग्रहण करै १६। कोईजीवके। दान, लाम्न, न्नोग, उपन्नोग, वीर्यमें, अंतराय करै १७। कोई जीवका गुण छिपावै। दूषण प्रकास करै १८॥※॥ यह १८ प्रकारसे जीव अंतराय कर्म बाधे। संसार दलिद्रताका महा दुख न्नोगवै॥ ॥ (इस) अंतराय कर्मकी तीस कोमाकोडि सागरोपम स्थिति (यह) कर्म न्नमारी समान है (जैसे) ᳚ क्रमसें न्नमारी देवे जब मिलै

नंभारी, राजाको हुकम हुवा यका भी। बीचमें अंतराय देनेंवाला होय हुकमसें आधा चौथाई भी देवै जब मिलै (तैसे) अंतराय कर्मके उदय मन माफक, दान लाभादिककी अंतराय रहै। भजो वस्तुकी प्राप्ति न हुवै ॥ (तथा) जीव दानादिक चांतराय वद्धाना पाटनाय एति गच्छ त्यंतरायं ॥ जीवस्य दानादिक कर्त्तु मुद्यतस्य विघात कुर्वतीत्यर्थ ॥ ✲॥

इति ८ अंतराय कर्मका स्वरूप कहा ॥ ✲ ॥ ॥ ✲ ॥

॥✲॥ अहो देवानुप्रियो (इसीतरै) ज्ञानावरण्यादि८ मूलकर्मकी। १५८ उत्तर प्रकृतिका स्वरूप (तथा) कर्मबद्ध होनेंका स्वरूप जानके। शक्ति मुजब। आत्म सुखदाई। शुभ कर्म धारन करो (और) जो अपना कर्म उदयसें कठिन धर्म कार्य धारन करनेंमे न आवै (इस वास्ते) सदा आत्म लघुता करते रहो (परतु) परजीवकी निंदा (तथा) अहित कदापि कालै मति करो (और) ८ कर्मकी १५८ प्रकृति। अपनी खपायेबिगर, जीवको मुक्ति न होती है (इससें) सर्वज्ञ मूल धमराजा। उपशम मंत्री। साधु, श्रावकका, दोमार्ग मध्य शक्तिमुजब सुभकर्म धारके (तथा) कुमता कुटलताकों छोडके। अनुभव मित्रकों साथ लेके। (क्रमसे) सर्व कर्म प्रकृतियोंकों खपायके। अक्षय सुखसिद्धि स्थानकों प्राप्त हुवो। ससार समुद्रसें तिरो ॥✲॥ यह आचार दीपन हितोपदेश कहा ॥ ✲ ॥ ॥ ✲ ॥

॥ ✲ ॥ अब सज्जन विद्वज्जन पुरषोंसे विज्ञप्ती करताहुं ॥ ✲ ॥

॥ ✲ ॥ (मेन) प्रथम चंद्र, सूर्यके प्रकाशवत्, सपूर्ण आचार कर्म का दीपन, नाम मात्र, इस दीपका मे सग्रह किया है (यह) बहुतसे आचार रत्नाकों प्रकाश करनें वाली हे (इस सेती) इसका आचार रत्नाकर दीपका, नाम रक्खा है ॥ (इसमें) अवश्य बारे मासमें। साधु, श्रावक के, जाणनें धारन करनें लायक, कितनेक आचारहै (सो) तो। आवश्यक, आचार दिनकर, विधिप्रपा, कर्म ग्रथादिक, सिद्धातोके अनुसार (रत्नसागरके) प्रथम भाग (तथा) द्वितीय भाग में। सक्षिप्त विस्तार से प्रसिद्धकिये हैं (और) सेष सपूर्ण आचार कर्मका विस्तार स्वरूप। पूर्वोक्त ग्रथोंसें जाणना चाहियै ॥ अहो देवानुप्रियो। अहो सज्जनो। अहो धर्म रागियो। अपना धर्म कृत्य कुलाचार जानके (रत्नसागर२भाग) कुछ अवश्य धारन करोगे। विस्तारण

करोगे। सज्जन पुरषोंका ऐसाहि स्वभाव होताहै। एकेकका गुण विस्तार करै ॥ (जैसें) कमल जलसें उतन्न होताहै (परतु) कमलकी सुगंधका विस्तार दशो दिशमें वायुसें होताहै) ॥ (तथा) सर्व जैनभाई एकात पक्ष छोडके। अपना धर्म रुप आचार धारन करोगे (तथा) आचारवान होके। धर्मवान, धनवान, पुत्रवान्, विद्यामान्, हुवोगे (जभी) मेरा परिश्रम किया हुवा सफलहोगा (और) सिद्धातसें विरुद्ध जो अधको कुछभी लिखनेमें, छापन करनेमें, आयोहोय (तथा) कुछभी भूल चूक। छद्मस्थपणासें, (वा) छापेके दोषसें, रहगई होय (इसवास्ते) सघके सन्मुख त्रिकरण सुद्धै। मिछामि डुकम्ड देताहु॥ आपलोक सुद्धतासें धारण करोगे(तथा) सर्व विद्याशालाउमें पाठक गणकों सुद्धतासें पढावोगे ॥ (अलविस्तारेण)॥

॥※॥ अथ दुरवाकरै सर्व साधु जनकी स्तुति लि० ॥※॥

॥ ※ ॥ धरत धरम मग, हरत दुरित रग, करत सुरुत मति, हरत भरमसी। गहत अमल गुन, दहत मदन वन, रहत नगन तन, सहत घर मसी ॥ कहत कथनसन, वहत अमल मन, नहत करन गण, महति पर मसी ॥ रमत अमित हित, सुमति जुगति जत, चरण कमल नित, नमत धरमसी ॥ १ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥ ॥※॥

॥ ※ ॥ (प्रसंगसे दुर्जन पुरषका स्वभाव लि०) ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ ऊपरसों मीठे मुख, अतर रखत रोष, देखनके गोभादार, भा टौ कैसी चीभ है ॥ गुणियन के गुण टारि, औगुण अधिक धारि, जो लुन कहत कहु तोलुं मनभीभहै॥ तजकेभी प्राण आप, औरसुंकरै सता प, ऐसो खलको स्वभाव, भल्लका सनीभहै। धर्मसी कहत यार, मम्हे जिण वासु प्यार, मानसके रूप मानु, दूसरो दुजीभ है ॥ २ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अंत्य मंगल लि० ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अरिहत नमो भगवत नमो। जिनराय आदीसर नित्य नमो। नमो नाभि मरुदेवा नदन। आदिनाथ जगनाथ नमो ॥ १ ॥ जग हित का रक वाछित दायक। ज्ञान विमल गुण धारनमो। नमो नमो अविचल सु ख दायक। शाति सूरति [illegible]मो ॥ २ ॥ अतिशय धारक सुर नर

पूजत । सकल गुण धार सुदेव नमो । जिन गुण ग्राहक श्रीवर पावत मुक्ति मोहन जयकार नमो ॥ ३ ॥ ४ ॥ इति आदि जिनस्तुतिः ॥ ✻ ॥ इत्युपाध्याय श्री लक्ष्मी प्रधान गणिः । तत्सिष्य । पन्डित मुक्तिकमल मुनिः चकृ आचार ग्रथात् सग्रहीता । विरचिता । आचार रत्नाकर दीपका ॥स०॥

॥✻॥ अथ प्रथम गर्भाधान सस्कार विधि लि०॥✻॥

॥✻॥ (यथा) सजाते पचमे मासे । गर्भाधाना दनतरं । गर्भाधान विधि कार्यो । गुरुभि' गृह मेधिभि ॥✻॥ गर्भाधानके अनतर पाचमें मासे । सुभतिथी, चद्रबलादि, सुभ महूर्त्त देखके । पूर्वोक्त गुण धारक, ग्रहस्थ देशविरति कुलगुरु, स्नान करै । अछा सपेद वस्त्र पहरै । नवकार मत्रसें पवत्रित करके चोटीके गाठ देवे । केसर चदनको तिलक करै । सुवण मुद्रिका अगुलीमें धारन करै । पच परमेष्ठी मत्रसें पवत्रित करके, पचग्रथी युक्त, । मोली मात्रको कंकण बनाके, दहिणें हाथमें लेवे ॥ शील ब्रत (तथा) निवी, एकासण आदिक, व्रत धारन करै ॥ इसी तरै अग पवत्रित (तथा) मगल कार्य करके । गृहस्थीके घरे आवै (तदा) गर्भणी स्त्री (तथा) उसका पति, नख सिखात सुध जलसें स्नान करै । अछा सुची वस्त्र पहिरै । अपना वर्णानुसार, जिनो पवीत, उत्तरासण धारन किया हुवा पवित्र करै । केसरा टिकका तिलक करै (इसी तरै) अग सुध करके । गुरूके पास आवे ॥ (तव) गुरू, आदिजिन की प्रतिमा (तथा) नव पद गट्टा स्थापन करके । विधि सयुक्त वृहत् स्नात्र पूजा करावै । (पीछे) स्नात्र जल । जूदा भाजन में स्थापन करके । अष्टप्रकारी पूजा करावै । (पूजाते) गुरु, स्नात्र जल लेके । गर्भणी स्त्रीके सिचन करै (तदनतर) सर्व जल स्थानकका जल में, सहस उषधी चूरण मिलाके, शातिदेवीके मत्रसें ७ वेरमत्रै ॥ ✻ ॥ ॥ ✻ ॥ ॥✻॥

॥✻॥ अथ शातिदेवीका मत्र लिख्यते ॥ ✻ ॥

॥✻॥ ॐ नमो निश्चित वचसे । भगवते । पूजा महते । जयवते । यशस्विने । यतिस्वामिने । सकल महासपत्ति समन्विताय । त्रैलोक्य पूजिताय । सर्व ‥‥सुर स्वामी‥ ‥‥ अजिताय । सुवन ‥‥ नोद्यताय । स

र्व दुरितौघ नाशन कराय। सर्व्वा शिव प्रशमनाय। दुष्टग्रह भूत पिशाच। शाकनीना प्रमथनाय। तस्येति नाममंत्र स्मरण तुष्टा भगवती। तत्पद भ क्त्या विजया देवी। ॐ ह्रीं नमस्ते भगवति विजये। जय२ परे। परापरे। अ जिते। अपराजिते। जयावहे। सर्व्व सघस्य भद्र कल्याण मंगल प्रदंदे। साधू ना शिव तुष्टि पुष्टि प्रदे जय२। भव्यानां कृतसिद्धे। सत्वाना निर्वृति निर्व्वाण जननी। अभय प्रदे। स्वस्ति प्रदे। भक्ताना जंतूना। शुभ प्रदानाय नि त्योद्यते। सम्यग् दृष्टीना। धृति रति मति बुद्धि प्रदे। जिन शासन रताना। शांति प्रणताना जनाना। श्रीशपत्कीर्त्ति यशो वर्द्धनी। शलिला द्रक्ष २। अनिलाद्रक्ष २। विषात् रक्ष२। विषधरे भ्यो रक्ष २। राक्षसे भ्यो रक्ष २। मारिभ्यो रक्ष २। ईतिभ्यो रक्ष २। स्वापदे भ्यो रक्ष २। शिव कुरु २। शांतिं कुरु २। तुष्टि कुरु २। पुष्टि कुरु २। स्वस्ति कुरु २॥ भगवति गु णवति। जनाना शिव, शांति, तुष्टि, पुष्टि, स्वस्ति कुरु २। ॐ नमो न मो ह्रूं ह्रः यः क्षः ह्रीं फट् स्वाहा ॥※॥ (इस मंत्रसें) सर्व्व स्थानकके जल कों ७ वेर मंत्रके, पुत्रवती सधवास्त्रीके हाथमें देवै। (तव) सधवा स्त्रिया मगल गीत गावै। गर्भवतीकों स्नान करावै। केशरादिक सुगध वस्तुका विलेपन करै। अच्छा वस्त्र आभूषण पहिरावै (पीछे) पतिकेसाथ वस्त्राचलसें गाठ बाधके, गुरूके सन्मुख आवै। नमोस्तु २ कहके सुभासण पर वैठै। पतिके वाम पासे स्त्री वैठै। स्वस्तिक करै॥ (तव) गुरू ग्रंथि योजन मंत्र पढै॥ ※॥ (ग्रंथि योजन मंत्रो यथा)॥※॥ ॥※॥

॥※॥ ॐ अर्हं स्वस्ति ससार सवंधः। वध्वोः प्रतिभार्ययोः। युवयोर वियोगोस्तु। भववासात माशिषा॥ १ ※॥ यह मंत्र ७ वेर पढै॥ एक विवाहको वर्जके, सर्व्व स्थानक (इसीमंत्रसें) स्त्री, भरतारके, वस्त्रमें गाठवाधे (पीछे) गुरू, पद्मासणसें वैठा थका। स्वर्ण, रुप्य, पात्रमे जिन स्नात्र जल (तथा) सर्व स्थानकको जल लेके। कुशाग्रसे, आर्य वेदमंत्रसें मंत्रके। गर्भ वतीप्रतें सिंचन करै॥ ※॥— (आर्य वेद मंत्रो यथा)॥ ※॥

॥ ※॥ ॐ अर्हं जीवोसि। जीव तत्व मसि। प्राणयसि। जंन्म्यसि। जन्मवानसी। ससारादी ससरन्नसी। कर्म्मवानसी। कर्म्म वद्धोसी। भव भ्रा तोसी। भव विभ्रमिपुरसी। पूर्ण पिंडोसी। जातोपागोसी। जायमानो

भागोती। स्थिरोभव। नदीमान् भव। दृद्धिमान् भव। पुष्टिमान् भव। ध्यात जिनोभव। ध्यात सम्यक्तो भव। तत्कुर्यास्रयोनि पुन जन्म जरा मरण सकुल। संसार वासं, गर्भ वास, प्रामोषि। अर्ह्ं ॐ ॥ ॐ ॥ इति ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ इस मत्रसें ७वेर गर्भ वतीकों सिचन करे। (पीछे) प्रथम भरतारकों सुभासणसें उठाके, स्त्रीकों उठावे॥ (जहा) जिन प्रतिमा स्थापन करीहै (उहा) सर्व आवे॥ विधि सयुक्त शक्रस्तवादि पढके। देव वंदन करे। यथाशक्ती, वस्त्र आभूषणादि द्रव्य, भगवानके भेट करे (पीछे) यथाशक्ती स्वर्ण रूप्य वस्त्रादिक, कुलगुरू जैन पन्डितकों दानदेवे॥ (तब) गुरू आशीर्वाद देवै॥ (तद्यथा) ज्ञान त्रय गर्भगतोपि विदन् ससार पारैक निबद्द चित्ता। गर्भस्य पुष्टि पुवयोश्च तुष्टि। युगादि देव प्रकरोतु नित्य ॥ १ ॥ (तिस पीछे) । वस्त्र गाठ मत्र पढके खोलावे॥ ॥ॐ॥ (ग्रथी खुलावण मत्रः) ॥ॐ॥ ॥ॐ॥

॥ ॐ ॥ ॐ अर्ह्ं, ग्रथौ वियोज्यमाने स्मिन्। स्नेह ग्रथी स्थिरो स्तु वा। शिथलोस्तु भव ग्रथी। कम ग्रथी दृढी कृत ॥ १ ॥ इस मत्रका ७ वेर पढके। गठ जोडा खोलावै॥ (पीछे) सर्व धर्म शाला आवे। आचार्य, उपाध्याय, साधु गुरुकों, वदन नमस्कार करे॥ खप मुजब शुद्ध आहार, वस्त्र पात्रादिक देवै (पीछे) अपनें २ स्थानक जावे॥ ॐ ॥

॥ॐ॥ इत्युपाध्याय श्री लक्ष्मी प्रधान गणि॰। तत्सिष्य। प। मुक्ति कमल मुनिः। आचार ग्रथात् संग्रही कृते। आचार रत्नाकर, प्रथम प्रकाशे। प्रथम गर्भा धान उदय सपूर्णम् ॥ ४ ॥ १ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अथ द्वितीय पुसवन सस्कार विधि लि० ॥ ॐ ॥

॥ॐ॥ गर्भाधान रहे पीछे। अष्टमास उपरात। अगोपाग सहितगर्भ होनेसें। स्तन उत्पत्ति सूचक प्रमोदरूप, पुसवन सस्कार विधि करै॥ पूर्वोक्त गुण वेष सहित कुलगुरू। गर्भवतीके भर्त्तारके नाम। सुभ मुहूर्त्त चद्रबलादि देखके। पुसवन सस्कार करै (तद्यथा) रात्रीके चौथे पहर में। सधव स्त्रिया भेळी होके। मगल गीत गाती थको। गर्भवती स्त्रीके, सुगधतेल चूणका मर्दन कराय स्नान करावै (पीछे) सवेरा होनेसें गर्भवतीकों। नवा वस्त्र, आभूषण,

पुष्प मालादि, श्रृंगार कराय, गुरूके पास लावै ॥ नमोस्तु ? कहके वैठे (तब) कुलगुरु (जो) घर देरासर होय (तो) देरासर आगे (और) नहीं यतो । विधि सयुक्त जिन प्रतिमा स्थापन करै (पीछे) गर्भवतीका भर्तार देवर प्रमुख कुलवालासें विधि सयुक्त । प्रथम पंचामृतसें (पीछे) सहस्रोष धी चूर्ण मिल्ये जलसें । (पीछे) सर्व स्थानकका जलसें । वृहत् स्नात्र पूजा विधि करावे ॥ स्नात्र जल, जूदा २ स्वर्ण, रुप्य, भाजनमे स्थापन करै ॥ भगवानके सन्मुख देव वदन करावे (पीछे) सुभासन पर गर्भवतीकु वैठावे । भरतार प्रमुख सर्व कुलवाले वैठै ॥ (पीछे) कुलगुरू स्नात्र जल ले कर कुशाग्रसें वेदमत्र पढताथका। गर्भवतीके शिर, स्तन, उदरादिक पर, सिं चन करै–(वेदमत्रो यथा) ॐ अर्हं । नमस्तीर्थकर नाम कर्म प्रतिवंध स प्राप्त।सुरा सुरेंद्र पूजायार्हते। आत्मनत्व मात्मायुः। कर्म्मवध प्राप्य मनुष्यजन्म गर्भवास वामोसि । तद्भव जन्म जरा मरण गर्भवास विछित्तये । प्राप्ताहर्द्ध र्म्मो । अर्द्ध भक्तः । सम्यक्त निश्चलः । कुल भूषणः सुखेन तवजन्मास्तु भवतु । त्वन्माता पित्रोः कुलस्या भ्युदयः। ततः । शाति पुष्टिः तुष्टिः ऋद्धिः वृद्धिः काता सनातनी । अर्हं ॐ ॥ ※ ॥ इति ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ इस वेद मत्रको । सात ७ वेर पढके स्नात्रजल सिचन करै ॥ (पीछे) सुभासणसें गर्भवती स्त्री, भरतार उठके। अष्ट द्रव्य, जाति फल, नैवेद्य, स्वर्ण, रुप्य, मुद्रा ८ भगवानके भेट करै। नमस्कार करै (तदनंतर) कुलगुरुकों नमस्कार करके । वस्त्र युगल, स्वर्ण रुप्य मुद्रा ८, दान देवै ॥ (पीछे) धर्म्मशाला जाके सुद्ध साधुका योग होय तो वदन करै ॥ शक्ति होय तो सर्व कुल परिवारकी आहारादिकसें भक्ति करै ॥ ※ ॥ (पीछे) स्व कुलाचारानु सारै कुलदेवी पूजन स्त्रीभरतार करै ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ पुंसवन संस्कारमे वस्तु जोइये (सो लि०)॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (श्लोकः) पचामृत स्नात्र वस्तुनी, वस्त्राणि नवा निच । न वीन वस्त्र युग्मच । स्वर्ण मुद्राष्टक तथा ॥ १ ॥ रुप्य मुद्राष्टक चैव । तयो रष्टाष्टकपुनः । पोमशाक्षा फलं जाति । कुश स्तावूल मुतम ॥ २ ॥ ग धा पुष्पानि नैवेद्यं । सधवा गीत मंगल। वस्तु पुसवने कार्य । संस्कारे प्रगु ण पर ॥ ३ ॥※॥ इत्यु [illegible] श्रीलक्ष्मी प्रधान गणिः । तत्सिष्य । पण्डित

मोहनलाल मुनिः। आचार अथा रसग्रही कते। आचार रत्नाकर प्रथम प्रकाशे। द्वितीय पुसवन सस्कार नदय॰ ॥ २ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ तृतीय जन्मसस्कार विधि लि० ॥ ※ ॥

॥※॥ जन्म कालके संपूर्ण मास दिनके विषै। सूतिका घरके नजीक घरमें (जहा) स्त्री, बाल, पशु, प्रचार रहित। एकात स्थानमें। पच पर मेंष्टी जाप सयुक्त रहै ॥ घडीकों देखता रहै। (जिस वखत) बालकका जन्म होय (जब) गुरू, जोतषी, लग्न ग्रहा दिकका प्रमाण सुध्दतासे माता पिता दिकके सन्मुप प्रकट करै। (तब) माता पिता दिक नाल छे दनसें पहले। गुरू, जोतषीकों, यथाशक्ती वस्त्र आभूषणादिक दान देवै (पीछे) नाल छेदन करै (जब गुरू) बालकके माता पितादिक कुल वालाकों (इस माफक) आशीर्वाद देवे (सो लिखैहै) ॥ ※ ॥ ॐ अ र्हं। कुलवो वर्ध्दता सतु। शतश. पुत्र प्रपोत्रा॰। अक्षीण मस्त्वायु र्धन यश सु खच। अर्हंत ॥ ※ ॥ (इति वेदाशी ॥ ※ ॥ (तथा वृत्त) आ दित्यो, रजनी पति, क्षितिसुतः, सौम्य, स्तथा वाक्पतिः। शुक्रः, सूर्य सुतो, विधु, तुद इव, श्रेष्टा॰ ग्रहाः पातुवः। अश्विन्यादिक मम्ल तद परो मेषादि राशि क्रम॰। कल्याण पृथुकस्य वृध्दि मधिकी सतान मप्यस्यचः ॥ १ ※ ॥ (पुन) यो मेरु श्रृगे त्रिदशादि नाथै। दैत्यादि नाथै स्म परिक्षिदेश्च। कुना मृतै स्त स्नपित स्सदैव। आद्यो विदध्यात् कुल वर्ध्दनच ॥ १ ॥ ※ ॥ ऐसा आशीर्वाद देवै ॥ (पीछे) गुरू अपनें घरे जाके। सूतिका कर्म क रणे वाली कुल वृध्द स्त्रीया कू। बालकके स्नान कराणेके अर्थ जलमत्र के देवै ॥ ※ ॥ (जलमत्रो यथा)॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ ॐ अर्हं। नमो र्हत्सिध्दा चार्यो पाध्याय सर्व साधुभ्य॰ ॥ (वृत्त) ॥ क्षीरोदनीरैः किल जन्मकाले। यै मैरुश्रृगे स्नपितो जिनेंद्र। स्नानोदक तस्य भवत्विदच। शिशो र्म्महा मगल पुन्य वृध्द्यै ॥ १ ॥ ※ ॥ इस मत्रसें ७ वेर जलमत्रै। इस जलकों लेजाके कुल वृध्दा स्नान करावै। अपनें कुलाचार रीति नालछेदन करै (पीछे) गुरू अपने स्थानक रहा थका। चदन, रक्त चदन, बिल्व काष्टादिक, जलाके भस्मी करै ॥ (उस) भ

स्मीमें स्वेत सरसु, लवण, मिलाके पोटली करै (और) लोह खं म, रक्तचदन खम, वरुण मूल खम, कोमी, सहित । कृष्ण सूत्रसें गलैमें वाधनें लायक मोरा करके । रक्षा मत्रसें मंत्रै ॥ ※ ॥

॥※॥ अथ रक्षाभिमत्रण मंत्रः ॥※॥

॥※॥ ॐ ह्रीं श्री अंबे । जगदवे । शुभे । शुभ करे । अमु वालं । भूतेभ्यो रक्ष २ । ग्रहेभ्यो रक्ष २ । पिशाचेभ्योरक्ष २ । वैतालेभ्योरक्ष२। शाकनीभ्योरक्ष २। गगन देवीभ्योरक्ष २। दृष्टि दोषेभ्योरक्ष २। जयकुरु२ तुष्टिकुरु २। पुष्टिकुरु २। कुल वृद्धिकुरु २ । श्रीं ह्रीं ॐ भगवती श्री अ विके नमः ॥※॥ (इस मत्रसें) ७ वेर पूर्वोक्त राखमी मत्रके कुलरक्षा स धवाके हाथमें देवै । कुलरक्षा ले जाके वालकके गलैमें वाधे ॥ (कदा चित्) अश्लेषा, जेष्टा, मघा, मूल, गण्डात, भद्राके विषे । वालकका जन्म होय (तो) वालकका पिताकों (तथा) कुल वालाको शोक, सताप, दालीद्र कारक होय (इस वास्ते) पिता (तथा) कुल में वखेरा होय (सो) वालकका नाम निकाले (जहातक) मुख नहि दे खै (और) शातिकर्म पूजा पाठ करावै ॥ विस्तारके भयसें नक्षत्रादिक शा ति प्रकम विधि इहा नलिखी है ॥ सो आचार दिनकरसें (तथा) गुरूके मुखसे जाण लैनी ॥※॥ इत्यु पाध्याय श्रीलक्ष्मी प्रधान गणिः । तत्सिष्य । प । मुक्ति कमल मुनिः । आचार ग्रथा त्सग्रही कृते । आचार रत्नाकर प्रथम प्रकाशे । तृतीय जन्म सस्कारोदयः संपूर्णम् ॥ ※ ॥ ३ ॥ ॥※॥

॥ ※ ॥ अथ ४ सूर्य चंद्र दर्शन संस्कार विधि लि० ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ जन्मसें तीसरै दिवस, कुलगुरू, सूतिकाघरके नजीक घरके विषे (प्रथम) जिन प्रतिमा स्थापन पूजन करके। जिन प्रतिमा सन्मुख स्वर्ण ताम्र मई (वा) रक्तचदन मयी सूर्यकी प्रतिमास्थापन करै । (पीछे) अष्ट द्रव्यसे पूजन करै ॥ ※ ॥ (पूजन मत्रोयथा) ॥ ※ ॥ ॐ घृणि २ नमः ॥ श्री सूर्याय सहस्रकिरणाय । रत्ना देवी कांताय । वेदगर्भाय । यम यमुना जनकाय । जगत्कर्म्म साक्षिणे । पुण्य कर्म प्रभावकाय । पूर्वदिगधी शाय । स्फटिकोज्वलाय । रक्तवस्त्राय । कमल हस्ताय । सप्ताश्व रथ वा

ट्नाय । श्री सूर्य॰ सायुधः । सवाहन । स परिच्छदः । इह जन्म महोछवे आगच्छ १ । इदमर्घ्यं, पाद्य, बलि, चरु, आचमनीय गृहाण १ । सन्निहितो भव १ । स्वाहाः ॥ जलगृहाण १ । गध० । पुष्प० । अक्षतान्० । फलानि० । मुद्रा० । धूप० । दीप० । नैवेद्य० । सर्वोपचारान्० । शातिकुरु १ । तुष्टि कुरु १ । ऋद्धि० । वृद्धि० । सर्व समीहित देहि१ स्वाहा ॥ ※ ॥ इसी तरे सूर्यकी पूजा करके । माता पिता, पुनकों हाथमे लेके । सूर्यका दर्शन करावै (तव) गुरू सूय मत्र पढे ॥ ※ ॥ (सूर्यमत्रोयथा) ॥ ※ ॐ अर्हं सूर्योसि । दिनकरोसि । सहस्र किरणोसि । विभाव सुरसि । तमोपहोसि । प्रिय करोसि । शिव करोसि । जगच्चक्षुरसि । सुरवेष्टितोसि । मुनिवेष्टितोसि । वितत विमानोसि । तेजमयोसि । अरुण सारथी रसि । मार्त्तंडोसि । द्वाद शात्मासि । चक्र वोधवोसि । नमस्ते भगवन् । प्रसीदास्य कुलस्य । तुष्टि, पुष्टि, प्रमोद कुरु १ । शाति हितोभव । अर्हं ॐ ॥ ※ ॥ इस मंत्रकों पढके । वालककों सूर्यका दर्शन करावै (पीछे) माता पुत्र गुरूकों नमस्कार करै (तव) गुरू, सपुत्र माताकों आशीर्वाद देवै ॥ (आशीर्वाद श्लोकः) सर्व सुरासुर वद्य॰ । कारयिता सव्र धर्म्म कार्याणा । भूयात्रि जगच्चक्षुः । मगलस्तसपुत्रद॰ ॥ १ ॥ ※ ॥ (इहा) सूतककर्मगुरूदक्षिणा नलेवै । (पीछे) गुरू जिनप्रतिमा स्थापन (तथा) सूर्य प्रतिमा स्थापन विसर्जन करै ॥ सूतकसेती माता पिताकों प्रतिमा छूणे देवै नही ॥ (इति सूर्यपूजाधिकार॰) ॥ ※ ॥ (पीछे) उसीदिन सध्यासमें । जिनप्रतिमा स्थापन, देववदन कर के । प्रतिमासन्मुख, स्फटिक, रुप्य (वा) चदनमयी चद्रमूर्त्तिस्थापन करै । (पीछे) अष्टद्रव्यसें चद्र पूजाकरै ॥ ※ ॥ (चद्र मत्रोयथा) ॥ ※ ॥ ॐ नमो चंद्राय । शमुशेखराय । षोडस कला परिपूर्णाय । तारागण धीशाय । श्वेत दशवाजि वाहनाय । सुधाकुम्भ हस्ताय । श्रीचद्र॰ सायुध । सवाहन । स परिच्छदः । इह जन्म महोछवे आगच्छ १ । इदं अर्घ्यं, पाद्य, वलि, चरु, आचमनीय, गृहाण १ । सन्निहितोभव १ स्वाहा ॥ जल गृहाण १ ॥ सर्व पूर्ववत् ॥ ※ ॥ इसमासेती अष्टद्रव्यसें पूजा गुरू करावै ॥ (पीछे) चद्रोदय हुवा । मातापुत्रकों चद्रमाका दर्शन करावे । ॥ (तव) गुरू चद्र मत्र पढै (चद्रमत्रोयथा) ॥ ॐ अर्हं । चद्रोसि । निशाकरोसि ।

सुधाकरोसि । चद्रमाअसि । गृहपति रसि । नक्षत्रपति रसि । कौमुदी प ति रसि । निशापति रसि । मदना मित्र रसि । जगजीवन मसि । जैवातिको सि । क्षीरसागरोद्भवोसि । स्वेतवाहनोसि । राजासि । राज राजोसि । औ षधी गर्नोसि । वंद्योसि । पूज्योसि । नमस्ते भगवन् । अस्य कुलस्य ऋ द्धिं कुरु २ । वृद्धि कुरु २ । तुष्टि० । पुष्टिं० । जय० । विजय० । कुरु २ भद्रंकुरु २ । वृद्धिकुरु २ । प्रमोद० । श्री शशांकायनमः । अर्हं ॐ ॥✲॥ (इस) मत्रकों पढके । स पुत्र माताकों चद्रदर्शन करावै । (पीछे) माता पुत्र, कुलगुरुकों, नमोस्तु २ कहके । नमकारकरै ॥ (तव) गुरू आशीर्वाददेवै ॥ (आशीर्वादवृत्त) ॥ सर्वोषधी मिश्र मरीचि जाल । सर्वा पदा सहरण प्रवीणः । करोतु वृद्धि सकलेपि वसे । युष्माक मिडु सतत प्रसन्नः ॥ १ ॥ ✲ ॥ (पीछे) गुरू, जिन प्रतिमा, चद्र प्रतिमा, विसर्जन करै ॥ (इतना विशेष है) जो कृष्णपक्षकी १४ (तथा) अमावस हो य (तथा) वद्दल होय । चद्रोदय उसरात्रकों मालूम न होय (तो) पूज न तो तीसरे दिवस सध्याकों हीज करावै (और) चद्र दर्शन, दूसरै दिन च द्रोदय होय जव करावै ॥✲॥ ॥✲॥ ॥✲॥

॥✲॥ इत्यु पाध्याय श्री लक्ष्मी प्रधानगणिः । तत्सिष्य । प । मोहनलाल मुनिः । आचार ग्रंथा त्सग्रही कृते । आचार रत्नाकर प्रथम प्रकाशे । चतुर्थ सूर्येंडु सस्कारोदय· सपूर्णम् ॥✲॥ ॥✲॥

॥ ✲ ॥ अथ क्षीराशन पंचम संस्कार विधिः लि० ॥ ✲ ॥

॥ ✲ ॥ जन्मसें तीसरै दिवस । चद्र सूर्यका दर्शन कराके (पीछे) वा लककों स्तन पान सस्कार विधि करावै (पूर्वोक्त) गुण वेष धारी कुल गुरू गगादिक सुद्ध जलकूं १०८ वेर मत्रके । वालककी माता का स्तन धोवावै (अमृत मत्रो यथा) ॥ ॐ अमृते । अमृ तो भवे । अमृत वर्षणी । अमृतं श्रावय २ स्वाहा ॥✲॥ (इस) मत्रसें १०८ वेर जलमंत्रकै स्तन धोवावै (पीछे) माता । अपनो जीमणो (वा) मावो, जो स्वर वहतो होय । सो स्तन वाल ककों पहले पिलावै । वाल[illegible] पीते । गुरू, इसमाफक आशीर्वाद देवै (यथा जैन वेद मत्रः) ॥ [illegible]वोसि । आत्मासि । गुरवोसि । शत्रुओ[illegible]

सि । रसज्ञोसि । गंधज्ञोसि । स्पर्शज्ञोसि । सदाहारोसि । कृता हारोसि अभ्यस्ताहारोसि । कावलिका हारोसि । लोमा हारोसि । औदारक शरीरोसि अनेनाहारेण नवाग वर्द्धता । बल वर्द्धता । तेजो वर्द्धता । पाटववर्द्धता । सौ ख्य वर्द्धता । पूर्णायु भव । अर्हं ॥ ※ ॥ इस मत्रसें ३ वेर आशीर्वाद देवै ॥ ※ ॥ इत्यु पाध्याय श्री० (पचम) क्षीरासन सस्कारोदयः संपूर्ण ॥※॥

॥ ※ ॥ अथ षष्ठी संस्कार विधिः लि० ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ जन्मसें छठे दिवस सन्ध्याके समय (पूर्वोक्त) गुण वेष धारी गुरु । प्रसूतिका घरमें आके । षष्ठी पूजन विधि प्रारम्भ करावै । षष्ठी पूजनमें सूत क न गिणें ॥※॥ (यदुक्त) ॥※॥ स्वकुले तीर्थ मध्येच । तथा वश्ये वला दपि । षष्ठी पूजन कालेच ।गणये नैव सूतकं ॥ १ ॥ (इति वचनात्)॥ (प्रथम) सधवा स्त्रीके हाथसें । सूतिका घरमें । गोवर मिट्टीका चौका दिरवावे । सपेट खडी मिट्टीसें पोतावै । आगणमें चोरखुणो मण्डल करै । सपेद पोती भई भीतके ऊपर । केसर, चदन, हिगलू, आदि सुगधी द्रव्यसें । सूती बैठी, ऊभी, तीन प्रकारे । अष्ट माताका स्वरूप आलेखन करै ॥ (पीछे) सधव स्त्रीया सें मगल गीत गवायके । जूदे ३ मत्रसें ८ देवीकी । अष्ट द्रव्यसें पूजा करावै

॥ ※ ॥ ॐ ह्रीं नमो भगवती ब्रह्माणी । वीणा पुस्तक पद्माक्ष सूत्र करे हंस वाहने । श्वेत वर्णे । इह षष्ठी पूजने आगच्छ २ स्वाहा॰ ॥ १ ॥ इस मत्रकों ३ वेर पढके । पुष्पोंसें आह्वान करै ॥ (फेर) इसी मंत्रकों ३ वेर आगच्छ २ के स्थानक (सन्निहितोभव २) कहके । फूलोंसें सन्निधी करण करै ॥ इति सन्निधी करण मत्र॰ ॥ ※ ॥ (तथा) इसी मत्रकू ३ वेर, आ गच्छ २ के स्थानक (षष्ठी पूजने तिष्ट २) स्वाहा ॥ इतिदेवी स्थापन मंत्रः (पीछे) इसी मत्रकों । एकेक वेर पढके । जलचदनादि एकेक द्रव्य चढावै । जि सका नाम उच्चारण करै (यथा) गंध गृन्ह २ । पुष्प गृन्ह २ । धूप गृन्ह २ । दीप गृन्ह २ । अक्षतान् गृन्ह २ । नैवेद्य गृन्ह २ । फल गृन्ह २ । जल गृन्ह २ ॥ (इसीतरै) आठ् माताकी पूजन विधि करावै ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ ॐ ह्रीं नमो भगवती माहेश्वरी । त्रिशूल, पिनाक, कपाल, खट वाग करे । चन्द्राक ललाटे । गजचर्म्मावृते । शेषाहि वद्धे । काची कलापे ।

त्रिनयने । वृषभवाहने । स्वेतवर्णे । इहषष्टी पूजने आगच्छ २ (वा) ... हिता भव २ ॥ तिष्ट २ ॥ गधं गृन्ह २ (इत्यादि पूर्ववत्) ॥✻॥ २ ॥✻॥

। (तथा) । ॐ ह्रीं नमो भगवती कौमारी । षण्मुखि, शूल, शक्ति... वरदा । अभयकरे । मयूरवाहने । गौरवर्णे । इहषष्टी पूजने आगच्छ २ । (शेषपूर्ववत्) ३ ✻॥ ॥✻॥ ॥✻॥

॥✻॥ ॐ ह्रीं नमो भगवती वैश्नवी । शंख, चक्र, गदा, सारंग, खड्ग करे । गरुडवाहने । कृस्नवर्णे । इहषष्टी पूजने आगच्छ २ (शेषपूर्ववत्) ॥ ४ ॥

॥✻॥ ॐ ह्रीं नमो भगवती वाराही । वाराहमुही । चक्र खड्ग, ... मेषवाहने । श्यामवर्णे । इहषष्टीपूजने आगच्छ २ ॥ (शेष पूर्ववत्) ॥ ५ ॥

॥✻॥ ॐ ह्रीं नमो भगवती ईंद्राणी । सहस्र नेत्राय । वज्र... भरण भूषिते । गजवाहने । सुरागना कोटि वेष्टिते । कांचनवर्णे । इहष ष्टी पूजने आगच्छ २ । (शेषपूर्ववत्) ६ ॥✻॥ ॥✻॥

॥✻॥ ॐ ह्रीं नमो भगवती चामुंडे । शिरा, जाल, कराल ... ... टित दशने । ज्वाला कुंतले । रक्तत्रिनेत्रे । शूल कपाल खड्ग ... कारे । प्रेतवाहने । धूसरवर्णे । इहषष्टी पूजने आगच्छ २ ॥ (शेषपूर्ववत्) ॥ ७ ॥

॥✻॥ ॐ ह्रीं नमो भगवती त्रिपुरे । पद्मपुस्तके । ... वाहने । स्वेतवर्णे । इह षष्टीपूजने आगच्छ २ । (शेषपूर्ववत्) ॥ ८ ✻ ॥

(इसी तरेंसें) सूती, वैठी, ऊभी, तीनु प्रकार ... पूजा करावै (पीछे श्लोक पढै) ब्रह्माद्या मातरोप्यष्टौ । ... वाहना षष्टी संपूजना त्पूर्वं । कल्याणं ददताशिशोः ॥ १ ॥ (...) ... न अग्र भूमीमें । केसर चदनादिक सुगधी द्रव्यसें । ... स्थापन करै ॥ (तिस षष्टीकी) दधि, चदन, अक्षत, दोव ... । (पीछे) गुरू पुष्प हाथमें लेके । षष्टी मंत्र पढै ॥ ✻ ॥ ॥ ✻ ॥

॥ ✻ ॥ ॐ ह्रीं षष्टि आम्र वनासीनि । कदंब ... । पुत्रवत ... । नरवाहने । श्यामागी । इहआगच्छ २ स्वाहा ॥✻॥ ... मंत्रसें अष्ट ... के पूजन विधि तुल्य । अष्टद्रव्यसें पूजा करै । (पीछे) गुरू ... स्थानक जावे (और) माता सहित सधव ... गीत गावें । ... त्री जागर्ण करै ॥ (जव) ... ५ (तव) ... आके अष्ट ...

षष्टीदेवीकों विसर्जन करै ॥ (विसर्जनमंत्रः) ॥ ॐ नमो भगवती माहेश्वरी पुनरागमनाय स्वस्थानगच्छ २ स्वाहा ॥ (इसी तरै) प्रत्येक नाम पूर्वक मंत्र पढके। अष्टमातृ (तथा) षष्टीकों विसर्जन करवावै ॥ (पीछे) गुरू पंचपरमेष्टी मंत्रसें जल मंत्रके। लम्कके ऊपर छाटते। वेद मंत्रसें आशीर्वा ददेवै ॥ (वेदमंत्रोयथा) ॐ अर्हंजीवोसि । अनादि रसि। अनादिकर्म्म भागसि। यत्वया। पूर्वं प्रकृति, स्थिति, रस प्रदेशैं, राश्रव वृत्या कर्म्म बद्ध। तद्धो दयो दीरणा सत्ता भि प्रति भूष्वमा शुभ कर्म्मोदय फलंभुके। च्छेदकं दध्याः नचा शुभ कर्म्म फलभुक्त्या विषाद माचरे। तवास्तु संवर वृत्या कर्म्मनिर्ज्जरा अर्हंॐ ॥ (इस मंत्रसें) आशीर्वाद देवै ॥※॥ (तब) माता पितादिक कुलवाला, नमोस्तु२ कहके नमस्कार करै (पीछे) गुरू, अपनें स्थानक जावै ॥ (श्लोकः) चंदनं दधि दूर्वाच। साक्षतं कुंकुमं तथा। वर्णिका हिंगुला धान्यं। पूजोपकरणानिच ॥ १ ॥ नैवेद्य सधवा नार्यो। दर्भोंभूरय नुलेपनं। षष्टी जागरणाख्ये स्मिन्। संस्कारे वस्तु कल्पयेत् ॥२॥

॥※॥ इत्यु पाध्याय श्री लक्ष्मी प्रधान गणिः। तत्सिष्य। पं। मोहनलाल मुनिः। आचारग्रंथात्संग्रही कृते। आचार रत्नाकर प्रथम प्रकाशे। षष्टी जागरण संस्कारोदयः संपूर्णम् ॥※॥ ॥※॥

॥※॥ अथ शुचिकर्म्म संस्कार विधिलि० ॥※॥

॥※॥ स्व स्व वर्णा नुसारे। कितनेक दिन व्यतीत हुए थके शुचिकर्म करै (यदुक्तं) ॥ शुद्ध विप्रो दशा हेन। द्वादशाहेन बाहुज.। वैश्यस्तु षोडशाहेन। शुद्रो माशेन सुध्यति ॥ १ ॥ ※ ॥ पूर्वोक्त गुण वेष धारक कुल गुरू। माता पिता आदिक कुलवालाकों स्नान करवावै। अच्छा वस्त्र आभूषण पहिराके। तिलक करावै। विधि संयुक्त पंचामृतसें जिन पूजा करवावे (पीछे) स्त्री, भरतारके, पूर्वोक्त मनसें गठ जोडा बधाके। जिन प्रतिमाकों नमस्कार करावै ॥ (पीछे) ॥ सधवा स्त्रीया मंगल गीत गावता। वाजित्र बजावता। सर्व जिन मंदर जावै। नैवेद्य फलादि द्रव्य चढावै ॥ धर्मशाला जाके साधु वाकों नमस्कार करै। खप मुजब सुद्ध आहार वस्त्र पात्र देवै। कुल गुरुकों। वस्त्र, तांबूल, आभूषण, द्रव्यादि देवै (पीछे) सर्व अपना कुल

गोत्र वालाकी तांबूल आहारादिकसें भक्ती करै ॥ (पीछै) गुरू, जिन स्ना त्रो दकसें, तीर्थोदकसें, सर्वोषधी जलसें । वालककों स्नान कराके । वस्त्र आभूषण पहिरावै (इहा) जाणना चाहिये । किजो सूतकका दिन पूर्ण होय (तबभी) आद्रा, सिंह योनि, नक्षत्रकेविषै । सुची कर्म संस्कार विधि न करावे ॥ (आद्रा नक्षत्राणि दश यथा) ॥ कृत्तिका भरणी मूल । माद्रा पुष्य पुनर्वसु । मघा चित्रा विशाखाच । श्रवणो दशम स्तथा१॥ आद्राधि स्नानि चैतानि । स्त्रीणा स्नान नकारयेत् । यदि स्नानं प्रकुर्वीत । पुनः सूति न विद्यते ॥ २ ॥ सिंहयोनि धनिष्टाच । पूर्वा भाद्रपदा स्तथा । भरणी रेव तीचैव । गजयोनि विचार्यते ॥ ३ ॥ (कदाचित्) पूर्ण सूतकके दिवश इतना नक्षत्र माहका कोई नक्षत्र होय (तव) एकदिवस अनतर सुचि कर्म्म संस्कार करावै ॥ ※ ॥ (सस्कार वस्तुश्लोकः) ॥ पूजा वस्तु पंच गव्य । निजगोत्रोद्भवो जनः । तीर्थोदकानि संस्कारे । शुचिकर्म्मे निदर्शितः ॥१॥ नैवेद्य सधवा नार्यो । दर्भोभूत्यनुलेपन । षष्टी जागरणाख्ये स्मिन् । संस्कारे वस्तु कल्पयेत् ॥ २ ॥ ※ ॥ ॥※॥ ॥ ※ ॥ इत्यु पाध्याय श्री०। सतम शुचिकर्म्म संस्कारोदय सपूर्णम् ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ अष्टम नामकरण सस्कार विधिलि० ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ सुचिकर्मसें दूसरै, तीसरै दिवस । सुभ महूर्त्तके विषै । कुलगुरू *सुभस्थान वैठके । नवकार मत्रका स्मरण करै (तव)* वालकके पिता, दादा, वगेरादिक, फल फूल हाथमें लेके । जोतषीगुरुकों । अष्टाग नम स्कार करके । कहै (महाराज) पुत्रको नाम स्थापन करो (तव) जो तषी गुरू, आशीर्वाद देके सुभासन वैठे । काष्ट पटके ऊपर । खमीमटीसें जन्म लग्न लिखै । ग्रह स्थापन करै (तदा) वालकके पिता, दादा, वगे रादिक । १२ स्वर्ण मुद्रा, १२ ताम्र मुद्रा, १२ फल, नालेरादि, १२ नागर वेलका पत्र, इस वस्तुवोंसें । द्वादश भुवनकी पूजा करै (और) इसी नव २ वस्तुसें ए ग्रहकी पूजा करै (तव) गुरू । माता, पितादि, सर्व कुल वालोंके सन्मुख । जन्म [illegible] स्थित स्वरूप कहै (सोसर्व सुणें) (पीछै) जोतषी गुरू, [illegible] द्रव्यसें लिखके (जो

लमें वमेरा होय। उसके हाथमें सापे ॥ (तव) यथाशक्ती गुरू जो तषीकों, वस्त्र सुवर्णादि दान देवै (पीछे) गुरु । जन्म नक्षत्रानुसारै । सर्वके सन्मुख । नाम प्रकाश करके । अपनें स्थानक जावे (जोतषी गुरु, इतनी विधि कीया पीछे । (कुलगुरू) माता, पिता दिक, सर्व कुल वालोंकों सन्मुख वैठावे । दोव हाथमें लेके। पच पर मेष्टी मत्र गुण के। जाति गुणोचित नाम प्रकाश करै। (पीछे) गुरू, पालखी आदि स वारीमें (वा) पैदल, वालककों लेके। पुरुष स्त्रीया सर्व परिवार सहित। वा जित्र वाजते। गीत गान करते। भगवानके मदर जावै ॥ विधि सपुक्त २४ महाराजकी पूजा करै। (और) स्वर्ण, रूप्य, मुद्रा, फल, वस्त्रादिक, सर्व चौवी स २ चढावै। ऋषमभल पूजा, विधि (रत्नसागरके) प्रथम भागमें लिखी है। उहांसें जानलेना। पूजा, आरती, कीया पीछे। कुल वृद्धा स्त्री, भगवानके सन्मुख वालकका नाम प्रकाश करै (कदाचित्) मदर कोइ स्थानक न होय (तव) घर देरासरके सन्मुख सव विधि करावै। फिर इसी रीतिसें पोषध शाला आवै (उहा) भोजन मभली स्थानके। मभली पट्ट स्थाप न करके पूजा करै॥ मभली पट्ट पूजा विधि कहैहै॥ लभके की माता (श्री गौतमायनम) ऐसा मत्र उचारण करती थकी। गंध। अक्षत। पुष्प। धूप। दीप। नैवेद्य। फल। जलसें। मभली पट्टकी पूजाकरै ॥ मंभली पट्ट ऊ पर। स्वर्ण मुद्रा १०। रूप्यमुद्रा १०। नालिकेर १०। इत्यादिक स्थापन करके नमस्कार करै ॥ (पीछे) पुत्रसहित स्त्री प्रदक्षिणा देके। यती गुरू प्रतें नमस्कार करै। नव स्वर्ण मुद्रा, करके। नवाग पूजा करै ॥ क्षमा श्र मण पूर्वक दोनु हाथ जोडके कहै ॥ भगवन् वासक्षेपंकरेह ॥ (तव) गुरू। काम धेनु मुद्रा करके। ॐकार, ह्रींकार, पूवक। वर्द्धमान विद्यासें। वासचूर्ण मत्रके। माता पुत्रके मस्तक ऊपर डाले (और) माता पुत्रके मस्तक ऊपर, ॐ ह्रींश्रीं, यह अक्षर सन्निवेष करै ॥ वालकके चदन अक्षत को तिलक करै (पीछे) जो धर्म शालामें साधुका जोग होय (तो) इसी तरै। सर्व साधु मुनिराजके पास जावै। प्रदक्षिणा देके नमस्कार करै। सध मुजव सुद्ध अन्न, वस्त्र, पात्रादि, दान देवै ॥ (और) गृहस्थी कुल गरूकों, यथाशक्ती अलकार वस्त्रादि दान देवै ॥ (पीछे) उसीतरे वा

जिन्नादि महोच्छवसहित अपने घर जावै । उचित व्यवहार कार्यमें प्रवर्त्तै ॥
॥ ※ ॥ इत्युपाध्याय श्री० अष्टम नामसंस्कारोदयः संपूर्णम् ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ (ए) अन्न प्राशन संस्कार विधि लि० ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ जन्मसें छैमास पुत्रको, पाचमें मास कन्याकों । सुन्न मजूर्त्त चद्रवलादि देखके अन्नप्राशन विधि करावै ॥ पूर्वोक्त गुण वेषधारी' जैन पन्मित, गृहस्थके घरे आके । सर्व देशका आया ऊवा धान्य (तथा) फल (तथा) घृत तेलादिक विगय (इत्यादि) जो चीज मिलती होय (सो) इकठी करावै ॥ पूजाकी सामग्री सव तैयार करावै (पीछे) वालकका पिता, वगैरादिक, स्नान करके अग सुचीन्नूत करै । अच्छा वस्त्र पहरै (पीछे) गुरू, मोटा मदिर होय (तवतो) मोटा मंदरमें (नही तो) घरदेरासरमें । विधि संयुक्त । बृहत्स्नात्र महोच्छव करावै (क्रमसें) जूदे जूदे पात्रमें, नैवेद्य, फलादि संपूर्ण नक्ष चीज चढावै (तदनतर) स्नात्रजल, गुरू लेके । वालकके अंगोपागपर सिचन करै ॥ (पीछे) श्री गौतमस्वामी की । अष्ट द्रव्यसें पूजा करावै (तथा) अष्टद्रव्यसें । क्षेत्र देवता, कुलदेवता की पूजा करवावै (पीछे) सधव स्त्रिया मगलगीत गाती थकी (कुलवृद्धा) वालकके मुखमें अन्न कवल देवै (जव) गुरू वेद मन्त्र पढै ॥ ※ ॥

(वेद मंत्रो यथा) ॥ ※ ॥ ॐ अर्हं । न्नगवान र्हन् त्रिलोक नाथ । त्रिलोक पूजितः । सुधारित शरीरोपि । कावलिका हार माहारित वान् । तपस्यन्न पि पारणा विधा विक्षुरस परमान्न न्नोजनात्परमानदा दाप केवल तद्देहि स्रो दारिक शरीरमात्त· त्वमप्या हारय । आहारतते दीर्घमायु रारोग्य मस्तु । अर्हं ॐ ॥ ※ ॥ इस मन्त्रको ३ वेर पढै ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (पीछे) साधुका योग होय (तो) शुद्ध आहार वहिरावै ॥ जैन पंडिताचार्यादि यती गुरूकों । परमान्नसें न्नराऊवा । सुवर्ण, रूप्य, पात्र दान देवै ॥ (और) गृही गुरूकों । सर्व धान्य, घृत, तेल, गुड़, लवणादि (तथा) काश्यथाल, वस्त्र युग्म, दान देवै ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

इत्यु पाध्याय श्री० अ[illegible] मस्कारो दय. संपूर्णम् ॥ ए ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ (१०) कर्ण वेध सस्कार विधि लि०॥※॥

॥ ※ ॥ जन्मसें तीसरै, पाचमें, सातमें, वर्षे शुभ मुहूर्त देखके । कर्ण वेध सस्कार विधि प्रारम्भ करें ॥ प्रथम कुल गुरू अग सुचीकर अच्छा वस्त्र पहरके गृहस्थके घर आवें । पूजा सामग्री सर्व तैयार करावै (पीछे) माता पुत्रकों मगल गीत गान पूर्वक सधवास्त्रीके हाथसें स्नान करवावै । अच्छा वस्त्र आभूषण पहिरावै । विधि पूर्वक भगवानकी स्नात्र पूजा करावै । अष्टद्रव्य चढावै (पीछे) अपना कुलाचार मुजब कर्णवेध प्रारम्भ करे ॥ बालककों सुखासन ऊपर। पूर्व दिशतरफ मुख करके बेठावे ॥ कर्णवेध करती वखत गुरू इसमाफक वेद मन्त्र पढे ॥ ※ ॥ (वेदमन्त्रो यथा) ॥※॥

॥ ॐ अर्हं । श्रुते । अगै । उपागै । कालिक । उत्कालिक । पूर्वगते चूलिकानि· सुत्रैः। पूर्वानुयोगैः। छंदोभि र्लक्षणै निरुक्तै । धर्म्मशास्त्रै र्विद्ध कर्णौ भूयात् अर्हं ॐ ॥ (मुद्रादेस्तु) ॐ अर्हं । तवश्रुति दयाय हृदयं धर्म्माविद्धमस्तु ॥ (इत्येव वाच्य) ॥ इस मन्त्रकों ७ वेर पढे (पीछे) मातापुत्र स्त्रीयांके साथमें धर्मशाला आवै । पूर्वोक्त विधि मुजब ममली पटपूजा करै । गुरूकों नमस्कार करै (तब) गुरू, मातापुत्रके मस्तकपर वासक्षेप करे । (पीछे) अपनें घर आके । सुद्ध साधु मुनिराज होय (तो) निर्दोष आहार वस्त्र पात्रदान देवै (और) गृही गुरूके गलेमें, कणवीर पुष्पोंकी माला पहराके । वस्त्र, स्वर्ण, दान देवै ॥※॥ ॥※॥ ॥◈॥

॥※॥ इत्युपाध्याय श्री० दशमा कर्णवेध सस्कारोदय· सपूर्णम् ॥१०॥※॥

॥ ※ ॥ अथ (११) चूडाकर्म संस्कार विधि लि०॥ ※ ॥

॥※॥ शुभतिथी चद्रवलादि शुभ मुहूर्त देखके । अपना कुलाचार मुजब । ग्राम, वन, पर्वत (तथा) घरके विषै । प्रथम गुरू अगसुद्धी कर अच्छा वस्त्र पहरके आवै (पीछे) माता पिता दिक स्नान करके अग सुचीभूत करै । पुत्रका अग सुचीभूत करै । षष्टी सस्कारमें कहे मुजब, षष्टीपूजा वजके (और) अष्ट मातृपूजन (तथा) पोष्टिक विधि करै । (पीछे) विधि सयुक्त भगवानकी वृहत्स्नात्र पूजा करावै । अष्टद्रव्य चढावै (पीछे) कुल गुरू जिनस्नात्रोदककों । पूर्वोक्त गर्भाधान सस्कारमें कहा हुवा । शांतिदे

वीके मन्त्रसे मंत्रके । वालककै अगोपांग पर सिचन करै ॥ (तिस पीछे) कुल क्रमागत नापितके पासे मुन्न करावै ॥ ब्राह्मणादि तीन वर्णके, शिरके मध्य भागे चोटी रखावै (और) सुद्रके सारो मस्तक मुंम्न करावै । (उस व खतमें) कुलगुरू वेदमन्त्र पढै ॥ ※ ॥ (वेद मन्त्रो यथा)॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ ॐ अर्हं । ध्रुवमायु । ध्रुवमारोग्यं । ध्रुवाश्रियो । ध्रुव कुल । ध्रुव यशो । ध्रुव तेजो । ध्रुवकर्म्म । ध्रुवाच गुण संतति रस्तु । अर्हं ॐ ॥

॥ ※ ॥ इस मन्त्रकों ७ वेर पढै । (पीछे) गीतगानसहित वालकके मस्तकपर, कुलगुरू, तीर्थोदकसिचन करै । पचपरमेष्टी मंत्र पढके । आसनसें उठाके । वालककों स्नान करावै। चदनादिकका विलेपन करावै। अच्छा वस्त्र आभूषण पहिरावै । (पीछे) पूर्वोक्त रीति गीतगान गाते धर्मशाला आके, आचार्य उपाध्यायादि गुरूको नमस्कार करै । पूर्वोक्त विधिसे मंमली पट्टपूजा करै । (पीछे) पुत्रके मस्तकपर वासक्षेप कराकै । अपने घरे आवै ॥ साधुकों वस्त्र पात्र आहारादिक देवै । पण्डित गुरुकों वस्त्र आभूषण दान देवै ॥※॥ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ॥ ॥ ※ ॥

॥※॥इत्युपाध्याय श्री० इग्यारमा चूमाकर्म सस्कारोदय· सपूर्ण ॥११॥※॥

॥ ※ ॥ अथ (१२) उपनयन संस्कार विधि लि०॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ उपनीयते वर्णक्रमा रोहयुक्त्या प्राणी पुष्टिनीयते (इत्युपनयनं) उपनयन (नाम) मनुष्याको वर्ण क्रमारोह युक्तिये करके पुष्टीकों प्राप्त करे तिसकों उपनयन सस्कार कहियै (अर्थात्) स्व, स्व, गुरु उपदिष्ट वेष मुद्राकों धारके, धर्ममार्गमे प्रवेश करै । क्युकि वेषहै (सो) धर्मकी रक्षा करनेंको (तथा) अकृत्यकार्य आचरता लज्जा उत्पन्न होनेंको (मूल) कारणीभूत है ॥ यदुक्त आगमे) ॥ ※ ।. धम्मायरे चरीए । वेशो सव्वत्थ कारण । सजम लज्जाहेऊ । सद्दाण तहय साहूण ॥ ※ ॥ तथाच श्रीधर्मदास गणि विरचिते उपदेश मालाया मप्युक्त ॥ ※ ॥ धम्मं रक्खइ वेशो सकइ वेशेण दिक्खिउमि अह । उम्मग्गेण पमत । रक्खइराया जिणवउव्व ॥ १ ॥ ※ ॥ (इसवास्ते) इक्ष्वाकुवशी, नारदवंशी, प्राच्य, उदीच्यादिवशी ब्राह्मण वर्णवाले (जिनोपवीत) जिनकी ग्रहस्थ मुद्रा धारण करै (तथा)

इक्ष्वागुवंश, हरिवंश, सूर्यवंश, चंद्रवंश, क्षत्रिय वंशा, दिकमें उत्पन्न हुवा जिन, चक्री, वलदेव, वासुदेव, श्रेयास, दशार्ण भद्रादि, क्षत्रिय वर्ण वाले, गृहस्थ पणामें जिनोपवीत धारन करे ॥ जिन, चक्री, वलदेव, वासुदेव, अवश्य पूर्वोक्त क्षत्रिय वंशोंमें उत्पन्न होतेहै । (परंतु) अंत, प्रांत, तुच्छ, दलिद्र, भिक्षाचर कुलोंमें, उत्पन्न न हुवा । न हुवै । न हुसी ॥※॥ (यडुक्तमागमे) ॥ देवाणुप्रिया । नएय भूय । नएय भव्व । नएय भवि स्सइ । (जन्हे) अरिहंतावा । चक्क वट्टीवा । वल देवावा । वासु देवावा । अंत कुलेसुवा । पंतकु० । तुच्छकु० । दरिद्द कुले० । भिक्खायरकु० । नाई सुवा । नाइंतिवा । नाइस्संतिवा । एवं खलु अरिहंतावा । चक्कवट्टीवा वलदेवावा, वासुदेवावा, उग्ग कुलेसुवा, भोग, राइन्न, नाय, खत्तिय, इक्खा गु, हरिवंश कुलेसुवा । अन्नयरे सुवा । तहप्पगारेसु विसुद्धजाइ कुलवंशे सुवा । आयसुवा । आयंतिवा । आयस्संतिवा । (इत्यादि) सुत्र पाठसें । अवश्य जिन, चक्री, आदिक क्षत्रिय वंशमें होय (तथा) कामदेव, कार्तिक, सुदर्शन सेठ आदि, वैश्यवर्णवाले । जिनो पवीत धारन करै (तथा) आनंद, सद्दाल पुत्रादिक, सुद्रवर्णवाले । जिनोपवीतके स्थानक. उत्तरासंग धारनकरै ॥ यह जिनोपवीतहै (सो) जिनकी गृहस्थ मुद्राहै (इसवास्ते) जैन गृहस्थाकों जिनोपवीत धारन करना अवश्य चाहियै ॥ (और) (जो) बाह्य, अभ्यंतर, ग्रंथीरहित । द्रव्ये, भावे, सुद्ध साधूपणा धारनकरना (सो) भगवानकी साधु मुद्राहै ॥ (जिसनें) साधु मुद्रा धारनकरी है (उसकों) जिनो पवीत धारन करना उचित नहि (क्युंकि) ज्ञान, दर्शन, चारित्र, रत्नत्रयकों (तथा) नव ब्रह्मचर्य गुप्तिकों । सर्वे सुद्धपणें धारन किया है । (और) अहो निशि तद्भावना भावित तन्मई जिनोंका चित्त होरहाहै (इससेती) ससार कर्म सव त्यक्त करके (जो) सर्वे गुण धारन कियाहै (सो) समुद्रके, सूर्यके, तुल्यहै ॥ (जैसें) समुद्रके जल पात्र रखनेका प्रयोजन नहि (और) सूर्यके दीपक रखनेंका प्रयोजन नहि । (इसीतरै) साधुवोंकों जिनो पवीत धारन करनेंका प्रयोजन नहि (यडुक्त) अग्नि देवोस्ति विप्राणां । हृदे देवास्ति योगिनां । प्रतिमा स्वल्प बुद्धीनां । सर्वत्र विदितात्मनां ॥ १ ॥ (इससेती) जो देशविरति श्रा

वक तीन रत्न, नव ब्रह्मगुप्तिकों लेशमात्र सुणनें, धारनें, सेती । सूत्र मुद्रा रूप (जिनोपवीत)बाह्य हृदयमें धारन करै ॥ (प्रतिमा स्वरूप बुद्धीना) इति वचनात् ॥ ※ ॥ ॥ ॥ ※ ॥ ॥※॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अब जिनो पवीत बनानेका (तथा) धारन करनेका परमार्थ कहते हे ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अपनी हथेली ऊपर । सुत्रका ८४ आटा देनेंसें । जितना लंवा सुत्रहोय तिसकों त्रिगुणा करै । जव २८ हाथरहै (तथा) त्रिगुणा किया हुवाकों और त्रिगुणा करै (तव) नवहाथ किंचित् उपरात सुत्र रहै । (इसकोंवटके) तीन लम्मी जिनोपवीत वणावै । जिसके नव तंतू गर्भित, त्रिसूत्र मई एक अग्रदेवे । (ऐसी तीन गांठकी जिनोपवीत ब्राह्मण धारण करै ॥ (इसका परमार्थ यहहै) । जैनी ब्राम्हण, नव ब्रह्मगुप्ति युक्त ज्ञान, दर्शन, चारित्र, रूप ३ रत्न । आप धारन करै । अन्यपुरषाकों धारन करावै । (तथा) अन्यपुरषाकों । जिनोपवीतादि धर्म धारन करनें कों। आज्ञा उपदेश करै ॥३॥ (इसवास्ते) ब्राम्हणाके जिनो पवीतमें ३ग्रंथी कही (और) क्षत्री वर्णके जिनोपवीतमें दोय गांठ होय ॥ आपधारण करै । अन्यकों धारनकरावै (परतु) आग्या उपदेशका अधिकार क्षत्रीकों नहि (और) वैश्यके एक गांठकी जिनोपवीत होय । (निकेवल) ज्ञान दर्शनकी भक्तीसें श्रावक आचार आपधारन करै (परतु) असामर्थ्यपणें सेती अन्यकों धारन करानेंका (वा) आग्या करनेंका अधिकार नही (और) सुद्राकों निकेवल ग्रंथी रहित उत्तरासण रखनेंकी आग्या है (किसवास्ते) अग्यानपणें सेती निसत्वपणें सेती अधम जातित्व सेती (निकेवल) भगवानकी आग्या प्रमाण करै (परतु) ज्ञान, दर्शन, चारित्ररूप, रत्नत्रयी आपभी धारन करनेंकों असमर्थ है (इसवास्ते) उत्तरासण धारण करनेंकी आज्ञा है (और) अन्य मतमें यज्ञोपवीतका प्रमाण युगा ऊपर कहा है (यथा) कृते स्वर्णमय सूत्र । त्रेताया रौप्य मेवच । द्वापुरे ताम्र सूत्रंच । कलौ कार्पास मिष्यति ॥ १ ॥ (जिनमतेतु) सर्वकाले जैन ब्राम्हण ३ लमी सोनेंकी जिनोपवीत धारन करै ॥ असमर्थ होय (तो) सूत्रादिककी धारण [illegible]) क्षत्री, वैश्य, सुद्र, सदा [illegible]

वीत धारन करै ॥ ※ ॥ यह जिनोपवीत बनानें रसनेंकी युक्ती कही ॥※॥

॥※॥ अथ जिनोपवीत धारन करनेकी विधि कहतेहैं ॥※॥

॥ ※ ॥ प्रथम शुभलग्न शुभमुहूर्त्त देखके यथाशक्ति ५ दिन ७ (वा) ९ दिन। तैलाभ्यंगादि मर्दन कराके मंगलगीत गानपूर्वक उपनयीकों स्नान करवावै (पीछे) शुभलग्न मुहूर्त्तके दिन। संपदानुसारै। बाजै गाजैसें महोत्सव सहित गुरूकेपास आवै (तब) पूर्वोक्त गुण वेषधारक गृही गुरू (वा) ब्रह्मचारी गुरू, चौखूणी वेदी स्थापन करे। ऊपर समवसरण भाव गर्भित चौमुख जिनकी स्थापना करै (पीछे) अखंड सपेद वस्त्र धारन किया थका उपनईकों, विधिसयुक्त भगवानकी स्नात्रपूजा करावें। अष्टद्रव्य चढावै। (पीछै) गुरू, नालेर, अक्षत, उपनयीके हाथमें देके, तीन प्रदक्षिणा दिरावे॥— पश्चिमदिशा भगवानके सन्मुख बैठाके, आदीश्वर स्तवन पूर्वक शक्रस्तव पढावै (इसीतरै) तीन प्रदक्षिणा देके तीनोंदिशा तरफ भगवानके सन्मुख चैत्य वंदनादि करावै। (पीछे) नाना प्रकार मंगलगीत वाजित्रादिकको विस्तारण करकै, चतुर्विध श्री संघ, को नमस्कार करावै (तिस पीछे) तीन प्रदक्षिणा दिराय। नमोत्थुण, पाठ सर्व कह्याके अनंतर (गुरू) जिनोपवीत प्रारम्भ हेतु वेदमंत्र उच्चारण करै (तब) उपनयी शिष्य फल फूल हाथमे ले। दोनु हाथ जोमके भगवान के सन्मुख ऊभो थको सुणें॥ (वेदमंत्रो यथा)॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ ॐ ह्रीं अर्हद्भ्योनम। ज्ञानाय नम। दर्शनाय नमः। चारित्रायनमः। संयमायनमः। सत्यायनमः। शौचायनमः। ब्रह्मचर्यायनम। आकिंचिन्याय नम। तपसेनम। शमायनम। मार्दवाय नम। आर्जवायनमः। मुक्त्यैनमः। सघायनम। सैद्धांतिकेभ्योनमः। धर्मोपदेशकेभ्योनमः। वादिलब्धिभ्योनमः। अष्टांगनिमित्तज्ञेभ्योनमः। तपस्विभ्यो नमः। विद्याधरेभ्यो नमः। इहलोक सिद्धेभ्यो नमः। कविभ्योनम। लब्धिधरेभ्यो नमः। ब्रम्हचारिभ्यो नम। निःपरिग्रहेभ्योनम॥ एतेभ्यो नमस्कृत्याय प्राणी प्राप्त मनुष्य जन्म प्रविशति वर्णाक्रम। अर्हं॥ ऐसा मंत्र उच्चारण करके (फेर) पूर्ववत् त्रि प्रदक्षिणा दिरावै। चारेदिशा

सन्मुख आदीश्वर स्तवना पूर्वक, णमोत्थुण० । सर्वपाठकहै । यथा शक्ती निवी, एकासणादिक पच्चक्खाण करावै । (पीछे) उपनयीकों भगवानके वाम पासे स्थापन करै । सर्व तीर्थोदकको (पूर्वोक्त) अमृत मन्त्रसे मन्त्रके । कुशाग्र सेती उपनयीकों सिंचन करै । (पीछे) परमेष्टी मंत्र पढै । णमो र्हं त्सिद्धाचार्यो पाध्याय सर्व साधुभ्य. (असाकहके) पूर्वदिश, जिन प्रतिमा सन्मुख जिनो पवीत स्थापन करै । (पीछे) केसरचंदनकी कटोरी हाथमे ले के वेदमन्त्रसें मंत्रै ॥※॥ (यथा) ॥※॥ ॐ नमो भगवते । चंद्रप्रभ जिनेंद्राय शशांक हार गोक्षीर धवलाय । अनंत गुणाय । निर्म्मल गुणाय । भव्य जन प्रबोधनाय । अष्टकर्म मूल प्रकृति संशोधनाय । केवला लोका वलोकित सकल लोकाय । जन्म जरा मरण विनाशनाय । सुमंगलाय । कृत मंगलाय प्रसीदः भगवन् इहचंदने नामामृता श्रवण कुरु २ स्वाहा ॥ ※ ॥ इसमंत्र सें चंदन मंत्रके । ललाटे, तिलक रूप । हृदये, जिनोपवीतरूप । कन्धे, कटि मेखलारूप । चंदनकी रेखाकरै (जब) उपनयी, जिनो पवीतकों गुरू के सन्मुख रखकै । ३ वेर । नमोस्तु २ कहताथका । धरतीपर मस्तक नमा के नमस्कार करै । दोनु हाथ जोडके (असा कहै) भगवन् वर्ण रहितो स्मि । आचार रहितोस्मि । मंत्र रहितोस्मि । गुण रहितोस्मि । धर्म्म रहि तोस्मि । शौच रहितोस्मि । ब्रह्म रहितोस्मि । ततः देवर्षि पित्र तिथि क र्मके विषै नियोजन करो (ऐसा कहके फेर गुरूको नमस्कार करै (तब गुरू) उपनेय शिष्यकी शिखा धारन करके ऊंचो उठावै (और) वेद मंत्र पढै (यथा) ॥ ॐ अर्हं देहि निमग्नोसि । भवार्णवे । तत्कर्षति त्वा । भगवतो र्हंत. । प्रवचनैक देश रज्जुना । गुरु स्तदुत्पत्स्यष्ट प्रवचना दा य । श्रद्धाहि । अर्हंॐ ॥ यह मंत्र पढके पूर्वदिश भगवानके सन्मुख उप नयीकों ऊभारखै (पीछे) गुरू, मुंज मेखला दोनु हाथमें लेके । वेद मंत्र पढै ॥ (यथा) ॐ अर्हं आत्मनः देहिनः । ज्ञाना वरणेन बद्धोसि । गोत्रेन ब द्धोसि । अंतरायेण बद्धोसि । कर्म्माष्टकेन प्रकृति, स्थिति, रस प्रदेशै र्बद्धोसि तन्मोचयति त्वा भगवतो र्हंत· प्रवचन चेतना तद्बुध्य स्वमीह मुच्यता तव कर्म्म बंधन मनेन मेखल [illegible]मनेन । अर्हं ॐ ॥ ※ ॥ यह मंत्र पढके उप नयी शिष्यकों [illegible] कटीमें धारण करावै (तब) उपनयी

शिष्य नमोस्तु कहतो थको गुरूके पगामें पडके नमस्कार करै ॥ ॥※॥

॥※॥ मुजमेखलाको प्रमाण कहतेहै ॥※॥

॥※॥ ३ ततुकी वणी हुई। मुज ८१ हाथ लेके। ए लडी वटै (ऐसी) मुजमेपला ब्राह्मणके कमियामें वधावै (तथा) क्षत्रीके ५४ हाथ मुंज कों ६ लमी वटके वधावै (तथा) वैश्यके २७ हाथ मुजकों ३ लमीवटके वधावै। (ऐसें) ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्यके। ए गुणी, ६ गुणी, ३ गुणी, मुजमेख लाको प्रमाण जाणनो (और) जिनोपवीत, कोपीन, मुजमेखला, धारन करनेका उत्सव। गीत गान मगल रात्री जागर्ण पहलै दिनकरै (पीछे) गुरू, १ वेतभर चौमी। देढ हाथ लवी। कोपीन दोनु हाथमें लेके। (वेद (मत्र पढै)। (यथा) ॐ अर्हं आरमन देहिनः। मति ज्ञानावरणेन। श्रुत ज्ञानावरणेन। अवधि ज्ञानावरणेन। मन पर्याया वरणेन। केवला वरणेन। इद्रिया वरणेन। चित्तावरणेन। आवृतोसि। तन्मुच्यता तवावरण मनेनावरणे न। अर्हं ॐ॥※॥ इस वेदमत्रको ७ वेर पढके, उपनयी शिष्यके कडीमें को पीन वधावै (तव) उपनयी शिष्य नमोस्तु कहतो थको गुरूके पगामें पमै नमस्कार करै (पीछे) तीन ३ प्रदक्षिणा देकर चारु दिश तरफ आ दीश्वर स्तवना पूर्वक शक्रस्तव पढै। देववदन करै॥ (पीछे) शुभलग्नकी वखत आर्गेसे (पूर्वोक्त) जिनो पवीत अपनें हाथमें लेके। उपनयी शिष्य दोनु हाथ जोमके ऐसा वचन कहै॥ हेभगवन् में वर्ण रहित हु। ज्ञानरहि तहु। क्रिया रहितहु। (इसवास्ते) मेरेकों ज्ञान क्रियाके विषे आरोपण करो (ऐसा कहके) नमोस्तु २ कहतो गृही गुरूके पगामे पमै (तव) गुरू परमेष्टी मत्र पढके, शिखा कालके उत्नो करै (और) जिनो पवीत अपनें हाथमें लेके। गुरू वेद मत्र पढै॥ (वेद मत्रो यथा) ॐ अर्हं नव ब्र ह्म गुप्ती। सकरण। कारणानुमती। धारयो। तदक्षय मस्तु॥ तेन त स्व पर, तरण तारण समर्थों भव। अर्हं ॐ॥※॥ (क्षत्रियकों) करण, कारणा भ्या, धारवे स्वस्य तरण समर्थो भव (वैश्यकों) करणेन धारये स्वस्य कठे जिनो पवीत सस्थाप्य तरण समर्थों भव॥※॥ इति। (तिस पीछे) उप नयी शिष्य तीन प्रदक्षिणा देके। नमोस्तु २ कहतो पावोंमें पमे। नमस्कार करै। (तव) गुरू, नित्यारग पारगो भव। ऐसा आशीर्वाद देवै (और)

पूर्व दिशाके सन्मुख वामपासे स्थापन करके । सर्व जगत्रमे सारभूत । चिंतामणि रत्नके समान । वांछित पूरण हार । मोक्ष सुखदेण हार । (ऐसा) पंच परमेष्टी मन्त्र, ३ वेर, सुगंधी द्रव्यसें पूजित दहिणे कानमें सुणावै । जिनोपवीत धारकके मुखसें भी उच्चारण करावै ॥※॥ (यथा)॥ णमो अरिहंताण। णमो सिद्धाणं। णमो आयरियाण । णमो उवज्झायाणं । णमो लोए सव्व साहूण ॥ इतिपरमेष्टीमंत्रः ॥ (पीछे) इस परमेष्टी मन्त्रकी अचिंत्य महिमा गुरू सुनावै (ऐसा कहै) हे शिष्य । इस मन्त्रका, सदैव सपूर्ण मंगलकार्यमें, अवश्य ध्यान करते रहणा (जिससे) तुमारे सपूर्ण सिद्धी होगा (यदुक्त) ॥ नवकार इक्क अक्खर । पाव फेमेइ सत्त अयराण । पन्नासं च पएण । सागर पणसय समग्गेण ॥ १ ॥ जोगुणइ लक्खमेगं । पूएइ विहीइ जिण नमुक्कारं । तित्थयर नाम गोअं । सो वंधइ नत्थिसंदेहो ॥२॥ अठ्ठेवय अठ्ठसया । अठ्ठसहस्सच अठ्ठकोमीउ । जो गुणइ भत्ति जुत्तो । सो पावइ सासयं ठाणं ॥ ३ ॥ सिद्धांतो दधि निम्मंथा । नवनीत मिवोद्धुतं । परमेष्टी महामन्त्र । धारयेत् हृदि सर्वदा ॥ ४ ॥ सर्व पातिक हर्त्तार । सर्व वांछित दायकं । मोक्षा रोहन शोपान । मन्त्र प्राप्नोति पुण्यवान् ॥५॥ अनेन मंत्र राजेन । जातस्त्वं विश्वपूजितः । प्राणांतेपि परित्याग । मस्य कुर्यान्न कुत्र चित् ॥६॥ गुरु त्यागे भवेद्दुःख । मंत्र त्यागे दलिद्रता । गुरु मंत्रं परित्यागे। सिद्धोपि नरकं व्रजेत् ॥ ७ ॥ इति ज्ञात्वा सुगृहीत । कुर्यान्मंत्र ममुसदा । सिद्धयंति सर्व कार्याणी । तवास्मा न्मन्त्रतो ध्रुवं ॥ ८ ॥ (इत्यादि) पच परमेष्टी नवकार मन्त्रकी अचित्य महिमा सुनके, अंतरंग भक्तिसें धारनकरै । (और) वहुत खुसी होके । तीन प्रदक्षिणा देके । नमोस्तु २ कहता । गुरूकै पगामे पडै । नमस्कार करै । (यथाशक्ती) सोनेकी जिनो पवीत (तथा) वस्त्रादिक भेट करै । (यथाशक्ती) स्वामी वात्सल्य करै । सर्व संघकी, आहार तांबूलादिकसें भक्ती करै । साधु मुनिराजकों, सुद्ध आहारादिक दान देवै ॥※॥ इति उपनयन व्रत बंध विधि ॥

॥ ※ ॥ अथ व्रतादेश विधि कहतेहैं ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ जिनोपवीत ... के अनंतर (भी प्रथम) ... गल गीत गान पूर्व ... चौमुख जिनके ... मंत्र

के योग थके, व्रतादेश प्रारम्भ करै (तिसका यह क्रमहै) गृही गुरू, उप नीत पुरुषका रेशमी, सूतू, वस्त्र, दूरकराके (और) मुंजमेखला, कोपीन, जिनो पवीत, वल्कल वस्त्र, धारनकराके स्थापन करै। हाथमें पलाशादि का दण्ड देवै ॥ वेदमंत्र पढै—(वेद मंत्रोयथा)—ॐ अर्हं ब्रह्मचार्यसि। ब्रह्म चार्योसि। अवधि ब्रह्म चर्योसि। धृत ब्रह्मचर्योसि। धृत जिन दंमोसि। बुद्धोसि। प्रबुद्धोसि। धृत सम्यक्तोसि। दृढ सम्यक्तोसि। पुमानसि। सर्व पूज्योसि। तदवधि ब्रह्मव्रत। आगुरु निर्देश धारयेः। अर्हं ॐ ॥ ※ ॥ ऐसा मंत्र पढके काष्ट (वा) मानके आशण पर, उपनेयी शिष्यकों स्था पन करें। तिसके दक्षिणें हाथमें (सुवर्ण मुद्रिका) पहरावै। मंत्र पढै (मुद्रिका मंत्रो यथा) पवित्र दुर्लभलोके। सुरासुर नृवल्लभ। सुवर्णहृति पापानि। मालिन्यंच नशशय ॥१॥※॥ (पीछे) गुरू परमेष्टी मंत्र पूर्वक अष्टद्रव्यसें भगवानकी पूजा करवावै (पूजाते) उपनीत शिष्य। तीन प्रदक्षिणादेके। नमोस्तु ३ कहतो थको। गुरूकों नमस्कार करै (और) दोनु हाथ जोमके शिष्य प्रश्न करै ॥ गुरू उत्तरदेवे (यथा)

शिष्य—हे भगवन् उपनीतोह ॥ ※ ॥ गुरू—सुष्टु उपनीतोभव ॥
शिष्य— कृतोमे व्रतबधः ॥ ※ ॥ गुरू—सुजातोस्तु ॥
शिष्य—जातो अह ब्राह्मण (वा) क्षत्रिय (वा) वैश्यः ॥
गुरू—दृढव्रतोभव। दृढसम्यक्तोभव ॥ दृढाचारोभव ॥
शिष्य—हे भगवन् आप ब्राम्हण कियो (तो) मेरे लायक आदेश दीजे ॥
गुरू—भगवानकी आज्ञा मुजब आदेश देताहु ॥
शिष्य—भगवन् मया स्वय करणीय ॥※॥ गुरू—करणीय ॥
शिष्य—भगवन् मया अन्यै कारतव्य ॥ ※॥ गुरू—कारतव्य ॥
शिष्य—भगवन् मया अनुज्ञातव्या ॥※॥ गुरू—अनुज्ञातव्या ॥

(इसमाफक) ब्राम्हण शिष्यकों। करणा, करावणा, आज्ञा उपदेशदेणा, ॥ ३ आदेश देवै ॥ (और) क्षत्रिय वर्णवालेकों, पूर्वोक्त सर्व प्रश्नोत्तर करकै। करणा, कराणा, दो आदेश देवै ॥ क्षत्रियकों, आज्ञा उपदेशका अधिकार नहि (और) वैश्यकों, पूर्वोक्त सर्व प्रश्नोत्तर करके। करणा, ऐसा एक आदेश देवै। समादेश, आज्ञा उपदेशका अधिकार नहि ॥ इतना विशेष समझणा॥

॥ ※ ॥ अथ ब्राह्मण वर्णादेशः कथ्यते ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ गुरू—परमेष्टी नवकार मंत्रका सदैव स्मरण करते रहणा । कभी नवकार मन्त्रसे विमुख न होना ॥ तीनुं कालमें अवश्य जिनेश्वर देव की, यथा शक्ति द्रव्ये भावे पूजा भक्ती करते रहणा ॥ निग्रथ साधू, आचार्यादिककी, वेयावच्च भक्ती करते रहणा ॥ सामायक, प्रतिक्रमणादि धर्म कृत्य सेवन करते रहणा ॥ जैनाचार्यके पास अपना धर्म कृत्य विनय संयुक्त सुणना, शीखना ॥ जीव दया, सत्य वचनादि, व्रत, पचक्खाण धारन करना ॥ परस्त्री, परधनका, त्याग करना ॥ मदरा, मांश, अभक्ष, अनत कायादिक, वस्तूका त्यागकरना ॥ रात्री भोजन (तथा) विदलचीजका त्याग करना ॥ जिनो पवीत (तथा) स्वर्ण मुद्राकों कभी त्याग न करना (प्रायें) क्षत्री वैश्याके घरमे अन्यहाथका किया भोजन न करना ॥ साधर्मी स्ववर्ण वालैके घरे । स्व वर्ण, स्व धर्म वालैके हाथका (वा) अपने हाथका किया भोजन करना ॥ नीच, सुद्रादिक, अन्यधर्मीके पास याचना न करना ॥ शुद्ध सम्यक्त व्रतादि गुण धारन करना ॥ मिथ्या शास्त्र मिथ्या मत को परिचय त्यक्त करणा ॥ नाना आर्य देशामें गया थका, त्रिकरण सुद्धै शौच मार्गमें चलना ॥ गृही सस्कार, जिन पूजा, शांति कर्मादिक, जैनाचार, धारन करते, कराते रहना ॥ स्वधर्मी जैनी भाइयोंको विद्याअभ्यास कराते रहना । स्वधर्म आग्या उपदेश देते रहना ॥ विनय गुणधारके स्वधर्म वृद्ध्यर्थ आत्म लघुता करना ॥ (परतु) कषायादिक धारके, कभी परनिंदा नकरना ॥ सर्वका गुण ग्रहण करना । औगुण त्यक्त करना ॥ कर्म, चेतनका, यथा वस्थित स्वरूप भावन करते रहना ॥ ※ ॥ ॥

इति ब्राह्मण वर्णा देशः ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ क्षत्रिय वर्णा देशः कथ्यते ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ परमेष्टी नवकार मन्त्रका स्मरण करना ॥ तीनुकाल देव वंदन भगवतकी पूजा भक्ती करना ॥ सम्यक्तादि बारै व्रत धारन करना । यथा शक्ती अतीचार रहित शुद्ध पालना ॥ रात्री भोजन, मदिरा मांश, अभक्ष, अनत काय, का त्याग करना ॥ जिनोपवीत कभी त्यक्त न करना ॥ जै

न साधु, जैनाचार्य, जैन पन्डित, श्रावक, सम्यक्तीका आदर करना। यथा शक्ती धर्म कृत्य सेवन करना, सुणना, सीखना, ॥ अन्य लिंगी ब्राह्मण (तथा) अन्य देवादिककों बाह्य व्यवहार नयसें नमस्कार करना (परतु) धर्म समझके नमस्कार परिचय न करना। दुष्ट निग्रह, युद्धादिककों वर्जके (प्रायें) जीवहिंसादिक पापकर्म न करना, नकरावना ॥ (क्षत्रियाको आचारहै) श्रेष्टकों पालै (और) दुर्जनका निग्रहकरै ॥ देवके अर्थ, गुरूके अर्थ। धर्मके अर्थ। अपनादेश नगादिकके अर्थ। युद्धादिकमें। मृत्युका भय न गिणके, वीर्य रस धारन करै। सर्व जीवोंपर अनुकपा धारके। अपनें देशमें, दान शाला, ओषध, शाला, स्थापन करना॥ शुद्ध श्रावकका गुण धारन करना ॥ सर्व स्थानक धर्मका उद्योत, धर्म्मकी प्रभावना करते रहना ॥ ❋ ॥ इति क्षत्रिय वर्ण व्रता देशः कथितः ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ वैश्यवर्ण व्रतादेशः कथ्यते ॥❋॥

॥ ❋ ॥ पच परमेष्टी नवकार मत्रका ध्यान करना ॥ त्रिकालें देव वदन देवपूजा, द्रव्यै, भावै करते रहना ॥ सम्यक्तादि द्वादश व्रत, अतीचार रहि शुद्ध पालना ॥ निग्रथ साधु आचार्यादिककी सेवा भक्ती करना॥ जैन विद्याचार्य, जैन पन्डित, ब्राह्मणोंकी, सेवा भक्ती करना। सामायकादि धर्म कृत्य (तथा) जैन विद्याभ्यास करते रहना। विनय गुण शरलपणा, धारन करना। आत्मनिंदा करना (परतु) परनिंदा कभी न करना ॥ पनरै कर्म्मां दान रहित उत्तम विणज वौपार करना ॥ परधन परस्त्रीका (तथा) मांश मदरादि अभक्ष वस्तुका त्याग करना। जिनो पवीत धारन किया हुवा कभी त्यक्त न करना ॥ जिन मंदर, रथ यात्रा, तीर्थयात्रादिक, करके सदा धर्म उद्योत करते रहना। स्वधर्मियोंपर अतरग प्रीति रखना ॥ यथा शक्ती अन्न वस्त्रादिक दान देता रहना ॥ शरल परिणाम धारके सर्व जीवा पर दया धारन करना (क्युंकि) दया है, सो, धर्म्मकों पालन वृद्धी करनेमें माताके समान है ॥❋॥ (यदुक्त) ॥❋॥ जयणाय धम्म जणणी। जयणा धम्मस्स पालनीचेव। तह वुड्डिकरी जयणा। एकात सुहावहा जयणा ॥ १ ॥ (पुनः) दया है सो संपूर्ण सुखकी देनेंवाली है (यथा) आयु दीर्घतर, वपुवरतर, गोत्र गरीयस्तर। वित्त भूरितरं, बल बहुतर, स्वा

मित्व मुबैस्तर । आरोग्य विगतातरं त्रिजगत श्लाघत्व मत्यैस्तरं । ससारा वुनिधि करोति सुनरा चेतः कृपाद्रातरं ॥ २ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥※॥ अथ चातुर्वर्णस्य समानो व्रतादेशः कथ्यते ॥※॥

॥ ※ ॥ निज पूज्य गुरू प्रोक्त । देव धर्म्मादिपालन । देवार्चन साधु पूजा । प्रणामो विप्रलिंगिपु ॥ १ ॥ धनार्ज्जनच न्यायेन । परनिंदा विवर्ज्जनं । अवर्णवादो नकापि । राजादिपु विशेपतः ॥ २ ॥ स्वसत्वस्या परित्यागो । दानं वित्तानु सारतः । आयोचितो व्यय श्चैव । काले कालेच भोजनं ॥ ३ ॥ नवासेत्य जले देशे, नदी गुरू विवर्जिते । न विश्वासो नरेंद्राणा । नागनीच नियोगिना ॥ ४ ॥ नारीणाच नदीनाच । लोभिना पूर्ववैरिणा । कार्य विना स्थावराणा । महिसा देहिनामपि ॥ ५ ॥ नासत्याऽहित वाक्चैव । विवादो गुरुभि नैच । माता पित्रौ गुरो श्चैव । मानन परतत्व वत् ॥ ६ ॥ शुभशास्त्रा कर्णनच । तथा नाभक्ष भक्षणं । अत्याजाना न चत्यागो । परहत्या नामघातक ॥ ७ ॥ अतिथौच तथा पात्रे । दीनेदानं यथाविधि । दरिद्राणा तथा धाना । मापभार भृतामपि ॥ ८ ॥ हीनागाना विकलाना । नोपहासः कदाचन । समुत्पन्न कु त्पिपाशा । घृणा क्रोधादि गोपन ॥९॥ अरिषट्वर्ग विजय. । पक्षपातो गुणैपुच । देशाचारा चरणंच । भयं पापा पवादयोः ॥ १० ॥ उद्वाहः सदृशाचारै । सम जात्यन्य गोत्रजैः । त्रिवर्गा सावन नित्य । मन्योन्या प्रतिवधनः ॥ ११ ॥ परिज्ञान स्व परयो । देश कालादि चिंतन । सौजन्य दीर्वदर्शित्वं । कृतज्ञत्व सलज्जता ॥ ॥ १२ ॥ परोपकार करणंच । परपीमन वर्जन । पराक्रमः परभवे । सर्वत्र क्षाति रन्यदा ॥ १३ ॥ जलाशय स्मशानाना । तथा दैवत सद्मना । निद्रा हार रतादीना । सध्यासु परिवर्जन ॥ १४ ॥ प्रदेशोल्लघनचैव । तटे शयन मेवच । कूपस्य वर्ज्जन नद्या । लंघनं तरणी विना ॥ १५ ॥ गुर्वाशनादि सध्यासु । तालवृते कुभूमिपु । डुर्गोष्टीपु कुकार्येपु । सदैवा शन वर्ज्जन ॥ १६ ॥ न लंघन न गर्तादि । चंडष्ट स्वामि सेवन । न चतुर्थेंड नभश्री । शक्र चाप विलोकन ॥ १७ ॥ हृथ्यश्व नखिना चाप । वादिना दूरि वर्ज्जन । दिवा सभोग्य [illegible] स्हुस्यो पाशनं निशि ॥ १८ ॥ कलहे तत्समीपच । वर्ज्ज [illegible] देश काल विरुद्धच । भोज्य

मागमौ ॥ १९ ॥ असत्य व्यवसायश्च । कर्त्तव्यानि नकर्हिचित् । चातुर्व र्णस्य सर्वस्य । व्रतादेशोय मुत्तम ॥ २० ॥ ॥ ॥ ॥
इति चातुर्वर्णस्य समानोव्रतादेश कथित ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ (इसीतरे) गुरू, वर्ण मुजव, व्रता देश करके । उप नयी शिष्यकों समवसरण भावके तीन प्रदक्षिणा दिरावै । पूर्वदिश भगवानके सन्मुख शक्रस्तव, पढावै । देव वदन कराके गुरू शुभाशन वेठे । (तव) उपनयी शिष्य, नमोस्तु २ कहतो । गुरूके, पगामें पडै । नमस्कार करके (ऐसा वचन कहै) ॥ भगवन्, मम व्रता देशोदत्त·। तत्सुगृहीतोस्तु । सु र क्षितोस्तु । (गुरू कहै) ससार सागरात् स्वयतर, परतारय ॥ (पीछै) गुरू, और उपनेयी शिष्य, (दोनु) भगवानकों तीन प्रदक्षिणा देके, चैत्य वदन करै (तिस पीछे) ब्राह्मण वर्णवालातो, क्षत्री, वैश्याके, घर भिक्षा मागे (तथा) क्षत्री वर्णवाला शस्त्र धारन करै । वेश्य वर्णवाला अन्नदान देवै ॥ ॥
इति व्रता देशविधिः ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ अथ व्रत विसर्ग विधि· कथ्यते ॥ ॥

॥ ॥ ब्राह्मण वर्ण वाला । आठमें वर्ष जिनोपवीत, दर्भ, कोपीन, ब्रह्मचर्य धारके। १६ मा वर्ष पर्यंत, गुरूके पासरहै (तथा) क्षत्री, १० मावर्षसें लेके, पूर्वोक्त विधिसें १६ मा वर्ष पर्यंत रहै (वैश्य) पूर्वोक्त विधि १२ मा वर्षसें लेके, १६ मा वर्ष पर्यंत रहै ॥ (यह उत्तम पक्ष कहा)॥ (कदाश) अथिर चित्तसे उत्तम पक्ष मुजव, गुरू कुलवासमें नहि रह सक्ता होय (तो) छमाश (वा) एक माश (वा) तीन दिवश गुरूके पासरहै (कदाचित्) तीन दिवशभी न रहसके (तो) उसीदिन व्रत विसर्जनकरै (सो विधि लिखतेहैं) कुलगुरू, उपनयी शिष्यकों, तीन प्रदक्षिणा दिराके । समवसरण भाव, चतुर्मुख जिनकी पुजा करावै । चारे दिशतरफ शक्रस्तव पढाके देववदन करावै (पीछे) उपनयी शिष्य, नमोस्तु२ कहके, गुरूकों नमस्कार करै । हाथ जोडके कहे (भगवन्) देश, काल, पेक्षया व्रत विसर्गः आदिष्ट· ॥ (गुरूकहै आदिष्टः) ॥ (पुन) शिष्य नमस्कार करके कहै (भगवन्) व्रत वयो विसृष्टः (गुरूकहै) जिनो पवीत धारणेन अविसृष्टोस्तु ॥ (अर्थात्) जिनो पवीत, नित्य नेमका त्याग न क

रना ॥ (पीछे) शिष्य, नवकार मंत्र । ३ वेर पढके । कटि मेखला, कोपीन, दर्भ, वल्कल वस्त्रादि, ब्रह्मचारी चिन्ह, गुरूके सन्मुख रक्खे ॥ आप श्वेत वस्त्र जिनोपवीत धारन करके (गुरूको) नमस्कार करै । (तव गुरू) शिष्यके पूर्वोक्त मंत्रसे पवत्रित चदनसे, तिलक करे (और) जिनो पवीत वर्णन उपदेश करै ॥✕॥(यथा)॥✕॥ गर्भका माश अतभूत करके (ब्राह्मणकों) आठमे वर्ष (क्षत्रीको) दशमे वर्ष (वैश्यको) बारमेवर्ष जिनोपवीत धारन कराना । जिनोपवीत (अर्थात्) जिनकी गृहस्थ मुद्रा । नव ब्रह्मगुप्ती गर्भित, रत्नत्रयी रूप (इसका) प्रथम श्री आदिनाथ स्वामी गृहस्थाश्रम युक्त । ब्राम्हण, क्षत्री, वैश्य, तीनोंवर्णकों धारन करनेंका उपदेश कियाहै (जवसें) जिनोपवीत, सुत्र मुद्रा, धारन करनेंका व्यवहार प्रचलितहुवा (तीस पीछे) बहुत कालके वाद । मिथ्यात्व मोहित (पर्वतादि) ब्राम्हणोंनें । चारु वेदमें हिंसा प्ररूपण करके (वसु राजादि) राजावोंसें मिथ्या पथ यज्ञ मार्ग प्रवर्त्तन किया (और) जिनोपवीतका नाम स्थानक यज्ञोपवीत नाम रक्खा (तवसें) लोकीकमे यज्ञो पवीत, इसका नाम कहतेहैं—मिथ्या दृष्टी यथेछा कहो (जिन मतमें तो,) पूर्वोक्त सूत्र मुद्राका, जिनोपवीत नामहै (ऐसी) जिनोपवीत मुद्राकों, हे शिष्य, तुमने धारन किया है । (सो) माश २ प्रति नवीन धारन करते रहना । प्रमादादिकसें कभी त्यक्त न करना (कदाचित्) कोई वेर टूटजाय, गिरपडे, (तो) उसीवखत नवीन जिनोपवीत धारन करना (और) तीन उपवासका दंड भरना (तथा प्रेत क्रिया) किसीकी मृत्यु होनेसें स्मशानमे जाना पडै (तव) जिनोपवीतकों दक्षिण स्कंधके ऊपर, वामकक्षाके अधो भागमे धारन करना (यह) मृतक, विपरीत कर्महै (इससे) जिनोपवीत विपरीत धारना (साधुपण) मृतक साधूके परित्याग समे । विपरीत वस्त्रको धारतेहैं (तत्वतु) जन्म ना जायते सुद्रः । सस्कारा दिज मुच्यते । वेद पाठ भयो विप्रः । ब्रम्ह जानति ब्राम्हणः ॥ (यथा) जन्मसें सुद्रहै (सो) सस्कार विशेषसे उत्तम वर्णको प्राप्त होतेहै । ब्रम्हगुप्तिके धारनसें ब्राम्हण कहीये । अन्यकों प्रहार लगनेसें त्राण, रक्षा करै उसकों, क्षत्रिय कहियै ॥ न्याय धर्म्मोपदेश

सें, वैश्य कहिये ॥ तीनों वर्ण क्रिया सहितहे । एतज्जिनोपवीत सुगृहीतं कुर्याः । सुरक्षित कुर्य्याः । अस्तुते कृयरहितः । सद्धर्मे वसनं उपनयन विधि ॥ ऐसा उपदेश करके । नवकार मंत्रपढके । भगवानके सन्मुख चैत्य वंदन करावै (पीछे) शिष्य, साधू गुरूकों, वंदन नमस्कार करै ॥ ॥ ※ ॥

इति जिनोपवीत संस्कारे व्रत विसर्ग विधिः ॥ ※ ॥ ॥※॥

॥※॥ अथ सुद्रके उत्तराशन धारन विधि ॥※॥

॥※॥ प्रथम सप्त दिन पर्यंत, तैलाभिषेक, स्नान महोत्सव, मस्तक मुंडन । चतुष्कोण वेदी करण । जिन प्रतिमा स्थापन । शांतिक पौष्टिक कर्म, सर्व जिनोपवीत तुल्य करै (पीछे) गृह्य गुरू, अष्ट प्रकारी पूजा करावै । चारे दिशामें शक्रस्तव पाठ करायके । गुरू शुभासनवेठै (तब) शिष्य, श्वेतवस्त्र उत्तराशण धारके । समवसरण, गुरूकों, तीन प्रदक्षिणा देवें । गुरूके सन्मुख, नमोस्तु२ कहता । हाथ जोडके वीनती करै ॥ (हे भगवन्) मैं, आर्यदेश, आर्यकुलमें मनुष्यजन्म पायाहुं (मेरेकों) बोधीरूप जिनाज्ञा दीजै (गुरू कहे, ददामि) पुनः शिष्य, नमस्कार करके कहै । मै, जिनोपवीत धारन करने योग्य नहीहुं (इससें) मेरेकों जिनाज्ञा दीजियै (गुरू कहै ददामि) पीछे गुरू । द्वादश गर्भ तत् रूप कार्प्पास (अथवा) कौशेय उत्तराशन, जिनोपवीत समान दीर्घ करके । नवकार मंत्र पढता थका । जिनोपवीत वत् उत्तराशन पहिरावै । पूर्वदिशा, भगवानके सन्मुख वैठाके, चैत्य वंदन करावे । (पीछे) शिष्य नमस्कार करके हाथ जोडके, गुरूकों, कहे (हे भगवन्) उत्तरीयक न्यासेन जिनाज्ञा आरोपितोह (गुरू कहे) सम्यक् आरोपितोसी । तर भव सागरं (तब) शिष्य नमस्कार करै ॥ (गुरू) उपदेश करै (यथा) ॥ ※ ॥ सम्यक स्वनुष्ठितव्यानि । व्रतानि द्वादशैवहि । धार्याणि भवतानैव । कार्यः कुल मद स्त्वया ॥ १ ॥ जैनर्षीणा तथा जैन । ब्राम्हणाना मुपाशन । विधेय चैव गीतार्था । चीर्ण कार्य तपस्त्वया ॥२॥ न निंद्यः कोपि पापात्मा । नकार्यं स्वप्रशासन । ब्राह्मणेभ्यो स्त्वयासन्न । दातव्यं हित मिछता ॥ ३ ॥ शिक्षा चतुर्षु वर्णेषु । श्लोक व्याख्यान माचरेत् । उत्तरीय परिग्रहे । भगवा प्युपवीत वत् ॥ ४ ॥ कार्यं व्रत मेतकम । कारण वृषलत्वया । युक्ति रेषोत्तरा सं

गा नुज्ञायाचविधीयते ॥५॥ क्षत्राणामथवैश्याणा। देशकालादियोगतः। उपवी पवीतानाकार्य । मुत्तरासगयोजन ॥६॥ धर्म्मकार्यैगुरोर्दृष्टौ । देवगुर्वालयेपिच। धार्यस्तथोत्तरासगः। सुत्रवत्प्रेतकर्मणि ॥७॥ अन्येषामपिकारूणा। गुर्वानुज्ञा विनापिहिः। गुरुधर्मादिकार्येषु। उत्तरासगइष्यते॥ ८॥ (एसेउपदेशाकरके) गुरु शिष्यकु चैत्यवदनकरावै। नवकारमत्रका उच्चारण (अरु) मत्रका व्याख्यान सर्वपूर्ववत् (इतनाविशेषहै) शुद्रादिककु नमोरथाने णमोपदउच्चा रणकरणो) पीछे शिष्यसहित गुरु उत्सव कर्त्तयके धर्मस्थानमेंआवे। उहा मम्ली पूजादिकविधि पूर्वोक्तकरके गुरुकों नमस्कार कराके वासक्षेप दिरावे तदनतर मुनियोकु, अन्न वस्त्र पात्रका दान (अरु) चतुर्विधसघकी पूजा सामीवत्सलादिककरै (इसरीतसें) जिनोपवीतकेस्थानमे शुद्रादिकनकुं उत्तरा सनरखना कहा। ब्राह्मण क्षत्री वैश्यके जिनोपवीतमे तीन, दोय, एक, क्रमसें ग्रंथि लगतीहे (अरु) ततूकाप्रमाण पण जुदा जुदा कहाहे। परतु शुद्रके वास्तै सूत्रततुगर्भित ग्रथिरहित उत्तरीकन्यासरूप जिनोपवीतकहा ॥ ※॥ इतिशुद्रउत्तरीयकन्यासविधिः ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥※॥ अथ भूम्यादि दानविधि लिख्यते ॥※॥

॥ ※ ॥ व्रत विसर्ग किये पीछे शिष्य सहित गुरू तीनवेर प्रदक्षिणा देके पूर्ववत् चारे दिशामे शक्रस्तवका पाठ करै ॥ तदनतर गृह्यगुरुः आशन पर वैठे (पीछे शिष्य) गुरूकों तीन प्रदक्षिणा दे के, दोनु हाथ जोड नम स्कार करके वीनती करै—हे भगवान् तारितोहं निस्तारितोह उद्यमकृतोहं स त्तमःकृतोह पूतःकृतोह- तद्भगवान् आदिश, प्रमाद वहुले गृहस्थधर्मे मम कि रहस्यभूत सुकृतं ॥ (तवगुरु कहे) हे वत्स, सुष्टु अनुष्टित, सुष्टु पृष्ट, तत्श्रूयता ॥ (श्लोकाः) ॥ दानहि परमोधर्मो । दानहि परमाक्रिया । दा नहि परमोमार्ग । स्तस्माद्दानेमनःकुरु ॥ १ ॥ दयास्यादभयदान । मुपकार स्तथाविधः । सर्वोहि धर्म्मसघातो । दानातन्नीव महते ॥ २ ॥ ब्रह्मचारीच पाठेन । भिक्षुश्चैव समाधिना । वानप्रस्थस्तुकष्टेन । गृही दानेन शुध्यति॥३॥ ग्यानिनो परमार्थज्ञा । अर्हतो जगदीश्वराः । व्रतकाले प्रयच्छति । दानसा वत्सरव्रते ॥ ४ ॥ गृह्णता प्रीणना सम्यक् । ददतापुण्यमक्षय । दानतुल्यस्ततो लोके । मोक्षोपायोस्तिनापरः ॥ ५ ॥ (इससेती हेवत्स) ब्राह्मण, (वा)

क्षत्री, (वा) वैश्य, वण पायके । गृहस्थाश्रमको भमनभूत, मोक्षसोपान रूप, अक्षयफलदायक दानधर्मको प्रारंभकर (तब नमस्कार करके शिष्य कहै) हे भगवन् दानकी विधि कहो (गुरुकहै हेवत्स दानकीविधि तु सुण) ॥ (यथा श्लोकः) ॥ गावो भूमि सुवर्णंच । रत्नान्यन्नच कन्यका । गजाश्वा इतिदानं । दशधा परिकीर्तितं ॥ १ ॥ एतचाष्टविधंदानं । विप्राणां गृहमेधिना । देय नचापियतयो । गृह्णयें तच्चनिरपृहाः ॥ २ ॥ यतिभ्यो भोजन वस्त्र । पात्रमौषध पुस्तके । दातव्य द्रव्यदानेन । तौधौ नरकगामि नौ ॥ ३ ॥ इसप्रकार दानकीविधि सुणके, शिष्य उपनीत हुवो थको प्रथम गौदान करै ॥ अछा वर्ण लक्षणयुक्त गायकों स्नान करवाके सोनेंका सींग रूपैका खुर आदि आभूषण (तथा) वस्त्रादिकसें सोभित करके, गुरुके पास लावै (तबगुरु) गायको पुच्छ हाथमें धारनकरके ऐसा मंत्रपढै (तथा) ॥ ॐ अर्हंगौरिय धेनुरिय प्रशस्य पशुनिय सर्वोत्तमक्षीर दधिघृतेय पवित्र गौ मयमूत्रेय सुधाश्रावणीय रसोद्भावनीय पूज्येय । हृद्येय । अभिवाद्येय । तद्दत्तेय। त्वयाधेनुःकृतपुन्योभव । प्राप्तपुन्योभव । अक्षय दानमस्तु । अर्हं ॐ ॥४॥ (इत्युक्ता) गृह्यगुरू, धेनुकों ग्रहणकरै (तब) शिष्य, तिसगौके साथ । द्रोणमात्र सानधान्य (और) तुलामात्र, षट्रस (इत्यादि) यथाशक्ती दान देवै- इससें, दूसरा भूमि, रत्नादिकका दान आचार्यादिक गृही गुरूकों देवै (तबगुरू) ऐसा वेदमंत्र पढै ॥ (वेदमंत्रो यथा) ॥ ५ ॥ ॐ अर्हं एकमस्ति दशकमस्ति शतमस्ति सहस्रमस्ति कोट्यस्ति कोटिदशकमस्ति कोटिशतमस्ति । कोटिसहस्रमस्ति । कोट्ययुतमस्ति । कोटिलक्षमस्ति । कोटिप्रयुतमस्ति । कोटाकोटिरस्ति । सख्येयमस्ति । असख्येयमस्ति । अनंतमस्ति । अनंतानंतमस्ति । दानफलमस्ति । तदक्षय दानमस्तु ते अर्हं ॐ ॥ ६ ॥ गौदानसें अन्यदानोंका यहीमंत्र है ॥ जिनोपवीत धारनसमय तो गौदान देनेंकाही निश्चय है । अन्यदान कोईभीसमे देना ॥ गौदानादिक जैन पंडिताचार्यादि सपरिग्रही गृही गुरू जैनब्राह्मणाकों देना चाहिये (परन्तु) निस्परिग्रही निस्पृही साधु यतीकों नदेवें । साधुकों निकेवल अन्न पात्र वस्त्र भेषज वसति पुस्तकादि दान देवै (तथा) साधुवाके अन्नपात्रादिदाने धर्मलाभ एवमत्रः ॥ (गृह्यगुरु) उपनीत शिष्यकेपास गौदान लेके शिष्यकों

वर्णमुजव अनुज्ञा आदेश देवै ॥ भगवानके सन्मुख चैत्यवंदन करावै (पीछे) सब सघकेसाथ मंगलगीत गान वाजित्रादि महोत्छव सहित, यती साधुकेपास ले जावे (तत्र पूर्ववत्) मंगली पटपूजा करके यथाशक्ति ज्ञान खाते दान देवै। साधुकों वस्त्रपात्रादिक दान देवै। सर्व संघकी यथा शक्ति आहारादिकसें भक्ती करै ॥ ※ ॥ इति ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ वटूकरण विधि लिख्यत्ते ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ प्रथम जिसनें जिनोपवीत धारन किया है (सो) जिनोपवीतके आचार मुजब चलै। अपना धर्मकृत्य खटकर्मका अभ्यास करता रहे। मृतक सूतकादि कुत्छितदान न लेवे। साधर्मीटाल अन्यजातीका (तथा) अन्य हाथका भोजन न करै (तथा) संपूर्ण गृहस्थके सस्कार पूजादिक क्रियाकाम कों धारन करै, करावै (तथा) खेती, रसोई, चाकरी, आदि कर्मन करै। यजमानकों नमस्कार कियेविगर आशीर्वाद न देवै (ऐसे) आचारवान् ब्राह्मण होतेहै (और) जो खेती, चाकरी आदिक नीचकुलके योग्य कर्म करै। सुद्रादिकके हाथका भोजन खावै। और अपना आचार खट्कर्मसे रहित (तथा) तीनतत्वकी श्रद्धारहित हुवै (सो) आचारहीन सुद्रादिक समान होते है ॥ ऐसे आचारहीन पुरुष कालातरें शुभकर्मानुयोग पुनः जिनोपवीतादि शुद्धाचार धारनकरके शुद्ध ब्राह्मणपणो धारन करै। जिसकों वटुकरण विधि कहियै (यदुक्त) ॥ ※ ॥ च्युत व्रताना ब्रात्याना। तथा नैवेद्य भोजिना। अकर्मणा मवेदाना। अजपानाच शस्त्रिणा ॥ १ ॥ ग्राम्याणा कुलहीनाना। विप्राणा नीचकर्मणा। प्रेतान्न भोजिना चैव। मागधानाच वदिना ॥ २ ॥ घटिकानां सेवकाना। गधताबूल जीविना। नटाना विप्रवेषाणा। परशुरामान्वयायिना ॥ ३ ॥ अन्यजात्युद्भवानाच। वदिवेषोपजीविना। इत्यादि विप्ररूपाणा। वटुकरण मिष्यते ॥ ४ ॥ ऐसे कुलहीन आचारहीन ब्राह्मणादिककों शुद्ध करनेकेलियै वटु करणकर्म करना चाहिये (अन्यमतेपिउक्त) जन्मनो जायते सुद्रः। सस्कारा द्विजमुच्यते। वेदपाठभयो विप्र। ब्रह्मजानंति ब्राह्मणः ॥ १ ॥ स्वपाकी गर्भसंभूतो। पाराशर महामुनि। तपसा ब्राह्मणोजातः। तस्माज्जातिरकारण ॥ २ ॥ कैवर्त्ती गर्भसंभूतो। [illegible] तपसा ब्राह्मणोजातः तस्माज्जातिरकारण

॥ ३ ॥ विश्वामित्रच चामाली । वशिष्ट चोर्वसी तथा । विप्रजाति कुला न्नाते । एते तेवै द्विजोत्तमा ॥ ४ ॥ शील प्रधान नकुल प्रधान । कुलेन किं शील विवर्जितेन । बहवोनरा नीचकुलेषु जाताः । स्वर्गगताः शील मुपेत्य धीरा ॥ ५ ॥ इत्यादि अन्यमत भारतादिक ग्रथोमें कहाहै ॥ तपस्या, ब्रह्म चर्य, सस्कार, धारन करनेसे ब्राह्मण होता हैं । जातिका कुछ कारण नहीं

॥ ॐ ॥ अथ बटुकरण संस्कार विधि ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ जिसको बटुकर्म करना होय । उसके घरमें गृह्यगुरु, प्रथम यथोक्तविधिसें शातिक पौष्टिक पूजादिक कृत्य करे (पीछे) शिष्यका म स्तक मुन्डन कराके । मत्रा ह्रुवा तीर्थोदकसें स्नान करवावै ॥ (तीर्थोदक मत्र यथा) ॥ ॐ वरुणोसि । वारुणमसि । गंगेयमसि । यामुनमसि । गोदा वयमसि । नामदमसि । पौष्करमसि । सारस्वतमसि । शातद्रवमसि । वैपाश मसि । सैवत्रमसि । चाद्रभागमसि । वैतस्तमसि । ऐरावतमसि । कावेरमसि । कारतोयमसि । गोमतमसि । रौप्यकूलमसि । सुवर्णकूलमसि शालीतमसि । रक्तवतमसि । नैमग्नमसि । रत्नमसि । अनन्तसलिलमसि । पद्ममसि । महा पद्ममसि । तैगन्नमसि । केंदारमसि । पौन्डरीकमसि । ह्रादमसि । नादेयमसि । कौपमसि । सारसमसि । कौम्भमसि । नैर्झरमसि । वाप्यमसि । तैर्थमसि । अमृतमसि । जीवनमसि । पवित्रमसि । पावनमसि । तदमु पवित्र । कुलाचार रहित मपिदेहि ॥ ॐ ॥ इसमत्रसे ७ वेर जलमत्रके कुशाग्रसें ७ वेर शिष्य को शिचन करे ॥ (पीछे) गुरू पूर्वोक्तप्रमाण मुजमेखला हाथमें लेके ७ वेर मत्रसे मत्रके शिष्यके बधावे (मेखला बधन मत्रः) ॐ पवित्रोसि । प्रा चीनोसि । नवीनोसि । सुगमोसि अजोसि शुद्धजन्मासि । तदमुदेहिन धृतव्रत मव्रतत्वा पावय पुनीहि अब्राह्मणमपि ब्राह्मणकुरु ॥ इसमत्रसें मुजमेखला बधावै ॥ (पीछे) कोपीन हाथमें लेके वेदमत्रपढे ॥ (कोपीन मत्र) ॥ ॐ अब्रह्मचय गुप्तोसि । ब्रह्मचर्य धरोपिवा । इत.कोपीन बधेन । ब्रह्मचारी निगद्यते ॥१॥ॐ॥ इस मत्रको ७ वेर पढके कोपीन पहिरावै ॥ (पीछे) गुरु, पूर्वोक्त ब्राह्मणवर्ण शदश जिनोपवीत हाथमें लेके वेदमंत्र पढै ॥ (जिनोपवी तमत्र) ॥ॐ॥ ॐ सधर्मोसि । अधर्मोसि । कुलीनोसि । अकुलीनोसि । सब्रह्म चर्योसि । अब्रह्मचर्योसि । सुमनाअसि । दुर्मनाअसि । श्रद्धालुरसि । अश्र

द्वालुरसि । आस्तिकोसि । नास्तिकोसि । आर्हतोसि । सौगतोसि । नैयायिकोसि । वैशेषिकोसि । सांख्योसि । चार्वाकोसि । सलिंगोसि । अलिंगोसि । तत्व ज्ञोसि । अतत्वज्ञोसि । तद्भव ब्राह्मणः अमुनो पवीतेन भवंतु ते सर्वार्थ सिद्धयः ॥※॥ इस मंत्रसे ए वेर जिनोपवीत मंत्रके शिष्यकों धारन करावै हाथमें पलाशादि लकडीका दन्ड देवै ॥ वल्कलचीरादि वस्त्र धारन कराके भिक्षा मंगावै (पीछे) गुरू, एक जिनोपवीत रखके (अन्य) मुंजमेखला, कोपीन, दंडादिकका मंत्र पढके त्याग करावै (तदपनयनमंत्रो यथा) ॥※॥ ॐ ध्रुवोसि । स्थिरोसि तदेकमुपवीतं धारय ॥ इस मंत्रसें वल्कलवस्त्र दन्डादिकका त्याग कराके स्वेतवस्त्र पहिरावे (पीछे) शिष्य नमोस्तु २ कहतो गुरूके पगामें पडै । नमस्कार करके, सन्मुख बैठे ॥ (तव) गुरु, ऐसी शिक्षा करै ॥ (उक्तंच) ॥ परनिंदा परद्रोहं । परस्त्री धन वाछन । मांसाशनं म्लेछ कंद । भक्षण चैव वर्जयेत् ॥ १ ॥ वाणिज्ये स्वामिसेवाया । कपट माकृथा क्वचित् । ब्रह्मस्त्री भ्रूण गोरक्षा । देवर्षि गुरुसेवनं ॥ २ ॥ अतिथीनां पूजनच । कुर्याद्दान यथाधन । अघात्यघात माकुर्या । मावृथा परतापन ॥ ३ ॥ उपवीतमिदं स्थाप्य । माजन्म विविवत्वया । शेषः शिष्याक्रमः कथ्य । श्वानुवर्णस्य पूर्ववत् ॥ ४॥ इत्यादि आदेश पूर्वोक्त ब्राह्मणवर्ण सदश करै ॥ इहां विशेष विधही सो लिखी है और सर्व विधि पूर्वोक्त जिनोपवीत संस्कार मुजब जाणनी (पीछे) शिष्य, धेनु अन्न वस्त्रादि गुरुकों दान देवै (इतना विशेष है) अत्र वटुकरणे । वेदिचतुष्किका । समवशरण । चैत्यवंदन । व्रतानुज्ञा । व्रत विसर्गादिनास्ति ॥ ※ ॥ (श्लोका) पौष्टिकस्योपकरणं । मौंजी कौपीन वल्कलं । उपवीत स्वर्णमुद्रा । गावः सघस्यसंगमः ॥ १ ॥ तीर्थोदकानि वस्त्राणि । चंदन गर्न्नएवच । पंचगव्य वलिकर्म । तथा वेदि चतुष्किका ॥ २ ॥ चतुर्मुखस्य प्रतिमा । दन्ड पलाश एववा । इत्यादि वस्तुसयोगो । व्रतवंधे विधीयते ॥ ३ ॥ ※ इति वटुकरण विधि ॥ इत्युपाध्याय श्री लक्ष्मीप्रधानगणिः प । मोहनलाल मुनिः० जिनोपवीत संस्कार संपूर्णम् ॥

॥ ※ ॥ अथ विद्याध्ययनारंभ संस्कार विधिः ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ प्रथम उत्तमदिन [illegible] मुहूर्त्त देखके यथाशक्ति लडकेकों वडे

महोत्सवसें मंगलगीतगान पूर्वक स्नान मज्जन करावै। अच्छा वस्त्र आभूषण पहरावै। (पीछे) हाथी घोड़ादिक असवारी पर चढाके (अथवा) प्यादल सर्व सज्जन लोक साथमें होके। जैनपण्डित यती गुरूकेपास लावै खारक खोपरा बिदाम मिश्री आदि सुखमीका भरा हुवा थाल और यथा शक्ति रोकनाणो गुरूके भेट करै विनयसयुक्त वदन नमस्कार करै (तवगुरू) अपनें वामपाशे कुशाशनपर शिष्य लड़केंकों बैठाकै तिसके दक्षिण कर्णकों केशरादिक सुगंधी द्रव्यसें पूजन करके सरस्वतीका मंत्र तीनवेर सुनावै पढावै॥ (सरस्वतीदेवी मंत्रोयथा)॥ ※॥ ॐ ह्रीं श्रीवदवद वाग्वादनी वागीश्वरी श्री सरस्वत्यैनमः॥ ॐ ह्रीं ऐं हंसवाहन्यैंनमः॥ ※॥ इस मंत्रकों सातवेर पढाकै सरस्वती देवीकों नमस्कार करावै पूजन करावै (पीछे) काव्यादिकसें गुरूकी स्तवना सुनावै पढावै (यथा)॥ अज्ञान तिमिरांधाना। ज्ञानांजन शलाकया। नेत्रमुन्मीलितयेन। तस्मै श्रीगुरवेनमः॥ १॥ यासां प्रसादा दधिगम्य सम्यक्। शास्त्राणि विदंति परपदज्ञा। मनीषितार्थ प्रतिपादकाभ्यो। नमोस्तुताभ्यो गुरु पादकाभ्यः॥ २॥ इति मत्वात्वयावत्स। त्रिसंध्योपासनं गुरोः। विधेयं येनजायते। गीर्वी॰ कीर्त्ति धृति श्रियः॥ ३॥ ऐसीशिष्या गृहीगुरू जैनपण्डित देके आचार्य उपाध्यायकेपास लावै (तव) जैनगुरु आचार्य उपाध्यायादि शिष्यके मस्तकपर वर्द्धमान विद्यासें मंत्रके वासक्षेप करै (और) तीनवेर कानमें नवकार मंत्र सुनावै (पीछे)॥ ॐ नमःसिद्ध॥ अ आ इ ई—इत्यादिक अक्षर विन्यासका भेद समजावै अर्थ सुनावै हाथसें लिखावै (प्रथम स्वर) १४ अ। आ। इ। ई। उ। ऊ। ऋ। ॠ। लृ। ॡ। ए। ऐ। ओ। औ। अं। अः॥ ※॥ (व्यंजन ३३) क् ख् ग् घ् ङ् इत्यादिक अक्षरोंमें अ आ इ ई आदि स्वर मिलनेंसें तथा पूर्वस्वर देनेसें बोलनेंमें आता है (यथा)॥ क्, अ। क॥ क्, आ। का॥ क्, इ। कि॥ क् ई। की॥ क्, उ। कु॥ क्, ऊ। कू॥ क्, ए। के॥ क्, ए। के॥ क्, ऐ। कै॥ क्, ओ। को॥ क्, औ। कौ॥ क्, अं। कं॥ क्, अः। कः॥ ※॥ क का कि की कु कू के कै को कौ कं कः॥ इसीमाफक सर्व अक्षरोंकी बाराखमी ह्रस्व दीर्घ भेदसें समझावै ऌ ॡ समेत १६ स्वरमें अ। इ। उ। ऋ। ऌ। यह

पाच स्वर निकेवल (वा) व्यजन अक्षरमें मिला हुवा ह्रस्व कहियै । शेष ११ स्वर दीर्घ कहिये ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ भोले कक्कानो अर्थ लिख्यते ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ प्रथम दोय लिटी लिखते है, जिसकों (रिद्धी सिद्धी) बोलते है॥ हे भव्य इसका अर्थ जीवनी दोय राशी है। एक सिद्धनाजीव निरकर्मी, दूसरा संसारीजीव सकर्मी, जाणना ॥१॥ (ए भले) अरे जीवतु सिद्धजीवों की राशीमें मिलनेकी इच्छा रखना ॥ २ ॥ (मींडुं०) ससाररूप गोलाकारे एक ऊनो गहरो कूपहे तिसमेंसे निकलनेका एक छिद्र है जोतुं ससाररूप छिद्रसें निकलैगा ॥ तो सिद्धोंमें मिलैगा ॥ ३ ॥ (बिलामी) सोजेसें कूवेमें पडी हुई वस्तु लोहेकी बिलामी सेती निकाले, तैसे इहा ससारी जीवोंकों संसाररूपी कूपमेंसें निकालनेकी । प्रथम देशविरति, दूसरी सर्व विरति रूप बिलामी दोजाणनी (अब सिद्धोंके जीव कहा रहतेहे)सो कहतेहै (उ गण चोटियो, माथे पोटियो, उ) चवदे राजलोकका तीन भाग, अधो लोक पाताल, मध्यलोक मनुष्यक्षेत्र, ऊर्द्धलोक वैमानिकदेव, एव ऊर्द्धलोकके चोटीके स्थानके बारा योजन विस्तारकी तनु पभ्भारानामें पृथ्वी हे तहा एक जोजनके चोवीसमें भाग ३३३ धनुष, ऊपर बत्तीस अंगुल, इतनें विस्तारमें सिद्धोंका सब जीव अलोकसें भिडके रहेहै (ननोबीटालो) हे जीव तु ससारके काम भोगमें मग्न होके मोहजालमें फसा हुवा रहताहे जिससेती अधोगति नरकगतिकों प्राप्त होताहे (ममो मामो) यह ससार जीवनो अनादि घरहे जिसमें मोहनामें मामो (नाम) मामों है ॥ ७ ॥ (ममा हाथे दो लाडुवा) जो मोह नामें मामोहे सो जीवाकु काम भोग रूप दोय लाडू हाथमें देके भोलायके अपनें वसमें रखताहे ॥ (सिद्धीराणी चोकमी) क० सिद्धीरूप राणीके मंदर चढने मोह राजायें चार कपायरूप चोकमी पहारायत रक्खी है । इससें कोई जीव ऊचो चढे (तोविण) जीवकों ऊचो सिद्धिगति जानें न देवे ॥ ए ॥ (पाठी चार कुभावती) सा कपाय चोकडी जीवकों इग्यारमें गुणठाणेंसें पीछें ससारकुप मिथ्यात गुणठाणेंमें लायनाखे ॥ १० ॥ ढाव ढाव ढोकलो माथे भेकरो) रे जीव तुं ससारमें वेर वेर जन्ममरण करनेंसें ढोकलाकी

तरे सीकतो थको महाडुख भोगवतो रहेगो और पुत्र पुत्री आदिककविटी वना तुमरे मस्तकपर पमेगी (इसवास्ते) सद्धर्म चक्रवर्ती महाराजको जो सि द्धिनगरहे सो देखनेंकी इच्छा होय तो प्रथम महामन्त्रीश्वर श्रीसम्यक्तकेसाथ मिलापकर(सो)तुमकों धर्म महाराजासें मिलाप कराय देगा (परतु) सम्यक्त मन्त्रीश्वरके मकान जाता थका रस्तेमें कषायादिक बहुत विघ्न करनेंवाला रहताहे उसकों जीतनेका उपाय कहताहु ॥११॥ (हाथमां दो मागमी) क० धर्मकथा सुनके, यथा प्रवृत्ति करण तथा दूसरो अपूर्वकरण, सुभपरि णामरूपी मागडी अर्थात् मुग्गर हाथमें लेके चलना (आईमा दोभाईम वभो भाइकानो) जो रस्तेमें विघ्नकरनेवाला राग, द्वेष, रूप दोभाईमा मि ले जिसको पछाडके दूर करना (फेर) अनतानुबंधी क्रोध, मान माया, लोभ मिथ्यात, मिश्र, सम्यक्त मोहनी॥ यह सात प्रकृतिरूप चोरोंकाक्षय करना इसमाफक अपूर्वकरण मुग्गर सेती रागद्वेष कषायादिक मिथ्यातकी गांठ भेदनकरके आगे चलिये सो तुमकों सद्गुणनिवासमे महामन्त्री श्वर सम्यक्त नामें पाचरूप करके बैठाहे उसका दर्शन मिलेगा (पछि) तु सदैव सुध दर्शनकी सेवामे रहेगा तो कोईवेर तुमारी योग्यता देखके जो चारित्रधर्म राजाकी दो पुत्रीयां है (इकडी बाई तनुअंगी, बडी इकमी स्वीकारो) लघुपुत्री देशविरति और बडी पुत्री सब विरति इन दोनोंमें जिसपर तुमारा अतष्करण खुसी होगा उसी कन्याकेसाथ विवाह करदेगा परतु एकाग्र चित्तसें सम्यक्त मन्त्रीश्वरकी आग्यामें चलतो रहिये सो सद्दशन तुमारेपर सदैव खुसी रहै (ककार केवल आकोमा, बमे ककार फाकोडा) जो शका कंखा, वितिगिछा, कषायादिरूप आकमा फाकमाकी सगत करेगा तो स म्यम मन्त्री तुमारेपर नाराज होगा (इसवास्ते) शका कखादि सब दूषणोंसें अ लग रहिये (ककार बाई नाचणी, बमी ककार पाचणी) फेरममता माया, रूप दोय जहरकी वेलहे जिसमें विषय, रूप (अथवा) काम, भोगरूप, दोय सप सूताहै जिनाकों कभी जगाना नेमनामत (जिससें) तुमारेपर सद्धर्म मन्त्री प्रशन्न होकर सिद्धिनगर जाते अच्छे सथवारेकोसाथ करदेगा (ऐन वैन दोगामी, बमी गामीमात्रा) और सुमति, गुप्ति, रूप दोयगामी चढनें वावत देवेगा (ले रखवाला वलदिया, बमे वेगम जोतिया) सो दोनु

गामीके ज्ञान, चारित्र, रूप टेवलध जोतेगा (अ अः दो रासमी) जिनोके संवर निर्जरा रूप दो रासमी लगाके सिद्धिनगरके मार्गकों चलावजे ॥ २० ॥ (कको केवलो) परतु केवल ग्यानरूप बोलावे विगर सिद्धिनगर पोंहच शक्ता नहि (इसवास्ते) केवल ग्यानकों साथ लेनेंका उद्यम करजे । सो केवल यान सुद्भाव (तथा) इच्छा रोधन तप करनेसें साथ चलेगा ॥ २१ ॥ (ख कखो खाजूलो) इससेती सुद्भावसें तपस्या करणा परतु चार प्रकारके आहारको स्वादी तथा रसनेंद्रियको लोलुपी होणा मति ॥ २२ ॥ (गगा गुरुजन पायपसायें) सपूर्ण धर्मकार्यका बतानेवाला गुरुमहाराजकु मोटा उपगारी समझके । सेवा, भक्ति, बहुमान करतो रहिये ॥२३॥ (घग्घो घरट पलाएयोजाय) अरे जीव तु घरको धवो आरम्भ समारंभरूप भार सेती रातदिन पलाएयो थको दुख भोगवेहै । इस दुख सेती गुरूमहाराज छोडावेगा ॥२४॥ (ननि उ आमण दूमणो) परतु ससारका दुख मिटानेंकों गुरुमहाराज पाच अणुव्रत, (अथवा) पाच महाव्रतरूप अभिग्रह नियमादिक अगीकार कराया होय । उस व्रतोंकों पालन करनेंमें आमण दूमणो (अर्थात्) पश्चात्ताप मति करजे ॥ २५ ॥ (चचा चितनी चोंपडी) निरतर गुरुदत्त चारित्र धर्म पालनेंको चितमें चोंप राखजे ॥ २६ ॥ (छछा विया पोटलो) छद्मस्थपणामें चारित्र पालता, गुरूकेपास श्रुतज्ञान चन्दपूर्वका बहुत अभ्यास करके वियाको पोटलो बाधिये (अर्थात्) वियाको संचय करजे ॥२७॥ (जज्जो जे शल वाणिज) क० वियाको संचय करतां, मायाशल्य, नियाणाशल्य, मिथ्यादर्शण शल्य, रूप तीन वैरियोंको दिलसें दूर करनेंका वणिज वेपार करजे ॥ २८ ॥ झझो झारी साग्खो) क० निरतर झारीके समान स्वभाव धारन करजे (जैसें) जल भरनेंकी झारी होती है जिसका मुंहतो साकड़ा होताहै । और पेट मोटा होताहै ॥ (तैसें) तु पिण मुहकों सकोचमें रखिये (अर्थात्) वेचिचारसें असत्य मर्मभेदक वचन मतबोलिये (और) पेट मोटो रखजे । सर्व कीबात पेटमें धारन करजे ॥ २९ ॥ न नीयो सामोचाटे) क० अर्द्धचद्रके समान लोकके चोटीके स्थानक सिद्ध शिलाहै । उहा जानेकेवास्तै निरंतर उद्यम करतो रहजे ॥ ३० ॥ (टह्या पोली सांडेपु) व्रत

पचक्खाण रूप मोल दरवाजेकों दृढ राखिजे (अर्थात्) जो गुरूकेपास व्रत पचखाण धारन किया (वा) करैं। सो निश्चल चित्तसें पालिये। जाव जीव खमनमति करजे ॥ ३० ॥ (ठना ठोवरगाडुवे) क० तु भागा जवा घमाकेसमान मति ऊइए (अर्थात्) गुरूके दीवीभई शिख्यारूप जलकुं हृदयरूप घटमें स्थिर राखिजे ॥ ३२ ॥ (ममा मामर गांठि) तु वाससें फूटा आमवर करके अन्यतर कर्मकी गाठ मति बाधजे ॥ ३३ ॥ (ढ्ढा श्वानको पुछ्नो) क० स्वानकै पूछडा समान वक स्वभाव धारन मत करजे ॥ ३४ ॥ णाणो ताणो सेले) क० ग्यान, दर्शन, चारित्र, (तथा) त्रिण गुतिरूप शेला हाथमें लेके मोहराजाकेसाथ युद्ध करजे ॥ ३५ ॥ (तत्तो तावै तेले) क० तप, जप, करता कोईका कठोर वचन सुनके नपा ऊवा तेलकीपरें क्रोधसें तप्तवान् मति ऊइए (क्युकि) क्रोमवरस तपस्या करी भई। क्रोधादिकषाय सजोग खिणमे निःफल होजातीहै। इससेती कषायादिकसें दिलकों तत मति करजे ॥ २६ ॥ (थत्था थिर तन बोल) क० कदाचित् थारो, मन, एकस्थान न रह सके (तथापि) वचन, काया कोंतो थिर रखजे (अर्थात्) वचन कायासें कुकर्ममति करजे ॥ ३७ ॥ दद्दीयो दीवटो) क० हृदयरूप अपनें घरमें समकितरूप दीपक अखंम रखजे (क्युकि) दर्शन सहचारी ज्ञान हैं। ज्ञान सहचारी दर्शन है (यह) दर्शन, ज्ञानके, अखम्म ज्योतसें सपूर्ण धर्ममार्ग प्रकाश होता रहेगा (यडुक्त) दान दया दमद्दीणा। दशन दैवपूजन। दकारापचकुर्वंनि। दुर्गति नैवगच्छति ॥ ३८ ॥ (धद्धीयो धाणको) क० परिग्रहादि सचयकारक। नरक निगो दादि दुःखदायक। आर्तध्यान, रौद्रध्यानकों दूरकरके। शिवसुखदायक धर्म ध्यान, शुक्लध्यान, दिलमें धारन करजे ॥ ३९ ॥ (ननियो पुलायरो) क० निरतर जीवास्तिक बुद्धी धारनकरके नास्तिक मति दूरकरजे (अर्थात्) ना स्तिक बुद्धीकों दूर करके समकित निर्मल करजे ॥ ४० ॥ (पप्पा पोली पाटें) क०। पाप आनेंका पाच आश्रवद्वारकों सवररूप कपाट लगाके बधरखिये (परतु) खुला मतरखिये। जो पाच आश्रवद्वारकों खुला रखेगा तो अनैं पापस्थानक रूप चौर। थारै हृदयरूप घरमें आयके धर्म धनकों नाशकर देगा ॥ ४१ ॥ (फप्फा फगमें जोंड जाय) क० मिथ्यामत फा

सीमें फसानेंवाले । अविनीत, अनाचारी,एकाती, पुरुषोंकी सगत करैगा (तो) तेरा धर्मधन छीनके हीनगतिमें भ्रमावैगा (इससें) दुष्ट अधर्मी जनकी सगत मति करजे ॥ ४३ ॥ (बभ्रा माहे चादणो) क० हृदयरूप घरमें बोध बीज गुणकी वृद्धी करजे । बोधबीजकी वृद्धी होनेसें चद्रकलावत् दिन दिन ज्ञानका प्रकाश वृद्धीमान् होता रहैगा ॥ ४४ ॥ (भक्षो भारी भैंसको) कंद, मूल, माश, मदरादि, अभक्ष, अनतकायादिक, भक्षण करके भैंसाकी तरै पुष्ट शरीर मति करजे (जो माश मदरादिक अभक्ष वस्तु भक्षण करैगा (और) वे अर्थ अनंत जीवोंका घाण करैगा (तो) अतमें महादुःखदायक नरक निगोदादिक गतियोंमें परिभ्रमण करता महा दुःखी होगा (तथा, भभीयो भाट चूलेतणो) क० जैसें भभुजैकैचूलैकी भाट धगधगती जलती रहतीहै (इसीतरै) तु व्रत नियम पालता तपस्या करता कोईका आक्रोश असह्य मर्म वेधाला वचन सुनके। कषायाग्निसें आत्माकों ततवान् मतिकरजे (कदाचित्) क्रोधादिक अग्निसें आत्मा तप्तवान होय (तो) उपशम क्षमादिक गुणरूप जलसे शीतल करजे (परतु) कषायाग्निकों वधनें मति दीजे । चार कषाय जीवकों महादुःख दायक है (यदुक्त) कोहोपीइपणासेई । मानो विनयनासणो । मायामित्ताणि नासेइ । लोहो सव्वविणासणो ॥ १ ॥–॥ ४४ ॥ ※ ॥ (ममयीयो मोचक) क्षमादिक गुण धारके अष्टकर्मको मुक्त करजे (अर्थात्) अष्टकर्मका क्षय करजे । मोक्षमार्गका आदर करजे ॥ ४५ ॥ (ययीयोजामो पेटको) कृतात कर्मरूप यमराजको पेट मोटो है । जगत्र जीवाको ग्रास करताहै (तोभी) काल, जीवाकों भक्षण करनेंमें अप्रमादी रहता है (इस सेती) कालयमराजको जीवमें भय रखके। जिनधर्मको अप्रमादी होके सेवन करता रहना ॥ ४६ ॥ (रायरो कटारमल्ल) राग, तथा द्वेष यह दोनु मोह राजाका मोटा मल्ल है (यह) दोनु मल्लकों जीतेगा तो केवल ज्ञान पायके संसार कर्मसें मोक्ष होगा ॥ ४७ ॥ (लल्ला घोमो लात वाये) तथा तु लोभरूप घोडाके लातसें दूर रहजे । जो लोभ घोडापर वखत चढैगा तोतेरैकु भववनमें ऐसा भमावैगा (कितु) वेर वेर जन्म मरण कुगतीमें करता (लोभमलानि पापानि) सर्व पापकामूल

ति ल्लोभ है (इससें) अतिलोभसें सदा दूर रहजे। सतोपासपरं सुख इति ल ॥ ४८ ॥ (वया विगए वासदे) तथा अपना मन मदरमें विवेका क गुण समूहकों रैवास दीजे (परतु) निर्विवेकसें कामादिक विग दूप को निवासमत दीजे (जो) कामादिक व्यग चोरोंकु मन मदरमें रक्खेगा तो) तुमारा आत्मगुण सर्वको विछिन्न कर देगा ॥ ४९ ॥ (शशाकोटा रमिया) जैसें शिशिला जिनावर कोट नाम अपनी नशकों कानोंसें रुके गलियार डुवा थका पमा रहै। तव कोईवेर अकस्मात् पारधी आ के गन्नामरोम मार देताहै (इसीतरैं) तुं आलस्यादि १३ काठियादिक वस गलियारहोके अपना धर्मकृत्यकों मत ठोमिये (जो) अपना अ श्य धर्मकृत्य ठोडके आलस्यादिकमें गलियार होगा (तो) अकस्मात् कालरूप पारधी मारके नरक निगोदादिक दुर्गतिमें पोंहचावैगा ॥ ५० ॥ (पया खूणीचीरिया) कभी प्रछन्नपणे खूणेमेंभी वैठके अपना व्रतादिक धारन किया हुवाकु दूपण मत लगाइये, सत्य बोलजे, झूठ कभी मत बोलजे। जो व्रतादिककों दूपण लगावैगा (और) असत्य बोलैगा तो क्रमसें सर्व आत्मगुण चलाजायगा (जेसे) कोयला धानका भरा डुवा होय उसका एक तरफ खुणा फाटणेसें क्रमसें सर्वधान निकल जाता है (तैसे) एक असत्यके वोलनेसें सर्व व्रत गुण चला जाता है (इहा) वसु राजाका दृष्टात चित्तमें भावन करजे ॥ ५१ ॥ (सारसेर दती) तथा सत्य शील सतोषादिक गुण धारन करके। मोहराजाकी सेन्याकेसाथ युद्ध करजे। और युद्ध करता दती नाम हस्तीकी परै साहसीक रहजे। कायरहोके पीठपग मतदीजे। मिथ्यात्वका क्षय करजे ॥ ५२ ॥ हाहोलो हरिणेकलो) जैसें हि रण, पारधी आहेडीकों देखके तत्काल दूर भाग जाताहै (इसीतरैं) मोह रूप पारधीकों देखके दूर भागिये (परतु) मोहपारधीके फासमें मत पमिये (जो) फासमें पमेगा तो ससारवधनसें कभी छूटेगा नही ॥ ५३ ॥ (लावै लछी दोपणिहार) जो तु मोक्षका अभिलाषी होके ससारवधन का छेदन करेगा (तो) द्रव्य, भाव दोनु प्रकारकी लक्ष्मी, थारै पणिहार मुजव वनी रहेगा (जैसें) भरतजी अनुत्तरादिक उत्कृष्ट देवसुख तथा चक्रवर्ति आदिक उत्कृष्ट मनुष्य भवरूप द्रव्य लक्ष्मीको भोगके सिद्धरूप

भावलक्ष्मीकों भोगवनेंवाला हुवा (तैसें) तु पिण दोनुं लक्ष्मीकों भोगवने वाला होगा। अब सिद्धका सुख कोनप्रकारसें प्राप्त होय सो कहतेहै॥५४॥ (खमिया खाटक मोर, गलेघताउ मोर, पालेबाधा दो चोर) प्राणाति पाता दि रात्री भोजनपर्यंत सट्व्रत रूपमोर सर्व गलेमें धारके। सट् कायजीवोंकी दया पालना (और) रागद्वेपरूप चोराकुं बाधके अतमें क्षय करना (क्युंकि) रागद्वेप चौर है सो ग्यानादिक सपूर्ण गुणोंका चोरनेंवाला है (जिसदिन) रागद्वेपरूप दोनु चोरुकाक्षय करके चार धनघाती कर्मोका क्षय करैगा (उसीदिन) तेरेकों लोकालोक प्रकाशक केवल ग्यान उत्पन्न होगा (पीछे) शेषारहा चार कर्मका क्षय करकें अक्षय सुख सिद्धि अवस्थाकों प्राप्त होगा ॥ ५५ ॥ ※॥ (मगल महाश्री, देविद्यापरमेश्वरी) सिद्धिस्थानमें जानेंसें परम मगलीकरूप भावलक्ष्मीका भरतार होगा (अर्थात्) अपना आत्मगुण अनतज्ञान, अनतदर्शन, अनतचारित्र, अनतवीर्य, अगुरुलघु, अरूपी, अखड, अव्यय, अजर, अमर, अविनाशी, परमानदरूप, भावल क्ष्मीकों सादि अनतभागें अनतसुख भोगवता रहेगा (इसवास्ते) जिनधर्मकु सुनतो, पढतो. धारतो, पालतो, हरहमेश रहियेओर नीतिमुजब चलजे (ज्युं) तेरा दिन दिन तपतेज वधता रहेगा ॥ ५६॥ इसीतरै कमसें चारु वर्णकों लिखना पढनादि अनेक तरेकी कला उपाध्याय जैनपन्डित सि खावै । ब्राह्मणकों वेदविद्या धर्मशास्त्र पढावै ॥ (क्षत्रीकों) धर्मकृत्य आ युर्वेद । धनुर्वेद । दण्डनीति । आजीविकादि विद्या पढावै ॥ (वैश्यकों) धर्म कृत्य शास्त्र, । नीतिशास्त्र। गणितशास्त्र आजीविकादि वियापढावै ॥ (सुद्रकों) नीति, गणित, धर्मकृत्य, आजीवकादि कला पढावै ॥ इसीतरै लडकेकों म होछव सयुक्त जैनपाठशाला लायके आचार्य उपाध्यायादि जैन पन्डितके पास प्रथम वियाध्ययन प्रारंभ कराके पीछै महोछवादियुक्त अपने घरजावै । जैन पडिताकों यथाशक्ति द्रव्यादि दान देवै । साधु गुरुकों सुद्ध आहार वस्त्रादिक दान देवै । ज्ञान वृद्धी करै पुस्तकादि दान सर्व पाठशालाका लेशा लियानें देवै ॥ (सस्कारोपकरण सग्रहीत श्लोकः) ॥ पौष्टिकस्योपकरणं । गीत वादित्रमेवच । मन्त्रोप[illegible]स्य । सस्कार वस्तु सग्रह ॥ ※ ॥ इत्यु पाध्याय श्री ५ [illegible] मोहनलालमुनिः आचारग्रथास्सग्रही

इति आचाररत्नाकर प्रथम प्रकाशे त्रयोदशम पाठशाला महोत्छव विचारेन संस्कार संपूर्णम् ॥ ✻ ॥ १३ ॥ ॥ ✻ ॥ ॥ ✻ ॥

॥ ✻ ॥ अथ चतुर्दशम विवाह संस्कारविधि ॥ ✻ ॥

॥ ✻ ॥ इस जगत्के बीच जिसका कुल (और) शील समान होय उसीका परस्पर विवाह होताहै (उक्तंच) ययो रेव समशील । ययौरेव समं कुल । तयोर्मैत्री विवाहश्च । नतुपुष्ट विपुष्टयो ॥ १ ॥ (इससें) प्रथम वर कन्या, दोनुका कुल, शील, जाति, देश, रूप, धर्म, समान देखके विवाह करना चाहिये (तथा) । वर, कन्या, जिसका विक्रित कुल होय । उसका त्याग करै ॥ अव विक्रितकुलका लक्षण देखातेहैं ॥ जिस कन्याका पिताके रोम वहुत होय । हरस रोग होय । वहुत खाटरा होय । खर्जरोग होय । स्वेतकुष्टि नेत्र उदर आदिका मोटा रोग होय । ऐसे कुलकी कन्या ग्रहण न करे ॥ अव विक्रित कन्याका लक्षण कहतेहैं ॥ जिस कन्याका कोईभी अग न्यून अधिक होय । दूषणयुक्त होय । क्रूरदृष्टि होय । मोटे कोइ रोग होय । कपिलादि कुत्सितवर्ण होय । जिसका हस्तफरस (वा) वचन प्यारा नलगता होय । (तथा) देवताका । ऋषियोका, नदीका, अग्निका, वृक्षका ॥ कन्याका नाम रख्या होय (जैसैं) लक्ष्मी, सरस्वती, पार्वती, यमुना मथुरा, इत्यादि नाम होय । सरीरमें रोम वहुत होय । नेत्र पीला होय । घगरी स्वरसें वोलती होय । ऐसी कन्याकों निर्विकार कुलवाला ग्रहण न करें ॥ अव वरका विक्रितकुल देखातेहै ॥ हीन कुल होय । दारिद्रयुक्त होय । सातव्यसनयुक्त होय । मातापितादिकके सरीरमें मोटा रोग होय । कुलमें मिनष अल्प होय । ऐसे कुलमें कन्या न देवै ॥ अव विक्रित पुरषका लक्षण देखातेहै ॥ मूर्ख होय । निर्धन होय । दूरदेशांतर रहता होय । सूर वीर होय । मोक्षाभिलाषी तपस्वी होय । कन्याके वर्षासें त्रिगुणावरष उपरांत होय । मोटा रोग कोई होय । ऐसा वरकों उत्तम निर्दूषित कन्या न देवै ॥ अव विशेष कहतेहै ॥ (जो) वर, कन्या, दोनुका निर्विकार कुल होय तो विवाह सवंध करै । (अथवा) दोनुका सविकार कुल होय तो विवाहका संबंध करै ॥ (पुनः) वर, कन्याके परस्पर पांचप्रकारकी शुद्धिकों देखके संयोग करना चाहिये ॥ सो पांच प्रकार कहतेहै ॥ राशीमेल देखना १ ॥ योनिमेल देखना २ ॥

नाडीमेल देखना ३॥ गणमेल देखना ४॥ वर्गमेल देखना ५॥ (पुनः) वरका ७ गुण देखना सो कहतेहै ॥ कुल अच्छा होय १॥ शीलस्वभाव अच्छा होय २॥ कोईभी श्रीमंतकी जिसके सहायता होय ३॥ वियावंत होय ४॥ धनवान ५॥ सुंदर शरीर अंगोपांग होय ६॥ वय छोटी होय ७॥ यह ७ गुणकों देखके कन्या दान करना। उपरांत कन्याका भाग होय सो काम आवै ॥ गर्भाधानसें ८ आठमा वरषसें इग्यारमा वरषपर्यंत कन्याका विवाह करदेना चाहियै (इस युगमें) बारमा वरष उपरांत कन्याकों रजस्वला संज्ञाहै (जो तपमें कहाहै) अष्टवर्षा भवेत्गौरी । नववर्षाच रोहणी । दशवर्षा भवेत् कन्या । तत्ऊर्द्ध रजस्वला ॥ १ ॥ बारमा वर्षसें उपरांत कन्याका विवाहमें मुहूर्त्तादिकका काम नहि । उत्सव कियेविगर एक चंद्रबलकों देखके विवाह कर देना (और) पुरुषका १८ वरष उपरांत विवाह करना चाहिये (जो) छोटी अवस्थामें विवाह करै (तो) शरीर वियासंबंधी हानी होय ॥ ० ॥ विवाह दोप्रकार केहे । आर्य १ अनार्य २- (आर्यके ४ भेद) ब्राह्म १। प्राजापत्य २। आर्ष ३। दैवत ४। यह चार प्रकारके धार्मिक विवाह सोतो मातापिताकी आज्ञासेंहोतेहैं ॥ (अनार्यके ४ भेद) गांधर्व १। असुर २। राक्षस ३। पैशाच ४। यह ४ प्रकारके पापविवाह सो वरकन्याकी स्वेच्छामें होतेहै ॥ ब्राह्मविवाह विधीके लक्षण देखातेहैं ॥ शुभदिने । शुभलग्ने । पूर्वोक्त गुणयुक्त वरकु बोलायके स्नानालंकृतयुक्त करके । अलंकारसहित कन्याका दान करें ॥ (मंत्रोयथा) ॥ ॐ अर्ह सर्व गुणाय । सर्व वियाय । सर्व [illegible] य । सर्व पूजताय । सर्व शोभनायतु । सवस्त्र गंध माल्यालंकारालंकृता कन्या ददामि । प्रतिगृह्णीष्व भद्रभव । अर्ह ॐ ॥*॥ इ मंत्रेण वधूवरौ दंपती स्वगृह गच्छंतः ॥ यह ब्राह्मविवाह कह्या ॥१॥ अरु प्राजापत्य विवाह जगतमें प्रसिद्ध है । उसीकाहीज व्यवहार चलताहै उसीका लक्षण आगे कहेंगे ॥ २ वनमें रहे ऊने वानप्रस्थमुनि गृहस्थकी कन्याकु परणीजतेहै । इस विवाहके मंत्र जैनके वेदमें नहीहै । किसवास्ते कि जैनमें मुनीयोंका विवाह अकल्पनी कहे ॥ ३ ॥ दैवत विवाहकेलक्षण–पिता आपके पुरोहित [illegible] करनेवारेकु आपकी कन्या दक्षिणाकी परै देवे ॥ ४ ॥ यह ४ धार्मिक [illegible] वाहके लक्षण कहे ॥–अब [illegible] के लक्षण देखातेहै ॥ [illegible]

अप्रीतिसें (अरु) वरकन्याकी परस्पर प्रीतिसें होना (सो) गांधर्व विवाह कहिए ॥ १ ॥ पिता वरकेपास पण बंधकरै । हम तुमारेपास अमुक वस्तुकु लेगे। ऐसा निश्चय करके कन्यादेनी। वोआसुरी विवाह कहिये ॥२॥ हठकरकें कन्या ग्रहण करना। सो राक्षसी विवाह कहिये ॥ ३ ॥ मदोन्मत्त कन्याकों करके उसका ग्रहण करना सो पैशाचिक विवाह कहिये ॥ ४ ॥ इस चारकों पापविवाह कहतेहें। माता, पिता, गुरूकी आज्ञा रहितपणासें (ओर) ब्राह्म १॥ आर्ष २॥ दैवत ३॥ ए तीन विवाह कलयुग दुखमा कालमें प्रवर्त्तमान नहि हे (ओर) चारेपाप विवाहमें अधर्मत्वपणेसें वेदोक्त विधि नही है ॥ ॥ ॥॥

॥॥ अब प्राजापत्य विवाहकी विधि विस्तारसे लि० ॥॥

॥ ॥ प्रथम वरकन्याके नामसें विवाह योग्य शुभ मुहूर्त्त देखके विवाहसें कईदिन पहले वरकन्या दोनुंपक्षके सर्व स्वजन संबंधी इकठे होके अपना जोतषी गृहीगुरूकों उत्तमासनपर बैठायके उसीके हाथसें विवाहलग्न लिखावे। (पीछे) उस लग्नकों रुप्य सुवर्ण मुद्रासें (तथा) फल पुष्प, दुर्वादिकसें, जन्मलग्नकीतरें पूजन करावे (तदनंतर) वर, कन्या दोनु पक्षके वृद्धपुरुष अपना जोतषी गुरूकों वस्त्र, अलंकार, तांबूलादिक यथाशक्ति दान देवे (पीछे) कन्याके कुलमें जो वृद्धपुरुष होय (सो) वरके कुलमें वृद्धपुरुषकों नालेर, सोपारी, व्रीही, दूवा, हरिद्रादानसें (और) स्वस्वदेश कुलोचित आचारसें कन्या दान करे तब गृह्यगुरू ऐसा वेदमंत्र पढे ॥ ॐ अर्ह परम सौभाग्याय। परमसुखाय। परमभोगाय। परमधर्माय। परमयशसे। परमसंतानाय। भोगोप भोगांतराय व्यवच्छेदाय। इमां अमुक नाम्नी कन्यां। अमुक गोत्रां। अमुक नाम्ने वराय। अमुक गोत्राय। ददाति। प्रतिगृहाण अर्ह ॐ ॥ इसीतरें वर कन्याको प्रथम विवाह संबंध करे ॥ विवाहसंबंध हुए पीछे विवाहतो कितनाही दिन पीछे होताहै। परंतु कन्याको पिता कन्याको दान जिसकेनामें कर चूको उसीकों परणावे। उसकों छोडके कोई प्रकारका लोभ वस होकर दूसरेकों संबंध करी हुई कन्या नहि दे शक्ताहे (उक्तंच) शकृज्जल्पंति राजानः। शकृज्जल्पंति साधव। शकृत् कन्या प्रदीयते। त्रयेतानिशकृत् शकृत् ॥ १ ॥ (तथा

वरके घरसें वस्त्र, आभरण, सुगंधी वस्तु, कागसी, इत्यादिक वर्ने ब्रह्म स हित कन्याके घरकों भेजै (पीछै) कन्याको पिता कुटंवसहित वरकों भोजन करावै। यथाशक्ति वस्त्राभरणादि दान देवैं ॥ ※ ॥ इति विवाहसंबंध विधिः ॥

॥※॥ अब विवाहके प्रथम कार्य करनेकी विधिः ॥※॥

॥ ※ ॥ विवाहके प्रथम १५ (वा) १३ (वा) ११ (वा) ९ (वा) ७ दिवस पहले शुभ महूर्त्ते । वधु, वरके घरमें । मंगलीकगीत वाजित्र वादन पूर्वक तैलाभिषेक स्नान विवाह पर्यंत नित्य करनेका प्रारंभ करै (प्रथम) तैलाभिषेकदिने वरके घरसें । कन्याके घरकु । तेल, कागसी, गंधवस्तु, द्राक्षादिखाद्यवस्तु (तथा) शुद्ध फल पुष्पादिक भेजावै । सर्व कुटंबके पुरुषस्त्रीया इकठे होके । वरपक्षी कन्याके घरकुं । (और) कन्यापक्षी वरके घरकु, तेलादि पूर्वोक्त वस्तु लेके आवै– जवतेल धान्यादि लानेंवाली स्त्रीयाकों वधू, वरके घरकी, वृद्धस्त्रीया मालपूवादिक पकान्न भोजन करावै ॥ अत्र विवाहादिविधि देशाचार, कुलाचार, सें करावै (तथा) तैलाभिषेक । कुलकर, गणेशादि स्थापन । कंकणबंध । और विवाहोपचा रादिक सर्व वधु, वरके, चद्र बलकु देखके वैवाहिक नक्षत्रमें करावै–और धुलिभक्त, सौभाग्यजलानयन । प्रभृतिकर्म मंगलीक गीत वाजित्र सहित देशाचार कुलाचारसें करावै ॥ कोरा मृत्तिकाके पात्रमें वर, कन्या, दोनुंके घरामें । यव धान्यको वपनकरावै (फिरगृहीगुरु) कन्याके घरमें पूर्वषष्टी संस्कारमें कहै मुजब विधिसें । मातृकादेव्योंकी स्थापना करावै (और) वरके घरमें जैसें परसमय अनुसार चलनेंवाले गणपति (तथा) काम देवकी स्थापना करतेहैं । (तैसें) जिनमतानुसार चलनेवालोंके घरोमें । मातृका देव्योंकी (तथा) सात कुलकरोंकी स्थापना करावै ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अब सप्त कुलकर स्थापनविधि लिखते हैं ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ गृहगुरू भूमिपर पंचाङ्गवा गोमय लेके पृथ्वीकुं शुद्ध करके तिनपर स्वर्णमय वा रूप्यमय वा ताम्रमय अथवा श्रीपर्णि वृक्षके काष्टमय पट्टक स्थापना करना ॥ पट्टक स्थापनमंत्र ॥※॥ ॐ आधारायनमः । आधार शक्तयेनमः । आसनायनमः । (इस मात वार जपके पट्टस्थापित करै

(पीछे) तिस पट्टकु ॐ अमृते अमृतोद्भवे० इस मंत्र करके तीर्थके जलसें अभिषेक करै। चंदना क्षत दूर्वासें पट्टकी पूजन करै (ततःआदौ) ॐ नमः प्र थम कुलकराय। काचनवर्णाय। श्यामवर्णं चंद्रयशाप्रियतमा सहिताय। हा कारमात्रख्यापित न्याय्यपथाय। विमलवाहनाभिधानाय। इह विवाह महोत्सवादौ आगच्छ २। इहस्थाने तिष्ठ २। सन्निहितोभव २। क्षेमदोभ व २। ऋद्धिदोभव २। आनंददोभव २। भोगदोभव २। कीर्तिदोभव २। अपत्यसंतानदोभव २। स्नेहदोभव २। राज्यदोभव २। अर्घं पाद्य चरुआ चमनीयं गृहाण २। सर्वोपचारान् गृहाण २। (ततः) ॐ गंधायनमः। ॐ पुष्पायनमः। ॐ धूपायनमः। ॐ दीपायनमः। ॐ उपवीतायनमः। ॐ भूषणा यनमः। ॐ नैवेद्यायनमः। ॐ ताम्बूलायनमः। पूर्वमंत्रेण आहूय संस्थाप्य स न्निधिकृत्य अर्घं पाद्य बलि चर्वाचमनीयदान दद्यात्। अपरं ॐ कारादिनिर्मि तै गंधतिलकद्वय, नैवेद्यद्वय, ताम्बूलद्वय, दद्यात्॥ १॥ ॥ (तदनंतर बीजे स्थानमें) ॐ नमोद्वितीयकुलकराय। श्यामवर्णाय। चंद्रकाताप्रियतमासहिता य। हाकारमात्रख्यापित न्याय्यपथाय चक्षुष्मानभिधानाय इह विवाह महोत्सवे शेषपूर्ववत्॥ २॥ ॐ नमः तृतीयकुलकराय। श्यामवर्णाय। सुरूपाप्रियतमास हिताय। हाकारमात्रख्यापितन्याय्यपथाय। यशस्मानभिधानाय (शेषपूर्व वत्)॥ ३॥ ॐनमः चतुर्थ कुलकराय। श्वेतवर्णाय। श्यामवर्णप्रतिरूपा प्रियतमासहिताय। माकारमात्रख्यापितन्याय्यपथाय। अभिचंद्राभिधानाय (शेषपूर्ववत्)॥ ४॥ ॐनम पंचमकुलकराय। श्यामवर्णश्चक्षु काताप्रिय तमासहिताय। धिक्कारमात्रख्यापितन्याय्यपथाय। प्रसेनजितअभिधानाय (शेषपूर्ववत्॥ ५॥ ॐ॥ ॐनमः षष्टमकुलकराय। स्वर्णवर्णाय। श्यामवर्णं श्रीकाता प्रियतमा सहिताय। धिक्कार मात्र ख्यापित न्याय्य पथाय। मरु देवा भिधानाय। (शेषपूर्ववत्॥ ६॥ ॐनमः सप्तमकुल कराय। काचन व र्णाय। श्यामवर्णं मरुदेवा प्रियतमा सहिताय। धिक्कारमात्र ख्यापित न्याय्य पथाय। नाभ्यभिधानाय। (शेषपूर्ववत्॥ ७॥ इसीतरे सप्तकुलकरकी स्थापना करावे (मा) स्थापना विवाह हुये पीछे सात दिन पर्यंत रखा ते (पीछे) वरके घरमें शांतिक पौष्टिक पाठ कर्म करे॥ (यदि ग्रामांतरे नगरांतरे देशांतरे वर गोप निमकी आविधिहै--प्रथम दिवसे मातृपूजा पूर्वक सर्वज्ञा

गधोसि । समस्पर्शोसि । समेंद्रियोसि । समाश्रवोसि । समबंधोसि । समसंव रोसि । समनिर्जरोसि । सममोक्षोसि । तदेकत्वमिदानी अर्हं ॐ ॥५॥ इति हस्तबंधनमंत्रः ॥ अन्यसमयांतरमें, देशांतरमें, कुलांतरमें, लग्नसाधनसमये मधुपर्कका प्राशन (और) वरकु गोयुग्मका दान । कन्याकुं वस्त्राभ रणादिकका दान इत्यादिक कार्य करतेहें ॥ ५ ॥ पाणिग्रहण किये हुवे वर, वधू, मातृकाकेपास बेठेहैं । उससमे कन्याके पक्षी वेदिरचना करे (तिसकी यहविधि) चौतरफ काष्ठके स्तंभहै (और) ऊपर काष्टसें आच्छादित हें। ऐसे मंडपके बीचमें चतुःकोण वेदिकरे। कितनेक कन्यापक्षी मनुष्य वेदीके चतुष्कोणमे सात सात कुंभस्थापित करतेहें । अनुक्रमसें सबके हेठेबमा । उनके ऊपर छोटा । ऊपर छोटेसें छोटा । कलश सुवर्णमय, रुप्यमय, ताम्र मय (अथवा) मृन्मयी लेके त्रिकोण वंशसें बंधन करे । मंडपके ४ चार करे ४ द्वारपर वस्त्रमय (वा) काष्ठमय तोरण बाधे । आम्रके पत्रकी वंदरमाल बाधे । बीचमे त्रिकोण अग्निकुंड करे (पीछे गृह्यगुरु) पूर्वोक्त वेषधारी वेदीकी प्रतिष्टा करे (तिसकी यहविधि.) वास, पुष्प अक्षत, परिपूर्ण हस्तहोके गुरु इसमंत्रकुंपढे ॥ ॐ नमः क्षेत्रदेवतायै शिवायै क्षाँ क्षीं क्षूं क्षौं क्षः इहविवाह मंडपे आगच्छ२। इह वलि परिभोगंगृह्ण २। भोगदेहि । सुखदेहि यशोदेहि । संततिदेहि । ऋद्धिदेहि । वृद्धिदेहि । सर्वसमीहितदेहि २ स्वा हा ॥५॥ (इस मंत्रकु पढके) चारे कोणमें प्रत्येके वास, माला, अक्षत, रखावै- तोरणकी प्रतिष्टापण इसीजरीतिसें करावे ॥ तिसके मंत्रः ॥ ॐ ह्रीं नमो द्वारश्रिये । सर्व पूजिते । सर्व मानिते । सर्व प्रधाने । इह तोरणस्था सर्व समीहित देहि २ स्वाहा ॥ इति तोरणप्रतिष्टा ॥ (तदनंतर) वेदिमध्ये त्रिकोण-अग्निकुंडमे मंत्रपूर्वक अग्निकों स्थापित करे ॥५॥ अग्निस्थापनका मंत्र ॥५॥ ॐ र र र रा रू रौ रः । नमोऽग्नये । नमो बृहद्भानवे । नमोऽनंत तेजसे । नमोऽनंत वीर्याय । नमोऽनंत गुणाय । नमो हिरण्य तेजसे । नमो छागवाहनाय । नमो हव्याशनाय । अत्रकुंडे आगच्छ २ । अवतर २ । तिष्ट २ स्वाहा ॥ अन्य मतमें, देशांतरमें, कुलांतरमें, हस्त मेलन, वर वधू के वेदीकेपास कराते हें (और) कोइ देशकुलाचारसें ऐसें कर्ते हें । म धुपर्क प्राशनके पीछे । हस्त मेलनके प्रथम । वर वधूकों परस्पर कुतूहल

सुखकरोतु । सौख्यकरोतु । लक्ष्मीकरोतु । अर्हं ॐ ॥ इसरीतसें आयवेद पाठी ब्राह्मण, वरके आगल चालै (पीछे) इसहीजविधिसें । महोत्सव करके स्वपरिपाटीसें गुरुवदन, मण्डलीपूजन, पुरदेवतादि पूजन करें । पीछे मार्गमें चालै (तेसें) इसहीज रीतिसें । कन्याविष्टित पुरमें पण प्रवेशविधेय करना ॥ (और) तिणहीजपुरमे विवाहके अर्थ चालते वरके पण यहहीज विधिहै (तथैव) नित्य स्नान कीये पीछे । स्त्रीपुरुषके शरीरका मान करें (पीछे) विवाहके दिन आथेसें विवाहका लसें प्रथम तिसहीज देशमे रहनेवाला (अथवा) अन्यदेशसें आया हुवा वर । तिसहीज पूर्वोक्तविधिसें पाणिग्रहणके अर्थ चढे (जब) तिसवरकी भगिनी आदिक विशेषकरके लूण उतारे (इस रीतसे) वो वर, गृह्यगुरु स हित कन्याके घरकु जावें । कन्याके द्वारपे जायके खमा रहे (वहां) सासू आके कपूर दीपादिकसें आरति करै (पीछे) दूसरी स्त्रीआयके मृन्मय पात्रमे जाज्वल्यमान अग्नीकुलेके उसपर लूणकुधरके वरके ऊपर तीनवेर फेरके, वरघरमे प्रवेशकरे, तिससमे वामभागमें धरे (पुन) अन्या स्त्री, मथान नेतरो कौसुम्भवस्त्रसें अलकृत करकें । तीनवेर वरके ललाटकु स्पर्शकरें (पीछे) वर वाहनसे उतरके वामपादसें अग्निलवणयुक्त सरावसंपुटकु खम्न करें (तदनतर) वरकु, श्वश्रू (अथवा) कन्याकी मामी (वा) कन्याका मामा । कौसुम्भवस्त्रकु वरके कण्ठमे स्थापित करके । वरकु खेंचके, वरके भीतर लेजावे (पीछे) पूर्वाभिमुख आसनपर विभूषित होके । कौतुक मग लादिक करके वेठी हुई । कन्याके वामपार्श्वे मातृका देवीके सन्मुख वरकु वेसावें (पीछे) गृह्यगुरु लग्न वेलासमये । शुभनवमांशकु देखके । चदनके शर (अरु) पीसी हुई शमीकी त्वचा, पिप्पलकी त्वचा, मिश्रित करके स्त्री पुरुषका दक्षिणहस्तकु युक्तकरे । (ऊपर) कौसुम्भसूत्रसें बधन करे ॥ ॐ ॥ हस्तबधन मत्रः ॥ ॐ ॥ ॐ अर्हं आत्मासि । जीवोसि । समकालोसि । समकर्मासि । समाश्रयोसि । समदेहोसि । समक्रियोसि । समस्नेहोसि । सम चेष्टितोसि । समाभिलाषोसि । समेच्छोसि । समप्रमोदोसि । समविषादोसि । समवस्थोसि । समनिमित्तोसि । समवचोसि । समक्षुत्तृष्णोसि । समागमोसि । समविहारोसि । समविषयोसि समशब्दोसि । समरूपोसि । समरसोसि । सम

गर्भोसि । समस्पर्शोसि । समेंद्रियोसि । समाश्रवोसि । समवंधोसि । समसंव रोसि । समनिर्जरोसि । सममोक्षोसि । तदैकत्वमिदानी अर्हं ॐ ॥❀॥ इति हस्तवंधनमंत्रः ॥ अन्यसमयांतरमें, देशांतरमें, कुलांतरमें, लग्नसाधनसमये मधुपर्कका प्राशन (और) वरकु गोयुग्मका दान । कन्याकु वस्त्राभ्र रणादिकका दान इत्यादिक कार्य करतेहैं ॥ ❀ ॥ पाणिग्रहण किये हुवे वर, वधू, मातृकाकेपास बेठेहे । उससमे कन्याके पक्षी वेदिरचना करे (तिसकी यहविधि) चोतरफ काष्टके स्तंभहे (और) ऊपर काष्टसें आछादित हें। ऐसे मंडपके वीचमें चतुःकोणा वेदिकरे । कितनेक कन्यापक्षी मनुष्य वेदीके चतुष्कोणमे सात सात कुंभस्थापित करतेहैं । अनुक्रमसें सवके हेठेवमा। उनके ऊपर छोटा । ऊपर छोटेसें छोटा । कलश सुवर्णमय, रुप्यमय, ताम्र मय (अथवा) मृन्मयी लेके त्रिकोण वंशसें वंधन करै । मंडपके ४ द्वार करै ४ द्वारपर वस्त्रमय (वा) काष्टमय तोरण बांधै । आम्रके पत्रकी वंदरमाल बांधै । वीचमे त्रिकोण अग्निकुंड करै (पीछे गृह्यगुरु) पूर्वोक्त वेषधारी वेदीकी प्रतिष्टा करैं (तिसकी यहविधि) वास, पुष्प अक्षत, परिपूर्ण हस्तहोके गुरु इसमंत्रकुपढै ॥ ॐ नमः क्षेत्रदेवतायै शिवायै क्षां क्षीं क्षूं क्षौं क्षः इहविवाह मंडपे आगछ२। इह वलि परिभोगंगृह्ण २। भोगंदेहि । सुखदेहि यशोदेहि । संततिदेहि । ऋद्धिदेहि । वृद्धिदेहि । सर्वसमीहितदेहि २ स्वा हा ॥❀॥ (इस मंत्रकु पढके) चारे कोणमें प्रत्येके वास, माला, अक्षत, रखावै--तोरणकी प्रतिष्टापण इसीजरीतिसें करावै ॥ तिसके मंत्रः ॥ ॐ ह्रीं नमो द्वारश्रिये । सर्व पूजिते । सर्व मानिते । सर्व प्रधाने । इह तोरणस्था सर्व समीहित देहि २ स्वाहा ॥ इति तोरणप्रतिष्टा ॥ (तदनंतर) वेदिमध्ये त्रिकोण अग्निकुंडमे मंत्रपूर्वक अग्निकों स्थापित करै ॥❀॥ अग्निस्थापनका मंत्र ॥❀॥ ॐ र र रा रू रौ रः । नमोऽग्नये । नमो वृहद्भानवे । नमोऽनंत तेजसे । नमोऽनंत वीर्याय । नमोऽनंत गुणाय । नमो हिरण्य तेजसे । नमो छागवाहनाय । नमो हव्याशनाय । अत्रकुंडे आगछ २ । अवतर २ । तिष्ट २ स्वाहा ॥ अन्य मतमें, देशांतरमें, कुलांतरमें, हस्त मेलन, वर वधू के वेदीकेपास करातें हैं (और) कोइ देशकुलाचारसें असें करतें हैं । म धुपर्क प्राशनके पीछे । हस्त मेलनके प्रथम । वर वधूकों परस्पर कुतूहल

कराते हैं। वो कुतूहल देश विशेषतः लोकासें जान लेना। यह वार्त्ता शास्त्रो क्त नही है। इससें हमने नहि लिखा (परंतु) सौभाग्यकी प्राप्तिके अर्थ. (और) वरकु वशीकरणके अर्थ करते हैं (तदनंतर) वर, वधू, हस्त मेलन करे हुये। नरनारीकी कटि आरूढ होके। गीत गावते मंडपके द क्षिण द्वारसें प्रवेश करके देशकुलाचारसें। काष्टके आसनपर (वा) चित्र विचित्र आसनपर (अथवा) सिंहासनपर पूर्वाभिमुख वर वधूकु बेठावै वेदी कर्मके समय कुलाचारके अनुसारसें कोरा वस्त्र, कसुंबल वस्त्र (अरु) स्वाभाविक वस्त्र, स्वेत वस्त्र, वरवधूकु देवै (तदनंतर गृह्य गुरुः) उत्तराभि मुख बेठके। मृगचर्मपर अग्नीकु। शमी, पिप्पल. कपित्थ, कुटज, बिल्व, अमलक, इत्यादिककी काष्टसें प्रज्वलित करै। पीछे अग्निमें-घृत, मधु, तिल, यव, फलसें होम करें ॥३॥ तिसके मंत्र ॥४॥ ॐ अर्ह। ॐ अग्ने प्रसन्न. सावधानोभव। तवायमवसर. तदाह्वारय। इंद्र, यम, नैर्ऋतं, वरुण, वायु कुबेर, ईशान, नागान, ब्रह्माण, लोकपालान्। ग्रहाश्च। सूर्य, शशि, कुज, सौम्य, बृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु, केतून्, असुराश्च, असुर नाग, सुपर्ण, विद्यु, दग्नि, द्वीपो, दधि. दिग्कुमारान्, भुवनपतीन्। पिशाच भूत यक्ष किन्नर किंपुरुष महोरग गंधर्वान् व्यंतरान्। चंद्रार्क ग्रह नक्षत्र तारकान्। ज्योतिष्कान्। सौधर्मेशान सनत्कुमार माहेंद्र ब्रह्म लांतक शुक्र सहश्रारान् आणत प्राणतारणाच्युत ग्रैवेयका नुत्तरभवान्। वैमानिकान्। इंद्र पार्षदसामानिक त्रायत्रिंसल्लोकपालानीक प्रकीर्णक। लोकांतिकाभियोगिक। भेदभिन्ना श्चतुर्णिकायान् अपि। सभायान्। सायुधवलवाहनान्। स्वस्तोप लक्षितवर्हान्। अप्सरसश्च। परिग्रहीता,ऽपरिग्रहीता भेदभिन्ना ससरवीका सदासिका' साभरणाः रुचिकवासिनी दिग्कुमारिकाश्च। सवा समुद्र नदीः गिरि आकर वनदेवतास्तद्देवतान् सर्वाश्च इदमर्घ पाद्य माचमनीय बलि चरु हुत न्यस्त ग्राह्य २ स्वय गृहाण २ स्वाहा अर्ह ॐ॥ ऐसें होम करनेसें अग्नीकु प्रज्वलित करै (पीछे प्रसन्न होके गृह्य गुरु. । वरके दक्षिण पार्श्वमे स्थित कन्याकु उठायके। वरके सन्मुख बेठायके (ऐसे बोले) ॥ ॐ अर्ह इदमासन मध्यासीनौ स्वध्यासीनौ स्थितौ सुस्थितौ तदस्तु वासनातन. सगम अर्ह ॐ॥ ऐसें मंत्रोच्चारण करके। दर्भके अग्रभागसें। तीर्थोदकसें वरवधू

का अभिषेक करै—(पीछे) वधूका पितामह दादा (अथवा) पिता (अथवा) काका (अथवा) भ्राता (अथवा) माता (अथवा) मामी (अथवा) कुलमें ज्येष्ट पुरुष । स्वधर्मानुष्ठान करके । अच्छे वस्त्राभरण पहिरके । वरवधूके आगे बेठें । (तदनतर गृह्य गुरुः) ॐ नमो अर्हत् सिद्धाचार्यो पाध्याय सर्व साधुभ्यः । ऐसें बोलके दूर्वाक्षत हस्तमे लेके । वधू वरके आगें वचन बोले । तुमारा दोनूका गोत्रादिक सबंध करनेसें हमने जाणा (परतु) अब तुमारा दोनूका गोत्र सबके सुनतें प्रकाशित करो (तव) प्रथम वरके पक्षी, आपके गोत्र प्रवर ज्ञाति अन्वयकुं प्रकाश करै (पीछे) वरके मातृपक्षीय गोत्र प्रवर ज्ञाति अन्वयकु प्रकाश करे । (पुनः) कन्याके पक्षी स्वकीय गोत्र प्रवर ज्ञाति अन्वयकु प्रकाश करें (पीछे कन्याके मातृपक्षी गोत्र प्रवर ज्ञाति अन्वयादिकको प्रकाश करें ॥ (तदनतर) गृह्य गुरु ऐसें वचनोच्चारण करे ॥ ॐ अर्हं अमुक गोत्रीय इयत् प्रवरः। अमुक ज्ञाति। अमुकान्वयः। अमुक प्रपौत्रः। अमुक पौत्र· अमुक पुत्रः अमुक गोत्रीयः। इयत् प्रवरः। अमुक ज्ञातीयः अमुकान्वयः अमुक प्रदौहित्रः अमुक गोत्रीयः इयत् प्रवरः अमुक ज्ञातीयः अमुकान्वयः अमुक प्रपौत्री अमुक पौत्री अमुक पुत्री अमुक गोत्रीय। इयत् प्रवरः। अमुक ज्ञातीय अमुकान्वय, अमुक प्रदौहित्री अमुक मात्रीय। इयत् प्रवरः। अमुक ज्ञातीय अमुकान्वयः अमुक प्रदौहित्री अमुका वधू । तदा तयोर्वर्या वरयो निविमो विवाह सवधोस्तु । शांतिरस्तु । तुष्टिरस्तु । पुष्टिरस्तु । वृद्धिरस्तु । धनसतानवृद्धिरस्तु अर्हं ॐ (तदनतर गृह्य गुरु) वर वधूके पाससें गध पुष्प धूप नैवेद्यादिकसें अग्नीकी पूजा करावे (पीछे) वर वधू चावलकी धाणि हाथमें लेके अग्नीमे प्रक्षेप करै (तदनतर) पुन· वरकु दक्षिणभागमें बेठावे। वधूकुं वामभागमे बेठायके गृह्यगुरु वेदके मत्रकु पढे—॥ ॐ अर्हं अनादिविश्व अनादिरात्मा अनादिकालः अनादिकर्म अनादिसंबधो देहिना वेदानुमतानुगताना क्रोधाहकार छद्म लोभै· सजलन प्रत्याख्यानाऽप्रत्याख्यानाऽनंतानुवधिभिः शब्दरूप रसगध स्पर्शेरिच्छापरि मकलितैः सवधोऽनुबधः प्रतिवधः सयोगः सुगमः सुकृतः स्वनुष्ठितः सुप्राप्तः सुलब्धो द्रव्यभावविशेषेण अर्हं ॐ॥ ऐसें मंत्रकु पढके गुरु फेर ऐसें कहें ॥ तदस्तु वा सिद्धप

त्यक्ष केवलिप्रत्यक्ष चतुर्निकाय देवप्रत्यक्ष विवाहप्रधानाग्नि प्रत्यक्ष नामप्र त्यक्ष नरनारीप्रत्यक्ष जनप्रत्यक्ष गुरुप्रत्यक्ष मातृप्रत्यक्ष पितृप्रत्यक्ष मातृपक्ष प्रत्यक्ष पितृपक्षप्रत्यक्ष सवधः सुकृत· सदनुष्ठित· सुप्रात सुवधः सुसगतः ॥ (पीछे) प्रदक्षिणा करो, अग्नीकी (अरु) सूर्यकी, ऐसें गृह्यगुरु वचनोच्चार करें तव गठजोमा वधे जावे। दोनु वर वधु अग्निकी प्रदक्षिणा करे। प्रदक्षिणा करके पूर्वोक्त रीतीसें लाजधाणि हाथमें लिये थके वैठे। तीन प्रदक्षिणा करते वधू आगल रहे। वर पाछल रहे। दक्षिणभागमें वरका आसन। वामभागमें वधूका आसन ॥ इति प्रथम लाजीकर्म ॥ वर वधूके आसनपर वेठे थके गुरु वेदमत्रकु पढै-॥ ॐ अर्हं कर्मास्ति मोहनीयमस्ति दीर्घस्थित्यस्ति निविम मस्ति डुर्भेयमस्ति अष्टाविशति प्रकृत्यस्ति क्रोधोस्ति मानोस्ति मायास्ति लोभोस्ति सज्वलनोस्ति प्रत्याख्यानावरणोस्ति अप्रत्याख्यानावरणोस्ति अन तानुवध्यस्ति चतुश्चतुर्विधोस्ति हास्यमस्ति रतिरस्ति अरतिरस्ति भयमस्ति जुगुप्सास्ति शोकोस्ति पुवेदोस्ति नपुसकवेदोस्ति मिथ्यात्वमस्ति मिश्रमस्ति सम्यक्तमस्ति सप्तति कोटाकोटि सागरस्थित्यस्ति अर्हं ॐ ॥ ऐसें वेदमत्रकु पढके पुनः ऐसा कहैं- तदस्तु वा निकाचित निविमवद्ध मोहनीयकर्मोदयकृतः स्नेहसुकृतोस्तु सुनिष्ठितोस्तु सुसवद्धोस्तु आभवमक्षयोस्तु-॥ (फिर) अग्नीकी प्रदक्षिणा करो (तव) वरवधू पुनः अग्नीकी प्रदक्षिणा पूर्वोक्त रीतीसें करै ॥ इति द्वितीय लाजाकर्म ॥ चारेइ लाजाकर्ममें प्रदक्षिणाके प्रारभमें वरवधू लाजकी मुष्टिकु प्रक्षेप करें (तदनतर) तिस दोनु वरवधूके वेठे थके । गुरु ऐसें वेदमत्रकु पढै ॥ ॐ अर्हं कर्मास्ति वेदनीयमस्ति सातमस्ति असातम स्ति सुपुवेद्य सात। दुपुवेद्य असात। सुवर्गणाश्रवण सात। डुवर्गणाश्रवण अ सात शुभपुद्गलदर्शन सात। डु पुद्गलदर्शन असात। शुभपड्रसा स्वादन सात अशुभ पुद्गला स्वादन असात। शुभ पुद्गल स्पर्शन सात। अशुभ पुद्गल स्प र्शन असात। सर्व सुखकृत सात। सर्वडु खकृत असात। अर्हं ॐ ॥ ओसें वे दमत्रकु पढके। पीछे ओसें कहें—तदस्तु वा सातावेदनीय मानूदसाता वेदनीय तत्प्रदक्षिणी कियता विभावसु। ऐसें गुरुवचन कहे। तव वरवधू पूर्वोक्तरीतसें अग्नीकी प्रदक्षिणा करके आसनपरवेठे ॥ इति तृतीय लाजाकर्म ॥ तदनतर पुन गृह्यगुरुः वेदके मत्रकु पढें ॥ ॐ अर्हं सहजोस्ति स्वभावोस्ति सवधो

स्ति प्रतिबंधोस्ति मोहनीयमस्ति वेदनीयमस्ति नामास्ति गोत्रमस्ति आयुरस्ति हेतुरस्ति आश्रवबन्धमस्ति क्रियाबन्धमस्ति कायबन्धमस्ति नदस्ति संसारिक संबध अर्ह ॐ ॥ ऐसें वेदमंत्रकु गुरुः पढके कन्याका पिताके, अथवा काके के, अथवा भाइके, अथवा कुलमें ज्येष्ट होवे. तिसीके हाथमें । तिल यव कुश दुर्वा युक्त जलकु देकें ऐसें कहै ॥ अद्य अमुक संवत्सरे अमुकायने अमुक ऋतौ अमुक मासे अमुक पक्षे अमुक तिथौ अमुक वासरे अमुक नक्षत्रे अमुक योगे अमुक करणे अमुक मुहूर्ते पूर्वकर्मसंबधानुबन्ध वस्त्र गंधमाल्यालंकृता सुवर्ण रूप्य मणि भूषण भूषिता ददाति अय प्रतिगृह्णीष्व । इति कथयित्वा । वर वधूके युक्त हाथके अंतर जलका निक्षेप करै । तदावर कहै । प्रतिगृह्णामि । तब गुरुः कहैं । सुप्रति गृहीतास्तु । शांतिरस्तु । पुष्टिरस्तु। तुष्टिरस्तु । ऋद्धिरस्तु वृद्धिरस्तु। धनसंतान वृद्धिरस्तु (तदनंतर) प्रथम तो तीनवेर अग्निकी प्रदक्षिणा करणसमें, वरका हस्त अधः था (अरु) कन्याका हस्त ऊपर था (अब) चोथी प्रदक्षिणासमें कन्याका हस्त अधः करना (और) वरका हस्त ऊपर करना (तदनंतर) वर वधू दोनुंको आसनसें उठाके । वरकु आगल करना । वधूकु पीछे करना । लाजकी मुष्टि अग्नीमें प्रक्षेप कराके । गृह्यगुरु कहे प्रदक्षिणा करो (तब) वर वधू अग्नीकी प्रदक्षिणा करै । तिसमें कन्याका पिता (यावत्) कुलका ज्येष्ट पुरुष । संपूर्ण वर वधूकु देणे योग्य वस्तु । वस्त्र, आभरण, स्वर्ण, रूप्य, रत्न, ताम्र, कांश्य, दासी, गो, वृषभ, पल्यंक, तुलिकोत्सीर्षक, दीप, शस्त्र, पाक, भाण्ड प्रभृति, सर्व वस्तु वेदीके भीतर बेठे हुवे वर वधूकों देवे (पीछे) ओरपण कन्याके बंधु संबंधि मित्रादिक स्वकीय संपदाके अनुसार पूर्वोक्त वस्तु वेदीके अंतर देवे (तदनंतर) वर वधू अग्नीकी चोथी प्रदक्षिणा देके पूर्वोक्त रीतिसें आसनपर बेठें (इहां) वर जीमणेपासे । अरु । कन्या वाम पार्श्वे बेठे (तदनंतर) गृह्यगुरु । कुश दूर्वा अक्षत सुगंधिवस्तु हाथमें लेकें ऐसें कहें येनाऽनुष्ठानेना डायोऽर्हन् शक्रादि देवकोटिपरिवृतो भोगाय संसारीजीव व्यवहार मार्गसंदर्शनाय। सुनंदा सुमंगले पर्याणैषीत। ज्ञातमज्ञात वा तदनुष्ठान नुष्ठितमस्तु ऐसे वचनकहें (पीछे) वास दूर्वाक्षत कुशान् वर वधूके मस्तकपर प्रक्षेप करें (पीछे) गृह्यगुरुः आज्ञा दीये थके । वधूके पिता, जल यव तिल कुशाकुं

हस्तमे लेके, वरके हस्तमे देके ऐसें कहै-। दाय ददामि प्रतिगृह्णाण। वरः कथ यति प्रतिगृह्णामि। प्रतिगृहीत परिगृहीतं(गुरुः कहै)सुगृहीतमस्तु, सुपरिगृही तमस्तु (पुन) भूषण हस्ती अश्वादि दाय दान समय पण वधूपिता पूर्वोक्त विधि करें। ऐसें सर्ववस्तुका दान दीये पीछे। गुरु ऐसें कहें॥ वधू वरो वा पूर्वक र्मानुबन्धेन निबिडेन। निकाचित बन्धेन। अनुपवर्त्तनीयेन। अपवर्त्तनीयेन। अनु पायेन अश्लेषेन अवश्यभोग्येन विवाहः प्रतिबद्धो बभूव। तदस्तु अखण्डितो अ क्षयो अव्ययो निरपायो निराबाध सुखदोस्तु शांतिरस्तु पुष्टिरस्तु ऋद्धिरस्तु वृद्धि रस्तु धनसंतान वृद्धिरस्तु॥ ऐसे वचनबोलके तीर्थोदकका जल लेके कुशाग्रसें अभिषेक करे (पीछे गुरु) वर वधूकु उठायके जहां मातृका स्थापित करी हुई है तहां उपवेशन कराके गुरु ऐसें कहै ॥ अनुष्ठितो वा विवाहो 'समस्नेहौ' सभोगौ समायुषौ सधर्माणौ समदुःख सुखौ सम शत्रुमित्रौ समगुणदोषौ सम वाङ्मन• कायौ समाचारौ समगुणोभवता ॥ गुरु ऐसे कहें ॥ पीछे ॥ कन्याका पिता करमेचनके अर्थ गुरुकु कहे (तब) गुरु वेदमंत्रकु पढै ॥ ॐ अर्हं जीवस्त्व कर्मणाबद्ध। ज्ञानावरणेन बद्धः। दर्शनावरणेनबद्ध•। वेदनीयेनब द्ध। मोहनीयेनबद्ध•। आयुषाबद्ध•। नाम्नाबद्ध•। गोत्रेणबद्धः। अंतराये णबद्ध। प्रकृत्याबद्धः। स्थित्याबद्ध•। रसेनबद्ध•। प्रदेशेनबद्धः। तदस्तु तेमोक्षो गुणस्थानारोह क्रमेण अर्हं ॐ॥ ऐसें वेदमन्त्रकु पढके गुरु ऐसा कहे- मुक्तयो करयोरस्तु वां स्नेह सबंधो अखंडितः ऐसें कहके करमोचन करावै। कन्याका पिता करमोचनके समय जमाइको। बाछितवस्तु स्वसंपदाके अनुसार अधिक तरेसें देवें। दानकी विधि पूर्वोक्त युक्तिसें। पीछे तहांसे उठाय के पुनः वर वधूकु वेदिकेपास लाके आसनपर बेठावें(पीछे)ऐसें वृत्तका उच्चा रण करें ॥ उक्तंच॥ पूर्वं युगादिभगवान् विधिनैवयेन। विश्वस्य कार्यकृतये कि लपर्यणैषी। भार्गादय तदमुना विधिनास्तुयुग्म। मेतत्सुकाम परिभोगफला नुबंधि ॥ १ ॥ ऐसें वचनोच्चारण करके। पूर्वोक्त विधिसे गठ जोड़ा छोड़ायके (गुरु कहें) अचल सौभाग्य भवता। ऐसें गुरुवचन कहे पीछे। दंपती स्त्री पुरुष अनेक सौभाग्यवती स्त्रीयादिकसें वेष्ठित हुओ थके शृगार घरमें प्रवेश करै। तिस शृगार घरमे पूर्वे स्थापी हुइ कामदेवकी मूर्त्तिकु कुलवृद्धानुसारसें पूजन करें (पीछे) तिसी जगें वर वधू सम काल क्षीरान्न

भोजन करें। यथा युक्ति सब प्रचार करें (पीछे) जिस रीतिके उत्सवसें आ येथे। उसी रीतिके उत्सवसें पीछा घरकु जावे (पीछे) वरके माता, पिता, वर वधूके मंगलकी विधि देशकुलाचारके अनुसार करें। कंकणबंधन कंकणमोच न घृतकीमा वेणिग्रंथनादि कर्म्म सर्व तत्र देश कुलाचारके अनुसार करें। विवाहके पूर्व वर वधूके दोनु पक्षमें भोजन दान करै (तदनंतर) धूलिभक्त जन्यभक्त प्रभृति देशकुलाचारसें करें तदनंतर सप्तदिन पीछे वरवधूका विस र्जन करें ॥ तिसकी विधि ॥ सप्तदिनपर्यंत विविध भक्तिसें पूजित ऐसें जमा इकु अनेक वस्तूका दान देवे (पीछे) वडे आडंबरसें वरकु आपके घरे पहु चावे। पीछे सप्त रात्रिपर्यंत, अथवा मासपर्यंत, अथवा षण्मासपर्यंत, १२ मासपर्यंत, महोत्सव करें कुलसंपदा देशाचारानुसारसें सप्तरात्रि पीछे वा मास पीछे कन्याके पक्षमें कुलाचारानुसारसें मातृ विसर्जन करावें पूर्वोक्त रीतिसें और गणपति मदनादि विसर्जनकी विधि लोकप्रसिद्धः—वरपक्षमें कुलकरके विसर्जनकी विधि कहते हैं ॥ कुल करके स्थापन किये पीछे प्रतिदिन कुल करकी पूजा करै। विसर्जन समयें कुलकरकी पूजन करके विसर्जन करावै (गुरुमंत्र पढै) ॐ अमुक कुलकराय इत्यादि पूर्ववत् संपूर्ण मंत्र पढिके पुन रागमनाय स्वाहा॥ इस रीतिसे संपूर्ण कुलकराकु विसर्जन करै (उक्तंच) ॐ आज्ञाहीनं क्रियाहीनं। मंत्रहीनंच यत्कृतं। तत्सर्वं कृपयादेव। क्षमस्वपरमेश्वर १॥ इति कुलकर विसर्जन विधिः॥ तदनंतर मंगलपूजा गुरुपूजा वासक्षेपादि पूर्ववत्। साधूवाकु वस्त्र पात्रका दान। विप्रेभ्यो पूजा दान। बंदिजनाकुं तथा अपर याचकादि जनकुं यथा संपदा दान देवै। (तथैव) समयांतरमें, दे शकुलाचारसे, विवाहलग्नमें वर श्वशुरके वरकु आवे। तब उकाम करै। प्रथमं आसनदान। श्वशुरः कथयति। विष्टर प्रति गृह्णाण। वर कथयति। ॐ प्रतिगृ ह्णामि। इस रीतीसें आसनपर वैठें(पीछे)श्वशुर, वरके पादप्रक्षालन करें। पीछे अर्घदानं दधि चंदनाक्षत दुर्वा कुश पुष्प स्वेत सर्षप जलैः श्वशुरो यामात्रे अर्घदान ददाति। तेसें आचमनदान तदनंतर गंधाक्षतपूजा तिलककरण तद नंतर मधुपर्कप्राशन (ऐसें) आसन, पाद्य. अर्घ, आचमनीय, गंध, मधुपर्कं षट्कार्यं(पीछे)घरके भीतर लायके वधु वरके परस्पर दृष्टिमेलन करावै। इत्या दि। शेष पूर्ववत् विधि. ॥ विवाहकी विधिके श्लोक ॥ इति देशकुलाचारै।

विवाहस्य विधिः परः । विधेयं श्च सपत्ति । वधः पद्धानुसारतः॥ १॥ मूलशास्त्रं समालोक्य । विधिरेष प्रदर्शितः। स्वदेशकुलजाचार । पेक्षणीयो महात्मभिः॥ २॥ वरकार्य शधिमातृ । कुलदेव्यादिपूजन । स्वस्ववशानुसारेण । विधेय स्या यथाविधि.॥३॥ वेद्यानयनकर्म्म पि । तथा मण्डपबंधन। कुलवृक्षादिवचनं । विधे य विविविदिग्भिः ॥ ४ ॥ कार्यं कंकणबंधस्तु । विवाहादौ कुलोचिनः । विवाहांते तस्यमोक्षः । कार्योवृद्धगिरापर ॥ ५ ॥ कुणामर सूत्रमय । कौशेयमयमित्य पि । परेमुजमयप्राहुः । कंकण कुलयुक्तितः ॥ ६ ॥ केचिन्मातृ गृहेप्राहुः । दंपत्यो करबंधनम् । मधुपर्कोशिनात्पश्चा त्परैवेद्यासनस्थयो. ॥ ७ ॥ अग्नी प्रदक्षिणाकाले । शिलालोष्टोः पदेनच । वध्वास्पर्शनमित्याहुः । परैनैवचकिं चन ॥ ८ ॥ क्वचिद्देशांतरेचैव । वरकन्या समागमे । विवाहमाहुः कुत्रापि । तयोरचलकर्षणात् ॥ ९॥ देशाचारे विवाहांत । स्वपहासवगानतः । मिथःकुर्व तिमहिलाः । ज्ञेयोदेशकुलादितः ॥ १० ॥ पितृमातृगिरायस्तु । सगमोवरक न्ययोः । ज्ञेयोविवाहधर्मोपि । विधिनायेनकेनचित् ॥११॥ वह्निनाम्नवरेणापि । वह्निद्रव्य व्ययेनच ज्ञेय पापविवाहस्य । पितृमातृवचोविना ॥ १२ ॥ अत्रातः कथितोयस्तु । सवेदोक्तोविधिःपर । देशान्वयन्यवहारा । दन्यत्कार्यं पृथग्विध. ॥ १३ ॥ तैजाग्निर्नेकोविवाह । वस्तुप्रारम्भएवच । वैवाहिकेपु धिन्नेपु । करणीयो महात्मभि ॥ १४ ॥ वादनाय.कुलवृक्षा । द्वयो.स्वजनससदि । मण्पोमातृपू जाच । तथा कुलकरार्चन ॥ १५ ॥ वेदिस्तोरणमर्चादि । वस्तुशातिकपौष्टि के । वह्निभोजनसामग्री । कौसुम्भेसूत्रवाससी ॥ १६ ॥ आसनकक्षिवृक्षिश्च । यवादिवपनतथा । गुरुवंस्त्र भूषणच । वरदेयगवादिच ॥ १७ ॥ पाकभोजन पात्राणि । दानशक्ति धनतथा । इमान्यन्यानि कार्याणि । विवाहस्य चिनिर्द्दिशे त् ॥ १८ ॥ इत्युपाध्याय श्रीलक्ष्मीप्रधानगणिः प । मोहनलालमुनिः आचार ग्रथारसमहीरते आचाररत्नाकर प्रथमप्रकाशे चतुर्दशमविवाह संस्कारः ॥※॥

॥ ※ ॥ अथ (१५) व्रतारोप संस्कार विधिः ॥ ❦ ॥

॥ ※ ॥ प्रथम वरप माश दिन नक्षत्र शुद्ध देखके । समवशरणकी स्था पना करै। शांतिक पौष्टिक पूजन आदि सब विधि जैन पमित करावै । पीछे मदर (शा) और धर्म्म स्थानके कालानुसारै सम्प्रदाई अनेकाती शुद्ध साधु आचार्य उपाध्याय होय (जहा) सम्यक्त व्रतग्राही पुरुष स्नानादिकसें शुद्ध

होके, अच्छा सपेद वस्त्र पहरके, उत्तरासन धारन करके चोटी बांधके, चदन को तिलक करके, वमै उच्छवसें कुटुंबसाथ आवै। वर्णानुसारे जिनोपवीत धारन कियो थको, मुखवस्त्रिका हाथमे लेके, गुरुके सन्मुख वामपासे खमा रहै (तत्र) गुरु श्रावक दोनु इरियावही पमिकमें (पीछे) गुरु आसनपर बैठा थका श्रावक दोनु हाथ जोमके कहै ॥ इच्छामि खमासमणो० । इच्छा कारेण सदिसह ज्ञगवन् तुम्हे अह्मं सम्मत्तमारोवणिय नदिकढ्ढावणिय वासक्खेव करेह ॥ ततोगुरुः सूरि मत्रसें (वा) गणिविद्या वर्द्धमान विद्यासें वासक्षेप मत्रके । परमेष्टी, कामधेनु मुद्रा करके । अपने वामपासे पूर्व दिशाके सन्मुख ऊनो थको व्रतग्राहीके मस्तकपर वाशक्खेप करै (पीछे) फिर व्रत ग्राही समवशरणकों तीन प्रदक्षिणा देके(पूर्ववत्) गुरूके सन्मुख खमाशमण देके इच्छाका०ज्ञगवन् तुम्हे अह्म सम्मत्त मारोवणिय चेइयाइ वदावेह (तव गुरुः) यदक्षिनमनादेव, आदि कोई महावीर स्वामीकी चारथुई कहके चैत्य वदन करावै । चोथी स्तुतिवाद नमोत्थुण० । सव्वे तिविहेण वदामि तक (पीछे) श्री शातिनाथजी आराधनार्थ करेमि काउसग्ग । वदन वत्तियाए० (जाव) अप्पाण वोशरामितक् कहके । एक लोगस्स (वा) चार नोकारको कौवसग्ग करके स्तुति कहे ॥ यथा ॥ श्रीमते शातिनाथाय । नम. शाति विधायने । त्रैलोक्य श्यामरावीश । मुकटाज्यर्चिता ङ्घिये ॥१ ॥ शाति शाति कर. श्रीमान् । शाति दिशतुमे गुरुः । शातिरेव सदा तेषा । येषा शातिर्गृहे गृहे ॥ २ ॥ (पुनः) श्रुत देवता राधनार्थ करेमि काउसग्ग ॥ अन्नत्थ ऊससियेण० । कहके एक नवकारको कावसग्ग करै ॥ गुरुस्तुति कहै ॥ स्वसित सुरज्जिगधा लीढभृगी कुरग । मुख शशिन मजस्त्र विभ्रती या विभर्त्ती। विकच कमल मुच्चैः सास्त्व चित्य प्रज्ञावा । सकल सुख विधात्री प्राणिज्ञाजाश्रुतागी ॥१॥(पुनः) क्षेत्र देवता राधनार्थ करेमि कावसग्ग ॥ अन्नत्थ० । कहके। एक नवकारको कावसग्ग करै(पीछे) णमोअरिहताण। नमोर्हत सिद्धा कहके स्तुति कहै ॥ यस्याक्षेत्र समाश्रित्य । साधुभि साध्यते क्रिया । साक्षेत्र देवतानित्य । ज्ञूयान्नः सुख दायनी ॥ १ ॥ (पुनः) ज्जुवन देवता राधनार्थ करेमि काउसग्ग ॥ अन्नत्थ० । कहके । एकनवकारकोकावसग्ग करै ॥ णमो अरिहंताण । नमोर्हत सिद्धा० कहके एक स्तुति कहै ॥ (यथा)

ज्ञानादि गुण युताना । स्वाध्याय ध्यान संयमरताना । विदधातु भुवन देवी । शिवसदा सर्व साधूना ॥ १ ॥ (पुन) ज्ञाज्ञानदेवता राधनार्थ करेमि काउ सग्ग ॥ अन्नत्थु० कहके । चार नवकारको कावसग्ग करै । करके । नमोर्हत सि द्धा कहके एक स्तुति कहै ॥ या पाति शासन जैन । सद्यः प्रत्यूह नासनी साभिप्रेत समृद्ध्यर्थ । भूयाच्छासन देवता ॥ १ ॥ (पुनः) समस्त वैया वृत्य कर आराधनार्थ करेमि काउसग्ग अन्नत्थू० कहके । एक नवकारको कावसग्ग करे ॥ नमो० नमोर्हत् सिद्धा० कहके एक स्तुति कहै ॥ येते जि न वचन रता । वैया वृत्योद्यताश्च ये नित्य । ते सर्वे शाति करा । भवतु सर्वा णु यक्षाद्या ॥ १ ॥ (पीछे) बैठके णमोत्थुण कहै । मोटो कोई स्तोत्र स्त वन कहै । जयवीयराय कहै ॥ इति नदी विधिः ॥ पीछे) सम्यक्तग्राही गुरू कों खमासमण देके श्रुतसामायक सम्यक्त सामायक आराहनार्थ काउस ग्ग करावेह (गुरु कहै करावेमो) (पीछे) सम्यक्त सामायक आराहनार्थ करेमि काउसग्ग ॥ अन्नत्थू० कहके ४ चार लोगस्सको काउसग्ग करावै (पारके) प्रगट लोगस्स कहै (पीछे) तीन नवकार गुणके । ३ वेर स म्यक्त दंडक उच्चरै । गुरुपाठ वोले उसकी मनमें धारणा राखे ॥※॥

॥※॥ सूत्रपाठ यथा ॥※॥

॥ ※ ॥ (सुत्र) (अहन्न भंते) तुह्माण समीवे मिच्छत्ताउ पडिक्कमा मि । सम्मत्त उवसपज्जामि । नोमेकप्पइ । अज्जप्पभिई अन्नतीत्थिएवा । अ न्नतीत्थिदेवयाणिवा । अन्नतीत्थि परिग्गहिय अरिहंतचेइयाणिवा । वंदित्त एवा । नमसित्तएवा । पुव्विअणालित्तएण आलवित्तएवा (तेसि) असणवा । पाणवा । खाइमवा । साइमवा दाउवा । अणुप्पाउवा । तेसि गंधमल्लाइ पेसि उवा । (नन्नत्थ) रायाभियोगेण । गणाभियोगेण । बलाभियोगेण । देवाभि योगेण । गुरुनिग्गहेण । वित्तीकतारेण । तचउव्विह (तजहा) दव्वउ । खित्तउ । कालउ । भावउ । तत्थ (दव्वउ) दसणदव्वाइ अहिगिच्च । (खित्तउ) जाव भरह मज्झिमखंमे (कालउ) जावज्जीवाए । (भावउ) जावगहेण न गहिज्जामि । जाव सन्निवाएण नभविज्जामि । जाव केणइ रुग्गाइ वसेण । एसोदसण पालण परिणामो नपडिवडइ । तावमे एसो दसणाभिग्गहो । अ न्नोगेण । सहस्सागारेण । महत्तरागारेण । सव्व समाहि वत्ति आ

गारेणं । वोसिरइ ॥ पीछे ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं नमः ॥ ※ ॥ ऐसे अक्षर श्रीगुरुकेपास हाथमें लिखाकै । जिनप्रतिमाकों वासक्षेप चढावै । नवकार पढतो थको ३ प्रदक्षिणा देकै (देव गुरुप्रतें वादै) पीछे श्रुत सामायिक थिरीकरणार्थे । सत्तावीस उत्सासप्रमाणें । एक लोगस्सको काउसग्ग करै । एक लोगस्स कहकै पारै । पीछे सम्यक्तरूपी कल्पवृक्ष पायकै । अति आनन्दसें ऐसा अभिग्रह वचन बोलै ॥ अरिहंतो महदेवो । जावज्जीवं सुसाहुणो गुरुणो । जिन पन्नत्त तत्त । इय सम्मत्तमए गहिय ॥ १ ॥ पीछे गुरु धर्मदेशना देवै । मिथ्यात्व वरजै (इसोतरै) सम्यक्त ग्रहण कियेबाद जो विशेष भाव वधी होय तो अपनी इच्छाप्रमाण दोय चार (अथवा) १२ वारे श्रावकका व्रत गुरूकेपास ग्रहण करै और जो केईदिन मास पीछे व्रत ग्रहण करै (तो) पूर्वोक्त सपूर्ण विधि करै । नित्य चैत्यवदन इतनी वेरकरुगा । इतना नवकार नित्यगुणगा । फल केसरादि वर्षप्रतें इतना चढावुगा । ग्यान दर्शन चारित्रके भक्ति अर्थे इतनो द्रव्य खरचूगा । सीलव्रत इतनी पर्वतिथि पालुंगा । नित्य पच्चक्खाण इसमाफक करूगा । दिनकों नवकारस्यादिव्रत (तथा) रात्रीकों चउविहार । त्रिविहार । दुविहार । प्रमुख । और । वावीस अभक्ष । वत्तीस । अनतकाय । विदल प्रमुख । धारणाप्रमाणे। सव छोडुगा । इत्यादि अपनी धारणा माफक सर्ववस्तुका प्रमाण । गुरुके सन्मुख करै । वारै व्रतका टीप सुणै । जिसमें लिया हुवा व्रतको अतीचार न लगै ऐसा उपियोग सदा रखै॥ ※ ॥ इति सम्यक्त व्रतारोपण विधिः॥ ※ ॥ ॥※॥

॥ ※ ॥ अथ प्राणातिपातव्रत दंडक लि० (१) ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (अहन्नभंते । तुह्माण समीवे । थूलग पाणाइवाय सकप्पिउ निरवराह पच्चक्खामि । जावज्जीवाए । एगविह । एगविहेण (अथवा) दुविह । तिविहेण । मणेण । वायाए । काएण न करेमि । न कारवेमि । तस्स भंते । पडिक्कमामि । निंदामि । गरिहामि । अप्पाण वोसरामि ॥ यह पहला व्रतका दंडक वार ३ उचरावे ॥ १ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (अहन्नभंते । तुह्माण समीवे । थूलग मुसाइ वाय । जीहाछेया

कौ नमानें । नपूजे । न वंदे । न निंदे । कुलदेवी, खेत्रपाल गोत्रदेव पितरा दिकक‍ु कुनक्रमें जैसें पूजता आयाहै तिससें ज्यादा करि न पूजें । जो पूजै तोभी लोक व्यवहार निमत्त पूजे । धर्मबुद्धि न मानें । परमतीका तीर्थ धरमनिमत्त यात्रा न जावे । जो कदाचित् राहमें अन्य मतीका तीर्थ होय तमासा देखण जाइये तो जयणा । कुटंबनिमत्त कुदेवकों मानणेकी जयणा । (तथा) शुद्धगुरु मुनीश्वर । पंचमहाव्रतके पालक । शुद्ध क्रया कारक । शुद्ध धर्म उपदेशक । छकायके रक्षक । आरम्भ परिग्रहके टालक । सम्प्रदाई स्याद्वादी साधु जतीकों गुरुकरके मानें (और) सन्यासी, बैरागी, ब्राह्मण तापसी, कुलिंगी, धमभ्रष्ट, परिग्रहधारी, आरम्भसयुक्त खोटामार्गके उपदेशक, तिसकों कुगुरु जाणके तेहनैं नमावें न पूजे । न आदर करे । न संगति करें । लोक व्यवहार निमत्त मानींयें तो जयणा रक्खे शुद्धधर्म, श्रीजिनेश्वरदेवनें प्ररूप्या छ्का दया धर्म, विवेक सयुक्त करुणामई जैन धर्मकों धर्म जाणें । मान अंगीकार करें (और) परमतीका धर्म न करें अन्यमतीकों धर्म निमत्त दान न देवे । अनुकंपादान दुःखी जाणके देवे । धर्म निमत्त तीर्थस्नान न करें । होम न करें । लोकव्यवहार कारणें जयणा रक्खे । दिनप्रति छतीजोगवाई देव गुरुकों वंदना करें । चैत्यालय जाके जिनेश्वरकी प्रतिमाको दर्शन करें । प्रतिमाकी जोगवाई न होइ तो सूर्यसन्मुख बैठके नमोत्थुण करें । नित्य अष्ट प्रकारी पूजा करें । जोग न मिले कदाचित् (तो) छमाशमध्ये यथाशगति पूजा करें । प्रतिमाकी पूजा निमत्तें वर्षमध्ये द्रव्य यथाशक्ति चढावै । केशर आदि आठ प्रकारका द्रव्य यथा सक्ति चढाव । वर्षमध्ये साधर्म्योंकी भक्ति यथासक्ति करें । दिनमाहे नोकार यथाशक्तिगुणें । आनपूर्वी यथाशक्ति गुणें । दिनमाहि पच्चखाणदोय सांजस वेरे करें । इस प्रकारे सम्यक्त सुद्धधारणकरे ॥ अब सम्यक्तके पांच अतीचार कहे है ॥ प्रथमसंका दोष ॥ जिनेश्वरका धममे संका करें ॥ दूजो कांक्षादोष ॥ अन्यमतीके धमको इच्छा करै ॥ तीजोवितगच्छादोष । साधुवोंकों मल सयुक्त देखो सूग करें । अथवा धर्मका फलको संदेह करै ॥ चोथोप रपाखंमी प्रससादोष॥ अन्यमतीका देव गुरु धर्मको वारवार सरा वै ॥ पंचमा परपाखंमीका ससंगदोष॥ अन्य मतीकी संगत करें । गुरुजाणिके सेवें॥ यह

पांच अतीचार टाले। तब सम्यक्त शुद्ध होइ ॥ अब सम्यक्तका पाच भूषण कहे है ॥ प्रथम समभाव॥ सर्व प्राणीजीवसों समभावराखे। राग, द्वेष, नराखे सत्रु, मित्र, एकजाणे । दूजा सवेग । चित्तमें वेराग राखे । कामभोगद्रव्यमे मगन न रहे। उदास रहे ॥ तीजानिर्वेद ॥ पापके लागनेसें अपनी आत्माकों निदै । बुरा कार्यकों भला न जानें। चौथा अनुकपा। सर्व जीवके ऊपर दयाका प्रणाम राखे। किसहीका बुरा नचितवै। पाचमा आस्ता। धर्मके साथ नेंकी आस्ताराखै। चित्तमें देव गुरु धर्मकी प्रतीत राखे । जानै जोगमें है सोत हतीकहूं (अर) भगवाननें जो कछु प्ररुप्याहै सोभी तहतीकहै (ऐसे) लक्षण सयुक्त सम्यक्त शुद्ध कहीए ॥ १ ॥ ॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अब थूल प्राणातिपात विरमणव्रत ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ थूल कहियै मोटा चलता हलता त्रसजीव निरपराधी निरपेक्षकों जाणके अतिपात कहियै मारणसें विरमण होणा । जाणपणामें त्रसजीवकों निरापराध मारू नहीं (और) अजाणपणें घरादिकके आरंभमें अथवा रसोई पाणी अग्नि चलता फिरतां प्रमादपणें हणाय तिसकी जयणा । जाणीयें तो फिर आलोयण लीजें (अनै) थावर जीव निष्कारणपणें हणना नहीं ॥ यह पहिलोव्रत । हिवै ए व्रतके पाच अतीचार लिखें है॥प्रथमवध। क्रोधकरी जीवाकों वध करना। लकडी हथ्यार कोरडा प्रमुख करी हणना ॥ ए प्रथम अतीचार ॥१॥ दूजावध। क्रोधकरीनै पशु नफर दासी जीव तोता सारिका प्रमुखकु बाध रखना। तालामें जडना ॥ ए दूजा अतीचार॥२॥ तीजा छविछेद। पशु बालकका कानवींधना। त्यानवरका अग उपाग छेद करना। वैल मनुष्यकों खसी करना ॥ ए तीजा अतीचार ॥ ३ ॥ चौथा अतिभारारोपण। ऊंट वैल गाभीपर परमाणसुं अधिक बोझ घालना ॥ ए चोथो अतीचार ॥४॥ पाचमा भातपाणी को रोकणो। रीसकरी जीव जत आदमीकु भात पाणी नदेणा। ए पाच अतीचार टालके पहिला व्रतपालें ॥ इति प्रथमव्रत पूजा ॥ १ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ अथ थूल मृषावाद विरमणव्रत लि० ॥ ❋ ॥

॥❋॥ थूल कहीयै मोटा झूठ न बोलना (सो पाच प्रकार है) प्रथम कन्या

लीक, कन्याके सगाईमे वरप अधिका उग्रनकहै। इसमें द्विपदसवधी झूठ सव जाणके लेने॥ दूजा गौवालीक॥ गाय भैंस घोमा हाथी इनकों वेचते लेते झूठनबोलै॥ तीजा भोमालीक। भूमिजमीनका झूठ न बोले। चौथा झूठी सासनभरे। कारणे जयणा॥ पाचमायापणमोसा॥ थापण कहीये धरोर न पचावै। प्रथमतो किसहीकी धरोर न राखै। जो राखै तो धणी मागे तव देवे। जो रखणेवाला न होय तो धरमहेते खरचे (इस भातिवीजाव्रतपाळे) इसके पाच अतीचार है सो कहे हे॥ प्रथम अतीचार, सहसातकारे अण विचाख्यो वचन कहे॥ १॥ दूजा अतीचार किसहीनें छानीवात आपणी कहीथी सो लोकमें प्रकाश करदेवे॥ २॥ तीजा अतीचार, मत्र भेद॥ अपनी अस्त्रीका। अथवा घरका। अथवा ओरही किसका। छाना गुह्य प्रकाशै॥३॥ चौथा मृषा उपदेश। झूठो उपदेशदेवें। साचाने झूठो करे। धर्मका मार्ग झूठा प्ररूपे॥४॥ पाचमा कूडलेख। झूठा कागद खत वणाइ के ठगनै॥ ५॥ ए पाच अतीचार टालके दूजा व्रत पालै॥ २॥ ☆॥

॥☆॥ अवतीजा थूल अदत्ता दान विरमण व्रत लि०॥☆॥

॥☆॥ थूल कहीये मोटी अदत्त कहीये चोरी तिससे विरमना। तहा पाच प्रकारकी चोरी न करे। प्रथम पराई पडी गिरी वस्तु न लेवे। जो चित्तकी चपलता सों लेवे तो धणीकु देवे। वस्तुका धणी न मिलै तो पुन्यहेत खरचे जो नहि खरचै तो चोरीको दूषण लगे। इति प्रथम दोप। दूजा विस्मृत दोप। किसीनें भूलपणे चीज गमाई होई जो पावे तो धनीकों देवे। नदेतो अतीचार लागे॥ अथ तीजा थापन दोप॥ कोई वस्तु धरगया है तिसकी वस्तु नदे मुकर जाइ॥ चोथास्थित दोप॥ कोई काही छानी वस्तु रखगया है सो निकाल लेवे॥ पाचमा नष्टग्रहण दोप॥ किसहीकी गईवस्तु रखे पावे तोभी धणीकु नदे॥ ए पाच मोटा अदत्त नलेवै॥ इस व्रतके पाच अ तीचार टालै॥ प्रथम तेनाहृत॥ चोरनै चराई [illegible] मोल लेवै॥ १॥
तत्प्रयोगदूजा अतीच
तीजातत् प्रतिरूप [illegible]
दानचोरी। राजा पात
भूलिपणै छोटी मोटी [illegible]

खरी दिखाई खोटी वेचै। (वा) भेलकरी वेचे। ए चोथा अतीचार॥पाचमाराज विरुद्धातिक्रम॥राजानै जोदेशमें कार्य मन्है कीया सो करै। खोटामापा खोटातोल करै॥ ए पाच अतीचार टालके तीजो व्रत पालै॥ ३ ॥ अथ चोथोस्वदारा संतोष परदाराविरमन नामव्रत॥ अपनी स्त्रीऊपर संतोष। परस्त्रीका त्याग करै। तहां अपनी काया करिकें शील व्रत पालै। देवता मनुष्य तीर्यंच के मैथुनका परित्याग करै। अपना कुटुंबके निमित्त किसट्टीका विवाह सगाई करावणकी जयणा। मन करि, वचन करि, हासी मसकरी करिता जो दोष लागै तिसकी जयणा ॥ इस व्रतके पाच अतीचार टालै॥ प्रथम अपरिगृहीता वैश्यादिकको सेवन करै॥ १ ॥ दूजा, इतर काल परिगृहीत स्त्रीकों सेवन करै ॥२॥ तीजा काम क्रीमा विशेष करै॥ ३ ॥ चोथा तीव्रकामानुराग करै ॥ ४ ॥ पाचमा पर विवाह करै ॥ ५ ॥ ए पाच अतीचार टालै । मन वचनकी जयणा । काया करी शील शुद्ध पालै ए पाच अतीचार टाली चोथा व्रतपालना॥ ✻ ॥

॥ ✻ ॥ अथ पांचमा परिग्रह प्रमाण व्रत ॥ ✻ ॥

॥५॥ इच्छाप्रमाण नव प्रकारका परिग्रह प्रमाणकरे। तहा प्रथम धनद्रव्यनी संख्या अपनी इच्छा मुजब करै॥ प्रथम रुपइया मोहरकी संख्या। सोनाकी संख्या। रूपाके वाशणकी संख्या॥ जवाहर तूटा गहणा॥ पीतलके वासण मण० ॥ जसदके वासणमण। सीसा रागाके वासणमण। लोहाके राठ पीठ हथ्यार काठके वासण चोकी तखत। चीणीसग काचके वासण मण। हाथी घोमा। वैल। गाय। भैंश। ऊठ। बकरी। लांमी। गुलाम। रथ। गामी। पालखी। मोली। इत्यादि० अथ वस्त्रकी संख्या। रेसमकीजाति सर्व। सूतकी जाति सर्व। टसरकी जाति सर्व। घासकी जाति सर्व। ऊनकी जाति सर्व। मखमलकी जाति। पसमकी जाति। थिरमा पाथमी वनात किनारी गोटाइत्यादि॥ अथ विछावनेकी विगत॥ गलीचा जोम। मसलद जोड। सीतलपटी जोम। सितरजी जोम। जाजिमजोडी। इत्यादि सर्व इच्छा परमाण रक्खे॥ अथ धान २४ जातिके है तिसकी संख्या करै॥ गऊ मण। चावल मण। मोठ मण। मूग मण। ऊमद मण। अरहड मण। चोमा मण तूवर मण। वाजरी मण। मसूर मण। जुआरि मण। तिल मण। कुलथी

लीक, कन्याकी सगाईमें वरप अधिका न्यूनकहै। इसमें द्विपदसब भी कूड़ सब जाणके लेनै॥ दूजा गौवालीक॥ गाय भैंस घोड़ा हाथी इनकों वेचते लेते कूड़नबोलै॥ तीजा भोमालीक। भूमिजमीनका कूड़ न बोले। चौथा कूड़ी साखनभरै। कारणें जयणा॥ पाचमाथापणमोसा॥ थापण कहीये धरोर न पचावै। प्रथमतो किसहीकी धरोर न राखै। जो राखै तो धणी मागे तब देवे। जो रखणेवाला न होय तो धरमहेते खरचे (इस भांतिबीजाव्रतपालै) इसके पाच अतीचार है सो कहे हैं॥ प्रथम अतीचार, सहसातकारें अण विचाखो वचन कहै॥ १॥ दूजा अतीचार किसहीनें छानीबात आपणी कहीथी सो लोकमें प्रकाश करदेवै॥ २॥ तीजा अतीचार, मत्र भेद॥ अपनी अस्त्रीका। अथवा घरका। अथवा औरही किसका। छाना गुह्य प्रकाशे॥३॥ चौथा मृषा उपदेश। कूड़ो उपदेशदेवै। साचाने कूड़ो करै। धर्मका मार्ग कूड़ा प्ररूपै॥४॥ पाचमा कूड़लेख। कूड़ा कागद खत बणाइ के ऊगमे॥ ५॥ ए पाच अतीचार टालके दूजा व्रत पाले॥ २॥ ॥

॥※॥ अबतीजा थूल अदत्ता दान विरमण व्रत लि० ॥ ॥

॥※॥ थूल कहीये मोटी अदत्त कहीये चोरी तिसमे विरमना। तहा पाच प्रकारकी चोरी न करें। प्रथम पराइ पडी गिरी वस्तु न लेवे। जो चित्तकी चपलता सौं लेवे तो धणीकु देवे। वस्तुका धणी न मिले तो पुन्यहेत खरचें जो नहि खरचै तो चोरीको दूषण लगे। इति प्रथम दोष। दूजा विस्मृत दोष। किसीनें भूलपणे चीज गमाई होई जो पावे तो धनीकों देवै। नदेतो अतीचार लागे॥ अथ तीजा थापन दोष॥ कोई वस्तु धरगया है तिसकी वस्तु नदे मुकर जाइ॥ चोथास्थित दोष॥ कोई काही छानी वस्तु रखगया है सो निकाल लेवै॥ पाचमा नष्टग्रहण दोष॥ किसहीकी गईवस्तु रखे पावे तोभी धणीकु नदे॥ ए पाच मोटा अदत्त नलेवै॥ इस व्रतके पाच अतीचार टालै॥ प्रथम तेनाहृत॥ चोरनै चुराइ जोवस्तु मोल लेवै॥ १॥ तत्प्रयोगदूजा अतीचार॥ तत्कहीये चोरसों प्रयोग करै। चोरकोंभेद देवै। तीजातत् प्रतिरूप अतीचार॥ चोरसों साझा करे पुंजी देवै॥ चोथा दानचोरी। राजा पातस्याके हासलकी चोरी करे। कोई कारणपाके अथवा भूलिपणै छोटी मोटी वस्तु लेता बेचता हासल नदीजीये तेहनीजयणा। वस्तु

थके चढणेंकी जयणा। छठाव्रतना पाच अतीचार टाले । प्रथम ऊर्ध्वदिशि प्रमाणातिक्रम ॥ १ ॥ दूजा अधोदिशि प्रमाणातिक्रम ॥ २ ॥ तीजातिरछी दिशि प्रमाणातिक्रम ॥३॥ चौथाअतिचार, जे काम पड्या दिशि विदिशि घटावै वधावै ॥४॥ पाचमा अतीचार, जे मननै विस्मृत उपनै दिशि विदिशि का प्रमाणलघके जाणा ॥५॥ ए पाच अतीचार टालके छठाव्रतपाले ॥६॥

॥ ॥ अथ सातमां भोगोपभोग नामव्रत ॥ ० ॥

॥॥ इसके भेद दोय ॥ एक भोग वस्तुकीसंज्ञा । दूजा कर्मादानकी संज्ञा । तहा प्रथम भोगार्थे चवदै नेमकी सज्ञा नित्यप्रते करै । सचित्त १ । द्रव्य २ । विगई ३ ॥ पानही ४ । तवोल ५। वत्थ ६ । कुशमेसु ७ ॥ वाहन ८ । सयण ९। विलेवण ॥ १० । वभ ११ । दिशि १२ । न्हाण १३ । भत्तेसु १४ ॥ यह चवदै नियमको नित्य प्रति अपनी इछामुजव प्रमाण करै । तिसकी विगत । प्रथम सचित्तकी सज्ञा । दिनमै सचित्त । द्रव्य इतनो । खाणेके विगै० । जूती । जोभा । पानकेवीभा । वस्तु वेशपहिरणा । अपणे शरीर खाते तिसकी दिनमै० । फूल सर्वजातिना तिसकी संज्ञा । वाहन। असवारीकी सज्ञा। दिनमै असवारी० । सिज्या चोंडै । पाटला । तखत । पीढा । चौकी । आसण । एताउपरात नरखणा । विलेपन दिनमै । अवभ । शीलपालणा । दिनमै च्यारु दिश जाणा कोस०। दिनमै स्नान । करणा । भत्तेसु कहता आहारकी संख्या। सो आहार चार प्रकारका। अशन १ पाण २ खादिम ३स्वादिम ४ ए चार प्रकारकी नित्य संज्ञा करणी । ते मध्ये । प्रथम दिने नाज खाणेकोनेम करै । दिनमै अपणे पीवणे निमत्त पाणी घमो । धोवणै न्हाणेंकु घमा वाकी नियम। खादिम मेवाजाति दिनमै मोकला । मिठाई जाति दिनमें० मोकली । तरकारीकी जाति सूकी हरी इतनी मोकली । फलजाति दिनमै मोकला । स्वादिम मुखसोधकी जाति दिनमै मोकली। औरभी भूले विसरेकी जयणा । इति भोगसज्ञा । भोगोपभोगके ५अतीचार । सचित्तभक्षण१॥ सचित्तप्रतिवद्ध भक्षण२॥ अपकाहार भक्षण ३॥दुपकाहार भक्षण४॥ तुछोषधी भक्षण५॥ ए पाच अतिचार कहा ॥ अव पनरै कर्मादान । प्रथम इगालकर्म । इगाल कहीये कोइलानो व्यापार निषेध । घरनें कार्य मोललेवै । जगल कटाइके न करावे । कारणे

मण। मडुवा मण। मकई मण। कौणी मण। कोंदू मण। झालरकी दाल मण। मटरकी दाल मण। खिसारी मण। कावलीचिणा मण। किराठ मण। चुरट मण। सरसों मण। तीसी मण। ओरभी देश परदेश जाइयेंतो तहा कोइ अपूर्व जातिनो नाज होइ। तेहनी सख्या करें॥ अब किरीयाणादिकनी सरया कहेहैं॥ घी वर्ष माश मध्ये मण। तेलजात मासमध्ये मण। गुडमाशमै मण। खान्ड जाति मिठाई मण। लोणजाति मण। रुई मण। रेसम मण। ऊन पसम मण। सुठि मिरच आदि करीयाणा मण। हल द मण। हरमै वहेमा आदि मण। नालेरादि फल। सुगध अगरजादिक सर्व जाति। अतर, रग,महिंदी मण। ओर छोटी वमी वस्तु भूल चुक लेवे देवेंमें आवे तिसकी जयणा॥ अपणे निमत्त देश परदेश मध्ये, घर मोल लेणा। नवा वणावणा। भाडे लैना। घर, क्षेत्र, बाग, वामी, दुकान। ए सर्वनी यथाशक्ति सख्या करें। ओर भूली चूकी छोटी वमी वस्तु मोकली नरही। ओर काम पमे सें लेवें। तो व्रतभंग नही होय। ए परिग्रह प्रमाण अपणी कायाका मोकला हे। ओर घरमे ओर के निमत्त लेता देता देश परदेश भूल चूककी जयणा॥ इस व्रतके पाच अतीचार टालै॥ तिसको विगत॥प्रथम धनधान्यातिक्रम। जेधन धान मोकला रक्खा है। तिस सें ज्यादा वधावे॥१॥ दूजा क्षेत्रातिक्रम। जो क्षेत्र जमीन मोकली रखी हे अथवा घर वागरख्याहे। तिससें अधिक वधावै॥२॥ तीजा रूप्य स्वर्ण मानातिक्रम। रुपा सोना जवाहर ग्रहणादिक मोकलाहे तिससें यादा वधावे॥३॥ चोथा द्विपद चतुष्पद मानातिक्रम। जे नफर दासी घोमा, हाथी बैल गाय भैंस आदि जो मोकला रखाहे। तिससे अधिक रक्खै॥४॥ घरवखरी मानातिक्रम॥ जे घरकै निमित्त छोटा वमा राछ पीछ वस्त भाव रख्याहैं। तिसकें मानसो अधिक मान वढावै। ए पाच अतीचार टालके पाचमा व्रत पाले। इति पचमव्रत॥ ❀॥ ॥❀॥

॥❀॥ अथ छठ्ठ दिशिविदिशि प्रमाणव्रत लि० ॥❀॥

॥❀॥ तहादिशि ४, विदिशि४, अध १ ऊर्द्ध १ एव दश दिशीका प्रमाण, इच्छापरमाणे करै। एव दशदिशाविषै जावणेकी संख्या उपरात न जाणा कागद भेजणेकी जयणा॥ जलवटें नदी समुद्रे नाव तथा जिहाजै कायपमै

थके चढणेंकी जयणा । छठाव्रतना पाच अतीचार टाले । प्रथम ऊर्ध्वदिशि प्रमाणातिक्रम ॥ १ ॥ दूजा अधोदिशि प्रमाणातिक्रम ॥ २ ॥ तीजातिरछी दिशि प्रमाणातिक्रम ॥३॥ चौथाअतिचार, जे काम पड्या दिशि विदिशि घटावे वधावे ॥४॥ पाचमा अतीचार, जे मननै विस्मृत उपनै दिशि विदिशि का प्रमाणलघके जाणा ॥५॥ ए पाच अतीचार टालके छठाव्रत पाले ॥६॥

॥ ॥ अथ सातमां भोगोपभोग नामव्रत ॥ ॥

॥॥ इसके भेद दोय ॥ एक भोग वस्तुकोसंक्षा । दूजा कर्मादानकी सक्षा । तहा प्रथम भोगार्थे चवदै नेमकी सक्षा नित्यप्रते करे । सचित्त १ । दव्व २ । विगई ३ ॥ पानही ४ । तंबोल ५। वत्थ ६ । कुशमेसु ७ ॥ वाहन ८ । सयण ९ । विलेवण ॥ १० । बम्भ ११ । दिशि १२ । न्हाण १३ । भत्तेसु १४ ॥ यह चवदे नियमको नित्य प्रति अपनी इछामुजव प्रमाण करै । तिसकी विगत । प्रथम सचित्तकी सक्षा । दिनमै सचित्त । द्रव्य इतनो । खाणेके विगै० । जूती । जोडा । पानकेवीडा । वस्तु वेशपहिरणा । अपणें शरीर खाते तिसकी दिनमै० । फूल सर्वजातिना तिसकी संक्षा । वाहन । असवारीकी सक्षा । दिनमै असवारी० । सिज्या चोकई । पाटला । तखत । पीढा । चौकी । आसण । एताउपरात नरखणा । विलेपन दिनमै । अवम्भ । शीलपालणा । दिनमैं च्यारु दिश जाणा कोस०। दिनमै स्नान । करणा । भत्तसु कहता आहारकी संख्या । सो आहार चार प्रकारका । अशन १ पाण २ खादिम ३स्वादिम ४ ए चार प्रकारकी नित्य संक्षा करणी । ते मध्ये । प्रथम दिने नाज खाणेकोनेम करै । दिनमै अपणें पीवणे निमत्त पाणी घडो । धोवणे न्हाणेंकु घडा। वाकी नियम। खादिम मेवाजाति दिनमै मोकला । मिठाई जाति दिनमें० मोकली । तरकारीकी जाति सूकी हरी इतनी माकली । फलजाति दिनमें मोकला । स्वादिम मुखसोधकी जाति दिनमें मोकली। औरभी भूले विसरेकी जयणा । इति भोगसक्षा । भोगोपभोगके ५अतीचार । सचित्तभक्षण१॥ सचित्तप्रतिबद्ध भक्षण२॥ अपकाहार भक्षण ३॥दुपकाहार भक्षण४॥ तुच्छोपधी भक्षण५॥ ए पाच अतिचार कहा ॥ अव पनरे कर्मादान । प्रथम इगालकर्म । इगाल कहीये कोइलानो व्यापार निषेध । घरमें कार्य मोललेवै । ,जगल कटाइके न करावै । कारण,

जयणा । इत्यादिकके काय पजावा न पचावै । धागनाइ । टकसालमें न वेचै । घरके निमत्तें जयणा । ईंधण पचावणाकी जयणा । दूजा वणकर्म तहा दिनमें अपणे निमत्त नाजमण । पीसावणा । मण दलावणा । मण । सेकावणा । पान फूल फलादि व्यापार न करणा । घरके निमत्त लेता जयणा इंधण मात्रमें घरके खरच माफक लेणा । यादानहीं । चोथा भाडी कर्म । गाडा गाडी उठ बैल घोडा घोडी बकरा भाडै न देणा । अपणे निमत्त भाडै लेता जयणा । पाचमाफोडी कर्म । जमीखुदाय खानिकढाइ धात मिट्टी लौन पाषाण इत्यादि व्यापार निषेध । अपणे काम जमीन खुदावै तो जयणा । दातनो व्यापार निषेध । अपणै निमत्तै कारणै लेता जयणा । लाखका व्यापार निषेध । रसवाणिज्जे । रस घी तेल, सहित, गुड, इत्यादिक व्यापार निषेध । घरमें मोकलाहै ते विगडै तो वेचनकी जयणा । केसवाणिज्जे । केसवाणिज्ज निषेध । अपणै अर्थे केस, सुगन, बाल, चमरके बाल, पसम, लेणेकी जयणा । विष वाणिज्जे । विष हरताल, मळरा, जहर, अफीम, इत्यादि व्यापार निषेध । आत्माके कार्य टीजीये तेहनी जयणा । यत्र पीलण कर्म निषेध । घाणी कोलु प्रमुख न चलावै० । निल्लंछण कम निषेध । बालक पशु जीवना अवयव छेदवा निषेध । दवदान कर्म ॥ दवदेणा जगल जलावणा निषेध । नदी द्रह, तलाव कुआ होद प्रमुखना अगावरपाणी कलिचवानहीं । असती जन पोषण पा॥ बाघ सिंघ चीता कुत्ता बिल्ला बाज जुरा तोता मैना इत्यादि हिंसक जीव पोषी वेचणका । निषेध । घरमें तोतादि जीव होइ तेहनें पोषणकी जयणा । औरभी कोटवाली दरोगाई अमीती इत्यादिक लोकनें पीडा कुपजे ते कार्य व्यापार न करे ॥ इति १५ कर्मादान टालके सातमा व्रत पाले ॥७॥

॥ ॐ ॥ अथ अष्टम अनर्थ दंड व्रत लिख्यते ॥ ० ॥

॥०॥तत्र अपणे कार्य विनाही पापदंड लगावना । तेहनाध्प्रकार है॥ प्रथम प्रमाद आचरित जे प्रमादकेवसें घी तेलप्रमुखना वासण उघाडाराखे। तहा अनेक जीव मरै । अनर्थ दंड । दूजा हिंसाप्रदान । शस्त्र हथिआर छुरी कटारी जहर प्रमुख माग्या देवें (ते न देना) तीजा पापोपदेश । नि ष्कारण कुगा उपदेस देना हासी मसकरी निंदा आरंभका उपदेस देना (ते निखेध)भूलि चूक कार्य जयणा । चोथा अपध्याना चरित । आर्त्तध्यान, रौद्रध्यान, व्यापनो

ते निषेध करै यथाशक्ति । पाचमा क्रीडावलोकन । तहा चोरमारीजता सती होते देखना । ओरस्त्री हस्याके तमासा कु देखन जाना । तेहनो निवारण करै । उदीरणा करी तमासा देखन न जावै । मार्गमै जाता आवता निजर पडै तहा ऊभा न रहै ।, ओर चूला, चक्की, ऊखली, छुरी, कैंची, इत्यादि हस्याके कामके लाइक चीजवस्तु औरकु मागी न देवै । इस व्रतके पाच अतीचार है ॥ प्रथम कदर्पचेष्टा ॥ जिस सेती काम उपजै सो चेष्टा करै । दूजा कुकथा ॥ राजकथा१ । स्त्रीकथा २ । देशकथा ३ । भोजनकथा ४ । ए चार विकथा करै ॥ तीजा वाचालत्व ॥ अविचार्यो वचन जिम तिम बोलै ॥ चोथा अधिकरण ॥ पीठी मज्जन उन्होपाणी आपलाइकचहिये ते ओर दस पाच लोका निमत्तवणावै । सर्व पहिला चूलोजलावै । आवै जिसको आग मागी देवै ॥ पाचमो भोगोपभोग अतिरिक्त ॥ जीमता नाज अधिकोलेई छूठोनाखै । तहा माखी प्रमुख जीव विराध्या जाय ते करै । यह पाच अतिचार टाली अष्टमव्रत पालन करै । अपने निमत्त जो कार्य कर नेमें आवै सो जयणा रक्खे निकारण अन्यार्थे पापारम्भ उपदेशादि नकरै ॥

॥ ※ ॥ अथ नवमा सामायिक व्रत लि०॥ ※॥

॥ ※ ॥ वर्षमध्ये जघन्यपणें सामायक ॥ ७० ॥ करणा (वा) माशमध्ये सामायिक जघन्य ॥ ६० ॥ करै । दिनमध्ये सामायिक जघन्य । दोय करै (अथवा) यथा सक्तिसारूकरै ॥ इसका पाच अतीचार टालना ॥ प्रथम मनो दुःप्रणिधान ॥ मनकरीने, सामायक मध्ये संकल्प विकल्प आरति रौद्र ध्यावै (ते नध्यावणा) ॥ दूजा वचन दुप्रणिधान ॥ वचनै करी विकथा हास्य क्रोध गालि इत्यादि बोलना । तेन बोलै । अबोलपणें रहै । बोलै तो सास्त्रपाठ पढै । तीजा काय दुप्रणिधान ॥ कायाइ एक आसणै न बैठे । अग उपाग हलावै । उठे बैठे । (ते न करै) ॥ चोथा अनवस्था अतीचार ॥ सामायकके कालसें अधिका ऊणा काल घटावै चलावै ॥ पाचमावेला विस्मृत अतीचार ॥ तहा सामायकनी विरीया भूल जावै, व्रतविषै आदर न करै । ए पाच अतीचार टालके । नवमाव्रत पालना ॥ इति नवम व्रत॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ दशमा देसावगासिकव्रत ॥ ※ ॥

॥※॥ तहादिश अथवा कालको परिमाण करै । दिशिचारु मोकली रखी

है जिसमेंसें नित्यप्रति अपनें कार्यलायक रखै। उपरांत जाणेका त्याग (वा) जिसि जागा बैठे होय सोइ मोकली रखिये । उपरात फिरे नही । तहा एक ठिकाणें बेठी । घमी तथा प्रहर मर्यादा ताई । धर्म ध्यान ध्यावै । ते देशा वगासिक व्रत माशमध्ये यथाशक्ति करणा। इसका पाच अतीचार। प्रथम आपकों जणो नही । तेसेती चीजवस्तु और पासि मगावै ॥ दूजा मूका वणा ॥ औरकु कही वस्तु धरावै । तीजा साद करणा ॥ नफर चाकरको बुलाईके काम कहणा । चोथारूप देखावणा । पाचमा काकरी नाखी, तथा ताली रजाई ऊकारा करी आपोजणाईये । ए पाच अतीचार टालके दशमो व्रतपालणा ॥ इति दशमव्रत ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ अथ एकादशमा पोषध व्रत लि० ॥ ॥

॥ ॥ ते पोषधव्रत वर्षमे करणा। माशमें करणा। दिनका पोशा करणा। रात्रिका पोशा करणा। वलीयथाशक्ति अविक करे ते लाभ । इसका पाच अतीचार ॥ प्रथम अप्रति लेखित अतीचार ॥ जेजागा पोसो करै ते, विना बुहारी विना पमिलेही करें । दूजा दुःप्रमार्जित सिय्यासस्थारक ॥ तहा कपमा पूगणा सज्या विना पमिलेही वावेरे ॥ तीजा उचार पासवणभूमि विनादेखी परठव लघुनीत वमिनीत । जमीनविनादेखी मालना । चोथा विकथा निद्रा प्रमाद करणा ॥ पाचमा ॥ पोषधमाहि पारणेंका फिकर करणा ॥ ए पाच अतीचार टालके इग्यारमा व्रतपालें । इति ११ माव्रत ॥ ॥

॥ ॥ बारमा अतिथि सविभाग नामव्रत लि० ॥ ॥

॥ ॥ श्रावक पोशाके पारणें अतिथ कहीये साधू मुनीश्वर । तेहनें सविभाग कहीयें शुद्धदान चार प्रकारको आहार यथासक्ति सारू देवै साधुनो जोगवाई न मिले तो श्रावक श्राविका ब्रह्मव्रतधारीनें पोषणा । माश मध्ये मुनीश्वरने हीनसक्तिदान ॥ दोयदिन, ४ दिन, देणा । उपरात देणा सो लाभ । महीनामे । श्रावक २ । श्रावका ४ जिमावणी । ज्यादा जिमाइये ते लाभ ॥ आहार दान १ । औषधदान २ शास्त्र दान ३ अभयदान ४ ए चारू दान यथाशक्ति करना ॥ बारमा व्रतका पाच अतीचार टालके व्रत पाले ॥ प्रथम मुनीश्वर आये आहार शुद्ध ऊपर सचित्त मिलावें ॥ १ ॥

दूजा अतीचार जे शुद्ध आहारकों सचित्तसे ढांके ॥ २ ॥ तीजा अतीचार जे साधूनें कोई वस्तु मागी ते आपणी छती परनी वस्तु कहै ॥ ३ ॥ चोथा अतीचार। जे साधुना गोचरीनी वेलाटाली आहारनो निमत्रणा करै ॥ ४ ॥ पाचमा दूसरेकों दान देता देखके मत्सरतासें दान देवै ॥ ए पाच अतीचार टालके वारमा व्रत शुद्ध पालणा ॥ इति वारमा व्रत समाप्त ॥१२॥ (तथा) वारे व्रतधारी श्रावक ५ पाच आचार शुद्ध पालें । प्रथम ज्ञानाचार तिसका ८ अतीचार टालके ज्ञानकों आराधे ॥ दूजा दर्शनाचार तिसके ८ अतीचार टालके शुद्धदर्शनको आराधे । तीजा चारित्राचार तिसके । आठ अतीचार टालके चारित्र शुद्ध आराधें । चौथा तपाचार । तिसके वारे अतीचार टालके तपकों आराधे । पाचमा वीर्या चार । तिसके तीन अतीचार टालके आत्माके साधनें वीर्य पराक्रम फोरवै । ए पाच आचार पाले । सलेखनाके पाच अतीचार ते टालके सलेखना शुद्ध करें ॥ ॐ ॥ ए वारे व्रत उचारै तव छछंडी। आगार मोकला राखे। तिसका नाम । प्रथम रायाभि योगेण। राजानें अकामयोगे करी। बलाभियोगेण कोईके वलात्कारे करी। गणाभियोगेण। गच्छके लाजका कामें करी। देवाभि योगेण। कोई देवतानें अभियोगें करी ॥ ४ ॥ गुरु निग्गहेण। गुरुके कहे लाभको कारण ऊपजेसें ॥५॥ वित्ती कनारेणं। जगल अटवीमध्ये प्रवेश किया थका ॥६॥ ए ७ प्रकार माहिलो कार्य कोई ऊपजे । व्रत विराध्यो जाय तिसको दोष नही ॥ वली चार आगार ओरभी राखणा। अनत्थणा भोगेण। सहसागारेण ॥ २ ॥ महत्तरा गारेण ॥ ३ ॥ सव्व समाहि वत्तियागारेण वोसिरामि ॥४॥ ए व्रत उचरताको पच्चक्खाणहै। कदाचित् व्रतमें प्रमादकेवसे जो कोई अतीचार लागै तिसकी आलोयण। चोथ भक्त उपवास१ करै। नही तो आविल दोय करे। ते न होइ तो नीवी तीन करें। नही तो एकासणा ४ करें। (अथवा) वीश नोकरवाली मनशुद्ध गुणै। वमा अतीचार। अनाचार लागै तो विशेप तप करै। शुभभावना भावे। आत्माकी निंदा करें। ए प्रकार करी शुद्ध सम्यक्त सहित व्र। निश्चलपणे पालै। ते जीव पापपंक दूर करके आपणा आत्माकों निरमल करै। और देवलोक (तथा) अनुक्रमें मुक्तिका सुखपामै। यह वारे व्रतकी टीप रोज सभालै। जे कोई दूपण लागै

ते पडिक्कमणामध्ये आलोवै। नित्य नमस्कारी जाय ते दिन२५ में संभारै ॥ इतिश्री द्वादश व्रत विधान व्रतोच्चारण विधि समाप्त ॥※॥ ॥※॥

॥०॥ अथ बार व्रतकी पूजा लिख्यते ॥०॥

॥ ० ॥ प्रथम समकित द्रढ करण जल पूजा ॥ दूहा ॥ व्रत बारै आदर करी। पूजा तेर विधान। आनदादिक श्रावकी। सप्तम अंग प्रधान ॥ १ ॥ राग सरपदो ॥ ज्योति सकल जग जागती हो०॥ ए चाल ॥ ज्योति विमल जगझलहलें। हारे अइयोके० ए। शासन पति जिनचंद। त्रिकरण प्रणमन करिनमू। वीरचरण अरविंद ॥ १ ॥ न्हवन १ विलेवण २ वासनी ३। हारे०। माल ४ दीवच ५ धुवणिय ६ ॥ फूल ७ सुमगल ८ तडुला ९ ॥ हारे० ए० ॥ अमल दप्पणच १० नैवज्ज ११ ॥ २ ॥ ध्वज १२ फलवृंद १३ एमेजिये। हा० ए। पूजा त्रिदश प्रकार। हाए। व्रत प्रति अनुक्रम अरचीये। जगपति जगदाधार ॥ ३ ॥ सिवतरु सुखफल स्वादनो। हारे०। दायक गुणमणि खाण। हाए। कुशल कला कलना थकी। प्रगटै परम निधान ॥ ४ ॥ दूहा ॥ समकित व्रत धुर आदरो। भेटो निज मन भर्म। दूर थकी ए परि हरो। कुगुरु कुदेव कुधर्म ॥ १ ॥ धुर दर्शनाण सुचरण अणसण धीर वीर्य वखानियें। नपइम सकलना सिद्धि गज वसु पण ति बार सुगानियै। व्रत बारना अतिचार शर शर परम गुरुमुख जानिये। करित्याग राग प्रशस्त धरिमन विमल सवर मानिये ॥ १ ॥ राग रामगिरी ॥ गाजलूंदै जिनमन रगसूरे देवा। स०। ए चाल ॥ धुर समकित व्रत चित धरोरे वा ल्हा। भवभर दुख दल परिहरो। परिहरो हारे वाल्हाप०। शिवरमणी वर लीजीयै ॥ १ ॥ वीर जिनेसर वंदीयैरे वाल्हा। जिम चिरकालसु नदीयें। नं० हारेवा० ॥ कुमति कुगति सरकीजीयै २ ॥ चरण करण गुण मणि निजोरे। वाल्हा०। जगजन तारण सिरतिलो। सि० हा० ॥ सदगुरुचरण नमीजीयें ॥ ३ ॥ जिन भावित श्रुतसागरेरे वा०। भेद विविध विधि आगरो। आगरो० हारे० ॥ श्रवण जुगलकर पीजीयै ॥ ४ ॥ जिन शासन जिनधम नोरे वा०। गगदलन वसुकर्मनो। कम०। हा०। कुग तरुला रसभीजीयें ॥ ५ इति ॥ दूहा ॥ सकल करमदल मलहरण। पूजा धुर जलधार। जगनायक जिनतुगनी। भवधर भगति उदार ॥ १ ॥ रागकी

क्रोटी ॥ निरमल होय भजलें प्रभुप्यारा । सत्र०॥ ए चाल ॥ जिनवर न्हवण करण सुखदाई । छूटै जनम मरण दुखदाई । जि०। टेर ॥ खीरजलधि गंगोद कमाहि । अमल कमल रस सरस मिलाई । जिन०॥ १ ॥ निरमल सकल परम तीरथ जल । मणियुत कंचन कलश भराई ॥ जिन०॥ २ ॥ या जिन जीके नवण करणतें । भवभय दुखदल दाघसमाई ॥ जि०॥ ३ ॥ द्रव्य भाव विधि समकित फरसै । तेनर नरक निगोद न जाई ॥ जि०॥४ ॥ यातें भवि जनके दुख नासै । कपूर कहे सुरहोत सहाई ॥ जि०॥ ५ ॥ इति०॥ काव्य परमलरुत सरकृत श्रद्धया । स्नपति यो जिनचंद्र मिममुदा । भवभयं परिमुच्य सदोदय । भजति सिद्धिपद सुखसागर ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं परमात्मने अनंतानंत ग्यानसक्तये । जन्मजरा० श्रीमद्० श्रीसमकितव्रत उपदेशकाय जलं यजामहेस्वाहा । इति प्रथम समकित व्रतपूजा ॥ १ ॥ ※ ॥ ॥※॥

॥ ※ ॥ अथ प्राणातिपातव्रते केशर चंदन विलेपन पूजा ॥२॥

॥※॥ दूहा ॥ प्राणातिपात विरमण व्रते । उभो जतु विनास । इणसु शिवसुख नामिलै । हिंसा दोषविलास ॥ १ ॥ हमकु छडचले वनमा घो । राधा० ॥ ए चाल ॥ भविजन जीवदया व्रत धारो । सम परिणाम संभारोरे । भ० ॥ टेर ॥ अपराधी पिण जीव न हणियै । भाषै जगदा धारोरे । देशविरति धरनें पिण भारव्यो । विन अपराध न मारोरे । भ० गो गज सैंधव महिषा दिकनें । वधन वध न विचारोरे । कीजै न अवयव छेद त्रिकालै । जलचारो न विसारोरे ॥ भ० ॥ २ ॥ कीमी कुजरनें सम गिणीयै । सुख दुख जोग विकारोरे । थावर त्रस पंचेंद्र्यादिकनो । होय रहियै हित कारोरे ॥ भ० ॥३॥ ए व्रत रत चित जे नर जगमें । सुर नर गण मन प्यारोरे । तेहिज लोभ महाभटमारयो । सकल करम परिवारोरे भ०। ४ थूलथकी ए व्रत जे पालै । तेलहे शिवसुख सारोरे । कुशल कला कलना करी प्रगटै । अनुभवरंग उदारोरे । भवि०॥ ५ ॥ दूहा ॥ भव दव दाघ सवे मिटै । पूजो परम दयाल । भावठ भजन सुखकरण । दूजी पूजरसाल ॥१॥ (राग घाटो)। जिनराजनाम तेरा म्हाराज०। ए चाल ॥ पूजो जिनेंद्र प्यारा । होतारो रे विकट भवजलसें । हो० । टेर ॥ हारे घनसार चंदन वासै । हारे सुकुरग नाभि जासें । दुख नारकादि नासै ॥ होता० ॥ १ ॥ घसि सूकमा

दि भेली। नाना सुगध मेली। शिवदैन कर्म ठेली॥ होता० ॥ २ ॥ पूजा सदा रचावो। वर भावनापि भावो। शिवसौंधमे समावो॥ होता०॥३॥ विधि भाव द्रव्य धारो। हिंसाको दोष वारो। प्रभुनाम ना विसारो। होता० ॥४॥ तज पाप भार फंदा। शिवश कलाप कंदा। साधै कपूरचंदा॥ होता०॥५॥ इति प्रथम पूजा॥ काव्य॥ अमल कुंकुम केशर मिश्रितै। जिनपतेर्युगपाद समर्चनं। हरति सो भवदाघ मसुंदर। रचतियो घनसार सुचंदनैं॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्री परमात्मने अनंता० जन्म० श्रीमत्० प्राणातिपात विरमण व्रत उपदेशकाय चंदन यजामहे स्वाहा॥ इति प्राणातिपात पूजा ॥ २ ॥ ॥

॥ ॥ अथ मृषावाद व्रत वासक्षेप पूजा ॥ ॥

॥ ॥ ॥ दूहा ॥ मृषात्याग व्रत दूसरो । कुमति हरति हरतार । भविजन भाव आदरो । शिवतरु फलदातार ॥ १ ॥ राग वशत ॥ सव अरति मथन मुदारघूप। कर० ॥ ए चाल ॥ सुण भविक नर धर त्रुतिय व्रत मन। मृषावादन बोलरे। वाला मृषा०। टेर॥ मृषावाद कुवाद शेखर कुजशवाद न ढोलरे। वाला। कुजश० सु० ॥ १ ॥ सकल शिवसुख धाम भमरवि। ढकण राज्ञ निटोलरे। शिवपुर नगर पथि शबर सरिखो। अरति व्यापन घोलरे। वाला। अरति० वाल० । सु० ॥ २ ॥ निपट कूट कलाप करिनें। परगुपति मतखोलरे। ऋणविधौ धनधान्य निकरै। कपट कूट न तोलरे॥ वालाक० सु० ॥ ३ ॥ कूटलेख कुसाख भरिनें। रचयमा मममोलरे। अन्य सिरसि कलंक धरिनें। चरित अनुं न वोलरे। वाला चरित० सु० ॥ ४ ॥ वसुनेरसर वृथा रचिनें। लह्यो कुगति कचोलरे। त्रुतीय व्रत रस राग भैरवी। कुशलसार विमोलरे। वालाकुश० सु० ॥ ५ ॥ इति ॥ दूहा ॥ जगदाधार जिनदनैं। पूजौ वासरसेण। शिववनिता रस कीजियै। पूजा अयतम एण ॥ १ ॥ राग गरवो ॥ भवि चतुर सुजाण परनारी सु प्रीत मी कवहुन कीजिये॥ भ०। ए चाल ॥ भविभाव धरी भवसागर निस्तारक जिनपति सेवियै॥ भ०॥ टेर॥ वाचनचंदन खमन करिय। तेहमा वलि कुंकुमरस भरियै। मृगमद परिमलता अनुसरियै॥ भवि० ॥ १ ॥ कंकोल सुवासित वलि कीजै। तिम विवय कुसुम रस कस दीजै। ए चूरण विधि निज वसकीजै॥ भवि० ॥ २ ॥ इम वासरसै जे जिन पूजै ॥ तिणसैं स

वि करम सबल धूजै ॥ सुखसंपति जायन घर दूजै ॥ भवि० ॥ ३ ॥ सुर किंनर नर सासन धारे । विनसमस्या सकुसंकट वारे । ए पूजन मनवछित सारे ॥ भवि०॥ ४ ॥ विमला कमला सवला पावै । जे प्रभुगुण गण भावन भावै । इम चदकपूर सुजशगावै ॥ भवि० ॥ ५ ॥ इति काव्य ॥ मृगमदा वर घशृण मिश्रितैं । वैरवरास सुचदन सस्कृतैः । रचतियो जिन पूजन मजसा । सलभते निभृति किलवासकैः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं प मात्मने अनतानत ग्यानसक्तये । जन्मजरामृत्यु श्रीमद० मृषावाद विरमण व्रत उपदेशकाय वा सक्षेप यजामहे स्वाहा । इति तीसरी मृषावाद व्रत पूजा ॥ ३ ॥ ॥

॥ ॥ अथ चोथी अदत्तादांन व्रत पुष्प माल पूजा ॥ ॥

॥ ॥ व्रततृतीय द्विवसाभलो । भाखे जगतजिनद । स्तेयकरण सब सुख हरण । अष्टकरम दलकद ॥ १ ॥ राग सोरठ ॥ हाहोरे देवा । बावन चदन घसि कुमकुमा । चूर०। ए चाल ॥ हाहोरे वाला । परधन हरण गमन करो । धरि त्रिकरण शुध्द विलाशए । हाहोरे वाल्हा । ए भवजल जलधर समो । व लि समकित वृद विनास ए । व०॥१॥ हाहोरे वाल्हा ॥ कनक रजत मणि धातुनो । जल थल रज पशु पटकूलए । ज०॥ हाहोरे वाल्हा ॥ इमतनु थू ल जगतिभख्या । लही सकल पदारथ मूलए । ल० ॥ २ ॥ हाहोरे वा ल्हा । कुमति दुरति रमणी तणो । छै सदन ए चोरीनो कर्मए । छै०। हाहोरे वा० । विपद जलधि पिण जाणिये । सचपल थई नासैधर्मए । स० ॥३॥ हाहोरे वा०॥ ए व्रत सुरतरु सारिखो । शिव सुख फल दैन उदार ए। शि० हाहोरे वाल्हा । कुशल कलायुत कीजीयै । लहियै भवजलनोपार ए । ल० ॥ ४ ॥ इति ॥ दूहा ॥ पूज चतुर्थी मालनी । करिये भक्ति वशेण । मोहति मर भर उपशमें । प्रगटै बोध सिणेण ॥१॥ राग सझायची । भवभय हरणा । शिवसुख करणा । सदा भजो भ्रम०में० एचाल ॥ भविजन पूजो जिन ग्रीवा धरि । वर फूलनकी माला । मेंबारी० व०॥ एपूजन दुरगति घरछेदी । विरचै शिवसुख साला । मैं० विर०भवि०॥१॥ चपक मरुक तिलक चपेली । पाभल लालगुलाला । मैंवा० पा० । विमल कमल परिमल मदमाता । नतजे अलि मतवाला । मैंवा०। नत० ०॥ २ ॥ जाइ दमण जूही कोरंटक । मालति मरुक रसाला । मैंवा० ... पचवरण कुसुमें करि । माल रचन परना

ला। मेंवा० मा० नवि०॥३॥ ए मालापूजन करीनासै। कोटि करम डुखजा ला। मेंवा० को०। सुमति सुरति अनुनव वलि,प्रगटै। त्रासै कुमति कुचाला। मेंवा० त्रा०। नवि०॥ ४ ॥ ए विधि सवरवार त्रिकासै। पापसदन मुखताला। मेंवा० पा०। कपूरकहै प्रनुचरण सरणमैं। मगल माल विशाला। मेंवा० मं० नवि ॥५॥ इति ॥ काव्य। सरस सुन्दर चपक पाटलैं। मरुक मालति केतकि सत्कजैः। विधि विशुध्यजिन परिपूजयेत्। सज मजश्रम मीनिरजेन्नकः॥१॥ ॐ ह्रीं श्री परमात्मने अनंतान० जन्मजरा०श्रीम० अदत्तादान विरमण व्रत नुपदेशकाय। माला यजामहे स्वाहा॥ इति अदत्तादान व्रत चोथी पूजा॥४॥

॥ ० ॥ अथ पांचमी मैथुन व्रत दीपपूजा ॥ ० ॥

॥ ० ॥ दूहा ॥ व्रत चोथे मैथुन तजो। नजो नविक नगवान। शीला रायन योगसैं। लहियें शर्म्म वितान ॥१॥ राग सोरठ ॥ कुद किरण शशी ऊ जलोरे देवा। पात्र०॥ ए चाल॥ मन वच काया थिरकरीरे। वाल्हा। कलु ख कुशील निवारोरे। आगे। एह नरक रमणी तणोरे। वाल्हा। शोदर अति हिन कारोरे। आगे ॥१॥ नर सुर पशु सऊजातनोरे। वाल्हा। वि षिय कलिन वज्र दोषैरे। आगे। ते परिहरिनैं थिरम्होरे वाला०। निजदा रासतोषैरे ॥ २ ॥ आगे। लंकापति नरकै गयोरे। वाल्हा एमैथुनरस धाल्दे आगे। एहन तजकरि केईलसारे। वाल्हा। जीवसकल सुपसारुरे ॥ ३ ॥ आगे। शील रत्न जतनैं धरोरे। वाल्हा। तसदूषण सविवमीरे आगे। कुशलकला कम्नि लहेरे। शिवसुख माल प्रचमीरे। आगे ॥४॥ इति ॥ ० ॥ दूहा ॥ दीपकपूजा पचमी। करै सकल डुखनास। क्षायक लोका लोकनो। प्रगटै बोधविकास ॥ १ ॥ रागदेश वरवो ॥ केसरियानेंकाऊ को०॥ एचाल ॥ ० ॥ नावधरी दीपक पूज रचावो। याते शिव सुख संपति पावो। ना०। रक्त पीत सित वरण विचित्रत। सूतनीवाट वणावो। गोघृतमा हि अधिक तरकरिने। सुन्नमन दीपजणावो। ना०। दीपकनैंमिस मनमदि रमैं। ग्यानकोदीप जगावो। जगततिमिर कलापहरीनैं। मगलमालवधावो। नाव०॥ २ ॥ अरतिहरण रतिदायक जगमैं। एपूजन मनन्नावो। सुर नर पावनमें ततसिणही। यातैं नरकनजावो ॥ नाव०॥३॥ अनुनव नावविशाल। आतमसु लयलावो। कपूरकहै नविजनसे प्रन्नुके। वर गुणगण ज

श गावो ॥ भाव० ॥४॥ काव्य ॥ आत्मप्रबोधै कविवर्धनाय । जाड्यांधकार व्रजमर्दनाय । भव्यप्रदीप कुरुभक्तिवृदैः । प्रभोर्गृहे आयवतर्जनाय ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं परमात्मने अनंतानत० जन्मजरा० श्रीमज्जि० मैथुन विरमणव्रत उपदेश काय दीपयजामहेस्वाहाः ॥ इति पाचमीमैथुन व्रत पूजा ॥ ५ ॥ ॥

॥०॥ अथ छठी परिग्रह व्रते धूप पूजा ॥०॥

॥ ॥ दुहा ॥ भविकीजै व्रत पचमें । सकल परिग्रह मान । ए मोहा दिक शत्रुनो । भूरर दुखनी खान ॥ १ ॥ राग वशत ॥ अतुल विमल मेल्या अखंड गुण । मेन्या० ए चाल ॥ सकल भविकभस्या विमल गुणे वादहा मान परिग्रहनो करो ए । सकल० ॥ टेर ॥ वज्र समान ए समगिरि भेदन । दीप दिवश पति वासरो ए । स० ॥ १ ॥ धन कण वशन गवादिक पशुनो । धातु निकर तिम जाणियै ए । इत्यादिक नवभेद विधाने । दशवै कालिक भाणियै ए ॥ सक० ॥ २ ॥ एहने मूलयकी जेहरै नर । तेहनें मोक्ष मिलै सहीए । सुचिर काल ग्रहवास वसै जे । तेहने देश विधे कहिए । सक० ॥ ३ ॥ नरक निवास इणें विनपाम्यो । मुम्मण सेठ ते भाषियै ए । भवि जन ए व्रत भावयी पालो । कुशल कला निजदाखिये ए ॥ स० ॥ ४ ॥ इति

॥ ॥ दुहा ॥ छठी पूजन धूपकी । धूवो जिनवर अग । कुशर ज्ञि करमतणो हरै । दायक शिवसुख चग ॥ १ ॥ राग देसाख ॥ प्यारीछि प्ररणी न जाय । प्यारी० । थारै मुखमारी हो तारीराज । प्या ॥ ए चाल ॥ ऐसी विधि पूजन भाई दिलवार । धूप धूम घनसार धार करि । ऐसी० । टेर ॥ या भवनीम वारिसागरमे । तरस तरभक तरल विचार । धूप ० ॥ १ ॥ चदनें देवदारु वलि अवर । मृगमद गधवटी वनसार । धूप० ॥ २ ॥ ऐसें सुरभिद्रव्य वर्णमेली । तिणमे सेल्हारस नविसार । धूप० ॥ ३ ॥ मणियुत कचन धूपदानमै । विमलानलथी करि सुप्रचार । धूप० ॥ ४ ॥ कपूर करत नुतिया जिन पूजा । भविजन गणकी तारणहार । धूप० ॥ ५ ॥ काव्य ॥ नानासुगध वसुनिर्मित सारधूप । चाकर्षित भ्रमरवृद मतिर्हियेन ॥ श्रद्धाश्रये विधि निवेश्य विशालभक्त्या । धूपे ज्ञिनाधिपतिर्न शिवर्द सुदावे ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं परमात्मने अनतानत० श्रीमज्जि० परिग्रह प्रमाण व्रत उपदेशाकाय धूप यजा । इति परिग्रह प्रमाण व्रत छठी पूजा ॥ ६ ॥

॥ ※ ॥ अथ सातमी दिशपरिमाण व्रते पुष्प पूजा ॥ ७ ॥

॥ ※ ॥ दूहा ॥ छठे व्रत दिशमानको । गमनागमन निवार । अकुश लता सवि उपशमै । श्रेयसंपजै सार ॥ १ ॥ रागगरवो । सिद्धाचलमंमण स्वामीरे ॥ ए चाल ॥ ※ ॥ श्रीशिवसुख संपति वरियेरे । नवनय डुखवारण करियेरे । करिदिशि परिमाण जेचरियै । रसीला । नाव विमल दिल धरियैरे । वाल्हा धरियै तो समरस नरियै । र० ॥ १ ॥ अध ऊर्ध्वनें तीरछ वखाणोरे । दिश विदिशनै तेम प्रमाणोरे । ए छे सकट जलधिनोराणो ॥ रसी० ॥ २ ॥ एमा गमनागमन निवारेरे । ओछे कुमति डुरति नरतारेरे । इकच क्री लक्षौ डुखनारो । रसी० ॥ ३ ॥ ए व्रत शिवसाधन चमेरे । तुमे नविजन एहन खमेरे । कहै कुशलकला नितमम्मे । रसी० ॥ ४ ॥ इति ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ दूहा ॥ नवियण पूजा सातमी । कीजे नक्ति विशाल । ससुरनि नाना जातना । विमल कुशम नरथाल ॥ १ ॥ ※ ॥ रागधन्याशरी ॥ कवङर्मे नीके नायन ध्यायो ॥ क० ए चाल ॥ प्रनुजीकी फलै पूजन सारो । प्र० ॥ टेर ॥ श्रीजिनजीके चरणकमलमें । अलि समता गुणधारो । प्रनु० ॥ १ ॥ चपक कुंद गुलाब केतकी । पारधिनाग कलारो । जासु दमण वासति मोगरा । पामल लाल में दारो । प्रनु० ॥ २ ॥ इम नानाविध कुशम घटा करि । नाव विमल जलकारो । तोलहियै नविजन ध्रुव करिनें । अचिंत्यकी नवपारो । प्रनु० ॥ ३ ॥ व्रतधर फूल कलाप रुचिर ग्रहि । पूजत जे जगतारो । कपूर कहत जिन चरण सरण लहि । करम सवल दल मारो । प्रनु० ॥ ४ ॥ इति ॥ काव्य ॥

गधामलादि गुण लक्षण लक्षितेवैं । पुष्पोत्करै रखिल गुंजित चचरीकैः ॥ ससेवये विविध जाति समुद्भवैर्या । जैनेश्वर वजतिसोत्र चिराच्छिवना ॥ १ ॥ उँ ह्रीं श्री परमात्मने अनंतानंत० जन्म० श्रीमज्जि० दिशि परमाण व्रत उपदेशकाय पुष्पयजामहे स्वाहाः ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

इति दिशि परमाण व्रत सातमी पूजा ॥ ७ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ आठमी अष्टमंगलीक नोगोपनोग व्रतपूजा ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ जगनायक पदकमलमें । धरियै करि मनरंग । नोग अनें उपनोग । एसञ्चव्रत गिरिशृंग ॥ १ ॥ ※ ॥ सिद्धचक्रपद वंदोरे । नविकासि०

ए चाल ॥※॥ सकलसचित्तनें द्रव्यविकृती । वाहन वलि तबोल । वसन कुशाम दल पानहि तिमवलि । सयण विलेवण घोलेरे । नविका । इण व्रतमें मनममो। शिवसुख रयण करंमोरे । नविका । इण० ॥ १ ॥ ब्रह्मचार्य दिशि न्हाण नत इम । नियम चतुर्दश माल । प्रतिदिन नाव हृदयधरि करियै । एहनी सार सन्नालरे । नवि० इण० ॥ २ ॥ तिमही अनक्ष करोत्तर निशात । अखिल विपुल मह्हिकटो । कालखीण सङ्ग द्रव्य अजाएयो । फल निशिनो जन न्नोरे । न० ॥ इण० ॥ ३ ॥ विविध अप्पोल डुप्पोल विनेदै । अशना रंन्न विशाल । इंगालादिक करण करावण । कर्मादान कुचालरे । न० ॥४॥ इण० ॥ एहमै ते शिवसुखममै । खमै कुगति डुकाल । सहजानद शस्यसुख प्रगटै । प्रवदै त्रिजगरुपालरे । न० । इण० ॥५॥ इण व्रतकरि चितमदिर नरियै । तरियै नवजलपार । अनन्नव चद्र सुधा झडमंमै । कुशलकला निर धाररे । न० । इण० ॥ ५ ॥ इति० ॥※॥ ॥※॥

॥ ※ ॥ दूहा ॥ मगलपूजा अष्टमी । करमदलन असिधार । करियै श्रीजिनराजकी । वरियै शर्म अगार ॥ १ ॥ राग ठुमरी ॥ ※ ॥ तुमविन दीनानाथ दयानिधि कोनखवरलै मेरीरे । तु० । ए चाल ॥ नविजन नावै श्रीजिनवरकी । मंगलपूजा कीजैरे० । वालामग० ॥ टेर ॥ श्लीलायन शरलासन नद्या । वर्त्त कुन्न निरमीजैरे । मीनजुगल श्रीवत्स सरावनो संपुट स्वस्ति करीजैरे । वाल्हा । सपु० । नवि० ॥ १ ॥ ए अष्टमगल मङ्गन कारण । कचन थालरचीजैरे । रुचिराखम त्रिमल गुणधारी । तंडुलसें लिखलीजैरे । नवि० ॥ २॥ निजमन नक्तिनाव धरि नविका । प्रनुसनमुख धरदीजैरे । तोसुखधाम मुक्तिपुट नेदन । निवसन कृत्य लहीजैरे । नवि०॥ ३ ॥ स्वात गगनसम सूर्योदयथी । कोटिकरम तम छीजैरे । प्रगट प्रताप पीनजिन चरणे । चदकपूर नमीजैरे । नवि० ॥ ४ ॥ इति ॥ काव्य ॥ यःसत्काचननाजने शुचितरे मण्युत्तमैर्मन्डिते । श्लीलान्यष्ट सुमगलानि विधिना मम्यप्रनो सन्मुखे । नक्त्यात्मा परिढोकयेद्बुधिपरः सोघव्रज नाशयेत् । न्नित्ते डुर्गति नूयर च लनते स्वर्गादि मोक्षाश्रय ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं परमात्मने अनतानत ग्यानसक्तये जन्म० श्रीमज्जि० नोगोपनोगव्रत [illegible] काय अष्टमंगलं ५ [illegible] स्वाहाः ॥ इति नोगोपनोग व्रत आठमी पूजा॥

॥ ※ ॥ अथ नवमी अनरथ दण्डव्रते तंदुल पूजा ॥ ※ ॥

॥ ९ ॥ दूहा ॥ नवि ए व्रत अष्टम वरो । अनरथ दंड विचार । पाप चिरतन उपशमै । प्रगटै पुन्यप्रचार ॥ १ ॥ सुगुणसनेही साजन श्रीमींमदिरसामि । अ० ॥ ए चाल ॥ निकरणशुद्ध निसुणभवि अनरथ दंड विचार । समकित सुन्नटनो गजन भजन सवर द्वार । मनमथ बोधविकासक गाथ पठन अविकार । मुख भ्रू दृग तनुथी करें भंडकुचेष्टागार ॥ १ ॥ द्वाउपथकीवली कुवचन भाषण मुखरप्रबंध । कुसल मूशल घरद्वाद अतिभरण प्रबंध । स्नानसमें जल तेल अविकृतर अप्रतिबंध । पापविधाना देशप्रकाशन दूषणसंध । सरस वस्तुभृत पात्र मान विन ढांकनठान। धरणकरण सुविवेक विकल तिम दानादान । इम सङ्ग अनरथ करम अवरपिण ढुखनी खान । व्यर्थ पणे मनमान्या छेदे पुन्यप्रधान ॥ २ ॥ इण करिपूर्वे केइगया नरसकटग्राम । व्रतग्रहिनें रहिय तत्र लहियै शिवसुखग्राम । ए व्रत तरणी भवोदधि तारण तरण प्रकाम । कुशलकला नितकरता प्रगटे अभिनवमाम ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ ९ ॥ दूहा ॥ नवमी श्रीजिनराजनी । पूजा परमविलाश । विमलाक्षत भरिभाजनें । भविजन करो प्रकाश ॥१॥ राग पीलू ॥ अबतो उगरयो मोहि चहीयें जिनराय । रारु भरोसोनें रावर चरणको । अ० ॥ ए चाल ॥ श्रीजिनवरजीकी सेवा सार । सो भवभय ढुख दूरनिवारें । श्रीजि० ॥ तंडुलविमल सकलगुण मण्डित । खण्डितदोष रहित उदारं । कंचनपात्र भरी जिन आगें । ढोकनबुद्धि प्रबल सुविचार ॥ श्रीजि० ॥ १ ॥ या पूजन जन तन मनरंजन । गंजन कुगतिकु बोधविदारें । सबल करम नग भेदनहारो । सघन भवोदधि पारउतारें ॥ श्रीजि० ॥ २ ॥ सुमति साभुभव भान मिलावें । तेपिण पद शिवशम समारें । पीनमहोदय धार भावधरि । चंदकपूर सनूर निहारैं ॥ श्रीजिन० ॥ ३ ॥ काव्य ॥ य खण्डजाति गुणवृंद समन्वितानि । नाढोकयें विशुलनिर्मल तंडुलानि ॥ कर्म्मावलि कटति भव्य हिमङ्गिनाग्रे । सोवैभजे शिवसुख सुतरामनंत ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीपरमात्मने अनंतानं० ज० श्रीमज्जि० अनरथदंड विरमण व्रत उपदेशकाय अक्षतं यजामहे स्वाहाः ॥ इति नवमी अनर्थ दंड विरमण व्रत पूजा ॥ ९ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ दशमी सामायक व्रते, दर्पण पूजा ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ दूहा ॥ नवमो नव निधि जाणियै । सामायव्रत सार । सुर जे हनी आसाकरै । सुरतरु समदातार ॥ १ ॥ राग ॥ आयरह्यो दिल बाग मै होप्यारे जिनजी । आय० ॥ ए चाल ॥ सामायक व्रत पालरे । भविकजन । सामाय० ॥ टेर ॥ त्रिकरण त्रिकजोगें इकमञ्जरत । निरतीचारै चालरे । भवि० ॥ १ ॥ सा० गृहव्यापार तजीनें सुभमन । धरि निरवद्य विशालरे । भ० ॥ २ ॥ सामा० ॥ मन वच वपु प्रणिधान असेवन । स्मृति विहीनता टालरे । भ० ॥ ३ ॥ सा० ॥ द्वात्रिंशत दूषण परिहरिनें । पचम गुण वरकालरे । भ० ॥ ४ ॥ सा० ॥ इम वनमित्र तणीपर सीझो । कुशलकला परनालरे । भ० ॥ सा० । इति ॥ ※॥ दूहा ॥ दशमी दर्प्पण पूजना । कीजै श्रावक सुद्ध । सुरपादपसम शकरण । हरणपाप संकुद्ध ॥ १ ॥ राग कालिंगडो ॥ नेम प्रभुजीसु कहज्योजि म्हारा नेम० ॥ ए चाल ॥ जिन पूजनमें रहीयैरे । म्हारा जि० । मन वछित फल लहीयेरे । म्हा० जि० ॥ टेर ॥ कचनमणी रतनेकरि जडियो । वर दरपण करगहीये । जिनवर सनमुख दाखन विधिसें । सकल करम ननदहीयैरे । म्हारा । जिन० ॥ १ ॥ प्रभुजीकीसेवा सब सुखदाई । भावभक्ति उरचहीयै । शिववनिता तुम प्रेम विलूधै । अपर अधिकस्यु कहीयैरे । म्हा० ॥२॥ जि० निजकसरीर प्रमाद वसें करि । नवदल भीतिनसहीयै । सुभमन समकित वीरसगले । चदकपूर निवहियेरें । म्हा० ॥ ३ ॥ जि० । इति ॥ काव्य ॥ रुचिर निर्मल दर्प्पण दर्शन । विनयभधृदयः किलकारयेत् । जिनपते रचिरा भवसगम । सचनिरस्य भजे हिवमजसा ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्री परमात्मने अनतानत ग्यानसक्तये जन्मजरा० श्रीमज्जि० सामायक व्रत ग्रहण उपदेशकाय । दर्पण यजामहे स्वाहा ॥ इति दशमी सामायक व्रत पूजा ॥ १० ॥ ॥ ※ ॥

॥※॥ अथ इग्यारमी देशावगासी व्रते नैवेद्य पूजा ॥※॥

॥ ※ ॥ दूहा ॥ दसमो व्रत हिव भवियणा । धारो धरि वर भाव । ससाराणव गहिरनो । तारण वर तरनाव ॥ १ ॥ सिद्धाचलगिरभेट्यारे । धन्य भाग हमारा । सिद्धा० ए चाल॥※॥श्रद्धा वर मन भाजेरे । घनपाप तिहारा । श्रद्धा० । भाजै० । टेर ॥ विमल सकल सुभ विनय धरीनें । गुरु मुख

वचन हजारा । ए व्रत सुंदर दिल धरो भविजन' । देशावकास विचारारे घनपा० । श्रद्धा० ॥ १ ॥ द्रव्यानयन प्रेक्षप्रयोगै । सब्द रूप अनुसारा । पुद्गल पेक्षण प्रभृति सकलना । तजीयैं दूषण धारारे । घनपा० ॥ २ ॥ परमोत्कृष्ट जघन्य प्रकारै । प्रत्याख्यान प्रचार । सब्ब व्रतनो आगमन ए व्रतमें । गुणमणि रयण भमारारे । घनपा० ॥ ३ ॥ कर्म कषाय हरीनें छेदें । चउगति गेह विहारा । अजरामर घनदेंहथीनिरमल । कुशलकला करिसारारे । घनपा० ॥ ४ ॥ श्रद्धा० ॥ इति ॥ दूहा ॥ एकादशमी पूजमें । विवध भाति नैवद्य । मेल करो जिनराजनी । दायक सुखनिरवद्य ॥ १ ॥ राग कल्याण ॥ तेरी पूजावणी हे रसमें । होते० । एचाल ॥ ॥ सेवासारो श्रावक जिन चरणें । होसे० । टेर ॥ मोदक लपनश्री वर घेवर । शिता सुरस घृत ऊरणें । मुक्त चूर विद्यादिक बहुतर । नैवेद्य नानावरणें । होसे० ॥ १ ॥ रयणांकित कंचन भाजन भरि । मन वय तनु थिरकरणें । करिढोकन विधि परम विनय धरी । रहियै नित प्रभु सरणें । होसेवा० ॥ २ ॥ दुखदल नासन या पूजन विधि । निर्वृति विशद सुख भरणें । चंदकपूर कहत भविजनके । कलिमलमाला हरणें । होसेवा० ॥ ३ ॥ इति ॥ काव्यं ॥ धवल धाम शिताप्पिं समुद्भवे । विमलभक्ति समन्वित कर्प्परे । जिनपते विंदधाति विधूपनं । सलभते शिवशं प्रवराश्नकैः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं परमात्मने अनंतानंत० ग्यान सक्तिये जन्म० श्रीमज्जि० देशावगासिक व्रत द्रढ ग्रहण उपदेशाकाय नैवेद्य यजामहे स्वाहा' ॥ इग्यारमी देशावगासी व्रत पूजा ॥ ११ ॥

॥ ॥ अथ बारमी पोसहव्रते ध्वजपूजा ॥ ॥

॥ ॥ व्रतपोषध इग्यारमो । भावो भविकविधान । ध्यावो ज्युं द्रुतसहरै । प्राटतकर्म वितान ॥ ए देशी ॥ इण सरवरियानी पालऊभादोयराजवी । म्हारालाल ऊभा० ए चाल ॥ भविजन भाव विसाल प्रमाद नीवारीयैं । म्हा० प्र० टेर ॥ पोसहव्रत चितमांहि निमयधरि धारीयें । म्हारा० वि० ॥ ते पिण उविधप्रकार चतुर न विसारियें । म्हा० च० ॥ प्रतिवासर प्रतिपर्व सजेंतिम सारियें । म्हा० स० ॥ १ ॥ पडिलेहण धुरधार सकल किरिया करो । म्हा० स० ॥ परिठावण विधिवाद मयाधरि आदरो । म्हा० म० षटकाया सघह तजीनें सचरो । म्हारा० त० ॥ अचपल थई पचक्खाण विविधमनसंभरो ।

म्हा० ॥ २ ॥ वि० ॥ बलिसङ्ग दूखण टालिनें पापनिकंदिये । म्हा०पा०॥ चौगति च्यार कषाय करमदल छेदियै । म्हा०॥ इण विधि तारण तरण सुगु रुपदवदियै । म्हा० सु० ॥ कुशल कलादल मालकरी चिरनदियै ॥ ३ ॥ म्हा० क० इति ॥ दूहा ॥ द्वादशमी धज पूजमे । घोषणदेई अमार । धरियै द्वादश भावना । तरियै भवजलपार ॥ १ ॥ राग देशाख ॥ कुबजाने जाडु मारा ॥ ए चाल ॥ प्रभुजीसे प्रीतलाना । करीध्वजपूजन विविधानाहो । प्र० ॥ १ ॥ टेर ॥ जोयण सहस मानमणि मण्ति । कचनदण्ड रचानाहो । प्र० ॥ २ ॥ पचवरणयुत वसनपताका । अधिवासित लहकानाहो । प्र० । ३ ॥ ढक्कनाद करी तीन प्रदिक्षणा । रोहणविधि मनभानाहो । प्र० ॥ ४ ॥ या विधिसक्कज करम रिपुदारण । जोतिमे जोतिसमानाहो । प्र० ॥ ५ ॥ ज गतारण श्री जिनदरशणसें । चदकपूरलुभानाहो । प्र० ॥६॥ इति काव्यं ॥ भव्यार्चति ध्वजवरैः सशुभ्रैः सलीलै । जैनेश्वरं कनकदण्ड युतैः सशोभैः ॥ कर्मारि वृंदजय भ्रम समन्वितैर्यो । वैसोभजे शिव दिवादिसु राज्यलक्ष्मीः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमात्मने अनतानत जन्म० श्रीम० पोसहव्रत ग्रहण उपदेशकाय ध्वजं यजामहे स्वाहाः ॥ ※ ॥ ॥◊॥

इति बारमी पोसहव्रत ध्वजपूजा ॥ १२ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥※॥ अथ तेरमी अतिथिसंविभाग व्रते फल पूजा ॥※॥

॥ ※ ॥ दूहा ॥ द्वादशमोव्रत सुखफलद । साधु दानसनमान । अजरा मर पदसपजै । सालिभद्र अनुमान ॥ १ ॥ राग कजरी ॥ मेरो मनमोहो माई आणदझिलै आ० ॥ ए चाल ॥साधुदान व्रत भवि हृदय धरो । हृदय धरोरेभाई हृदय धरोरे । सा० ॥ टेर ॥ व्रतसंयम गत परलिगीनें । पड्लाभन मति रिजुनकरो । रिजु० ॥ १ ॥ भा० सा० ॥ जिनमत मुनिवर चरण नमीजे । अशनादिक देई सुकृतवरो । सुकृ० भा० । सा० ॥ २ ॥ वलि पचातीचार निवारी । परम विरतिना विघन हरो । विघ० भाव० ॥ ३ ॥ सा० श्रीश्रेयासने चदन बाला । अनुमाने पदनिर्वृतिचरो निर्वृ० भा० ॥४॥ सा० इति ॥ दूहा ॥ फलदल पूजा तेरमी । भविभाजन कमनीय । भविक रचौ भगवानकी । भवविषधर दमनीय ॥१॥ राग ख्याल ॥ लोभी नैनारे लोभी नैना । हो दरशणके० ए चा[illegible] ॥ लोभीसैणारे लोभीसैणा हो पूजन

के लोभीसेणा ॥टेर॥ पूजनविधि प्रभुकी दिल धरले । थिर करि मनतनु वैणा । हो पू० ॥ १ ॥ श्रीफलपुगी बीजपूरनलि । आम्रकदली फल लेणा । हो पू० ॥ २ ॥ इमनानाफल गहिप्रभु आगें । भविभाजन धर टेणा । हो० पू० ॥ ३ ॥ भक्ति निमल सुचितर धर मनमें । प्रभु समरण दिनरैणा । हो पू० ॥ ४ ॥ कपूरकहै प्रभुपद पकजमें । षट्पद भण गुणनेणा । हो पू० ॥५॥ इति ॥ कलश ॥ हाहो यश धारा । प्रभुजीका वचन अमृत यश गारा ॥ टेर॥ सुर नर मुनि तिरियग वन सीचन । वचन सज्जल घनधारा॥ हाहो० प्र० । विक्रमपुर श्रीत्रिशलानदन । जिनवर त्रिभुवन प्यारा । द्वादश व्रत पूजन विधि पभणी । भवियण गण हितकारा ॥ हाहो० १ प्र० ॥ गुरु खरतर जिन चद्र सूरिवर । राजे विगति विकारा । श्रीमति भाधनि रादि कञितके । धरि मन वचन अगारा । हाहो० आ० प्र० २ ॥ सवत रस निक निधि शशिकर । मासाश्विन मनुहारा । धवलपक्ष प्रतिपद तिथि सोभन॥ रजनीपति सुतवार ॥ हाहो सु० ३ । प्र० ॥ श्रीजिनरत्न सूरिसागर । पाठकपद विसतार । रूपचदगणि चरण कमलमें । कुशलसार मधुकारा । हाहो म०प्र० अपर नामकरि चदकपूरा । रचि जिनपति नुतिसारा । लक्ष्मीप्रधान प्रवर गणिवरकी । प्रेरणया सुविचारा । हाहो० प्र०५ इति ॥

॥८॥ काव्य ॥ जवाआदि फल व्रजै ससुरसै गंधादिभि मिश्रितै । नूनं द्रव्य हतु भ्र श्र विधिना कुर्यात् प्रभोर्च्चन । भक्त. स प्रभु पूजनेक निरतो भूयोपि भूयो लभे । ह्रम्मस्वग तरोरक सुखफला गार वर निर्मल ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं परमात्मने अनंता० श्रीमज्जि० अतिथि सविभाग व्रत उद्देशाय फल यजामहे स्वाहा ॥ ॐ ॥ ॥ ८ ॥ ॥ ॐ ॥
इति श्री बारह व्रत पूजा सपूर्णम् ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अथ सक्षिप्त विधि ॥ ॐ ॥

॥१॥ विशाल जिन मदर अथवा धर्मशालामें सिंहासन पीठ सम वसरण की स्थापना करै । जिसपर पूर्व दिशाकी तरफ श्रीमहावीर स्वामी एव चारे दिशें चार प्रतिमा स्थापन करें (आगे एक चोतूणा अच्छा चादी पीतलादिकका पट्ट स्थापन करै । जिसपर एक बीचमें । ६ ऊपर । ६ नीचे एव १३ साथिया करके १३ चावलोंका पुज करै । ऊपर व्रतनाम युक्त

१३ चिठी स्थापन करै । वामपासे कल्पवृक्ष, दहिणे पासे धजा अष्टमंगलीकादि सोन्नता अतिशय स्थापन करै ॥ अब १३ चिठी लिखनेकी रीति॥

॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्री सर्व धर्म मूल श्री मद्दर्शनायनमः ॥

॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्री स्थूल प्राणातिपात विरमण व्रतायनमः ॥

॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं श्री स्थूल मृषावाद विरमण व्रतायनमः ॥

॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं श्री स्थूल अदत्तादान विरमण व्रतायनमः ॥

॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं श्री स्थूल मेथुन विरमण व्रतायनमः ॥

॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं श्री स्थूल परिग्रह परिमाण विरमण व्रतायनमः ॥

॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं श्री दिशा परिमाण गुण व्रतायनमः ॥

॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं श्री भोगोपभोग परिमाण गुण व्रतायनमः ॥

॥ ९ ॥ ॐ ह्रीं श्री अनर्थ दण्ड विरमण गुण व्रतायनमः ॥

॥ १० ॥ ॐ ह्रीं श्री सामायक शिक्षा व्रतायनमः ॥

॥ ११ ॥ ॐ ह्रीं श्री देशावगाशीरूप शिक्षा व्रतायनमः ॥

॥ १२ ॥ ॐ ह्रीं श्री पोषधोपवासरूप शिक्षा व्रतायनमः ॥

॥ १३ ॥ ॐ ह्रीं श्री अतिथि सविभाग दानरूप शिक्षा व्रतायनमः ॥

॥ ४ ॥ इसीतरै चिठी १३ लिखके स्थापित करै । तीन नवकार गुणके वाशक्षेपसें प्रतिष्ठित करै (और) जल, चदन. पुष्प, धूप, दीप. नैवद्य, फल, अक्षत, वस्त्र, धजा, अष्टमगलीक आदि तेरै तेरै, पूजाके लायक द्रव्य १३ थाल्यामे लगाय दोनू तरफ रखे । पीछै स्नात्र करायके पूजा करावे। जो पट की पूजा सरू होय सो थाली लेतो रहै चढातो रहै (परतु) नालेरका गोटा १३ वरग लगाया हुवा और धजा १३ व्रतका माण्डलापर व्रत दीठ च ढावे। बाकी द्रव्य सर्व थाल्यामें दोनु तरफ रखें । दीपक पूजामे १३ दीपक तो एक थालीमें रखे । और बारह व्रतका अतीचार १२४ वर्जण निमत्त १२४ एकसो चौवीस दीपक माण्डलेके चारु तरफ सोन्नता श्रेणीबद्ध रखे इत्यादि यथा शक्ति चित्तकी उदार वृत्तीसे पूजनविधि करै, करावे, करता की अनुमोदना करै । विशेष [ ] ...मग होय तो बाजित्रादि उच्छवके साथ, मोटी धजा, कल्पवृक्ष, ...लीक नगरमें फिराकर लावै उत्तम उत्तम द्रव्य भगवानके भेट ...न बारह व्रत पजा विधि ...

॥ ॥ अथ श्राद्ध दिन कृत्य लिख्यते ॥ ॥

॥ ॐ ॥ चिदानंद स्वरूपाय । रूपातीताय तायिने । परम ज्योतिषे तस्मै । नमःश्री परमात्मने ॥ १ ॥ अर्थ ॥ ग्यानानंद मई है स्वरूप जिसका और उदारक शरीरादि रूप रहित । उत्कृष्ट तेजके धरनेवाले ऐसे श्रीपरमात्मा परमेश्वरकों मेरो नमस्कार हुवो ॥ १ ॥ पश्यति योगिनो यस्य । स्वरूप ध्यान चक्षुषा । दधाना मनसःशुद्धि । तं स्तुवे परमेश्वरम ॥ २ ॥ जिसके स्वरूपकों ध्यानरूपी दृष्टीमें मनशुद्धी धरतायका मोटे योगीश्वर देखते हैं । ऐसे परमेश्वरकी वारंवार स्तवना करता हुं ॥ ऐसे परमात्म गुणधारक । सर्व जीव हितकारक । सर्वज्ञ सर्वदर्शी शासनाधिपती श्रीमहावीर स्वामीकी आग्यानुसार दिन रातमें श्रावकके करने योग्य शुद्ध आचारोपदेश लिखता हुं ॥ क्युंकि संपूर्ण जगत्रका जीव सुखकी वांछा करनेवाले हैं (और) संपूर्ण सुख सिद्धि स्थानकमें है। सिद्धि स्थानक मिलनेसें जीवकों संपूर्ण सुख मिले । इससें सिद्धि स्थानककी प्राप्तीके अर्थ शुद्ध आचार धारन करनो। शुद्धाचारसें। कषायध इंद्रिया पाचकों जीतके मनकों शुद्ध करें। एकाग्र चित्तसें आत्मगुणका ध्यान करता सिद्धि स्थानककों प्राप्त हुवै । चित्तमें विवेक धारण करके यथा शक्ति शुद्धाचार धारन करनो। अमृतको बुंट मात्रभी जीवकों सुखदायक है (और) जहरको लवलेशमात्र जीवको दुःखदायक है (इससें) यथाशक्ति व्रत पच्चखाण पूजादिक धारन करना। परतु। विवेकसें शास्त्रोक्त विधि मुजब करना जिससें उत्तम फल होय। अविविसे किया हुवा बहुतभी भमरूप संसार वृद्धीकारक है । प्रथम दश दृष्टांते अनंता भवमें मनुष्यभव पामणा महा दुर्लभ है (जिससे) आर्य देश, उत्तम कुल, पचेंद्री परगमी, मोटा आयुष्य पावणा महा दुर्लभ है (इन सबसें) जिनेश्वर देवका धर्मपर श्रद्धा उत्पन्न होणा। अनेकांती स्याद्वादी धर्मोपदेशक गुरूका जोग मिलना । शुद्धज्ञान का प्राप्त होना (और) शुद्ध ध्यानसें शुद्ध आचारमें चलना । यह जलदी मोक्ष जाणेवाले जीवोंका लक्षण है। इससें दूरभवी अभवीकु पावणा महा महा दुर्लभ है । इस सेती पूर्वोक्त लक्षणायुक्त सारो संजोग पायके साधु श्रावककु अपनें अपनें शास्त्रोक्त आचार मुजब चलनो चहिये (इससें) उत

म श्रावक; रात्रीके चोथे प्रहरै दो घमी चार घमी रात रहते निद्राकों दूर करै। प्रथम तीन नवकार गुणें (पीछे)अपनो कुलधर्म दिनमें करनेको कृत्य स्मरण करके, लघुशंकादि निवारके, रात्रीका वस्त्र बदलके शुद्ध चित्तसें शुद्ध नवकार मन्त्रको ध्यान करे। इस जगत्रमें अनेक मन्त्र है परंतु चवदे पूर्वको सारभूत, उत्कृष्ट भाव, मंगलरूप, सर्व कार्य सिद्धिकारक मोक्षसुख दायक, एक नवकार मन्त्र है । इस समान और कोई मंत्र है नही ॥ कहाभी हे ॥ नमस्कार समोमन्त्र । सत्रुजय समोगिरी । वीतराग समोदेवो॥ न भूतो न भविष्यति ॥ १ ॥ ऐसा नवकार मन्त्रका ध्यान पूर्वदिश उत्तर दिश सन्मुख बेठके एकाग्र निर्मल चित्तमें यथाशक्ति प्रमाण जाप करे ॥ सो जाप तीन प्रकारको होता हे ॥ उत्कृष्ट १ । मध्यम २ । जघन्य ३। सुद्ध उपियोग रखके आगुल्याका विश्वापर जाप करै। चित्तकों स्थिर रक्खे सो उत्कृष्ट जाप कहियें ॥१॥ मालासें चलत चित्तसें जाप करे । सो मध्यम २ ॥ सख्या विगर उपियोग शुन्यसें जाप करै। सो अधम जाप कहिये३॥ (इससें) अपनी शक्ति मुजब उपियोग सहत स्थिर चित्तसें जाप करे। धर्मस्थानक जाके(वा) एकात स्थानके रात्री प्रतिक्रमण विधि सयुक्त करै पीछे मगलाष्टक स्तोत्र गुणें ॥ यथा ॥ नाभेयाद्याजिना. सर्वे । भरताद्याश्च चक्रिणः । कुर्वंतु मगलं सर्वे । विष्णवः प्रतिविष्णव. ॥ १ ॥ नाभि सिद्धार्थ भूपाद्या । जिनाना पितरःसमे । पालिता खरू साम्राज्या । जनयंतु जयं मम ॥ २ ॥ मरुदेवी त्रिशलाद्या । विख्याता जिनमातरः । त्रिजगज्जनिता नदा । मंगलाय भवतुमे ॥ ३ ॥ श्रीपुन्मरीकेंद्रभूति । प्रमुखा गणधारिणः । श्रुति केवलिनोपीह । मगलानि दिशतुमे ॥ ४ ॥ ब्राह्मी चंदन बालाया । महासत्यो महत्तरा । अखंम शीललीलाया । यच्छतु मममगल॥५ चक्रेश्वरी सिद्धायिका । मुरयः शासन देवताः। सम्यगूद्दशा विघ्नहरा । रचयतुजयश्रिय ॥ ६ ॥ कपर्दि मातग मुख्या । यक्षा विक्षात विक्रमा. । जैन विघ्नहरा नित्य । दिशतु मगलानिमे ॥ ७ ॥ सर्व मंगल मागल्य । सर्व कल्याण कारणं । प्रधान सर्व धर्माणा । जैनं जयतु शासन ॥ ८ ॥ मंगलं भगवान् वीरो । मगल गौतमः । मंगलं स्थूल भद्राद्या । जैनो धर्मोस्तु मंगलं ॥ ९ ॥ पीछे [illegible] भूमिका यें स्नान करके द्रव्ये भावे

शुद्ध होके घर देरासरमें भगवानकी पूजा करै ॥ यथा ॥ ॥ ॥

॥ ॥ अथ जिनार्चन विधि ॥ ॥

॥ ॥ अर्हत्कल्पानुसारे तथा विधि प्रपाकानुसारें किंचित्मात्र लिखते हैं ॥ भगवतके मंदिर (वा) घर देरासरके विषे । चोटीकूं बांधकै शुद्ध वस्त्र पहरके उत्तरासंग जिनोपवीत मुखकोससहित । एकांतके विषे पूर्व दिशि उत्तरदिशि तरफ बैठके परमेश्वरकी पूजा करै ॥ प्रथम जल, चंदन, पुष्प, धूप, दीप, अक्षत, नैवेद्य, फल, आदि चीजाकूं मंत्रों सें पवित्र करै (यथा) ॥ ॐ आपो अप्प काया एकेंद्रिय जीव निर्वद्या र्हत्पूजाया निर्व्यथा. संतु । निरपायाः संतु । सद्गतयः संतु । नमेस्तु संघट्टण हिंसापापमर्हदर्चने॥इस मंत्रसे जल मंत्रणा ॥ ॥ ॐ वनस्पतयो वनस्पतिकाया जीवा एकेंद्रिया निरवद्यार्हत्पूजाया निर्व्यथा संतु । निरपाया. संतु । सद्गतय संतु । नमेस्तु संघट्टन हिंसा पापमर्हदर्चने ॥ इति पत्र पुष्प फल धूप चंदनादि अभिमंत्रण मंत्र॥ ॥ ॐ अग्नयो अग्निकाया जीवा एकेंद्रिया निरवद्या अर्हत्पूजाया निर्व्यथाः संतु । निरपाया. संतु । सद्गतयः संतु । नमेस्तु संघट्टन हिंसा पापमर्हदर्चने॥ इति वन्हि दीपाद्यभिमंत्रण ॥ फेर वास चूर्ण फूल गंधादिक हाथमें लेके मंत्र पढे ॥ ॐ त्रसरूपोहं संसारिजीवः सुवासन. सुमेधा एक चित्तो निरवद्यार्हदर्चने निर्व्यथोभूयास । निःपापोभूयास । मत्सश्रिता अन्येपि संसारिजीवा निरवद्यार्हदर्चने निर्व्यथाः भूयासुः निरुपद्रवा भूयासु ॥ इस मंत्रसें केशर मंत्रके अपणे तिलक करे ॥ ॥ पुष्पसें अपणें मस्तककी पूजा करे (फेर) पुष्प अक्षत आदि हाथमें लेके मंत्र पढे ॥ तन्मंत्रो यथा ॥ ॐ पृथिव्यप्तेजो वायु वनस्पति त्रसकाया एक द्वि त्रि चतु पंचेंद्रिया स्तिर्यंङ मनुष्या नारक देवगति गता श्चतुर्दशरज्वात्मक लोकाकाश निवासिनः । इह जिनार्चने कृतानुमोदना: संतु । निःपापासंतु । निरपायाः संतु । सुखिन संतुः । प्राप्त कामाः संतु । मुक्ताः संतु । बोध माप्नुवंति ॥ इस मंत्रसें मंत्रकै दशदिशामें गंध जल अक्षतादिक क्षेपन करे । फेर यह श्लोक कहे ॥ शिवमस्तु सर्व जगतः । परहित निरता भवति भूतगणा. । दोषाः प्रयातु नाश । सर्वत्र सुखी भवतु लोकः ॥१॥ सर्वेपि संतु सुखिन । सर्वेसंतु निरामया । सर्वे भद्राणि पश्यंतु

माकश्चिद्दुक्ख माग्भवेत्॥ २ ॥ फेर मंत्र पढे ॥ ॐ भूतधात्री॰ पवित्रास्तु। अधिवासितास्तु। इस मत्रसे मंत्रितजलसे जमीन पवित्र करे (फेर) स्थिरायशास्वताय निश्चलाय पीठायनमः॥ फेरपखाल करवाके परमेश्वरकु पट्ट ऊपर स्थापन करे। थिरबिंब होय तो वेदी ऊपर पखाल करावे॥ पीछे इस मत्रकूं पढे ॥ ॐ अत्रक्षेत्रे। अत्रकाले। नामार्हतो। रूपार्हतो। द्रव्यार्हतो। भावार्हतः। समागताः। सुस्थताः। सुनिष्ठिताः। सुप्रतिष्टाः सतु ॥ इति अर्हत्प्रतिमा स्थापन मत्र ॥ फेर मौनसहित अगामी पुष्पग्रहण करके मत्र पढे ॥ ॐ नमो अर्हद्भ्यः सिद्धेभ्यः। स्तीर्णेभ्यः। स्तारकेभ्यः। बोधकेभ्यः। सर्वजतुहितेभ्यः। इह कल्पना बिंबे भगवतोर्हतः सुप्रतिष्टिताः सतु ॥ यह मत्र मौन सहित पढके भगवतके चरणऊपर पुष्पस्थापन करे। फेर पुष्प जल हाथमें लेके कहे ॥ यथा ॥ स्वागतमस्तु। सुस्थितिरस्तु। सुप्रतिष्टास्तु पुष्पाभिषेकेन अर्घ्यमस्तु। पाद्यमस्तु। आचमनीयमस्तु। सर्वोपचारैः पूजास्तु ॥ इस मंत्रसे मंत्रित जिन प्रतिमाऊपर जलसहित पुष्प चढावै॥ (फेर) जलग्रहण करके मत्र पढे ॥ ॐ अर्हत तर्प्पणपय। प्राणद मलनाशन। जलजिनार्चने त्रेर। जायता सुखहेतवे॥१॥ इस मत्रसे मत्रित जल करके अभिषेक करावे। फेर चदन कुकुम कस्तुरी आदिगध वस्तु हाथमें ग्रहण करके। यह मत्र पढे ॥ ॐ अर्हते ॥ इद गध महामोद। बृहण प्रीणन सदा। जिनार्चनेच सत्कर्म। ससिद्ध्यों जायताममः॥१॥ ऐसा पढके विविधगंध वस्तूका विलेपन करे। फेर। पुष्पपत्रिका हाथमें ग्रहण करके। यह मत्र पढे। ॐ अर्हत। नानावर्णमहामोद। सर्वत्रिदशवल्लभ। जिनार्चनच ससिद्ध्यौ। सुखभवतु मेसदा ॥ १ ॥ इति पुष्पपूजा ॥ फेर अक्षत ग्रहण करके यह मत्र पढे ॥ ॐ अर्हत। प्रीणन निर्म्मल दल्प। मागल्य सर्वसिद्धिद। जीवन कार्यससिद्ध्यौ। भूयान्मेजिनमदिर ॥१॥ इस मत्रसें मत्रित अक्षतका तीनपुज करे। फेर पूंगीफल जातीफलादिवस्तु ग्रहण करके यह मत्र पढे॥ ॐ अर्हते। जन्मफल स्वर्गफल। पुन्यमोक्षफल फल। दद्याज्जिनार्चने त्रैव। जिनपादाग्र सस्थितः॥ इति जिन पादाग्रे फलपूजा ॥(फेर) धूप ग्रहण करके यह मत्र पढे ॥ ॐ अर्हन श्रीखमागरु कस्तूरी। द्रुमनिर्यास सम्भवः। प्रीणनः सर्व देवाना। धूपोस्तु जिनपूजने इस मत्रसे धूप क्षेपन करे ॥ फेर पुष्प

यमः । लवणार्चि र्लवणाधु॰ । पिपाते सेवते पदों ॥ १ ॥ ऐसा कहके लवण जल उतारणा करे ॥ फेर आरती लेके यह पढे ॥ सप्तमोति विधानाई । सप्तव्यसन नाशकृत् । यत्सप्तनरकद्वारा । सप्तारितुलागत ॥ १ ॥ सप्तांग राज्य फलदान स्तप्रमोद । सत्सप्त तत्वविदनतवृतप्रबोध । नववक्र हस्तधासगत सप्त दीप । माराविक भवतु सप्तम भक्तुणाया ॥ ऐसा कहके आरती उतारे ॥ फेर मंगलदीप लेके यह पढे ॥ विश्वत्रय भवेज्जीवैः । सदेवा सुर मानवै । चिन्मय श्रीजिनेंद्रात् । प्रार्थनीय दिनेदिने ॥ १ ॥ यन्मंगल भगवत प्रथमार्हतः श्री । सयोजनैः प्रतिबभूव विवाहकाले । सवासुरासुर वधूमुख गीयमाने । सर्वर्षिभिश्च सुमनोभि रुदीर्यमाना ॥ २ ॥ दास्यं गतेषु सकलेषु सुरासुरेषु । राज्येर्हत प्रथम सृष्टि कृतोयदासीत् । सन्मंगल मियत पाणिग तीर्थवारि । पादाभिषेक विधिनान्युपचीयमान ॥ ३ ॥ यद्विश्वाधिपतेः समस्ततनु भृत्संसारनिस्तारणे । तीर्थप्रष्टि मुपेयुषिप्रतिदिन वृद्धिंगत मंगल । तत्समरुपनीनपूजनविधौ विश्वात्मना मर्हता । भूयान्मंगल मक्षयंच जगते स्वस्त्यस्तु सघायच ॥ ४ ॥ यह चारवृत्त कहके मंगलदीप आरती उतारे ॥ फेर सक्रस्तव पढे ॥ यह सदैव जिन पूजन करणेंकी विधि कही ॥ (पीछे) यथाशक्ती अच्छा वस्त्र आभूषण पहरके, घोडा, हाथी, रथ, पालखी, सिपाई, नोकर, भाई, वधु (इत्यादि) परिवार सहित पूजाके लायक, फल फूल प्रमुख उत्तम द्रव्य हाथमें लेके । भव्यजीवोंकों मोक्ष मार्ग दिखाता हुआ, जिनशासनकी प्रभावना करता हुआ, जिनमंदर जावे । जिनमंदरमें प्रवेश करके १० त्रिक विधि साचवन करै (सो १० त्रिक लिखतेहै) (पहिला त्रिक) (३ निस्सही) कहणेंका (जिसमें) १ निस्सही, जिनमंदरमें पैंशतेही कहै (कहे पीछे) ससार घर संबंधी कुछभी कार्य विचारणा न करे ॥ १ ॥ (दूसरी) निस्सही, प्रदक्षिणा तीन दिये पीछे कहै । जिन मंदरमें फूटा टूटा ठीक करानेकी सारसंभाल रक्खीथी सोभीछोडै । इहा द्रव्य पूजा करणी मोकली रही ॥ २ ॥ तीसरी निस्सही कहे पीछे निकेवल भाव पूजा करे । पिण द्रव्य पूजा न करे ॥ ३ ॥ यह प्रथम निस्सही त्रिक कहा ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ (दूसरा त्रिक) ज्ञान त्रिककी आराधना करनेकों प्रभुके द

क्षिणावर्त्तसें तीन प्रदक्षिणादेवै ॥ ५ ॥ (तीसरा त्रिक) मूल नायकजीके बिंबकों पचाग मिलाके, तीन वेर नमस्कार करै ॥ ३ ॥ (चौथा त्रिक) प्रभूकी अग १। अग्र २। भाव ३। त्रिविध प्रकार पूजा करै ॥ (अब निस्सही किये पीछे । कृत्य, अकृत्य (तथा) पूजा विधि सक्षिप्त लिखतेहैं ॥ निस्सही किये पीछे, मनोगुप्ती, वचन गुप्ती, काय गुप्ती, करके युक्त रहै ॥ पाचो इंद्रियाकों वशमें रक्खै । गमना गमनमें उपयोगी रहै । गीतादिक अन्यका सुनके चित्तमें व्याकुलता न रक्खे । कुटुम्बी देव कार्यकों छोडके और कार्यकी विचारणा न करै । राज कथादि सपूर्ण विकथा छोडै । जन्म, (और) कर्मके, अनुगत वचन न वोले (अर्थात्) कोईके माता पितादिकका किया थका, खोटा कार्यकों प्रगट न करै (तथा) कर्मानुगत वचन आधेकों आधा, गोलेकों गोला (इत्यादि वचन) नवोलै ॥ निस्सही किये पीछे जिन मंदरमें धर्म्म सयुक्त, आत्म हितकारी, प्रमाणोपेत वचन वोलना चाहिये ॥ (जिसनें) मन, वचन कायाके, खोटै व्यापारोंका निषेध अपनी आत्मासें कियाहै (उसके) भावसें निस्सही होय (और) जिसनें दूषणका त्याग न कियाहै । उसके केवल शब्द उच्चारण मात्र, द्रव्य निस्सही होय (इसवास्ते । पूजायोग्य उतम वस्त्र पहरके, आठतहके उज्जल वस्त्रसें मुखकोश वाधे । धूपादिकसे अग अपना सुद्ध करे । भावसें, दूशरी निस्सही कहते, मूल गुभारेमें प्रवेश करै । जयणा सयुक्त पूजा करै । पूजा करते हुए, शरीरमें खाज न खुणें । सेल खखार न करै । निकेवल भगवानकी स्तवनामें चित्त रक्खे । प्रथम सुगधयुक्त जल पचामृतसें स्नात्र करावै । सुकमाल अच्छा कोमल सुगध युक्त वस्त्रसें भगवानका अगलूहै । कपूर कस्तूरी मिश्रित सुद्ध केशर चदनका विलेपन करै । शुभवर्ण, शुभगंध युक्त, जीवादि रहित, निर्दोस । गुलाव, चपा, चपेली, केवडा, जाई, जुई, मोगरादिक पुष्पसें पूजा करै । अष्टाग धूप अगरवत्ती खेवै ॥ मगलदीप करै । अखंड उज्जल अक्षतासें प्रभूके सन्मुख अष्ट मगलीक लिखै ॥ दर्पण १। भद्रासण २। वर्धमान सरावसपुट ३। श्रीवत्स ४। मत्स्ययुगल ५। पूर्ण कलश ६। स्वस्तिक ७। नद्यावर्त ८। (ऐसा) अष्ट मगलकी रचना करै । पच वर्ण फूलोंसे अष्ट मंगलीक पूजै । सुदर कुकुम मिश्रित

चंदनसें हस्थोदेवै । उत्तम नैवेद्य चढावै । अच्छा खाद्य फल चढावै । (इत्या दि) पूजाकी विधि, आरती पर्यंत । राय प्रशेणी, ग्याता धर्मकथा, जीवा भिगमादि, सिद्धांतोंमें लिखे मुजब करै (पीछे) अंतरंग भक्तीसें प्रभूके सन्मुख नाटक करै ॥ (जैसें) देवेंद्र, दानवेंद्र, नारद, इनोंनें (तथा) उदाई राजाकी, राणी प्रभावतीनें। द्रोपदीनें नाटक किया (और) रावण प्रमुख, कइ जीवोंनें अष्टापदादि ऊपर नाटक करके, तीर्थंकर गोत्र उपार्जन किया (तसें) प्रभूके सन्मुख शंकारहित होके । उत्तम पुरुष नाटक करै ॥

॥ ※ ॥ (अब) जल चंदन पुष्पादिकसें पूजा करै ॥ (सो) अंगपूजा ॥ १ ॥ प्रभूके सन्मुख नैवेद्य प्रमुख चढावै (सो) अग्र पूजा ॥२॥ प्रभूके सन्मुख शकरतवादि गीत गान नाटकादिक करै (सो) भाव पूजा ॥ ३ ॥ (यह पूजाका विचार गर्भित चोथा त्रिक कहा) ॥ ※ ॥ (अब पांचमा त्रिक) ॥ ※ ॥ तीन अवस्था विचारणी ॥ पिंडस्थ (१) पदस्थ (२) रूपातीत ॥ ३ ॥ इसमें पिंडस्थ अवस्थाके तीन भेद ॥ जन्मावस्था ॥ १ ॥ राज्यावस्था ॥ २ ॥ श्रमणावस्था ॥ ३ ॥ (और) केवल अवस्थाको विचार करणा (सो) पदस्थ अवस्था ॥ निरंजनाकार (सो) सिद्धावस्था । तिसकु रूपातीत अवस्था कहतेहै ॥ ※ ॥ (अब छठा त्रिक) तीन दिशा छोडके प्रभूके सामनें निजर रखै । ऊर्ध्व १ ॥ अध २ ॥ तिरछी ३ ॥ दहणी । बाइ । पिछली । निजर नही करै ॥※॥ (अब सातमा त्रिक) तीन वेर धरती प्रमार्जके । उस ठिकाणे चैत्यवंदन करै॥※॥ (अब आठमा त्रिक)॥ ८ ॥ वर्णादिक तीन संपदा ऊ ॥ हरफशुद्ध उच्चारण कर (सो) वर्ण शुद्धि ॥ १ ॥ हरफोंके अर्थपर आलंबन रक्खै (सो) अर्थशुद्धि २ ॥ आलंबन एक जिन प्रतिमाका रक्खै (सो) मन सुद्धि ॥ ३ ॥ ※ ॥ (अब नवमात्रिक) ॥ ९ ॥ तीन मुद्रा करनी ॥ जोग मुद्रा १ ॥ जिनमुद्रा २ ॥ मुक्ताशुक्ति मुद्रा ३ ॥ (इसमें) जोग मुद्रा किसकु कहते है ॥ पद्म कोशाकारै । दोनु हाथ परस्पर अंगुली ।म एजोग मुद्राये सक्रस्तव कहिये १ ॥ काउसग्ग मुद्रा (सो) जिन २ ॥ (और) दोसीपका जोमा तिस आकार हाथ रखना । शुक्तिमुद्रा ३ ॥ इस मुद्रासे प्रणिधान (जय वीयराय)

दशत्रिक) ॥ ※ ॥ प्रणिधान तीन ॥ जिन वंदन प्रणिधान १ ॥ मुनि वंदन प्रणिधान २ ॥ प्रार्थना प्रणिधान ३ ॥ इसमें (जो) जावंति चेइयाइं (इत्यादि) इहसंतो तत्थ संताइ (तक) जिन वंदन प्रणिधान ॥ १ ॥ जावंति केवि साहू (इत्यादि) तिविहेण तिदंम विरियाण (इहा तक) मुनि वंदन प्रणिधान २ ॥ जय वीयरायसें (लेके) आभवम खमा तक । प्रार्थना रूप प्रणिधान ३ ॥※॥ (ऐसें दशत्रिकका पहला द्वार कहा) ॥※॥ (अब पांच अभिगमन साचवणेका दूसरा द्वार कहतेहें) ॥ ※ ॥ सचित्त द्रव्य कुसुमादिक अपनेपास होय उसकु अलग रख देना १ ॥ (और) राज चिन्ह, मुकुट, छत्र, खड्ग, चामर, पादुका, अचित्त वस्तू छोमना । आभूषण प्रमुख पहरया रखना २ । मन एकाग्र करना ३ ॥ एक पट उत्तरासंग करना ४ ॥ जिन बिंब देखतेही (नमो जुवण बंधुणो) ऐसें नमस्कार करना ॥ ५ ॥ ※ ॥ यह दूसरा द्वार कहा ॥ ※ ॥ (अब तीसरा द्वार दो दिशीका) पुरुष दहणी दिशा बेठा । भगवतकों वांदे ॥ स्त्री, वाम दिश बैठके भगवतकु वांदे ॥ ※ ॥ (अब चौथा द्वार तीन अभिग्रह) ॥※॥ अभिग्रह देव वांदणामें कहाहे ॥ (जघन्य) नव हाथ दूर बैठके देव वांदे १ ॥ (मध्यम) नव हाथसें उपरांत बैठके देव वांदे २ ॥ (उत्कृष्ट) ६० हाथ दूर बैठके देव वांदै ३ ॥ (अब पांचमा द्वार चैत्यवंदनका) ॥ ※ ॥ (सो) जघन्य १ ॥ मध्यम २ ॥ उत्कृष्ट ३ ॥ तीन भेद हें (तिहां) णमो अरिहंताण (इत्यादिक कहके) वा । एक दोय गाथाका नमस्कार कहके । शक्रस्तव कहना (ए जघन्य चैत्य वंदन १ । जिस देव वंदनमें स्थापनार्हंत स्तवदंमक । नमोत्थुणसें (लेके) अरिहंत चेइयाण (इत्यादिक संपूर्ण कही) एक स्तुति कहे (सो) ॥ मध्यम चैत्यवंदन (तथा) कोई आचार्य कहै ॥ पांच दंमक सहित । थूई गाथा (४) कहे (सो) मध्यम चैत्यवंदन कहिये ॥ (तथा) विधिपूर्वक शक्रस्तवादि पांच दंमक । जय वीयराय पर्यंत । आठ थुई ए देव वांदै । (सो) उत्कृष्ट चैत्य वंदन कहिये ॥५॥ (अब छठा द्वार पंचांग प्रणिपात करे । दो हाथ दोय गोडा (और) मस्तक (ए) पांच अंग मिलायके जमीनमें लगावे ॥६॥ (अब सातमा

वार ॥ ※ ॥ जघन्यें एक गाथासें लेकर उत्कृष्ट एक सो आठ श्लोक (तथा) काव्यसें प्रनूकी स्तवना करे ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ स्तवना करके आनंदमान ज्ञवो थको अपना घरे आके गृह संबंधी करवा योग्य जो कृत्य अपना आदमीकों कहै (पीछे) धर्मस्थानमें जो गुरूको जोग होय तो अवश्य गुरूकेपास जावे । जाके विनयसंयुक्त पंचांग नमस्कार करें । गुरूकी आशातना टालतो ज्ञवो, यथायोग्य स्थानके बैठके, एकाग्र चित्तसें धर्म अधर्मकी व्यापक- अमृततुल्य जगवानकी वाणी गुरुमुखसें सुणें । बुद्धीका आठ गुण संयुक्त शास्त्रकों धारण करे (यडुक्त) शुश्रूषा श्रवणंचैव । ग्रहण धारण तथा । ऊहापोहोर्थ विग्यान । तत्वग्यानंच धीगुणा ॥ १ ॥ शास्त्र सुणनेंसें सर्व धर्मा धर्मको जाणपणो होता है । (यडुक्त) श्रुत्वा धर्मं विजानाति । श्रुत्वात्यजति डुर्मति । श्रुत्वा ग्यानमवामोति । श्रुत्वा मोक्षंच गछति ॥ १ ॥ उपदेश पूर्ण ज्ञएबाद (प्रथम) आत्म शाखे, तथा देवशाखे पञ्चक्खाण कियो होय (सो फेर) गुरूकेमुखसें पञ्चक्खाण करै । पञ्चक्खाण कियेविगर दातार होय सो ज्ञी तिर्यंचादियोनीमें उपन्न ज्ञवै । तहा जोगजोगवै परतु बंधनमें फसा ज्ञवा रहै । (यडुक्त) न दाता नरकयाति । नतीर्यग्विरतोजवेत् । दयालुर्नायुषाहीनाः । सत्यवक्ता नडु स्वर॰ ॥ १ ॥ तपस्याका फल मोटा है । (यडुक्त) तप॰सर्वाक्ष सारंग । वशी करणवागुरा । कषाय ताप मृद्धीका । कर्माजीर्ण हरीतकी ॥ १ ॥ यद्दूरं यदुराराध्य । यत्सुरैरपिडुष्कर । तत्सर्वं तपसासाध्य । तपोहिडुरतिक्रम॰॥७॥ इसवास्ते यथशक्ति शुद्धनावसें व्रत पञ्चक्खाण धारण करै (पीछे) यथाशक्ति देवगुरुकी वंदना करनेवाले जन याचकादिककों दान देके घर आवै पीछे अपना धर्मोपदेशक गुरूका जोग होय तो शुद्ध आहारादिकका दान देके । अपना नाईबंधवाकेस ...यका उत्तम विधिसें जोजन करै

॥ ※ ॥ अथ जो

॥ ※ ॥ श्लोक ॥ ※

...णानि मुखोनुक्ते । तस्याद्राक्स

...विष्टो निश्चत्र शनैः । स्मृत्वादेवगु

स्वादेवान् समभ्यर्च्य । नत्वापूज्य जनान्मुदा । दत्वादान सुपात्रेभ्यो । भुक्ते भुक्त तदुत्तमम्॥३॥ (तथा) भोजने मैथुने स्नाने । वमने दंतधावने । विण्मुत्रो त्सर्गकालेच ॥ मौनकुर्यान्महामति ॥ ४ ॥ इतने ठिकाणे मौन रखना युक्त है ॥ अब भोजन कोणदिशीमें करणा सो लिखतेहै ॥ अग्निकूण १ नैऋत कूण २ दक्षिणदिशि ३ यह तीन दिशी वर्ज्य है । तथा सुर्यकी उदय वेला (तथा) अस्तवेला । उर ग्रहणकी वखत (तथा) अपणा ज्ञाति स्वजन सबंधियू का जहातक मृतकपणा होय । तहा तक भोजन न करै ॥ औरवतें द्रव्यें भोजनादिकमें कृपणपणू न करे । उर अजाणी थाली प्रमुख भाजनमें । तथा अजाणेके घर भोजन न करे ॥ तथा भोजन करतीवखत । बाल १। स्त्री २। गर्भ ३। गौ ४। यह मोटी हत्याको करणे वालो (तथा) आचार लोप न करणेवालो (तथा) अपणे कुलसें विटंबित भयोग्यको । इतनोंकी पक्तिमें बैस करके भोजन नहि करै ॥ (तथा) मदिरा, मांश, माखण, मधु, पाच जातिके उबर झाडके फल । अनतकाय । सर्व जातीके अजाणे फल । तथा रात्री भोजन, ए सर्वदा त्याग करना चाहिए ॥तथा काचो गोरस छाछदहीमें मुग मोठादि विदल मिला हुवा अन्न। समाभयाअन्न । दोदिन उपरातका दही । यह चीज त्याग करना फल,फूल, पान, उर दूसरा पदार्थ (जो) जीवादिक सहित होय (सो) सब त्याग करे (तथा) अथाणा प्रमुख बावीस अभक्ष्य छांडै । भोजन करता(तथा)वमीनीत करता बहोत देरी न लगावे । अर पाणी पीणा, स्नान करणा, यह दो काम थिरतासें करणा चाहिए॥ भोजनके आदिमें पानी पीना जहर सदृश (तथा) भोजनके अतमें पानी पीना सो शीला शदृश । भोजनके बीचमें पाणी पीना सो अमृत सदृश इससें भोजनके बीचमें जल पीना चाहिये ॥ इस रीतीसें पाणी पीनेका फल जाणना ॥ अजीर्ण होय तो भोजन न करना । जैसा रुचै, तैसा भोजन कालमें करना॥ भोजन करके मुखधोके पान सोपारीसें मुखशुद्ध करै ॥ विवेकी पुरुष रस्ते चालतो थको तंबोल न खावे । आखी सोपारीकूं दातासें न तोडै ॥ भोजन कीएबाद उष्ण काल विगर निद्रा न लेवै । किसवास्तें दिनकू सोणेसें शरीरके विषे रोगोत्पत्ति होय ॥ फेर घरकी शोभाप्रतें देखतो थको । पंडितकेसाथ बातचीत करतो

थको पुत्रादिककू शीखामण देतो थको । सुख समाधीसें होय धर्म पर्यंत घरके विषे रहे । गुणको समूह अपनें वश हें । धनादिक तो भाग्याधीन हें । ऐसी तत्वकी बात जाणनेंवालेके कभी गुणकी हानी न होय ॥ कुलहीन माणस होय लेकिन गुणकरके उत्तमता प्राप्त होय ॥ उत्तम मनुष्यकी कोई भी खाणि नहि हे । सत्वादिक गुण सहित पुरुष (जैसें) राज्यके योग्य होय ॥ तिस तरेसें, श्रावकभी इकवीश गुण करके सहित होणेंसें धर्म राज्यके योग्य होय ॥१॥ अबश्रावकके इकवीश गुण लिखते है ॥ जिसको क्षुद्र हृदय न होय १ । तथा सौम्य होय २ । रूपवत होय ३ । सर्वलोककू वल्लभ होय ४ । क्रूर न होय ५ । ससारसें डरतोरहे ६ । मूर्ख न होय ७ । सदादाक्षिण्यवत होय ८ । लज्जावत होय ९ । दयासहित होय १० ॥ किसीके ऊपर रागद्वेष न करे ११ । सौम्यनिजर होय १२ । गुणकोरागी होय १३। अच्छी धर्मकथा सहित होय १४ । अच्छे परवारवालो होय १५ ॥ ऊमो विचार करणेवालो होय १६ । वृद्धमाणसकू मान्यनीक होय १७ । विनयवत होय १८ । कारानपर उपगारकू जाणनेंवाला होय १९ । परम हित अर्थी होय २० सर्व वात स्याद्वादका भेदयुक्त समझणेवाला होय २१ । यह इकवीश गुण श्रावक होय सो अवश्य धारण करे ॥ फेर जाणकर श्रावक होय सो प्राये राजकथा । देशकथा । स्त्री कथा । भक्तकथा । इस चार कथाको त्याग करे ॥ किसवास्ते कि जिससें अनर्थकी प्राप्ति होय ॥ अच्छे मित्रसाथ भाईसाथ धर्म वातकरे ॥ जिससेती पापकी बुद्धि उत्पन्न होय । उसकी सगत न करे ॥ कोई क्रोधसेती कुछभी कहे तोपिण न्यायमार्गकू न छोडे ॥ जो उत्तम मनुष्य पण्डित होते हे सो किसीकाभी अवगुण कहे नहि (तथा) माता, पिता, गुरु, सेठ, स्वामी, राजादिक, इनोका अवगुण तो अवश्य नहि बोलैं (और) मूर्ख, दुष्ट, अनाचारी, मलीन धर्मनिंदक, कुशीलीया, लोभी, चोर, इतनाकी सगत उत्तम पुरुष नकरे ॥ (तथा) अजाणें माणसकी प्रशसा । अजाणेंक अपणें घरमें रहणें वास्ते स्थान । अजाणें कुलसाथ सगाई । अ[illegible] रखना । अपणेंसें बडेकेसाथ क्रोध । अपणेंसें बडा[illegible] गणीकेसाथ विवाद करणा । अपणेंसें जबरकू नोकर[illegible] धर्म करना ।

व्याजसें लाके दूसरेकूं उधार देना । स्वजनकेसाथ विरोध रखना । दूसरे आदमीकेसाथ प्रीति रखना । धर्मकेवास्ते तारीफी करणेंसें न देना । चाकरकेपास दम्मसें धन लेना । दारिद्र आनेंसें भाई बांधवादि कको आश्रय लेना । अपणे मुखसे अपणी तारीफ करना । आपवात कहे फेर आपहसना । (यह) सर्व अपगुण ग्रहण करणेंसें इस लोक परलोक में वहोत कष्ट भोगवे । इसवास्ते ऊपर कहा सब अपगुणाको त्याग करै ॥ न्यायसें धनपेदा करे । न्यायसें चलणेंवाला । देश विरुद्ध । कालविरुद्ध । कार्यकू त्याग करे ॥ राजाके वैरीकी सगत न करे । वहोत आदमीकेसाथ विरोध न करे ॥ कुल और आचार शील जिसका अपनें वरोवर होय तो उसकेसाथ विवाहादिक करे ॥ अच्छे पाडोसीयाके पास घर लेके बाधवादिक सहित रहे । उपद्रवके ठिकाणेका त्याग करे (तथा) श्रावक योग्य खरच करे । द्रव्यके अनुसार वस्त्रादिक पहरे । लोकनिंदा करे उस कामकूं त्याग करे । देशके आचारें चालतो अपणो धर्म न छोडे । जो अपणें आसरे रहा होय उसको हित करे॥ अपणो वल अने निर्बलपणो जाणे । हित अहितकी वात जाणे ।'पाच इंद्रिय दमन करे । देवगुरुकी विशेष भक्ति करे । यथायोग्यपणें स्वजनकी दीनकी अतिथिकी सेवा करे । शास्त्रकू सुणतो भणतो थको चतुरपुरषके साथ कितनोक वखत गमावे ॥ फेर द्रव्य कमाणेका उपाय करे । मगर जो भाग्यमें होगा सो मिलेगा । ऐसा कहकें निश्चित न रहे । किसवास्ते उद्यम किए विगर भाग्य फलदाई न हो सके । इससे उद्यम जरूर करणा चाहिये । शुद्ध अच्छा व्यापार करता सदैव रहे । खोटा तोल, खोटा मापका त्याग करे । जिसमें पनरै १५ कर्मादान तो श्रावककूं अवश्य त्याग करणा चाहिये (सो लिखतेहे) अगार कर्म १ । वन कर्म २ । शकट कर्म ३ । भाटक कर्म ४ । धरतीफोडन कर्म ५ । दांत कुवाणिज्य ६ । लाख कुवाणिज्य ७ । घृत तेल मद्यादिक कुवाणिज्य ८ । केश कुवाणिज्य ९ । विष कुवाणिज्य १० । वाणीयत्र प्रमुख ११ । वैल समारण कर्ण कवल छेदनादि १२ । असती दुष्ट दासी श्वान मार्जार प्रमुख पापी जीवादिक पोषण कर्म १३ । जमीनमें दव अग्नि लगावण कर्म १४ । सरद्रहतलावादिक शो

पण कम १५। यह पनरे कर्मादान ठोमे ॥ (तथा) लोहखम, महूमाके फूल, मदिरा, मधु, कद, मूल, पान, प्रमुख वस्तु व्यापार करणेकेवास्ते ग्रहण न करे ॥ जो चतुर श्रावक होय सो फागुण माशउपरात । तिल, अलसी गोल, टोपरा, प्रमुख वहोत जीवोंका घात जाण करके चोमासेमें न राखै। गाली (अथवा) पोठीया प्रमुख चोमासेमें न चलावे । (तथा) जीवकी हिसाके कारण खेतीवाली कर्म न करे । वहोत लाभ होय (तोपण) गहणें राखे विगर लोभ करकै किसीकू व्याजवास्ते नाणा उधार नहि देवे । चोरीकी वस्तु मेल न लेवे । सरस निरस वस्तू भेल करके नहि वेचे । चोर साथ, चमाल साथ, धूर्त्त साथ, मलीन अतःकरण वाले के साथ, पापीके साथ, इणोंसें व्यापार नहि करे ॥ अपणी वस्तु बेचता थका मिथ्या न बोले । दूसरेकी वस्तू लेता थका वचन नहि पलटे । जो चतुर पुरुष होय सो विगर देखी वस्तूके साथ साटो न करे । सोनो, रूपो, रत्न परखे विगर नहि लेवे ॥ राजाके तेज विगर अनथ आपदाको नाश न होवे । इसवास्ते राजाकों आसरो लेणो चाहिये । लेकिन स्वाधीनपणे रहे ॥ (तथा) पण्डित, तपस्वी, कवीश्वर, वैद्य, ममका जाण, रसोइ करनेवाला, मत्रवादी, पूजनीक, इतनाकु कोपावणा नहि ॥ द्रव्यको अर्थी द्रव्यपेदाकरणें में वहोत उत्कसहै (मगर) धर्मकू ठोमे नहि ॥ नीचकी सेवाका त्याग करे । जो विश्वासघात करे उसकी सगत न करे । लेना देना करते थके अपणें बोलको लोपन करे । मगर अपणां वचन पाले । जो माणस अपणें वचनमे थिर रहताहै । उसकी प्रतिष्ठा वहोत वधे । पण्डित पुरुष होय सो सर्व वस्तूको नासभी हो जाय (लेकिन) थोमे लाभकेवास्ते अपणें वचनको लोप न करें (अगर) लोप करे तो वसु राजाकी तरेसें दुःख प्राप्त होय। ऐसा व्यवहारके विषे दिवसको चोथो प्रहर गमावै ॥ पीछे व्यालु करणेंके वास्ते अपनें घर जावे । एकासणों, आंबिल, उपवासादिकको, पच्चखाण कियो होय (सो) पडिकमणों करनेंकेवास्ते सध्याकालमें धर्मस्थानके जावे । दिवसके आठमें भाग (याने) चार घमी दिन रहणेंसें भोजन करे । मगर सध्याकी वखतमें भोजन कदापि न करै ॥ आहार १ । स्त्रीसेवा २ । निद्रा ३ । स्वाध्याय ४ । ए च्यार कर्म साझ समय त्याग करे ॥ यह

क्त ॥ चत्वारि खलु कर्मांणि । सध्याकाले विवर्जयेत् । आहार मैथुनं निद्रा । स्वाध्यायच विशेषतः ॥ १ ॥ आहाराज्जायते व्याधि । मैथुनाद्गर्भदुष्टता । भूतपीडा निद्रयास्यात् । स्वाध्यायाद्बुद्धिहीनता ॥ २ ॥ प्रत्याख्यान दुश्च रिम । कुर्यात्कालिकादनु । द्विविध त्रिविधं चापि । चाहार वर्जयेत्समम्॥३॥ अन्होमुखे वसानेच । योद्वेद्वघटिकेत्यजेत् । निशा भोजन दोषज्ञो । विज्ञेयः पुण्य भाजनम् ॥ ४ ॥ करोति विरति धन्यो । यः सदानिशि भोजनात् । सोर्द्ध पुरुषा युषस्य । स्यादवश्य मुपोषितः ॥ ५ ॥ वासरेच रजन्याच । यः खादन्नव तिष्टते । शृग पुच्छ परिभ्रष्टः । स स्पष्ट पशुरेवहि ॥ ६ ॥ उलूक काक मार्जार । गृध्रशवर शूकराः । अहि वृश्चिक गोधाश्च । जायते रात्रि भोजनात् ॥ ७ ॥ नैवाहुतिर्नचस्नान । न श्राद्ध देवतार्चनम् । दानवा विहित रात्रौ । भोजनतु विशेषतः ॥ ८ ॥ इसवास्तै रात्री भोजन श्रावककू करणा उचित नहि । रात्री भोजनका दूषण पर मतमे भीकहाहे ॥ यदुक्त ॥ अस्त गते दिवानाथे । आपोरुधिर मुच्यते । अन्न माश सम प्रोक्त । मार्कंडेय महर्षिणा ॥ १ ॥ यह श्लोक मार्कंड पुराणमें लिखाहे ॥ ऐसें परम तकें वहोतसे ग्रथोंमें रात्री भोजनका दूषण लिखा हे (तो) जैनी नाम धराके रात्री भोजनका विशेष त्याग करणा उचित हे ॥ यह रात्री भोजनका अधिकार कहा ॥ पीछे थोडेसे पाणीसें पग, हाथ, मुख, पखा लके, अपणी आत्माकू धन्य मानतो थको जिनेश्वर देवकी भक्तिसहित पूजा करे ॥ अत्रौ क्रियासहित ज्ञान हे सो मोक्षका कारण हे ॥ ऐसा जा णतो थको साझकी वखत प्रतिक्रमणादि क्रिया करे (जैसें) स्त्री, अन्नं, भोजनके सुखको जाणकार होय (उसकू स्त्री भोगे विगर) भोजनखाए विगर । मात्रनाम जाणनेंसें सुख नहि हुवे ॥ तिसतरे क्रियाविगर ज्ञान फल दायक नहि॥गुरूका सयोग न होनेंसें अपणे घरके विषे स्थापना चार्य रखके, थापना न होय तो नोकरवाली पुस्तकआदि थापन करके । पडिक्कमणू करे । धर्मसें सर्व कार्यकी सिद्धि होती है । ऐसा जाणता थका प्रतिक्रमण समय उल्लघन न करे । (अगर) इसवखतकू उल्लघन करके जापादिक धर्म कर्म करे (तो) सर्व ऊखर क्षेत्रकेविषे धान्य बीणेंकी तरेसें निःफल होय । पडित होय सो विधीकू पूरण करके धर्मकी क्रियाप्रतें करे (परतु) जोदीन

चढावे ॥ ऊपर कसुंबल कपडो बांधे (पीछे) दशदिग्पालके पट्टेऊपर जलका छांटा देके वासक्षेप करे ॥ एकेक दिग्पालके टीकी देके फूल चढायके । एकेक चढावे सूधो नागर बेलको पान चढावे ॥ ※ ॥

॥※॥ अथ दश दिग्पाल पूजा लि० ॥ ※ ॥

॥ ॐ इन्द्राय । सायुधाय । सवाहनाय । सपरिकराय । इह अस्मिन्जंबुद्वीपे । दक्षिण भरतार्द्धक्षेत्रे । अमुकनगरे । अमुकजिनचैत्ये । शांतिपुजा महोत्सवे । आगच्छ २ । बलि गृहाण २ । उदयमभ्युदय कुरु २ स्वाहा ॥※॥ ॐ इन्द्रायनमः ॥ इतिइन्द्रआव्हान पूजा ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

पुर्वदिशे जलचंदनादि अष्ट द्रव्य चढावे ॥ ※ ॥ १ ॥ ॥ ※ ॥

॥※॥ अथ अग्नि दिग्पाल पूजा लि० ॥ ※ ॥

॥※॥ ॐ अग्नये । सायुधाय । सवाहनाय । सपरिकराय । अस्मिन् जंबुद्वीपे । दक्षिण भरतार्द्धक्षेत्रे । अमुक नगरे । अमुक चैत्ये । शांति पूजा महोत्सवे । आगच्छ २ । वलिगृहाण २ । उदय मभ्युदयकुरु २ स्वाहाः ॥ ॐ अग्नयेनम ॥ २ ॥※ ॥ ॥ ※ ॥

॥※॥ अथ यमदिग्पाल पूजा लिख्यते ॥※॥

॥※॥ ॐ यमाय । सायु० । सवा० । सपरि० । अस्मिन् जंबु० । दक्षि० । अमुक० । अमु० । शांतिपूजा० । आ० । वलिगृहाण २। उदय म० । स्वाहा ॥ ※ ॥ ॐ यमायनम ॥ ※ ॥ दक्षिण दिशकीतरफ यमदिग्पालकी पूजा करै ॥ ३ ॥ ※ ॥ इति ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥※॥ अथ नैऋत दिग्पालपूजा लि० ॥※॥

॥ ※ ॥ ॐ नैऋताय । सायु० । सवा० । सपरि० । अस्मिन् जबुद्वीपे० । शांतिपूजा० । आगच्छ २। वलि० । उदय० कुरु २ स्वाहा ॥ ॐ नैऋतायनमः ॥ नैऋत कुणकीतरफ अष्ट द्रव्यचढावे ॥ इति ॥ ४ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ वरुणदिग्पाल पूजा ॥ ※ ॥

॥※॥ ॐ वरुणाय । सायु०। सवा०। सप०। अस्मिन् जबुद्वीपे० शांति पूजा० । आ० । वलि० । उदयम० । स्वाहा ॥ ॐ वरुणायनमः ॥ पश्चिम दिशाकीतरफ अष्टद्रव्य चढावे ॥ ५ ॥ इति ॥ ॥ ※ ॥

॥※॥ अथ वायव दिग्पाल पूजा ॥※॥

॥※॥ ॐ वायवे । सायु० सवा० । सप० । अस्मिन् जंबुद्वीपे० । शाति पूजा० । आ० । वलिगृहाण २ । उदयम० । स्वाहाः ॥ ॐ वायवे नम ॥ वायवकूणकीतरफ अष्टद्रव्य चढावे ॥ ६ ॥ इति ॥ ※ ॥

॥※॥ अथ कुबेर दिग्पाल पूजा ॥※॥

॥ ※ ॥ ॐ कुवेराय । सायु० । सवा० । सप० । अस्मिन जवुद्वीपे । दक्षिणभर० । शाति० । आ० । वलि० । उदय मभ्युदय कुरु २ स्वाहाः ॥ ॐ कुवेरायनमः ॥ उत्तरदिशितरफ अष्टद्रव्य चढवे ॥ ७ ॥ ※ ॥

॥※॥ अथ ईशान दिग्पाल पूजा ॥※॥

॥ ※ ॥ ॐ ईशानाय । सायु० । सवा० । सप० । अस्मिन्० । दक्षिण०। अमुक० । अमुक चैत्ये । शातिपूजा० । आगच्छ २। वलि० २ । उदय मभ्युदय कुरु २ स्वाहाः ॥ ॐ ईशानाय नमः ॥ ईशानकूणकीतरफ जल चदनादि सर्व द्रव्य चढावे ॥ ८ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ ब्रह्मदिग्पालपूजा ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ ॐ ब्रह्मणे । सायुधाय । सवा० । सप० । अस्मिन्० । दक्षिणभ० । शाति० आ० २। वलि० उदय मभ्यु० स्वाहाः ॥ ॐ ब्रह्मणे नमः ॥ उर्ध्वदिशा तरफ अष्टद्रव्य चढावे ॥ ९ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ नागदिग्पालपूजा ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ ॐ नागाय । सायु० । सवा० । सप० । अस्मिन जवु० । शा-तिपूजा० । आगच्छ २। वलि० । स्वाहाः ॥ ॐ नागायनमः ॥ अधोदिशि अष्टद्रव्य चढावे ॥ १० ॥ ऊपर कसुवल वस्त्र मोलीसें वाधे (पीछे) ॐ दशादिग्पालायनमः ॥ ऐसा कहके, यथाशक्ति रोकमी द्रव्य सहत नागरवेल का पान आदि सर्व द्रव्य चढावे । पछाके, दश दिशाकी तरफ १० दीपक फूलवत्ती घमी धरके जगावे । (वा) एक दीपक आगे जगा कर रखे ॥ ॥ ※ ॥ इति दशादिग्पाल पूजनविधिः ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ नवग्रह पूजन विधिः ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ ॐ नमो आदित्याय । सायुधाय । सवाहनाय । सपरिकराय ।

अस्मिन् जंबुद्वीपे । दक्षिण भरतक्षेत्रे । अमुक नगरे । अमुक चैत्ये । शांतिपूजा महोत्सवे आगच्छ २। बलिपूजा गृहाण २ उदय मभ्युदय कुरु २ अत्रपीठेतिष्ट २ स्वाहा: ॥ ॐ सूर्यायनमः ॥ ऐसा कहके जलचंदनादि अष्ट द्रव्य चढावे ॥ इति सूर्यपूजा ॥ १ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ चंद्रपूजा ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ ॐ चंद्राय । सायुधाय । सवाहनाय । सपरिकराय । अस्मिन् जंबु० । दक्षि० । शांतिपूजा० आ० २ । बलि०। अत्रपीठे तिष्ट २ । उदयमभ्यु० स्वाहा: ॥ ॐ चंद्रायनमः ॥ ऐसा कहके जलचंदनादि अष्टद्रव्यसें चंद्रमाकी पूजा करे ॥ ※ ॥ २ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ मंगलपूजा ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ ॐ नमो भोमाय । सायु० । सवा० । सप० । अस्मिन् ज० । दक्षि० । अमु०। शांतिपूजा महोत्सवे । आगच्छ २ । बलि० २ । अत्रपीठे २ । उदय०। स्वाहा: ॥ ॐ भोमायनम ॥ मंगलकी पूजा करे ॥ ३ ॥

॥ ※ ॥ अथ बुधपूजा ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ ॐ नमो बुधाय । सायु०। सवा०। सप०। अस्मिन् ज०। दक्षिण०। अमुक०। शांतिपूजा महोत्सवे। आगच्छ २। बलि०२। अत्रपीठे तिष्ट २ । उदय०। स्वाहा ॥ ॐ बुधायनमः ॥४॥ ऐसा कहके बुधकी पूजा करे॥

॥ ※ ॥ अथ बृहस्पति पूजा ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ ॐ नमो बृहस्पतये । सायु० । सवा० । सप० । अस्मिन्० । शांति० आ० २। बलि० २। अत्रपीठे०२। उदय० स्वाहा: ॥ ॐ बृहस्पतयेनमः ॥ ऐसा कहके बृहस्पतीकी पूजा करे ॥ ५ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ शुक्रपूजा ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ ॐ नमो शुक्राय । सायु०। सवा० । सप०। अ० दक्षिण० अमु०। शांतिपूजा० । आ० । बलि० २ । अत्रपीठे०। उदय मभ्युदय कुरु२ स्वाहा ॥ ॐ शुक्रायनमः ॥ ६ ॥ इति ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ शनिपूजा ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ ॐ नमो शनिश्चराय । सायु० । सवा० । सपरि० । अस्मिन्० ।

दक्षि०। अमु०। शांति०। आ० २। बलि०। अत्रपीठे० २। उदय मभ्युदय कुरु २ स्वाहा ॥ ॐ शनिश्चरायनमः ॥ इति ॥ ※ ॥

॥※॥ अथ राहु पूजा ॥※॥

॥ ※ ॥ ॐ नमो राहवे सायु०। सवा० । सपरि० । अस्मिन्० । दक्षि० अमुक० । शांतिपूजा० । आ० २ । बलि० २ । अत्रपीठे० २ । उदय० स्वाहाः ॥ ॐ राहवेनमः ॥ ८ ॥ इति ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥※॥ अथ केतूपूजा ॥ ※॥

॥ ॐ नमो केतवे । सायु०। सवा०। सप० अस्मिन्० । दक्षि० । अ०। शांति०। आगच्छ २। बलि० २। अत्रपीठे० । उदय० स्वाहा ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ इसीतरै क्रमसें भगवानके वामपासे पट्टापर नवग्रहकी स्थापना करे ॥ ऊपर कसुंबल वस्त्र मोलीसें बांधे (पीछे) नागरवेल पान आदि सर्व द्रव्य (तथा) शक्ति मुजब रोकड नाणो ऊपर भेट करे (ऐसा कहे) ॐ नवग्रहायनमः ॥ चारु तरफ नवदीपक (वा) एक दीपक धरे ॥ ※॥ इति नवग्रह पूजन थापन विधि ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ इसीतरै, अन्य मंगल प्रतिष्ठादिकमें (जब) दशदिग्पाल, नवग्रहकी थापना पूजा करणी होय (तो) शांतिपूजाके ठिकाणें, जो पूजादि उच्छव होय। उसीका नाम लेकर पूजन थापन करावे ॥ विशेष विधि जो होय । सो गुरुके मुखसें समझके करावे ॥ (पीछे) शांतिकारकके गृहसें शुद्ध जलसें सधव स्त्रीके हाथसें किया हुवा पांचु रंगके धानका बाकुला (तथा पांचु रंगकी खजली, गुलगुला, खीर, दहीको करबो, मालपूवा, पांच रंगका लाडू, (इत्यादि) उत्तम २ खाद्यवस्तु मंगाके । एक परातमें सब द्रव्य भेला करै(और)घृत, खांड, अत्तर, गुलाबजल, पांच वर्णा फूल, आदि सुगंधी द्रव्य मिलाके बलबाकुल तैयार करै ॥ (पीछे) गुरु, वासक्षेपकी मुठी तीन वेर मंत्रसें मंत्रके, तीनवेर बलबाकुल ऊपर वाशक्षेप करै ॥ (वासक्षेप मंत्र)

॥ ※ ॥ ॐ ह्रां ह्रीं सर्वोपद्रवं बिंबस्य रक्ष २ स्वाहा ॥ ॐ णमो अरिहंताण । ॐ णमो सिद्धाण । ॐ णमो आयरियाण । ॐ णमो उवज्झायाण । ॐ णमो लोए सव्वसाहूण । ॐ णमो आगास गामीण । ॐ णमो चारण लद्धीण । जे इमे किंनर । किंपुरस । महोरग । गरुड । गंधर्व । जक्ख ।

रक्खस । पिशाञ्च । भूअ । भाइण प्पभइ्इ । जिणघर निवासिणो । सन्निहिया । तेसंवे विलेवण धूव पुप्फ फल वइवसणाहिं । वलिपम्छिंता । तुठिकरा भवतु। पुठिकरा, सतिकराभवतु । सव जण कुर्वंतु । सवजिणाण संहाणप्रभावउ । पसन्नभावतणे । सव्वत्थ रक्खतु कुर्वंतु । सव दुरियाणी नासतु । सवासिव मुवसमतु । सति तुठि पुठि सिव सत्थयण कारिणो भवतुस्वाहा ॥ इस मत्रसें तीनवेर वासक्षेप करके वलवाकुलकों शुद्ध करै ।(पीछे) आधा वलवाकुल, दूसरी परातमें विसर्जनके निमत्त पट्टेपर वस्त्रसें ढाकके रख देवे । आधात्वलवाकुल लेके घरके (तथा) चैत्यकेऊपर ११ स्नात्रिया शुद्ध होके जावे । (जिसमें) प्रथम विनयवत श्रावक चोटीका केश खुला करके वलवाकुल दोनु हाथमें लेके, पूर्व दिशाकी तरफ खमा रहै १॥ दूशरो केशरकी कटोरी २। तीशरो फूलकी चगेरी ३। चोथो आरीसो ४। पाचमो धूपदानो ५। छठो दीपक ६। सातमोचामर ७। आठमो घटा ८। नवमो जलको कलश ९। दशमो वलिवाकुलकीथाली १०। इग्यारमो मगल वाजित्र ११। इसी तरेंसें सव स्नात्रिया एकेक दिशतरफ खमार रहै । (जव) शुद्ध हरफ उच्चारण करनेवाला पण्डित गुरू, जो दिग्पालकी पूजा वोलचूके (तव) क्रमसें जलवाला, जल, केशर, फूल, वलवाकुल चढावे । चामरकरे । काच देखावे । वाजित्र वजावे । इत्यादि ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥※॥ अथ दशदिग्पाल आव्हान मंत्र ॥※॥

॥※॥ ऐरावतः समारूढः । शक्र पूर्वदिशिस्थितः । सघस्य शातयेसोस्तु वलिपूजा प्रयच्छतु ॥ १ ॥ ऐसा कहके पूर्वदिशाकीतरफ जलचदनादि वलवाकुल चढावे ॥ १ ॥ (अग्निकूणके सन्मुख) ॥ सदावन्हि दिशोनेता । पात्रको मेषवाहन । सघस्य शातिये सोस्तु । वलिपूजा प्रयच्छतु ॥ २ ॥ ऐसा कहके वलवाकुल चढावे ॥ (दक्षिण दिशाकीतरफ) दक्षिणस्या दिशःस्वामी । यमोमहिषवाहन' सघस्य० । वलि० ॥ ३ ॥ वलवाकुल चढावै । वाजित्रवजावे ॥ ४ ॥ (नेऋत कूणकीतरफ) ॥ यमापरातरालोको । नैऋत. शिववाहन' । सघस्य०। वलि० ॥ ४ ॥ (अथ पश्चिमदिशि) ॥ यः प्रतीची दिशोनाथ' । वरुणो मकरस्थितः । सघस्य० । वलि० ॥५॥ (अथ वायवकूण) हरिणो वाहनयस्य । वायव्याधिपतिर्मरुत् । सघस्य० । वलि० ॥ ६ ॥ (अथ

उत्तरदिशि) निधान नवकारूढ । उत्तरस्या दिशिप्रभु । सवस्य० वलि० ॥ ॥ ७ ॥ (अथ ईशानकूण) सितेवृषेधिरूढश्च । ईशानाच दिसोविभुः । स घस्य० । वलि० ॥ ८ ॥ (अथ अधोदिशी)॥ पातालाधिपतिर्योस्तु । सर्व दा पद्मवाहनः । सवस्य० । वलि०॥ ९ ॥ (अथ ऊर्द्धदिशि) ॥ ब्रह्मलो क विभ्नोयस्तु । राजहस समाश्रितः । सघस्य० । वलि० ॥ १० ॥ ऐसा कहके, ऊर्द्धदिशिकों जलचदनादि वलि चढावै ॥ ※ ॥

इति दशदिग्पाल आह्वान वलवाकुल देनेकी विधिः ॥ ※ ॥

॥※॥ (पीछे) कलशके भीतर श्रीशातिनाथ स्वामीकी प्रतिमा निश्चल पणें रक्खे । पचरत्नकी पोटलीरक्खे । केशर पुष्पादिकसे कलशकी पूजा करे । गुरू वासक्षेप करे। तिसकेवाद कलशके आगे । कुशमाजली १। लवण उतारण २। पहरावणी ३। मगलदीप ४। करे । मगलदीपकमें मोलीकी वटी घृत ऐसा रक्खे । कि । शातिपूजा पूरण होय उहातक तो अवश्य अखंम रहे (पीछे) चतुर्विध सघसहत गुरू, इरियावही पमिक्कमे । चारनोकारको कावसग्ग करके, लोगस्स कहे ॥ वेठके, दहिणो गोमो धरतीपर रक्खे । मा वोगोमो नम्रीभूत करके, चैत्यवदन करै । नमोत्थुण० कहके अरिहत चेइ याणं०। वदणवत्तिया० अन्नत्थु०। एक नवकारको कावसग्ग करे । नमो र्हत् सिद्धा० कहके । थुईकी गाथा कहे (यथा) ॥ यदङ्घि नमना देव । देहिनः सतिसुस्थिता । तस्मै नमोस्तु वीराय । सर्वविघ्न विघातिने ॥ १ ॥ लोगस्स० वदन० अनत्थू० कहके १ नवकार० ॥ दूजीथूई कहे ॥ सुरपतिनत चरण युगा । नाभेयजिनादि जिनपती नौमी । यद्वचन पालनपराः । जलाजलिं ददतु दुःखेभ्यः ॥ २ ॥ इहा पुक्खरवरदी० । वदनवत्तिया० कहके काउसग्ग करे ॥ तीसरी स्तुति कहे ॥ वदति वदारु गणाग्रतो जिना । सदर्थतो यद्रच यति सूत्रतः । गणाधिपास्तीर्थं समर्थ नक्षणे । तदगिना मस्तु मतनमुक्तये ॥ ३ ॥ इहा । सिद्धाण वुद्धाण०। अनत्थू० कहके १ नवकारको काउसग्ग करे ॥ चौथी स्तुती कहे (यथा) शक्रःसुरा सुरवरैः सहदेवताभिः । सर्वज्ञ शासन सुखाय समुद्यताभिः । श्रीवर्द्धमान जिनदत्त मतिप्रवृत्तान् । भव्यान् जनाः भवतु नित्य ममगलेभ्यः ॥ ४ ॥ (पीछे) वेठके, नमोत्थुण० कहके खमा उवे ॥ श्रीशातिनाथ देवाधिदेव आराधनार्थं करेमि काउसग्ग ॥ वंदन

त्तिया०। अन्नत्थू० कहके १ नव०॥ रोग शोगादिभिर्दोषै। रजिताय जितारये। नमः श्रीशांतये तस्मै। विहितानत शांतये॥ ५॥ (ततः) श्रीशांति देवता निमत्त करेमि०। अन्नत्थू० कहके का०॥ श्रीशांतिजिन भक्ताय। भव्याय सुखसंपद। श्रीशांतिदेवता देया। दशांति मपनीयते॥ ६॥ (ततः) श्रीश्रुतदेवता निमत्त०॥ सुवर्णशालनी देयात् द्वादशांगी जिनोद्भवा। श्रुतदेवी सदामह्य। मशेष श्रुतसंपदं॥७॥ (ततः) श्रीभुवनदेवता निमित्त०॥ चतुर्वर्णाय सघाय। देवीभुवन वासिनी। निहत्य दुरितान्येषा। करोतु सुखमक्षत॥८॥ (तत श्रीक्षेत्रदेवतानिमित्त क०) यासाक्षेत्रगतास्संति। सा यवःश्रावकादयः। जिनाग्या सा रय तन्था। रक्षतु क्षेत्र देवता॥९॥ (ततः श्रीअंबिका देवता निमत्त क०) अवानिहित मिवामे। सिद्धबुद्ध समन्विता। सिते सिहे स्थितागौरी। विननोतु समीहित॥ १०॥ (ततः श्रीपद्मावती देवता निमित्त क०) धराधिपतिपत्नीया। देवी पद्मावती सदा। क्षुद्रो पद्रवतःसामा। पातुफुल्लत्फणावली॥ ११॥ (ततःश्रीचक्रेश्वरी देवता निमित्त क०)। चंचश्चक्रवराचारु। प्रवालदलसन्निभा। चिरचक्रेश्वरीदेवी। नदता निरभाचमः॥ १२॥ (ततः श्रीअच्छुप्ता देवता निमित्त०) खड्गखेटक कोदंड। बाणपाणिस्तडित् द्युतिः। तुरग गमना च्छुप्ता। कल्याणानि करोतुमे॥ १३॥ (ततः श्रीकुबेर देवतानिमत्त०) मथुरापुरी सुपार्श्वं। श्रीपार्श्वं स्तूप रक्षिका। श्रीकुबेरा नगरारूढा। सुताकावतुवोभयात्॥ १४॥ (तत श्रीब्रह्मदेवता निमत्त०) ब्रह्मशांति समापाया। दपाया ह्रीरसेवकः। श्रीमत्सत्य पुरेसत्या। येनकीर्ति कृता निज.॥ १५॥ (तत श्रीगोत्र देवता नि०) यागोत्र पालयत्येव। सकला पायतःसदा। श्रीगोत्रदेवतारक्षा। शकरोतु नता गिरा॥ १६॥ (तत श्री शक्रादि समस्त देवता नि०) श्रीशक्रप्रमुखायक्षा, । जिनशासनसंस्थिताः। देवादेव्यस्तदन्येपि। संघरक्षत्व पायत॥ १७॥ (ततःश्रीसिद्धायिका श्री शासन देवता नि०) अन्नत्थू० च्यारलोगस्सकोका० स्तुति कहे। श्रीमद्विमानमारुढा। यक्ष मातंग सेविता। सामा सिद्धायिका पातु। चक्रेचापेषु धारणी॥ १८॥ लोगस्स०। कहके बैठे। चैत्यवंदन०। नमोत्थुण०। जयवीयरायपर्यंत कहे॥२॥ इसी तरे १८ स्तुतीसे देववांदे॥ (पीछे) सुंदर अगोपागवाले। सुशीलस्त्री पुत्रादिक सहित। विवेक गुणधारक।आठ स्नात्रिया मुख

कोश बांधके, तीन तीन नवकार गुणें (जिसमें) दो स्नात्रिया दो नालीवाला कलश हाथमें लेके मटकाके दोनु तरफ खमा रहे ॥ एक स्नात्रियो धूप खेतो रहे ॥ १ स्नात्रियो फूल, चंदन, वासक्षेप, चढातो रहे ॥ दो स्नात्रिया लोटामें जल भरके दोनु तरफ धारा देनेंवाला कलशानें पूरता रहे । दोजणा दोनुतरफ चामर ढालता रहै ॥ (प्रथम) गुरू आदि, सकलसंघ सात सात नवकार गुणें ॥ स्नात्रिया एकेक नवकार गुणके एकेक धारा देवे। ऐसें सात धारा दे चूके (तब) गुरू, मधुरस्वरें स्पष्ट अक्षरोंसें । नमो र्हत् सिद्धाचा र्यो० कहके ॥ अजितशांति प्रमुख साते स्मरण गुणें । (पीछे) भक्तामर, बमीशांति, छोटी शांति, गुणें ॥ (तथा) सकलसंघमें जिसकों साते स्मरण शांति शुद्ध आती होय । जब तो गुरूकेसाथे, अपनें मनमें साते स्मरण शांतिगुणें (और) नहि आवे सो सर्वसंघ नवकार मंत्र गुणता रहै ॥ साते स्मरण(तथा)शांति गुणें जहांतक अखंम ऊपरले छोटे कलशेमें धारा देता रहै । छीककोई न करै । कोई आपसमें अन्य संसारी कथा न करै ॥ साते स्मरणादि संपूर्ण सर्व गुणचूके (पीछे) तीन तीन नवकार गुणके कलश धरै (पीछे) नीचेका कलशमेंसें । जिन प्रतिमाकों निकालके अङ्गीतरे अंग लूणा करके केशर पुष्पादिकसें पूजा करै ॥ भगवानकी अङ्गी अंगीरचना करावे । नानाप्रकारका नैवेद्यफल चढाके । आरती उतारै । मंगलदीप करे ॥ पीछे शांतिजल सर्वसंघ लगावे । घरमें लेजाके छाटे । शांतिपूजाकी मोली गुरूकेपास लेके राखमी बांधे ॥ (इससे) संपूर्ण संघमें नगरमें, देशमें, मरी आदिक सर्व रोग दोष दूर होके शांति होय । अनेक प्रकारसें ऋद्धी वृद्धी सुख सौभाग्यकों प्राप्त होय ॥ (पीछे) जो आधा बलिबाकुल परातमें रखा हुवा है । सो लेके पूर्ववत् स्नात्रिया गुरूकेसाथ मंदरऊपर जाके दश दिग्पालकों विसर्जन करावै ॥ ✻ ॥ ॥ ५ ॥

॥ ✻ ॥ अथ दशदिग्पाल विसर्जन करनेकी विधि पूर्ववत् जाणनी इतना विशेष है (कि) आगच्छ २ के ठिकाणें गच्छ २ कहै ॥०॥

॥ ✻ ॥ (यथा) ॐ नमो इंद्राय । पूर्वदिग् अधिष्टाय काय । ऐरांवण वाहनाय । सहस्र नेत्राय । वज्रायुधाय । सपरिकराय । अस्मिन् जंबुद्वीपे अमुक नगरे । अमुक मंदरे । अमुक महोत्सवे । सर्वोपद्रवाद्धलिरक्ष २ गच्छ

गच्छ स्वाहा ॥ पूर्वदिशाकीतरफ ॥ ॐ इंद्रायनमः ॥ १ ॥ (अग्निकूणे) ॥ ॐ नमो अग्निमूर्त्तये । शक्तिहस्ताय सायु०। सवा०। सप० । अस्मि० अमु० । सर्वोपद्रवाद्धलिरक्ष २ । गच्छ२ स्वाहाः ।। इति ॥(दक्षिणदिशे) ॥ ॐ नमो यमाय । दक्षिण दिगधिष्टायकाय । महिषवाहनाय । दंड आयुधाय । कृष्ण मुर्त्तये । सायु०। सप०। अस्मिन्० । सर्वोपद्रवाद्धलिरक्ष २ गच्छ २ स्वाहा. ॥ ३ ॥ इति ॥ (नेऋतकुणे)॥ ॐ नमो नैऋताय । खङ्गहस्ताय । सायु० सवाहनाय । सप०। अस्मि० । अमु० । सर्वोपद्रवाद्धलिरक्ष २ गच्छ २ स्वाहाः ॥ ४ ॥ इति ॥ (पश्चिमदिशे) ॥ ॐ नमो वरुणाय । पश्चिमदिगधिष्टायकाय । मकरवाहनाय । सायु० । सप०। अस्मिन्०। अमु०। सर्वोपद्रवा०। गच्छ २ स्वाहाः ॥ ५ ॥ (वायवकूणे) ॐ नमो वायवे । वायवाधिपतये । ध्वजहस्ताय । हरिणवाहनाय । सा० सप० । अस्मिन्० । अमु० । सर्वोपद्रवा० गच्छ २ स्वाहा ॥ ६ ॥ इति ॥ (उत्तरदिशे) ॐ नमो धनदाय । उत्तरदिगधिष्टायकाय । नरवाहनाय । गदाहस्ताय । सप० । अस्मिन्० । अमु०। सर्वोपद्रवा० २ । गच्छ० २ स्वाहाः ॥ ७ ॥ इति ॥ (ईशान कूणे) ॥ ॐ नमो ईशानाय । त्रिशूल हस्ताय । इशानाधिपतये । वृषभवाहनाय । सप० । अस्मि० । अमु० , सर्वोपद्रवाद्धलिरक्ष २ गच्छ २ ॥ स्वाहा ॥ ८ ॥ इति ॥ (ऊर्द्धलोके) ॥ ॐ नमो ब्रह्मणे । राजहंसवाहनाय । ऊर्द्धलोकाधिष्टायकाय । सायु० । सप०। अस्मि०। अमु० । सर्वोपद्रवा० गच्छ० २ स्वाहा ॥ ९ ॥ इति ॥ (अधोलोके) ॥ ॐ नमो नागाय । पातालनिवासाय । पद्मवाहनाय । सायु० । सप०। अस्मि०। अमु०। सर्वोपद्रवाद्धलिरक्ष२ गच्छ२ स्वाहा ॥ १० ॥ इसीतरै क्रमसें दशदिग्पाल विसर्जन करै ॥ ※ ॥ (पीछे) नीचे आकर दिग्पाल नवग्रहादि सर्व देवताकों श्लोक पढके विशर्जन करै ॥ (यथा) शक्राद्या लोकपाला दिशि विदिशि गता, शुद्ध सद्धर्मसक्ता । आयातास्नात्रकाले कलुषहतिकृते तीर्थनाथस्य भक्त्या । न्यस्ताशेषा पदाद्या विहित शिवसुखा स्वास्पद साम्प्रतते । स्नात्रे पूजामवाप्य स्वमतिकृत मुदो यातु कल्याणभाजः ॥ १ ॥ आग्याहीन क्रियाहीन । मंत्रहीनचयत्कृत । तत्सर्व क्षमृतदेव । प्रशीद परमेश्वरः ॥ १ ॥ आव्हान नैवजानामि । नैवजानामि पूजन ॥ विसर्जन नैवजानामि । त्वमेव शरण ममः ॥२॥ (पीछे) यथा

शक्ति ग्यानपूजा, गुरूपूजा, साह्मीवात्सल्य करे ॥ जैनयाचकानें दानदेवै ॥ इति शांतिकपोष्टिक पूजा विधिः ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥※॥ अथ पाठक बालचंदजी कृत पंच कल्याणक पूजा ॥※॥

॥ ※ ॥ तत्र प्रथम च्यवन कल्याणिक पूजा ॥※॥

॥ (दूहा) ॥ ज्योतिरूप जगदीशनु, अद्भुत रूप अनूप ॥ प्रवचन प्रभुता प्रगट पण, जय जय ज्योति सरूप ॥ १ ॥ ※ ॥ चौवीसे जिनवर नमी, पंच कल्याणक रूप ॥ शासन नायक वरणवुं, दर्शन ज्ञान सरूप ॥ २ ॥ ※ ॥ कल्याणक उत्सव करे, इंद्रादिक जे देव ॥ ते भावे भविजन करे, श्रीजिनवरनी सेव ॥ ३ ॥ ※ ॥ ॥※॥

॥ राग सरपदो ॥ जोति सकल जगदीशनी ॥ हारे जगदीशनी ए ॥ चार निक्षेप प्रमाण॥नाम जिनादिक जिन कह्या, आगममाहि प्रधान ॥ १ ॥

॥गाथा॥ नाम जिणा जिण नामा। ठवण जिणा उ जिणंद पडिमाउ॥ दव्वजिणा जिण जीवा। भाव जिणा समवसरणत्था ॥ १ ॥ ※ ॥

॥ ढाल तेहीज ॥ विन कारण कारज नही, हा रे का० ए ॥ ए सव लोक प्रसिद्ध ॥ भाव निक्षेप प्रधानता। कारज रूपें सिद्ध ॥१॥ विण आकारें द्रव्यनो ॥ हा ॥ द्र० ए ॥ न हुवे थापन सिद्ध ॥ नामविना आकारनो, प्रगट पणे नवि बुद्ध ॥२॥ नामादिक कारण सही ॥ हा०॥का०ए ॥ इन विन भाव न होय ॥ भाव विशुद्धें जिनतणी। पूज करो सहु कोय ॥३॥ व्यवहारें निश्चय लहे ॥ हा० नि० ए ॥ कारण कारज होय ॥ पावम्ह शाला क्रम करी, सौध चढे सहु कोय ॥ ४ ॥※ ॥

॥(दूहा)॥ ज्ञानकला कलितातमा। लोकालोक प्रकाश ॥ व्यापकभावें थिर रह्यो। शुद्ध विकास विलास ॥ १ ॥ ※ ॥

॥ राग सारग ॥ हाहो रे देवा, जोति सकल जिन राजनी। सहु लोका लोक प्रकाश ए ॥ हाहो रे देवा, राजत श्रीजिनराजजी। वाणी प्रवचन शुभ वास ए ॥ १ ॥ हाहो रे देवा, मात नमु नित्य शारदा। गुरुपच कल्याणक सार ए ॥ हाहो रे देवा, तीर्थंकरना वरणवु। गुण शास्त्र परपर धार ए ॥२॥

॥ (दूहा) ॥ शासन नायक जग धणी। त्रिभुवन पति परमेस ॥ पर उपगारी प्रभु तणा, गुण गावत सहु वेस ॥ १ ॥ ※ ॥

॥ ढाल तेईसीज ॥ हाहोरे देवा, वीश थानक करि सेवना, बाध्यु जिन नाम प्रधान ए ॥ हाहो० दिव्य अमर सुख अनुभवे । प्राये प्रभु पुण्य प्रमाण ए ॥ १ ॥ हाहो०॥ निरमल तर वर ज्ञानना । धारक कारक शुभयोग ए॥ हाहो० ॥ शब्द वरण रस गधना । शुभ फरस तणा वर भोग ए ॥ २ ॥ हाहो०। शाश्वत सिद्धायण तणा । नित उत्सव करत सुरग ए ॥ हाहो०॥ बालचद पाठक कहे । नित मगल होत सुचग ए ॥ ३ ॥ ॥

॥(दूहा) ॥ पुण्य पूर्व भव प्रभुतणो । प्रगट्यो प्रगट प्रभाव ॥ सुरकुमरी नित प्रति करे । नाटक नवनव भाव ॥ १ ॥ ॥

॥॥ पूर्व मुख सावर्न ॥ ए देशी ॥॥

॥ शुद्ध निज दर्शनें, करिय गुणकर्षना । जिनचरण सेवना विविधकारी ॥ हे अइयो विविधकारी ॥ ए आ०॥ एक निजधर्ममय परमलय लीनता । दीनता सकल तज रज निवारी ॥ हे अई० ॥ र० ॥ १ ॥ आत्मगुण अतरातमप णे वृत्तिता । तजिय बहिरात्मजिन आण धारी ॥ हे अ० ॥ आ० ॥ २ ॥ शुद्ध सम्यक्तगुण संपदा निज लही । सहीय शुभ धर्म रुचि भास सारी ॥ हे अ० भा० ॥ ३ ॥ विविधमणि रत्ननी जोति झगमग जगे, चद्रिका भास भासित कारी ॥ हे अ० भा० ॥ ४ ॥ प्रवर कुल शुद्ध राजन्य प्रमुखें मुदा ॥ आयुकर बध नर भव सुधारी ॥ हे अ० भ० ॥ गर्भ अवतार निज मात उदरें लहे । बाल शुभ लग्न शुभ योग चारी ॥ हे अ०॥ शु० ॥ ५ ॥

॥ ॥ दोहा ॥ ॥

॥ शुभदिन शुभ मुहूरत घडी । शुभ उच ग्रह चार ॥ देवलोक चवि प्रभु लहे । मातु उदर अवतार ॥ १ ॥ सुंदरवर प्रासाद महि, मध्यनिशा जिनमात स्वप्न देख सुख सेजमें । जाग्रत अति हरखात ॥ २ ॥॥

॥ राग काफी ॥ जिनजी भजो भवि प्यारा । या तें आनद अधिक अ पारा ॥ जि०॥ १ ॥ सुख सेज सूती जिन माता । देखे सुपना मनभाता ॥ चित्त हरखित भय तिण वारा ॥ जि०॥ २ ॥ शुचि गज वृष सिंह मनुहार, लक्ष्मी दाम शशी दिनकार ॥ ध्वज कुंभ पदमसर सारा ॥ जि०॥ ३ ॥ वर क्षीर समुद्र विमान । रयणोच्चय मेरुसमान ॥ निर्धूम पावक सुखकारा ॥ जि० ॥४॥ द्विजधान्य मगल प्रियकारी । जाणी अर्थ हृदय क्रमधारी । शुभसूचक

पुण्य संन्नारा ॥ जि०॥ ५ ॥ सुदर वर सखियन सगैं । करिधर्म जागरिकारगैं, निशि शेष गई तिणवारा ॥ जि० ॥ ६ ॥ ए नणी एक पुष्पमाला चढावे ॥

॥❀॥ दोहा ॥❀॥

॥ परम पुरुष परमातमा, नावी नगवन नास ॥ प्रवचन प्रगटीकरण प्रनु पुण्य तणे सुप्रकाश ॥ १ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥❀॥ पूजा सतर प्रकारी ॥ ए देशी ॥❀॥

॥ आज आनंद वधाई, नई त्रिनुवनमें ॥ चौद सुपन सूचित गुण जेहना, अवतरे माता उदरनमें ॥ आ० ॥ १ ॥ नृपति सदन बक्र सुपन शास्त्र विध, अर्थ विचार करि निज मनमें ॥ पुत्र रतन फल वचत नृपति कुल, परम कल्याण होत जनजनमें ॥ आ०॥ २ ॥ प्रफुलित हरख नरत हीय उल्लसत, जिन जननी सुतात सुन तनमें ॥ दिन दिन वढत प्रवर धन जन मन, अधिक नत्साह घर घरनमें ॥ आ० ॥ ३ ॥ रूप्य रजत मणि माणक मोतियें, शख प्रवाल शिल वरसनमें ॥ धनद धनद सुरइंद्र ऊकमतें, नरत नमार नृपके सदनमें ॥ आ०॥ ४॥ ताल कसाल मधु वीण बजावत, गीत गान गावत तन ननमें ॥ ऊुन्ऊनि मुरज मृदग घन गरजत, गरज गरज मानु जैसे घनमें ॥ आ० ॥ ५ ॥ सुर नर लोक माहे अधिक उत्साह वाह, निशिदिन होत जनजनपदमें ॥ इद्र इद्राणी नृप दोहद पूरत, मनोरथ होत जो जो मातु मनमें ॥ आ० ॥ ६ ॥ परम कल्याण शुनयोग संयोग नयो, शुन घरि शुन ग्रह शुन दिनमें ॥ वरण सके न ताहि कवि अवसरको, आनद नयो है तीन नुवनमें ॥ आ० ॥ ७ ॥ ॐह्रींश्रीं परमात्मनेऽनतानत ज्ञानशक्तिये जन्मजरामत्युनिवारणाय, श्रीमज्जिनेंद्राय च्यवनकल्याणके अष्टद्रव्य यजामहे स्वाहा ॥ इति प्रथम च्यवन कल्याणक पूजा ॥ ❀ ॥

॥❀॥ अथ द्वितीय जन्मकल्याणक पूजा ॥❀॥

॥ (दूहा) ॥ प्रगटे पावन पतित प्रनु, अधम उधारन काज ॥ नृपकुलमाहे अवतरे, त्रिनुवनके शिरताज ॥ १ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ राग सोरठी ॥ ❀ ॥

॥ आज अधिक आनद नयो रे आज सुरग वधाई रे ॥ आगे,

जगपति जिनवर जनमिया रे वाला, सुर वधु वन मिल आई रे ॥१॥ आगे आज आनंदघन उलट्यो रे वाला, दिशि कुमरी हरखाई रे ॥ आगे दशदि श निर्मलता थई रे वाला, फूल रही वनराई रे॥२॥ आगे फूले फूली वनलता रे वाला, मधु मालती महकाई रे ॥ शालि प्रमुख सऊ धान्यनी रे वाला, निपजी राशि सवाइ रे ॥ ३ ॥ नारकी जीवें नरकमा रे वाला, क्षण इक शाता पाई रे ॥ सव जन मन हरषित भयो रे वाला, झूमरूल झवि गाई रे ॥ ४ ॥ शुभदिन शुभ महूरतधमी रे वाला, शुभग्रह शुभ पल आई रे ॥ जन्म थयो जिनराजनो रे वाला, प्रगटी पूर्व पुण्याई रे ॥ ५ ॥ ए पढी पुष्प तथा गुलाबजलकी वषा करे ॥ ※ ॥

॥ (सोरठो)॥ त्रिभुवन माहि सुरूप, जन्मसमय जिनराजनें ॥ वाजित्र वजत अनूप, सुर नर कृत उत्सव कुवे ॥ १ ॥ ※ ॥

॥ रावण निरत वणावे हो भला एदेशी ॥

॥※॥ आज आनंद वधाई रे, देखो, आज आनंद वधाई ॥ जयजयकार भयो जिनशासन, सुरकुमरी हरखाई रे ॥ दे० ॥ १ ॥ घरघर गोरी मंगल गावत, मोतियन चोक पुराई रे ॥ ईति उपद्रव भय सव भागे, खार समुद्रे जाई रे ॥ दे० ॥ २ ॥ आज सनाथ भयो हे त्रिभुवन, ॥ जिनवर जनम्या भाई रे ॥ आज अधिक जग हर्ष भयो हे, धन धन माता कहाई रे ॥ दे० ॥ ३ ॥ जन्म महोत्सव करननकुं सव, दिशिकुमरी मिल आई रे ॥ करि कदलीगृह सुंदर रचना, पावन कर ऊर लाई रे ॥ दे० ॥ ४ ॥ जिनज ननी जिनवर पय प्रणमी, मस्तक आण चढाइ रे। स्नान करावत उभय श रीरे, तैलाभ्यग कराई रे ॥ दे० ॥ ५ ॥ भूषण भूषित अंग विलेपन, देव दूष्य पहराई रे ॥ दर्पण ले मंगल घट थापी, चामर जुगल ढुलाई रे ॥ दे० ॥ ६ ॥ पचवरनके फूल सुगंधित, सुर कुमरी वरषाई रे ॥ होम करी रक्षापोटलिया, जिनवर करे वधाई रे ॥ दे०॥ ७ ॥ मंगल गावत जिन जगज ननी, निजगृह माहे ठाइ रे ॥ सफल भयो निज आतम जाणी, दिशि कुम री घर आई रे ॥ दे० ॥ ८ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ (दूहा)॥ अतिहि अधिक उत्सव करी, गइ कुमरी निज थान ॥ इंद्र हवे उत्सव करे, जन्म समय जिन जाण ॥ १ ॥ ※ ॥

॥※॥ राग गोमी ॥ साऊ समे जिन वंदो ॥ ए देशी ॥※॥

॥※॥ आज उच्छव मन भायो रे॥ देखो माई ॥ जगजननी जिन जायो रे ॥ दे० ॥ आ० ॥ त्रिभुवन माहि प्रकाश भयो हे, इंद्रासन थररायो रे ॥ दे० ॥ आ० ॥ १ ॥ अवधिज्ञानधर जिनजीकु निरखत, हृदय कमल उल्लसायो रे ॥ हरिणगमेषी इंद्र हुकमतें, घंट सुघोष घुरायो रे ॥ दे०॥ आ० ॥२॥ वनउन नवनवरूप मनोहर, सुरसमुदय मन भायो रे ॥ सुरकुमरी वरभूषण भूषित, अद्भुत रूप बनायो रे ॥ दे० ॥ आ० ॥ ३ ॥ नव नव यानवाहन रच सुरवर, सुरगिरि शिखरें आयो रे ॥ चौसठ इंद्र करत अति उत्सव, मेघ घटा घररायो रे ॥ दे० ॥ आ० ॥ ४ ॥ काली घटा वरदामनि चमकत, दाडुर मोर सुहायो रे ॥ अतिहि सुगंध पुष्पव्रज वरसत, मोतियनकी ऊर लायो रे ॥ दे० ॥ आ० ॥ ५ ॥ इति ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ इहां प्रभु प्रतिमा पंचतीर्थी अंदरसें लायके, सिंहासण ऊपर स्थापन करे (पीछे) स्नात्र पूजा करावे ॥ ※ ॥ ॥※॥

॥ (दूहा) ॥ शक्र जाय जिनवर गृहे, जिनजननी जिनराज ॥ प्रणमी श्रीमहाराजनी, भक्ति करे सुरराज ॥ १ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ सुंदर नेम पियारो माई ॥ ए देशी ॥ ※॥

॥ तुम सुत प्रान पियारो माई ॥ तु० ॥ ए आंकणी ॥ जगवत्सल जगनायक निरख्यो, धन धन भाग्य हमारो माई ॥ तु० ॥ १ ॥ धन जगजननी तुम सुत जायो, अघमउधारण हारो माई ॥ धन धन प्रगट भयो जग दिनकर, त्रिभुवन तारन हारो माई ॥ तु० ॥ २ ॥ सब सुर चाहत स्नात्र करनकु, सुरगिरि प्रभुजी पधारो माई ॥ कर जोमी प्रभु अरज करतहु सब जनकाज सुधारो माई ॥ तु० ॥ ३ ॥ मैं सेवक तुम सुत चरणनको, आयो हूं अधिकारो माई ॥ इंद्र कहे पदपंकज प्रणमु, भय सब दूर निवारो माई ॥ तु० ॥ ४ ॥ पांच रूप करि प्रभुजीकु लावे, पांडुगवन सिणगारो माई ॥ चोसठ इंद्र महोत्सव करिहे, पूजन अष्ट प्रकारो माई ॥ तु० ॥५॥

॥(दूहा)॥ पंचरूप कर इंद्र जिन, पंडुग वन ले जाय ॥ सिंहासन उछरंग गहि, स्नात्र करे सुरराय ॥ १ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ इतनो गुमान न करियें छबीली राधा हे ॥ ए देशी ॥ ※ ॥
॥ जिनजीको पूजन करियें, हारे हो रंगीले श्रावक हो ॥ जि० ॥ द्रव्य भाव वेऊभेदें करता, भव सागर निस्तरियें ॥ जि० ॥ १ ॥ गंगाजल चंदन पुष्पादिक, अमविध मंगल धरियें ॥ भावविशुद्धें जिन गुण गावो, नाटक नवनव करियें ॥ जि० ॥ २ ॥ बहुविध प्रभुकी भक्ति रचावत, वर्नन करन न तरियें ॥ वो आनंद देखे सोइ जाने, डुःख सब दूर हरियें ॥ जि० ॥ ३ ॥ पूजन करि प्रभुकु घर लावे, आतम पुएयें भरियें ॥ कर अठाइ महोत्सव आवत, सब सुर मिल निज घरियें ॥ जि० ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं प० अ० ज० जन्मकल्याणके अष्टद्रव्याणि यजामहे स्वाहा ॥ २ ॥ ※ ॥

॥※॥ अथ तृतीय दीक्षा कल्याणक पूजा ॥※॥

॥(दूहा)॥ सुरकृत उत्सव अति अधिक, भये अनंतर प्रात ॥ मात पिता उत्सव करे, निज कुलक्रम विख्यात ॥ १ ॥ पार नही धनको जहा, अगणित भरे भंमार ॥ दान मनोवंछित दिये, दयावंत दातार ॥ २ ॥ ※ ॥

॥※॥ गाव लूहे०॥ ए देशी ॥※॥

॥ जिनजन्म महोत्सव रंगशु रे, भये प्रात करत उछरंगशु ॥ रंगसु हा रे देवा रंगशु ॥ नृपउत्सव करे अति घणो ॥ १ ॥ पुत्रजन्म कुल क्रम करे रे देवा, जगजस कीरत विस्तरे ॥ वि० ॥ घरघर उत्सव रंगमें ॥ २ ॥ सुर वधु मिल सुरसंगशु रे ॥ देवा० ॥ करे नाटक नवरंगशु ॥ रंग० हारे० ॥ बाललीला जिनसंगमें ॥३॥ रूपातिशयें शोभता रे ॥देवा॥ इंद्रादिक मन मोहता ॥ मो० हारेमन० ॥ विद्याप्रभु विस्मयवती ॥ ४ ॥ परमप्रमोद प्रवीणता रे देवा, सुरक्रीमा अतिशयवता ॥अ०हा०॥ वैक्रिय शक्तिसमेउशु रें ॥ ५ ॥ गावतगीत उमंगशु रे देवा, वाजित्र नवनव रंगशु ॥ र० हा०॥ वजित अहोनिशि संगशु रे ॥ ६ ॥ ※ ॥

॥ (दूहा) ॥ तीन ज्ञान अतिशय धरे, अनिशय कला सुधाम ॥ सुर सुसंग क्रीमातिशय, अतिशयगुण अभिराम ॥ १ ॥ ※ ॥

॥※॥ पंच वरणी अंगी रची ॥ ए देशी ॥ ※ ॥

॥०॥ वरणी न जाती रे, व०॥ जिनजीकी शोभा व०॥ चित्रजात नर सुरासुर निरखत, उपम एतो जग भाती ॥ जि० ॥ १ ॥ अनंत गुणें करि

शोभित प्रभु जी, शुद्ध संवेग सोवन जाती ॥ शिव मारग शुध सेवत निशि दिन, पुण्यपुरुष पायागती ॥ जि० ॥ २ ॥ पर उपगारी परम पुरुषोत्तम, अद्भुत अनुभव रस पाती ॥ कामभोग वरविबुध प्रकारें, प्राप्त भये सुख सघाती ॥ जि० ॥ ३ ॥ जसु जस ख्यात प्रगट त्रिभुवनमें, कुल राजन्योत्तम जाती ॥ धन धन तीन भुवनके साहिब, श्याम हमारो वरगाती ॥ जि० ॥ ॥ ४ ॥ इन्द्र अहोनिश आवन जावत, देख दरश अति हरखाती ॥ डुन्डु भि प्रमुख बाजित्र बजत नित, सुरवधु बनमगल गाती ॥ जि० ॥ ५ ॥ ए पढके प्रभुकों पुष्प वासक्षेप चढावे ॥ ५ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (दूहा) ॥ प्रवरभोग प्रभुपुण्यतें, प्रगटे प्रगट प्रधान ॥ गुण ग्राहक गृह वासमें, दर्शन ज्ञान निधान ॥१॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ राग ठुमरी ॥ तुम बिन दीनानाथ० ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ प्रभुविन दीनानाथ दया विन, कोन कहावत कोइ रे ॥ प्र०॥ गृहवासे शुभसंयमधारी, शुद्धसुभावें होई रे ॥ प्र० ॥ १ ॥ सम्यग्दर्शनभ वनिर्वेदं, स्वतनकी जर खोई रे ॥ प्रभुता प्रभुकी को कहि वरने, सुर नर नारी मोही रे ॥ प्र० ॥ २ ॥ शुभलेश्या शुभध्यान रमे नित, आतम निरमल धोई रे ॥ आतमरूप निहारत निजघर, सगसुमति जह जोई रे ॥ प्र०॥ ॥ ३ ॥ प्रगट प्रकाश आत्म उजियारे, साम कहावत सोई रे ॥ गृहवासें शुद्धसंयम रागी, लागी लगन सवाई रे ॥ प्र० ॥ ४ ॥ निजप्रभुता प्रभु जीनो लीनो, अतर शत्रु विगोई रे ॥ विषयवासना क्षीण भई लख । आतम शक्तिशु ढोई रे ॥ प्र० ॥ ५ ॥ ऐसा कही फूल चढावे ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (दूहा) ॥ दाता दीन दयाल प्रभु, देत संवत्सरिदान ॥ दूर करे दारिद्र जग, त्रिभुवनमाहि प्रधान ॥ १ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ मरुदेवानंदकी, क्या छवि लागत प्यारी ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ जगपति जिनवरकी, क्या छवि मोहनगारी ॥ ज० ॥ मोहत प्रभुके मोहनरूपें, निरख निरख नरनारी ॥ क्या० ॥ १ ॥ भोगकर्म अतराय कर्म कडु, क्षीण भए निरधारी ॥ दानसंवत्सर घन जिम वरसत, पृथ्वी प्रमुदि तकारी ॥ क्या० ॥ २ ॥ नवलोकांतिक देव सवे मिल, हाजर होय सुचारी॥ जय जय मंगल शब्द उचारत, धर्म गहो सुखकारी ॥ क्या० ॥ ३ ॥ दान

धर्म शिवमारग प्रभुजी, प्रगट कियो हितकारी ॥ दाता दीनदयाल जगतमें जिन सम को सुविचारी ॥ क्या० ॥४॥ इंद्रादिक सुर सुरी नर नारी, दीक्षो रुव अतिभारी ॥ गान दान सनमान तान करी, प्रभुगति सकल सुप्यारी ॥ क्या० ॥ ५ ॥ तजि ससार लियो शुभयोग, सयम सतरप्रकारी ॥ मनपर्यव वर ज्ञान भयो तब, विहरत पर उपगारी ॥ क्या० ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं प० अ० ज० श्री० दी० अष्टद्रव्या० स्वाहा ॥ ३ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ चतुर्थ केवलज्ञानकल्याणक पूजा ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ दोहा ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ गजवर अश्व समूह रथ, पायक कोमा कोम ॥ जिनदीक्षा महोत्सवसमें, हाजर होय तिण ठोर ॥ १ ॥ इंद्रादिक सुर असुर नर, प्रभुकु करे प्रणाम ॥ नर नारी आशीष दे । जयजय त्रिभुवन साम ॥ २ ॥ तजि आश्रव सवर गहे, सयमभाव निधान ॥ सब संसार तजी करी, भए अणगार प्रधान ॥ ३ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ तेरी पूजा बणी ते रसमें ॥ ए देशी ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ धारी धारी धारी, जिन भए सयमपद धारी ॥ चरणकमल व लिहारी ॥ जि० ॥ पचसुमतिवर तीन गुपतिकर, सब जीवा सुखकारी ॥ जि० ॥ १ ॥ जीत लिये उपसर्गपरीसह, शत्रुसेना गणभारी ॥ जयभैरववर्ते नि.प्रकप भए, निर्मम निरहकारी ॥ जि० ॥ २ ॥ क्रोध मान माया लोभ अकिंचन, आकिंचन ब्रह्मचारी ॥ पुष्करसम निरलेप जगत गुरु, नीरजन अविकारी ॥ जि० ॥ ३ ॥ चेतन पर प्रभु अप्रतिघाती, खेसम निराश्र यारी ॥ खड्गी शृग परें एकाकी, अप्रतिबध विहारी ॥ जि० ॥ ४ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (दोहा) ॥ रत्नत्रय परिग्रह करी, मुक्तिमार्ग अभिराम ॥ निशि दिन करत विहारकम, प्रासुकाम निजधाम ॥ १ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ सद्गुरुजी सुनो मेरी अरजी ॥ ए देशी ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ जिनवरजी जगतहितकारी ॥ जि० ॥ जग वत्सल जगबधु जगत गुरु, जग नायक जयकारी॥जि०॥१॥कूर्मतणीपर गुप्तइंद्रिया, अप्रमाद भारन्डचारी ॥ अतिशय धाम धाम निजवीरज, वृषभपरें सुविहारी ॥ जि० ॥ २ ॥ शूर वीर प्रभु सिंहतणी पर, कुजर करम विदारी ॥ अतिगम्भीर

सायरसम शोभित, सौम्यलेश्या सुखकारी ॥ जि० ॥ ३ ॥ तेज पुंज दि नकर सम दीपत, हेम वरण मनुहारी ॥ सर्वसहन कारक धरणीपर, स्वच्छ हृदयकंजधारी ॥ जि० ॥ ४ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (दोहा) अनुत्तर धर संयमक्रिया, कल्पातीतजिणंद ॥ वीतराग विचरे प्रवर, रत्नत्रय जगचंद ॥ १ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ कुब्जानें जादू मारा ॥ ए देशी ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ जाके रागद्वेष भया न्यारा रे, सोई श्याम सकल सुखकारा ॥ जा० ॥ वासी चंदन सम प्रभु जगमें, अपकारें उपकारा रे, ॥ सो०॥१॥ कंचन काष्ठ समान हे जाके, सुख दुःख सम उपचारा ॥ कोऊ निंदत कोऊ पूजत, जिनजी हे अविकारा रे ॥ सो० ॥ जा० ॥ २ ॥ शिवसु ख अरु भवसुख हू न वंछे, वीतराग प्रभु प्यारा ॥ शूरवीर प्रभु क्षपकश्रेणि चढ, मोहनी मल्ल पिछारा रे ॥ सो०॥ जा० ॥ ३ ॥ क्षायिक संयमने शुभ योगें, अनुत्तर गुण गण धारा ॥ पाठकविजय विमल कहे प्रभुके, चरणकम ल वलिहारा रे ॥ सो० ॥ जा० ॥ ४ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (दोहा) घनघाती चउ कर्मको, क्षयकर क्षायिक ज्ञान ॥ दर्शन लोकालोकको । प्रगटप्रकाशी भान ॥ १ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ राग ठुमरी ॥ बस मन रुची कुन्कके तीर ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ पायो प्रभु भवजलनिधिको तीर, अतुलीबल वरवीर ॥ पा० ॥ अनुत्तर जाके सुमति गुपति हे, अनुत्तरक्षमासुधीर ॥ पा०॥ १ ॥ मार्दवआ र्जव अनुत्तर जाके, रोक्यो आश्रव नीर ॥ संवरजोग क्रिया नवि विणठी, रही ईर्या सुख सीर ॥ पा० ॥ २ ॥ घनघाती सब शत्रुविनाशी, केवलज्ञान सुधी र ॥ पूरन दर्शन प्रगट भयो हे, निज आतम गुणक्षीर ॥ पा० ॥ ३ ॥ प्रा तिहार्य अतिशय जिनसंपद, भयो अनुकूल समीर ॥ दे उपदेश भविक प्रति बोधत, वचनातिशय गंभीर ॥ पा० ॥ ४ ॥ लोकालोक प्रकाश परम गुरु, कहि न शके मति सीर ॥ पाठक विजयविमल परमातम, प्रभुता परम सु थीर ॥ पा० ॥ ५ ॥ ॐह्रीं परमा० अ० ज० श्रीम० केवलज्ञानकल्या णके अष्टद्रव्याणि यजामहे स्वाहा ॥ इति ॥ ४ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ पंचम निर्वाण कल्याणक पूजा ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ दोहा ॥ इन्द्रादिक सुर सब मिली, तीन भुवन शिरदार ॥ सब दरसी सर्वज्ञनो, महिमा करे अपार ॥१॥ ॥ ◇ ॥

॥ ※ ॥ अतुल विमल मिल्या, अखम गुणें०॥ ए देशी ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अतुल विमल प्रभुता प्रभुकी लख, चोसठ इन्द्र उछव धरे ए ॥ चार प्रकारके सुर सब मिलकर, समवसरण रचना करे ए ॥ अ० ॥ १ ॥ रजत कनक वररत्नप्रकारें, कनक रत्न मणि कगुरा ए ॥ वृक्ष अशोक सिंहासन शोभित, तीन छत्र चामर ढुरा ए ॥ अ० ॥ २ ॥ ध्वनि प्रमुख श्रवण सुखदायक, गहिर सुरे वाजित्र घुरे ए ॥ जानुप्रमाण पुष्पघन वरसत, जलज थलज विकसित सुरे ए ॥ अ० ॥ ३ ॥ साधु साधवी श्रावक श्राविका इन्द्रादिक सुरी सुर वरे ए ॥ नरनारी तिर्यंग विद्याधर, द्वादशविध परिषद भरे ए ॥ अ० ॥ ४ ॥ भविजन धर्म तणे उपदेशें, जोजन गामि मधुर गिरे ए॥ प्रतिबोधत चौमुख श्रीजिनवर, निज निज भाषा अनुसरे ए ॥ अ०॥ ५ ॥ ए पढके वासक्षेप करे ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ दोहा ॥ प्रगटपणे प्रभुकी प्रभा, प्रगट प्रकाशक रूप ॥ प्रगटी प्रभुना परमसम । परमातम पदभूप ॥ १ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ बिगरी कौन सुधारे नाथ बिना ॥ ए देशी ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ भूमण्डल भविकमल विबोधन, दिनकर सम जिनराया रे ॥ भू० ॥ अणछते इक कोमी अमरपद, पकज भमर लुभाया रे ॥भू०॥१॥ ग्राम नगर पुर पट्टण विचरत, त्रिभुवननाथ कहाया रे ॥ चौसठ इन्द्र करे जाकी सेवा, तन मनसे लपलाया रे ॥ भू० ॥ २ ॥ इन्द्राणी मिल मंगल गावत, मोतियन चोक पुराया रे ॥ सर्व जीव हितकारक प्रभुजी, निःश्रेयस सुखदाया रे ॥ भू० ॥ ३ ॥ भवजलनिधि निर्यामक जगगुरु, तारक सकल कहाया रे ॥ शासननायक सवसकलकु, प्रवचन तत्त्व सुनाया रे ॥ भू० ॥ ४ ॥ अनंतगुणाकर प्रभुजीकी महिमा, वरने को कविराया रे ॥ पर उपकारक प्रभुके पाठक, विजय विमल गुण गाया रे॥ भू० ॥ ५ ॥ ए कहके वासक्षेप करे ॥※॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥※॥ (दोहा) ॥ निज निज भाषा भविकजन, तृपत न सुनतहि श्रोत ॥

मीठी अमृत सम गिरा, समकृत श्रम नहि होत ॥ १ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ राग कहेरवो ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ जिनदवामिल गयो रे, दोय चरण परध्यान ॥ शुद्ध मन गह गह्यो रे ॥ जि० ॥ ज्ञायकज्ञेय अनतनो रे, सबदरसी जिनचद ॥ सुरतरु सम जग वालहो रे, सेवत सुर नर इद ॥ धर्ममे लह लह्यो रे ॥ दो०॥१॥ चौदम गुण थानक करे रे, आतम वीर्य अनत ॥ योग निरोधनकी क्रिया रे, सूखम बादरकत ॥ बध सब टर गयो रे, सरव सवर भयो रे ॥ दो० ॥ २ ॥ घन कर आतमप्रदेशनो रे, कर शैलेशी कर्ण ॥ कर्म सकल दूरें किया रे, जीर्णवस्त्र जिम पर्ण, मुक्ति पद जिम लह्यो रे ॥ दो० ॥ ३ ॥ ज्ञान क्रिया कर कर्मकोरे, क्षय कर पर अनुबध ॥ निजआतम रूपें लह्युरे, शाश्वत सुख सबध, सिद्ध शुद्ध बुध थयो रे ॥ दो० ॥ ४ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (दोहा) अकल अगोचर अगमगम, सिद्ध भए सुविशुद्ध ॥ परमातम प्रभु परम पद, चिदानद अविरुद्ध ॥ १ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ राग धनाश्री ॥ तेजतरणिमुखराजे ॥ ए देशी ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ तेज तरणि सम राजे, प्रभुजीमो ॥ ते० ॥ एकसमयप्रभु ऋजुगतिकर, मुक्तिमहल सुविराजे ॥ प्र० ॥ ते० ॥ १ ॥ सादि अनत सदा शाश्वत वर, अनत महासुख भजे ॥ अचल अगोचर प्रभु अविनाशी, सिद्धसरूप विराजे ॥ प्र० ॥ ते० ॥ २ ॥ निरुपाधिकनिरुपम सुख प्रभुके, कहि न शके कविराजे ॥ अजर अमर अक्षय अविकारी, सकलानद सहाजे ॥ प्र० ॥ ते० ॥ ३ ॥ सवत भगणीसे तेरोत्तर, श्रावण शुदि पख राजे॥ श्रीजिनराज तणा गुण गाया, पचमि दिवस समाजे ॥ प्र० ॥ ते० ॥४॥ श्रीविक्रमपुर नगर मनोहर, श्रीसघ सकल समाजे ॥ पंच कल्याणक पूजा प्रभुकी, कीनी हित सुखकाजे ॥ प्र० ॥ ते० ॥ ५ ॥ श्रीखरतरगच्छ नायक लायक, युगप्रधान पद छाजे ॥ जगमगुरु भट्टारकवरश्री, जिनसौभाग्य सुराजे ॥ प्र० ॥ ते० ॥ ६ ॥ प्रीत विलास धर्मसुदर गणि, अमृत समुद्र सुभ्राजे ॥ पाठक विजय विमल प्रभुके गुण, गावत घन जिम गाजे ॥ प्र० ॥ ते० ॥ ७ ॥ हसविलास प्रवरगणिवरकी, प्रेरणया सुसमाजे ॥ श्रीजिनवरकी स्तवना कीधी, धर्मप्रभावन काजे ॥ प्र० ॥ ते० ॥ ८ ॥

ॐह्रीं प० ॥ अन० ॥ जन्म जरामृत्यु निवारणायय: श्री मल्लिजिनेंद्रेभ्यो नि र्वाणकल्याणके अष्टद्रव्याणि यजामहे स्वाहा ॥ इति पाठक विजयविम लजीविरचित पाच क० पू० स० ॥ ॥✻॥ ॥ ✻ ॥

॥ ✻ ॥ आरती ॥ राग मालवी गोडी ॥ ✻ ॥

॥ ✻ ॥ शुभ आरती प्रभुकी उदरचित्तें, करो भविक रसाल रे ॥ प्रथ मधूप सुगधजिनकु, उखेवो जिननाल रे ॥ १॥ भाल निजकर तिलक सुदर, पहर पुष्प सुमाल रे ॥ दक्षिणकर जिन राजजुके, कर आवर्त्त सुयाल रे ॥ शु० ॥ २ ॥ यथासगतें शुद्धभगतें, करो दिल खुशियाल रे ॥ द्रव्यभावें वि विधपूजा, भविकभाव विशाल रे ॥ शु० ॥ ३ ॥ गुण अनत महत गावें, प्रभुपरम दयाल रे ॥ जन्म सफलो करो भविजन, कहे पाठक वाल रे ॥ शु० ॥ ४ ॥ इति आरती ॥ ॥ ✻ ॥ ॥ ✻ ॥

॥ ✻ ॥ अथ पाच कल्याणक पूजा विधि ॥ ✻ ॥

॥ ✻ ॥ प्रथम बिंबप्रतिष्ठामें (तथा) ऋद्धिवंत सेठ सहुकारादिककी तरफसें (तथा) सघ समुदायके तरफसें, जो पाच कल्याणकका उच्छव होय (तवतो) विस्तार विधिसें एकेक दिनमें एकेक कल्याणकका उच्छव करे। पाच दिनमें पाच कल्याणक करें (और) जल यात्रा, चोवीस प्रकारी वीश स्थानक, सतर भेदी, नवपदजीकी एकेक दिन पूजा उच्छव विस्तार वि धिसाथ करावै। ऐसें १० दिनका उच्छव करें ॥ (यथा) पहले दिन पूठिया चद्रवा तोरणादिकसें मडपकी स्थापना करावे । १० दिग्पालाकों बलवाकुल दिरावे । जल यात्रादि उच्छव करके मगल कलश थापन करै (इत्यादि)॥ दूशरे दिन चवन कल्याणकको उच्छव करे (जैसें) देवलोकसे चवके माताके गर्भमें आवे (तैसें) भगवानकी माताको काष्टमई घरादिकमें पधि विचो स्थापन करें (पीछे) ऊपर सेती काष्ट विमानमें भगवानको प्रतिबिंव स्थापन करके नीचै उतारे (पीछे) चवदे स्वप्नाकों क्रमसें उतारें। माताके मडपकेपा स रख्के । तीन नवकार गुणके उतारे (और) तीन नवकार गुणके स्था पन करे। (पीछे) एक (वा) २४ रत्न (अथवा) एक (वा) २४ रुपियासें । चवन कल्याणककी थापना करें (और) चवन कल्याणककी पाच पूजा पढे ॥ ✻ ॥ इति च्यवन कल्याणक पूजा ॥ १ ॥ ✻ ॥

॥ ॥ अथ जन्मकल्याणक विधि ॥ ॥

॥ तीशरे दिन जन्म कल्याणकको संपूर्ण उछव करै (जैसें) छप्पन दिश कुमरीका आगमन, और यावन्मात्र केली गृह रचना, दर्पण दर्शनादिक उछव करे ॥ तिस पीछे, सुमेरु पर्वतकी थापनाके ऊपर इद्रादिकका रूप करके भगवानकों थापन करे । सोनें, रूपै, तावा, पीतल, मट्टी आदि अनेक तरै का कलश वन सके तो १००८ कलश गगानदी आदि अनेक ठिकाणेंका जलसें भरभरके स्नात्र उछव करावै ॥ भृगार १। दर्पण २। रत्न करमक ३। स्थाल ४। पुष्प चगेरिका ५। इत्यादि उपगरण पूजाका सर्व भगवान आगे रखै ॥ सर्व क्षेत्राकी सुगधी उषधीयासें स्नात्र करावे । गुलावजलकी, पुष्पा की, रत्नाकी, वर्षा करे । तदनतर सिद्धार्थ राजायें जिस माफक उछव कियो उस माफक अपनेसें वन सके जिस मुजव सपूर्ण उछव करे । (तदनंतर) घृतसेर २४,। नैवेद्य सेर २४। गुड सेर २४। फल अछा २४ । चढावे । २४ सधव स्त्रिया मिलके २४ गवली करै ॥ जन्मकल्याणककी पाच पूजा पढै । आरती मगल दीप उतारे ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ अथ दिक्षा कल्याणक विधि ॥ ॥

॥ चोथे दिन दिक्षा कल्याणकको उछव करै । खाशा पालखीमे भगवानको वेठाके, वर घोडो वाजिआदि सहुत वडे उछवसें निकाले । अछा वाग वगीचामें लेजाके । अशोक, आम्रादि, उत्तम वृक्षके नीचे सिंघासनपर स्थापन करके स्नात्र उछव करावे । २४ । गज उत्तम वस्त्र चढावे । वाशक्षेप लेके नवीन चद्रवा चढावे । दिक्षा कल्याणककी पाच पूजा गवावे । जैन याचकादिककों दान देवै । साहमीवछल करे ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ अथ केवल ग्यान कल्याणक पूजा विधि ॥ ॥

॥ ॥ पाचमे दिन त्रिगडा समोसरणकी रचना करे । मुगट छत्र चामरादि अनेक तरेके रत्नजडित आभूषण सहत भगवानकों स्थापन करै । पचवर्णा सुगधी फूलाकी वर्षा करे । नाना प्रकारका वाजित्र वजावे केवल ग्यान कल्याणककी [illegible] रसें पाच पूजा गावे ॥ इति ॥ ॥

॥ ✲ ॥ अथ मोक्ष कल्याणक विधि ॥ ✲ ॥

॥ ✲ ॥ छठे दिन विस्तार विधिसें स्नात्र करावे । निर्वाण विधिका गुण वर्णनकी पाच पूजा करावे ॥ ३४ अच्छा उत्तम द्रव्यका लाडू चढावे । भमारकी वृद्धी करे ॥ आरती मगल दीप करे ॥ यथा शक्ति ज्ञान पूजा गुरू पूजा करे ॥ साहमी भक्त करे ॥ इति पच कल्याणक पूजा विधि॥ अब सक्षेप रुचि, शक्ति, भक्ति, वाले जो जीव होय (सो) अपनी शक्ति माफक । पच कल्याणकी पूजा करावें ॥ ✲ ॥ ॥ ✲ ॥

॥ ✲ ॥ अथ सक्षेप विधि लि० ॥ ✲ ॥

॥ ✲ ॥ प्रथम त्रिगमा नीचे पाच साथिया करके । पाच रुपिया पाच नालेरसें थापना करें । प्रतिमा जीकों तीन नवकार गुणके । स्थापनका मत्र बोलके । समोसरणपर स्थापना करे ॥ (स्थापन मत्र) ॥ ॐ नमो अर्हत् परमेश्वराय । षट पचाशद्दिक्कुमारी परिपूजिताय । चतुःषष्टि इद्र महिताय सव जन हिताय । देवाधिदेवाय । अत्र पीठे तिष्ट २ स्वाहा ॥ ✲ ॥ कोइ पूजादिक महोत्सवमें इस मत्रसें समोसरणपर भगवानकों स्थापन करना ॥ पीछे च्यवन कल्याणककी पाच पूजा पढे । अष्ट द्रव्य चढावे । पुष्पमाला २ तथा, पुष्प अत्तर चढावे । गुलाबजलकी वर्षा करे । हीरो चढावे ॥ इत्यादि ॥ इति च्यवन कल्याणक पूजा विधि ॥ ✲ ॥ जन्म कल्याणकी पूजामें दो तीन पूजा गायके भीतरसें पच तीर्थी लायके स्थापन करे । स्नात्र करावे । धजा फेरावे । पीछे पचतीर्थी सागी ठिकाणे स्थापन करे । पूजा सव क्रमे पढे । अष्टद्रव्य, गुम, घृत, आदि चढावें । अष्टमगलीककी रचना करे ॥ इति ॥ दिक्षा कल्याणककी पूजामें । पुष्पमाला । वाशचूर्ण । अष्टद्रव्य, कोमल सुगधी उत्तम वस्त्र चढावे ॥ इति ॥ केवल ग्यानकी पूजामें आभूषण अष्टद्रव्य, वाशचूर्ण, सपेद गोला, चढावें ॥ इति ॥ निर्वाण कल्याणकमें । गुम, गोला, लाडू, आदि अष्टद्रव्य चढावे ॥ पाचो पूजामें रोकनाणो यथाशक्ति चढावै । (पीछे) ग्यान पूजा, गुरु पूजा करें ॥ ✲ ॥ ॥ ✲ ॥ ॥ ✲ ॥

इति सक्षेप पच कल्याणक विधि ॥ ✲ ॥ ॥✲॥

॥ ॐ ॥ नवपद मंम्डल पूजा विधि लि० ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ प्रथम सुदर अंगोपांगवाले नवस्नात्रिया मंत्रितजलसें स्नान करे ॥ (जलमंत्र) ॐ ह्रीं अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षणी अमृतं श्रावय २ स्वाहा (इसमंत्रसें) जलमंत्रे (पीछे) ॐ ह्रीं अमले विमले विमलोद्भवे सर्वतीर्थ जलोपमे पापा वावा अशुचि शुचिर्भवामि स्वाहा ॥ (इस मंत्रकों) सात वेर पढता हुवा स्नान करै (पीछे) ॥ ॐ ह्रीं श्रीं क्रौं नमः ॥ सातवेर इस मंत्रसें वस्त्र शुद्ध करके पहरे (पीछे) ॐ श्रीं ह्रीं क्रौं अर्हते नमः ॥ (इस मंत्रसें) सातवेर गुरूपासे केशर मंत्रायके तिलक करे (पीछे) ॐ ह्रीं अवतर २ । सोमे २ । कुरु २ । वल्गु २ । सुमणसे । सोमणसे । मडु म डुरे । ॐ कवली कः क्षः स्वाहाः ॥ (इस मंत्रसें) मोली मैंढल मरोमा फली मंत्रायके हाथके बांधे ॥ (और) जब मंम्डलजीके चारु तरफ मोली मैंढल बांधे। सोभी, इसी मंत्रसें मंत्रके बांधे ॥ इसीतरे अपना अंग शुद्ध करके स्नात्रिया गुरूके सन्मुख हाथ जोमके वैठे ॥ (जब गुरू) ॐ परमेष्ठी स्तोत्र पढके अंगरक्षा करै ॥ अंगरक्षा स्तोत्र ॥ ॐ परमेष्ठी नमस्कार सार नवपदात्मक । आत्मरक्षा करवज्र । पंजराभ स्मराम्यहं ॥ १ ॥ ॐ णमो अरिहंताण ॥ शिरस्क शिरसिस्थित ॥ ॐ णमो सव्वसिद्धाण । मुखे मुखपटवर ॥ २ ॥ ॐ णमो आयरियाण । अंगरक्षा तिशायिनी । ॐ णमो उवज्झायाण । आयुध हस्तयो दृढ ॥ ३ ॥ ॐ णमो लोए सव्वसाहूण । मोच के पादयोशुभे । एसो पंचनमुकारो ॥ शिलावज्रमयीतले ॥ ४ ॥ सव्व पाव प्पणासणो । वप्रोवज्रमयोवहिः । मंगलाणच सव्वेसि । खादिरांगार खातिका ॥ ५ ॥ स्वाहांतचपदज्ञेय । पढमं हवइमंगलं । वप्रो परिवज्रमय । पिधान देहरक्षणे ॥ ६ ॥ महाप्रभावा रक्षेय । क्षुद्रोपद्रवनाशिनी । परमेष्टिपदोद्भूता कथिता पूर्वसूरिभिः ॥ ७ ॥ यश्चैव कुरुते रक्षा । परमेष्टि पदैसदा ॥ तस्यनस्या द्भयंव्याधि । राधिश्चापि कदाचिन. ॥ ८ ॥ ॐ ॥ इति आत्म रक्षा वज्रपिंजर स्तोत्र ॥ॐ॥ यह स्तोत्र तीनवार गुणके आत्मरक्षा करै ॥ (पीछे) तीन वेर नवकार मंत्रसें मंत्रके चोटीके गांठ देवे ॥ (तथा) तीन नवकार गुणके सव स्नात्रियाके कानोंमें फुक देवे ॥ (इतनी विधीनों) हरकोई पूजा प्रतिष्टा मंम्डल ... याकों प्रथम अवश्य करणी करा

णी चहिये ॥ (पीछे) मदरजीमें अधिष्टायक देव देवी जो होय । इन सर्वकी पूजा करावे । अष्ट द्रव्य चढावे ॥ (पीछे) चपेलीका तेलमें, हिंगलू (वा) सिंदूर मिलाके क्षेत्रपालजीकी पूजा करे । चादीका वरग (वा) मालीपन्नासें अंग रचना करे । अत्तर चढावे । फूल, धूप, दीप, नैवेद्य फल, जल, रोकनाणो, इत्यादि सर्व द्रव्य (ॐ क्षेत्रपालायनमः) ऐसा बोलता हुवा चढावे ॥ (पीछे) मम्मलजीके दहिणेंपासे, १० दश दिग्पालके पट्टेकी थापना करे । एकेक दिग्पालकी पूजा पढके, जल चंदनादि सर्व द्रव्य, नागरवेलके पानसुद्धा चढाता रहे ॥ दशु दिग्पालकी पूजा हुए पीछे। ऊपर कसुंबल वस्त्र बाधे । आगे सर्व द्रव्य चढावे । दीपक करे ॥ (पीछे) वामपासे नवग्रहका पट्टकी थापना करके पूर्वोक्त प्रकार पूजा करे॥ (पीछे) सर्व स्नात्रियाकु १८ स्तुतीसें देव वंदन करावे ॥ (इहां) १० दिग्पाल, नवग्रहकी पूजाका मंत्र (तथा) देव वंदनकी विधि विस्तारके भयसेती न लिखी है (सो) पूर्वशांति पूजामे लिख आए हैं (उसी मुजब) सब विधि करावे (पीछे) मम्मलजीकी प्रतिष्टा करे ॥ ॥ ✻ ॥

॥ ✻ ॥ अथ मम्मल प्रतिष्टा विधि ॥ ✻ ॥

॥ ✻ ॥ प्रथम दोनुपासे मोली सुतकी वत्ती जगाके घृतका दीपक करे ॥ इन दोनु दीपकको चार पहर अखंड रक्खे । (पीछे) सोनें, चादी, आदिका कलशमें अगोट उत्तम जल भरके सोनावाणी करे । हाथमें कलश लेके । ७ सात नवकार गुणें ॥ ॐ ह्रीं जीरावला पार्श्वनाथ रक्षा कुरु २ स्वाहा ॥ इस मंत्रसें ७ वार जलको मंत्रके । मम्मलजीके चारु तरफ धारा देवे । ऊपर जरा छाटा देके पवित्र करे । धूप खेवे (पीछे) नवतारी मोली सुतका साढा तीन आटा मम्मलजीके बाहर कर देवे । पूर्वोक्त मंत्रसें मंत्रके मोली (तथा) मींढल मरोमा फली चारु तरफ बाधे ॥ (पीछे) केशरकी कटोरी हाथमें लेके (ॐ ओं ह्रीं श्रीं अर्हतेनमः) इस मंत्रसें मंत्रके मम्मलके ऊपर केशरका छांटा देवे । (ऊपर) चावलको साथियो करे । टीकी देवे । मम्मलके अगाडी चावलको साथियो (वा) नंद्यावर्त्त करके ऊपर नालेर रुपियो भेट धरे ॥ (पीछे) केशर, चंदन, कुंकम, लेकर मम्मलजीके चारु तरफ तीन रेखा आलेखन करे ॥ (पीछे) वासक्षेप, पुष्प, हाथ

में लेके (ॐ भूरसी भूतधात्री विश्वाधारेनमः ॥) इस मंत्रसें सातवेर मंत्रके मंडलभूमि, "थ", पीठकी पूजा करै ॥ फेर, आचार्य गुरु वाशक्षेप हाथमें लेके (ॐ ह्रीं श्रीं अर्हत्पीठायनमः) इस मंत्रसें ७ वेर मंत्रके मंडल पीठकी पूजा करे ॥ (पीछे) स्नात्रिया, हाथमें पुष्प, चावल, लेलेके तीन वेर मंडलमें वधावे ॥ नीचे चावलको साथियो करके । रुपियो नालेर थापनाको धरै । (पीछे) स्नात्रिया मंदरके भीतरसें प्रतिमाजी लायके त्रिगडा ऊपर मंत्र पढके स्थापन करै ॥ (स्थापन मंत्र) ॥ ॐ नमो अर्हत् परमेश्वराय । चतुर्मुखाय परमेष्टिने दिग् कुमारी परिपूजिताय । चतुषष्टि सुरासुरेंद्र सेविताय । देवाधिदेवाय । त्रैलोक्य महिताय । अत्र पीठे तिष्ट २ स्वाहा ॥ इस मंत्रकों ७ वेर पढके । नवप्रतिमा (वा) एकप्रतिमा स्थापन करै॥ (इसीतरे) मंडल प्रतिष्टा करके (पीछे) सिद्धचक्र पूजा सरू करे ॥४॥ (प्रथम) एकरकेवीमें । सपेद गोलो, सपेद वस्त्र, सपेद धजा, ८ कर्केतन रत्न, ३४ हीरा, पुष्प, अक्षत, फल, दीप, धूप, हाथमें लेके अरिहंत पदकी पूजा पढें ॥ (यथा) अथाष्टदल मध्याब्ज । कर्णिकाया जिनेश्वरान् । आविर्भूतोज्वलसद्बोधा । नाव्रतः स्थापयाम्यहं ॥ १ ॥ निःशेष दोषें वन धूमकेतुः । नपार ससार समुद्र सेतून् । यजै समस्तातिशयैक हेतून् । श्रीमज्जिनान्बुज कर्णिकाया ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हद्भ्योनमः स्वाहा ॥ १ ॥ इस मंत्रसे अर्हंत पदकी थापना पूजा करै । सर्व द्रव्य चढावै ॥ (पीछे) रकेवीमें । लाल गोलो, लाल धजा, लाल वस्त्र, ८ माणक रत्न, ३१ मुगा, जल पुष्पादि सर्व द्रव्य हाथमे लेके सिद्ध पूजा पढै ॥ (यथा) तस्य पूर्व दले सिद्धान् । सम्यक्त्वादि गुणात्मकान् । निःश्रेय सपद प्राप्तान् । निदधे भक्ति निर्भरः ॥ ३ ॥ तत्पूर्वं पत्रे परितः प्रणष्टः । दुष्टाष्ट कर्मा मधिगम्य शुद्धि । प्राप्तानरान्सिद्धि मनतवोधान् । सिद्धान् यजे शांतिकरान्नराणा ॥४॥ ॐ ह्रीं श्रीं सिद्धेभ्योनमः स्वाहा ॥ पूर्व दिशाकी तरफ सिद्ध पदकी स्थापना पूजा करै । सर्व द्रव्य चढावै ॥ ✻ ॥ इति ॥ ✻ ॥ (पीछे) रकेवीमें पीलो गोलो पीली धजा, पीलो, वस्त्र, ५ गोमेदक रत्न, ३६ सोनेका फूल, जल, पुष्पादि सर्व पीत द्रव्य हाथमें लेके आचार्य पदकी पूजा पढे ॥(यथा) स्थापयामितत: सुरीन् । दक्षिणेस्मिन् दले मले । चरतः पचधाचारान् ।

षट्त्रिंशद्गुणैर्युतान् ॥ ५ ॥ सूरी सदाचार विचारसारा । नाचारयत स्वपरान् यथेष्ट । उग्रोपसर्गैक निवारणार्थः । मन्यर्च्चया म्यक्षनगधधूपे. ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सूरीभ्योनमः स्वाहा ॥ ३ ॥ दक्षिणदिशाकी तरफ आचार्य पदकी थापना पूजा करे ॥ इति ॥ ✲ ॥ (पीछे) हरितगोलो, हरितवस्त्र, हरामु गकालडू, हरीधजा, ४ इन्द्रनील, २५ मरकतरत्नपन्ना, जल, पुष्पादि सर्व द्रव्य हाथमें लेके उपाध्याय पदकी पूजा पढै ॥ (यथा) द्वादशांग श्रुतं धारान् । शास्त्राध्ययन तत्परान् । निर्वेगयाम्युपाध्यायान् । पवित्रे पश्चिमे दले ॥ ७ ॥ श्रीधर्मशास्त्राण्यनिश प्रशास्ये । पठतियेन्यानपि पाठयति । अ ध्यापका स्तानपराब्जपत्रे । स्थितान्यविज्ञान् परिपूजयामि ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं उपाध्यायेभ्योनम स्वाहा ॥ पश्चिमदिशाकीतरफ उपाध्याय पदको स्थापना पूजा करे ॥ इति ॥ ✲ ॥ (पीछे) रकेबीमें स्यामगोलो, स्यामवस्त्र, स्यामधजा। उडदकालडू, ५ राजपट्ट, २७अरिष्टरत्न, जल, पुष्पादि सर्व द्रव्य हाथमें ले के साधुपदकी पूजा पढै ॥ (यथा) व्याख्यादिकर्म कुर्वाणान् । सुनध्या नैक मानमान् । उदक पत्रगतान् वारान् । साधुवासीस सुव्रतान ॥९॥ वैरा ग्यमतर्वर्चसि प्रसिद्ध । मत्य तपो द्वादशधा शरीरे । येषा मुदक्पत्रगतान् सुगतान् पवित्रान् । साधून्सदातान् परिपूजयामि ॥ १० ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सर्व साधुभ्योनम स्वाहा ॥ ५ ॥ उत्तरदिशाकी तरफ साधुपदकी थापना पूजा करे ॥ इति ॥ ✲ ॥ (पीछे) रकेबीमें सपेदगोलो, सपेद धजा, सपेद वस्त्र, ६७ मोती आदि, श्वेतद्रव्य हाथमें लेके । दर्शन पदको श्लोक बोलके चढावे ॥ (यथा श्लोक.) जिनेंद्रोक्त मतश्रद्धा । लक्षणे दर्शनेयजे । मिथ्या त्व मथन शुद्ध । नस्त मीशान् सद्दले ॥ ११ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सम्यग् दर्शनाय नमः स्वाहा ॥ ६ ॥ ईशान कूणे दर्शनपदकी स्थापना पूजा करे ॥ इति ॥ (पीछे) रकेबीमें ५१ मोती, श्वेतगोलो, श्वेत धजा, चावलका लडू आदि श्वेतद्रव्य हाथमें लेके, ग्यानपदको श्लोक बोलके चढावे ॥ (श्लोकः) मगेप द्रव्यपर्याय । स्वपमेवाव भासक । ग्यानमाग्नेय पत्रस्थ । पूजयामि हि तावह ॥ १२ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सम्यग् ग्यानाय नमः स्वाहा ॥ ७ ॥ अग्निकूण कीतरफ ग्यानपदकी स्थापना पूजा करे ॥ इति ॥ ✲ ॥ (फेर) रकेबीमें सपेद गोलो, सपेद धजा, ७० मोती, श्वेतवस्त्र, आदि श्वेत द्रव्य हाथमें

लेके चारित्र पदको श्लोक बोलके चढावे ॥ (श्लोकः) सामायिकादि भिर्भेदै । श्चारित्र चारुपचधा । सस्थापयामि पूजार्थ । पत्रैह नैरुते क्रमा त् ॥ १३ ॥ ॐ ह्री श्री सम्यग् चारित्राय नमः स्वाहा ॥ ८ ॥ नैरुत कूणकी तरफ चारित्र पदकी स्थापना पूजा करै ॥ इति ॥ ※ ॥ (पीछे) रकेबीमें ५० मोती, श्वेतगोलो, श्वेत धजा आदि, सर्व सपेदद्रव्य हाथमें लेके, तप पदको श्लोक बोलके चढावें ॥ (श्लोक) द्विधा द्वादशधाभिन्न । , पूतेपत्र तपःस्वय । निधापयामि नत्त्यात्र । वायव्या दिशि शर्मद ॥ १४ ॥ ॐ ह्री श्री सम्यग् तपसे नमः स्वाहा ॥ ९ ॥ वायव कूणकी तरफ तप पदकी स्थापना पूजा करे ॥ इति ॥ ※ ॥ (अथ अर्घ) ॥ निःस्वेदत्वादि दिव्या तिशाय मयतनून् श्री जिनेद्रान् सुसिद्धान् । सम्यक्त्वादि प्रकृष्टाष्टक गुणभृदा चार साराश्चसूरीन् । शास्त्राणि प्राणिरक्षा प्रवचन रचना सुदराण्यादि सङ्घ । स्तत्सिद्ध्यै पाठकाना यतिपति सहिता नर्चयाम्यर्घदानै ॥ १५ ॥ इत्यमष्ट दल पद्म । पूरये दर्हदादिभिः । स्वाहातै प्रणवाद्यश्च । पदैर्विघ्न निवृत्तये ॥ १६ ॥ ॐ ह्री श्री अर्हं असिआउसा सम्यग् दर्शन ज्ञान चारित्र तपसे भ्यो ह्री श्री अर्हं परमेष्टिन परमनाथ परमदेवाधिदेव परमार्हन् परमानत चतुष्टय । परमात्मने तुभ्य नम ॥ (इति मूलमत्र) ॥ इति सिद्धचक्र प्रथमवलय मूलपूजा विधिः ॥ ※ ॥ । ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ द्वितीय वलयपूजा विधि ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ प्रथम वलयमे एक मध्य, चार दिश, चार विदिश, एव अष्टदल कमलके आकार नवकोठा मण्डलके मध्यभागमें होय । उनोकी पूर्वोक्त प्रकार पूजा करै ॥ (पीछे) दूसरा वलयमें चूडीके आकार १६ कोठा होय । (जिसमे) एकेक कोठाके अनतर आठ कोठामें, अवर्गादि आठ वर्ग स्थापन करे । (और) एकेक कोठा वीचमें खाली रहा है (उसमें) अनाहत पद (ॐ ह्री णमो अरिहताण) ऐसा पदस्थापन करै ॥ (पीछे) एक रकेबीमे, मिश्री लवग (तथा) एक रकेबीमें मोटी दाखा लेके खमा रहै । अनाहत पदमें मिश्री, लवंग, चढावे ॥ और आठ वर्गमें दाषा चढावे॥ (यथा) ॐ ह्री णमो अरिहंताण श्री लवग चढावै ॥ १ ॥ अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ अः ॐ ह्री स्वर वर्गाय नमः ॥

(इहा) १६ दाख चढावै ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं णमो अरिहंताण ॥ मिश्री लवग ॥ ३ ॥ क ख ग घ ङ । ॐ ह्रीं व्यंजन कवर्गायैनमः ॥१६॥ दाखच०॥४॥ ॐ ह्रीं णमो अरिहंताण ॥ ५ ॥ चछजझञ । ॐ ह्रीं चवर्गायैनमः॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं णमो अरिहंताण ॥ ७ ॥ टठडढण । ॐ ह्रीं टवर्गायैनमः ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं णमो अरिहंताण ॥ ९ ॥ तथदधन । ॐ ह्रीं तवर्गायै नम ॥ १० ॥ ॐ ह्रीं णमो अरिहंताण ॥ ११ ॥ पफबभम । ॐ ह्रीं पवर्गायैनमः ॥१२॥ ॐ ह्रीं णमो अरिहंताण ॥ १३ ॥ यरलव । ॐ ह्रीं यवर्गायैनमः ॥ १४ ॥ ॐ ह्रीं णमो अरिहंताण ॥ १५ ॥ शषसह । ॐ ह्रीं शवर्गायैनमः ॥ १६ ॥ पहला अवर्गसें, पवर्गतक, वर्गदीठ १६ सोळे दाख चढावै ॥ सब ९६ द्राख (और) यरलव १। शषसह २। यह दो वर्गमें ६४ द्राख चढावै ॥॥ इति दूसरा वलय पूजनविधिः ॥ ॥ ॥ ॥

॥ अब (तीसरा वलयमें) चार दिश, चार विदिशमें आठ परमेष्टी, पद स्थापन निमत्त आठ कोठा करै ॥ इस आठ कोठाके बीच बीचमें वलाका तीन तीन दवे ॥ तीनु वलाकामें २४ खाना करै ॥ एकेक खानेमें दो दोय लब्धि पद स्थापन करनेसें। चोवीस घरमें ४८ लब्धिपद स्थापन पूजन करना॥

॥ ॥ अथ लब्धिपद पूजनविधि ॥ ॥

॥ ॥ आठ परमेष्टी पदोंमें । ॐ ह्रीं परमेष्टिने नमः स्वाहा ॥ ऐसा ८ वेर कहके ८ बीजोरा चढावै (और) लब्धि पदका नाम बोलके खारका ४८ चढावै ॥ (यथा) ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो जिणाण ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो ओहि जिणाण ॥२॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो परमोहि जिणाण ॥३॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोहि जिणाण ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो अणंतोहि जिणाण ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो कव्वुद्धीण ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो बीयबुद्धीण ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो पयाणुसारीण ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो आसीविसाण ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो दिठी विसाण ॥ १० ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो सभिन्नसोयाण ॥ ११ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो सयसंबुद्धाणं ॥ १२ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो पत्तेय बुद्धाण ॥ १३ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो बोहि बुद्धीण ॥ १४ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो उज्जुमईणं ॥१५॥ ॐ ह्रीं अर्हं विउलमईण ॥ १६ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो दसपुव्वीण ॥ १७ ॥ ॐ ह्रीं

अर्हं णमो चउदश पुव्वीणं ॥ १८ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो अठ्ठ निमंत्त कुशलाण ॥ १९ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउव्वण इड्डिपत्ताण ॥ २० ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो विज्जाहराण ॥ २१ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो चारण लब्धीणं ॥ २२ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो पण्णसमणाण ॥ २३ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो आगासगामीण ॥ २४ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो खीरासवेण ॥ २५ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो सप्पिया सवाण ॥ २६ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो मडुआसवाण ॥ २७ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो अमियासवाणं ॥ २८ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो सिद्धायणाणं ॥ २९ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो भयवया महाइ महावीर वद्धमाण बुद्धरिसीण ॥ ३० ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो उग्गतवाण ॥ ३१ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो अक्खीण महाणसियाण ॥ ३२ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो वद्धमाणाण ॥ ३३ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो दित्ततवाण ॥ ३४ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो तत्ततवाण ॥ ३५ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो महातवाण ॥ ३६ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोर तवाणं ॥ ३७ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोर गुणाण ॥ ३८ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोर परिक्कमाण ॥ ३९ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोर गुण बम्भयारीण ॥ ४० ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो आमोसही पत्ताण ॥ ४१ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो खेलोसही पत्ताण ॥ ४२ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो जल्लोसही पत्ताण ॥ ४३ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो विप्पोसही पत्ताण ॥ ४४ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोसही पत्ताण ॥ ४५ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो मणवलीण ॥ ४६ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो वयण वलीण ॥ ४७ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो कायवलीण ॥ ४८ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं अम्रुपललब्धि पदेभ्योनमः ॥ * ॥ इसीतरे लब्धिपदका नाम बोल २ के तीजे चौथे पाचमें वलयमें खारका सब ४८ चढावे ॥ (पीछे) मम्मलजीके गलेके स्थानके ह्रीं कारजी स्थापन कि । है (जहांसें) साढातीन वलाका, मम्मलजीके चोतरफ टेके नीचे(क्रौं) ऐसा अक्षर लिखा है (जिसके) प्रथम वलयमें, आठे दिशाये, आठ गुरु पादुका स्थापन करके ८ दाम मफल चढावे ॥ (यथा) ॐ ह्रीं अर्हत् पादुकाभ्योनमः ॥ १ ॥ (दाडम चढावै) ॥ ॐ ह्रीं सिद्ध पादुकाभ्योनमः ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं आचार्य पादुकाभ्योनमः ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं गुरुपादुकाभ्योनमः ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं परमगुरु पादुकाभ्योनमः ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं अदृष्टगुरु पादुकाभ्योनमः ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं अनत

गुरुपादुकाभ्योनम.॥७॥ ॐ ह्रीं अनंतानंत गुरुपादुकाभ्योनम॰ ॥८॥ ॐ ह्रीं श्रीअष्टगुरु पादुक भ्योनम॰ स्वाहा ॥ इसीतरे छठावलयमें ८ दामम चढावे ॥ (पीछे) सातमा वलयमें आठे दिशायें । जयादिक ८ देवीकों स्थापन कर के ।८ नारंगी चढावै ॥(यथा) ॐ ह्रीं जयायैनमः स्वाहा॥१॥ ॐ ह्रीं जम्भायै नम॰ स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं विजयायैनमः स्वाहा ॥३॥ ॐ ह्रीं अजितायैनम॰ स्वाहा ॥४॥ ॐ ह्रीं जयन्त्यैनम॰ स्वाहा॥५॥ ॐ ह्रीं मोहायै नम॰ स्वाहा॥६॥ ॐ ह्रीं अपराजितायैनम॰ ॥७॥ॐ ह्रीं अ ायै नम॰ ॥८॥(इसीतर) सातमा वलयमें ८ नारंगी चढावै ॥०॥ (पीछे) आठमा वलयमें। १६ विद्यादेव्याकों स्थापन करके चादीका वरग लगाइ भई १६ सुपारया चढावै ॥ (यथा) ॥ ॐ ह्रीं रोहिण्यैनम, ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं प्रज्ञप्त्यैनम ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं वज्रशृंखला यैनम. ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं वज्राकुशायैनम. ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं चक्रेश्वर्यैनम॰ ॥५॥ ॐ ह्रीं पुरुष दत्तायैनम॰ ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं काल्यैनमः ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं महाका ल्यैनम॰ ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं गौर्यैनमः ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीं गंधार्यैनम॰ ॥ १० ॥ ॐ ह्रीं सर्वास्त्र महाज्वालायैनम॰ ॥ ११ ॥ ॐ ह्रीं मानव्यैनम॰ ॥ १२ ॥ ॐ ह्रीं वैरोट्यायैनम. ॥ १३ ॥ ॐ ह्रीं अच्छुप्तायैनमः ॥ १४ ॥ ॐ ह्रीं मानस्यैनमः ॥ १५ ॥ ॐ ह्रीं महामानस्यैनम. ॥ १६ ॥ (इसीतरै) आठमा वलयमें चारु तरफ १६ विद्यादेवीकों १६ सुपारी चढावै ॥ ४ ॥ (पीछे) नवमा वलयकै वामवासे । २४ शाशनदेव्याकों स्थापन करके २४ सुपारया चढावै॥ (यथा) ॥ ॐ चक्रेश्वर्यैनमः ॥ १ ॥ ॐ अजितबलायैनम ॥ २ ॥ ॐ दुरि तायैनम ॥ ३ ॥ ॐ काल्यैनम ॥ ४ ॥ ॐ महाकाल्यैनमः ॥ ५ ॥ ॐ श्या मायैनम ॥ ६ ॥ ॐ शातायैनम ॥ ७ ॥ ॐ भृकुटियैनमः ॥ ८ ॥ ॐ सुतार कायैनमः ॥ ९ ॥ ॐ अशोकायैनमः ॥ १० ॥ ॐ मानव्यैनमः ॥ ११ ॥ ॐ चण्डायैनम. ॥ १२ ॥ ॐ विदितायैनमः ॥ १३ ॥ ॐ अकुशायैनमः ॥ १४ ॥ ॐ कदर्पायैनम॰ ॥ १५ ॥ ॐ निर्वाण्यैनम॰ ॥ १६ ॥ ॐ बलायैनम॰ ॥१७॥ ॐ धारण्यैनमः ॥ १८ ॥ ॐ धरणप्रियायैनमः ॥१९॥ ॐ नरदत्तायैनमः॥२०॥ ॐ गांधार्यैनम. ॥ २१ ॥ ॐ अंबिकायैनम. ॥२२॥ ॐ पद्मावत्यैनमः ॥२३॥ ॐ सिध्धायिकायैनमः ॥ २४ ॥ इसीतरै वामपासे २४ ॥ देव्याकी स्थापना करै ॥ (पीछे) दक्षिणपासे २४ यक्षराजकी स्थापना करके २४ सुपारी

चढावे ॥ (यथा) ॥ ॐ ब्रह्मशांतयेनमः ॥ २४ ॥ ॐ पार्श्वायैनमः ॥ २३ ॥ ॐ गोमेधायनमः ॥ २२ ॥ ॐ भृकुटयेनमः ॥ २१ ॥ ॐ वरुणायनमः॥२०॥ ॐ कुवेरायनमः ॥१९॥ ॐ यक्षराजायनमः ॥१८॥ ॐ गंधर्वायनमः ॥१७॥ ॐ गरुडायनम. ॥ १६ ॥ ॐ किन्नरायनम ॥ १५ ॥ ॐ पातालायनमः ॥ ॥ १४ ॥ ॐ षण्मुखायनमः ॥ १३ ॥ ॐ कुमारायनमः ॥ १२ ॥ ॐ यक्षराजायनमः ॥ ११ ॥ ॐ ब्रह्मणेनमः ॥ १० ॥ ॐ अजितायनमः ॥ ९ ॥ ॐ विजयायनम. ॥ ८ ॥ ॐ मातंगायनमः ॥ ७ ॥ ॐ कुसुमायनमः ॥ ६ ॥ ॐ तुंवुरवेनमः ॥ ५ ॥ ॐ यक्षनायकायनमः ॥ ४ ॥ ॐ त्रिमुखायनमः ॥३॥ ॐ महायक्षायनमः ॥ २ ॥ ॐ गोमुखायनमः ॥ १ ॥ इसो तरे नवमा वलयके दहिणेपासे २४ यक्षकी थापना करके २४ सुपारी चढावे ॥ (पीछे) चारे दिशायें ४ द्वारपालकी स्थापना करके । पीला वलवाकुल चढावे ॥ (यथा) ॐ कुमुदायनमः ॥ १ ॥ (पूर्वदिशी) ॥ ॐ अंजनायनमः ॥ दक्षिण०॥ २ ॥ ॐ वामनायनमः ॥ (पश्चिम) ॥ ३ ॥ ॐ पुष्पदंतायनमः ॥ ४ ॥ उत्तरदिशि ॥ ※ ॥ (पीछे) चार विदिशाकीतरफ चार वीर पदे कृष्ण वलवाकुल चढावे ॥ (यथा) ॐ माणिभद्राय नमः ॥ १ ॥ ॐ पूर्णभद्रायनमः ॥ २ ॥ ॐ कपिलायनमः ॥ ३ ॥ ॐ पिंगलायनमः ॥ ४ ॥ ॥※॥ इसीतरे दशमा वलयमें आठ दिशायें । ४ द्वारपाल । ४ वीर स्थापन करै ॥ (पीछे) पूर्ण कलशके आकार, ऊपरसें किया हुवा, सिद्धचक्रजीके गलेके स्थानक, नवनिधान पदे, नव सोने चांदी आदिकका कलशामे यथाशक्ति रोकनाणो घालके स्थापन करे ॥ (यथा) ॐ नैसर्पकायनमः ॥ १ ॥ ॐ पाण्डुकायनमः ॥ २ ॥ ॐ पिंगलायनमः ॥ ३ ॥ ॐ सर्वरत्नायनमः ॥ ४ ॥ ॐ महापद्मायनमः ॥ ५ ॥ ॐ कालायनमः ॥ ६ ॥ ॐ महाकालायनमः ॥ ७ ॥ ॐ माणवायनमः ॥ ८ ॥ ॐ शंखायनमः ॥ ९ ॥ इसीतरे मुखस्थानके नवनिधानपदे ९ कलश स्थापन करे ॥ ※ ॥ (पीछे) कोहलोफल हाथमें लेके । दक्षिण नेत्रके बरावर पासमें वंगलीका आकार किया है ॥ (जहां) ॐ ह्रीं विमल स्वमिनेनमः ॥ १ ॥ ऐसा कहके चढावे । (फेर) कोहलोफल हाथमें लेके वामनेत्रपासे वंगलीमें (ॐ क्षेत्रपालायनमः) ॥ ऐसा बोलके चढावे ॥ २ ॥ (पीछे) तीसरो कोह

लोफल हाथमें लेके, अध पीठीके दहिणेपासे वगलीमें (ॐ चक्रेश्वर्यैन म ॥) ऐसा बोलके चढावै ॥ ३ ॥ (पीछे) चोथो कोहलोफल हाथमें लेके नीचे पीठाके वामपासे वगलीमें (ॐ अप्रसिद्ध सिद्धचक्राधिष्टाय कायनमः) ॥ ऐसा बोलके चढावे ॥ ४ ॥ (पीछे) दशोदिशायें इंद्रादिक दशादिग्पालकों स्थापन करे (वनसकेतो) अपना २ वर्णमुजब वस्त्र नेवे च पुष्पादि द्रव्य चढावे (अथवा) सर्वकों एक द्रव्य सर्व समान चढावे (यथा) ॐ इंद्रायनमः ॥ १ ॥ कनकवर्ण । चदन, केशर, चपो, द्राख, पीनोवस्त्र, पान, सुपारी, रोकनाणो, आदि सर्व द्रव्य चढावे ॥ १ ॥ १ ॥ (अग्निकूणे) ॐ अग्नयेनम ॥ २ ॥ रक्तवर्णका वस्त्रादिक द्रव्य चढावे ॥ २ ॥ (दक्षिणदिशि) ॐ यमायनम ॥ ३ ॥ कालैवर्णका वस्त्रादि द्रव्य चढावै ॥ ३ ॥ (नेऋतकूर्ण) ॐ नैऋतायनम ॥ ४ ॥ धूसरवर्णका वस्त्रादिक द्रव्य चढावे ॥ (पश्चिमदिशि) ॥ ॐ वरुणायनम ॥ धूसरवर्णका सव द्रव्य चढावे ॥ ५ ॥ (वायव्यकूणे) ॐ वायवेनम ॥ ६ ॥ नीलवर्णका वस्त्रादिक द्रव्य चढावे ॥ ६ ॥ उत्तरदिशि) ॐ कुबेरायनमः ॥ ७ ॥ सपेद वर्णका वस्त्रादिक द्रव्य चढावे ॥ ७ ॥ ईशानकूणे) ॐ ईशानायनम ॥८॥ सपेद वर्णका वस्त्रादिक द्रव्य चढावे ॥ ८ ॥ (अधोदिशिः) ॐ नागायनम ॥ ९ ॥ सपेदवर्णका वस्त्रादिक द्रव्य चढावे ॥ ९ ॥ (ऊर्ध्वदिशि) मस्तके । ॐ ब्रह्मणेनम ॥ १० ॥ सपेदवर्णका वस्त्रादि सर्व द्रव्य चढावे ॥ इसीतरे दशदिग्पालको स्थापन पूजन करै ॥ ॥ (पीछे) नीचे पीठी स्थनकके वीचमें ९ कोठा किया हुवा है (जहां) नवग्रहको स्थपना पूजा करै ॥ (यथा) ॐ सूर्यायनम ॥ १ ॥ लालवर्णका वस्त्रादिक द्रव्य चढावे ॥ १ ॥ ॐ सोमायनम. ॥ सपेदवर्ण वस्त्रादिक द्रव्य चढवे ॥ २ ॥ ॐ भोमायनम ॥ लाल रग वस्त्रादिक द्रव्य० ॥ ३ ॥ ॐ बुधायनमः ॥ ४ ॥ मुंग रंगका वस्त्रादि द्रव्य चढावे ॥ ४ ॥ ॐ बृहस्पतयेनम ॥ पोनेवर्ण वस्त्रादिक द्रव्य चढावे ॥ ५ ॥ ॐ शुक्रायनम ॥ सपेदवर्ण नादोल वस्त्रादि द्रव्य चढावे ॥ ६ ॥ ॐ शनिश्चरायनम नीलरंगका वस्त्रादि द्रव्य चढावे ॥ ७ ॥ ॐ राहवेनम ॥ काले रंगका वस्त्रादि द्रव्य चढावे ॥ ८ ॥ ॐ केतवेनम ॥ धीट रंग वस्त्रादि द्रव्य चढावे ॥ ९ ॥ इसीतरे नीचे नवग्रहको स्थापना

करै (पीछे) स्नात्र, नवपदजीकी पूजा करायके । आरती नवपदजीकी करै पीछे नवपदको चैत्यवंदन करै॥ उप्पन्नसन्नाण०(तथा) जोधुरि श्रीअरिहंत मूलदढ पीठपइठियो । सिद्ध सूरि उवझाय साहु चिहु साह गरठ्ठि । दश ण नाण चरित्त तव पडिगाहे सुंदरू ॥ नतक्खर सिरि वग्ग लद्धि गुरु पयद लमवरू । दिगिवाल जक्ख जक्खणीपमुह सुरकुशमेहि अलंकियो । सो सिद्धचक्र गुरु कप्पतरु अह्ममन वंछिय दियउ ॥ १ ॥ (पीछे) । जकिंचि नमोत्थुणं० नमोर्हत सिद्धा० कहके । नवपदजीको स्तवन ॥ उप्पन्न सन्नाण महोमयाण० आदिस्तवन कहके । जयवीयराय अनत्थू कहके १ नव० कावसग्ग करे ॥ नवपद स्तुति कहै ॥ (पीछे) गुरूकेपास आयके वासक्षेप लेके ग्यानपूजा, गुरुपूजा करै ॥ धूप खेवै । रोकनाणो चढावे ॥ (पीछे) यथाशक्ति साधर्मीवात्सल्य करै ॥ इति नवपद मन्डल पूजन विधिः ॥ अब जाणना चाहिये (कि) जब कोई श्रीमंत ओलीकी तपस्या करै तब तो छए महिने मंडल पूजा विस्तार विधीसाथ कराता रहै ॥ और तपस्या ४॥ साढाचार बरसमें पूरण होय (तब) वडाउछ्रवकेसाथ मंडल रच ना पूजा करै ॥ उद्यापन करै ॥ सपूर्ण देवखातै, ग्यानखातै, गुरुखातैका उपगरण नव नव करायके । प्रथम धर्मशालामें सुशोभित करै । दशपनरैदिन जलजात्रादि अनेक तरैका उछव करै ॥ (पीछे) देवका देवखातै देवै । ग्यानका ग्यानखाते । गुरूका गुरूखाते । उपगरणादि द्रव्य देवै ॥ (और) क्रुद्धीरहित क्रिया भावसें सपूर्ण करै । द्रव्यपूजा अपनी शक्ति मुजब करै॥ (और) पचायती सघ तरफसें मगलीक अर्थ छए महिने मन्डल रचना नवपद पूजा अवश्य पूर्वोक्त विधिसहित करता रहे ॥ ओली करनेंका विधि (तथा) नवपद पूजा, स्तवन, थूई, संपूर्ण, इस रत्नसागरका प्रथम भागमें लिखा गया है (इससें) इहा न लिखा है । उसमुजब करें, करावै ॥ ॥ ※ ॥ इति विशेष विधि ॥ ※ ॥ ॥ ॥

॥ ※ ॥ अथ संघमालारोपण विधि लि०॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ प्रथम मालारोपणका मंहूर्तके पहलेदिन मध्यान्हसमे सुहाग णस्त्री, चादी आदि [illegible] के भीतर, कुकुको साथियो करके, ऊपर चाव लाको करै । पाच [illegible] र १ धरी । माला पधरावी सुहागणस्त्री अप

ने हाथसें मस्तकपर धरे। (पीछे) सारै सघसहित गीत गावते वाजित्र वाजते गुरूपासे आवै ॥ सघवस्त्री गवली करै। और स्त्रीया गवलीगावे ॥ (पीछे) गुरू उर्द्धस्वासे, वर्द्धमानविद्या मन्त्रेकरी वासक्षेप मुष्टीन्करी माला प्रतिष्टत करै (यथा) ॥ ॐ ह्रीं णमो अरिहंताण। ॐ ह्रीं णमो सिद्धाण। ॐ ह्रीं णमो आयरियाण। ॐ ह्रीं णमो उवझायाण। ॐ ह्रीं णमो लोए सव्व साहूण। ॐ ह्रीं णमो अरहंत भगवंत वद्धमाणस मिस ।९ जए विजये जयते अपराजिए सवठसिद्धिए ॐ ह्रीं ठ ठ. ठः स्वाहा॥इति वद्धमान विद्या॥इसीतरे मालापर वाशक्षेप करायके वाजित्र वाजते स्वस्थानक आवै। वाजोट ऊपर थाल रक्खे। धूप दीप सहित रात्री जागरण करै। श्रीफलादिककी प्रभावना करै। (पीछे) माला ग्राहक प्रभातरूमें प्रतिक्रमण करके पडिलेहण देव वदनादि करे। जिनपूजा करे (पीछे) मङ्गलवेलाये वाजित्रादि उत्सव सहत सघसाथे गुरूपासे आवै। पाच श्रीफल रोकनाणो हाथमें लेके। नादकों ३ प्रदक्षिणा देके भेट करे। नादके चौतर्फूणें साथियाचार कुंकु चावलका करें॥ ऊपर अच्छा विदामादि फल चढावे॥ (पीछे) मालाग्राहक चरवलो मुहपत्ती हाथमें लेके गुरूकेसाथ इरियावही पडिक्कमें ॥ (पीछे) श्रावक खमासमण देई मुहपत्ती पडिलेहै॥ फेर खमासमण देके, इच्छकार भगवन् तुह्मे अह्म सघपति माला आरोहावणि देववदामणि वाश निक्षेप करो (तव) गुरू वाशक्षेप करे (पीछे) फेर खमासमण देई तुह्मे, अह्म सघपतिमाला आरोहावणी देववदावो (गुरुकहे वदेह) श्रावक इच्छ कही गुरूकेसाथ देववदन करे॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ देववदन विधि ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ प्रथम खमासमण देके इच्छा० भगवन् चैत्यवदन करु (गुरुकहे करेह) पीछे, गुरू चैत्यवदन बोले॥ श्रावक नमोत्थुण कहै॥ अरिहतचेइ० कही। एक नवकारको काउस्सग करे। नमोऽर्हत् सिद्धा० कहके। गुरु, स्तुति कहे (यथा) अर्हस्तनोतु सश्रेय। श्रिय यध्याननो नरै। अप्येंद्री सक लाप्नेहि। रहसा सहसोच्यते॥ १॥ (पीछे) लोगस्सउज्जो० । सवलो ए०। वदन०। अनत्थू० कहके १ नवका०॥ (स्तुति कहै)॥ ॐ मिति मताप। शासनस्य नता सदायदङ्घ्रीच। आश्रियते श्रियाते। भवतो २ जिना

पातु ॥२॥ (पीछे) पुक्खरवरदी० वदन० कहके १ नोकार० करै (स्तुति) नवतत्वयुता त्रिपदी । मिश्रेता रुचिङ्ग न पुण्यशक्तिमता । वरधर्म कीर्तिविद्या । नद्यास्याङ्कैनगी ज्जीयात् ॥ ३ ॥ (पीछे) सिद्धाणं बुद्धाण० ममदिसंतु, यावत्कहै ॥ (ततः) श्रीशातिनाथ आराधनार्थं करेमिका० । वदन० । अनत्थू० कहके । एक लोगस्सको कावसग्ग करै ॥ नमोर्हत्०। (स्तुति०) ॥ श्रीशातिश्रुतशाति । प्रशातिको वशाति मुपशाति । नयतुसदा यस्यपदा सुशातिदाः शातिजिने ॥ ४ ॥ (ततः) द्वादशागी आराधनार्थं क० । वंदन० एक नोकारको का० । पारके नमोर्हत्०। सकलार्थ सिद्धिसाधन । बीजो पागा सदास्फुरदुपागा । भवतादनुपहतमहा । नमो पहा द्वादसागीव ॥ ५ ॥ (ततः) सुअदेवयाए आराधनार्थं क० ॥ अनत्थू० कहके १ नव कार० (नमो०) वदवदती वागवादनी । भगवति कः श्रुतगमेञ्जु । रगात रगमितिवर । तरणीस्तुल्य नमङ्तीहः ॥ ६ ॥ (ततः) शासन देवता नि मित्त करे० । अनत्थु कही १ नवकार० (स्तुतिः) उवसर्ग विलय विध न । निरती जिन सासनावनै करता । द्रुतमिह समिहो तत्कते । स्युशासनै देवताभवतु ॥ ७ ॥ (पीछे) समस्त वेयावचगराणं शातिकराणं समदिठि समाहि० । अनत्थू० । १ नवकार० । (स्तुति) सघत्रये गुरु गुणौघ निधौसुवैया । वत्यादिकत्य करणैक निबद्धकक्षा । तेशातये सहभवतु सुरा सुरीभिः । सधृष्टयो निखिलविघ्न विघातदक्षा ॥ ८ ॥ प्रगटपणे एक नवकार, नमोत्थुण०, जावतिचेइ०, नमोर्हत्० कहके स्तवन कहै ॥ ॐ मिति नमो भगवउ । अरिहत सिद्धाचारिय उवज्झाए । वरसव्वसाहु मुणिस घ । धम्मतित्थय पवयणस्स ॥१॥ सप्पणव नमो तह भगवइ । सुअदेवयाइ सुहयाए । सिवसति देवयाय । सिवपवयणदेवयाणच ॥ २ ॥ इदागणीयमने रइया । वरुणो वायु कुबेर ईसाणा । बभो नागुत्ति दसम । मविय सुदिसाण पालाण ॥ ३ ॥ सोम यम वरुण वेसमण । वासवाण तहेव पचन्ह । तह लोगपालयाणं । सुराई गहाणय नवन्ह॥४॥साहतस्स समक्ख । मज्झमिणचेव धम्मणुठाणं । सिद्धिमविग्घ गच्छउ । जिणाण नवकार उ भणिय ॥ ५ ॥ इति स्तवन ॥ जयवीयराय) भगवान आगे पमदा करके माला ग्राहक, गुरू मतई पे पादे (पीछे) खमा होके कहै

इच्छकारेण० तुह्मे अह्म सघपतिमाला आरोहावणी उद्देसावणी नदीसूत्र सम्म लावणी काउसग्ग करावो । (गुरु कहे करेह) इच्छ, सघपतिमाला आरो० उद्दे० करेमिकाउसग्ग ॥ अनत्थू० कहके १ लोगस्सको का० ॥ प्रगट लोगस्सकहे ॥ गुरुपिण काउसग्ग करे ॥ (पीछे) मालाग्राहक खमासण देई । इच्छकार भगवन नंदीसुत्र सम्भलावो (तव) गुरू ऊभा होके हाथ मा, वासक्षेप लेके (तीन नवकार सुणावे) नित्थारग पारगाहोह कहके मस्तकपर वासक्षेप करे ।(पीछे) श्रावक खमासमण देके इच्छा० सघपति माला उद्देसउ (गुरु० उद्देसउ)। फेर श्रावक इच्छामि० इच्छाका० । किम्भ णामी (गुरु० वदित्तापवेह) फेर खमा० । इच्छतुह्मे अह्म सघपतिमाला उद्दिठं । इच्छामो अणुसठि ॥ उदिठि २ खमासमणाण । हत्थेण । सुत्तेणं । अत्थेण । तदुभयेण । जोगकरी जाहि । गुरुगुण वुद्धि जाहि । नित्थारग पारगाहोह ॥ (फेर) खमासण देई तुह्माण पवेइए सदिसह साहुण पवेमी ॥ (गुरुकहै पवेह) पीछे खमासण देके तीन नवकार गुणता नादकों ३ प्रदक्षिणा देवें । वासक्षेप चढावे ॥ गुरू १ प्रदक्षिणा देवे (पीछे) माला ग्राहक मुहपत्ती पडिले है ॥ खमासण देके । इच्छा० । तुह्माण पवेइय सदिसह भगवन् काउसग्गं करे मी । इच्छामि० । इच्छाका० भगवन् तुह्म अह्म सघपति माला उद्देसामणी आरोहावणी करेमि काउसग्ग ॥ अन्नत्थ् कहके १ लोगस्सको का० । प्रगट लोगस्स कहे । (पीछे) खमासण देके वेसणोसदीसाउ । दूजे ख मासणें वैसणेठाउ । पीछे खमासण देके जो विधि करता अवधि आसात ना लागी होय । ते सहू मन वचन कायायें करी मिच्छा० ॥ इति नादकी किरिया ॥ (पीछे) मालाग्राहक भगवानके नव अगें नव रुपिया आदि चढाके नमस्कार करे । महूर्त वेलाये मदरजी वाहर जागा होय तो भग वानके सन्मुख सव सघ आयके खमा रहे । पीछे माला ग्राहक गुरूकेपास आके नव अग पूजा करे । नव रुपिया आदि शक्ति प्रमाणें ग्यानरुची निम त भेट करे ॥ (पीछे) गुरू उर्द्धस्वासें माला हाथमालेके ७ नवकार गुणें । (पीछे) जो माला पहिरावे जिसकों माला पहरनार यथा शक्ति पहिरामणी करे । माला पहिरावणेवाला उर्द्धस्वासें करी सघ पतिकों माला

पहिरावै ॥ दोनु जिणा ८ दिनतक सचित्त कुशीलादिकका गुरूपासे पच्च रकाण करे । (पीछे) मदरजीके ऊपर चढानेकों धजावनाई होय (सो) धजा हाथमें लेके गीतगान वाजित्रादिसहत मदरजीके वाहर कर ३ प्रद क्षिणा देके, गुरूकेपास वासक्षेप पूजन कराके मंदरजीपर धजा चढावे। (पीछे) सर्व सघके सन्मुख गुरु धर्म देशना देवे ॥ साधर्मी वात्सल्य करे ॥ ७ ॥ इति सघपति मालारोपणविधि ॥ ॥ ॥

॥ ॥ अथ उपधान तप नित्यकर्तव्यता ॥ ॥

॥॥ अथ नित्य कर्तव्यता माह ॥ नित्य कर्त्तव्यता कापि शास्त्रोक्ता। कापि शाप्रत दृश्यमानपरंपरागम्या (तथाहि) उपधाने श्रावकैः विकृति मध्ये एक घृतमेवग्राह्य । नान्याकापि विकृतिः ॥ १ ॥ उपधाने त्रिशान्नि विकृतिका ना मध्ये एक मपि निर्विकृतिकग्राह्य । तथा निधिकारणे तु सति खम्मादि ग्रहण यतनयाकार्य ॥ २ ॥ उत्कटद्रव्याण्यपि न ग्राह्याणि ॥ ३ ॥ आद्र हरितशाकोपि न ग्राह्यः ॥ ४ ॥ घृत तैलादि व्याघारितशाकोपि न ग्राह्यः धूमितस्तु ग्राह्य ॥५॥ तलित पर्पट सीरावटिकादिकमपि न ग्राह्य॥ ६ ॥ अन्नादि परिवेषिकास्त्री कृत रात्रि प्रायश्चित्ताशुध्यतिनान्यथा ॥७॥ अन्नादि परिवेषकाया वस्त्राणि दमिता खम्मितादिकानि न शुध्यति ॥ ८ ॥ जेमना च्छिन्नूमस्थान मपि व्रत प्रायश्चित्तया खम्मितादि वस्त्ररहितया प्रमार्जित शुध्यति ॥९॥ यावंति वस्त्राद्युपकरणानि तप.प्रवेश प्रथम दिने गृहीतानि भवति तानि सर्वाण्यपि भोग्याभोग्यानि उभयकाल प्रतिलेखनीयानि ॥१०॥ जे मन स्था लीकचोलिकादिनि तु जेमनदिने पादोनप्रहर प्रतिलखनासमये प्रतिलेखनीयानि नान्यदा नान्यथा ॥ ११ ॥ कदाचित् हारकुम्मलादिकं ग्रहण स्वदेहादुत्तार्य स्वगृहादौमोच्य भवेत् तदा विनोपधान ययास्त्रिया अहोरात्र पौषधोगृहीतोभवे तस्पाहस्ते रात्रौ। नतुदिने उपधान वाहिन्यादेह साच प्रातस्तदुक्तस्थाने मुचति ॥ १२ ॥ उपधाने सर्वाणि वस्त्राणि स्वयंवा १। मालिकयावा २ ॥ प्रतिले खितानि शुध्यति ॥ १३ ॥ सर्व क्रियानुष्टानमादेशनिर्देशादिक मालकाय आदेशेन शुध्यति ॥ १४ ॥ क्रियानुष्टानकारिका मालिकापि उभयकाले प्रतिक्रमण करोति ॥रात्रि प्रायश्चित्तकरोति। सप्तवारान् देव वदति। तदा शुध्य ति नान्यथा ॥१५॥ रजस्वलाया दिनत्रय तपसिन पतति ॥१६॥ महास्वाऽ

ध्यायसरक ७।८।९ सप्तम्यादि दिनत्रय तपसि न पतति ॥ १७ ॥ प्रतिक्रम णमध्ये प्रभाते नमस्कार प्रत्याख्यानमेवकार्यं (ततो) गुरु समीपे कि यावसरे । उपवास १। आचाम्ल २। निर्विकृतिक ३। एकाशनवाकार्यं ॥१८॥ प्रत्याख्यान पारणसमये पूर्वं नमस्कार प्रत्याख्यान पारयति । ततः उपवा सादिक ॥ १९ ॥ प्रथमापधान द्वय प्रवेशदिने मालादिनेच नद्यावरेण उत्सूरिता भवति ॥ पौषधादि कर्तुं न शक्यते । तदा तृतीय प्रहर प्रतिलेखनान तर सर्वोपकरणानि प्रतिलेख्य रात्रौ पोषधो वश्य ग्राह्यः ॥ २० ॥ प्रातरुप धानवाही गुरुसमीपे समागत्य इर्यापथिकी प्रतिक्रम्य पौषधसामायिकं च लात्वा प्रतिलेखना मग प्रतिलेखना च करोति । ततो मुखवस्त्रिका प्रतिलेख्य उंही पमिलेहण सदेसामि । उंही पमिलेहण करेमि । इति क्षमा श्रमण द्वय टदाति । ततो वंदनक षट्कदानानंतर क्षमा श्रमण दशकददाति॥तत्क्रमश्चाय बहुवेल संदि० । बहुवेलं करेमि । बइसण स० । बइसण ठा० । सिझा य स०। सिझाय क० । पागुरण स० । पागुरण पमिग्गाहेमि । कट्ठासण स० । कट्ठासण० ॥ २१ ॥ ततो वंदनकदानपूर्वं सुखतपः पृच्छा ॥ २२ ॥ सध्यायामप्येव क्रियाकरण (नवर) ८र्त्ते प्रतिलेखना अंगप्रतिलेखनाच करोति । न उंही प्रतिलेखना । ततो गुरोर्वंदन षट्कदानानंतर क्षमाश्रमण दशकदानमेव उंही पमिलेहण स० । उंही पमिलेहण क० २ । सज्झाय स० ३। सज्झाय क० ४। बइसण स० ५। बइसण ठायेमि ६। शेष पूर्ववत् ॥ २२ ॥ पृथक् प्रतिक्रमण सद्भावात् पाक्षिकवंदनकानि सुखतपः पृच्छापर्यंता क्रिया सर्वमपि कृत्वादेयानि ॥२३॥ मालापरिधाने सध्यायाः मालामभिमंत्रयित्वा । स्वगृहे रा त्रिजागरणकृत्वा । प्रातर्गत्वेश पार्श्वे मालापरिधातव्या । तदनुतद्दिनाद्दिनदशक दशाहिकाकार्या तत्र पौषधग्रहणा भावेपि त्रिविधाहारमेकाशन कुर्वन् उपधान वाहीनिरारम्भस्तिष्ठति ॥ २४ ॥ सर्वाण्यपि उपधानानि उत्कृष्टविधिनावहनी यानि । तदभावे श्रावकैरेकांतरोपवासैः साधु भिस्तु उपवासाचाम्ल निर्विकृतिके काशनैः कृत्वा तावत उपवासापूरणीयाः । न दिनसंख्यानियमोस्ति ॥ इति नित्य कर्तव्यता श्रीसमयसुंदरोपाध्याय कृतोय विधिः ॥*॥ ॥*॥

॥ * ॥ अथ उपधान तप विधि ॥ * ॥

॥ * ॥ पंचमंगले सुयक्खंधे । दुवालसतवोपुव्वि । तओ पंचण अज्झय

णाण। नमो अरिहंताण (इत्यतआरभ्य) नमो लोए सव्वसाहूण। यावत्, एगावायणादिज्जई ॥ इत्ति पुण अझयणाअठ। तओ अणंयविल अठमच ३ तओ तिण्णि अझयणाण। एसोपंच नमोकारो (इत्यतआरभ्य) पढम हवई मगलं, यावत् वीयावायणादिज्जइ २ ए पहिलो उपधान ॥ पचमंगल महासुयस्कधनउ कारन। पोसह अविधइ २० ॥ उपवास १२॥ विधिसुवहता १६ पोसा। उपवास १२॥ ए पहलो वीनम्नतप २० ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ एमेव इरियावहिया सुयक्खधेवि । अठअझयणा तिन्निचरमाणि चूलाभन्नइ। तत्थदुवालसमतवे पुणे। इच्छाकारेण सदिसह (इत्यतआरभ्य) जेमेजीवाविराहिया । यावत्पढमावायणादिज्जइ १ ॥ तओ अविल अठगे अठमेचकए। एगेंदिया (इत्यतआरभ्य) ठामिकाउसग्ग। यावत् वीयावायणादिज्जइ २॥ ए वीजौ उपधान। इरियावहिया सुयखंध । इरियावहीनउ तप वीसम्नाम ॥ अविधइ पोसा २०। उपवास १२ ॥ विधिसुवहता पोसा १६ उपवास१२ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥ ॥※॥

॥ ※ ॥ भावारिय तत्थए पढम अठम। तओ, नमोत्थुण (इत्यतआरभ्य) गंधहत्थीण। यावत् पढम वायणादिज्जइ१॥ तउ सोलसहि अवलेहि एगह। लोगुत्तमाण (इत्यतआरभ्य)धम्मवरचाउरतचक्कवट्टीण। यावत्वीयावायणादिज्जई २ ॥ तओ पुणो सोलसहि अवलेहि एगह॥ अप्पडिहयवरणाण दसणधराणं (इत्यतआरभ्य) सव्वेतिविहेणवंदामि। यावत् तईयावायणादिज्जइ ३ ॥ ए त्रीजो उपधान ॥ भावारिहंतत्थय सुयक्खध नमोत्थुणको तप पत्रीसइनाम विधिसु विहिता उपवास १९। पोसा ३५॥ (अने) अविधकरता पोसा ३५॥ उपवास २२ थायइ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ ठवणारिह तत्थयसुयक्खधे पुव्विचउत्थ तओ तिन्निआयविलाणि तिण्णिअझयणाण । अरिहतचेइयाण। (इत्यतआरभ्य) वदणवत्तियाए, अन्नत्थऊससिएणं: प्रभृतिवोसरामि। इतियावत् एगावायणा दिज्जइ १ ॥ ए चवथो उपधान ठवणारिह तत्थय चउक्कम्नाम पोसा ४ उपवासअढाई २ ॥

॥ ※ ॥ नामारिहत चउवीसत्थए पढम अठम (तउ) लोगस्सउज्जोयगरे ॥ (इत्यतआरभ्य) चउवीसपीकेवली। यावत्। पढमावायणादिज्जई १॥ पुणो वारसहि आयविलेहि गएहिं। उसभमजियचवंदे (इत्यतआरभ्य)

पासतह वद्धमाणचेतियावत् बीयावायणादिज्जइ २ ॥ पुणोतेरसहि आर्य विलेहिगएहि एवमए (इत्यतआरभ्य) प्रांतपावत् तईयावायणादिज्जइ ३ ॥ ए पाचमो उपधान नामारिहत चऊवीसत्थय अठावीसम्मनाम विधसु वहिता दिन २८ । पोसा १८। उपवास साढापनरै ॥ एकातरकरै ॥ अथवइकरता दिन अठावीस । उपवास साढासतरै ॥ ५ ॥ ❀ ॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ सुयत्थसुयक्खधे पढमचत्तत्थ तउपचआयविलाणि । अते पुक्खरवरदीवड्ढे (इत्यतआरभ्य) सुयस्स भगवउ। इतियावत् । एगावायणादिज्जइ १॥ ए छठोउपधान सुयत्थय छक्कमनाम पोसा ६ । उपवास साढातीन सिद्धत्थयसुयस्कधे पोसहसहित चउविहार उपवास १ ॥ सिद्धाणं बुद्धाणं (इत्यतआरभ्य) तारेइनरिवनारिवा, यावत् एगावायणादिज्जइ १ ॥ एसा तमो उपधानमालानो तप ॥ ❀ ॥ ॥❀॥ ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ अथोपधान प्रवेशविधि रुच्यते ॥ ❀ ॥

॥❀॥ यदि वहवः श्राविका (वा) श्रावका उपधानप्रवेशति। तदासघनाम्ना चद्रवलग्राह्य । सघस्य कुशराशिर्ङ्गेयः। तदन्नवियोयावाप्रविशाति । तन्नाम्ना चद्रवलग्राह्य (तथा) उपधानवाही सध्याया वाचकादिसमीपे समागत्य । ईर्यापथिकी प्रतिक्रम्य क्षमाश्रमणदत्वा भणति । अमुकउवहाणतवे पोसह गुरुर्भणति पवेसामो नवकारसीकरेज्यो । अगपमिलेहण सदिसाविज्यो । उप धानवाही भणति । तहत्ति । अत्र क्षमाश्रमणदानानतर चतुर्विधाहार करोतु । पानी यथा पिबतु । भोजनवा करोतु व्यवस्थानास्थि (अथ) केनापिका रणेन, सध्याया क्षमाश्रमणनदत्त । (तदा) प्रतिक्रमणवेलातः पूर्वं, पूर्वरीत्या पाश्चात्परात्रावपि क्षमाश्रमण दानकार्य । कालवेलाया प्रतिक्रमण कार्य । नवकारसी प्रत्याख्यान च मालिकापार्श्वेकार्य ततो सूर्योदयानतर वाचकादि समीपे समागतव्य । तत्र यदि प्रथमोपधानद्वय भवे तदा वश्य नदीकार्या । नदीमध्येएवच तदुपधानस्योत्क्षेपोविधेयः ॥ अथ यदि शेषोपधानानि (तदा) नदीनियमोनास्ति । ततः प्रात प्रथम उत्क्षेप कार्य ॥ ततः पोषध सामा यिकयो ग्रहण । ततो वदनषट्कदानपूर्वं प्रत्याख्यान करण ततोमुहपत्ती पूर्वक सुखतपवदनकद्वयदान सुखतपपृच्छाच ॥ इति उपधान प्रवेश विधिः ॥

॥ ॐ ॥ अथ तपसी प्रवेशः उतक्षेप विधिः ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ प्रथम ईर्यापथिकी प्रतिक्रम्य। मुखवस्त्रिकाप्रतिलेख्य। वदनद्वय दत्वा क्षमाश्रमणपूर्वं उपधानवाही भणति। पहिलैउपधानि पचमगल महासुयक्खधतव उक्खिवह (गुरुभणइ उक्खिवामो) पहिलैउपधानि पचमगल महासुयक्खध उक्खेवावणिय नदिपवेसावणिय काउसग्ग करावेह गुरुभणइ करावेमो॥ पहिलैउपधानि पचमगलमहासुयक्खध उक्खेवावणिय नदिपवेसावणिय करेमिकाउस्सग्ग। अन्नत्थउससिएण। इत्यादिपूर्वकायोत्सर्गे। चदेसु० यावच्चिंत्यते। पारितेच संपूर्णः लोगस्सुज्जोयगरे वाच्यः (ततः) क्षमाश्रमणपूर्वं पहिलइ उपधानि पचमगलमहासुयक्खध उक्खेवावणिय चेइयाइ वदावेह (गुरुकहे वदावेमो) वासक्खेव करावेह (गुरु० करेमो) ततोवासक्षेपपूर्वं सपूर्णचैत्यवदन क्रियते। एव सर्वत्रउपधानेषु उत क्षेपोज्ञेयः (नवर) प्रथमोपधानद्वये नदी मध्येकार्यते। शेषोपधानेषुतु यदि नंदी तदा नदीमध्ये। यदिनदी न। तदा प्रातः प्रवेशादिने उतक्षेपः कार्यते। परनिज२ नामाभिलापेन॥ इति उतक्षेपः॥

॥ ॐ ॥ अथ वाचना विधि ॥ ॐ ॥

॥ॐ॥ सन्ध्याया प्रथम चतुर्विधा हार प्रत्याख्याय। ईर्यापथिकी प्रतिक्रम्य मुखवस्त्रिकाप्रतिलेख्य वदनक द्वय दद्यात् पहिलइ उपधानि पचमगल महासुयक्खधस्स पढमावायणा पडिग्गहण करेमि काउसग्ग। अन्नत्थू०। इत्यादि भणनपूर्वं। कायोत्सर्गे। सागरवरगंभीरा यावत् लोगस्स१ चिंत्यते। पारिते च संपूर्ण भणिला। क्षमाश्रमणद्वयपूर्वं इच्छाकारेण सदिस्सह पहिलै। उपधान पचमगल० पढम वायणा पडिग्गहणत्थचेईयाइवदावेह (वदावेमो) वासक्षेपः करावेह(करावेमो) ततो वासक्षेप कार्यः। तत श्चैत्यवंदन। ततः क्षमा० दत्वा। उपधान वाहिनः करद्वय गृहीत मुखवस्त्रिकाच्छादित मुखस्य अर्द्धावनतगात्रस्य वारत्रय पचानामध्ययनाना वाचना ददाति (तत.) वायणा माहे मिच्छामि दुक्कड। एव सर्वत्रनिज वाचनाभिलापोबोध्यः १ वाचनाविधि ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ अथ तपः संपूर्ण क्रिया निक्षेप विधि ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ तपोवसानदिने सध्याया कृत चतुर्विधाहारः प्रातर्वा ईर्यापथिकी प्रतिक्रम्य। मुखव[illegible]लेख्य। वदनकद्वय दत्वा उपधानादितपोवाहीभणति

इछाकारेण तुम्ने अम्ह अमुकतव निरिकावह(निरिकवामो) पुनरपि क्षमाश्रमणद त्वा भणति। इछाकारेण संदिस्सह भगवन् अमुक तवनिक्खिवणत्थ काउस्स ग्ग करावेह (करावेमो) इछामि० अमुगतव निक्खिवणत्थं करेमिकाउस्सग्ग। अन्नत्थू०। इत्यादि भणित्वा। कायोत्सर्गे नमस्कारमेकपठित्वा। क्षमाश्रमण दत्वा। अमुगतवनिरिकवणत्थ चेईयाइवंदावेह (वंदावेमो) तत सपूर्ण चैत्य वंदन करोति। इति निक्षेप ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ पच्चिपुन्ना विगयपारणाविधि रुच्यते ॥ ※ ॥

॥※॥ प्रातः गुरुसमीपे समागत्य। पृथक् प्रतिक्रमणे कृते। मुखवस्त्रिका प्रतिलेख्य वंदनकखट्कददाति। गुरुभिः सम प्रतिक्रमणेकृते वंदनकद्वयमेव (ततोगुरुर्भणति) पवेयण पवेह। इति भणित्वा भणति। पच्चिपुण्णे विगइपार णयकरेहत्ति तत स्वेप्सित प्रत्याख्यान करोति ततः गुरुसमक्ष भणति उपधा नमाहे अनकि आसातनाकीधी हुवइ तेमिछामिदुक्कम ॥ इति ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ क्षमाश्रमणविधि रुच्यते ॥ ※ ॥

॥※॥ उपधानवाही प्रात॰ पदिकसमीपे समागत्य। गुर्वादेशादीर्या पथिकी प्रतिक्रम्य। आगमनमालोच्य। पौषध सामायिकं च गृहीत्वा। क्षमा श्रमणद्वयपूर्व प्रतिलेखनां अंगप्रतिलेखनां च करोति (ततो) मुखवस्त्रिका प्रतिलेख्य। प्रथम क्षमाश्रमणेन। उंही पमिलेहण संदिस्साएमि। द्वितीय क्षमाश्रमणेन उंही पमि लेहण करेमि (इति भणति) ततो मुखवस्त्रिका प्रतिलेख्य। पटिकपदे वंदन पट्क ददाति (ततो) गुरुर्वदति, पवेयण पवेयह। उपधानवाही वदति। इछा० अमुकउवहाणनिमित्त निरुद्ध्वा तवकरावेह। गुरु० उपवासे आविले निरुद्धे ति एकाशने निमित्ते तिवक्तव्य। ततः दत्वाभिः क्षमाश्रमणै रनुक्रमेण वदति वज्रवेलसंदिसावेमि१। बज्रवेलकरेमि२। बइसण संदिसावेमि ३। बइसण ठाए मि ४। सझाय संदिसावेमि सझाय करेमि६। पागुरण संदिसावेमि ७। पागु रण पमिघाएमि ८। कडासण संदिसावेमिए कडासण पमिघाएमि१०। ततो मुखवस्त्रिका पूर्व वंदनकद्वय ददाति (गुरुवदति)सुखतप उपधानवाहीवदति तुमा रइप्रसादि प्रसादि॥इति प्रभाति विधि॰॥ ततीय प्रहरस्य प्रतिलेखनाया जाताया स्थापनाग्रे मालिकादेशेन ईर्यापथिकी प्रतिक्रम्य। प्रथम क्षमाश्रमणेन पमिले हण करेमि १ द्वितीय क्षमाश्रमणेन पोसहसाल पवज्जेमि २। इत्युक्ता मुखव

स्त्रिका प्रतिलेखयति । एव क्षमाश्रमणद्वय दानपूर्वं अगप्रतिलेखन मुखवस्त्रिका प्रतिलेखयति । इत्थ अगसहेण अगान्यि कमिपट्टाइनेय इति गीयत्था जणति ततो वसति प्रमार्जयति। तत्रयदि तस्मिन् दिने भोजनकृत भवति। तदापरिधान वेष प्रतिलेखयति । नशेषवस्त्राणि(यदि)तस्मिन् दिने उपवासो भवति। तदा एकमपि वस्त्रं न प्रतिलेखयति (ततः) पदिकसमीपे समागत्य । ईर्यापथिकी प्रतिक्रम्य । प्रतिलेखना१ अंगप्रतिलेखना च पुनर्गुरुसमक्ष करोति। पन्नारिस ज्ञायं रुदिस्साएमि । करेमि आठ नवकार (ततो)मुखवस्त्रिका प्रतिलेख्य वदन पट्कंददाति (ततः) त्रिविधाहार चतुर्विधाहारंवा प्रत्याख्यान कृत्वा क्षमाश्रमण दशक ददाति (तत्क्रमश्चाय) ठही पमिलेहण सदिसावेमि१। ठही पमिलेहण करेमि २। स्झाय स० ३। सिझायक० ४। वइसणं सदि० ५। वइसण ठाएमि ६। कघासणं सं० ७। कठासण पमिघाएमि८। पागुरण सदिसावेमि ९ पागुरणं परिघाएमि१०। ततः मुखवस्त्रिका प्रतिलेख्य वदनद्वयं दत्वा सुखतपः पृच्छा (ततः) सर्वोपकरणानि प्रतिलेखयति मातृकादि सर्वं प्रतिलेखयति (तथा) यस्मिन् दिने भुक्ते। तस्मिन् दिने पोण प्रहर प्रतिलेखनाया थाली १कचोलादिक सर्वमुपभुज्यमाण प्रतिलेखयति । उपवास दिने तुन । इति तृतीय प्रहर क्रियाविधि। (तथा) पाखी पमिकमणा माहि असझाइनकाउसग्ग न करै तो आवती पाखीसीम सर्व सिद्धातनी असझाइ हुवइ । इरियावहीनो पाठगुणयोनसूके तेभणी असझाईमाहे दिण असझाई नउ काउस्सगकीजइ। युगप्रधान श्रीजिनचद्र सूरिजीयइ महोपाध्याय श्रीसागरचंद्रगणिनै पूठा तव एसाहीजवावदीया । योगारम्भविधिरय । अत्रचतुर्मासीमध्ये योगारम्भे वर्षमासशुद्धिर्न गवेष्यते दिनशुद्धीर्ग्राह्या । मृदुध्रुवचरक्षिप्रैः । वारेभौम शनिविना आद्याटनतपोनद्या । लोचनादिसुभसुभ ॥ १ ॥ इत्याचारदिनकरे । श्रीमुहपत्ती पन्नास । अठारस आरणमि पमिलेहा । दमेपत्तेसोलस । कप्पेपणवीसगोअमा ॥१॥ पणवीसचोलपट्टे । गुरुकबल तहयचेवसंथारे । कठासणे अठारस जपेदमेअपचेव ॥ २ ॥ इति प्रतिलेखना विचारः ॥ पण उस्सासायाम । अवयं कुणह अठमअते। नवकारउव्हाण । इत्तियमित्त इरियाए॥१॥सक्कत्थयमि तहएग । अठम अविलाणवत्तीस । अरिहतचेईयत्थए । चउत्थमायामतियगंच २॥ चउवीसत्यएमठम । मेगंपणवीसउति आयामा । नाणत्थयपमिचउत्थं

गेरिअ, सुवन्नाइ, महाथ ं, रूवसरीरं । पाणिवहे । पाणिसघटणे । पाणिपी मणे । पाववहणे । मिछत्त पोसणे गणे सलग्ग । तनिदामि गरिहामि । वोसिरामि ॥ जम्मे पुढविकाय गयस्स । सिला लेठु । सक्करा, सन्हा, वालुआ गेरिअ, सुवन्नाइ, महाथाइरूवरूरीर अरिहतचेइएसु । अरिहत विवेसु । धम्म ठाणेसु । जतुरक्खण ठाणेसु । धम्मोवगरणेसु । सलग्ग तअणुमोएमि । कल्लाणेण । अभि निदेमि ॥ फेर परमेष्टि मत्र पढके ॥ जम्मे आउकायग यस्स । जल करग महिआ उस्सा । हिम हरतणुरूव सरीर । पाणिवहे । पाणिसघट्टणे । पाणिपीमणे । पाववहरस । मिछत्त पोषणे । ठाणेसलग्ग तनि दामि । गरिहामि । वोसिरामि । जम्मे आउकायगयस्स । जल, करग, महिआ, उस्सा, हिम हरतणुरूव सरीर, अरिहत विवेसु, धम्मठाणेसु, धम्मो वगरणेसु, जतुरक्खणठाणेसु, जिणन्हाणेसु, तन्हा दाहावरण सुलग्ग । त अणुमोएमि कल्लाणेण अभिनदेमि (फेर) परमेष्टि मत्र पढके । जम्मे तेउ कायगयस्स । अगणि, इगाल, मम्मुर, जाला, अलाय विज्जुवक्काते अरूव सरीर । पाणिवहे । पाणिसघट्टणे । पाणिपीमण पाववहणे । मिछत्त पोसणे । ठाणेसलग्ग । त निदामि गरिहामि वोसिरामि ॥ जम्मेतेउ कायगयस्स अगणि, इगाल, मम्मुर, जाला, अलाय विज्जुक्काते । अरूवसरीर सीआव हारे । जिणपूआ धूव करणे । नेवज्जयाए । वुहाहरणाए । सलग्ग । त अणुमोएमि कल्लाणेण अभिनदेमि ॥ फेर परमेष्टि मत्र पढके ॥ जम्मे वाउकायगयस्स । वाउ ऊका सासरूव शरीर । पाणिवहे । पाणि सघट्टणे । पाणिपीमणे । पाववहणे । मिछत्त सपोसणे । सलग्ग । त निदामि । गरिहामि वोसिरामि । जम्मे वाउकायगयस्स । वाउऊका सासरूव शरीर । पाणि रक्खणे, पाणिजीवणे, साहुवेआवच्चधम्मावहारे । सलग्ग त अणुमोएमि कल्लाणेण अभिनिदामि ॥ फेर परमेष्टि मत्र पढके ॥ जम्मे वणस्सइकायग यस्स । मूल, कन्द, खंध, पत्त, फुल्ल, फल, बीअ, रस, निज्जासरूव सरीर । पाणिवहे । पाणिसघट्टणे । पाणिपीमणे । पाववहणे । मिछत्त पोसणे ठाणे सलग्ग त निदामि । गरिहामि । वोसिरामि । जम्मे वणस्सइकायगय स्स । मूल, कन्द, खंध, पत्त, फुल्ल, फल, बीय, रस, निज्जासरूव शरीर । वुहारणेसु अरिहतचेइय पूरणेसु । धम्मठाणेसु । नेवज्ज करणेसु । संलग्ग ।

तं अणुमोएमि । कल्लाणेण अभिनदेमि । (फेर परमेष्टि मंत्र पढकै)। जम्मे तसकायगयस्स ॥ रस रत मस मेअठि मज्जा सुक चम्म रोम नह नसा रूवं शरीरं । पाणिवद्दे पाणिसंघट्टणे । पाणिपीमणे । पाववट्टणे । मिच्छत्तपोसणे । ठाणे संलग्ग । तनिंदामि । गरिहामि । वोसिरामि ॥ जम्मे तस कायगयस्स । रस, रत, मस, मेअठि, मज्जा, सुक, चम्म, रोम, नह, नसारूव सरीर । अरिहत चेइएसु । अरिहत बिंवेसु । धम्मठाणेसु । जतुरक्खणठाणेसु । धम्मोवगरणेसु । सलग्गा । तं अणुमोएमि । कल्लाणेण अभिनिदेमि ॥ (फेर परमेष्टि मत्र पढके) ॥ जम्मे इत्थ भवे मणेण डुचितिअ डुब्भासिअ। डुकय । तनिदामि गरिहामि वोसिरामि ॥ जमए इत्थभवे । मणेणं । वायाए काएण । सुचितिअ । सुभासिअ । सुकय । तअणुमोएमि । कल्लाणेण अभिनदेमि ॥ (इहा मतलब येहै) । कि समारोपित करा था व्रत सम्यक्ता दिक (तथापि) व्रत सम्यक्तादिक आरोपण करणा चाहिए ॥ फेर जिसनें व्रतारोप पहले करा है (तिसकू) अत वखतमें एकशो चोवीस अतीचारोंकी आलोयणा अवश्य करणा चाहिए ॥ फेर गुरु सर्वसघसहित । वास अक्षतादि ग्लानकै मस्तकपर क्षेपन करै ॥ इति ॥ ※ ॥

॥ (फेर) पंचपरमेष्टि मत्र पूर्वक ग्लानसाधु क्षमाश्रमण देतो थको कहै॥ आयरिअ उवज्झाए । सीसे साहम्मिए कुलगणेअ । जेमेकया कसाया । सव्वेतिविहेण खामेमि ॥ १ ॥ सवस्स समण सघस्स । भगवओ अजलि करिय सीसे । सव्वखमावइत्ता । खमामिसव्वस्स अहयपि ॥ २ ॥ भयव जम्मए चउगइगएण । देवा, तिरिआ, मणुस्सा, नेरइआ, चउक्कसाउ वगएण । पचिंदिअ वसट्टेण । इहम्मिभवे । अन्नेसुवा भवग्गहणेसु । मणेण वायाए काएण । विञमिआ । सताविआ । अभिताइया । तस्समिच्छामि डुक्कड ॥(फेर) इस आलावोंकी विस्तारसेती व्याख्या करे ॥ बादग्लान, गुरूप्रतें साधु साध्वी श्रावक श्राविकाप्रतें प्रत्येकें २ क्षामणा करे ॥ फेर इहा गुरुपूजा सघपूजा करै ॥ इत्यत सस्कार विधिः ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ अणशणविधि लि० ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (फेर) ग्लान श्रावक मृत्युनजीक आणेंसे सर्व चैत्यकै विषै पुष्पादिकसें पूजा करवावै । चैत्य ग्यान आदि सात क्षेत्रोंकेविषै अपना

द्रव्यखरच करै ॥ (पीछे) पच परमेष्टिमंत्र उच्चारण पूर्वक पढे ॥ जेमे जाणतुजिणा । अवराहा जे सुखासणेतेहं । आलोएमि नवण्डे । जाण तो सबकालपि ॥ १ ॥ छउमत्थो मूढमणो । किंत्तिअमित्तपि सनरइजीवो जचन सनरामि अहं । मिछामे डुक्कडतस्स ॥ २ ॥ जंजमणेण चिंतिअ । मसुह वायाइनासिअ किंचि । असुहं काएणकय । मिछामे डुक्कडतस्स॥३॥ खामेमि सबजीवे । सव्वेजीवाखमतुमे । मित्तीमे सव्वभूएसु । वैरमझ न केणइ ॥ ४ ॥ इति ग्लानपाठः ॥ (फेर) तीन नमस्कार पढनपूर्वक कहै ॥ चत्तारिमगल । अरिहंतामगल । सिद्धामंगल । साहूमगल । केवलिपन्नत्तो धम्मोमंगलं । चत्तारिलोगुत्तमा । अरिहंता लोगुत्तमा । सिद्धालोगुत्तमा । साहूलोगुत्तमा । केवलिपन्नत्तो धम्मोलोगुत्तमो । चत्तारिसरण पवज्जामि । अरिहंते सरणं पवज्जामि । सिद्धेसरण पवज्जामि । साहूसरण पवज्जामि । केवलिपन्नत्त धम्म सरण पवज्जामि ॥ ऐसा तीनवेर पढै ॥ (फेर) गुरुवचनसे अष्टादश पापस्थानक वोसरावै ॥ सोलिखते है ॥ सब पाणाइवाय पच्चक्खामि । सब मूसावाय पच्चक्खामि । सब अदिन्नादाण पच्चक्खामि । सब मेहूण पच्चक्खामि । सब परिग्गह पच्चक्खामि । सब राईभोय० । सब कोहप०। सब माणप०। सब मायप०।सव्व लोहप०। सब राग पच्च०,सब दोस, कलह, अब्भक्खाणं, अरई, रई, पैशुन्न, परपरिवाय, मायामोस, मिच्छादसणसल्ल । इच्चेइआइ अठारस पावठाणाइ । डुविहं तिविहेण वोसिरामी॥ अपढमम्मि ऊसासे तिविहेण वोसिरामि ॥ (फेर) गुरुगीतार्थं, श्री योगसास्त्रके पचम प्रकाशमें कहा (वा) कालप्रदीपादि शास्त्रकेविषै कहाजिसमुजब ग्लानको आयुक्षय जाण करके। सघकी। तिणकै सवधियें की। राजादिककी आज्ञा ग्रहण करकै। अणशण उच्चारण करावै (फेर) ग्लान शक्रस्तव पढकै परमेष्टि मत्रोच्चारण सहित पढै ॥ (यथा) । भवचरिम पच्चक्खामि तिविहं पिआहार। असण। पाण। खाइम। साइम। अन्नत्थणाभोगेण। सहसागारेणं महत्तरागारेण। सबसमाहि वत्तियागारेण वोसिरामि॥ इति सागारी अणशण अतर्मुहूर्त्त यावत् भवत्येव ॥(अनागार मनशन यथा)॥ भवचरिम निरागार पच्चक्खामि। सव्व असण सव्वपाण सबखाइम सबसाइम अन्नत्थणा भोगेण सहसागारेण। अइअ निदामि । पडिपुन्न सवरेमि । अणागय पच्चक्खामि ।

अरिहंतसक्खिअं। सिद्धसक्खिअं। साहुसक्खिअं। देवसक्खिअं। अप्पसक्खिअं वोसरामि। जेमेहुज्जपमाउ। इमस्सदेहस्समाइरयणीए। आहार मुवहिदेह। तिविहं तिविहेण वोसिरिअ ॥ (फेर) गुरुकहे नित्थारग पारगोहोइ। वासअक्षता दिक गुरुसहित सब ग्लानकै सन्मुख न्हालै ॥ अणवयम्मिनसहो (इत्यादि) स्तुति पढै(वा) चवण जम्मणभूमि (इत्यादि पढै)॥फेर गुरुग्लानके अगामी त्रिभुवन चैत्यांको वर्णन करे। अनित्यादि द्वादशभावना वर्णन करे। अनादि भवस्थितिवर्णन करे। अनशनफल व्याख्यान करे। श्रीसंघ गीतनृत्यादि उत्सव करे। ग्लानपिण, जीवन मरणकी वांछा त्याग करके समाधीमें रहै (फेर) मुहूर्त्तनजीक आणेंसें, ग्लान सर्व आहार सर्वदेह वोसिरामि (ऐसा वचन कहे) फेर अंतमें ग्लान पचपरमेष्टि स्मरणयुक्त शरीरभतें त्याग करै ॥ ※ ॥ इत्यंत संस्कारे अनशनविधि ॥ मरणांतसमय जाणके, भाभकीस ज्याकै ऊपर स्थापन करे। जन्ममरणकी वखत, जमीनपर स्थापन करणेंका व्यवहार है और मृत्यु होणेंसें, अजीवसरीरकूपिण व्यवहारके अर्थ सनाथ पणों जणाणेंकेवास्ते। तिसका पुत्रादिक कृतार्थपणो समजकै मृत्युशस्कार करै ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ शब सस्कार विधि लिखतेहै ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ प्रथम शबके शिखावर्जित मस्तकमुण्डन करावै (फेर) सपूर्ण स्व जन सबधियादिक सुगधतेलादिक मर्दन करै, सुगध जलसें स्नान करवावै फेर केशर चदना दिकका विलेपन करावै। सुगधफूलोंकी माला पहरावै ॥ अपणें २ कुलयोग्य अच्छा वस्त्र आभरणादिकसें विभूषित करै (इतना विशेष है) कि ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्यकू, त्यागकै। सुद्रादिकोंका सर्वथा मस्तक मुडन नहि करे। तिसकैवाद, नवीन रची भई काष्टशय्याकै ऊपर, कुशाका घास विछाके, अच्छा वस्त्र वाधके, शवकों थापन करे। अच्छा वस्त्र ऊपर उढावे ॥ शवका उपगरण होय सोपासमें रखके। (और) धनिष्टादि पचक नक्षत्रामें जो मृत्यु होय (तो) कुश घाशका पूतला वर्णानुसार गृहस्थवेशका करके। वस्त्र आभूषणसें शोभा करके। शवकेपास थापन करे। (पीछे) ज्ञातीजन चार जिणा खदपर धारन करके स्मशान भूमि का यें लावे। (पीछे) पुत्रा ~ , शवको उत्तरदिश तरफ मस्तक

करके काष्टकी सिय्यापर थापन करे । अग्नि संस्कार करै ॥ और अन्न जहातक न खावै। ऐसा दूध पीणेंवाला लमकाकी मृत्यु होय(तो)भूमि संस्कार करै । अग्नि दाह न करै ॥ (और) उस वखत जो दान लेनेंवाला होय उन सबकों यथाशक्ति दान देवै ॥ नदी कूवादिकका निर्मल जलसें स्नान करके। गया जिस रस्तेकों छोमके । और रस्ते अपनें घर आवै ॥ (पीछे) तीसरे दिन चिताकी भस्म हड्डीकों लेके नदी समुद्रादिकमें प्रवाह करे । (फेर) शुध्ध जलसें स्नान करके, शोक दूर करनेंकों मंदर आवे ॥ जिन बिंबकों नहि फरसता थका चैत्य वंदन करे (पीछे) धर्मस्थान आवे । गुरु महाराजकों नमस्कार करै (तब) गुरूपिण संसारको अनित्य चलाचल स्वरूपको प्रतिबोध देके शोक दूर करावे ॥ (पीछे) अपने २ घर जावे ॥ इस संस्कारमें, अत्य आराधनासें लेके, शोक दूर करनें पर्यंत अवश्य कार्य सेती मङ्गलादिक न देखें । (परतु) अतका स्नान, मृत कार्य, इतना योग नक्षत्रादिकमें न करै (यथा) प्रेतक्रिया न कर्तव्या । यम लेच त्रिपुष्करे । आर्द्रा मूलानुराधासु । मिश्र क्रूर ध्रुवेषुच ॥ १ ॥ धनिष्टा पंचके,वर्ज्या । तृणकाष्ठादि संग्रहा. । सय्या दक्षिण दिग्यात्रा । मृत कार्य गृहोद्यमा ॥२॥ इतना हीन योग टालके प्रेत क्रिया करै ॥ (अत्र इहा) सूतक विचार, किंचित् आचार दिनकर मुजब लिखें है (इससें) विशेष खुलासा सूतक विचार देखना होय(तो)इसी रत्नसागरका प्रथम भागमें लिखा हुवा है ॥ सो उसमें देख लेवे ॥ (यथा) अन्य वंशे समुद्भूते । मृते जा तेथ तद्गृहे । परणीत सुतायाश्च । सूतिका भाशने तथा ॥ १ ॥ एतेषु चैव सर्वेषु । सूतकस्या दिनत्रय । सूतक हतितरसर्व । जात जात मृत मृत ॥२॥ अनष्ट भोजिबालस्य । सूतकस्या दिनत्रय । अनष्ट वार्षिकस्यापि । भिन्ना गोनच सूतक ॥ ३ ॥ स्वस्ववर्णानु सारेण । सूतकांत जिनस्नपन । साधर्म्मिक वात्सल्य । ततो भवतु कल्याण ॥ ४ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ अथ श्राध्ध आराधना लिख्यते ॥ ॥

॥ ॥ श्री सर्वज्ञ नमस्कृत्य । दुष्ट कष्ट प्रणाशन । श्रावका राधनांवक्ष्ये । सुगमा शिष्यहेतवे ॥ १ ॥ अत्र आराधनाया पंच अधिकारा ॥ सम्यक्त शुध्दि १ ॥ १८ पापस्थानक परिहार २ ॥ ८४ लक्ष जीवक्षामण

३ ॥ड.कृत गर्हा ४ ॥ सुकृतानुमोदना ५ ॥ (तत्रादौ) चैत्य वंदना पूर्वं । स म्यक्त शुद्धि (तथाहि)॥ प्रथमं ईर्या पथिकी प्रतिक्रम्य । मुखवस्त्रिका प्रति लेख्य । वंदन द्वय दत्वा । चैत्य वंदना प्रतिमार्गेकृत्वा । क्षमा श्रमण द्वय चः दत्वा । आराधनाकृत् वदति । भगवन् आराधना श्रावयतः॥ ततो गुरुर्वद ति ॥ विधिपूर्वक शृणु (तथाहि) अरिहंतो मह देवो १। जावज्जीवं सुसाहु णो गुरुणो २ । जिणपन्नत्ततत्त ३ । इय समत्त मए गहिय ॥१॥ व्या०॥ अर्हन् भगवन् ॥ ३४ अतिशय सहितः ॥ ६४ इंद्र महितः ॥ अष्टमहा प्रातिहार्य युक्तः ॥ १८ दोष निर्मुक्तः ॥ अनत गुण व्याप्तः । परम पदवी प्राप्तः । देवाधिदेवः श्री वीतराग देवो मम देवः ॥१ ॥ (तथा)॥ पचमहाव्रत पालिकाः ॥ १८ सहस्रशीलागरथ धारिका । रागद्वेष निवारिकाः । सं सार समुद्रात् भव्य जीव तारकाः। क्रिया कलाप सावधानाः । सदा धर्म ध्यानाः कुक्षिसबलाः । ज्ञान, दर्शन, चारित्र, निर्मलाः । साधवो मम गुरवः ॥ ॥ २ ॥ (तथा)॥ उत्पन्न दिव्य विमल केवलग्यान श्री वीतराग देवभाषित हिंसाप्रतिकूल । शुद्ध जीवदयामूलः मुक्तिपुरपाथेय समानः आज्ञा प्रधानो धर्मो मम धर्मः ॥३॥ इति देव गुरु धर्म तत्वत्रय श्रद्धानस्वरूप सम्यक्त ॥ हृदये विशेषतो दृढीकार्यं॥१॥ अथ१८ पापस्थानानि ॥ आसव ५॥ कसाय ४ ॥ २ बधन ११॥ कलहा १२ भरकाण१ ३ परपरीवाद १४। अरइ रई १५ पेसुन्न१६। मायामोसच१७ मिछत्त १८॥ (तत्र प्रथमाश्रवे)॥ पृथिवी १। अप्प २। तेऊ३। वाऊ४। वनस्पति ५। बेंद्रिय६। तेंद्रिय ७। चतुरिंद्रिय ८। पचेंद्रिय ९। जीवाः अभिहतादिः१० प्रकारैः । इहभवे । अनंतेपुवा भ वेपु ॥ मनसा १ वचसा २ कायेन ३ वा ॥ जानता । अजानता । जीवावि राधितास्यु । तेषा अरिहत १ सिद्ध २ साधु ३ देव ४ आत्म ५ गुरु ६ साक्षिक त्रिकरण शुद्धया हे पुण्यात्मन् मिथ्या डःकृत देहि॥ १ ॥ (अथ द्वितीयाश्रवे)॥ हास्येनवा, क्रोधेनवा, मानेनवा, मायायेवा । लोभेनवा ॥ मृषा वाद उक्तो भवति । कन्यालीकादि महत्कूटानि । कथितानिस्युः । इहभवे (इत्यादि)। मिथ्या डःकृत देहि ॥ २ ॥ (अथ तृतीयाश्रवे) ॥ परद्रव्यापरहा रेणवा । चौरक्रियावा॥ चौरा अनाहृत वस्तुग्रहणेणवा । रस मसि भेदेनवा ॥ कूटतूल कूट मानेनवा । [illegible]

॥ ३ ॥(अथ चतुर्थाश्रवे)॥ देव मनुष्य । तिर्यक् संबंधि । मैथुन सेवित नव ति ॥ स्वस्त्री पर पुरुष गमनेन ॥ अति विषय लोलुपतया यत् अब्रह्म सेवितं नवति ॥ इहन्नवे० ॥ मिथ्या०॥४॥ (अथ पचमाश्रवे) ॥ धन धान्य क्षेत्र । वस्तु सुवर्ण । रोप्य । द्विपद । चतुःपदाना । अपरमित संग्रहेण ॥ क्षेत्ररुष गमनेन । वाणिज्य । वाटिका । नदी कूप महारन्न मूर्छादि करणेणच । परि ग्रह कृतो नवति ॥ इहन्नवे० ॥ मिथ्या०॥ ५ ॥ (तथा) क्रोध मान माया लोनाः ॥ ४ ॥ कषाया कृता नवति ॥ ए ॥ (तथा) रागद्वेषा ॥ स्त्री पुरुष जनो परि विषय लोलुपता । कामराग॥ धन धान्य । स्वजन । पुत्र माता । पितृ प्रमुख जनो परि रागः । स्नेहरागः । निजश्मतोपरि । अनि निवेशेन कदा ग्रहो दृष्टिरागः ३ ॥१०॥ एवं द्वेषोपि ११ ॥ लोकैः सहकलहकारणं १२॥ कर्कश वचनादिना कलकदान ॥१३॥ सत् असत् दूषण प्रकाशनेन । १४॥ परेषा निदाकरण्प रहसि १५। मर्मोद्घ घट्टना । दम मुमादि कारापणं ॥ १६ ॥ न्यासापहार करण । मायायुक्त मृषा वादोवा ॥ १७ ॥ महामाई चामुंमा । चन्नसठी । यक्ष । गोगा । क्षेत्रपाल । विनायक हरिहरादीना । राग द्वेष कलुषित चित्ताना । देवतत्व बुध्द्या मानन ॥ जोगी । सन्यासी । कमी । कापमी। तापश । शेष । मुल्ला । चारित्र नृष्ट स्वलिगी । निन्नवा दीना कुगुरूणा । गुरुतत्व बुध्द्या मानन । मिथ्यात्वि प्ररूपित । हिसादोष छुष्ट ॥ कुधर्मस्य धर्मबुध्द्या मानन मिथ्यात्व ॥ १८ पाप स्थानानि सें वितानि नवंति । इहन्नवे० । मिथ्या० ॥ २ ॥ ※ ॥ ॥※॥

॥※॥ अथ ८४ लक्षजीवक्षामणं ॥ ※ ॥

॥※॥ (तत्र प्रथम पृथिवीकाय.)॥ फटिक १ मणि २ रतन ३ प्रवाल ४ हिंगलू ५ हरियाल ६ मणसिल ७ सुरमो ८ सोनो ए रूपो १० गेरू ११ खमी १२ वानी १३ अरणेटो १४ पलेवमो १५ नोमल १६ ॥ वस्तरगणी कालीमाटी ॥ ऊसरमाटी । पाषाण खर पृथ्वीप्रमुखा अनेक नेदा. । अस्याः । २२ सहस्राणि । खरपृथिव्यादेः नत्कृष्टमायुः । अगुला सरयेय नागोदेहमान॥ आमलकप्रमाण खमे ये जीवाःसति । तेषायदिसर्षप प्रमाण देहास्युः ॥ तदा जंबूदीपा नमाति ॥ अस्याश्चसप्त ७ लक्षयोनयः एतेजीवाना आरंनादिना विराधना कृतानवति ॥ इहन्नवे०। पूर्ववत् मिथ्या

डुःकृतं देही ॥ १ ॥ अथ अप्पकाय: ॥ तत्र आकासपाणी। भूमिपाणी। उस। हिम । करहा । धुंहरि । घनोदधि प्रमुखा अनेके भेदाः । अस्य सप्त ७ सहस्राणि उत्कृष्ट आयुः । अंगुला सख्येय भागोदेहमान । एकस्मिन् जलबिंदौ असंख्याता जीवाः ॥ ७ सप्तलक्षयोनयः । एतज्जीवाना आरंभादिना विराधनाकृताभवति ॥ इहभवे पूर्ववत्, मिथ्या डुकृत देहि ॥२॥ (अथ तेजस्कायः)॥ तत्राग्नि । अगार । मुम्मर । जाल वीजली प्रमुखा अनेक भेदाः । तत्र त्रिक ३ अहोरात्रि उत्कृष्ट आयुः ॥ अंगुला संख्येय भागोदेहमान । गुंजाप्रमाणे अग्नौ असंख्याता जीवा । सप्त ७ लक्षयोनयः एतज्जीवाना उकालन निर्वापणाद्यामारंभेणविराधनाकृता भवति ॥ इहभवे० पूर्व० मिथ्या०॥ ३ ॥ (अथ वायुकायः) ॥ तत्र, गुंजावात । शुद्धवात । महावात । भूतेलियो । तनुवात प्रमुखा अनेके भेदाः । तस्यसप्त ७ लक्षयोनयः । एतत्जीवाना आरम्भादिना विराधनाकृता भवति ॥ इहभवे० । मिथ्या डु० देहि० ॥ ४ ॥ (अथ वनस्पतिकाय.) ॥ सप्रत्येक साधारण २ भेदेनद्देधा ॥ (तत्र) प्रत्येक वनस्पति । तस्याः अंब निंब कदंब । असोग नाग पुन्नाग धव खदिर वम पीपल । कइर बोर । पेजमा । जालि । आक धत्तूरा । रायणि । केलि खड । तृण । हरीत्रेली । लता । पत्र फूल । फलिप्रमुख । अनेकेभेदाः । तस्यसाधिक सहस्रयोजन देहमान पद्मद्रहादौ कमलादीना १० दिग्सहस्राणि उत्कृष्ट आयु । १० लक्ष योनयः ॥ ५ ॥ (अथ साधारण वनस्पतिः) ॥ कंद मूल । अंकूर । किस लय । सेवाल । भुफोड़ । पंचवर्ण फूलणि । गाजर । मूला । सूरण । लसण । प्याज आदौ । थोहरि । कुवारपाठो । गिलोय । मोथ नीलीहलद लत्तालू । पिंडालू । प्रमुखा अनेके भेदाः जघन्यं उत्कृष्टच। अंतर्मुहूर्त्त आयुः अंगुलासख्येय भागोदेहमान । एकस्मिन् सूच्यग्रभागप्रमिते अनंतकाये अ नंताजीवा चतुर्दशलक्षयोनयः । एतज्जीवाना छेदन भेदनाद्यारंभेण वेदनाकृता भवति ॥ इह भवे०। मिथ्या डुकृतदेहि ॥६॥ (अथ द्विंद्रिया')॥ तत्र सख । सीप । कउडा । कातरा । पुरा । अलसीया । कृमि गंडोला । गाडर । चूडेलि । मेहरि । प्रमुखा अनेके भेदा. । तेषा द्वादश वर्षाणि उत्कृष्टमायुः । द्वादश योजनानि सखादीना देहमानं । द्विलक्षयोनयः । एत

जीवाना विराधनाकृता भवति ॥ इहभवे० मिथ्या डुकृतदेहि ॥ ७ ॥ (अथ त्रीद्रिया) ॥ तत्र कीमी । मकोमा । गादहिया । जु । लीख । माकण । कुंथु वा । उद्देही । ईली धानकीमा । जवा । गोगीडा । घीवेली । मामोला प्रमुखा अनेके भेदा । तेषा ४ए एकोन पचासद्दिनानि उत्कृष्टमायुः ॥ कोस त्रयंच कर्णशृगालादीना देहमान । द्विलक्षयोनय । एतज्जीवाना विराधनाकृता भवति ॥ इहभवे० मिथ्या० देहि॥७॥ (अथ चतुरिंद्रियाः) तत्र माखी विछू । भमरा । पतगिया । तीमा । माछर । डास । मासा । भमरी भणहणा प्रमुखा । अनेके भेदा । तेषा षएमासा उत्कृष्ट आयु । एक योजन प्रमाणच भ्रमरादीना देहमान । द्विलक्षयोनयः । एतज्जीवानां विराधनाकृता भवति ॥ इह भवे० मिथ्या० देहि ॥ ए ॥ (अथ पचेंद्रियाः)॥ ※ ॥ तेच । नारकि १ ॥ देवता २॥ तिर्यंक् ३॥ मनुष्य भेदात् ४ ॥ त चतुर्विधा । तत्र रत्नप्रभादि पृथिवी सप्तगता नारकी असख्याताः । तेषा ३३ सागरोपमाणि उत्कृष्ट आयुः ५०० धनुषि देहमान ॥ च्यार लक्ष योनयः । एतेषा स्वय परम धार्मिकी भूय, छेदन भेदन क्रकच विदारण ॥ त्रपुपान कुंभीपाचनादि नानाविध कदथनया विराधना कृता भवति ॥ इहभवे० ॥ मिथ्या डुकृत देहि ॥ १० ॥ अथ देवा ॥ तेषा भवनपति १ । व्यंतर २ । ज्योतिषी ३ । वैमानिक ४ । भेदेन चतुर्भेदा. । ३३ त्रयत्रिंशत्सागरोपमाणि उत्कृष्टमायु । सप्तहस्त देहमान ॥ ४ चत्वारि लक्षयोनय । तेषा दिव्यसुख भोग दृष्ट्वा । इर्ष्याकरणेण । मत्र यत्र तत्र आकर्षणे डुःख दानेन अपलापेनवा विराधना कृता भवति ॥ इहभवे० ॥ मिथ्या डुःकृत देहि ॥ ११ ॥ (अथ तिर्यंच) ॥ तेषा । जलचर १। स्थलचर २ । खचर ३। उरपरिसर्प ॥ भुजपरि सर्प भेदात् । पचधा ॥ तत्र जलचराणा ॥ मत्स्य कच्छप प्रमुख अनेके भेदा । तेषा सर्मूछिमाना गर्भजानाच उत्कृष्ट पूर्वकोटि आयु । योजन सहस्रच स्वयंभूरमण गताना देहमान ॥ १ ॥ (स्थलचराः)॥ तेषा सीह वाघ चीतरा सरभ हाथी घोमा उठ बलद खर गाइ भैस । गली हरिण रोक ससा । सूवर रीछ सावर । कुतरा सियालिया प्रमुखा अनेके भेदाः तत्र युगलिकाना तेषा ३ त्रिक पल्योपमानि उत्कृष्ट मायु. । त्रिक कोश देहमानच ॥ इतरेषातु पूर्वकोटिः उत्कृष्ट आयु । पट्कोश देहमानच ॥ १ ॥

(खचराणा)॥हंस बगला सारस सीचाणां। समली गृध्र काग घूक होलाव। होला चिमकला नीलचास सूवटा प्रमुख अनेके भेदाः। तेषा पल्योपमस्यअ सख्येयो भाग उत्कृष्टं आयुः। धनुपृथुक्तच ए देहमानच। उरपरिसर्पाणा। अजगर। कालदर सर्पाणा प्रमुखा अनेके भेदाः। तेषा पूर्वकोटिः उत्कृष्ट मायुः। योजन सहस्रंच देहमान ४ (भुज परि सर्प्पाणा)। गोह। नउला। काकिमा। गिलोई बाभणी प्रमुखा अनेके भेदाः। तेषा पूर्वकोटिः उत्कृष्ट मायुः॥ क्रोश पृथुक्तच देहमान। एपांतिरश्वांचतुलक्ष योनयः एतेषा छेदन भे दन कदर्थन अंगावयव कर्त्तन॥ नासाविध पृष्टिगालन॥ अधिक भारारोपण निकश घात चारि पाणिय निरोधादि दुःखोत्पादनेन विराधना कृता भवति। इहभवे०॥मिथ्या दुकृत देहि॥१२॥ मनुष्या॥ तेषाच४५लक्ष योजन प्रमाण मनुष्य क्षेत्र॥५ भरत॥५ ऐरवत। ५महाविदेह।१५ कर्म्मभूमि॥३० अक र्म्मभूमि॥५६ अतर द्वीपेषु गर्भजपर्याप्ताऽपर्याप्त संमूर्छिम भेदेन ३०३ भेदा भवति। तेच आर्य, अनार्य, ब्राह्मण, वैश्य, शुद्र, राजा, राक, दष्ट, अदष्ट ज्ञान, अज्ञान, सुत, स्वजन। मित्र, शत्रु, प्रत्यक्ष, परोक्षादि भेदात् अनेक वि धाः॥ तेषा युगलिकाना३ त्रिक पल्योपमानि उत्कृष्ट मायुः॥३त्रिक क्रोश देह मानं। इतरेषातु पूर्वकोटिः उत्कृष्ट मायुः॥ ५०० धनुर्देहमान॥ एतज्जीवाना विराधना कृता भवति। इहभवे०॥ मिथ्या दुःकृत देहिः॥ १३॥ तत्रापि विशेषतः॥ माता, पिता, भाई, बहिन। पुत्र। कलत्र। मित्र, शत्रु। वक्ष, बेटी। सासू। सुसरा। जेठाणी। देराणी॥ काका। काकी। मासी। भूवा॥ साला। साली। पोतरा। पोतरी। दोहीतरा। दोहीतरी। दायाद। गोत्री। वेवाही आमोसी पामोसी प्रमुख जनै। समकलह कदलादिना विराधना कृता भव ति॥ इहभवे०॥ मिथ्या० देहि॥ १४॥ ३॥ अथ दुःकृत गर्हा॥ तत्रपूर्व आशातना अर्हचैत्ये मूल गर्भागारे॥ महत्पो दश आशातना कृता। एवं सिद्ध, प्रवचन। आचार्य, उपध्याय वाचनाचार्य, रत्नाधिक स्थविर, साधु, साध्वी श्रावक। श्राविका, समस्त सघस्य अभक्तिः आशातनाः कृता भवति। तत् मिथ्या दुकृत देहि॥ १॥ कुतीर्थं कदापि प्रवर्त्तित २॥ कुगुरु कुदेव कुध र्म्मसेवा कृता भवति ३॥ श्री वीतराग देवमार्गः कदापि अपलपितो भवति ४॥ ज्ञान गुरु अपलपितो भवति ५॥ स्थापना प्रतिलेखिना विस्मृता भवति

६ ॥ गठसी मुठसी नवकारसी प्रमुख प्रत्याख्यान विस्मृत भवति ७ ॥ रात्रि भोजनकृत भवति ८ ॥ उत्सुत्र प्ररूपितं भवति ९ ॥ ज्योतिष्क वेद्यक । नाटक कामशास्त्राणि शिक्षतानि भवति १० ॥ श्री जिन भवन पातितं भवति ११ ॥ जिन बिंबानि भग्नानिवा भवति १२ ॥ जिन प्रतिमा उत्थापिता भवति १३ ॥ देवसबधानि लोटा लोटी कलसा पिगाणा उरसियो सुकम्भि कुम्भी धोतीया प्रमुखानि उपगरणानि स्वगृहेव्याभृतानि भवति १४ ॥ देव गुरु द्रव्य भक्षित भवति १५ ॥ गुरु पुस्तक विक्रीय भक्षित भवति १६ ॥ पाप कुटव पोषित भवति १७ ॥ आकाशे आवरण विना प्रतिक्रमण कृत भवति १८ ॥ अरहट्टक्षेत्र यत्र कूपाद्यारम्भाः कृता भवति १९ ॥ इष्ट वियोगे रोदन कृत भवति २० ॥ पाशी दानेन कस्यापि गलकर्त्तन कृत भवति २१ ॥ तन्मिथ्या दुकृत देहि ॥ पुनः अनत भवकृत पाप गर्हा ॥तथाहि॥ खाटकीभवे गोमहिष छागादयो मारिता भवति १॥ चटिकामारभवे चटिकादयोमारिता भवति २ ॥ धीवरभवे मत्स्या मारिता भवति ३ ॥ आखेटकभवे मृगादयो मारिता भवति ४ ॥ कुम्भकारभवे, भाण्डनिवाहा इष्टिका निवाहावा पाचिता भवति ५ ॥ तैलिकभवे, सजीव तिल सर्षपादयः पीडिता भवति ६ ॥ सूत्रधार भवे वृक्षाः छिन्ना भवति ७ ॥ मालिकभवे, नानाविध वनस्पतयोरोपिताः छिन्नाः विक्रीता भवति ८ ॥ भ्राष्टिकभवे गोधुम मुद्गादयो भ्रष्टा भवति ९ ॥ लोहकारभवे, अग्न्यारम्भ कृतो भवति १० ॥ कृषीवलभवे, क्षेत्रे हलक्षेटितं निदान कृत धान्य लूनवा भवति ११॥ भारवाहकभवे करभ वृषभ खरादीना मुपरि, प्रभूत भारारोपणेन, पृष्टगालन, कीटक पातन, व्यथोत्पादनात् कुमरणेन मारिता भवति १२ ॥ भिल्लादिभवे, सार्थो लुटितो भवति १३ ॥ कोटिकभवे, वने दावानलोदत्तो भवति १४ ॥ कोटपालभवे छेदन भेदन ताडनादिना मनुष्या. कदर्थिता भवति १५ ॥ काजी मुल्लाभवे चटिकादीना वध' कृतो भवति १६ ॥ अनार्य्यभवे वर्बरकुले मनुष्य शरीर रुधिरेण पट्टकूलवस्त्राणि रंजितानि भवति १७ ॥ सिंह व्याघ्र चित्रकादिभवे मृगादयो मारिता भवति १८ ॥ सर्प वृश्चिकादि भवे दशनेन विष व्यापारात् मनुष्यादयः पीडिता मारिता वा भवति १९ ॥ मार्ज्जारी भवे मूषकादयो भक्षितावा भवति २० ॥ गृह कोकिलाभवे मक्षिका भक्षितावा भवति २१॥

बकनवे मत्स्या गृहीता नवति २२ ॥ शाकुनिनवे तिड चटिकादयो गृहीता नवति २३ ॥ पुनरपि इहनवे परनवे विष वा कस्यापि दत्तं नवति २४ ॥ सपत्नी पुत्राणा मुपरिद्रोह श्चिंतितो नवंति २५ ॥ स्वकीय परिकीय गर्नो वागालितः पातितो नवति २६ ॥ जीव पानीय ढोलित नवति २७ ॥ शी लव्रत गृहीत्वा नग्नं नवति २८ ॥ इह परनवे श्रावकाना तीव्रव्रतानि गृही त्वा नग्नानि नवंति २९ ॥ साधु साध्वीना साधिर्मिका साधर्मिकीणा वा नि दा कृता नवति ३०॥ अन्यदपि सूतिका दूतिका कर्म्म, खंमन दलन रधन लिपनादिना यदारन कृत नवति ॥ इहनवे० मिथ्या डुःकृत देहिः ॥ ४ ॥ (अथ सुकृतानु मोदना)॥ जिण नवण १। बिंब २। पुत्थय ३ ॥ सघस रूवाइ सत्तखित्ताई ७। जीर्णोंध्धारो ८। पोसह साला ए। साहारण चैव १० ॥ १ ॥ इह परनवे श्री वीतराग चैत्य कारापित नवंति २ ॥ तेषा बिंबा नि रत्न प्रवाल मम्माणी पाषाण मयानि निर्मापितानि नवति ३ ॥ सूत्र सि ध्धात पुस्तकानिवा लेखयित्वा साधुन्यो वाचनार्थं प्रदत्तानि नवति ४ ॥ साधु साध्वीन्यः शुध्धानि एपणीयानि ॥ अशन पान खादिम स्वादिम वस्त्र पात्र पीठ फलक उंषध नेपजादीनि नक्त्या प्रतिलानितानि नवनि ५ ॥ साधर्मिकाणा नोजनेन वस्त्र परिधानेन वा नक्ति युक्तिः कृता नवति ६ ॥ जीर्णोध्धारो वा कृतो नवति ७ ॥ पौषध शाला वा कारिता नवति ८ ॥ सा धारण द्रव्य वा दत्त नवति ए ॥ आचार्य नपाध्याय वाचकादि पद प्रतिष्टा महोछव कारितो नवति ए॥ श्री शत्रुंजय, गिरिनारि, आबू, अष्टापद, समे त सिखर, राणपुर। जेसल मेरु, थनणापार्श्वनाथ, सखेस्वरा, सोरीपुर। हथिणाउर। फलवधी प्रमुख, तीर्थ यात्रा कृता नवति । तत्पुण्य अनु मोदयः ॥ १० ॥ पुनः पूर्वनवे पृथिवी कायो नूत्वा । वीतराग प्रतिमात्वेन । अप्पकायोनूत्वा । तीर्थंकराणा स्नात्रा नियेकत्वेन । अग्निर्नूत्वा, धूपोत्क्षेपत्वेन । दीपत्वेनवा । वायुर्नूत्वा, जिनाना, साधूना, धर्मार्त्ताना, शीत लत्वजनकत्वेन। वनस्पतिर्नूत्वा पुष्पादि पूजात्वेन ॥ त्रशनवे शखोनूत्वा जि नाग्रे मगलध्वनित्वेन। नपयोगत्व प्रातोनवसि । तत्पुण्य अनुमोदयः ॥११॥ पुन. श्रीपर्युषणा पर्व्वणि श्री कल्पपुस्तक गृहीत वाचित नवति । श्रीप र्युषणादि पर्वपोषधिका नोजितान्नवति ॥ १२ ॥ साधर्मिकवात्सल्यंवा कृतं

भवति ॥ १३ ॥ सुपात्रेदानदत्तंभवति ॥ १४ ॥ शीलव्रत वा पालित भवति ॥१५॥ कल्याणक एकादशी पचमी पक्खवासठ, उपधान समोसरण प्रमुख तप कृत भवति । तेषा उद्यापन वा कृतभवति ॥ १७ ॥ साधर्मिकगृहे लंभ निकाक्तताभवति ॥ १८ ॥ धर्मध्यान वा कृतभवति ॥ १९ ॥ अन्यदपि यत्पु एय कृत भवति ॥ इहभवे० । तत्सर्वं अनुमोदय: ॥ पुनरपि साप्रत निज वित्तानुसारि सत्क्षेत्र्या वित्त व्ययीकुरु । आरम्भादिनियम पक्ष, मास जाव जीव, वा कुरु । इत्यादि ॥ सर्वमगल मागल्यमित्यादि ॥ १ ॥ आराधना सुगमसरकृत वात्तिकाख्या । चक्रे क्रमात् समयसुदर आदरेण ॥ श्रचाभिधा न नगरे मह्मिमासमुद्र ॥ शिष्याग्रहेण मुनिपङ्करस चद्रवर्षे ॥ १ ॥ इति श्री श्रावकाराधना समाप्तम् ॥ ✻ ॥ इत्युपाध्याय श्री लक्ष्मीप्रधानगणि: तत्सिष्य प । मुक्तिकमलमुनि: आचारग्रथात् सग्रहीकृते आचाररत्नाकर प्रथम प्रका शे अत्यसस्कार १६ मा उदय: सपूर्णम् ॥ ✻ ॥ ॥

॥✻॥ यति ब्राह्मणादीनां आचार्यपदारोपण विधि: ॥✻॥

॥ (उक्तञ्च) ऐहिकामुत्रिकाणाच । तपसा पुण्यकर्म्मणा । फलतदो दयात्सुख । मारोहतिपदजना: ॥ १ ॥ ✻ ॥ ॥✻॥

॥ ✻ ॥ तिहा प्रथम यतीका पदारोपण करणेकी सक्षेप विधि (इहा लिखते है) विशेष विधि आचारदिनकर, विधिप्रपादिकसें जान लेना । यती का पदारोपण कहे पीछे (अनुक्रमसें) जैन ब्राह्मणका पदारोपण कहेगा॥ (यथा) विशुद्ध है कुल, जाति, रूप, चरित्र, (और) विधिसें ग्रहण कीया है चारित्र । (और) जोगकु धारके ३६ गुण युक्त होवे (तिसकु) विधिसें, (अरु) अनुक्रमसें, आचार्यपद, गच्छनायकत्व पदका आरोपण कर णा युक्त है ॥ पूर्वगुरु बेठे छते आचार्यपद देवें (अथवा) पूर्वगुरु पर लोक गये पीछे, यथोक्त गुणसहित, आचार्यकु स्तोक शुद्ध उष्ण जलसें स्नान करायके नवीन रजोहरण, मुखवस्त्रिका, शयनासन, अरु, स्वेतवस्त्र धारन करायके सिहासनपर बेठावे । (तिससमये) घणा आचार्य उपाध्याय, साधु, साध्वी, श्रावक, श्राविका, एकठे मिले ॥ आचार्यपदो चित लग्नसमय आवे थके स्वगुरु (अथवा) अन्य वयवृद्ध (अथवा) ज्ञानवृद्ध, गीतार्थाचार्य, वर्द्धमान विद्यासें । वासक्षेपादिक करके गणधर

विद्याका तिलक करै (तेसें) अन्य आचार्योपाध्याय, साधु, श्रावक श्राविका पिण परमेष्टि मन्त्रपाठ करता तिसही रीतीसें श्रीखन्डसें तिलक करै॥ (तदनतर) वृद्धगुरु पूर्वोक्त विधिसें मन्त्रित करके। वासाक्षतदान साधुकुं, श्राद्धकु करै (तदनतर) वृद्धाचार्य खमासमणाण सुत्तेण अत्थेण तडुभयेण गुरुगुणेहिवुड्ढा नित्थारग पारगोहोहि। एसें वृद्धाचार्य कहें (तव) दूसरेभि वासाक्षतक्षेप करै॥ वदनक विधि पूर्ववत्। ओरपिण उपाध्याय साध्वाधिकारे पण पदारोपणविधि आचारदिनकरादि, विधिग्रथोंसें जान लेनी॥ इति साधु आचार्य पदारोप विधिः॥ ※॥ ॥ ※॥

॥※॥ अथ विप्राणां पदारोपण विधिः॥※॥

॥※॥ आचार्य, उपाध्याय, स्थानपति, कर्म्माधिकारी, भेदसें चार प्रकारके पदक्रमहें॥ अव प्रथम आचार्यपदका लक्षण कहते हें॥ आचार्य सम्यग्दृष्टि, द्वादशव्रतधारी, अन्यलिगीके देवकों प्रणाम, सन्भाषण सस्तव विवर्जित, पापकर्मरहित, दुःप्रतिग्रहरहित, अरु, नित्यपच्चखाणसहित होते है (उक्तंच)॥ स्वल्पावादल्प सतुष्टा। अल्पभाषण तत्पराः। जिनागमा त्परंनैव। पठति श्रुतमादरात्॥ १॥ नित्य धौतवस्त्र भाजो। द्वादशव्रत धारिणः। सम्यगभ्यस्त तत्वार्थाः। प्रमाणः ग्रथवेदिनः॥ २॥ प्रायः साव द्यविरता। मिथ्यादृक् सगवर्जिताः। धीराः शाताः गुणोपेता. सर्वशास्त्र विदस्तथा॥ ३॥ प्रतिष्ठादि सर्वकर्म। कारणाभ्यास मालिनः। प्रत्याख्यान रता नित्य। प्रायः प्राशुक भोजिनः॥ ४॥ नित्य स्नानरता दाताः। वाग्मिनो मत्रवेदिनः॥ षट्कर्म्मसाधनाभ्यग्र। हृदयास्ते द्विधैवहि॥ ५॥ साधूपास्तिपरानित्य। शुद्धवंशसमुद्भवाः। प्रायःकनकरत्नादि। दुःप्रतिग्रहव र्ज्जिताः॥ ६॥ प्राणात्ययेपिशुद्रान्न। भोजनपिपराङ्मुखाः। वृताक मूल कादीना। पचोडुवरकस्यच॥ ७॥ परित्याग परानित्य। प्राजलाः प्रियवा दिनाः। विद्याप्रवादपूर्वोत्थ। मान्त्रिककल्पमार्हतः॥ ८॥ जानतोजीवसं घाते। सर्वत्रापिकृपापराः। आचार्यपदमर्हति॥ ईदृशाः ब्राह्मणोत्तमाः॥९॥

॥※॥ ऐसे पूर्वोक्त गुणयुक्त ब्राह्मणाकु आचार्यपददेनेकी विधि कहतेहें सूरिपदके उचित शुभ लग्न आये थके आचार्यपदकु प्राप्त हुये ऐसे ब्राह्मण इत्यादि गुरुः। पूर्वोक्त गुणसयुक्त ब्रह्मचर्य धारण किया। हुवा

मस्तकमुन्डित (और) शिखासयुक्त (ऐसे शिष्यकु) पौष्टिक करणपूर्वक, शुभचैत्यमें, (वा) धर्मक्षेत्रस्थानमें (वा) घरमे (वा) आराममें (वा) तीर्थपर लेजायके । आचार्य आपके वामपार्श्वे बेठावे । पीछे १ वस्त्र पहिरायके, अरु १ वस्त्रका उत्तरासण करायके । समवसरणके आगे, तीन प्रदक्षिणा करावें (पीछे) गुरु, शिष्य, दोनु वर्द्धमान स्तुतियासे देववंदन शक्रस्तवका पाठ करै (तदनंतर) श्रुतदेवता १ । शांतिदेवता २ । क्षेत्रदेवता ३ । भुवनदेवता ४ । शासनदेवता ५ । वैयावृत्तकर ६ । देवताका कायोत्सर्ग स्तुति कथनादिक करें (पीछे) सम्यक्त दंडक १२ व्रत उच्चारण करायके, गुरु आसनपर बेठे (तब) वह होनेवाला आचार्य आसनपरसें उनके विनय पूर्वक गुरुके आगल बेठे (तदनंतर गुरु) लग्नसमय प्राप्त होनेसें तिस शिष्यके दक्षिणकर्णमे, षोडशाक्षरी परमेष्टि महाविद्या, गौतममंत्र करके सहित, तीनवेर उपदेश करे (तदनंतर) शिष्य गुरुकु (अरु) समवसरणकु, तीनवेर प्रदक्षिणा करे । संक्षिप्त शक्रस्तवकु पढै । यतिसाधु गुरु होवे (तो) द्वादशावर्त्त वंदना करे (और) गृहस्थि जैनाचार्य गुरू होय तो नमोस्तु २ कथन पूर्वक दंडवत् प्रणाम करै । (तदनंतर गुरु) शिष्यकु आपके अर्द्धासनपर दक्षिणपार्श्वमें बेठायके, परमेष्टी मंत्रसें मंत्रित करके वासक्षेप करे (पीछे) प्रकटस्वरसें शिष्यकु वेदमंत्र पढावें ॥ ✻ ॥

॥✻॥ ॐ अर्हं णमोऽर्हतेऽर्हत्प्रवचनाय । सर्वसंसारपारदाय । सर्वपापक्षयंकराय । सर्वजीवरक्षायः । सर्वजगज्जंतुहिताय । अत्रामुकपात्रे सुप्रतिष्टित जिनमत । नमोस्तु तीर्थंकराय । तीर्थायच । शिवायच, शुभायच, जयायच, विजयायच, स्थिरायच, अक्षायच, प्रबोधायच, सुबोधायच सुतत्वायच सुप्रज्ञप्तायच नमोनमः ॥ सर्वाऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्यः । सत्वस्मिन्प्राणिनि सुप्रतिष्ठितानि अणुव्रतानि षट्कर्मनिरतोस्तवजतु. सक्रियोऽस्तु सद्गुणोस्तु सद्व्रतोस्तु सन्मतोऽस्तु रागतिरस्तु अर्हं ॐ ॥ (इति मंत्रवासक्षेपपूर्वं त्रि पठेत्) पीछे संघकु वासाक्षतदान पौष्टिक दंडक पठन पूर्ववत् (पीछे) शिष्यकु आगल बेठायके, संघकेसमक्ष, ऐसी आज्ञा देवै (उक्तंच) कार्यंचैसत्वयानित्य । दृढसम्यक्तधारणं । उपासनंच साधूनां द्वादशव्रतपालनं ॥ १ ॥ षट्कर्माणि वधेयानि । वेदागमसुशीलनं । यद्

जैंतं जिनमते । कार्यं प्राणातयेनतत् ॥ २ ॥ कार्या योग्यशसंस्कारा । दिगृह्णिान्नवतासता । अन्नावेव्रतिनाचैव । विधेयव्रतरोपण ॥ ३ ॥ शांतिकं पौष्टिकंचैव । प्रतिष्टोद्यापनतथा । बलिरावश्यकचैव । योगश्चित तपोविधिः ॥ ४ ॥ गृहीणाच तथा चार्य । पदाद्यारोपण पुनः । प्रायश्चित्तविचारश्च । कर्माण्येतानिसर्वदा ॥ ५ ॥ कार्याणिपतियोग्यच । नान्यः कर्म्मसमाचरः । इत्यनुज्ञाप्यतशिष्य । तिलकेनापिविवर्द्धयेत् ॥ ६ ॥ (ऐसें शिक्षा देवै) तब शिष्यगुरुकु नमस्कार करे (पीछे) सघपण नमोस्तुपूर्वक नव्य आचार्यकु नमस्कार करै । यह उत्सव सूरिपद सदृशहै । शिष्य, गुरुकी स्वर्णककणसें (अरु)स्वर्णमुद्रासें, वस्त्रसें, पूजन करै॥इति पदारोपे-आचार्यपदारोप विधिः॥

॥ ※ ॥ अब उपाध्याय पदकी विधिः ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ उक्तंच ॥ वेदपारगतः शातो । द्वादशव्रतधारकः । जिनश्रमः क्षमीदाता । दयालुः सर्वशास्त्रवित् ॥ १ ॥ गुरुभक्तः प्रजामान्यः । कुशला सर्वकर्मसु । कुलीन ईदृशोविप्रः । उपाध्यायपदेऽर्हति ॥ २ ॥ अथोपाध्याय पदारोपणविधिः ॥ पूर्वोक्त स्थानके गुरु पौष्टिक कर्म करके, सर्व विधि आचार्यपदकीपरै करै (इतना विशेषहै) उपाध्यायकु केवल गौतम मत्रकाही ज दानहै । अरु आपके अर्द्धासनपर बेठावे नही । वासक्षेप करके वेदमंत्र पढावे ॥ (यथा) ॐ अर्हं नमोऽर्हते अर्हदागमाय । जगदुद्योतनाय । जगच्चक्षुसे । जगत्पापहराय । जगदानदनाय । श्रेयस्कराय । यशस्कराय । प्राणिन्यस्मिन्स्थित । भवतु प्रवचन अर्हं ॐ ॥(इसमत्रकुं) तीनवेर पढके, पौष्टिक दण्डक पढावें । गुरु आप नमस्कार न करै । संघकों वासाक्षतदान पूर्ववत् । सर्वसंघ नमस्कार करै । गुरु सबके समक्ष आज्ञा देवे । (अत्र गुरु) । यति, आचार्य, उपाध्याय, सुसाधु, गृहस्थाचार्यरूपः (उक्तंच) वरस धार्य व्रतयुत । सम्यक्त भवनादृढ । अर्हन्मते वर्जित य । स्कार्यं प्राणात्ययेन तत् ॥ १ ॥ व्रतारोपं परित्यज्य । सस्कारगृह्णिाचये । विधेयाश्चैव निःशकं । त्वयापंचदशापिते ॥ २ ॥ आचार्यादीनामन्नाचे । शातिक पौष्टिक तथा । एतान्येवहिकर्माणि । विधेयानिन्वयासदा ॥ ३ ॥ इत्यनुज्ञाप्यत शिष्य । तिलकेनापिवर्द्धयेत् ॥ (इसजगे) उत्सवकी विधि सर्व आचार्यके पदसरीखी करणी ॥ इति पदारोपे ... ५ पदारोप विधिः ॥ ※ ॥

॥ ॥ अथ स्थानपतिलक्षण देखाते है ॥ ॥

॥ ॥ (उक्तंच) शांतोजितेंद्रियो मौनी। षट्कर्मनिरतः सदा। द्वादशव्रतधारीच। प्राज्ञः सर्वप्रजाप्रियः ॥ १ ॥ सर्वत्रापिहि संस्कारे। निपुणः सर्वरंजकः। प्रांजलिस्तु सदासौम्य। सर्वं कुर्वन् समंजस ॥ २ ॥ बलिपूजादिकार्येषु। कुशलो बोधिवासितः। ईदृशो योग्यतामेति। स्थानपात्य द्विजोत्तमः ॥ ३ ॥ (स्थानपति पदारोपविधि) सर्व उपाध्याय पदके स्थापनकि विधि समान हैं। केवल मंत्रप्रदान नहि। संघसमक्ष गुरु अनुज्ञा देवै। त्रियेयो वत्सभवता। विवाहादि क्रियाक्रमः। संस्कारपद सर्वहि। गृहीणा व्रतवर्जित ॥ १ ॥ शांतिक पौष्टिकंचैव। वाल्यावश्यक कर्म्मंच। कुरुष्वत्व प्रतिष्टाच। प्रायश्चित्तानुयोजन ॥ २ ॥ इतिब्राह्मण पदारोपेस्थानपति पदारोपविधि ॥ ॥

॥ ॥ अथ कर्माधिकारके लक्षण देखाते है ॥ ॥

॥ ॥ उक्तंच। द्वादशव्रत सम्यक्त। धारको वेदपारग। दक्षः सर्वशास्त्रवेदी। प्रमादरहितो गुणी ॥ १ ॥ ससुभक्तः सर्वकम। कुशलश्च कलानिधि। शूरः कृतज्ञो दाताच। मंत्राचेद्राजरंजक ॥ २ ॥ पटुः प्रवक्ताधीरश्च। साधुभक्ति परायण। विनीतो देशकालज्ञो। विप्रः कर्माधिकारकृत् ॥ ३ ॥ इस कर्माधिकारके पदारोपणकीविधि स्थान पतिके पदतुल्य हैं॥ मंत्रदान नहि (गुरु शिक्षा करै) शांतिक पौष्टिकंचैव। संस्कार व्रतवर्जित। नृपसेवामपायाच। तथाधिकृतमेवच ॥ १ ॥ देशग्राम पालनच। नृपमंत्र विसर्जन। कुरुष्व सर्वकर्म्माणि। पापमुक्तानि वत्सहे ॥ २ ॥ इति ब्राह्मण पदारोपे कर्म्माधिकार पदारोप विधिः ॥ ॥ (इस उपरांत) राजा, मंत्री, सेठ, सेनापती, आदिपद स्थापन करनेंकी विधि आचार दिनकरसें जाण लैनी ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ अथ त्रिकाल जैन गायत्री लि० ॥ ॥

॥ ॥ प्रथम शुद्ध जलसें स्नान करके अंग पवित्र करे। शुद्धवस्त्र पहिरै (पीछे ऐसा मंत्र पढै) जिन जिन जिन। वाक् वाक् वाक्। प्रणाम॥ ३ ॥ अपवित्र पवित्रोवा। सुस्थितो दुस्थितोपिवा। ध्यायेत्यच नमस्कारं।

सर्वपापै प्रमुच्यते ॥ १ ॥ ॐ अपवित्र पवित्रोवा ॥ सर्वावस्था गतोपिवा ! यःस्मरेत् परमात्मान । सबाह्या भ्यतरेशुचिः ॥ २ ॥ इस दोनु गाथाको तीन वार पढै ॥ (पीछे) ॐ ह्रीं ह्रीं ह्री ह्रां ह्रो ह्रः अत्रस्थ भूमिपालायक्रमः स्वाहाः ॥ इस मत्रसें उत्तरदिश (वा) पूर्वदिशाके सन्मुख बैठे । दिशा प्रवेश करे ॥ तीनवेर शुद्ध मृत्तिकासें हाथ धोवे । (पीछे) तीनवेर आच मन करे ॥ (और) ॐ ह्रीं भूशुध्यस्वाहाः । इस मत्रसें जलका छीटा देके भूमी शुद्ध करै ॥ (पीछे) ॐ ह्री ह्रीं ह्रूं ह्रः असिया उसाय नमः समस्त तीर्थ नदीजल भवतुस्वाहा ॥ इस मंत्रसें जलकों पवित्र करे ॥ (तिस पीछे) हाथ जोडके ऐसा मंत्र पढे ॥ ॐ ह्रीं लक्ष्मी क्षिम ह स स्वाहाः ॥ ॐ ह्री क्षिय क्षि ह स स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं क्षि वैं मैं तैं पैं द्रैं द्रा द्रौ ह स स्वाहा ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ द्वादशाग फरसनमत्रः ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ ॐ ह्रीं अंगुष्टाभ्यानमः । ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यानमः । ॐ ह्री मध्य माभ्यानमः । ॐ ह्रीं अनामिकाभ्यानमः । ॐ ह्रीं कनिष्टाभ्यानमः । ॐ ह्री करतलाभ्यानमः । ॐ ह्री करपृष्ठाभ्यानमः । ॐ ह्री करपूराभ्यानमः । ॐ ह्रीं नेत्रद्वयाभ्यानमः ॥ ॐ ह्रीं अधरपल्लवाभ्यानम । ॐ ह्रीं हृदयायनमः । ॐ ह्रीं सिरसेनमः ॥ १२ ॥ इति द्वादशाग स्पर्शनमत्रः ॥ ॐ ह्री अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणी अमृतश्रावय २ स स क्लि क्लि व्रूँ व्रू द्रा द्रा द्रिं द्रावय २ ह स क्षिम हंसेस्वाहाः ॥ चिकिखल्लमत्रः ॥ (पीछे) ॐ ह्रीं अर्ह द्भचस्वाहाः । ॐ ह्री सिद्धेभ्यस्वाहाः ॐ ह्री सूरिभ्यस्वाहाः । ॐ ह्रीं पाठ केभ्यस्वाहाः । ॐ ह्री सर्व साधुभ्यस्वाहाः । ॐ ह्री जिनधर्मेभ्यस्वाहाः । ॐ ह्रीं जिनागमेभ्योनमः स्वाहाः । ॐ ह्रीं जिन चैत्यालयेभ्योनमः स्वाहा । ॐ ह्री सम्यग् दर्शनेभ्योनमः स्वाहाः । ॐ ह्रीं सम्यग् ग्यानेभ्यःस्वाहा. । ॐ ह्री सम्यग् चारित्रेभ्यस्वाहाः । ॐ ह्रीं सम्यग् तपोभ्यःस्वाहाः । ॐ ह्रीं सम्यग् गुरुभ्यःस्वाहाः । ॐ ह्रीं अस्मद्विद्या गुरुभ्योनमः स्वाहाः ॥ ॐ ह्रीं अस्मद् सर्व गुरुभ्यःस्वाहा ॥ इति तर्पणमत्र ॥ (पीछे) प्राणायाम ध्यान करे। दहिणे हाथको अगुठो (तथा) अनामिका आगुली, नाकके फरस करके, चंद्रस्वर वहते ... दि अक्षर तीनवार उच्चारण करे (पीछे) चन्द्र

स्वरे सपूर्ण करके स्वहस्ते जापकरे। जिनस्वरूप । जिनलक्षण जिनपदवृंद । जिनपादाबुज । जिनमदिर । जिनकथालाप । जिनबोध । जिनदर्शन । जिन महावीर्य । जिनगुणस्तोत्र । जिन जगन्मगल । ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं ह्रौ ह्र ॐ ॐ ह्रः अर्हं अ सि आ उ सा ग्यान दर्शन चारित्रेभ्यो ह्रीं नम ॥ इस मत्रका १०८ जापसदा करै। इतना न होसके तो ५४ (तथा) २७ (या) ९ वेर अवश्य जाप करै ॥ ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्र दिगबराय धौतवस्त्रायनमः ॥ वस्त्र शुद्ध करै ॥ ॐ ह्री असि आ उ सा य अर्हं मम सर्वांग सुद्धिकुरु २ स्वाहाः ॥ स्नान मत्र प्राणायाम ॥ ॐ भूरनवस्व सवितुवरेण्य । भृगुदेवस्य सिद्धिमहि उ धी योनि प्रचोदयात् ॥ इति आचमन मत्रः ॥ ॐ ह्री सर्वांगत गायत्रीमत्र ॥ ॐ ह्रीं सम्यग् दर्शननमः ॥ ॐ कमल्व्यूं, ॐ समल्व्यूं, ॐ लमल्व्यूं, ॐ कमल्व्यूं, ॐ शमल्व्यूं, ॐ षमल्व्यूं, ॐ समल्व्यूं, ॐ ह्मल्व्यूं, अत्रआत्मनेनमः ॥ जाप्य १०८ ॥ इति प्रभात गायत्री विधिः ॥ ※ ॥

॥※॥ अथ मध्यान्ह गायत्री मंत्रः ॥※॥

॥ ※ ॥ ॐ ह्रीं सम्यग् ग्यानाय नमः ॥ ह्रीं ह्रीं यमल्व्यूं, ह्रीं समल्व्यूं ह्रीं लमल्व्यूं । ह्रीं कमल्व्यूं । ह्रीं शल्व्यूं । ॐ षमल्व्यूं । ह्रीं समल्व्यूं ह्रीं ह्मल्व्यूं अर्हं आत्मनेनम ॥ जाप १०८ । इति मध्यान्हगायत्री ॥ ※ ॥

॥※॥ अथ संध्यागायत्री मत्रः ॥※॥

॥ ॐ ह्रीं सम्यग् चारित्रायनमः । श्रीं क्ष्मल्व्यूं, श्रींफल्व्यूं, श्रीं समल्व्यूं श्रीं कमल्व्यूं । श्रीं लमल्व्यूं । श्रीं शमल्व्यूं । श्रीं ष्ल्व्यूं । श्रीं भमल्व्यूं । श्रीं कमल्व्यूं, सिद्ध आत्मनेनम । इसका १०८ वेर जाप करे ॥ ※ ॥ इति सध्या गायत्री विधिः ॥ ※ ॥

॥※॥ अथ ऋषिमम्डलजीकी पूजा विधि लि० ॥※॥

॥※॥ ॐ श्रीऋषभदेवजी १॥ श्री अजितनाथजी २॥ श्री सभवनाथजी ३ ॥ श्री अभिनदनजी ४ ॥ श्री सुमतिनाथजी ५॥ श्री पद्मप्रभुजी ६ ॥ श्री सुपार्श्वनाथजी ७ ॥ श्री चद्राप्रभुजी ८ ॥ श्री सुविधिनाथजी ९ ॥ श्री शीतलनाथजी १० ॥ श्री श्रेयासनाथजी ११ ॥ श्री वासुपुज्यजी

१२ ॥ श्री विमलनाथजी १३ ॥ श्री अनतनाथजी १४ ॥ श्री धर्म्मनाथजी १५ ॥ श्री शातिनाथजी १६ ॥ श्री कुंथुनाथजी १७ ॥ श्री अरनाथजी १८ ॥ श्री मल्लिनाथजी १९ ॥ श्री मुनिसुव्रतजी २० ॥ श्री नमिनाथजी २१ ॥ श्री नेमिनाथजी २२ ॥ श्री पार्श्वनाथजी २३ ॥ श्री वर्द्धमानजी २४ ॥ इति चतुर्विंशति तीर्थ कराः ॥ ह्री नम । क्रौँ नमः २ ॥ ववववववववववववववव १ ॥ ववववववववववववववव २ ॥ ववववववववववववववव ३ ॥ ववववववववववववववव ४ ॥ उँ ह्रीँ अर्हद्भ्योनमः उँ ह्रीँ सिद्धेभ्यो नमः । उँ ह्रीँ आचार्येभ्योनमः । उँ ह्रूँ उपाध्यायेभ्योनमः। उँ ह्रेँ सर्व साधुभ्योनमः। उँ ह्रैँ ज्ञानेभ्योनमः। उँ ह्रौ दर्शनेभ्यो नमः । उँ ह्रः चारित्रेभ्योनमः ॥ (इति प्रथम वलय) ॥१॥ उँ इन्द्रायनमः । उँ अग्नयेनमः । उ यमायनमः । उँ नैर्ऋतायनमः । उँ वरुणायनमः । उँ वायवे नमः । उँ कुवेरायनमः । उँ ईशानायनमः । उँ नागायनमः । उँ ब्रह्मणेनमः १०॥ (दशदिग्पाल नामानि) ॥ (इति द्वितीय वलयः) ॥ २ ॥ उँ सूर्यायनमः । उँ चंद्रायनमः । उँ मंगलायनमः । उँ बुधायनमः । उँ वृहस्पतयेनमः । उँ सुक्रायनमः । उँ शनेश्चरायनम. । उँ राहवेनमः ॥ (इति तृतीय वलयः ३)॥ अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ ओ औ अं अः ॥ क ख ग घ ङ २ ॥ च छ ज झ ञ ३ ॥ ट ठ ड ढ ण ४ ॥ त थ द ध न ५ ॥ प फ ब भ म ६ ॥ य र ल व ७ ॥ श ष स ह ८ ॥ उँ ह्रीँ इन्द्रभूतयेनमः १ ॥ उँ ह्री अग्निभूतयेनमः २ ॥ उँ ह्री वायुभूतये नमः ३ ॥ उँ ह्रीँ व्यक्तायनम· ४ ॥ उँ ह्रीँ सुधर्मणेनमः ५ ॥ उँ ह्रीँ मंडितायनमः ६॥ उँ ह्रीँ मोर्यपुत्रायनमः ७॥ उँ ह्री अकंपितायनमः ८॥ उँ ह्रीँ अचलभ्रातायनमः ९ ॥ उँ ह्री मेतार्यायनमः १० ॥ उँ ह्रीँ प्रभासाय नमः ११ ॥ इति ११ गणधरनामानि ॥ उँ ह्रीँ अर्हँ णमो जिणाण १ ॥ उँ ह्रीँ अर्हँ णमो उहिजिणाण २ ॥ उँ ह्रीँ अर्हँ णमो परमोहि जिणाणं ३ ॥ उँ ह्रीँ अर्हँ णमो सव्वोहिजिणाणं ४ ॥ उँ ह्रीँ अर्हँ णमो अणंतोहिजिणाण ५ ॥ उँ ह्रीँ अर्हँ णमो कोठ्ठबुद्धीणं ६ ॥ उँ ह्रीँ अर्हँ णमो बीयबुद्धीण ॥ उँ ह्रीँ अर्हँ णमो पयाणुसारीण ८ ॥ उँ ह्रीँ अर्हँ णमो [illegible] ण ९ ॥ उँ ह्रीँ अर्हँ णमो दिठ्ठीविसाण

१० ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो संभिन्नसोयाणं ११ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो सयसं बुद्धाणं १२ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो पत्तेयबुद्धाण १३ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो बोहियबुद्धीण १४ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो ऋजुमईण १५ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउलमईण १६ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो दशपुव्वीण १७ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो चउदशपुव्वीण १८ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो अठ्ठगमहानिमित्तकुसला ण १९ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउव्वणड्ढिपत्ताण २० ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो विज्जाहराण २१ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो चारणाण २२ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो पन्हासमणाण २३ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो आगासगामीण २४ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो खीरासवाण २५ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो सप्पिआसवाण २६ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो मह्रुयासवाण २७॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो अमियासवाण ३८॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो सिद्धायणाणं १९ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो भगवया महइम हावीर वद्धमाण बुद्धरिसीण ३० ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो उग्गतवाण ३१ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो अक्खीण महाणसियाण ३२ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो वद्दमाणाण ३३ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो दित्ततवाण ३४ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो तत्ततवाण ३५ ॥ ॐ ह्रीं अर्ह णमो महातवाण ३६ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरतवाणं ३७ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरगुणाण ३८ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरपरकमाण ३९ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो बम्भयारीण४० ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो आमो सहीपत्ताण४॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो खेलोसहीण४२॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो जल्लोसहीण ४३ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो विप्पोसहिपत्ता ण ४४ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोसहिपत्ताण ४५ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो मणबलीण ४६ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो वयणबलीण ४७ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं ण मो कायबलीण ४८ ॥ (इत्यष्टचत्वारिंशल्लब्धिपदानि) ॥ ॥ ॐ नाभयेनमः १ ॥ ॐ जितशत्रवेनम २ ॥ ॐ जितारवेनम॰ ३ ॥ ॐ सवरायनम॰ ४ ॥ ॐ मेघायनमः ५ ॥ ॐ धरायनम. ६ ॥ ॐ प्रतिष्टायनम॰ ७ ॥ ॐ महशेनायनमः ८ ॥ ॐ सुग्रीवायनम ९ ॥ ॐ दृढरथायनम॰१०॥ ॐ विश्नवेनम॰ ११॥ ॐ वसु पुज्यायनम॰ १२ ॥ ॐ कृतवर्मणेनम॰ १३ ॥ ॐ सिंहसेनायनम॰ १४॥ ॐ भा नवेनमः १५ ॥ ॐ विश्वसेनायनम॰ १६ ॥ ॐ सूरायनमः १७॥ ॐ सुदर्शनाय नम॰ १८ ॥ ॐ कुंभायनमः १९ ॥ ॐ सुमित्रायनम, २० ॥ ॐ विजयायनमः

२१ ॥ ॐ समुद्रविजयायनमः २२ ॥ ॐ अश्वशेनायनमः २३ ॥ ॐ सिद्धार्थायनमः २४ ॥ (इति चतुर्विंशति जिनजनका नामानिः) ॥ ॐ मरुदेवायै नमः १॥ ॐ विजयायैनमः २ ॥ ॐ सेनायैनमः ३॥ ॐ सिद्धार्थायैनमः४॥ ॐ सुमगलायैनमः ५॥ ॐ सुशीमायैनमः ६॥ ॐ प्रथ्वीमातायैनमः ७॥ ॐ लक्ष्मणायैं नमः ८॥ ॐ रामायेनमः ९ ॥ ॐ नंदायैनमः १०॥ ॐ विश्नवेनमः ११॥ ॐ जयायैनमः १२ ॥ ॐ स्यामायैनमः १३ ॥ ॐ सुयसेनमः १४ ॥ ॐ सुव्रतायैनम १५॥ ॐ अचिरायैनम. १६ ॥ ॐ श्रियैनमः१७ ॥ ॐ देव्यैनमः १८ ॥ ॐ प्रभावत्यैनमः १९ ॥ ॐ पद्मावत्यैनमः २०॥ ॐ वप्रायैनमः २१ ॥ ॐ शिवायैनमः २२ ॥ ॐ वामायैनमः २३॥ ॐ त्रिशलायैनमः २४ ॥ (इति चतुर्विशति जिनजननीनामः)॥ ॐ ह्रियैनमः १॥ ॐ श्रियैनम॰ २ ॥ ॐ धृत्यै नमः ३॥ ॐ लक्ष्म्यैनमः ४ ॥ ॐ गोर्य्येनमः ५ ॥ ॐ चंम्येनम ६ ॥ ॐ सरस्वत्येनम॰ ७ ॥ ॐ जयायैनमः ८ ॥ ॐ अवायैनमः ९ ॥ ॐ विजयायैनमः १० ॥ ॐ क्लिन्नायैनमः ११॥ ॐ अजितायैनमः १२॥ ॐ नित्यायैनमः१३॥ ॐ मदद्रवायैनमः १४ ॥ ॐ कामांगायनम॰ १५ ॥ ॐ कामवाणायैनमः १६ ॥ ॐ सानंदायैनमः १७ ॥ ॐ नदमालियैनमः १८ ॥ ॐ मायायैनमः १९ ॥ ॐ मायाविन्येनमः २०॥ ॐ रोद्रयैनमः२१ ॥ ॐ कलायैनमः २२॥ ॐ काल्यै नम॰ २३॥ ॐ कालप्रियायैनमः २४॥ इति श्रीदेव्यादि चतुर्विंशतिनामानि॥ ॥ ॐ गोमुखायनम॰ १ ॥ ॐ महायक्षायनम २ ॥ ॐ त्रिमुखायनमः ३ ॥ ॐ यक्षनायकायनमः ४ ॥ ॐ तुंबुरवेनमः ५॥ ॐ कुसुमायनम. ६ ॥ ॐ मातंगायनमः ७ ॥ॐ विजयायनमः ८ ॥ ॐ अजितायनम ९ ॥ ॐ ब्रह्मणेनमः १० ॥ ॐ यक्षराजायनमः ११ ॥ ॐ कुमारायनमः १२ ॥ ॐ षणमुखायनमः १३ ॥ ॐ पातालायनम १४ ॥ ॐ किन्नरायनमः १५ ॥ ॐ गरुडायनमः १६ ॥ ॐ गंधर्वायनमः १७ ॥ ॐ यक्षेंद्रायनमः १८॥ ॐ कुबेरायनमः१९॥ ॐ वरुणायनमः २० ॥ ॐ भृकुटयेनमः २१ ॥ ॐ गोमेधायनम. २२ ॥ ॐ पार्श्वयक्षायनमः २३ ॥ ॐ ब्रह्मशांतयेनमः २४ ॥ (इति गोमुखादि चतुर्विंशति जिनशासन यक्षनामानि ॥ २४॥ ॐ चक्रेश्वर्यैनम. १ ॥ ॐ अजितबलायैनमः २॥ ॐ दुरि[illegible] ॐ कालिकायैनमः ४ ॥ ॐ महाकाल्यै नम ५॥ ॐ श्[illegible]यैनमः७॥ ॐ भृकुटयेनमः८॥ ॐ सुतार

कायैनम ९।। ॐ अशोकायैनमः १०।। ॐ मानव्यैनमः ११ ।। ॐ चमायैनमः १२ ।। ॐ विदितायैनमः १३ ।। ॐ अंकुशायैनमः १४ ।। ॐ कदर्प्पायैनमः १५ ।। ॐ निर्वाणयैनमः १६ ।। ॐ बलायैनम॰ १७ ।। ॐ धारण्यैनमः १८।। ॐ धरणप्रियायैनम १९ ।। ॐ नरदत्तायैनम॰ २० ।। ॐ गधार्व्यनमः २१ ।। ॐ अंबिकायैनमः २२ ।। ॐ पद्मावत्येनमः २३ ।। ॐ सिद्धायकायनम २४ ।। (इति चक्रेश्वर्य्यादि चतुर्विंशति जिनशासन देवीनामानि) ।। ॐ रोहिण्यैनमः १ ।। ॐ प्रज्ञप्तिनमः २ ।। ॐ वज्रशृंखलायैनमः ३ ।। ॐ वज्रांकुशायेनमः ४ ।। ॐ चक्रेश्वर्यैनम ५ ।। ॐ नरदत्तायैनमः ६ ।। ॐ काल्यैनमः ७ ।। ॐ महाकाल्येनमः ८ ।। ॐ गोर्य्यैनमः ९ ।। ॐ गधार्य्यैनमः१० ।। ॐ महाज्वालायैनमः ११ ।। ॐ मानव्यैनम॰ १२ ।। ॐ वेरोट्यायैनमः १३ ।। ॐ अछुप्तायैनमः १४ ।। ॐ मानस्यैनम. १५ ।। ॐ महामानस्यैनमः १६ ।। (इति रोहिण्यादि षोडशविद्यादेवीनामानि) ।। ॐ नैसर्प्पकायनमः १ ।। ॐ पांडुकायनम. २ ।। ॐ पिंगलायनमः ३ ।। ॐ सर्वरत्नायनमः ४।। ॐ महापद्मायनमः५।। ॐ कालायनम॰६।। ॐ महाकालायनमः७।। ॐ माणवायनम॰८।। ॐ शंखायनमः ९ ।। (इति नवनिधाननामानि) ।। ॐ सौधर्मेंद्रायनम. १ ।। ॐ ईशानेंद्रायनमः २ ।। ॐ सनत्कुमारेंद्रायनमः ३।। ॐ माहेंद्रायनमः ४।। ॐ ब्रह्मेंद्रायनम. ५।। ॐ लांतकेंद्रायनमः ६ ।। ॐ शुक्रेंद्रायनमः ७ ।। ॐ सहश्रारेंद्रायनम ८ ।। ॐ प्राणतेंद्रायनमः ९।। ॐ अच्युतेंद्रायनमः १० ।। ॐ चंद्रायनम॰ ११ ।। ॐ सूर्यायनम॰ १२ ॐ चमरेंद्रायनमः १३ ।। ॐ वलींद्रायनमः १४ ।। ॐ धरणेंद्रायनम॰ १५ ।। ॐ भूतानेंद्रायनमः १६ ।। ॐ वेणुदेवेंद्रायनम १७ ।। ॐ वेणुदालींद्रायनमः १८ ।। ॐ हरिकांतेंद्रायनमः१९ ।। ॐ हरिस्सहेंद्रायनम. २०।। ॐ अग्निसखेंद्रायनमः २१ ।। ॐ अग्निमाणवेंद्रायनम. २२ ।। ॐ पूर्णेंद्रायनम. २३ ।। ॐ विशिष्टेंद्रायनम. २४ ।। ॐ जलकांतेंद्रायनम॰ २५ ।। ॐ जलप्रभेंद्रायनमः २६ ।। ॐ अमितगतींद्रायनम॰ २७ ।। ॐ मितवाहनेंद्रायनम.२८।। ॐ वेलवेंद्रायनम॰ २९ ।। ॐ प्रभंजनेंद्रायनमः ३० ।। ॐ घोषेंद्रायनम ३१ ।। ॐ महाघोषेंद्रायनम॰ ३२ ।। ॐ कालेंद्रायनम. ३३ ।। ॐ महाकालेंद्रायनमः ३४ ।। ॐ सरुपेंद्रायनम. ३५ ।। ॐ प्रतिरुपेंद्रायनमः ३६ ।। ॐ पूर्णभद्रेंद्रायनम ३७ ।। ॐ माणिभद्रेंद्रायनमः ३८ ।। ॐ भीमेंद्रायनमः ३९ ।। ॐ महा

न्नीमेंद्रायनमः ४० ॥ ॐ किन्नरेंद्रायनमः ४१ ॐ किंपुरषेंद्रायनम ४२ ॥ ॐ सत्पुरुषेंद्रायनमः ४३ ॥ ॐ महापुरषेंद्रायनमः ४४ ॥ ॐ अतिकायेंद्रायनमः ४५॥ॐ महाकायेंद्रायनमः ४६ ॥ ॐ गीतरतींद्रायनमः ४७ ॥ ॐ गीतयशें द्रायनमः ४८ ॥ ॐ सन्निहितेंद्रायनमः ४९ ॥ ॐ सामानिकेंद्रायनमः ५० ॥ ॐ धात्रेंद्रायनमः ५१ ॥ ॐ विधात्रेंद्रायनम ५२ ॥ ॐ ऋषींद्रायनमः ५३ ॥ ॐ ऋषिपालेंद्रायनमः ५४ ॥ ॐ ईश्वरेंद्रायनम ५५ ॥ ॐ महेंद्रायनमः ५६ ॥ ॥ ॐ वत्सेंद्रायनम. ५७ ॥ ॐ विशालेंद्रायनमः ५८ ॥ ॐ हास्येंद्रायनमः ५९ ॥ ॐ हास्यरतींद्रायनम' ६०॥ ॐ श्रेयइंद्रायनम' ६१॥ ॐ महाश्रेय इंद्रायनमः ६२ ॥ ॐ पदगेंद्रायनम ६३ ॐ पदगपतींद्रायनमः ६४॥(इति चतुःषष्टींद्राणानामानि) ॥ ॐ अणिमसिध्ध्येनमः १॥ ॐ गरिमसिध्ध्येनमः २॥ ॐ लघिमसिध्ध्येनमः ३ ॥ ॐ प्राकाम्यसिध्ध्येनमः ४ ॥ ॐ महिम सिध्ध्येनमः ५ ॥ ॐ इसित्वसिध्ध्येनमः ६ ॥ ॐ विशित्वसिध्ध्येनमः ७ ॥ ॐ प्राप्तिसिध्ध्येनमः ८ ॥ (इत्यष्टसिध्धिनामानि)॥ ॐ श्रीवरणेंद्रोरक्षतुः १ ॥ श्रीपद्मावतिरक्षतुः २ ॥ श्री गौतमस्वामिनेनम. ३ ॥ श्रीवैरोट्यारक्षतुः ४ ॥ इति श्री ऋषमंम्लजीका पजनविधि संपूर्णम् ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ वीशस्थानक मंम्ल पूजन विधि लि० ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ णमोणत विन्नाण सहसणाण । सहाण दिया सेसजतूगयाण । न्नवान्नोज विद्धेयणे वारणाण । णमो वोहियाण वराण जिणाण ॥१॥ ॐ ह्रीं श्री अर्हन्नचोनमः १ इति प्रथम पदे जिनेंद्रपूजा ॥ (अथ सिध्ध पूजा)॥ लोगग्गन्नागोपरि सठियाणं । वुध्धाण सिध्धाण मणिदियाणं । निस्सेस कम्मरकय कारगाण । णमो सया मगल धारगाण ॥ ॐ ह्रीं श्री सिध्धेत्र्योनम' २ ॥ (अथ तृतीय पद)॥ अणतससुध्ध गुणाकरस्स । डुरकधयारुग्गदिवाकरस्स । अणत जीवाण दया गिहस्स । णमो २ सघ चउव्विहस्स ॥ ॐ ह्रीं श्री प्रवचनायनम' ३ ॥ (अथ चतुर्थपद) ॥ कुवाटि केलीतरु सिधुराण । सूरी सराण मुणिवधुराण । धीरत्त सतझियमदराणं । णमो सया मंगल मदिराण ॥ ॐ ह्रीं श्रीं आचार्येत्र्योनमः ॥ ४ ॥ (अथ पचम पद) ॥ सम्मत्त सयम पतित न्नविजन अतिह थिर करता न्नला । अवगुण अदूपित गुणविन्नूपित चद्रकिरण समोज्जला । अष्टाधिकादशसह

ग सीलागरथ रुचिरधाराधग । भवसिंधु तारण प्रवर कारण नमो थिवरमु नीसरा ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं श्री स्थविरायनमः ॥ (अथ छठेपद उपाध्याय) ॥ सबोहिबीज कुर कारणाण । णमो णमो वायग वारणाण । कुबोहि दंती हरिणेसगण । विग्धोवसताव पयोदराण ॥ ॐ ह्रीं श्री उपाध्यायेभ्योनमः ॥ ६ ॥ अथ सातमो पद साधु पूजा ॥ सतज्जियासेस परी सहाण । नि रसेस जीवाण दयागिहाण । सन्नाण पज्जाय तरूवणाण । णमो णमो होउ तवोधणाण ॥ ॐ ह्रीं श्री सम्यग् साधुभ्योनमः ॥ ७ ॥ (अथ अष्टम पदे ज्ञान पूजा)॥ दव्व पज्जाय गुणाकरस्स ॥ सयापयासी करणोधुरस्स । मिच्छ त अन्नाण तमोहरस्स । णमो णमो नाण दिवायरस्स ॥ ॐ ह्रीं श्री सम्यग् ज्ञानायनमः ॥ ८ ॥ (अथ नवम पद दर्शन)॥ अणत विन्नाण सुकारणस्स अणत ससार विदारणस्स । अणत कम्मावलि धसणस्स । णमो णमो नि म्मल दसणस्स ॥ (ॐ ह्रीं श्री सम्यग् दर्शनायनमः)॥ ९ ॥ (अथ दशमो विनयपद) ॥ आणदियासेस जगज्जणस्स । कुदिठ्ठ पादमलताचणस्स । सुध म्म जुत्तस्स दयासयस्स । णमो णमो श्री विणयालयस्स ॥ ॐ ह्रीं श्री स म्यग् विनयैनम ॥ १० ॥ (अथ इग्यारमै पदै चारित्र) ॥ कम्मोघ कतार दवानलस्स । महोदयानद लयाजलस्स । विन्नाण पके रुहकारणस्स । णमो चरित्तस्सगुणापणस्स ॥ ॐ ह्रीं श्री सम्यग् चारित्रायनमः ॥ ११ ॥ (अथ बारमे पदै ब्रह्मचर्य) ॥ सग्गापवग्गग्गसुहप्पयस्स । सुनिम्मलाणत गुणालयस्स । सव्वया भूषण भूषणस्स । नमोहि शीलस्स अदूसणस्स ॥ ॐ ह्रीं श्री सम्यग् ब्रह्मचयनम ॥ १२ ॥ (अथ तेरमे क्रियापद) ॥ विसुद्ध सद्धाण विभूषणस्स । सुलद्धि सपत्ति सुपोषणस्स । णमो सदाणत गुणप्प दस्स । नमो नमो सुद्ध क्रियापदस्स ॥ ॐ ह्रीं श्री सम्यग् क्रियायैनम ॥१३॥ (अथ चवदमोतपपद)॥ लद्धीसरोजा गलितावणस्स । सुरूव सलग्गसुपावण स्स । अमगलानो कुरु उद्दवस्स । नमो नमो निम्मलसत्तवस्स ॥ ॐ ह्रीं श्री सम्यग् तपसेनमः ॥ १४ ॥ (अथ पनरमो गोतमपद) ॥ अणत विन्नाण विभाकरस्स । उवाल सगो कमलाकरस्स । सुलद्धवासा जय गोयमस्स । नमो गणधीस्वर गोयमस्स ॥ ॐ ह्रीं श्री गौतमायनम ॥ १५ ॥ (अथ सो लमा पदे जिनपूजा)॥ मणुणसवा तिसयासयाण । सुरासुराधीसरवदियाण ।

रवोद्भविंवामल सग्गुणाणं । दयावणाणदिनमोजिणाण ॥ ॐ ह्रीं श्री जिनेन्द्योनमः ॥ १६ ॥ (अथ सतरमै चारित्रधारीपद) ॥ सविंदिया पार विकारदारी । अकारणा सेसजणोवगारी । महान्नवातकरणापहारी । जयौ सदा सुद्ध चरित्तधारी ॥ ॐ ह्रीं श्री सम्यग् चारित्रधारिभ्योनमः ॥ १७ ॥ (अथ अठारमै ग्यानपदपूजा) ॥ सुद्धक्रिया मम्ल मंम्नम्स । सदेह सदोह विखम्नस्स । मुत्ती उपादान सुकारणस्स । नमोहि नाणस्स जसोधणस्स ॥ ॐ ह्रीं श्री सम्यग् ज्ञानायनमः ॥ १८ ॥ (अथ उगणीसमोश्रुतपद) ॥ अन्नाणवल्ली वनवारणस्स । सुवोहि वीजा कुरकारणस्स । अणत ससुद्द गुणालयस्स । नमो दया मदिरसत्ययस्स ॥ ॐ ह्रीं श्री सम्यग् श्रुतायैनम. ॥१९॥ (अथ वीसमैपदै तीर्थ पदपूजा) ॥ तुभ्यंनमः सकल विश्व वशाकराय । तुभ्यनमः स्त्रिजगती जनशंकराय । तुभ्यंनमो भुवन मम्ल मम्नाय । तुभ्य नमोस्तु जिनपक विखम्नाय ॥ ॐ ह्रीं श्री सम्यग् तीर्थंपदेभ्योनमः ॥ २० ॥ २०धजासहत अष्टद्रव्य चढावे ॥(पीठे)६४ इद्रपूजा६४ अखरोट चढावै॥ ॐ सौधर्मेंद्रायनमः १ ॥ ॐ ईशानेंद्रायनमः २ ॥ ॐ सनत् कुमारेंद्रायनमः ३ ॥ ॐ माहेंद्रायनमः ४ ॥ ॐ ब्रह्मेंद्रायनमः ५ ॥ ॐ लातकेंद्रायनम ६ ॥ ॐ शुक्रेंद्रायनमः ७ ॥ ॐ सहस्रारेंद्रायनम ८ ॥ ॐ प्राणतेंद्रायनम, ९ ॥ ॐ अच्युतेंद्रायनमः १० ॥ ॐ चंद्रेंद्रायनमः ११ ॥ ॐ सुर्येंद्रायनमः १२ ॥ ॐ चमरेंद्रायनम· १३ ॥ ॐ वलीद्रायनमः १४ ॥ ॐ धरणेंद्रायनमः १५ ॥ ॐ भुतानेंद्रायनम· १६ ॥ ॐ वेणुदेवेंद्रायनमः १७ ॥ ॐ वेणुदालीद्रायनमः १८ ॥ ॐ हरिकांतेंद्रायनम· १९ ॥ ॐ हरिस्सहेंद्रायनमः २० ॥ ॐ अग्निशिखेंद्रायनमः २१ ॥ ॐ अग्निमाणवेंद्रायनम· २२ ॥ ॐ पूर्णेंद्रायनमः २३ ॥ ॐ त्रिसिष्टेंद्रायनमः २४ ॥ ॐ जलकांतेंद्रायनमः २५ ॥ ॐ जलप्रभेंद्रायनम· २६ ॥ ॐ अमितगतीद्रायनम· २७ ॥ ॐ मितवाहनेंद्रायनमः २८ ॥ ॐ वेलवेंद्रायनमः २९ ॥ ॐ प्रभंजनेंद्रायनमः ३० ॥ ॐ घोषेंद्रायनमः ३१ ॥ ॐ महाघोषेंद्रायनमः ३२ ॥ ॐ कालेंद्रायनमः ३३ ॥ ॐ महाकालेंद्रायनमः ३४ ॥ ॐ सरूपेंद्रायनमः ३५ ॥ ॐ प्रतिरूपेंद्रायनमः ३६ ॥ ॐ पूर्णभद्रेंद्रायनमः ३७ ॥ ॐ माणभद्रेंद्रायनमः ३८ ॥ ॐ भीमेंद्रायनमः ३९ ॥ ॐ महाभीमेंद्रायनम. ४० ॥ ॐ किन्नरेंद्रायनमः ४१ ॥ ॐ किंपुरु

यैंद्रायनमः ४२ ॥ ॐ सत्पुरुषेंद्रायनमः ४३ ॥ ॐ महापुरुषेंद्रायनमः ४४ ॥ ॐ अमितकायेंद्रायनम॰ ४५ ॥ॐ महाकायेंद्रायनमः ४६ ॥ ॐ गीतरतीद्रायनमः ४७ ॥ ॐ गीतयशेंद्रायनम ४८ ॥ ॐ सन्निहितेंद्रायनमः ४९ ॥ ॐ सामानिकेंद्रायनम॰ ५० ॥ ॐ धातेंद्रायनमः ५१ ॥ ॐ विधात्रेंद्रायनमः ५२ ॥ ॐ ऋषिद्रायनम॰ ५३ ॥ ॐ ऋषिपालतेंद्रायनम॰ ५४ ॥ ॐ ईश्वरेंद्रायनमः ५५॥ ॐ महेश्वरेंद्रायनम॰ ५६ ॥ ॐ वत्सेंद्रायनमः ५७ ॥ ॐ विसालेंद्रायनमः ५८ ॥ ॐ हास्येंद्रायनम॰ ५९ ॥ ॐ श्रेयइद्रायनमः ६० ॥ ॐ हास्यरतेंद्रायनमः ६१ ॥ ॐ पदगेंद्रायनमः ६२ ॥ ॐ पदगपतेंद्रायनमः ६३ ॥ ॐ महाश्वेयेंद्रायनमः ६४ ॥ इति चोसठ इंद्रनाम॰ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥※॥ १६ विद्यादेवी पदे १६ सुपारी चढावे ॥※॥

॥ ※ ॥ ॐ रोहिण्यैनम १ ॥ ॐ प्रज्ञप्तैनमः २ ॥ ॐ वज्रशृंखलायैनमः ३ ॥ ॐ वज्रांकुशायैनम॰ ४ ॥ ॐ चक्रेश्वर्यैनमः ५ ॐ पुरपदत्तायैनमः ६ ॥ ॐ काल्पैनमः ७ ॥ ॐ महाकाल्पैनम॰ ८ ॥ ॐ गोर्य्यैनम॰ ९ ॥ ॐ गधार्य्यैनम॰ १० ॥ ॐ महाज्वालायैनम ११ ॥ ॐ मानव्यैनमः १२॥ ॐ वैरोट्यायैनम॰ १३ ॥ ॐ अच्छुप्तायैनमः १४ ॥ ॐ मानस्यैनमः १५ ॥ ॐ महामानस्यैनमः १६ इति षोमश विद्या देवी नाम॰ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥※॥ अथ २४ यक्षपदे सोपारी चढावे ॥※॥

॥ ※ ॥ ॐ ब्रह्मशांतियेनम २४॥ ॐ पार्श्वयक्षायनम॰२३॥ ॐ गोमेधायनम॰ २२॥ ॐ भृकुटयैनम २१॥ ॐ वरुणायनम २०॥ॐ कुवेरायनम॰ १९॥ ॐ यक्षेंद्रायनम॰ १८॥ ॐ गधर्वायनमः १७॥ ॐ गरुडायनमः १६॥ ॐ किंनरायनमः १५ ॥ ॐ पातालायनम॰ १४ ॥ ॐ षण्मुखायनम १३ ॥ ॐ कुमारायनमः १२ ॥ ॐ यक्षराजायनम॰ ११ ॥ ॐ ब्रह्मण्यैनम १० ॥ ॐ अजितायनमः ९ ॥ ॐ विजयायनम॰ ८ ॥ ॐ मातगायनम ७ ॥ ॐ कुसुमायनमः ६ ॥ ॐ तुंबुरवेनम॰ ५ ॥ ॐ यक्षनायकायनमः ४ ॥ ॐ त्रिमुखायनमः ३ ॥ ॐ महायक्षायनमः २ ॥ ॐ गोमुखायनम॰ १ ॥ इति २४ यक्ष नामः ॥ सोपारी चढावे ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ २४ यक्षणी नाम लि० ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ ॐ चक्रेश्वर्येनम. १॥ ॐ अजितवलायेनमः २॥ ॐ दुरिताय्यैनमः ३ ॥ ॐ कालिकायैनमः ४ ॥ ॐ महाकाल्यैनमः ५ ॥ ॐ श्यामायैनमः ६ ॥ ॐ शातायैनमः ७ ॥ ॐ भृकुटयैनम. ८ ॥ ॐ सुतारकायैनमः ९ ॥ ॐ अशोकायेनमः १० ॥ ॐ मानव्यैनमः ११ ॥ ॐ चंमायेनमः १२ ॥ ॐ विदितायै नमः १३ ॥ ॐ अकुशायैनम· १४ ॥ ॐ कदर्प्पायैनमः १५ ॥ ॐ निर्वाणयै नमः १६ ॥ ॐ वलायैनमः १७ ॥ ॐ धारिण्येनम १८ ॥ ॐ धरणप्रियायै नमः १९ ॥ ॐ नरदत्तायेनमः २० ॥ ॐ गाधार्य्यैनमः २१ ॥ ॐ अविकायै नमः २२ ॥ ॐ पदमावत्यैनमः २३ ॥ ॐ सिद्धायिकायेनम २४॥ इति ॥

॥ ※ ॥ अथ नवनिधाननामः ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ ॐ नैसर्प्पकायनम· १ ॥ ॐ पाडुकायनम· २ ॥ ॐ पिगलायनमः ३ ॥ ॐ सर्वरत्नायनमः ४ ॥ ॐ महापद्मायनमः ५ ॥ ॐ कालायनमः ६ ॥ ॐ महाकालायनमः ७ ॥ ॐ माणवायनमः ८ ॥ ॐ शखायनम ९ ॥ इति नवनिधान पदे ९ कलश चढावे ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ १० दिग्पालादि नामः ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ ॐ विजयस्वामिनेनमः ॐ क्षेत्रपालायनमः १॥ ॐ चक्रेश्वर्य्यैनमः१॥ ॐ धरणेंद्रायनमः १॥ ॐ पद्मावत्यैनमः १॥ ॐ इद्रायनमः१॥ ॐ अग्नयेनमः२॥ ॐ यमायनमः ३॥ ॐ नैऋतायनमः ४॥ ॐ वरुणायनमः ५॥ ॐ वायवेनमः ६॥ ॐ कुबेरायनमः ७ ॥ ॐ ईशानायनमः ८ ॥ ॐ नागायनमः ९ ॥ ॐ ब्रह्मणे नमः १० ॥ इति दशदिग्पाल ॥ ॐ सूर्यायनमः १ ॥ ॐ चद्रायनम. २ ॥ ॐ भोमायनमः ३॥ ॐ वुधायनमः ४॥ ॐ बृहस्पतयेनमः ५॥ ॐ शुक्रायनम ६ ॥ ॐ शनैश्चरायनमः ७॥ ॐ राहवेनम ८॥ ॐ केतवेनमः ९॥ इति नवग्रहनाम॥

॥※॥ इहा ऋषभमम्न्ल पूजनकी (तथा) वीशस्थानक मम्न्ल पूजनकी विशेष विधि, नाममात्र स्थापन पूजन करनेंकी लिखी हे। (इस उपरात) मम्न्ल प्रतिष्टा वलवाकुलादिककी सपूर्ण विधि पूर्वे नवपद मम्न्ल पूजामें लिखाए हें। उसीमुजव करनी (इससें) विशेषविधि करानी होय तो विद्वान गुरूको पूछके करानी ॥ इति वीशस्थानक मम्न्ल पूजाविधि सपूर्ण ॥ ※ ॥

वारसहित पद्मावतीदेवी अत्रावतर २ तिष्ठ २ ठः ठः ठः सन्निहितो वौषट् स्वाहा ॥ त्रिवारेण आव्हानं ॥ अथ पूजा ॥ सर्वलोकजन तापहारणी ॥ वारणीसुरनिगवशालनी ॥ अर्चयामि जिनशाशनदेवी ॥ पद्मिनीकुमुदनेत्रसालनी ॥२॥ जलग्रहाण २ स्वाहा ॥ भृशविरोचिर्विमलैश्च उक्षमै। विरक्त शाल्प क्षतसचयैश्च ॥ पद्मावती पद्मदलायताक्षी ॥ यजाम्यह सर्वगुणैयुताच ॥ ३ ॥(अक्षत)॥ कर्पूरकृष्णागुरु कुकुमाद्य ॥ गंधैर्महामोद मनोहरैश्च ॥ पद्मावती कोकनदीप्रभागी ॥ यजाम्यह कामसुखायहेतु ॥४॥ (चदन)॥ जाती केतकी पारजात कुसुमे कुंदे जपा पाटलैः ॥ मध्याराग सुदेहकाति सुभगा सारस्वती सर्वदा ॥ पुष्पैवास कदव कासित लसत्पद्माविना देवता ॥ मन्य च्चैपु गुणार्णवा भगवती पुष्पैस्सदा प्राचयेत् ॥ ५ ॥(पुष्प) ॥ सुगध सुस्वाद सुभक्तिपूरैः ॥ पीयूष पिंडोपमशालिकाद्यैः ॥ कल्याण निर्वृत्ति शुभाजनस्थै सपूजये देविमुदानुरागी ॥ ६ ॥ (नैवद्य)॥ रुप्यहुभ्राशुसाराप्लुतविशदसदा सगि सप्राप्त दीपैं ॥ ध्वस्तध्वानैः सुसाद्रैः सकल जन मनोभारिनिर्दीपभातैः ॥ चचच्चद्रागुआले रिव कठिन कुचद्वमध्ये लुठन्ति ॥ हरैर्विभ्राजितागी जन सरणसरो जात भृगी यजामि ॥ ७ ॥ (दीप)॥ चचकृष्णगल शीतदीप्ति विमल श्रीखडसन्मिश्रितैः ॥ कार्श्मीरा गुरुधूपतागघटनैर्धूमैर्वरैः कामदैः ॥ देवी रक्तसरोज काति विमला देहप्रभाभासुरा ॥ गजीवाजन शालिनी शुभ गतिंपद्मावती चर्चयेत् ॥८॥ (धूप) ॥ फुल्लद्रभाघटोघैः फनसफलशतैर्मातुलै मातुलिगैः ॥ जंभीरैः शश्वदभोफलधरणिवहैं कोमलै कामदुग्धि ॥ चंचद्राक्षाकपित्थैः क्रमुकफलगतैर्दाडिमीवप्रचक्रैः ॥ कल्याणागीयतेह जिनचरण सरोजात भृगीफलाय ८॥ (फल)॥ श्रीमन्महाचीन डुकूलनेत्री ॥ सक्षौमकौशेपकचीनवस्त्रैः ॥ शुभ्राशुकैः शोणिमणि प्रभागी ॥ यजाम्यह पन्नग राज देवी ॥ ९ ॥ वस्त्र ॥ मार्गीसुभ विमुत्र रत्न रचितैः केयूरसत्कुडलै ॥ माजीरा गदहर्मिकादि मुकुटैः प्रालबिका वासकैः ॥ चचत्पाटक पट्टकूल विलसद्ग्रैवेयके भूषणैः ॥ सिदूरागद भूपणै रतुभगैः सपूजयामीवय ॥ १० ॥ (आभरण)॥ इति पद्मावती पूजा समाप्ता ॥ ० ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ अष्टभय निवारण छद ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ दूहा ॥ सरस वचन दे सरसती ॥ एह अरज अवधार ॥ भार

थिया पहमैनही ॥ उत्तम ए आचार ॥ १ ॥ हित करजे मोसुहिवै ॥ दीजे वयण डुरस्स ॥ कवियणपिण गुणनेंकहै ॥ सखरोंघणु सरस्स ॥ २ ॥ गुण गिरुउगौमीगणी ॥ पारसनाथ प्रगट्ट ॥ मनसुद्दे मोटातणा ॥ गुणगाता गह गट्ट ॥ ३ ॥ छंदनाराच ॥ प्रसिद्धि बुद्धि सिद्धि निद्धि रिद्धि वृद्धि पूरए ॥ कलत्त पुत्त कित्त वित्ति गद्धते सनूरये ॥ वियोग सोग रोग विग्घ सिग्घ घायक॥ प्रगट्ट देव नित्तमेव सेवो पासनायकं ॥ ४ ॥ गुमान मोम हत्थजोम देवको भि वग्गये ॥ अनूप भूप चूपधारि आइपाय लग्गये ॥ पञ्ज वञ्ज सुकित्त नित्त सब्ब सोनलायक ॥ ५ ॥ प्र० ॥ कुबोह लोह ग्रोह कोह मोह माण वज्जिय ॥ अनत कात शात दात रूपमैण लज्जिय॥ अशेष शुद्ध तत्त जुत्त सो भये अमायक ॥ ६ ॥ प्र० ॥ विसाल भाल सुविसाल अद्धचद छज्जिय । रछहथी रिसाइजाण एथ आय रज्जिय । सुनैणछद गंधकात कार्जभोरारायक ॥ ७ ॥ प्र० ॥ कपूरपूर कस्सतूर कुंकुमा तुरगए । अरग्गजा अथग्ग में रहै गरकअगए । अछेहगेह उत्तिदेह सबही सुहायक ॥ ८ ॥ प्र० ॥ मृदग दोदोंदों दप्प मप्प वज्जये । न फेर भेर छल्लरी नीसाण मेघगज्जए । तटकतान थेई २ लक्ख सुक्खदायक ॥ ९ ॥ प्र० ॥ (डुहा) करि १ केहरि २ दव ३ कुद्धवहि ४। रामि ५ समुद्दह ६ रोग ७ । अतिवधण८ भय अष्टले । सामनाम सयोग ॥१०॥(छंद भुजंगी) छकुरित्त गको छुकतो छुकोला । लपकै विलग्गीयली माललोला । वले टेवला कावली सुम टोला छरैनिझरा जेममद्देकपोला॥११॥पञ्ज चालतो जाण पाहामतोला।छलक्के ल लकावतोलाल मोला । इसों दूठपूठे पमता अकोला । जपता करै नाचिनी मात चौला ॥१२॥ (इति हस्तिभय निवारण) महासद्दसीहं अबीह अदम्भं भरै फाल आफालतो पुच्छ छुंभ । भिगैफाम माचौ बम वज्रसुंभ। महातिरक नख्ख रखे रोखछम ॥१३॥ फुरकावतो मुठ फाम्ततुम । ललकत्त लोला विकट्ट विहम । धणीपास चौनाम ध्यान धरम । टलै श्यालज्यु सीहहोए अदम्भं॥ ॥ १४ ॥ (इति सिंघभय निवारण) ॥ जला जगलामै जटाजूट जाला । वणा छाम छज्जामभै अग्गझाला । वज्र मृगवग्ग पशु पखिवाला । बलता कमेमा चिमा जतिजाला ॥ १५ ॥ धुपैधूम लग्गोकीया नग्गकाला । छलोछाल रूखे टल्या नाि [illegible] वमे सकटे एण आया विचाला । प्रभ

नामनीरै बुझै तत्तकाला ॥ १६॥ (इति अग्निभय निवारण) कलू कालरूपि महा विकराल । फणा टोप रोपै महा कोपजाल । वलकै वलतो चलतो कराल । जिऐ फूकसूकै तरुम्मालडाल । हलाहाल सलोलिय विक्खलाल । रहै लाल लोचन्न दोजी हवाल । धरता प्रभू नाम रिहे विचाल । सही साप होवै जिसी फुल्लमाल ॥ १७ ॥ (इति सर्पभय निवारण) भिन्है भूपभूपे अधिके अटके। खला हाड तूटै खडग्गापटके । परा हैवरा पाडनायै पटके । धुरा सिधुरा कधरा भूचटके॥१९॥पमै प्राण सवाण वाणे वटकै । झकै केइ हाथाल रोसे हटकै। कला झाल गोले झनालै भटकै । तुटै तुम मुडा प्रचमा तटके ॥२०॥छगेहा सलोहा पभता छिटके। कुकै सूर कळेम नखिकटकै। प्रभु नाम लेता इसेही अटकै। कदे वालवाको न होवै कटकै॥२१॥(इति युद्धभय निवारण) जतभेघणँ कोई वैमे जिहाजे । अथग्गे जले आइकुवाय वाजै । घटाटोप मेघा घमम्मति गाजै । झवकै तरगा विरगाळ वाजे ॥२२॥ लिचापिचलागी घमीताल भाजै । अहो कोइ राखै अठै अम्मकाजे । इसे सकटे जेजपे जैनराजे । सही पारपामें तिके सुरक साजें ॥ २३ ॥ (इति जलभय निवारण) गमगुवडगोलक हीय होमी । दरस्स खस ठग्रस गाठ फोमी । टलै गोमथी कोढ अह्वार रोमी । महा ताप सताप आतक कोमी ॥ २४ ॥ न होवै कदे काय में काव्य खोमी । सझ आधिव्याध सही जाइ ओमी । जिनद नमै मनमै मान मोडी । लहै सो सदा सुरक सपत्ति जोमी ॥ २५ ॥ (इति रोगभय निवारण) अमुठा वलेगा वले मन्न खोटा । जिया चक्खुचुची लुल्यागाल गोटा । वलेपाघवाकी लपेटा लगोटा । सटेट्यास हा सवला हाथ सोटा ॥ २६ ॥ दीयै कोरडा देह दोलाद वोटा । वदै वोलवाका झडेडत झोटा । पम्च्या वदिपानै महादु:ख मोटा । प्रभु नामथी वेग थायै विछूटा ॥ २७ ॥ (इति वदिभय निवारण) नमता जिणेस सदा मन्न रागै । सहीये महा डुम्भय अभ्भागै । रली लोक लरक खुली पाप लागै । दिसो दिस्स माहै जसो जस्स जागै॥२८॥(कलश)परतिख जिनवर पास । आस उल्लासह अप्पण । विविधजासगुण वादास चादालदक्षण । चैण दैण जसुचरण, इति अति भीत निवारण । लीललाठ लपगान विमल कीरत्तिवधारण । दिणयति जेमदीपति डति । विमलचदमुख ठविकरण

दौलत्ति विजय हरसादीयण । धरमसीह ध्यानह धरण ॥ २९ ॥ इत्यष्टभय निवारण गौडी पार्श्वनाथजीको छद स० ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ थंभणापार्श्वनाथजीरो स्तवन लि० ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ प्रभुप्रणमुरे पास जिणेसरथम्भणो । गुणगाइवारे मुझमन ऊलट अतिघणो । ग्यानीविणरे एहनी आदिनकोलहे । तोहीपिणरे गीतारथगुरु इम कहै ॥ इमकहै सास्त्रतणै प्रमाणै राम दसरथनदनें । वाववापाजै शीतकाजै समुद्रतट एकणवनें । तिहारह्या वाधव राम लछमण साथि सेन्या अतिघणी । प्रासाद एक उत्तगतोरण थापना जिनवतरणी ॥ १ ॥ तिहा मूरतिरे मूलगुभारै पासनी । मनवंछितरे आसापूरै आसनी । तेराजारे दिन प्रति पूजासाचवै । करजोडीरे वेवाधव इमवीनवै॥ वीनवैस्वामी तुह्यप्रसादै ज लधिजलथम्भे किमै । तोपाजवाधु लंकसाधु इमकही प्रभुपायनमै । वळ्पूज करता ध्यानधरता सातमास गया जिसै । नवदिवस अधिकाथया ऊपरि । जलधिजलथम्भ्यौ तिसै ॥ २ ॥ एअतिसयेरे अचरिजपेख्यो प्रभुतणो । तिण कारणरे नामदीयो तसुथम्भणो । जलऊपरिरे पाजकरी पाथरतणी । गढलं कारे साधेवा सीताभणी ॥ गढलकसाधी सीतआणी तेणवन आव्यावली । दिन आठ अठाइमहोच्छव कीया मनपूगीरली । श्रीरामराजा शुद्धश्रावक विनी तानगरीवसै । वीशमाजिनवरतणैवारै इम थया गुरुउपदिसै ॥ ३ ॥ इण अनुक्रमरे केतलोकाल गयो वही । ते प्रतिमारे तिणवनमे निश्चल रही । इण अवसररे इद्रतणें आएसकरी । सायरतटरे सोवनमै द्वारापुरी । द्वारिका नगरी कृष्णराजा अर्द्धभरत तणोधणी । तिहा वसै यादवकोडि छप्पन वहै आग्या जिनतणी । तिण काल तिणवन तेह तीरथ तेहनी महिमा सुणी । सारंगपाणी भावआणी आव्या तिहां यात्राभणी॥ ४ ॥ (ढाल) ॥ आव्यो तिहा नरहर जिणहर मनउल्लास । मनमेंआणंदै वंदे थम्भणपास । पेषेअ तिनवली पूजा प्रभुजीनें देह । एकेणें कीधी इममनथयो सदेह । सदेहथयो अटवी चिऊपासै नहीमानवसंचार । केणकरी विद्याधर सुरवर पूजा सतरप्र कार । इसो [illegible] अतर रह्याजु गुपतैगाम । मध्यरातपातालै आवी । वासग . [illegible] । तिहा आवी प्रणमे वै, नाटिकआदेस । मिलि नागकुमारी [illegible] रस । शक्रस्तव पभणें - [illegible]

हरिप्रगट्यौ ततखिण साहमी तणइ ससनेह।।ससनेह वासग किष्णनरेसरवैगा विवरपायै । ए श्री जिणवर पास जिणेसर आदिनकोई जाणै । असी सह सवरसामै पूज्या जेक्तापायाल्लै । वरण एकमसाद कराव्यौं आप्या एह जिनाल्लै ॥ ६ ॥ सकुवात कहीनें वासग गयो पायाले ॥ श्री कृष्णनरेसर मनचितइ ततकाल्लै । जो एहवो तीरथ अवे द्वारिकामभार । तो जाणु नर भव सफल थयौ अवतार । सफल जनम करिवानें काजें तेहविव तिहां आणै । श्री द्वारिका हैममें जिणवर थाप्या प्रगट प्रमाणैं । घणै काल पूजा तिहा पामी करमनिकाचित जाणी । श्रावकनेंसुपनातर आवी देववदे इमवाणी ॥ ७ ॥ प्रभुप्रतिमा वाहण लेई समुद्रमझारि । मुंकेज्यो नगरी थास्यै अवरप्रकार । तिणसागर अतर कालगयो बहुजाम । दक्खिणदिसि उत्त म कुतीनगरी गाम । कुतीनगरी जैनवसै जिहा श्रावक सागरदत्त । वाहण सातवहै व्यापारे पोतें परघलवित्त । अन्य दिवस सायरविचवहता जिहावै थभणपाग । ऊपरि आव्या थम्या वाहण ते सविथया उदास ॥८॥ढाल॥ माशदिवस वाणी थई अवरसुरराय । प्रतिमा थभण पाशनी सायरजल माहि । सुरप्रगट्यो जिणसासणें ॥ सुरकहै वाणी एह प्रतिमा भावसु प्रगटी करो । जइजैन कुतीनगर जिणहर मूलनायक एधरो । ते विव कुतीमाहि थाप्यो कहै बहु श्रावक तिहा । ए सकल तीरथ नाथसमरथ पुन्यजोग मिल्यो इहा ॥ ए ॥ इणि अवसर दसवपुरइ पालत्तइसूर । विद्यावल अ वरभमें अतिसय भरपूर । तीरथजाय जिणद्रनमें । तेनमेसेत्रुंज प्रमुख गिरिवर सदापाखी पारणें । पालीयताणिरह्या थाणें नागारजुन जोगीपणें । ते धातु सोवनकाज धमता माश ढैवे रसकरे । करिकोपड़ैग वीरनावे रूप पखीनोधरें ॥१ ॥ तिणपालत्तै सूरिनें जाण्यो एहमह्त्त । पूछे को सुरदाखवो अतिसय गुणवत । कृपाकरी सुजनावो । गुरु तेह भाखे जेहथकी उपद्रव सुरनरतणों । तिण कस्यौ कुतीनंप्रसादे पाशठे प्रभुथभणो । कुण यक्ष वीर वेताल व्यतर सहू तसुसेवा करें । तेहनी दृष्टइ साधि विद्या जेम तुमवंछित सर ॥ ११ ॥ विद्यापिण आकर्षणी । कुती जोगीनेंपास । ते प्रतिमा आणी तिहा । थापीनिज आवास । सोवनरस सीधो जिहा । रसतिहा सीधो सुजसलीधो । नदी सेढीनेंतटे । गुरुनें जणाव्यो तिण कहाव्यो विवस

म्हास्यो घटै । इण कालधरम सुथान थोमा ऊसी मलेछाइए इहा । खाख रातले सेढिकातीरे विवम्भमास्यो तिहा ॥ १२ ॥ ढाल ॥ मेघ आगमसही नदी कुलटिवही वेलुका विवकुपर वलैए । तेणभइ धणचैरे खीरसुरही करै चीकणी भूमि खाखरतलैए । केतला दिनपछै सुगुरु खरतरगच्छे । श्री अभयदेव सूरीसरूए । पटविगय परिहरी अम्रतप आदरी । रगतपित्ती थया मुनिवरूए ॥ ते रगतपित्ती गलतकाया चित्तमें चिता करै । अधरान सासण देवी आवी कोकमा नवकार धरै । ए सूत्र तू सुलझाइ सुपरे तामगुरु जंपेइसो । जो थायसी मुझ नीरोगकाया तो सही झखेलसु ॥१३ ॥ ताम देवी कहै नदीयसेढी वहै । तेण तटवृक्ष खाखरतलैए । तिहा तुल्ले जाइवो त वनकरिवो नवो प्रगट थासी प्रभु थम्भणोए । तेहनें स्नात्र जल रोग सवि जाय टलै । इम कहीय गई सासण सुरीए । सघलगलोमिली तिहा जाइ मनरली । ताम धरणिंदध्यानेधरीए । तिहा करी जयतिझअण वत्तीसी पाश प्रगटचाततपिणे । तसु सनात्रनी रै सुघसरीरै धन्य २ सझकोभणे ॥ तिहा थानथाप्यो सुजसव्याप्यो थयो परचो अतिघणो । तेहने नामे तेणठामें गामवास्यो थम्भणो ॥ १४ ॥ थईय महिमाघणी पाश थम्भण तणी सुगुरु काया नवपल्लवीए । सघ आवै घणा करै वद्धावणा महयल कीरत विस्तरी ए । सुपन जे देखता कोकमा नवझता सूत्रते सूत्र सिद्धात नामें । वृत्ति नव अंगनी भेद नवभगनी रची आचारज तेण ठाने । ते तेण ठामें सझय यामें आसकर जो आवए । वझ भाव भत्ते एकचित्तै सेवता सुख पावए । एकदा गुरु वरणिंदध्यानें प्रगट थई पदमावती । श्री अभयदेवसुरिंद आगलि । इम कहै साम्भल यती ॥ १५ ॥ तवनजे तुझ कस्यो मत्र अतिशय भस्यो अति तसुगाह जे वे कहीए । तेह गुणीयै जिहा इद्र आवै तिहा कष्ट विणतेह गुणवी नहीए । तेह भमारवी काज सं भारवी । अवरइण तवनमहिमाघणीए । समरता सपदा रोगनावै कदा सदा आवश्यकधुरि भणीए । पडिक्कमणानितभणे धुरि एह विधि खरतर तणीए । इम कही सासणि देव सामणि गई निजथानिकभणीए । केतले दिवसे दे सगुझर सयल मलेछायन थयो । भलठामजाणी विवआणी । नयरश्रीपत्ता इति ठव्यौ ॥ १६॥ पत्तनयर सिरि पास जिणे सरू । दिन २ दीपइ अती

अलवेसरू । जात्र करेवा मुफ छतोरली । प्रभुमें भेट्यो आस सहू फली। मुफ आस सफली थईयसामी जामभेट्या जगपती । सोभाग सुंदर करो ऊनति करु एती वीनती । अश्वसेन वामादेव अगज ध्यान मनतोराधरु । करि कृपा सामी सीस नामी सदा तुह्म सेवा करु ॥ १७ ॥ कलश ॥ इम स्तव्यो थम्मण पास सामी नगर श्री पंभाइते । जिम सुगुरु श्री मुख सुणी वाणी सात्र आगम समते । ए आदि मूरति सकल सूरति सेवता सुख सपए । मन भाव आणी लाभ जाणी कुशल लाभ पयपए ॥ १८ ॥ इति श्री थम्मणा पार्श्वनाथ स्तवन ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ उपदेशमाला यन्त्राम्नाय लि० ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं नमः ॥ नमिऊण जिणवरिंदे । इंदनरिंदच्चिए तिलोय गुरु । उवएसमाल मणिवो । वुच्छामि गुरूवएसेण ॥ १ ॥ जगच्च डामणि भूउ । उसभो वीरो तिलोय सिरतिलउ। एगो लोगाइचो । एगोचक्खू तिहुयणस्स ॥ २ ॥ इतिध्यात्वा वारत्रय ॥ ॐ सच्च भासइ अरिहा । सर्व भासइ केवली । भयव एणं सच्चेण । सच्च सच्चेण मेभवउ स्वाहा । इस मत्रसें गाथा मत्रके देखे । शनिवारे, सध्यासमये, श्री उपदेशमालाकी गाथाकी जितना अक्षर ऊवै । जिसको ३ भाग दीजइ । अक्षर १ ऊवरे, तो दिन ५ कष्ट । शेष २ अक्षर ऊवरे, तो दिन १० कष्ट, पिण जीवै। सून्य आवै तो विमासण न करे । अणसण करावै । उत्कृष्टी गाथा दिन ५ कष्ट परजीवै । मध्यमगाथाइ पचरात्रि ढील कीजै । चउकडीये कष्ट । शून्य आवे तो नजीवै । मीडा ऊपर नाणु धरावे । ते गाथा विचारे । पहिलीमीडा ६ तेसईकडा ०००००० (पीछे) नीचे मीडा दस १०, ते दाह्का ०००००००००० (फेर) मीडा दस, ते गाथा ००००००००० (पीछे) उदा हरण । प्रथम मीडा ऊपरि धरावे । जितरमा मीडा उपर मेलै । तितर मोसईकडो । इस अनुक्रमें गिणीजे । पीछे १० मीडा उपर धरावे । ते दाह् को जितरमो गिणीजे । पीछे नीचला १० मीमा ऊपरै धरावे ।जिस मीमा ऊ पर धरे । सो दाह्कानी जितरमी गाथा जाणीजै । (इसीतरे उपदेशमाला गाथा यत्र जोईजै) शनिवारे संध्या समये, अक्षित पूजादिसहित चतुर्थप्रहरे प्रथम सुभघटी पुन: पूजा करणीया। कुमारी करेण चित्र करणीय । युगधरी

ढिगली६ । पुनः ढिगली १०। (गाथा)नमिऊण जिणवरंदे । पढिखा वार ३ शतकः कथितः । पुनः दस १० ढिगली ऊपर धरावे। गाथा ज्ञेया । पश्चात् गाथा ३ अनुक्रमेण अवलोकी शुभाशुभ कथयति । राजार्थे,राजमार्गं, देश, पुर, ग्राम, रोगार्थं, जीवतव्यादि, विलोकनीया । उपदेशमाला गाथाया यावतो वर्णाःस्युः । तेत्रिभिर्हीयते । एकस्मिन् वर्णे उद्धरिते ५ पच दिनानि कष्ट । द्वयोरुद्धरितयोः १० दश दिनानि जीवति । शून्ये सति विल वो न विधेयः । अनशन मेव कारयितव्य । इत्युपदेशमाला यन्त्रकाम्नायः ॥

॥ ※ ॥ अथ मंत्र नाम माला लि० ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ ॐ कारमनवंद्याना । वियानामादिमादरात् । स्तुमः प्रभाव सभा र । विभावित जगत्रय ॥ १ ॥ ॐकारः प्रणवोज्योतिः । परमेष्टि मयोध्रुवः । परम ब्रह्म विनय । प्रदीपो जातवेदसः ॥ २ ॥ परमः शक्तितत्वच । श्री ज्ञान श्री गृहरमा । अर्हं मर्हं न्परब्रह्म । वाचक परमेष्टिन ॥३ ॥ सिद्धि चक्र पर्व वीज । क्षिः पृथिव्युन्यते पुनः । पःपयः स्वाचसमेहो । हाव्योमा पाशएवच ॥ ४ ॥ श्रौ चतुष्कल माख्यात । सौजीवेक्षः सहस्ररुक् । क्लीकारः काम राजःस्या । द्वश्य कामात्मकंस्मरः ॥ ५ ॥ ह्रींच माया महा माया । माया लता जगन्नयं । परमेष्ट्यात्मक शक्ति । हंःशून्यं गदित बुधैः ॥ ६ ॥ क्षूविद्वे षो रोषणश्च । तत्वं माया मयमत । ह्रीं ज्ञान ख शिवः शस्त्र । हंस आत्मा समीरणः ॥ ७ ॥ ऐंकारो भारती वाणी । मयवाग्भवमेवच । शक्ति कुमलिनी वीज । त्रिपुरा परि कीर्त्तिता ॥ ८ ॥अकारो हर इ विष्णु । मायावाङ्मयमुच्य ते । ऐंज्वलन क्रौंचाकुश । निरोधोयश्वसादन ॥ ९ ॥ ग्लौंस्तम्भन मे ग्रहण । द्विपन्निरोध नामकं । जूंकारो द्वेषण स्वाच । चाद्र पीयूष नामकं ॥ १० ॥ ब्लूंकारो द्रावण व्लैचा । कर्षण यो विसर्जन । उच्चाटनच यं वायू । रसोलः स्तम्भवासवौ ॥ ११ ॥ रः पावको ऊ क्रोधात्मा । विद्वेषो वाङ्मय तथा । ह्रौं प्रेतासन शक्ति । निनादः परिकीर्त्तितः ॥ १२ ॥ क्ष्लौंह्कारो महा शक्ति । क्ष्वींचसोम विषापह । क्ष्मीं महाक्ष कूटंच । सवर्त्तक निगद्यते ॥ १३ ॥ सकार श्चंद्रमाजीव । कुल शक्ति फमस्त्रफुट् । विसर्जन चालनं चो। घाटः स्व धाच पौष्टिकं ॥ १४ ॥ वषट्त्रय तथा द्राँद्रीं । क्लीं ब्लूंसः पचसायका, । कामराजं रतिवीज । वाग्भव मोहनं तथा ॥ १५ ॥ प्रीतिवीज पचमस्या ।

द्कारः पचमोमतः । प्रासाद औ तथा ह्स । विषापहृच निर्विष ॥ १६
वौषमच पूजा ग्रहण । कर्षणाकान सङ्कक । स्वाहाच शांतिक ह्रामौ
नमो जापश्च शोधन ॥ १७ ॥ सर्वोपमा कर्णनि चा । मत्रण क्लीमिमक
ह्राह्रीहुँ ह तथा ह्रोंह्रो: । हृदय मस्तक शिखा ॥ १८ ॥ नेत्रत्रय क्रमेह
षा । मनिषा गदिता मया । अकारे कारकाचट । तपया शशपार्थिवा
॥ १९ ॥ अक रे खगआरयश्च । फरषा मारुतामताः । ङकारौ गजडादश्च ।
वजसा वारुणा स्तथा ॥ २० ॥ ईकारौ घऊढातश्च । नवह्रास्तैजसाः पुनः
चतुःसरा विसर्गाश्च । वर्गांतषा व्योमजामताः ॥ २१ ॥ ॐमौलि रामुखमिई
नेत्रे कणा वुक स्मते । ऋॠ घ्राणे लृॡ गडा । ए ऐ रदनयामला ॥ २२ ॥
वे क दंष्ट्रौ विङ्जिका । विसर्गः कठ उच्यते । कादि चादी भुजौटादि । ता
टी चत्रण यामज ॥२३ ॥ पफौ कुक्षी पृष्ट नाभी । हृदया नि च त्रादयः
य र ल व श ष साश्च । स्मृतैते धातवोमता ॥२४॥ वीजो परि स्थितारेखा
कला चद्रा द्दलाकुरो । अर्द्ध खड कला अर्द्ध । खंडादिव्योमनुति।
मरणादौ पुन. श्याम्या । धूम्राविद्वेषणादिपु ॥ २७ ॥ शस्त्रागात्.श्वे
वार्षे । ध्येयोवर्णाश्च मत्रगाः । इत्येषा कियती मत्रा । मातृका निर्मिता मय
॥ २८ ॥ इति श्री मत्र नाममाला समाप्ता ॥ श्रीरस्तुः ॥ ॥श्री

॥ ॥ अथ स्वकुलप्रकाशनं ॥ ॥

॥ ॥ हिवकहूँ माहरो कुलप्रकाश अहो भवियण तुमसुणो । गुरु
कोटिक चद्रकुल अरु वयरिशाखा चितमणो । गुणगण जिनेसर
विरदपायो गुणकरो । सोजयउ खतरगच्छ मोहन प्रगट सज्ज भाग्य
धरी ॥ १ ॥ गुरुगच्छ खरतर तेज ।। विक्रमपुर सोहे सही । जिन
सूरीसर तणेपद, चद्रसूरी जिनमही । गणधार लक्ष्मीप्रधान पाठक ।
ए उल्लासए । वक्षरत्न सग्रह नगर सुवइ किया मोहनभासए ॥ २ ॥

॥ आचार रत्नाकर प्रथम प्रकाशः समाप्त ॥

॥ * ॥ श्री जैनपाठशाला ॥ * ॥

॥ * ॥ आचाररत्नाकर ॥ * ॥

॥ * ॥ दूसरा प्रकाश ॥ * ॥

॥ * ॥ जैन इतिहास ॥ * ॥

॥ * ॥ सूचीपत्र ॥ * ॥

॥ संख्या ॥	॥ विषय ॥	॥ पृष्ठांक ॥
॥ १ ॥	जैनधर्म अनादि उत्पत्तिस्वरूप	१
॥ २ ॥	जैन ईश्वरका नामस्वरूप	२
॥ ३ ॥	कालचक्रका स्वरूप . ..	३
॥ ४ ॥	६ आराका जूदा २ स्वरूप	४
॥ ५ ॥	जगत् मर्यादा ७ कुलगरस्वरूप	६
॥ ६ ॥	५५ बोलगर्भित श्री ऋषभदेवस्वामीका अधिकार, श्रीऋषभदेव स्वामीके १०० सो पुत्रोका नाम, राज्याभिषेक विनीतानगरी स्वरूप, पुरुषोंकी ७२ कला, स्त्रीयोंकी ६४ कलाका नाम १८ लिपी सर्वकलाका स्वरूप, विद्याधरोंकी उत्पत्ति, समवशरण रचनाका स्वरूप, शाख्यमत स्वरूप, जैनब्राह्मणोंकी उत्पत्ति, स्वरूप, ४ चार वेदोंकी उत्पत्ति, यज्ञोपरि याज्ञवल्क्य, सुलसा पिप्पलादका रसीला दृष्टांत, कैलास अष्टापद महादेवका निर्वाणस्वरूप, इत्यादि अधिकार	८–२९
॥ ७ ॥	श्री अजितनाथ स्वामीका अधिकार ५५ बोलगर्भित दृष्टांत तथा दूसरा सगरचक्रवर्त्तिका दृष्टांत जान्हवी गंगोत्पत्ती	२९
॥ ८ ॥	तीजा श्री सम्भवनाथ स्वामीका अधिकार ५५ बो० दृष्टांत	३१
॥ ९ ॥	चौथा श्री अभिनंदन ईश्वराधिकार ५५ बोलगर्भित दृष्टांत	३२
॥ १० ॥	५ मा श्री सुमतिनाथ ईश्वराधिकार ५५ बो० दृष्टांत	३३

द्कारः पचमोमनः । प्रासाद प्रौ तथा हस । विपापद्दच निर्विप ॥ १६ ॥ वौपमच पूजा ग्रहणं । कर्पणाकान सङ्कक । स्वाहाच शांतिक शामौ । नमो जापश्च शोधन ॥ १७ ॥ सर्वोपमा कर्णनिचा । मत्रण कीपिमक । ह्रांह्रीं हूँ हैं तया ह्रौंह्रो । हृदय मस्तक शिखा ॥ १८ ॥ नेत्रत्रय क्रमेणे षा । मन्त्रिया गदिता मया । अकारे कारकाचट । तपया गशपार्थिवाः ॥ १९ ॥ अकारे खठगारयश्च । फरपा मारुतामता । इकारौ गजडादश्च । बलसा वारुणा स्तया ॥ २० ॥ ईकारौ घकद्यतश्च । भनहास्तेजसा पुनः । चतुःसरा विसर्गोश्च । वर्गान्त्या व्योमजामताः ॥ २१ ॥ ऊमौलि रामुखमिइ । नेत्रे कर्णा बुक स्मृतौ । ऋॠ घ्राणे लृॡ गडा । ए ऐ रदनयामल॥ २२ ॥ उ ऊ ओष्ठौ विडजिका । विसर्गः कठ उच्यते । कादि चाटी भुजौटादि । ता दी चत्रण यामल ॥२३ ॥ पफौ कुक्षी पृष्ट नाम्नी । हृदया निच वादनः । य र ल व श प साश्च । सतैते धातवोमता ॥२४॥ बीजो परि स्थितरेखा । कला चन्द्रा द्दलाकुरो । अर्द्ध खड कला अर्द्ध । खडादिन्योमृतद्युति । मरणादौ पुन. श्याम्या । धूम्राविद्वेपणादिषु ॥ २५ ॥ शुभ्राशारपादिके कार्ये । ध्येयोवर्णाश्च मत्रगाः । इत्येषा कियती मन्त्रा । मातृका निर्मिता मया ॥ २६ ॥ इति श्री मत्र नाममाला समाप्ता ॥ श्रीरस्तुः ॥ ॥४॥

॥ ॥ अथ स्वकुलप्रकाशन ॥ ॥

॥ ॥ हिवकहीं माहरो कुलप्रकाशु अहो भविषण तुमसुणो । गुरुगच्छ कोटिक चद्रकुल अरु वयरिशाखा चितमणो । गुणगण जिनेसर सूरिपट्टण विरुदपायो गुणकरो । सोजयउ खरतरगच्छ मोहन प्रगट सुङ्ख भविहित धरी ॥ १ ॥ गुरुगच्छ खरतर तेज है विक्रमपुर सोहै सही । जिन हस सूरीसर तर्णपद, चद्रसूरी जिनमही । गणधार लक्ष्मीप्रधान पाठक विनयगु ण उल्लासए । वक्तरत्न सग्रह नगर मुबइ किया मोहनभासए ॥ २ ॥ ॥

॥ आचार रत्नाकर प्रथम प्रकाशः समाप्त ॥

॥ ※ ॥ श्री जैनपाठशाला ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ आचाररत्नाकर ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ दूसरा प्रकाश ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ जैन इतिहास ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ सूचीपत्र ॥ ※ ॥

॥ संख्या ॥	॥ विषय ॥	॥ पृष्टांक ॥
॥ १ ॥	जैनधर्म अनादि उत्पत्तिस्वरूप	१
॥ २ ॥	जैन ईश्वरका नामस्वरूप	२
॥ ३ ॥	कालचक्रका स्वरूप·	३
॥ ४ ॥	७ आराका जूदा २ स्वरूप	४
॥ ५ ॥	जगत् मर्यादा ७ कुलगरस्वरूप	६
॥ ६ ॥	५५ बोलगर्भित श्री ऋषभदेवस्वामीका अधिकार, श्रीऋषभदेव स्वामीके १०० सो पुत्रोंका नाम, राज्याभिषेक विनीतानगरी स्वरूप, पुरुषोंकी ७२ कला, स्त्रीयोंकी ६४ कलाका नाम १८ लिपी सर्वकलाका स्वरूप, विद्याधरोंकी उत्पत्ति, समवशरण रचनाका स्वरूप, सांख्यमत स्वरूप, जैनब्राह्मणोंकी उत्पत्ति, स्वरूप, ४ चार वेदोंकी उत्पत्ति, यज्ञोपरि याज्ञवल्क्य, सुलसा पिप्पलादका रसीला दृष्टांत, कैलास अष्टापद महादेवका निर्वाणस्वरूप, इत्यादि अधिकार	८—२९
॥ ७ ॥	श्री अजितनाथ स्वामीका अधिकार ५५ बोलगर्भित दृष्टांत तथा दूसरा सगरचक्रवर्त्तिका दृष्टांत जान्हवी गंगोत्पत्ती	२९
॥ ८ ॥	तीजा श्री सम्भवनाथ स्वामीका अधिकार ५५ बो० दृष्टांत	३१
॥ ९ ॥	चौथा श्री अभिनंदन ईश्वराधिकार ५५ बोलगर्भित दृष्टांत	३२
॥ १० ॥	५ मा श्री सुमतिनाथ ईश्वराधिकार ५५ बो० दृष्टांत	३३

|| ११ || ६ना श्री पद्मप्रभु ईश्वराधिकार ... ३४
|| १२ || सातमा श्री सुपार्श्वनाथ ईश्वराधिकार ३६
|| १३ || ८ मा श्री चंद्राप्रभु ईश्वराधिकार ३७
|| १४ || ९ मा श्री सुविधनाथ ईश्वराधिकार ३८
|| १५ || दशमा श्री शीतलनाथस्वामी अधिकार ३९
|| १६ || ११ मा श्री श्रेयांशनाथ ईश्वराधिकार ४०
|| १७ || १२ मा श्री वासुपुज्यस्वामी अधिकार ४२
|| १८ || १३ मा श्री विमलनाथस्वामी अधिकार ४३
|| १९ || १४ मा श्री अनंतनाथ ईश्वराधिकार ४४
|| २० || १५ मा श्री धर्मनाथ ईश्वराधिकार ४६
|| २१ || १६ मा श्री शांतिनाथ ईश्वराधिकार ... ४७
|| २२ || १७ मा श्री कुंथुनाथ ईश्वराधिकार ४९
|| २३ || १८ मा श्री अरनाथ ईश्वराधिकार ५०
|| २४ || १९ मा श्री मल्लिनाथस्वामी अधिकार ५१
|| २५ || २० मा श्री मुनि सुव्रतस्वामी अधिकार ५३
|| २६ || २१ मा श्री नमिनाथ ईश्वराधिकार ५४
|| २७ || २२ मा श्री नेमिनाथ ईश्वराधिकार ५५
|| २८ || २३ मा श्री पार्श्वनाथ ईश्वराधिकार ५७
|| २९ || २४ मा, श्री महावीर तीर्थंकराधिकार ५८
|| ३० || बारै चक्रवर्त्ति अधिकार .. ६०

१ भरतचक्रवर्त्ति, २ सगर, ३ मघवा, ४ सनत्कुमार, ५ श्री शांतिनाथ, ६ श्री कुंथुनाथ, ७ श्री अरिनाथ, ६१
८ सुभूम, ९ पद्म, १० हरिषेण, ११ जय, १२ ब्रह्मदत्त, इन १२ चक्रवर्त्तिका संक्षेप दृष्टांत १२ ६२

|| ३१ || बारै चक्रवर्त्तिकी समान ऋद्धी अधिकार ६३
|| ३२ || नववासुदेव, ९ बलदेवका दृष्टांत नव .. ..

१ त्रिपृष्टवासुदेव, १ अचल बलदेव दृष्टांत ... ६३
२ द्विपृष्ठ वासुदेव, २ विजय बलदेव, ... ६४

३ स्वयम्नु वासुदेव, ३ नद्रवलदेव ....
४ पुरषोत्तम वासुदेव, ४ सुप्रनु वलदेव ६५
५ पुरषसिंह वासुदेव, ५ सुदर्शन वलदेव ६५
६ पुरष पुन्मरीक वासुदेव, ६ आनंद वलदेव, ... ६६
७ दत्तवासुदेव, ७ नंदन वलदेव ... ६६
८ लक्ष्मण वासुदेव, ८ रामचंद्र वलदेव . ....
९ मा कृष्णवासुदेव, ९ वलनद्र वलदेव,
इनका विस्तारसें दृष्टात ६७
इन ९ दृष्टातके सामल, ९ प्रतिवासुदेवके नाम
१ अश्वग्रीव, २ तारक, ३ मेरुक, ४ मधु, ५ निशुद,
६ वलि, ७ प्रल्हाद, ८ रावण, ९ जरासिंध,
प्रतिवासुदेवकों मारै, सो वासुदेव होय .
॥ ३३ ॥ ११ रुद्र नाममात्र अधिकार . ७०
१ नीम, २ जितशत्रु, ३ वल, ४ विश्वानर ५ सुप्रतिष्ट,
६ अचल, ७ पुन्मरीक, ८ अजितधर, ९ अजितवज्र,
१० पेढाल,११ सत्यकी रुद्रका विस्तारसें उत्पत्ति दृष्टात ७१
॥ ३४ ॥ श्री महावीरस्वामीसें आजतक ११ गणधर प्रमुख
७२ पदधारी आचार्योंका नाम, दृष्टात, स्वरूप ७५
११ गणधर नाम प्रतिवोधाधिकार . ७६सें८३
१ श्री गौतमस्वामी, २ श्री अग्निनूति, ३ श्रीवायुनूति
४ श्रीअव्यक्तजी, ५ श्रीसुधर्मास्वामी,६ श्री मंन्मिकस्वामी, ८०
७ श्री मौर्यपुत्र, ८ श्री अकपित, ९ श्री अचलन्राता, ८१
१० श्री मेतार्य, ११ श्री प्रनासगणधर, ११ दृष्टात, ८२
ये श्री महावीर स्वामीके, गणधर लब्धिधारक, ११ वमे
शिष्य नये, इनमें पाचमा गणधर श्री सुधर्मास्वामीसें पट
धारी आचार्योंकी परंपरा चली, जिन सर्वका नाम ७२
दृष्टात सहित, यथा ॥ ८३
१ गणधर श्रीसुधर्मास्वामी, २चरमकेवली श्रीजवूस्वामी, ८४

३ श्री प्रज्ञवस्वामी, ४ श्री सज्यज्ञवसूरि, ८५
५ श्री यशोज्ञद्रसूरि ६ श्री सञ्जूतिविजयसूरिः, ८६
७ श्री ज्ञद्रबाहुस्वामी, ८ श्री थूलज्ञद्रस्वामी, ८७
९ श्री आर्यमहागिरीस्वामी, १० श्री आर्यसुहस्तिसूरिः ८८
॥ विक्रमादित्य प्रतिबोधक सिद्धसेन दिवाकर दृष्टांत ९८
११ श्री सुस्थितसूरिः,१२ श्री इन्द्रदिन्नसूरि,१३ दिन्नसूरिः ९६
१४ श्रीसिंहगिरि, १५ श्रीवज्रस्वामी १६ श्रीवज्रसेनसूरिः ९७
१७ श्रीचंद्रसूरि १८ श्री समंतज्ञद्रसूरि ,१९ श्री देवसूरिः ९९
२० श्री प्रद्योतनसूरि २१ श्री मानदेवसूरि,
२२ श्री मानतुंगसूरिः २३ श्री वीरसूरिः २३ जयदेवसूरि
२५ श्री देवानंदसूरिः, २६ श्री विक्रमसूरि.
२७ श्री नरसिंहसूरि २८ श्री समुद्रविजयसूरि, १००
२९ श्री मानदेवसूरिः, ३० श्री विबुध प्रज्ञसूरि, १००
३१ श्री जयानंदसूरिः ३२ श्री रविप्रज्ञसूरि, १००
३३ श्री यशोज्ञद्रसूरिः, ३४ श्री विमलचंद्रसूरि, १००
३५ श्री देवचंद्रसूरिः, ३६ श्री नेमिचंद्रसूरिः १००
३७ श्री उद्योतनसूरि. ३८ श्री वर्द्धमानसूरिः १०१
३९ श्री जिनेश्वरसूरि, स । १०८० खरतर पदप्राप्ती १०४
४० श्री जिनचंद्रसूरिः, ४१ श्रीजिन अज्ञयदेवसूरिः १०७
४२ श्री जिनवल्लज्ञसूरिः ४३ श्री जिनदत्तसूरिः १०९
४४ श्री जिनचंद्रसूरि, ४५ श्री जिनपतिसूरिः ११५
४६ श्री जिनेश्वरसूरिः ४७ श्रीजिनप्रबोधसूरि ११८
४८ श्री जिनचंद्रसूरिः, ४९ श्री जिन कुशलसूरि ११९
५० श्रीजिनपद्मसूरि ५१ श्रीजिनलब्धिसूरिः १२०
५२ श्री जिनचंद्रसूरि. ५३ श्री जिनोदयसूरि १२१
५४ श्री जिनराजसूरि, ५५ श्री जिनज्ञद्रसूरि १२२
५६ श्री जिनचंद्रसूरि ५७ श्री जिनसमुद्रसूरिः १२३
५८ श्री जिनहंससूरि ५९ श्री जिनमाणिक्यसूरिः, १२४

६० श्री जिनचंद्रसूरिः, ६१ श्री जिनसिंहसूरि. १२५
६२ श्री जिनराजसूरिः, ६३ श्री जिनरत्नसूरिः १२७
६४ श्री जिनचन्द्रसूरिः ६५ श्री जिनसुक्खसूरिः १२९
६६ श्री जिनभक्तिसूरिः, ६७ श्री जिनलाभसूरिः १३०
६८ श्री जिनचंद्रसूरिः, ६९ श्री जिनहर्षसूरि १३१
७० श्री जिनसौभाग्यसूरि, ७१ श्री जिनहंससूरि १३३
७२ श्री जिनचंद्रसूरिः सो वर्त्तमानमें विद्यमान है, इन सर्व आचार्योंका यथावस्थित किंचित् स्वरूप गर्भित, ७२ बहुत्तर दृष्टांत १३५

॥ ※ ॥ विज्ञापन ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अहो देवानुप्रियो, अहो सर्व गृहस्थो, विचारणा चाहिये, के वर्त्तमानकालमें इंग्रेजसरकारकी शोभनीक राज्यनीतीसें, और छापेके प्रचारसें, बहुतसे मतवाले अनेक प्रकारसें उबटे, तथा सुलटे, विकल्प करनेवाले विद्यापात्र होते जाते है, और अपनी अपनी शक्तिमुजब बुद्धीके फेलावसे, देशका, तथा अपनें कुलधर्मका, फेर विशेष बुद्धी दिखलानेकों सर्व मतका इतिहास प्रगट किये, और करते हैं, सर्व इस कूलोंमें हींदी गुजराती मराठी इंग्रेजी सीखनेंवाले विद्यार्थियोंकों इतिहास अवश्य सिखाते है, परंतु कितनेक ऐसे पंडित हुए सो अन्य मतका किंचित् स्वरूप जानके अपनी कुयुक्तियोंसे अन्य मतका खंडन वा अन्यमतका इतिहास प्रगट कियेहें और करते हे, परंतु कोई धर्मका असली तत्व समझेविगर खंडन मंडन करना सो कैसा है कि निरापेक्ष विद्वज्जनोंके सन्मुख अपनी मूर्खताका चिन्ह प्रगट करना है, कितनेक इतिहास पुस्तकोंमें जैनधर्म उत्पत्ति विषय अनेक अपना २ जुदा विकल्प करके जनकों स्थापित करते हे १ कोई लिखता हे, बौद्धमत एक जैनधर्मकी शाखा हे १, तो कोई लखता हे

जैनधर्म बोद्धमतकी एक शाखा है ॥ कोई कालमें यह दोनु मत एक थे२ कोई लिखता है, जैनमत मछदरनाथके पुत्रोंनें चलाया हुवा है ३, तो कोई लिखताहै, क्या जानते नहिहो, विष्णु भगवान् दैत्योंके धर्म भ्रष्ट करनेंको अर्हतका अवतार लिया था जबसें जैनमत चला है ४ ॥ कोई लिखता है, और सब बात जूठी, यह जैनधर्म स। ६०० के लग भग चला है, इत्यादि अनेक विकल्प धर्मविषई किये हुए है, और पिण देवविषय गुरुविषय, जैनआचार विषय, अनेक विकल्प करतेहै, कोई कहते है जैनधर्मवाले ईश्वर नहि मानते है, १ तो कोई कहते है, जैनधर्म वाले ईश्वर मानते हैं पण भगवानकी नग्नमूर्त्ति रखते हैं, इससेंती मदरमें जाना दरशन करना न चाहिये, कोई कहते है जैनलोक कुलाचारसें भ्रष्ट है और कुलाचार करानेंवाले जैनीब्राह्मण कुलगुरुभी नहि है, जो आचार करते है सो अन्य मतकी अपेक्षा करते है, इत्यादि अनेक जूठे विकल्प किये हुए पुस्तकोंमें देखके (वा) कोईकेपास सुनके जो जैनतत्व जाणनेंवाले पण्डित लोक तो अवश्य उनकों जूठे समजतें हैं और हास्य करतेहै क्यों कि मोहमदिराके नसेंमे व्याप्त हुवे थके, जो वचन नहि कहने लायक है सो कह देते हैं, इससेंती जितने पुराण है, उन सर्वमें एकेकसें विरुद्ध वाक्य है, जूदे जूदे ईश्वर माननेंसें, तथा जूदे जूदे प्रकारसें श्रष्टी, जगतूकी रचना माननेंसें, एकेककी अपेक्षायें एकेक जूठे होनेसें, जैन धर्मकी अपेक्षायें सर्व जूठे होते है, क्यों कि जैनधर्म तो अनेकातिक है अनादी है, और जीवस्वरूप जगतूका स्वरूप अनादी मानते हैं और राग द्वेषादिक अठारे दूषणों करके रहित, सर्व देवगणके पुज्यनीक, सर्व जीवोंके ऊपर दया भाव धारन करनेंवाले, परमपुरुष परमात्म गुणपायके जो सिद्धि स्थानकमें निश्चल रहे है, कभी ससारमें जिसका आवागमन नहि रहा है ऐसा ईश्वरकों जैनधर्मवाले ईश्वर मानते हैं, परतु जगतका रचनेंवाला, तथा सहार करनेंवाला, स्त्री शस्त्र, जपमालादिक, धारन करनेंवाला, तथा अपना लिगपूजानेंवाला, राग द्वेषादिकसें अनेक कुकर्म करनेंवाला होय ऐसा ईश्वरकों जैनीलोक ईश्वरतुल्य नमानते हैं और गृहस्थधर्मका, जन्मसें मरणपर्यंत, सपूर्ण आचार तथा साधुधर्मका सपूर्ण आचार जैनलोक मानते हैं, क्युंकि

जैनधर्ममें मोक्षप्राप्ती, ज्ञान, क्रिया, दोनुसें होती हैं, कोई क्रियाकों उत्थापके ग्यानकों मानते हैं, तो कोई ग्यानकों उत्थापके क्रियाको मानते हैं, ऐसे जो एकांतिक है उन सर्वकों जैनीलोक मिथ्यात्वी कहते हैं, इत्यादि संपूर्ण जैन धर्मका स्वरूप, तथा ईश्वरका स्वरूप, तथा जैनकुलाचारका स्वरूप तो बडे बडे जैनसिद्धांतोंमें हेतु, युक्ति, प्रमाण, दृष्टांत, करके विस्तारसें लिखे हुवे है, जिसमें बहुतसे तो जैनआचार, जैनजोतष, जैननीतिके ग्रंथ, कित नेक वरषोंसें अन्यमति म्लेछादिक केई राजावोंके अनीतिके सबबसें विछेद तुल्य होगए है, तथापि आवश्यक सुत्र, आचारदिनकरादि अनेक आचार ग्रंथ प्रसिद्ध है, जिससें जो विद्धजन पुरुष है सो तो सपूर्ण जैनआचारकों जान शक्ते हैं, परंतु व्याकरणादि वोधरहित सामान्य वर्गवाले सर्व वाल मित्रोंकों उस ग्रंथोंसें अपना सपूर्ण आचारका जाणपणा नहि हो सक्ता है, इसी हेतुसें मेनें मेरी अल्पमति प्रमाणें बहुत प्रयास करके सर्व जैन लोकोंके अवश्य जाणनें, सीखनें, करनें, लायक जैनआचार, तथा जैन इतिहास, इस रत्नसागरका दूसरा भागमें छपाके प्रशिद्ध किया है, यद्यपि इसमें सघकी मदत प्रथम मिलेविगर, कितनेक ठिकाणे सुधारा, वधाराकी आवश्यकता, रहगई हैं, तथापि सर्व जैनधर्म रागियोंके अवश्य उपियोगी पुस्तक है, इससेती मेरेकों आशा है, कि गुणग्राही धर्मउद्योतक पुरुष, अवश्य इस पुस्तककों लेकर अपनेपास रक्खेंगे और ग्यानवृद्धी खाते पाच पंचवीस पुस्तक इकठीलेकर जैनशालाउमें शीखनेंवाले लडकोंकों तथा साधु साधर्मियोंकों देकर पाठशालाकों मदत देवेंगे, और सर्व ठिकाणें अपना धर्म इतिहासकों प्रवर्त्तन करके मेरा परिश्रम सफल करेंगे, अल विस्तरेण ॥ शुभंभवतु, कल्याणमस्तु ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ मनमोहन पारस मिल्यो । मोहनगुण सुखकंद ॥
मोहनी मूरत देखके । मोहनचित आनद ॥ १ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ पारसप्रभुके नामसें । सहुसकट मिटजाय ॥
ईतउपद्रव भयटले । मोहनगुण प्रगटाय ॥ २ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ गुरुदीपक गुरुदेवता । गुरुविनघोर अधार ॥
जे गुरुवाणी वेगला । रडवडिया ससार ॥ ३ ॥ ※ ॥

॥※॥ रत्नसागर दूसरा भाग प्रसिद्ध करते जो धर्मरागी जैनसज्जनोंनें प्रथम पुस्तकों लेके मदत दीवी है, जिनोका ग्यानवृद्धी उपकारार्थ मान्यसें नाम प्रकाश करते हैं ॥

१०१ वाफणासेठ श्री जुहारमलजी गेगमलजी, उदेपुर ॥
३१ तत्वदीपक मोहन ममली ॥ वीकानेर ॥
२५ वाबू राय श्री कालिकादासजी वदरीदासजी वहादुर, कलकत्ता॥
२१ वाबू राय श्री प्रतापसिंहजी धनपतिसिंहजी वहादुर, अजीमगज॥

॥※॥ पुस्तक मिलनेका ठिकाना ॥※॥

॥ १ ॥ मु । वीकानेर, ठि । वडे उपाशरेपासे, जैनलक्ष्मीशाला, पुज्य उपाध्याय श्री लक्ष्मीप्रधानजीगणिः प । मुक्तिकमल मुनिः ॥ ※ ॥

॥ २ ॥ मु । कलकत्ता, ठि । अफीमचौरस्तै ६२ न० जैन विद्याशाला प । जयचद मुनिः पं । रावतमलमुनिः ॥ ※ ॥

॥ ३ ॥ मु । मुंवई, ठि । विचला भुयवाडामें, श्री चितामणजीके मदिरमें जैनपाठशाला, पण्डित धर्मचद कल्याणचदपासे ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ ये तीन ठिकाणोंमेंसें, कोई ठिकाणें ऊपर लिख्येमुजव पत्र देनेसें पुस्तक भेजनेमें आवेगा, ये तीनों ठिकाणें, तत्वदीपक मोहनममली, तरफसें जैनपाठशाला स्थापन है ॥ इनमें औरभी अनेक जातकी जैन छपैकी पुस्तकों तैयार मिलती हैं सो सूचीपत्र मगायके देख लेना ॥

॥※॥ पुस्तकोंके नाम ॥※॥

	रु०	आ०	पा०
॥ १ ॥ रत्नसागर प्रथम भाग	५	०	८
॥ २ ॥ रत्नसागर दूसरा भाग	२	८	६
॥ ३ ॥ आचाररत्नाकर प्रथम प्रकाश	२	०	४
॥ ४ ॥ आचाररत्नाकर दूसरा प्रकाश	१	४	४
॥ ५ ॥ खरतर राई देवशी प्रतिक्रमण	०	६	॥-
॥ ६ ॥ स्तवनावली दूसरा भाग	०	४	॥-
॥ ७ ॥ खरतर पाच प्रतिक्रमण	१	०	४

॥ अथ संक्षिप्त जैन इतिहास लि० ॥

॥ ※ ॥ अब आचार रत्नाकरका दूसरा प्रकाशमें पाठक गणके उप कारार्थ जैन धर्मका स्वरूप प्रश्नोत्तरकी रीतसें लिखता हुं ॥※॥

॥ ※ ॥ (प्रश्नः) जैन धर्म कबसें प्रशिद्ध हुवा ॥ ॥※॥

॥ ※ ॥ (उत्तर) जैन धर्म अनादि कालसे प्रशिद्ध है ॥※॥

॥ ※ ॥ (प्रश्नः) जैन लोक जगत्का स्वरूप किस तरे मानते है ॥

॥ ※ ॥ (उत्तर) द्रव्यार्थिक नयके मतसें, जैनलोक, जगत्का स्वरूप शाश्वता (अर्थात्) हमेशा प्रवाहसे ऐसाही मानते हैं । अनादि कालसें उत्कृष्ट, हीन, कालमुजब चढाव उतार स्वरूप चला आता है ॥ कोई इस ससारकी, सृष्टीकी रचना करनेवालेको जैनी लोक न मानते हैं ॥※॥

॥ ※ ॥ (प्रश्नः) अन्य मतवाले कहते हैं (कि) जैन धर्मवाले सृष्टी कर्त्ता ईश्वरको न मानते हैं, इस सेती नास्तिक है (सो) जैनी लोक ईश्वर मानते हैं, या नहि ॥ ॥ ※ ॥ ॥※॥

॥ ※ ॥ (उत्तर) जो जैन धर्मको नास्तिक कहते हैं (सो) नास्तिक हो सक्ते हैं (क्यु कि) सर्व मतवाले अन्य २ प्रमाणसें, अन्य २ ईश्वर कृत लोकरचना कहते हैं ॥ (परतु) सत्य प्रमाणसें कोई ईश्वरकी करी सृष्टी सिद्ध नहि हो सक्ती है (विचारना चाहिये) लोकरचना तो एक (और) ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वरादिक, ईश्वर, रचनेवाले बहुत हुए ॥ इससेती, एकके मतसें, एकका मत झूठा होता, सब झूठे हुये (और) यहीबात अंतमें सिद्ध हुई, कि जगत् रचना अनादि है । इससें जगत्कर्त्ता ईश्वर कोई नहि (और) जो ईश्वर नाम धारके राग, द्वेषमें, मग्न होकर रातदिन जगत् विटंबणामे फसरहे हैं । आपसमें लड रहे हैं । (तथा) अ ठारे दूषणों करके सहित समाफक) चरित्र करनेवालोंको जैनवाले

देवगतिमें मानतेहें (और) जो ईश्वर, अनत अपना आत्मगुणामें मग्न है (तथा) शातिस्वरूप धारक हे, रागद्वेषादिक अठारै दूषणो करके रहित है। लोकालोक त्रिकाल विषय पदार्थकों जाणनेंवाले हे। ससारमें आवा गमन रहित, हमेशा सिद्धिस्थानकमें विराजमान है (ऐसा ईश्वरकों जैनधर्मवाले ईश्वर मानते हे) ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥※॥ प्रश्न' ॥ जैनधर्मवाले ईश्वर मानते हे सो ईश्वरके कितने नाम हैं ॥

॥ ※ ॥ (उत्तर) ॥ अनतकालमें, अनते तीर्थकर, परमात्मगुण पायके सिद्धिस्थानककों प्राप्त ज्ञए हें, ॥ इस अपेक्षायें तो अनतनाम है (परतु) सर्वके गुणकी तुल्यतापणे समुच्चय, सत्यार्थ गुणयुक्त नाम १००८ हें ॥ सो हजार नामको स्तोत्र, रत्नसागर प्रथम ज्ञागमें लिखा है ॥ (फेर) समुच्चय २४ नाम जैन ईश्वरका हेमकोशादिक ग्रथमें प्रशिद्ध ह (यथा) अर्हन् १॥ जिनः २ पारगत ३ त्रिकालवित् ४। क्षीणाष्टकर्म्मा ५ परमेष्टय ६ धीश्वरः ७। सन्नुः ८ स्वयन्नु ९ ज्ञगवान् १० जगत्प्रज्ञु ११। स्तीर्थकर १२ स्तीर्थकरो १३ जिनेश्वरः १४ ॥१॥ स्याद्वाद्य १५ ज्ञयद' १६ सर्वाः १७। सर्वज्ञः १८ सर्वदर्शि १९ केवलीनौ २०। देवाधिदेव २१ बोधिदः २२। पुरुषोत्तम २३ वीतरागाप्ता २४ ॥ २ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (प्रश्न.) ॥ जैनलोक अनादि अनतकालमें एक ईश्वर मानते ह (वा) अनत इश्वर मानते हें ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (उत्तर) ॥ एकज्ञी मानते हें (और) अनेकज्ञी मानते हें॥

॥ ※ ॥ (प्रश्नः) ॥ एककेसें मानते हें ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (उत्तर) ॥ रागद्वेषरहित, परमात्मगुण, अक्षयसुख संपदा, ज्ञाव, सबके तुल्य होनेसें एक ईश्वर गुणयुक्त नाम मानते हें ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (प्रश्नः) ॥ अनेक केसे मानते हें ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (उत्तर) ॥ द्रव्य, क्षेत्र, कालकी, अपेक्षायें अनत सिद्धज्ञए। इससेती अनत इश्वर मानते हें ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (प्रश्नः) ॥ जैनलोक कालचक्रका स्वरूप किसतरै मानते हें ॥

॥ ※ ॥ (उत्तर) ॥ कालचक्रका दो ज्ञेद मानते हें। १ अवसर्पणीकाल। २ उत्सर्पणीकाल ॥ ※ ॥ ॥※॥

॥ ※ ॥ (प्रश्नः) ॥ अवसर्पणीकाल किसकों कहते हैं (और) इसका क्या प्रमाण है । कितना भेद है ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥※॥(उत्तर) दस कोडा कोड सागरोपमको अवसर्पणी काल होता है॥ इसका ६ हिस्सा है (अर्थात्) जिसकों जैनी ६ आरे कहते हैं ॥ इस कालके ६ आरोमें अच्छी वस्तुवोंकी दिन दिन हानी होती चली जाती है॥

॥ ※ ॥ (प्रश्नः) ॥ उत्सर्पणी काल किसकों कहते हैं (और) क्या स्वरूप है। कितना प्रमाण है ॥ ※ ॥

॥※॥ (उत्तर) ॥ दश कोडाकोड सागरोपमका एक उत्सर्पणी काल होता है इसका पिण ६ आरा है । इस कालके ६ हिस्सोमें दिन२ अच्छी वस्तुवोंकी वृध्दी होती चली जाती है(तथा)एक सागरोपममें असख्याता वर्ष होता है। (जब) उत्सर्पणीकाल उतरे, तब अवसर्पणीकाल सरू हुवे (और) जब अवसर्पणी काल उतरे, तव उत्सर्पणीकाल सरू हुवे। ऐसें २० कोडाकोड सागरोपम प्रमाणें एक कालचक्र होता है ॥ अतीतकालमें, ऐसे कालचक्र अनते व्यतीत हो गए हैं (और) आगु अनते व्यतीत हुवेंगे । (इसीमाफक) अनादि अनत कालतक इस जगत्रकी चढाव उतार व्यवस्था चलती रहेगी ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (प्रश्नः) अवसर्पणी, उत्सर्पणी कालके, ६ आराका क्या नाम है (और) क्या स्वरूप है । कितना २ प्रमाण है ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (उत्तर) ॥ अवसर्पणी कालको पहलो आरो, सुखम सुखमा नामें, चार कोडाकोड सागरोपम प्रमाण होता है (इस कालमें) भरत क्षेत्रकी जमीन अत्यत सुदर, बहुत रमणीक, सोनेंकेथाल समान बराबर थी। (और) इसमें मनुष्य, तथा सर्वजीव जानवर, बडे सरलस्वभावी अल्प काम, क्रोध, मोह, राग द्वेषवाले होते थे (प्रायें) नीरोग सरीरवाले सुंदर रूपवान होते थे । दशजातिके कल्पवृक्षोंसें, अपनें खानें पीनें वस्त्र घरादिकका सब मनोरथ पूरण करते थे (और) एक लडका, एक लडकी दोनुका युगल जन्मते थे । जब वे युवान अवस्थाकों प्राप्त होते थे (तब) युगल जनमे हुवे, आपसमें स्त्री । सबध कर लेते थे । जैन मतके प्रमाणसें तीन कोस प्रमाण सरीर होता था (और)

तीन पल्योपम प्रमाण आऊखा होता था। जिनोंके दोयसै छप्पन पृष्ठकरं मके हाड होते थे। ४ए दिनतक अपना पुत्रादिककी पालना करते थे। जीव हिंसा, झूठ, चोरी, आदिक पापकर्म विशेष नहि करतेथे। तीसरेदिन पीछे मटरकी दाल प्रमाण आहार करते थे। कल्पवृक्षोंहीमे सो रहते थे। युगल जोमे पिण गिणतीमें थोडेही थे। (शेष) चउपाय, पक्षी, पंचेंद्री आदि, सर्वजातके जीव थे। परतु सर्व क्षुद्रक नही थे। सरलस्वभावी थे। शालि प्रमुख सर्व अन्न, इक्षु प्रमुख सर्वरसाल, वनोंमें आपसेंही उत्पन्न होते थे। (परतु) मनुष्योंके भोगमें नहि आते थे (निकेवल) उसकालके मनुष्य देवाधिष्टित कल्पवृक्षोंके दिया हुवा फल फूलोंका आहार करते थे। वस्त्र पहनते थे। भद्रक परिणामोंसें मरके निकेवल देवगतिकों जाते थे ॥ (इत्यादि) अवसर्प्पणी कालका पहला आरा (और) उत्सर्प्पणी कालका छठा आरा की समान मर्यादा कही ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (अब दूसरा सुखमा नामें आरा) ॥ ये तीन कोडाकोड सागरोपम प्रमाण होता है। इसमें मनुष्य तिर्यंचका दो पल्योपमका आऊखा (और) दो कोशका सरीर होता है। वोरप्रमाणें दो दिन पीछे आहार करे। १२८ पासली हुवे। (और) ६४ दिन पर्यंत अपना पुत्र युगल की पालना करे। कल्पवृक्ष सब प्रकारका मनोरथ पूरण करे। अतमें मरके देवगतिमें जावै ॥ (यह) अवसर्पणीकालका दूसरा आरा, (और) उत्सर्पणीका पाचमा आराकी मर्यादा कही ॥ २ ॥ (तीसरो) सुखमदुःख मा नामें आरो, दो कोडा कोड सागरोपम प्रमाणें (इसमें) मनुष्य तिर्यंचको एक पल्योपमको आयु (तथा) एक कोशको शरीर होय। एकातरे आमलाप्रमाणें आहार करे, ६४ पासुली हुवै॥ ७ए दिनतक अपना युगल पुत्रादिक की पालना करै। कल्पवृक्ष सब मनोरथ पूरण करै। सरलपणासें मरके देवगतिकों प्राप्त हुवे (यह) अवसर्पणीका तीसरा आरा (और) उत्स र्पणीका चौथा आराकी मर्यादा कही ॥३॥ (चोथो) दुःखम सुखमा नामें आरो, ४२ हजार वरष ऊणा, एक कोडाकोड सागरोपम प्रमाणें (इसमें) मनुष्य, तिर्यंचका, उत्कृष्टा एक पूर्वकोड वरपका आयु, (तथा) पाचसै धनुष्य प्रमाणें शरीर होय। नित्य भोजन करे ॥ (इसमें) युगलिया न

होय, सर्व संसारी आजीवका कर्मका करनेवाला होय (इससें) मरके देवता १ मनुष्य २ । तिर्यंच ३ । नारकी ४ । ए चारुइगतिमें जाणेवाले होय । केई जीव सर्वकर्म खपायके पाचमी मोक्षगतिको भी प्राप्त होय ॥ (यह) अवसर्पणीका चोथा आरा (और) उत्सर्पणीका तीसरा आराकी मर्यादा कही ॥ ४ ॥ (पाचमो) दुःखमा आरो, इकवीसहजार वरपप्रमाणें (इसमें) मनुष्याको उत्कृष्टो सात हाथ प्रमाणें सरीर, (और)१२० वरपको आऊखो होय। संसारी सर्व आजीवका करनेवाले होय(मरके) चारिउगतिमें जावे (परतु) सर्व कर्म खपायके कोई मोक्षमें न जावे (यह) अवसर्प्प णी कालका पाचमा आरा, (और) उत्सर्प्पणीका दूसरा आराकी मर्यादा कही ॥ ५ ॥ (छठो)दुःखमदुःखमा नामें आरो, २१ हजार वरपप्रमाणें । (इसमें) मनुष्याको उत्कृष्टो २० वरसको आयु, (तथा) एक हाथको शरीर होय । वैताढ्य पर्वतादिकका विलामें रहनेवाले होय, धर्म, कर्म, करके रहित होय । सर्व मनुष्य, क्रूरकर्मी, न्यायमार्गरहित, मरके खोटी नरक नि गोदादि गतिमें जावे ॥ (यह) अवसर्पणी कालका छठा आरा (और) उत्सर्पणीका पहला आराकी मर्यादा कही ॥ ६ ॥ (इसीतरे) अवसर्पणी उत्सर्पणीका, ६ आराकी मर्यादा, जैनसिद्धांतोंमें कही है ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (प्रश्नः) छ आरेरूप अवसर्प्पणी (वा) उत्सर्प्पणी कालमें, कितने २ परमात्म ज्ञान गुणयुक्त, जैनधर्म मुख्य, चतुर्विधसंघ स्थापन करनेंवाले तीर्थंकर होते हैं ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (उत्तर) छ आरेरूप एकेक कालमें, २४ चौवीस तीर्थंकर भगवान होते रहते हैं ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥※॥(प्रश्नः) अभी प्रचलित कोनसा काल(तथा)कोनसा आरा है ॥

॥ ※ ॥ (उत्तर) अभी अवसर्पणी कालका पाचमा आरा है ॥※॥

॥ ※ ॥ (प्रश्नः) ये अवसर्प्पणी कालका कोनसा आरातक युगलि या मनुष्य होता रहा (फेर) कोनसे प्रकारसें संसार सवधी नीति मर्या दा प्रवर्त्तन भई ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (उत्तर) अवसर्पणी [illegible]सरा आरा, बहुतसा व्यतीत होनेंतक तो, कर्मादिक रहित युग[illegible], तीर्यंच, होता रहा (इस

उपरात) दक्षिण भरतार्द्ध मध्यखममें, सात कुलकर एक वंशमें उत्पन्न भए। कुलकर उसकों कहते हें (कि) जिणोंनें तिस २ कालमुजब, मनुष्योंकेवास्ते नीति मर्यादा बांधी हे (और) इसी सात कुलकराकों पाछा फेरसें लोकीकमें सप्त मनु कहते हें ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (प्रश्न) किस प्रकारसें कुलकर उत्पन्न भये (और) क्या २ नीती मर्यादा प्रवर्त्तन करी ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (उत्तर) तीसरे आरे उतरता, दश जातिके कल्पवृक्षहीय मान कालके सवव अल्प फल देनेंवाले, थोमे रह गए (तव) युगलक लोकोंनें, अपने २ वृक्षोंका ममत्व कर लिया। जो कोई युगल, दूसरेका कल्पवृक्षकेपास फलादिक कुछ मागे (तो) आपसमें क्लेश करे (इस वास्ते) युगल पुरषोंके दिलमें विचार आया (कि) कोई ऐसा पुरष होय, सो सबका न्याव करे। इसीसमें एक युगलकों, एक वनके श्वेत हस्तीनें देखकर, अत्यत प्रेमसें अपने स्कधपर चढा लिया (जव) युगल हाथीपर बैठा थका वनमें फिरने लगा (तव) और युगल लोकोंनें विचारा। यह युगल सबमें बमा है। सो हाथीपर चढा हुवा फिरता हे (इस वास्ते) इसकों अपना राजा न्यायाधीश बनाउ। ऐसा विचारके युगलकों न्यायाधीशपणें स्थापन किया। इसका विमलवाहन नाम हुवा, (इसके) चद्रयशा नामें भार्या हुई। (इसनें) सर्व युगल लोकोंकों, जूदा २ कल्पवृक्ष बाटके दे दिये (जव) कोई सतोष रहत युगलिया, दूसरेके कल्पवृक्षसें कुछ मागता (तो) क्लेश करता हुवा, उसकों साथ लेके, राजाके पास आता (तव) विमल वाहन (हा) तुमनें यह क्या कामकिया। ऐसी हकारकी दमनीति करी। इससें अपराधी युगल मर जाते थे (सो फेर) वैसा काम कभी न करते थे। इस प्रथम कुलगरका देहमान,९०० धनुषका हुवा (सो)युगल(तथा)हस्ती पिछले भवमें पश्चिम महा विदेह क्षेत्रमें, वाणियापणें दोनु भाई हुए थे (जिसमें) एकतो सरल था (और) दूसरा कपटी था (परतु) आपसमें स्नेह बहुत था। कपटी जो कहता (सो) सरल मान लेता था। अतमें सरल भाई मरके युगल हुवा (और) कपटी मरके हाथी हुवा, (इस सेती) एकेककों देखनेंसें ईहापोह करता जाती स्मरण ग्यान

कों प्राप्त ज्ञवा (तव) स्नेहमान होकर हाथीनें अपनें न्नाईकों स्कधपर चढा लिया । इसका विस्तार संबंध आवश्यकजी सुत्रसें जाण लेना ॥ (इति प्रथम कुलकर सबंधः) ॥१॥ (दूशारा) कुलकर, विमल वाहनका पुत्र चक्षुस्मान् नामें कुलकर ज्ञवा (तिसके) चद्रकाता नामें न्नार्या ज्ञई (और) ८०० धनुप प्रमाण देहमान ज्ञवा । इसके पिण पूर्ववत् हकारकी दम नीति रही ॥ २ ॥ इति ॥ (तीशरा) यशोमान् नामें कुलकर ज्ञवा (जिसके, सरूपा नामें न्नार्या ज्ञई (और) ७०० धनुपका देहमान ज्ञवा । इसके थोमे अपराधमें हकारकी, विशेप अपराधमें (मा) ऐसा काम मत करो । ऐसी दूसरी मकारकी दडनीति ज्ञई। इससें सर्व युगल वक्तत मरनें लगे।। इति ॥ ३ ॥ (चोथा) अन्निचद्र नामें कुलकर ज्ञवा (जिसके) प्रतिरूपा नामें न्नार्या ज्ञई (और) ६५० धनुप प्रमाण देहमान ज्ञवा । इसकेपिण हकार, मकार, की दमनीति रही ॥ इति ॥ ४ ॥ (पाचमा) प्रशेनजित् नामें कुलकर ज्ञवा(जिसके) चक्षुस्मती नामें न्नार्या ज्ञई । (और) ६०० वनुप प्रमाण सरीर ज्ञवा । इसके सामान्यपणासें हकार, मकारकी दंमनीति रही (और) विशेप अपराधीकों, धिकार, की दम नीति करी ॥ जिसकों धिकार, कह देता, सो युगल जाणता मेरा सर्वस्व हरलिया ।। इति ॥ ५ ॥ (छठा) मरुदेव नामें कुलकर ज्ञवा । इसके श्रीकाता नामें न्नार्या इसका ५५० धनुप प्रमाणें शरीर ज्ञवा । इसकी वखतमें तीनु दड नीति रही ॥ ६ ॥ इति ॥ (सातमा) नान्नि नामें कुलकर ज्ञवा । (इसके) मरुदेवी नामें न्नार्या ज्ञई । इसका ५२५ वनुपका देह मान ज्ञवा । इसकी वखतमें जघन्य अपराधीकों, हकार, काइंक विशेप अपराधीकों, मकार, (और) उत्कृष्ट अपराधीकों धिकार, इसीतरे तीनु दम नीति रही । (तथापि) ॥ दिन दिन हीन कालके सवव असंतोपी युगल वक्तत होनें लगे । वक्ततसे अपराध करनें लगे । तीनु दम नीतिका न्नय नहि मानणें लगे (इस वखतमें) नान्नि कुलकरके, मरुदेवी न्नार्याकी कूखसें, चवदें स्वप्न सूचित, ऋपन्नदेव कुमार पुत्रपणें उत्पन्न ज्ञये। (ये) रिपन्नदेव कुमर, क्रोमों देवतावोंके पुज्यनीक ज्ञए (और) युवान अवस्थामें राज्यपदकों धारन कर के (सपूर्ण पुरप, स्त्रियोंकी कला (तथा) राज्यनीति, धर्मनीति, आदिककों

प्रवर्त्तन करनेंवाले, ब्रह्मादि अनेक नामधारक, प्रथम ईश्वर इस कालमें इस धरतीमें येही ज्ञए। (इसी तरे) सात कुलकर ज्ञए॥ ॥ ॥

॥ ॥ (प्रश्नः) रिखनदेव स्वामी कहांसें आयके, मरुदेवी माताकी कूखमें उत्पन्न नए (और) कोण प्रकारसें देवतावोंके पुज्यनीक, संपूर्ण कलाकों (तथा) धर्मनीतिकों प्रवर्त्तन करनेंवाले प्रथम ईश्वर नए ॥ ॥

॥ ॥ अब ५२ बोल गर्भित श्री ऋषनदेव अधिकार लि० ॥ ॥

॥ ॥ विनीता नूमीके विषै, श्री नानि नामें, सातमा कुलकर ज्ञवा (जिसके) मरुदेवी नामें पट्टराणी ज्ञई। तिसकी कूखमें, सर्वार्थसिद्ध देवलोक थकी चवके, मिति आषाढ वदि ४ के दिन, नगवान् उत्पन्न नए (तब) मरुदेवी मातायें, वृषनकों आदलेके, अग्निशिखा पर्यंत, १४ स्वप्ना प्रगटपणें मुखमें प्रवेश करता देखा। (इहा) १४ स्वप्नका नाम लि० ॥ वृषन १ ॥ हस्ती २ ॥ सिंह ३ ॥ लक्ष्मीदेवता ४ ॥ दो पुष्पमाला ५ ॥ चंद्रमा ६ ॥ सूरज ७ ॥ इंद्रधजा ८ ॥ पूर्ण कलश ९ ॥ पद्म सरोवर १० ॥ क्षीर समुद्र ११ ॥ पुन्हरीक देव विमान १२ ॥ रत्नराशि १३ ॥ निर्द्धूम अग्नि १४ ॥ ऐसा चवदे स्वप्ना देखा (फेर) गर्नके प्रनावें उत्तम २ जो जो मोहला, मरुदेवी माताकों उत्पन्न ज्ञवा (सो) इंद्र आयके पूरण किया (पीछे) सर्व दिशायें सुनिक्ष्य समें। मि। चेत्र वदि ८ के दिन, उत्तराखाढा नक्षत्रके विषे, नगवानका जन्म ज्ञवा। (उसी वखत) रुचक पर्वतकी रहनेंवाली ५६ दिश कुमरी देव्या आयके, सूतिका उत्सव किया (पीछे) उसी रात्रिकों ६४ इंद्रोंका आसन कपायमान ज्ञवा (तब) अपना अवधिज्ञानसें प्रथम नगवानका जन्म ज्ञवा जाणके जन्म उत्सव करनेकों, मेरुपर्वत ऊपर आए (जिसमे) पहला सोधर्मइंद्र नगवानकी माताकेपासे आयके, मंगलीकके अर्थ माताके पासे, नगवानके समान, दूसरा प्रतिबिंब रखके, नगवानकों मेरु गिरके ऊपर ले गया (उहां) बमा उत्सवसें स्नान कराय के, अष्ट द्रव्यसें पूजा करके, अगामी बत्तीस बद्ध नाटक करके, नगवानकों, पीछा माताके पासे लायके स्थापन किया। (और) क्रोमाइ सोनइयाकी (तथा) अन्य वस्त्र, धान्यादिककी, वर्षा करके नानि राजाका घर नर दिया (पीछे) सर्व इंद्र आठमा नंदीश्वर द्वीपजायके अठाई उत्सव

करके, अपनें २ स्थानक गए । (फेर) नाभि राजानें दशदिन पर्यंत जन्मके उत्सव किये (उस वखत) युगलिया लोक कुछभी जाणते नही थे (इसवास्ते) सोधर्म इंद्रनें, बहुतसे देवता देव्याकों भगवानकेपास रखदिये (सो) सर्व व्यवहार बताते करते रहे ॥ (पीछे) ११ में दिन, कल्पवृक्षोंका दिया हुवा, नानाप्रकारका भोजन, सर्व युगलियाकों जिमायके, नाभि राजायें, रिषभ कुमर नाम स्थापन किया। नाम स्थापनका ये हेतू है (कि) भगवानकी दोनुसाथलोंमें वृषभका लाछन था। (दूसरो) मरुदेवी मातानें, चवदै स्वमाके प्रथम स्वप्नमें, वृषभ देखा था (इस सेती) रिषभ कुमर नाम स्थापन किया ॥ बाल अवस्यामें श्री ऋषभदेवकों जब भूख लगती थी (तब) अपनें हाथका अंगूठा, मुखमे लेकें चूस लेते थे। उस अंगुठेमें, इंद्रनें अमृतसंचार कर दिया था । जब ऋषभ देवजी बडे हुए (तब) देवता उनकों कल्पवृक्षोंके फललायाकर देते थे। वे फल खाते थे। जब ऋषभदेव, कुछन्यून एक वर्षके हुए (तब) इंद्र आया । रीते हाथसें स्वामिकेपास न जाना । इस्सें इक्षुदंड हाथमें लेके आया (उसवखत) श्री ऋषभदेव कुमर, नाभि कुलकरकी गोदीमें बैठे थे। तब भगवानकी दृष्टि इक्षुदंडपर पडी । तब इंद्रनें कहा (कि) हे भगवान् इक्षु भक्षण करोगे (तब) श्री ऋषभदेव कुमरनें हाथ पसाऱ्या। तब इंद्रने, ऋषभदेव कुमारके, इक्षुकी इच्छा उत्पन्न होणेसें, भगवान्का इक्ष्वाकु कुल स्थापन करा (यासे इक्ष्वाकु वंशकी उत्पत्ति भई) और श्री ऋषभदेवजीके वंशवालोनें, काश्य वनस्पति विशेपका रस पीया (इस वास्ते) काश्यपगोत्र प्रसिद्ध हुवा ॥ श्री ऋषभदेवजीके, जिस जिस वयमे जो जो काम उचितथा, सो सर्व इंद्रनें आयके करा (यह) अनादिकालसें, जो जो इंद्र होते आये है। उन सबका येही आचार है । कि प्रथम भगवान्के वयोचित सर्व काम करना ॥ ※॥

॥ ※ ॥ (इस अवसरमें) एक लडकी, एक लडका, बहिन और भाई, बालअवस्यामें, तालवृक्षके हेठे खेलते थे । उहा तालके फल गिरनेंसें लडका मरगया (तब) ल... नाभिकुलकरनें लायके सोंपी (तब) उसनें ऋषभदेवके विवाह ... के, यतनसें अपणेपास रक्खी। तिसका

नाम सुनंदा था (और) दूसरी ऋषभदेवकेसाथ जन्मी थी । उसका नाम सुमंगला था । इस दोनोंकेसाथ ऋषभदेव बाल्यावस्थामें खेलते हुए, यौवनवयमें प्राप्त हुए। (तब) इन्द्रनें विवाहका प्रारंभ करा । आगे युगलके समयमें विवाहविधि नही थी। (इसवास्ते) यह विवाहमें, पुरुषके कृत्य तो सर्व इन्द्रनें करे (और) स्त्रीयोंकी तरफसे सर्व कृत्य इन्द्रीणीनें करे (तबसें) विवाहविधि सर्व जगत्‌मे प्रचलित भई । तब ऋषभदेव दोनों भार्योंकेसाथ संसारिक विषयसुख भोगवता, ६लाख पूर्ववर्ष व्यतीतभए (तब) सुमंगला राणीके, भरत (और) ब्राह्मी, यह युगल जन्मा । (तथा) सुनंदाके बाहुबली (और) सुंदरी यह युगल जन्मा। पीछेसें सुनंदाके तो और कोइ पुत्रपुत्री नहि हुवे (परंतु) सुमंगला देवीके गुणपच्चास(४९) जोडे पुत्रोंहीके हुवे । यह सब मिलकर सो (१००) पुत्र (और) दो पुत्रियोंभई ॥ ※ ॥

॥※॥ अब सो पुत्रोंके नाम लिखते हैं ॥※॥

॥※॥ १ भरत । २ बाहुबली । ३ श्रीमस्तक । ४ श्री पुत्रागारक । ५ श्रीमल्लिदेव । ६ अगज्योति । ७ मलयदेव । ८ भार्गवतार्थ । ९ वगदेव । १० वसुदेव । ११ मगधनाथ । १२ मानवर्त्तिक । १३ मानयुक्ति । १४ वैदर्भदेव । १५ वनवासनाथ । १६ महीपक । १७ धर्मराष्ट्र । १८ मायकदेव । १९ आस्मक । २० दम्मक । २१ कलिंग । २२ ईपकदेव । २३ पुरुषदेव । २४ अकल । २५ भोगदेव । २६ वीयभोग । २७ गणनाथ । २८ तीर्णनाथ । २९ अबुदपति । ३० आयुर्वीर्य । ३१ नायक ३२ काक्षिक । ३३ आनर्तक ।३४ सारिक ।३५ ग्रहपति । ३६ करदेव। ३७ कच्छनाथ । ३८ सुराष्ट्र । ३९ नर्मद । ४० सारस्वत । ४१ तापसदेव। ४२ कुरु। ४३ जंगल । ४४ पंचाल । ४५ शूरसेन । ४६ पुटदेव । ४७ कालिंगदेव । ४८ काशीकुमार । ४९ कौशल्य । ५० भद्रकाश । ५१ विकाशक । ५२ त्रिगत्तक । ५३ आवर्ष । ५४ साल्व । ५५ मत्स्यदेव । ५६ कुलियक । ५७ मुषकदेव । ५८ बाल्हीक । ५९ कांबोज । ६० मधुनाथ । ६१ सांद्रक । ६२ आत्रेय । ६३ यवन । ६४ आभीर । ६५ वानदेव । ६६ वानस । ६७ कैकेय ६८। सिंधु । ६९ सोवीर । ७० ग

धार। ७१ काष्टदेव। ७२ तोषक। ७३ शौरक। ७४ भारद्वाज। ७५ शूरसेन। ७६ प्रस्थान। ७७ कर्णक। ७८ त्रिपुरनाथ। ७९ अवंतिनाथ। ८० चेदीपति। ८१ विष्कंभ। ८२ नैषध। ८३ दशार्णनाथ। ८४ कुसुमवर्ण। ८५ भूपालदेव। ८६ पालप्रभु। ८७ कुशल। ८८ पद्म। ८९ महापद्म ९० विनिद्र। ९१ विकेश। ९२ वैदेह। ९३ कच्छपति। ९४ भद्रदेव। ९५ वज्रदेव। ९६ सान्द्रभद्र। ९७ सेतज। ९८ वत्सनाथ। ९९ अंग देव। १०० नरोत्तम (यह) श्री ऋषभदेवजीके १०० पुत्रोंका नाम कहा॥

॥※॥ अथ राज्याभिषेक, विनीता नगरी अधिकारः ॥※॥

॥※॥ (इस अवसरमें) जीवोंके कषाय प्रबल होजानेसें। पूर्वोक्त हकारादि तीनो दंडका, लोक भय नहि करनें लगे (इस अवसरमें) लोकोंनें सर्वसे अधिक, ज्ञानादि गुणों करके संयुक्त, श्री ऋषभदेवकों जानके, युगललोक, श्री ऋषभदेवकों कहते हुए। (कि) अबके सर्व लोक दंडका भय नहि करते हे। (तब) मति १। श्रुति २। अरु। अवधि ३। यह तीन ज्ञानकरके युक्त (ऐसे) आदिकुमर युगलियोंकुं कहते हुए (कि) जो राजा होता है (सो) दंडकर्त्ता है। फेर उस की आज्ञा कोई उल्लंघन नहि कर सकता है। ऐसे वचन सुनकर, वे युगलिये बोले (कि) ऐसा राजा हमारेभी होना चाहिये। (तब) आदि कुमर बोले। जो तुमारी इच्छा ऐसी है (तो) नाभि कुलकरसें याचना करो। (तब) तिनोंने, नाभिकुल करसें वीनती करके (तथा) आज्ञा लेके, आदिकुमरकु राज्याभिषेक करणेके लिये, पद्मसरोवर, जल लेनेंकु गए (इस समें) सौधर्मइद्रका आशन कंपमान हुवा। तब अवधि ज्ञानसें, राज्याभिषेकका अवसर जानके, बहुतसे देवता देवीयोंके संग आके, श्रीआदिकुमरका राज्याभिषेक, सपूर्ण विधिसयुक्त, महोछवके साथ करा। (जिस वखत) छत्र, मुगट, कुंडलादिक, आभरण सहित, रत्नजडित सिंहासनपर बेठे हें। उससमय, वे युगल लोक, कमलके पत्तेमें जल लेके आये। (वहा) वस्त्राभरण सहित सिंहासनपर बेठे देखके, अगूठेपर जलाभिषेक किया (तब) इद्रनें विचारा (कि) यह युगल लोक बडे विनयवान है। ऐसा जानके वैश्रमण नामा देवकु आज्ञादीनी (कि) आदिराजाके (तथा)

इस विनीत पुरुषोंके, रहनेके योग्य, विनीता नामसें, १ नगरी स्थापित करो (तब) वैश्रमण देवनें, गढ, मढ, प्रोल, प्राकारादिक, संयुक्त, वर्ण योग्य, १२ योजन, ४८ कोसमें नगरी वसाई । जिसके मध्य भाग २१ भूमिकाके मकान, श्री आदि राजाके रहने योग्य बनाया (और सर्व भाई बेटाके योग्य, सात सात भूमिये मकान (और) दूसरोंके योग्य, तीन२ भूमिये मकान बनाये । इसका विस्तार सबध, सेत्रुज महात्म्यसे जाण लेना (अब) आदि राजा, चतुरंगिणी सेनाकेवास्ते, प्रथम बो तसे । हाथी, घोडे, गाय, भेंसे, प्रमुख, उपयोगी जानवरोंकु, वनसें मगायके सग्रह करे (और) च्यार वंशकी स्थापना करी । उग्र १ । भोग २ राजन्य ३ । क्षत्रिय ४ । जिसकु कोटवालकी पदवी दीवी (सो) उग्र द के करनेसें, उग्रवंशी कहलाये १ (तथा) जिसकु आदि राजाइ, गुरुतु वभे करके माने, तिससें वो भोगवंशी कहलाए २ (तथा) आदि राज के, स्वजन संबधि मित्रादिकके, राजन्य वंश कहलाए ३ (और प्रजागणके सर्व क्षत्री वंश कहलाए ४ (अब युगलियाके आहार विधि कहते हैं) हीन कालके प्रभावसें, कल्पवृक्ष फल देनेसें रह गए तब लोक, और वृक्षोंके, कंद मूल पत्र फल फूल खानें लगे । केईक ऽ का रस पीने लगे (तथा) सतरे जातिका कच्चा अन्न खानें लगे (परतु कितनेक दिनोंतक कच्चा अन्न उनकों जीर्ण न होनेसें, ऋषभदेवजीनें कों कहा (कि) तुम हाथोंसे मसलके, तूतमा दूर करके, खाउ (फेर कितनेक दिनो पीछें, वेसेभी पाचन न होने लगा । तब अनेक भातसें क अन्न खानेकी विधि बताई । तोभी काल दोषसें अन्न पाचन न होनें ल (इस अवसरमें)जगलोंमे वासादिक घसनेसें अग्नी उत्पन्न हुइ। पहली वि नेक कालतक अग्नि विच्छेद थी (क्यु कि) एकात स्निग्ध कालमें (औ एकात रुक्ष कालमें, अग्नी किसी वस्तुसें उत्पन्न नहि हो शक्ती है (कदाचि कोई देवता विदेह क्षेत्रसें अग्नीकों लेभी आते (तोभी) इहा तत्काल जाती थी (इसवास्ते) पहले अग्नीसें पकाके खानेका उपदेश नहि दीया (पीछे) तिस अग्नीकों तृणादि दाह कर्त्ता देखके, अपूर्व रत्न जानके पक भनें लगे । जब हाथ जले, तब भयसें आदि राजाकु आयके कहा (और)

अपणा हाथ जला ज्ञवा देखाया (तव) आदि राजानें अग्नी ले आनें की, और फल फूल पकायके खानेकी विधि वताई। फेर आप हाथीपर वेठे ज्ञवे वनमें आये। युगलियोंकेपास लीली मट्टी मगायके, हस्तीपर वेठे ज्ञवे सर्वके सामने एक हाम्री वनायके दीवी (और) कहा कि, इसकु अग्नीमें रखके पकावो। हाडी पकके तैयार ज्ञई (तव) उसमें धान्यका, जलका प्रमाण, राधनेकी सर्व विधि वताई। जिसके हाथसें मट्टी मगाई। और हाडी पकवाई (जिससें) कुम्नकार कर्म प्रगट ज्ञवा । इससेती कुम्नकारकु, प्रजा पति (तथा) पर्याप्ति कहने हैं (फेर) सनें सनें, सर्व आहार पकाके खानेकी विधि प्रगट हो गई (औरन्नी) सपूर्ण कर्म, कला मात्र, अपना पुत्रादिक प्रजा गणकुं वताई। आदि राजाके उपदेशसें, पाच मूल शिल्प (अर्थात्) कारीगर वने। कुम्नकार १। लोहकार २। चित्रकार ३। ततुकार वस्त्र वणनेंवाले ४। नापित ५। (इस) एकेक शिल्पका, अवातर २० वीस न्नेद रहे हैं। (इससें) सव मिलके१०० न्नेद शिल्पके प्रशिद्ध ज्ञवे (तथा) कर्षण कर्म, खेती आदिक करणा। (तथा) वाणिज्य कर्म, व्यापारादिक करनेंकी रीति, तिससें धन उपार्जन करणा। धनका ममत्व करना। धनकों शुन्न क्षेत्रादिकमें लगाना (इत्यादि) संपूर्ण जगत् प्रशिद्ध कर्म वताये। (प्रथम) मट्टीके सचयोंमें, अहरण हथोडी प्रमुख वनाये (पीछे) उससें उपयोगी काम लायक सर्व वस्तु वनाई गई॥ (और) न्नरतादि पर्या लोकोंको वहोत्तर कला सिखलाई (तथा) स्त्रियोंकों चोसठ कला सिखलाई (इन सर्व कलाके नाममात्र लिखते हैं) ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ पुरुषोंकी ७२ कलाका नाम ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ १ लिखनेंकी कला। २ पढनेंकी कला। ३ गणित कला। ४ गीत कला। ५ नृत्य कला। ६ ताल बजाना। ७ पटह वजाना। ८ मृदग वजाना। ९ वीणा वजाना। १० वंश परीक्षा। ११ न्नेरी परीक्षा। १२ गज शिक्षा। १३ तुरग शिक्षा। १४ धातुर्वाद। १५ दृष्टिवाद। १६ मन्नवाद। १७ वलि पलित विनाश। १८ रत्न परीक्षा। १९ [illegible] । २० नर परीक्षा। २१ छद वधन। २२ तर्कजल्पन। [illegible]चार। २४ तत्व विचार। २५ कविश

क्ति। २६ ज्योतिष शास्त्रका ज्ञान। २७ वैद्यक। २८ षट्भाषा। २९ योगाभ्यास। ३० रसायण विधि। ३१ अंजन विधि। ३२ अठारह प्रकार की लिपि। ३३ स्वप्न लक्षण। ३४ इंद्रजाल दर्शन। ३५ खेती करणी। ३६ वाणिज्य करणा। ३७ राजाकी सेवा। ३८ शकुन विचार। ३९ वायु स्थम्भन। ४० अग्नि स्थम्भन। ४१ मेघवृष्टि। ४२ विलेपन विधि। ४३ मर्दन विधि। ४४ ऊर्ध्वगमन। ४५ घटबंधन। ४६ घटभ्रमन। ४७ पत्र छेदन। ४८ मर्मभेदन। ४९ फलाकर्षण। ५० जलाकर्षण। ५१ लोकाचार। ५२ लोकरंजन। ५३ अफल वृक्षोंकों सफल करणा। ५४ खड्गबंधन। ५५ छुरीबंधन। ५६ मुद्रा विधि। ५७ लोहज्ञान। ५८ दांत समारण। ५९ काल लक्षण। ६० चित्रकरण। ६१ बाहुयुद्ध। ६२ मुष्टियुद्ध। ६३ दण्ड युद्ध। ६४ दृष्टि युद्ध। ६५ खड्गयुद्ध। ६६ वागयुद्ध। ६७ गारुडविद्या। ६८ सर्पमर्दन। ६९ भूतमर्दन। ७० योग, सो द्रव्यानुयोग अक्षरानु योग, व्याकर्ण, औषधानुयोग,। ७१ वर्षज्ञान। ७२ नाममाला

॥ ※ ॥ स्त्रीयोंकी ६४ कलाका नाम ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ १ नृत्यकला। २ औचित्यकला। ३ चित्रकला। ४ वादित्र ५ मंत्र। ६ तंत्र। ७ ज्ञान। ८ विज्ञान। ९ दम्भ। १० जलस्थम्भ। ११ गीतगान। १२ तालमान। १३ मेघवृद्धि। १४ फलवृद्धि। १५ आरामारोपण। १६ आकार गोपन। १७ धर्म विचार। १८ शकुन विचार। १९ क्रिया कल्पन। २० संस्कृत जल्पन। २१ प्रसाद नीति। २२ धर्म नीति। २३ वर्णिका वृद्धि। २४ स्वर्णसिद्धि। २५ तैलसुरभिकरण। २६ लीलासचरण। २७ गजतुरग परिक्षा। २८ स्त्री पुरुषके लक्षण। २९ कामक्रिया। ३० अष्टादश लिपि परिछेद। ३१ तत्काल बुद्धि। ३२ वस्तु बुद्धि। ३३ वैद्यक क्रिया। ३४ सुवर्णरत्न भेद। ३५ घटभ्रम। ३६। सार परिश्रम। ३७। अंजन योग। ३८ चूर्ण योग। ३९ हस्तलाघव। ४० वचन पाटव। ४१ भोज्य विधि। ४२ वाणिज्य विधि। ४३ काव्य शक्ति ४४ व्याकरण। ४५ शालिखण्डन। ४६ मुखमण्डन। ४७ कथा कथन। ४८ कुसुमगुंथन। ४९ वरवेष। ५०। सकल भाषा विशेष। ५१ अभिधान परिज्ञान। ५२ आभरण पहरण। ५३ भृत्योपचार। ५४ गृहाचार।

५५ शाठ्यकरण। ५६ । पर निराकरण। ५७ धान्यरंधन। ५८ केशबंधन। ५९ वीणादि नाद। ६० वितंडावाद। ६१ अंक विचार। ६२ लोकव्यवहार। ६३ अंत्याक्षरिका। ६४ प्रश्न प्रहेलिका ॥ यह स्त्रीकी ६४ कला कही॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ अबकी सर्व संसारीक कला पूर्वोक्त कलायोंका प्रकरभूत है (इसवास्ते) सर्व कला इनहीके अतर्भाव है (जैसें) प्रथम लिपि कलाके १८ भेद दक्षिण हाथसे ब्राह्मी पुत्रीको सिखाए। तिसके नाम कहते है॥ १ हंस लिपि। २ भूत लिपि। ३ यक्ष लिपि। ४ राक्षसी लिपि। ५ यावनी लिपि। ६ तुरकी लिपि। ७ किरी लिपि। ८ द्राविडी लिपि। ९ सैंधवी लिपि। १० मालवी लिपि। ११ नडी लिपि। १२ नागरी लिपि। १३ लाटी लिपि। १४ पारसी लिपि। १५ अनिमित्ती लिपि। १६ चाणक्की लिपि।१७ मूलदेवी लिपी।१८ उड्डी लिपि॥ (यह) अठारह प्रकारकि ब्राह्मी लिपि, देश विशेषके भेदसें, अनेक तरह्की हो गई। (जैसेंकी) १ लाटी। २ चौडी। ३ माह्ली। ४ कानडी। ५ गौर्जरी। ६ सोरठी। ७ मरहठी। ८ कौंकणी। ९ खुरासाणी। १० मागधी। ११ सिंहली। १२ हाडी। १३ कीरी। १४ हम्मीरी। १५ परतीरी। १६ मसी। १७ मालवी। १८ महायोधी। (इत्यादि) लिपी सिखाई (तथा) सुंदरी पुत्रीको वाम हाथसें अंक विद्या सिखाई। (और) जो जगत्में प्रचलित कला है। जिनोंसे कार्य सिद्ध होते है। (वे सर्व) श्री ऋषभ देवनें प्रवर्त्ताई है। तिसमें कितनीक कला, कई वार लुप्त हो जाती है। फिर समय पाकर प्रगटभी हो जाती है (परंतु) नवीन कला, वा विद्या, कोइभी उत्पन्न नहि होती है। जो कला व्यवहार, श्री ऋषभ देवजीनें चलाया है। उसका विस्तार, सर्व आवश्यक सूत्रसें देख लेना॥ ॥

॥ ॥ श्री आदिराजायें, भरतकेसाथ ब्राह्मी जन्मी थी। तिसका विवाह तो, बाहुबलीकेसाथ किया (और) बाहुबलीकेसाथ, जो सुंदरी जन्मी थी। उसका विवाह भरतके साथ कर दिया। तबसें माता पिताकी दीवी हुइ कन्याका विवाह प्रचलित हुवा। (इससें) पहले एक उदरके उत्पन्न हुवे, भाई बहिनके संबंध होता था (वो) दूर किया॥ (तब)

लोकभी इसीतरे विवाद करनें लगे (और) विवाहकी विधि, सर्व आदिश जाके विवाहसमें, इन्द्र, इन्द्राणियोनें करी थी। उसीमुजब करनें लगे ॥ श्री आदिराजा यें बहुत कालतक राज्य किया। सपूर्ण राज्यनीतीसें, प्रजा के अर्थ, सबतरेके सुख उत्पन्न किये। (इस हेतुसें) श्रीऋषभदेव स्वामीकों सर्व जगत्का कर्त्ता, जैनी लोक मानते है (दूसरे मतवाले) जो ईश्वरकी करी श्रष्टी मानतेहैं । (वेभी) ईश्वर, आदीश्वर, जगदीश्वर, योगीश्वर, जगत्का कर्त्ता, ब्रह्मा आदि, विष्णु आदि, योगी आदि, भगवान् आदि अर्हत आदि, तीर्थंकर, प्रथम बुद्ध, महादेव (इत्यादि) जो नाम और महिमा गाते हैं (वे सर्व) श्री ऋषभदेवजीकेही गुणानुवाद है (और) कोई श्रष्टीका कर्त्ता नही है ॥ सर्व जगत्का व्यवहार चलाकर शेषमें भरतपुत्रकु, विनीता नगरीका राज्य दीया ॥ बाहुबली पुत्रकु, तक्षशिला नगरीका राज्य दीया ॥ शेष ९८ पुत्राको उनोंके नामसें, जूदे २ देश वसायके राज्य दीये (जबसें) अग, वग, कलिगादि देशोंके नाम प्रशिद्ध हुवे । (और) सर्व गोत्रियोंकुभी, यथायोग्य आजीविकाके विभाग कर दिये (इससमें) नव लोकातिक देवतानें भगवानकु दिक्षाका अवसर जनाया । भगवान् आप अपणे ज्ञानसें दिक्षाका अवसर जानते हैं (तथापि) लोका तिक देवोंका यहहीज जीत व्यवहार हे (पीछे) सवत्सरी दान देकें, चैत्र वदि ८ के दिन, मच्छ, कच्छ, प्रमुख ४ हजार सामत पुरुषोंकेसाथ दिक्षा ग्रहण करी । दिक्षाका महोत्सव सर्व, ६४ इन्द्रोंनें मिलके करा (तब) भगवानकु चोथा मनपर्यव ज्ञान उत्पन्न भया। दिक्षा लिये वाद, १ वर्षतक शुद्ध आहार साधूके लेनें योग्य नहि मिला। जहा भगवान् जावै (वहा) हाथी, घोडे, आभूषण, कन्या, इत्यादिक बहुतसे भेट करे । (परतु) शुद्ध आहार देनेकी विधि कोइ नही जानें (क्यू कि) आगे कोइ भिक्षा चर देखा नही था ॥ और भगवान् उससमय त्यागी थे (इसवास्ते) आहार बिगर कोइभी पदार्थ ग्रहण करा नहि । (पीछे) १ वरषके वाद, वैशाख सुदि ३ कु, हथनापुर आये । (तहा) श्री ऋषभदेव स्वामीका पड पौत्र, श्रेयासकुमरनें जातिस्मरण ज्ञानके बलसें, भगवानकु इक्षुरसका पार णा कराया । उस वखतमें, ५ द्रव्य देवतानें प्रगट करे । साढा १२' क्रोड

सोनइयाकी वरषा करी। श्रेयासका जश तीन भवनमें फेला। तव लोकोंनें श्रायके पूछा (कि) तुमने ऋषभदेव स्वामीकु भिक्षार्थी केसेंजाने । तव श्रेयास कुमरनें आपणे (अरु) ऋषभदेव स्वामीकेसाथ, ८ भवोंका सवध कह्या (इससेती) भगवान्कु साधु मुद्रामें देखके, मेरेकु जातिस्मरण ज्ञान उत्पन्न भया। तिनसें ८ भवोंका सवध, तथा भिक्षार्थीपणा जाना॥ इसका विस्तार सर्व आवश्यक सूत्रसें जाण लेना॥ जव भगवानकु एक वर्षतक शुद्ध आहार न मिला (तव) मछ, कछ प्रमुख ४ हजार पुरुष, जो साथमें दीक्षा लीवी थी (सो) भूखसें पीडित ज्ञवे थके, वनमे गगाके दोनू किनारे, तापशपणा धारके, कद मूल फल फूल खाते ज्ञवे रहनें लगे (और) श्री ऋषभदेव स्वामीका ध्यान जप आदि, ब्रह्मादि शब्दोंसे करनें लगे (इहासे) ताप शाटिककी उत्पत्ति ज्ञई॥ (जव) श्रेयास कुमरनें आहार दिया। उस दिनसें सव लोक साधूकु शुद्ध आहार देनेकी विधि जाननें लगे ॥ ※॥

॥※॥ अब विद्याधरोंकी उत्पत्ति कहते हैं ॥※॥

॥※॥ श्री ऋषभदेवस्वामी दीक्षा लियाकेवाद, १ हजार वर्षतक, देशूंमे छद्मस्थपणें विचरते रहे। तिस अवस्थामें। कछ (और) महाकछके वेटे। नमि, और विनमीने, आकर, भगवान्की वज्जत सेवा भक्ति करी (तव) धरणेंद्र सतुष्टमान होके, ४८ हजार पठित सिद्धविद्या उनकु देकर, वेताढ्यगिरीकी, दक्षिण और उत्तर, यह दोनू श्रेणीका राज्य दीया। (तव) तिनके वशी सव विद्याधर कहलाए (इनही) विद्याधरोंके संतानमें। रावण, कुम्भकर्ण, वालि, सुग्रीव, हनूमानादि, सर्व विद्याधर भए हैं॥

॥※॥ (एकदा) छद्मस्थ अवस्थामें भगवान् विहारकर्ते, तक्षशिला नगरीमें गए। वहा वाहिर, वागमें काउसग्ग करके खडे रहे। यह खवर उहाके राजा, वाज्जवलजीकु ज्जई। (तव) वाज्जवलजीनें मनमें विचार करा। कि प्रभातसमें वडे आडवरके साथ, पिता श्री ऋषभदेवजीकु वादनेकुं जाउगा॥ जव प्रभातसमें, वडे आडवरसें वादनेकु गया (तो) वहां भगवानकु नदेखा। वनमालीसें सुना (कि) भगवान् तो, सूर्य उगतेही विहार कर गए (तव) वाज्जवलजी वज्जत उदासज्जके, जहां भगवान् काउसग्ग मुद्रामें खडे थे। ... कानूमे अगुली वालके (वावा

दम, बाबा आदम) ऐसे ऊचे स्वरसें पुकारके, उसी चरनूंके ठिकाने, रत्न मई थुंभ बनाके, धर्मचक्र तीर्थ स्थापितकरा। (यह) धर्मचक्र तीर्थ विक्रम राजाके राज्यतक तो रहा (पीछे) म्लेछादिकके बढ्नतसे प्रचारसें, धर्मचक्र तीर्थ, ऐसा नाम तो नष्ट भया (और) यवन लोकोंने उसका नाम, मक्का, ऐसा प्रशिद्ध करा (और) अवलसें तो यवनादिकभी, मद्यमांशादिक अभक्ष नहि खाते थे। यवनोंके मतमेंभी, नसादिक अभक्ष खाना नहि कहा है (तथापि) जो केइ खाते है । सो धर्मसें विरुद्ध है ॥ और श्रीऋषभ देव स्वामी। जिन १ देशोंमे विचरे । वहाका लोकतो प्रायें सरलस्वभावी दयावत ढुवे (और) भगवान् जिनदेशोंमे नगए (अरु) जिनूंनें भगवान के दर्शन नहिकरे (वो) सर्व म्लेछ, अनार्य, निर्दयी, हो गए। अनेक अपनी कल्पनाके मत माननें लगे। उनका व्यवहार औरतरहका हो गया ॥

॥ * ॥ (इस कारणसें) सर्व वरणोंका (तथा) सर्व मत मतांतरका (तथा) सर्व वैद्यक, ज्योतिष, मंत्र, तंत्रादिक, संपूर्ण कला कौशल्यका मूल उत्पत्तिकारण, श्री ऋषभदेवस्वामी भए॥ (जब) श्री ऋषभदेवस्वामीकु चारित्र लियेबाद, १ हजार वर्ष व्यतीतभए (तब) विहार करके विनीता नगरीके पुरिमताल नामा बागमें आये (जिसकु) इस्समय प्रयागजी कहते है (उहा) वड वृक्षके नीचे, तेलेकी तपस्यायुक्त, मिति फाल्गुन वदि ११ के दिन, प्रथम प्रहरमें, संपूर्ण लोकालोक प्रकाशक, केवल ग्यान, केवल दर्शन, उत्पन्न ढुवा (उसीवखत) ६४ इंद्र । भुवनपति, व्यंतर, ज्योतिषी, वैमानिकके देवगण, सर्व आयके समोसरनकी रचना करी॥ * ॥

॥ * ॥ अब समवशरनका किंचित स्वरूप लि० ॥ * ॥

॥ * ॥ प्रथम भुवनपति, वायुकुमारदेवता, १ योजन पृथ्वीका कचरादिक दूरकरके शुद्ध करे (तदनंतर) भुवनपति मेघ कुमार नामें देवता, १ योजन पृथ्वीपर सुगंधि जलकी वर्षा करे (तदनंतर) व्यंतर देवता उसी पृथ्वीपर गोंमे प्रमाण सुगंधि पुष्पोंकी वर्षा करे (पीछे) व्यंतरदेव पुष्पोंके ऊपर, वनस्पतिकु बाधा रहित, १ योजनमें, रत्नोंकी पीठका बनावे । इस पीठकाके ऊपर, भुवनपति देवता, रूपेमई गढ, सुवर्णमई कांगराकी रचना करे॥ तिसके च्यारुदिशे, ४दरवाजा । छत्र, चामर, तोरण,

८ मंगलीक, धूपघटी (प्रमुख) वर्णन सहित करे (तिसके अंदर) ज्योतिषी देवता) रत्नमई कांगरायुक्त, सुवर्णमई कोट, ४ दरवाजा सहित करे । तिसके अंदर) वैमानिक देवता, मणि रत्नमई कांगरासहित, रत्नमई कोट ४ दरवाजा सहित करे ॥ दरवाजाका वर्णन पूर्ववत् जाण लेना, (अब) इसकोटके मध्यमें, रत्नोंमई १ पीठका बनावें । तिसकेऊपर मध्यभागमें १ रत्नमई स्थटक, वृक्षका थाणा बनावै । तिसके ऊपर, छत्र चामरादि विभूति सहित अशोकवृक्षकी रचना करै। तिस अशोकवृक्षके नीचे, रत्नजडित सुवर्णमई ४ दिशे ४ सिंहाशन स्थापन करे । तिसऊपर, तीन छत्र (अरु) दोनुं तरफ चामर रहे । (और) इसीतरह वर्णनसहित भगवान्के बैठनेके लिये, स्वर्णरत्नमई मध्यकोटके बीचमें देवछंदेकी रचना करे। ऐसा वर्णन सहित समोसरणमें, भगवान् श्रीऋषभदेवस्वामी पूर्वके दरवजे प्रवेशकरके, चैत्यवृक्षके चौतरफ, प्रदक्षिणाभूत फिरते हुवे, नमस्तीर्थाय, ऐसा वचन बोलके पूर्वाभिमुख बैठे (शेष) तीन दिशाके सिंहासनपर, भगवान्के समान, प्रतिबिंब इंद्र, स्थापित करे (परंतु) भगवानके अतिशयसें (और) देवानुभावसें चारे दिशासें आनेवाले लोकोंकू, साक्षात् ऋषभदेव स्वामी सन्मुख बैठे, उपदेश देते मालुम हुवे (जब) चार मुखसें धर्मोपदेश देते देखके, लोकोंनें ऋषभदेव स्वामीकु, चतुर्मुख ब्रह्मा, ऐसे नामसे केने लगे (अमरकोशमेंभी, ऋषभदेव स्वामीका नाम ब्रह्मा लिखा है) जबीसें [illegible] नाम, ब्रह्मा प्रसिद्ध हुवा ॥ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] नयुक्त

॥ ※ ॥ (जब) श्री ऋषभदेव [illegible] ज्ञान उत्पन्न हुवा सुन (कि) (तब) भरत चक्रवर्त्ति राजाः परिवार [illegible] नमस्कार करनेकू, [illegible] उसका धर्मोपदेश सुणनेकू आते, रस्तेमें [illegible], मरुदेवी माता, [illegible] । तब मरी सरण, छत्र, चामरादि, अपनें पुत्रका [illegible] शुद्ध भावसें [illegible]ने योग्य है । ज्ञान पायके, मोक्षकु प्राप्ति भई [illegible], हर्ष शोच [illegible] नरेपासभी देशे वसरणमें आया । वहा भगवान्के [illegible] सुनके, भरत [illegible] हुआ (सरपाः ५०० पुत्र, और ७०० [illegible] (तथा) [illegible]तक, कपिलमुनीकि स्वामीकी पुत्री, ब्राह्मी प्रमुख, [illegible] ग्रहण करी [illegible]पास कोईभी उसके भरत राजाके, वडे पुत्रका [illegible]के था (वो) [illegible]ने, शिष्यके लोभसें, मेरे आचार मरीचिने बताया प्रथम गणधर [illegible]जय

गया (इससें) शत्रुंजय तीर्थका नाम पुंडरीक गिरि प्रशिद्ध भया (इसी मुजब) शत्रुंजय तीर्थके अनेक नाम हुये (वोहोतसे) स्त्री, पुरुषोंने, देशविरति श्रावक धर्म अंगीकार करा (इस तरह) साधु, साधवी, श्रावक, श्राविकारूप चतुर्विध संघ स्थापित करा । आगे कितनेकवरसोंसें विच्छेद हुवा थका, इहांसें फिर, साधु श्रावक धर्म प्रवर्त्तन हुवा (इस समयमें) परिव्राजक सांख्य मतवालूकी उत्पत्ति भई ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अब शांख्यमतका स्वरूप लिखते हे ॥ ※ ॥

॥ भरतजीके ५०० पुत्रोंने दीक्षा लीथी (उसमे) एकको नाम मरीची था (सो) साधुपना पालना महाकठिन देखकै, नवीन मन कल्पित वेष धारन करा (क्यु कि) पीछा गृहवास करनेमें तो, अपनी हीनता जानके, आजीविका चलानेके लिये मत स्थापित कीया ॥ इस रीतिसें अपना व्यवहार वनाया (कि) साधु तो, मनदंड वचनदंड कायदंड, इन तीनों दंडोंसे रहित है (और) में तो इन तीनों दंडा करके संयुक्त हु । इसवास्ते, मुजकों त्रिदंड रखना चाहिये (दूसरा) साधू तो द्रव्य अरु भाव करके मुंडित है। सो लोच कर्त्ते है (अरु) में तो द्रव्य मुंडित हु (इसवास्ते) मुझे उस्तरे पाछनेसें मस्तक मुंडवाना चाहिये । शिखाभी रखनी चाहियै (तीसरा) साधु तो पंचमहाव्रत पालते हे (अरु) मेरे तो सदा स्थूल जीवकी हिंसाका त्याग रहो ॥ (चौथा) साधु तो निःकंचन है (अर्थात्) परिग्रह रहित हे । अरु मुझकों एक पवित्रिकादि रखनी चाहिये । (पांचमा) साधु तो शीलसें सुगंधित हैं । अरुमें ऐसा नही हुं (इसवास्ते मुझे चंदनादि सुगंधि लेनी ठीक है (छठा) साधु तो मोह रहित हे (अरु) में मोह संयुक्त हु । इसवास्ते मुझे मोहाछादितकों छत्री रखनी चाहियै (सातमा) साधू जूते रहित है । मुजकों पगोंमे कुछ जूती प्रमुख चाहियै (आठमा) साधू तो निर्मल है । इसवास्ते उनके शुक्लांवर वस्त्र है (अरु) में तो क्रोध मान माया अरु लोभ, इन च्यारों कषायों करकें मेला हुं (इसवास्ते) मुजे कषायला वस्त्र, (अर्थात्) गेरुसें रंगे हुवे भगमे वस्त्र रखने चाहिये (नवमा) साधु तो सचित्त जलके त्यागी है । (इसवास्ते) में छाणके सचित्त जल पीउंगा । स्नानभी करुगा । (इस तरे) स्थूल मृषावादादिकसें नि

वृत्त ज्ञवा । इस प्रकारसें मरीचिने स्वमतसें अपणी आजीविकाकेवास्ते लिंग बनाया । यही लिंग परिव्राजकोंका उत्पन्न नया । यह मरीचि इस नेपसें नग वान्केसाथ विचरता रहा (तव) लोक इसका साधुवोंसे विसदृश लिंग देखके पूछा (तव) मरीचि, साधुका धर्म यथार्थ बतायके कहा (कि) ऐसा कठिन धर्म, हमारेसें पला नही (तव) मैंनें यह लिग धारण किया है । यह मरीचि समोसरणके वाहिर प्रदेशमें बैठा रहता (उहा) जो कोई इसकेपास उपदेश सुनता,उसकू यथार्थ धर्मसें प्रतिबोध देके, नीतर नगवान्केपास नेज देता था (पीछे) एकदासमें मरीचि रोगाग्रस्त ज्ञवा । तव विचार कीया (कि) म्हें कुलिंगी ज्ञ । इसवास्ते साधू लोक तो मेरी वेयावच नहि करते हे (और) मुझे कराणीनी युक्त नही हें । इससें अवके शरीर अछा होने से, मेरे लायक कोई शिष्य करुगा (जव)मरीचि अछा ज्ञवा । पीछे थोमा दिनके वाद, एक कपिल नामे राजपुत्र, मरीचकेपास धर्म सुणनेकू आया (तव) मरीचनें यथार्थ साधु धर्मका स्वरूप वर्णन कीया । तव कपिल बोला (कि) साधू धर्म उत्तम है (तो) तुमने ऐसे नेष काहेकूं धारण करा । तव मरीचि बोला (कि) साधु धर्म हमारेसें पल नही सका । इससें म्हेनें यह लिग स्वमति कल्पित धारण कीया है । (इस सेती) तुम नग वान्केपास जायके दीक्षा ग्रहण करो । तव कपिल राजपुत्र समवसरणके नीतर गए (वहा) श्री ऋषभ देव स्वामीकों, छत्र चामरादि सिंहासनयुक्त राज्यलीला नोगवता देखके, पीछा मरीचिकेपास आयके केनें लगा (कि) श्री ऋषभदेव स्वामी तो राज्यलीला सुख नोगवते हें । इसवास्ते उसका धर्म तो मुजकू रुचे नही । अव तेरेपास कुछ धर्म है, या नही है । तव मरीचिने जाना (कि) यह नारी कर्मा जीवहै । मेराही शिष्य होने योग्य है । इस लोनसें मरीचिने कहा (कि) यहांनी धर्म है । और मैंपनी देशे धर्म है । (तव) कपिल मरीचकेपास दीक्षा लेके शिष्य ज्ञवा (सरपाः सरपेन रज्यते इति वचनात्) ॥ यह साख्य मतके प्रवर्त्तक, [illegible]मुनीकि । उत्पत्ति कही ॥ (उस्समय) मरीचिके तथा कपिलकेपास [illegible] उनके हन धर्मसवधी पुस्तक नही था ॥ नि केवल जो कुछ आचार [illegible] बताए [illegible] उस प्रकारे कपिल कर्त्ता रहा ॥ (और) मरीचिने, [illegible] लोनसें, [illegible]ति

थासभी किंचित् धर्म है (ऐसे) उत्सूत्र भाषणेसें एक कोटाकोटि सागरोपम लग जन्म मरण करके, अतमे २४ मा तीर्थंकर श्री महावीर स्वामी हुआ उस मरीचिके काल करे पीछे, कपिल मरीचिके वताया यथार्थ ज्ञानशून्य आचारमें चलता रहा। उस कपिलमुनीके, आसुरी नामे शिष्य हुवा । औ रभी वहोतसे शिष्य हुए (जिनकु) पुस्तकशून्य, आचार मात्र, ज्ञान वत लाया। शिष्यूके ऊपर, वहुतसा प्रेम रखता थका, कपिल मुनि, शेषमें का ल करके, ५ मा ब्रह्म देवलोकमें देवता हुवा। उत्पत्तिके अनतर, तत्काल अवधि ज्ञानसें देखा । कि मेनें परभवमें क्या दान पुन्य करा है । तव पूर्व भव देखनेसें, अपणा आसुरी प्रमुख शिष्याकूं यथ ज्ञान शून्य देखा । तव विचार कीया। कि मेरे शिष्य कुछ जानते नही है (इसवास्ते) म्हें इस कु कुछ तत्वोपदेश करु। ऐसा विचार करके, कपिल देव आकाशमें, पच वर्ण मडपमें रहकर, तत्वज्ञानका उपदेश कर्त्ता भया। अव्यक्तसें व्यक्त प्रग ट होता है (इत्यादि) धर्मका स्वरूप आकासवानीसें सुनके, आसुरीनें तिस अवसरमें, षष्टि तत्र, प्रमुख अनेक ग्रथ वनाये (फेर) इसकी सप्रदायमें एक संख नामा आचार्य हुवा । (तवसें) इस मतका साख्य मत नाम प्रशि द्ध हुवा (वास्तवमें) साख्य परिव्राजक सन्यासियोंके लिगका, आचारादि कका मूल, यह मरीचि हुवा। एक जैन मतके विगर, सव मतोंकी जड, इसकू समझना चाहिये ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥※॥ अव जैन पंडित ब्राह्मणोंकी उत्पत्ति लि० ॥※॥

॥ ※ ॥ (जिस दिन) श्री ऋषभदेव स्वामीकू केवल ज्ञान उत्पन्न हुवा। उसी वखत भरत राजाके, आयुध शालामें हजार देवाधिष्ठित चक्ररत्न उत्पन्न हुवा। दोनू तरफका वधाईदार साथमे आया। उन दोनुकू वधाई देके धर्मकू मोटा जानके, प्रथम केवल ज्ञानका उछव करके, पीछे चक्ररत्नका उछ व करा (औरभी) हजार हजार देवाधिष्ठित १३ रत्न उत्पन्न भए। इस १४ रत्नोंके संयोगसें, भरत क्षेत्रके, छ खडमें, अपनी आज्ञा मनाई (इस वास्ते) इसका नाम, भरतखंड, ऐसा प्रशिद्ध हुवा ॥ (जव) छ खड सा धके, भरत पीछा विनीता नगरीमें आया। (तथ पि) चक्ररत्न आयुध शा लामें प्रवेश करे नहि (जव) अपणेएए भाइयांकू अपणी आज्ञा मनायेके

लिये दूत भेजा। (तब) बाहुबलजी विगर ए८ भाइयाने विचार किया (कि) राज्य तो हमकूं, पिता ऋषभदेव स्वामी देगए है (तो) इस भरत की आज्ञा कैसें माने। चलो, अब पिताकूं पुछै। जो पिता आज्ञा देवेगा सो करेगें। ऐसा विचारके भगवान्केपास गए (तब) ऋषभदेव स्वामीनें मनका अभिप्राय जानके, ऐसा उपदेश करा। जिनसें ए८ भाइयोंनें दीक्षा ग्रहण करी। सब झगमे छोम दीये (और) बाहुबलजी दूतके मुखसें सुनके, बहुतसे क्रोधमें आयके युद्धकी त्यारी करी (तब) भरतजीभी चढके आये। दोनूके आपसमें वडा युद्ध हुवा॥ भरत तो चक्रवर्त्ती था (और) बाहुबलजी बहोत बल पराक्रमका धरनेवाला था (इसवास्ते) कोइभी युद्धमें हारा नहि। चक्ररत्न, गोत्रपर चले नहि। इसवास्ते भरतजी जीत सके नही (शेषमें) बाहुबलजी आपसें समझके दीक्षा ग्रहण करी। तब लोकोंमे भरतजीकी अपकीर्त्ति भई (पीछे) भरतजीभी अपणा सब भाईयोंकू दीक्षालीवी सुनके, चित्तमें उदास होके, उनोंकु राजी करणेकेलिये, भोजन करानेकों। पकवानोंके गाम्मे भरायके, भगवान्के, समोसरणमें आया (और) केनें लगा, कि अपना भाइयोंकू भोजनकरायके, मेरा अपराधकु माफ कराउंगा (तब) भगवान् श्री ऋषभदेवस्वामी कहनें लगे (कि यह) आहार, साधुवोंके लेनें योग्य नहि (तब) भरतजी मनमे उदास होके केनें लगे (कि) यह आहार किसकू देउ (तब) भगवाननें कहा, जो तेरेसें गुणोंमें अधिक होय, ऐसे वृद्धश्रावक साधर्मीयांकू भोजन कराव। तब भरतजीनें बहुत गुणवान् श्रावकोंकु वो भोजनजिमाया (और) उन श्रावकोंकू ऐसा कह दीया (कि) तुह्म सब जने मिलकर सदेव मेरे इहा भोजन कर लिया करो। (औरभी) जो खरच तुमारे चहीये (सो) मेरे भंडारसें लेलीया करो॥ (और) वाणिज्यादिक सर्व काम छोडके, स्वाध्याय करनेमें, पढने पढानेमें, भगवान्को धरम प्रवर्त्तन करनेमें, सदाकाल सावधान रहो (और) मेरे महिलूंकेपास रहते हुवे मेरेकूभी ऐसे वचन सुनाते रहो। (जितो भवान् वर्द्धते भय। तस्मात् माहन माहन) तब जो वृद्धश्रावक भरतजीके कहनेसें सब काम छोडके निःकेवल धरमकार्य करणेमें उद्यमवंतभए (तबसें) जैनी पमित, वृद्धश्रावकोंकी उत्पत्ति

भई। श्री अनुयोगद्वारजी सूत्रमेंभी, जैनी पंडित श्रावकोंका नाम, वृद्धसाव या ऐसा लिखाहै, यह वृद्धश्रावक भरतजीके महिलोंकेपास वैठे ऊवे (जितोभवान्) इस पूर्वोक्त वचनकूं सदाकाल उच्चारन कर्त्तेरहे। (और) भरतजी तो सदा काल भोगविलासमें मग्न रहते थे (तथापि) वृद्धश्रावकोंका वचन सुनके, मनमें चिंतवन करने लगे। कि मुझकुं किसने जीताहै। तब स्मरन ऊवा। कि मेरेकुं। क्रोध, मान, माया, लोभ, कषायादि कसें, मोहराजा जीत रखाहै (इससेंही) हूं संसारमें मग्न हो रयो हूं। मेरे भाइयादिक सर्व धन्य है। जिनोंने राज्य छोडके चारित्र ग्रहणकीया है। इत्यादिक धर्मकी वार्त्ता स्मरण करनेसें, दिलमें वैराग्य उत्पन्न होता था (और) वृद्ध श्रावक, वेरवेर, माहन माहन, पूर्वोक्त वचन कहनेसे, लोक सब, उन वृद्धश्रावकोंकूं, माहन ऐसे नामसें कहने लगे (तबसे) यह जैनी ब्राह्मण उत्पन्न भए। प्राकृत भाषामें ब्राह्मणकूं माहन नामसे लिखा है। प्राकृत व्याकरणसें, ब्राह्मण शब्द, बंभण (अरु) माहन, इस दोय नामसें सिद्ध होता है। ऐसे श्रावक माहन भोजन करनेवाले, दिन २ वढ़ा तबधे। तब रसोईदार भरतजीकु कहा। कि इनोंमें श्रावककी, वा अन्य पुरुषकी, क्या मालम पडे। तब जितने श्रावक थे। उनकु बुलायके सर्वकी परीक्षा करी। श्रावक जानके भरतजीनें उनोंके शरीरमें, काकणी रत्नसें तीन२ रेखाका चिन्ह कीया (इससें) जिनोपवीत धारनकी रीति प्रशिद्ध भई ॥ (पीछे) भरतजीका वेटा सूर्यवंश ऊवा। जिसके संतानवाले, भरतक्षेत्रमें, सूर्यवंशी कहे जाते हैं (अरु) बाहुबलीका बडा पुत्र, चंद्रयश था (तिसके) संतानवाले, चंद्रवंशी कहे जाते हे। श्री ऋषभदेवजीके कुरुनामे पुत्रके संतानवाले सर्व कुरुवंशी कहे जाते हे। (जिनमें) कौरव, पांडव ऊये हैं (जब) भरतका वेटा सूर्ययश सिंहासनपर वेठा था। तब तिसकेपास काकणी रत्न नहि था (क्यों कि) काकणीरत्न चक्रवर्त्ति शिवाय और किसीकेपास नहि होता है। (इसवास्ते) सूर्ययश राजानें, ब्राह्मण श्रावकाके गलेमें, सुवर्णमय जिनोपवीत करवा दीये। तथा भोजन प्रमुख सर्व भरतमहाराजकीतरे देते रहे (जब) सूर्यजशाका वेटा, महायश, गद्दीपर वेठा (तब) तिसने रूपेके जिनोपवीत बनवा दीये। आगे

तिनके संतानोंने पचरंगे रेशमी पट्टसूत्रमय जिनोपवीत बनाते रहे । इस पीछे सादेसूतके बनाये गये । यह जिनोपवीतकी उत्पत्ति कही ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अब चार वेदोंकी उत्पत्ति लिखते है ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ जब भरतजीनें, ब्राह्मणाकू बहुतसा मान्या पूज्या (तब) दूसरे भी लोक ब्राह्मणाकू दानादिक देनें लगे (और) धर्मरूप सर्व उनूकेपास सीखनें लगे । तथा करानें लगे (तब) भरत चक्रवर्त्तिनें, ऋषभदेवस्वामी के वचनानुसारे, तिन ब्राह्मणूंके, स्वाध्याय करनेंकेवास्ते, श्री भगवान् ऋषभ देवस्वामीकी स्तवनागर्भित, (और) पूजा, प्रतिष्ठादि, श्रावक धर्मका, सपूर्ण स्व रूप गर्भित, ८ कर्म, ७ नय, ४ निक्षेपा, ए तत्व, । क्षेत्र प्रमाणादिक गर्भि त, बहुत मत्रयुक्त ४ वेद रचे (तिनके यह नाम) १ ससार दर्शन वेद । २ सस्थापना परामर्शन वेद । ३ तत्वावबोधन वेद । ४ विद्या प्रबोध वेद । इन च्यारोंमें, सर्व नय वस्तूके कथन सयुक्त तिन ब्राह्मणाकों पढाये । भरत के ८ पाटतक तो, ब्राह्मणाकी भक्ति भरतजीकी तरे करते रहे ।(पीछे) प्रजा भी ब्राह्मणाकों भोजन करानें लगी(तबसें) सर्व जगे ब्राह्मण पूजनीक सम जे गये । इस पीछे (आठमा) तीर्थंकर, श्री चंद्रप्रभ स्वामीके वख्ततक, सर्व ब्राह्मण जैन धर्मी श्रावक रहे (अरु) चद्रप्रभु भगवानके पीछे, कितना क काल व्यतीतभये, इस भरतखंडमें, जैन मत (अर्थात्)चतुर्विधसंघ, और सर्वशास्त्र विछेद हो गये । (तब) तिन ब्राह्मणा भासोंकों लोक पूछनें लगे । (कि) धर्मका स्वरूप हमकों बतलावो । तब तिनोंनें जो मनमें माना । (और) अपणा जिसमें लाभ देखा सो धर्म बतलाया । अनेक तरहके ग्रथ बनाते रहे (जब नवमा) श्री सुविधिनाथ पुष्पदत अरिहत हुए । तिनोंने जब फेर जैन धर्म प्रगट करा (तथापि) कितनेक ब्राह्मणा भासोंने न माना स्वकपोल कल्पित मतहीका कदाग्रहरखा (जबसें) अन्य मति ब्राह्मण भए (और) उलटे जिन धर्मके साधुवाके द्वेषी बन गए (इसी तरे) ७ भगवानके अतर कालमें जिनधर्म विछेद होता रहा (इससें) बहुत मिथ्या धर्म बढता गया ॥ (यदुक्त आगमे) सिरिभरहचक्कवट्टी । आय रियवेयाण विस्सु उप्पत्ती । माहण पढणत्थमिण । कहिय सुहझाण विवहारं ॥ १ ॥ जिण तित्थे बुछिन्ने । मिछत्ते माहणेहि तेठविया । असंजयाण

पूआ । अप्पाणकाहियातेहि ॥ २ ॥ (इत्यादि) ॥ (फेर) कितनेक काल पीछे, याज्ञवल्क्य, सुलसा, पिप्पलाद, अरु पर्वत, प्रमुख ब्राह्मणाभासोंनें, धनके लोभसें, तिन वेदामें जीव हिंसा प्रमुख प्ररूपणा करके उलट पुलट कर मारे। जेन धर्मका नामभी वेदामेंसे निकाल दीया। वलकी अन्योक्ति करके (दैत्यदस्युवेदबाह्य) इत्यादिनामोंसे, साधुआंकी निंदा गर्भित, १ ऋग्। २ यजु । ३ साम । ४ अथर्वण, ये ४ नाम कल्पन कर दीये । (यही वात) बृहदारण्य उपनिषदके भाष्यमें लिखा है (कि) यज्ञोंका कहनेवाला सो यज्ञवल्क्य । तिसका पुत्र याज्ञवल्क्य । इस कहनेसेंभी यही प्रतीत होता है । जो यज्ञाकी रीति, प्राय याज्ञवल्क्यसेंही चली है (तथा) ब्राह्मण लोकाके शास्त्रमेंभी लिखा है(कि)याज्ञवल्क्यनें पूर्वली ब्रह्मविद्या वमके, सूर्यपासे, नवीन ब्रह्मविद्या सीखके प्रचलित करी (इससे) यही अनुमान निकलता है (जो) याज्ञवल्क्यनें, प्राचीन वेद छोडके नवीन वेद वनाये । (इससें) वर्त्तमान ४ वेद (और) जीव हिंसायुक्त यज्ञकी उत्पत्ति, प्राय याज्ञवल्क्यादिकोंसें हुई संभव है ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (तथा) श्री तेसठ सलाका पुरुष चरित्र प्रथमें, आठमें पर्वके दूसरे सर्गमें, ऐसा लिखा है (कि) काशपुरीमें, दो सन्यासणिया रहती थी, तिसमें एकका नाम सुलसा था (अरु) दूसरीका नाम सुभद्रा था, (यह) दोनूही वेद अरु वेदागोकी जानकार थी। (तिस) दोनु वहिनोंनें बहुतसे वादियोंको वादमें जीते । (इस अवसरमें) याज्ञवल्क्य परिव्राजक, तिनके साथ वाद करनेंको आया, आपसमें ऐसी प्रतिज्ञा करी (कि) जो हार जावै । वो जीतनेंवालेकी सेवा करै । (तव) याज्ञवल्क्यनें, सुलसाकों वादमें जीतके, अपनी सेवा करनेंवाली वनाई ॥ सुलसाभी रात दिन याज्ञवल्क्यकी सेवा करने लगी । (अरु) दोनु युवान थे, इससें कामातुर होके, आपसमें भोगविलास करनें लग गए । (सच है) कि अग्निकेपास, घी रहनेंसें पिघलेंगा (तथा) घी, घास, फूस, मिलनेंसें, अग्नि वधेंगा (निदान) दोनु काम क्रीडामें मग्न होकर, काशपुरीके निकट, कुटीमें वास करते थे (तव) याज्ञवल्क्य, सुलसाके पुत्र उत्पन्न भया (तव) लोकोंके उपहासके भयसें, उस लडकेकों, पीपलके वृक्ष नीचे छोडकर, दोनुं भागके

कहाइ चले गए ॥ (यह वृत्तांत) सुलसाकी वहन, सुन्नद्रानें सुना ।(तव) तिस वालककेपास आई (जव) वालककों देखा (तो) पीपलका फल स्वयमेव मुखमें पमा ड़वा चवोल रहा है (तव) तिसका नामन्नी पिप्पलाद रक्खा । (और (तिसकों अपनें स्थानमें ले जाके यत्नसें पाला (अरु) वेदादि शास्त्र पढाए (तव) पिप्पलाद वमा वुद्धीमान् ड़वा । वड़त वादियोंका अन्निमान दूर किया (पीछे) तिस पिप्पलादकेसाथ सुलसा (और) याग्यवल्क्य, यह दोनु वाद करनेंकों आए (तव) तिस पिप्पलादनें दोनुंकों वादमें जीत लिया (और) सुन्नद्रा मासीके कहनेंसें जान गया (कि) यह दोनु मेरा माता, पिता है ॥ और मुझे जन्मतेकों निर्दयो होकर छोम गये थे (इससें) वड़त क्रोधमें आया (तव) याज्ञवल्क्य (अरु) सुलशाके आगे । मातृमेध, पितृमेध, यज्ञोंकों युक्तियोंसें स्थापन करके, पितृमेधमें याग्यवल्क्यकों, (और) मातृमेधमें, सुलसाकों मारके होम करा (यह) पिप्पलाद, मीमांशक मतका मुख्य आचार्य ड़आ ॥ इसका वातली नामें शिष्य ड़वा (तवसें) जीव हिंसा संयुक्त यज्ञ प्रचलित ड़ए (इससें) याग्यवल्क्यके वेद वनानेंमें कुछन्नी सका नही (क्यों कि) वेदमें लिखा है (याज्ञवल्केति होवाच) अर्थात् याग्यवल्क्य ऐसें कहता ड़वा (तथा) वेदमें जो साखा है, वे वेदकर्त्ता मुनियोंकेही सव वंसे हैं (इसी तरे) श्री आवश्यकजी मूल सुत्रमें लिखा है (कि) जीव हिंसा संयुक्त, जो वेद है (सो) सुलसा (अरु) याग्यवल्कादिकोंनें वनाये हें (और) कितनीक उपनिषदोंमें पिप्पलादकान्नी नाम है (तथा) और मुनियोंकान्नी कितनेक जगेमें नाम है । जमदग्नि, काश्यपतो वेदोंमें खुद नामसें लिखे हैं । फेर वेदोंके नवीन होनेंमें कुछ सका नही॥(इस पीछे)महाकाल असुरके सहायसें, पर्वतनें, वड़त जीव हिंसा संयुक्त वेद प्रचलित किये है । उसका विशेषअधिकार आवश्यक सुत्र, तेसठ शलाका चरित्रादिकमें लिखा है । न्हासें देख लेना(यह) जैन ब्राह्मण, जैन वेद, (तथा) प्रसंगसें, अन्यमत वेदोत्पत्ति कही ॥ (अव) श्री ऋषन्नदेवस्वामीके परिवारकी संख्या कहते हैं ॥ न्नगवान् श्री ऋषन्नदेव स्वामीके सर्व ८' ० साधु ड़ए (जिसमें) पुंमरीकजी प्रमुख ८४ गणधर ड़ए ॥ मुख (३०००००) साध्वी ड़ई ॥

(२०६००) वेक्रिय लब्धिधारक हुए ॥ १२६५० वादी विरुद धारक हुए ॥ (९०००) अवधिग्यानी हुए ॥ (२००००) केवल ग्यानी हुए (१२७५०) मनपर्यव ग्यानी हुए ॥ (४७५०) चौदे पूर्वधारी हुए ॥ (३५००००) श्रावक हुए ॥ (५५४०००) श्राविकएयां हुई (इत्यादि) बहुतसे जीवोंका उद्धार करके, अंतसमें कैलाश पर्वतके ऊपर अन्तम तप करके सयुक्त, अनशन किया। पद्मासन मुद्रायें, आत्मगुणके ध्यानसे, सर्व कर्मोंको खपायके, मिति माघ वदि१३ के दिन, (१००००) पुरषाकेसाथ, ८४ पूर्व लाख वरषको आऊपोपूरण करके, सिद्धिस्थानको प्राप्त भए ॥ (जब) श्री ऋषभदेव स्वामीका कैलाश (तथा) दूसरा नाम अष्टापद पर्वत ऊपर, निर्वाण हुवा (तब) ६४ इंद्रादि सर्व देवता निर्वाण उत्सव करनेंकों आए, तिन सर्व देवताओंमेंसु, अग्निकुमार देवतानें श्री ऋषभदेवकी चितामें अग्नि लगाई (तबसेंही) यह श्रुति लोकमें प्रसिद्ध हुई है (अग्नि मुखावै देवा) अर्थात्, अग्नि कुमार देवता, सर्व देवताओंमें मुख्य है (और) अल्प बुद्धियोंनें तो इस श्रुतिका ऐसा अर्थ बना लिये हैं (कि) अग्नि जो है, सो तेतीस कोड देवताओंका मुख है ॥ भगवानके निर्वाणका स्वरूप, सर्व आवश्यक सुत्र, (तथा) जंबुद्वीपपन्नत्तीसें जान लेना (जब) भगवानकी चितामेंसें, दाढा दात वगैरे सर्व इंद्र, देवतादिक, अपनें २ देवलोकमें, पूजाके निमत्त लेजानें लगे (तब) वृद्ध श्रावक ब्राह्मण लोक मिलकर, बहुत विनय सयुक्त, देवताओंसें याचना करनें लगे (तब) देवता लोक, अहो याचका २, ऐसा बोलके देनें लगे (तबसें) ब्राह्मणाकों याचक कहनें लगे (और) ब्राह्मणोंनें, श्री ऋषभदेवकी चितामेंसें अग्नि लेकर, अपने २ घरोंमें स्थापन करते हुए (इससें) ब्राह्मणाकों आहिताग्नय कहनें लगे ॥ श्रीऋषभदेवकी चिता जले पीछे, दाढादिक तो सब इंद्रादिक ले गए (बाकी) भस्मी अर्थात् राख रह गई, सो ब्राह्मणोंनें थोडी थोडी सर्व लोकोंकों दीनी (तब) उस राखकों लेके सर्वनें अपनें मस्तकपर त्रिपुडाकारसें लगायी (तबसें) त्रिपुड लगाना सरू हुवा। (और जब) भरतजीनें कैलास पर्वतके ऊपर, सिंहनिषद्या नामें मंदर बनाया (उसमें) श्री ऋषभदेवस्वामीकी (और) आगे होनेंवाले

२३ तीर्थ करोंकी, सर्व चौवीश प्रतिमा, अपना २ वर्ण प्रमाणमुजव, चारेई दिशामें सस्थापन करी (और) दंम रत्नसें पर्वतकों ऐसें गीला (कि) जिस ऊपर कोई पुरष पावासें न चढ सके । (उसमें) एकेक जोजन ऊचा ८ पगथिया रखा (इससें) कैलाश पर्वतका, दूसरा नाम अष्टापद हुवा ॥ और तवसेंही कैलाश, महादेवका पर्वत कहलाया ॥ मोटा जो देव सो महादेव, श्री ऋषन्नदेवस्वामी, जिसका निर्वाण स्थान कैलाश हुवा ॥ (पीछे) श्री न्नरत चक्रवर्त्ति (और) वाहुवलजी केवलज्ञान पायके मोक्ष गए (तव) श्री न्नरतजीके पाटे, सूर्ययश राजा न्नया । तिसकी औलाद सूर्यवंशी कहलाए । सूर्ययशके पाटे महायश राजा गद्दीपर वेठा (ऐसें) अतिवल, महावल, तेजवीर्य, कीर्त्तिवीर्य, दम्रवीर्य (इत्यादि) अनुक्रमसें अपनें २ पिताकी गद्दीपर, वैठे (परतु) न्नरतजीसें आधा राज्य (अर्थात्) न्नरत क्षेत्रका तीन खंमके न्नीतर २ राज्य रहा (अंतमें (न्नरतजीकी तरें) आठ पाटतक तो, आरीसा महलमें, केवलग्यान पाय, दिक्षा लेके मोक्ष गए (इस पीछे) दूसरा तीर्थंकर, श्री अजितनाथ स्वामीका पिता, जितशत्रु राजातक असंख्य पाट हुए । जिन सवका अधिकार चितातर गन्मिकासें जाण लेना ॥ इति ५५ वोल गर्न्नित श्री ऋषन्न देवस्वामी (तथा) पहला चक्रवर्त्ति न्नरतजीका अधिकार कहा ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अब दूसरा श्री अजितनाथस्वामी अधिकारः ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अजोध्यानगरीमें, न्नरतजीकेपीछे, असंख्य राजा हो चके(तव) इक्ष्वागवंशी जितशत्रु राजा न्नया । तिसके विजयानामे राणी । तिसकी कूखमे, विजय अनुत्तर विमानसें, वैशाखसुद १३ के दिन, न्नगवान अवतार लिया ॥ मातायें गजादि अग्निशिखापर्यंत, १४ स्वप्न प्रगटपणें मुखमें प्रवेश करता देखा । गर्न्नमें८ मास२५ दिन रहके । मिति माघ शुक्ल ८ के दिन, रोहिणी नक्षत्रे जन्म हुवा (तव) जितशत्रु राजायें १० दिन पर्यंत जन्म उत्सव करके, अजितकुमर, नाम स्थापन किया । लाछन हस्ती । शरीरमान ४५० धनुष । कचनसमानवर्ण, तीन ज्ञानयुक्त, महातेजस्वी । न्नोगावलीकर्म निर्जरार्थे, विवाहकरके, क्रमसें राज्यपदकों प्राप्त हुवे (पीछे) अवसर आये, लोकातिक देवताके वचनसें, संवत्सरपर्यंत मोटो दान देके, माघ कृष्ण

९ के दिन, अयोध्या नगरीमें, छठतप करके, शालवृक्षके नीचे १००० पुरुषोंकेसाथ दीक्षा ग्रहण करी। (उसीवखत) भगवानकों चोथा मनपर्यव ग्यान उत्पन्न भया। प्रथम उनका पारणा, परमान्नसें, ब्रह्मदत्त व्यवहारीके घरे हुवा॥ १२ वरष छद्मस्थपणें विहार करके, अयोध्या नगरीमे (तब) वहा मिती पोषवदि ११ के दिन, लोकालोक प्रकाशक केवल ज्ञान उत्पन्न भया। (तब) देवगणका कीया हुवा, समवसरणमध्ये बैठके, १२ परषदाके सन्मुख, धर्मोपदेश करके, चतुर्विधसंघकी स्थापना करी। भगवानके सिंहसे न प्रमुख९५गणधर हुवे॥१००००० सर्व साधु मुनिराज भए॥३३०००० फल्गुश्री प्रमुख साधवी हुई॥ २०४०० वैक्रियलब्धि धारक हुवे॥ ९४०० अवधिज्ञानी भए॥ २२००० केवल ज्ञानी भए॥१२५५० मनपर्याय ज्ञानी भए॥ ३७२० चवदे पूर्वधारी भए। १२४०० वादी जित धरनेवाले भए।२९८००० व्रतधारी श्रावक भए॥५४५००० व्रतधारक श्रावकणया भई(इत्यादिक)बहुतसे जीवोंका उद्धार करके, अंतमे समेत शिखरपर्वतऊपर १००० साधुवोंके साथ, १ मासकी सलेखना करके, काउसग्ग मुद्रासे, सर्व कर्म खपायके, मिती चैत्रसुदि पंचमीके दिन, ७२ पूर्वलाखवरषको आउखो पालकें सिद्धिस्थानकों प्राप्त भए॥ शासनदेव महायक्ष। शासनदेवी अजितबला मानवगण। सर्पयोनि। वृषराशि। सम्यक्त पायेबाद तीसरे भवमें मोक्षगए (इस समयमें) दूसरा चक्रवर्त्ति सगरनामें हुवा॥ ✻॥

॥ ✠ ॥ अब किंचित् सगर चक्रवर्त्तिका अधिकारः ॥ ✠ ॥

॥ ✻ ॥ श्री अजितनाथ स्वामीके, पिताका भाई, सुमित्र नामे युवराजा हुवा॥ जिसके यशोमतीराणीयें। १४ स्वप्न पूर्वक, सगरनामें पुत्रकों जन्मा (जब) भगवानने दीक्षा लीनी। (तब) अपना भाई सगर युवराजाकों राजगद्दीपर स्थापन किया। पीछे नवनिधान (और) चकरत्न, प्रगट होनेसें, भरतक्षेत्रका छखंडसाधके। दूसरा चक्रवर्ति हुवा। इनके, जन्हुकुमार प्रमुख ६०००० पुत्रभए।वो सर्व समुदाई कर्मकेयोग,एकदा भरतचक्रवर्त्तिका कराया हुवा, सुवर्णमई अष्टापद पर्वतके ऊपर, रत्नामई, निज २ प्रमाणोपेत २४ भगवानका मंदिर देखकें, पर्वतकी रक्षाके निमित्त, बहुत ऊंडी खाइखोद कें, गंगानदीकों चउफेर करदीनी। तब उस जमीनके अधिष्टित, देवगणकों

तकलीप होनेसें एकसाथ ६०००० हजार पुत्रोको भस्म कर दीया । इसकी मालुम होनेसें, सगरचक्रवर्त्तिकों बहुतसा दुःखभया (पीछे) सौ धर्मेंद्रके मुखसे भवस्थितिका स्वरूप सुणके दुःख दूर किया (पीछे जब) सगर पुत्रोंके लाया हुवा, गंगाकाजल वढता थका, अष्टापद पर्वतके चौफेर देशोंमे उपद्रव करने लगा (तब) जन्हुकुमारका पुत्र, भागीरथ, सगर चक्रवर्त्तिकी आज्ञा पायके, दण्डरत्नसें जमीनकों खोदकें, गंगाजलका प्रवाहकुं, समुद्रमें मिला दिया (इसीसें) गंगाका नाम लोकीकमें जान्हवी (तथा) भागीरथी कहनें लगे ॥ और यह खारासमुद्र पिण, देवसहायसें, सगरके पुत्रोंका लाया हुवा भरतक्षेत्रमें मालुम हो रहा है (और)सगरचक्रवर्त्तिकी आज्ञासें वैताढ्य पर्वतसें आयके, लंकाके टापूमे, प्रथम घनवाहन राजा हुवा(इस) घनवाहन राजाके वंशमें, रावण, बभीषणादिक भए हैं (सो) राक्षसी विद्यासें राक्षस कहलाए (इसीसें) लंकाके टापूका नाम राक्षसदीप हुवा (और) सिद्धगिरीके ऊपर, मंदिरोंका दूसरा उद्धार, सगरचक्रवर्त्तिनें करा (अरु) वम्भादानेसरी हुवा । अंतमें श्री अजितनाथ स्वामीकेपास दीक्षा लेके, शुद्ध चारित्रसें केवल ज्ञानपायके, मोक्षकों प्राप्त भया ॥ श्री ऋषभदेव स्वामीके निर्वाणसे, पचासलाख कोड सागरोपम वितीतहोनेसे, श्री अजितनाथ स्वामीका निर्वाण हुवा ॥※॥ इति ५५ बोलगर्भित दूसरा अजितनाथस्वामी (तथा) दूसरा सगर चक्रवर्त्तिका अधिकारः संपूर्णः ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ ३ श्री संभवनाथस्वामी अधिकारः ॥ ※ ॥

॥※॥ सावत्थी नगरीमें, इक्ष्वाकवंशी, जितारी नामे राजा हुवा (तिसके) सेना नामे पटराणी, जिसकी कूखमें, ऊपरला ग्रैवेयक विमानसें आयके, मिति फाल्गुन शुक्ल ८ के दिन, भगवान् उत्पन्न भया (पीछे) सर्व दिशा सुभिक्षसमें । मिति माघ शुक्ल १४, मृगशिर नक्षत्रे, जन्म कल्याणक हुवा (तब) जितारी राजायें १० दिन पर्यंत उत्सव करके, सम्भव कुमर नाम स्थापन किया। अश्वका लछन युक्त, कंचनवर्ण, शरीर प्रमाण ४०० धनुष हुवा । तीन ज्ञानयुक्त । महा तेजस्वी । १००८ लक्षणालक्षत । भोगावली कर्म निर्जरार्थें, विवाह करके, क्रमसें राज्यपद धारन किया । अवसर आये, लोकांतिक देवताके वचनसें, संवत्सर पर्यंत मोटो दान देके,

मिति मिगसर शुद १५ के दिन, सावत्थी नगरीमें, छठ तप करके, प्रियाल वृक्षके नीचे, १००० पुरुषोंकेसाथ, दिक्षा ग्रहण करी (उस वखत) चोथा, मनपर्यवज्ञान, उत्पन्न भया। प्रथम उनका पारणा, परमान्न क्षीरसें, सुरिद्रदत्त व्यवहारीयाके घरे हुवा। १४ वर्ष। छद्मस्थपणे विहार करकें, फेर सावत्थी नगरीमें चतुमास रहा। वहा छठ तप संयुक्त, मिति कार्तिक कृष्ण ५ के दिन, लोकालोक प्रकाशक, केवलज्ञान उत्पन्न भया (तिस वखत) चतुर्निकाय देवगणके किया हुवा समवसरणमें, १२ परषदाके सन्मुख धर्मोपदेश देके, चतुविधसंघकी स्थापना करी (जिसमें) २००००० सर्व साधु मुनिराज भए(तिसमे) चारु प्रमुख १०२ गणधर पद धारक भए॥१९८०० वैक्रिय लब्धि धारक भए॥ १२००० वादीविरुद धारक भए॥ ९६०० अवधि ज्ञानी भए॥ १५००० केवल ज्ञानीभए॥ १२१५० मन पर्यव ज्ञानी भए॥ २१५० चउदे पूर्वधारी भए॥ ६३६००० श्यामा प्रमुख सर्व साध्वी हुई॥ २९३००० श्रावक हुए॥ ६३६००० श्राविका भई (इत्यादिक) बहुतसे जीवोंका उद्धार करके, अंतसमें समेत शिखर पर्वत के ऊपर, १००० साधुवोंकेसाथ, १ मासका अणसण ग्रहण कीया॥ काउसग्ग मुद्रायें, आत्मगुणके ध्यानसें, सर्व कर्मको खपायके, मिति चैत्र शुद ५ के दिन, ६० लाख पूर्वका आऊखा पूर्ण करके, सिद्धि स्थानको प्राप्त भए॥ शासनदेव त्रिमुख यक्ष। शासन देवी दुरितारी। देवगण। सर्प योनि। मिथुन राशि। अंतरवार ३० लाख कोटि सागरोपम। सम्यक्त पाये बाद, तीसरे भवमें मोक्ष गए॥※॥ इति ५५ बोल गर्भित श्री संभवनाथ स्वामी अधिकार॥ ※॥ ॥ ※॥

॥ ※॥ अथ ४ था अभिनंदन स्वामी अधिकार. ॥ ※॥

॥※॥ अयोध्या नगरीमें, इक्ष्वाकवंशी, संवर नामें राजा हुवा। तिनके सिद्धार्था नामें पटराणी। जिसकी कूखमें, जयंत नामा अनुत्तर विमानसें आयके, मिति वैशाख शुद ४ के दिन उत्पन्न भया (पीछे) सर्व दिशा सुनिर्मलसमें, मिति माघ शुद २, पुनर्वसु नक्षत्रे, जन्मकल्याणक हुवा (तव) संवरराजायें दशदिनका जन्म उछव करके, अभिनंदनकुमर, नाम स्थापन किया। वानरके लंछन युक्त, कंचनवर्ण, शरीरप्रमाण ३५० धनुष हुवा। तीन

ज्ञानयुक्त, महातेजस्वी, १००८ लक्षणालंकृत, भोगावली कर्म निर्जरार्थे, विवाह करकें, क्रमसें राज्यपद धारण किया। अवसर आये लोकांतिक देवताके वचनसें, संवत्सर पर्यंत मोटो दान देकें, मिति माघ शुक्ल १२ के दिन, अयोध्यानगरीमें, छठ तप करके, प्रियंगु वृक्षके नीचे, १००० पुरुषोंकेसाथ दिक्षा ग्रहण करी। उसवखत, चोथो मनपर्यवज्ञान उत्पन्नभयो। प्रथम छठको पारणो, परमान्न क्षीरसें, इंद्रदत्त व्यवहारीके घरे हुवो। १८ वरष छद्मस्थपणें विहार करके (फेर) अयोध्यानगरीमें आए (वहा) छठतप संयुक्त, मिति पोष कृष्ण १४ के दिन, लोकालोक प्रकाशक केवलज्ञान उत्पन्न भया। उसवखत चतुर्निकाय देवगणका किया हुवा समवसरणमें, १२ प्रखदाके सन्मुख, धर्मोपदेश देकें, चतुर्विध संघकी स्थापना करी॥ ३००००० सर्व साधु मुनिराजभए (तिसमें) वज्रनाभ प्रमुख ११६ गणधर भए॥ १९००० वैक्रिय लब्धिधारक भए॥ ९८०० अवधि ज्ञानीभए॥ ११६५० मनपर्यव ज्ञानीभए॥ १४००० केवल ज्ञानी भए॥ १५०० चउदे पूर्वधारीभए॥ ११००० वादी बिरुदधारक भए॥६३०००० अजिताप्रमुख साधवी हुई॥२८८००० श्रावक हुए॥ ५२७४०० श्राविका हुई (इत्यादिक) बहुतसे जीवोंका उद्धार करकें, अंतसमें समेतशिखरजी पर्वतके ऊपर १००० साधुवोंके साथ, १ मासका अणसण ग्रहण किया। कानसग्ग मुद्रायें सर्व कर्मकों खपायके, मिति वैशाख शुक्ल ८ के दिन, ५० लाख पूर्वका आउखा पूर्ण करके, सिद्धिस्थानकों प्राप्ति भए॥ शासनदेव नायक यक्ष। शासनदेवी कालिका। देवगण। छागयोनि। मिथुनराशि, अंतरमान ९ लाख कोडि सागरोपम, सम्यक्तपायेबाद तीसरे भवमें मोक्षगए॥ इति ५५ बोलगर्भित अभिनंदन स्वामीका अधिकारः॥ ४॥

॥ ॥ अथ ५ मा श्री सुमतीनाथ स्वामी अधिकारः ॥ ॥

॥ ॥ अयोध्यानगरीमें, इक्ष्वाकुवंशी, मेघनामें राजा हुवा। तिसके मंगलानामे पट्टराणी। जिसकी कूखमें, जयंत नामा अनुत्तरविमानसें आयके, मिति श्रावण शुक्ल२ के दिन, भगवान उत्पन्न हुवा (जब) दशदिनका उत्सव करके मेघराजायें, सुमतिकुमर नाम स्थापन किया॥ क्रौंचपक्षीके लछनयुक्त, कंचनवर्ण, शरीरप्रमाण ३०० धनुष हुवा। तीन ज्ञानयुक्त,

महातेजस्वी, १००८ लक्षण लक्षत, भोगावली कर्मनिर्जरार्थे विवाहकरके क्रमसें राज्यपद धारण कीया । अवसर आये, लोकांतिक देवताके वचनसें संवत्सरपर्यंत मोटो दान देके, मिति वैशाख शुक्ल९ के दिन अयोध्यानगरीमें, नित्य भक्तसें, शालवृक्षके नीचे, १००० पुरुषोंके साथ दिक्षा ग्रहण करी (उसवखत) चोथो मनपर्यव ज्ञान उत्पन्न भयो । प्रथम पारणो परमान्नहीरसें, पद्मशेखरके घरे हुवो । २० वरष छद्मस्थपणें विहार करकें, फेर अयोध्यानगरीमें चातुर्मास रह्या । वहा छठ तपसयुक्त, मिति चेत्र शुक्ल ११ के दिन. लोकालोक प्रकाशक केवलज्ञान उत्पन्न भया । उसवखत चतुर्निकाय देवगणके क्रिया हुवा, समवसरणमें बैठके, १२ प्रखदाके सन्मुख, धर्मोपदेश देके, चतुर्विधसंघकी स्थापना करी ॥ भगवान्के सर्वसाधु३२०००० हुए (जिसमें) चरम प्रमुख १०० गणधर पदधारक भए ॥ १८४४० वैक्रियलब्धि धारक भए ॥ ११००० अवधिज्ञानीभए ॥ १०४५० मनपर्यवज्ञानी हुए ॥ १३००० केवल ज्ञानीभए ॥ २४०० चवदे पूर्वधारक भए ॥ १०४०० वादीविरुद धरनेंवालेभए ॥ ५३०००० काश्यपीप्रमुख साधवी हुई ॥ २८१००० श्रावक हुए ॥ ५१६००० श्राविका हुई ॥ (इत्यादिक) बहुतसे जीवोंका उद्धार.करके अंतसमें समेतशिखर पर्वतके ऊपर, १००० साधुवोंकेसाथ, १ मासका अणशण ग्रहण कीया ॥ काउसग्ग मुद्रायें, आत्मगुणकेध्यानसें, सर्व कर्मकों खपायके, मिति चेत्र शुक्ल ९ के दिन, ४० लाख पूर्वका आउखा पूरणकरके, सिद्धिस्थानकों प्राप्त भए ॥ शासनदेव तुंबरुयक्ष । शासनदेवी महाकाली । राक्षसगण । मूषक योनि । सिंहराशी । अंतरकाल ९० हजार कोड सागरोपम । सम्यक्तपाए बाद तीसरे भवमें मोक्षगए ॥ इति ५५ बोलगर्भित श्री सुमतीनाथ स्वामीका अधिकारः ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥ ॥※॥

॥ ※ ॥ अथ ६ ठा श्री पद्मप्रभु अधिकारः ॥ ※ ॥

॥※॥ कोसंबी नगरीमें, इक्ष्वागवंशी, श्रीधरनामें राजा (जिसके) सुसीमा पट्टराणी, तिसकी कूखमें, उपरिम ग्रैवेयक देवविमानसें चवके, मिति माघ कृष्ण ६ के दिन उत्पन्न हुवा । मातायें १४ स्वप्न देखा (पीछे) सर्व दिशा सुभिक्षसमें, मिति कार्तिक कृष्ण १२ के दिन, चित्रा नक्षत्रे, जन्म कल्याणक

हुवा (तव) श्रीधर राजायें १० दिन पर्यंत उत्सव करके, सर्व संबंधियोंके सन्मुख, पद्मकुमर नाम स्थापनकिया (नाम स्थापनका येहेतु हे) माताने पद्म सज्यापर सोनेका मोहला उत्पन्न हुवा था (ओर) भगवानका पद्म कमलके समान रंग था (इससें) पद्मकुमर नाम हुवा। कमलका लंछन युक्त। रक्तवर्ण। शरीर प्रमाण २५० धनुष हुवा। तीन ज्ञानयुक्त। महा तेजस्वी, १००८ लक्षणालंकृत, भोगावलि कर्म निर्जरायें, विवाह करकें, क्रमसें राज्यपद धारण किया। अवसर आयेसें, लोकांतिक देवताके वचनसें, संवत्सरपर्यंत मोटो दानदेके, मिति कार्त्तिक कृष्ण १३ कों, कोशंबीनगरीमें, एक उपवास करकें, छत्र वृक्षके नीचे, १००० पुरुषोंकेसाथ, दिक्षा ग्रहण करी (उस वखत) चोथो मनपर्यंव ज्ञान उत्पन्न भयो। प्रथम पारणो, सोमदेव ब्राह्मणके घरे, परमान्न क्षीर सेती भयो। छ मास छद्मस्थ पणे विहार करके, फेर कोशंबी नगरीमें आए (वहा) चोवनमें तपमें चैत्र शुद १५ के दिन, लोकालोक प्रकाशक केवलज्ञान उत्पन्न भया। उस वखत चतुर्निकाय देव गणके किया हुवा, समवसरणमें बेठकें, १२ परषदा के सन्मुख, धर्मोपदेश देके, चतुर्विध संघकी स्थापना करी॥ भगवानके सर्व ३३०००० साधु हुए॥ (जिसमें) १०७ प्रद्योतन प्रमुख गणधर भए॥ १६१०८ वैक्रिय लब्धि धारक हुए॥ १०००० अवधि ज्ञानी भए॥ १०३०० मन पर्यंव ज्ञानी भए॥ १२००० केवल ज्ञानी भए॥ २३०० चउदे पूर्वधारी हुए॥ ९६०० वादी विवाद जीतनेवाले हुए॥ ४२०००० रति प्रमुख साधवी हुई॥ २७६००० श्रावक हुए॥ ५०५००० श्राविका हुई। (इत्यादिक) वहुतसें जीवोंका उद्धार करके, अंतसमें, समेत शिखरजी पर्वतके ऊपर, ३०८ साधुवोंकेसाथ, १ मासका अणशण ग्रहण किया। काउसग्ग मुद्रायें, आत्मगुणके ध्यानसें, सर्व कर्म को खपायकें, मिति मिगसर वदि ११ के दिन, ३० लाख पूर्वका आउखा पूरण करके, सिद्धि स्थानकों प्राप्ति भए॥ शासनदेव कुसुम यक्ष। शासन देवी शामा। राक्षसगण। महिष योनि। कन्या राशि। अंतर काल ९० हजार कोड सागरोपम। सम्यक्त्व पाएबाद तीसरे भवमें मोक्ष गए॥

॥※॥ इति ५५ बोल गर्भित ६ श्री पद्म प्रभु अधिकारः॥ ६॥

नामें
के, भ
न्य पर्व
अप

॥ ※ ॥ अथ ७ श्री सुपार्श्वनाथजी अधिकारः ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ बनारशी नगरीमें, इक्ष्वाकवशी, प्रतिष्ट नामें राजा हुवा (तिशके) पृथ्वी नामें पट्टराणी, जिसकी कूखमें, मझम ग्रेवेयक देव विमानसें आयके। मिति भाद्रवा वदी ८ के दिन, भगवान् उत्पन्न भया (तव) मातायें चवदे स्वप्न देखा। पीछे सर्व दिशा सुभिक्ष समें, मिति जेष्ट शुद १ के दिन विशाखा नक्षत्रे, जन्म कल्याणक हुवा। साथियेका लाछन युक्त। कचन वर्ण, सरीर प्रमाण २०० धनुष हुवा। तीन ज्ञानयुक्त। महा तेजस्वी। एक हजार आठ लक्षणालकृत, भोगावली कर्म निर्जरार्थे, विवाह करके, क्रमसें राज्यपद धारण किया। अवसर आए लोकातिक देवताके वचनसें, सवत्सर पर्यंत मोटो दान देके, मिति जेष्ट सुदी १३ के दिन, वणारशी नगरीमें, छठ तप करके, सरीश वृक्षके नीचे, एक हजार पुरषोंकेसाथ, दिक्षा ग्रहण करी (उस वषत) चोथो मनपर्यवज्ञान उपज्यो। प्रथम छठको पारणो, माहेंद्रदत्तके घरे, परमान्नसें हुवो। नवमाश छद्मस्थपणें विहार करके, फेर वनारशी नगरीमें आये। वहा छठ तप सयुक्त, फागुण वदी ६ के दिन, लोकालोक प्रकाशक, केवल ज्ञान उत्पन्न हुवा (उस वखत) चतुनिकाय देवगणका किया भया, समवसरणमें, वारह परखदाकै सन्मुख भगवान् धर्मोपदेश देके, चतुर्विध सघकी स्थापना करी ॥ भगवानके ३००००० तीन लाख सर्व साधू हुए (जिसमें) विदर्भ प्रमुख ९५ गणधर भए ॥ १५३०० वैक्रीयलब्धि धारक भए ॥ ९००० अवधि ज्ञानी हुए ॥ ८१५० मनपर्यव ज्ञानी हुए ॥ ११०० केवल ज्ञानी हुए ॥ २०३० चवदे पूर्वधारी हुए ॥ ८४०० वादी विरुद धारक हुए ॥ ४३०००८ सोमा प्रमुख साधवी हुई ॥ २५७००० श्रावक हुए ॥ ४९३००० श्राविका हुई (इत्यादिक) वहोतसे जीवोंका उद्धार करकै, अतसमें, समेत शिखरजी पर्वतके ऊपर, पाचसै ५०० साधुवोंकेसाथ, एक माशका अणसण ग्रहण कीया ॥ काउसग्ग मुद्रायें, आत्मगुणके ध्यानसें, सर्व कर्म खपायकै, मिति फाल्गुण वदी ७ के दिन, वीस लाख पूर्वका आयुष्य पूर्ण करकै, सिद्धि स्थानकु प्राप्त भए ॥ सासन देव मातगजक्ष। सासन देवी साता। राक्षस गण। मृग योनी। तुल राशी। अतर्काल ए सो कोडी सागरोपम। सम्यक्त

पायेबाद, तीसरे भवमें मोक्ष गए ॥ ※ ॥ इति ५५ बोल गर्भित श्री सुपार्श्वनाथस्वामी अधिकार सपूर्ण ॥ ※ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ ८ श्री चंद्राप्रभू स्वामी अधिकारः ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ चद्रपुरी नामा नगरीमें, इक्ष्वाकवशी, महसेन नामें राजा (जिसकै) लक्ष्मणा नामें पट्टराणी । जिसकी कूखमें, जयंतनामें विमानसें आयकै, मिति चैत्र कृष्ण ५ के दिन उत्पन्न भया । मातायें चवदे स्वप्न देखा पीछे सर्व दिशा सुभिक्ष समें, मिति पोष वद १२ के दिन, अनुराधा नक्षत्रे जन्म कल्याणक हुवा (तब) महसेन राजायें, १० दिनकाउत्सव करके, चद्रप्रभ कुमर नाम दिया । चंद्रमाके लाछनयुक्त, स्वेतवर्ण, शरीर प्रमाण १५० धनुष, तीन ज्ञानयुक्त, महा तेजस्वी, १००८ लक्षणालंकृत, भोगावली कर्म निर्जरार्थे, विवाह करके, क्रमसें राज्यपद धारण कीया । अवसर आये, लोकातिक देवताके वचनसें, सवत्सर पर्यत मोटो दान देके, मिति पोष वदी १३ के दिन, चंद्रपूरी नगरीमें, छठ तप करके, नागवृक्षके नीचे, १००० पुरुषोंकेसाथ दीक्षा ग्रहण करी (उस वखत) चोथो मनपर्यव ज्ञान उत्पन्न भयो । प्रथम छठको पारणो, सोमदत्तके घरे, परमान्न क्षीरसें हुवो ॥ ३ मास छद्मस्थपणें विहार करके, चद्रपुरी नगरीमें आए (वहा) छठ तप सयुक्त, मिति फागुण वदि ४ के दिन, लोकालोक प्रकाशक, केवल ज्ञान उत्पन्न भया (उस वखत) चतुर्निकाय देवगणके किया हुवा, समवसरणमें बेठके, १२ परषदाके सन्मुख, धर्मोपदेश देके, चतुर्विध सघकी स्थापना करी । भगवानके सर्व २५०००० साधु भए (जिसमें) ए३ दिन्न प्रमुख गणधर हुए ॥१४००० वैक्रिय लब्धि धारक हुए ॥ ८००० अवधि ज्ञानी हुए ॥ ८००० मनपर्यव ज्ञानी हुए ॥ १०००० केवल ज्ञानी हुए ॥ २००० चवदे पूर्वधारी हुए ॥७६०० वादी विरुदधारक भए॥ ३८०००० सुमना प्रमुख साधवी हुई ॥ २५०००० श्रावक हुए ॥ ४७९००० श्राविका हुई (इत्यादिक) वहुतसे जीवोंका उधार करकें, अतसमें समेतशिखरजी पर्वतके ऊपर, १००० साधुओंकेसाथ, १ मासका अणसण ग्रहण कीया । काउसग्ग मुद्रायें, आत्मगुणके ध्यानसें, सर्व कर्मकों खपायकै, मिति भाद्रवा व[illegible] दिन, दश लाख पूर्वका आउखा

पूरण करकें, सिद्धिस्थानकों प्राप्त भए ॥ शासनदेव विजय यक्ष । सासन देवी भृकुटी । देवगण । मृग योनि । वृश्चिक राशि । अतरकाल ९० कोडी सागरोपम । सम्यक्त पाएबाद, तीसरे भवमें मोक्ष गए ॥ ※ ॥
इति ८ मा श्री चंद्राप्रभु स्वामीका अधिकारः ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ ९ मा श्री सुविधनाथ स्वामी अधिकारः ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ काकदी नगरीमें, इक्ष्वाकवंशी, सुग्रीवनामें राजा हुवा (तिसके) रामा नामें पट्टराणी । जिसकी कूखमें, आनत नामा देवविमानसें चवके, मिति फागुण वदि ९ के दिन भगवान् उत्पन्न भया । तब मातायें १४ स्वप्न देखा (पीछे) सर्व दिशा सुभिक्षसमें, मिति मिगसर वद ५, मूलन क्षत्रे जन्मकल्याणक हुवा (तब) सुग्रीव राजायें १० दिनपर्यंत जन्म महोत्छव करके, सर्व गोत्रियोंके सन्मुख, सुविधिकुमर नाम स्थापन किया ॥ मगरमच्छका लछनयुक्त, स्वेतवर्ण, शरीरप्रमाण १०० धनुष हुवा । तीन ज्ञानयुक्त, महातेजस्वी १००८ लक्षणालकृत, भोगावली कर्म निर्जरार्थे विवाहकरके, क्रमसें राज्यपद धारण किया । अवसरआये । लोकांतिक देवताके वचनसें, सवत्सर पर्यंत मोटो दान देके, मिति मिगसरवदि ६ के दिन, काकदी नगरीमें, छठ तप करके, शालवृक्षके नीचे, १००० पुरुषोंके साथ, दिक्षा ग्रहण करी (उसवखत) चोथो मनपर्यवज्ञान उत्पन्न भयो । प्रथम छठको पारणो, पुष्पदत्तकेघरे, परमान्नसें हुवो । ४ मास छद्मस्थपणे विहार करके, फेर काकदी नगरी आए (वहा) छठ तप सयुक्त, मिति कार्तिकशुद ३ केदिन, लोकालोक प्रकाशक केवलग्यान केवल दर्शन उत्पन्नहुवा (उसवखत) चतुर्निकाय देवगणका किया हुवा समवसरणमें, १२ परख दाके सन्मुख, भगवान् धर्मोपदेश देके, चतुर्विध सघकी स्थापना करी । भगवानके २००००० सर्व साधु भए (जिसमें) वराह प्रमुख ८८ गण धर भए ॥ १३००० वैक्रियलब्धि धारक भए ॥ ८४०० अवधिज्ञानीभए॥ ७५०० मनपर्यव ज्ञानीभए ॥ ७५०० केवल ज्ञानीभए ॥ १५०० चौदे पूर्वधारीभए ॥ ६००० वादीविरुद धरनेवालेभए ॥ १२०००० वारुणीप्रमुख साधवी हुई ॥ २२९००० श्रावक हुए ॥ ४७१००० श्राविका हुई (इत्यादिक) बहुतसे जीवोंका उद्धार करकें, कर्मशत्रुओंसे छेडापकें,

अंतसमें समेतशिखरजी पर्वतके ऊपर, १००० साधुवोंके साथ, १ माशका अणशण ग्रहण किया। कानसग्ग मुद्रायें, आतमगुणके ध्यानसें, सवकर्मा कों खपायके, मिति नाद्रवा शुद ए के दिन, २ लाख पूर्वका आनखा पूरण करके, सिद्धि स्थानकों प्राप्ति नए॥ शासनदेव अजितयक्ष। शासनदेवी सुतारिका। राक्षसगण। वानरयोनि। धनराशि। अंतरकाल ए कोम सागरोपम। सम्यक्त पायेवाद, तीसरेनवमें मोक्षगए॥✻॥ इति५५ बोलगर्भित श्री सुविधिनाथस्वामी अधिकारः॥ ए॥ ✻॥

॥✻॥ अथ १० श्री शीतलनाथ स्वामी अधिकारः॥✻॥

॥✻॥ नद्दलपुर नगरीमें, इक्ष्वाकवंशी, दृढरथनामें राजा हुवा (तिसके) नंदा नामे पटराणी, जिसकी कूखमें, अच्युत नामे देवलोकसें चवके मिति वैशाखवदि ६ के दिन उत्पन्न नया (तव) मातायें १४ स्वप्न देखा (पीछे) सर्वदिशा सुनिक्षसमें, मिति माघवदि १२ कों, पूर्वाषाढा नक्षत्रे, जन्मकल्याणक हुवा (तव) ५६ दिशा कुमरी, ६४ इंद्रोंके जन्ममहोत्सव कियेवाद, दृढरथ राजा, १० दिवशका महोत्सव करके, श्री शीतलकुमर नाम दिया॥ श्री वत्सका लंछनयुक्त, कंचनवर्ण, शरीरप्रमाण ए० धनुष हुवा। ३ ज्ञानसहित, महातेजस्वी, १००८ लक्षणालंकृत, नोगावली कर्म निर्जरार्थे, विवाह करकै, क्रमसें राज्यपदको धारन किया। अवसर आये लोकांतिक देवताके वचनसें, संवत्सरपर्यंत मोटो दान देके, मिति माघवदि १२ के दिन, नद्दलपुर नगरमें, छठतप करके, प्रियंगु वृक्षके नीचे १००० पुरुषोंकेसाथ दिक्षा ग्रहण करी (उसवखत) चोथो मनपर्यवज्ञान उत्पन्न नयो। प्रथम छठको पारणो, पुनर्वसुके घरे, परमान्नक्षीरसें हुत्त। तीनमाश छद्मस्थपणें विहार करके, फेर नद्दलपुर नगर आए (वहा) छठ तप सहित, मिति पोषवदि १४ के दिन, लोकालोकप्रकाशक, केवलज्ञान उत्पन्न नया। (उसवखत) चतुर्निकाय देवगणका किया हुवा, समवसरणमें वेठके, १२ परखदाके सन्मुख, नगवान् धर्मोपदेशदेके, चतुर्विधसंघकी स्थापना करी॥ नगवान्के १००००० सर्व साधुनए (जिसमें) नंद प्रमुख ८१ गणधर हुए॥ १२००० वैक्रियलब्धि धारक नए॥ ७२०० अवधिज्ञानीनए॥७५०० मनपर्यवज्ञानीनए॥ १४०० चवदे पूर्वधारीनए॥५८००

वादीविरुदधारीभए ॥ १००००६ सुयशाप्रमुख साधवी ऊई ॥ ५०८०८० श्रावकभए ॥ ४५८००० श्राविकाभई (इत्यादिक) बज्ञतसे जीवोंका उद्धार करके, अंतसमें समेतशिखरजी परवतके ऊपर, १००० साधुवोंके साथ, १ मासका अणशण ग्रहण किया ॥ काउसग्ग मुद्रायें, आत्मगुण के ध्यानसें, सर्वकर्मोंको खपायके, मिति वैशाखवदि २ केदिन, १ लाख पूर्वको आयुपूरण करके, सिद्धिस्थानको प्राप्तभए ॥ शासनदेव ब्रह्मायक्ष । शासनदेवी अशोका । मानवगण । नकुलयोनि । धनराशि । अंतरकाल १ कोटि सागरोपम, सम्यक्त पाएबाद, तीसरे भवमें मोक्षगए (इनोंकीवखतमें) हरिवंशकुलकी उत्पत्तिभई (जिसमें) वसुराजादि ऊवे है । इसका विस्तार सबध जैनसिद्धांतोंसें जाणना ॥※॥ इति ५५ बोलगर्भित श्री शीतलनाथ स्वामी अधिकार. ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥※॥ अथ ११ मा श्री श्रेयांसनाथस्वामी अधिकारः ॥※॥

॥ ※ ॥ सिंहपुरी नगरीमें, इक्ष्वाकवंशी, विष्णु नामें राजा ऊवा (तिसके) विष्णु नामें पट्टराणी, जिसकी कूखमें, अच्युतनामा १२ मा देवलोकसें चवके, मिति ज्येष्ट वदि १४ के दिन, भगवान् उत्पन्न ऊवा (तब) मातायें, गजादि अग्निशिखा पर्यंत, १४ स्वप्न प्रगटपणें मुखमें प्रवेश कर्त्ता देखा (पीछे) सर्व दिशा सुभिक्षसमें, मिति फागुन वदि १२ कों, श्रवणनक्षत्रे, जन्म कल्याणक ऊवा (उसी वखत) ५६ दिशाकुमरी मिलके सूतिका महोछव किया (और पीछे) ६४ इंद्र, मेरु पर्वतपर भगवान्कों ले जायके जन्म महोछव किया (तिस पीछे) विष्णु राजा १० दिनसपर्यंत मोटा जन्म महोछव करके, सर्व न्याती गोती प्रजा गणकों, मनसा भोजन करायके, सबके सन्मुख श्रेयांस कुमर नाम दिया ॥ नाम स्थापनका यह हेतु हैं (कि) विष्णु राजाके महिलमें, देव अधिष्टित १ सज्यायी । उस देवसय्यापर जो सूवे बेठे, तो अकस्मात् कोई उपद्रव ऊवे विगर रहै नही (जब) भगवान् विष्णु माताके गर्भमें आये (तब) माताकों उस देवसय्यापर, सोनेका मोहला उत्पन्न भया (इस सेंती) विष्णु माता जब देवसय्यापर सूती, तब देवता प्रसन्न होके, माताकी सेवामें हाजर भया । कोइ तरहका उपद्रव नहि हो सका (इसवास्ते) पितायें श्रेयांसकुमर

नाम दिया । गेंमेका लंछन युक्त, कंचन वर्ण, शरीर प्रमाण८० धनुष ऊवा । तीन ज्ञान सहित, महा तेजस्वी, १००८ लक्षणालंकृत, जोगावली कर्म निर्जरार्थे, विवाह करके, क्रमसें राज्यपद धारन किया । अवसर आये, लोकांतिक देवताके वचनसें । संवत्सर पर्यंत मोटो दान देके, मिति फाल्गुन वदि १२ के दिन, सिंहपुरी नगरीमें, ७० तप करके, तिंडुक वृक्षके नीचे, १००० पुरुषोंकेसाथ दिक्षा ग्रहण करी । उस वखत चोथो मनपर्यव ज्ञान उत्पन्न जयो । प्रथम ७०को पारणो, नंदरायके घरे, परमान्न क्षीरसें ऊवो ॥ दो मास छद्मस्थपणें विहार करके (फेर) सिंहपुरी नगरीमें आए वहा ७० तप सहित, मिति माघ वदि ३ के दिन, लोकालोक प्रकाशक केवल ग्यान उत्पन्न जया (उस वखत) चतुर्निकाय देवगणके किया जया समवसरणमें, १२ परषदाके सन्मुख, जगवान् धर्मोपदेश देके, चतुर्विध संघकी स्थापना करी ॥ जगवान्के ८४००० सर्व साधु ऊए (जिसमें) कच्छप प्रमुख ७६ गणधर पद धारक जए ॥ ११००० वैक्रियलब्धि धारक जए ॥ ६००० अवधिज्ञानी जए ॥ ६००० मनपर्यव ज्ञानी जए ॥ ६५०० केवल ज्ञानी जए ॥ १३०० चौदै पूर्वधारी ऊए ॥ ५००० वादी विरुदधारक जए ॥ १०३००० साधवीयाँ जई ॥ २७८००० श्रावक जए ॥ ४४८००० श्राविका ऊई ॥ इत्यादिक वऊतसे जीवोंका उद्धार करके, (अंतसमें) समेत सिखरजी पर्वत ऊपर, १००० साधुवोंकेसाथ, एक मासका अणसण ग्रहण किया ॥ काउसग्ग मुद्रायें, आत्मगुणके ध्यानसें, सर्व कर्मोंकों खपायके, मिति श्रावण वदि३ के दिन, ८४ लाख वरषका आयुष्य पूरण करके, सिद्धि स्थानकों प्राप्त ऊए ॥ शासनदेव यक्षराज । शासनदेवी मानवी । देवगण । वानर योनी । मकर राशि । अंतरमान ५४ सागरोपम । सम्यक्त पाये वाद तीसरे जवमें मोक्ष गए ॥ ※ ॥

इति ५५ वोल गर्जित श्री श्रेयांस जिन अधिकारः ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (इनोंके वखतमें) त्रिपृष्ट नामे पहला वासुदेव, अचल नामे वलदेव ऊवा (जिणोंनें) अपना वेरी, अश्वग्रीव प्रति वासुदेवकों मारके, जरत क्षेत्रके तीन खम्का राज करा ॥ ( ) इनोंके समयमें, वैताढ्यतसें, श्रीकंठ नामा विद्याधरके [illegible] विद्याधरकी वेटीकों

वादीविरुदधारीहुए ॥ १०००0६ सुयशाप्रमुख साधवी
श्रावकहुए ॥ ४५८००० श्राविकाहुई (इत्यादिक)
उद्धार करके, अतसमें समेतशिखरजी परवतके ऊपर,
साथ, १ मासका अणशण ग्रहण किया ॥ काउसग्ग
के ध्यानसें, सर्वकर्मोंको खपायके, मिति वैशाखवदि २ के
पूर्वको आयुपूरण करके, सिद्धिस्थानकों प्राप्तिहुए ॥ शा
शासनदेवी अशोका । मानवगण । नकुलयोनि । धनराशि
कोटि सागरोपम, सम्यक्त पाएबाद, तीसरे भवमें मोक्षगए
हरिवंशकुलकी उत्पत्तिहुई (जिसमें) वसुराजादि हुवे है
संबध जैनसिद्धांतोंसें जाणना ॥※॥ इति ५५ बोलगर्भित
स्वामी अधिकारः ॥ ※ ॥

॥※॥ अथ ११ मा श्री श्रेयासनाथस्वामी अधिका

॥ ※ ॥ सिंहपुरी नगरीमें, इक्ष्वाकुवंशी, विष्णु नामें राजा
सके) विष्णु नामें पट्टराणी, जिसकी कूखमें, अच्युतनामा १
लोकसें चवके, मिति ज्येष्ट वदि १४ के दिन, भगवान् उत्पन्न
माताने, गजादि अग्निशिखा पर्यंत, १४ स्वप्न प्रगटपणें मुखमें
देखा (पीछे) सब दिशा सुभिक्षसमें, मिति फागुन वदि १२ कों,
भे, जन्म कल्याणक हुवा (उसी वखत) ५६ दिशाकुमरी
का महोत्सव किया (ओर पीछे) ६४ इंद्र, मेरु पर्वतपर भ
जायके जन्म महोत्सव किया (तिस पीछे) विष्णु राजा १०
मोटो जन्म महोत्सव करके, सर्व न्याती गोती प्रजा गणकों,
न करायके, सर्वके सन्मुख श्रेयास कुमर नाम दिया ॥ नाम
यह हेतु है (कि) विष्णु राजाके महिलमें, देव अधिष्ठित
उस देवसय्यापर जो सूवे बेठे, तो अकस्मात् कोई उपद्रव हो
नही (अब) भगवान् विष्णु माताके गर्भमे आये (तब)
देवसय्यापर, सोनेका मोहला उत्पन्न भया (इस सेती) वि
देवसय्यापर सूती, तब देवता प्रसन्न होके, माताकी सेवामें हा
कोइ तरहका उपद्रव नहि हो सका (इसवास्ते) पितायें

प्रकाशक, केवलज्ञान केवलदर्शन उत्पन्न हुवा, तव चतुर्निकाय देवगणका कीया हुवा समोसरणमें, १२ पर्षदाके सन्मुख, भगवान् धर्मोपदेश देके, चतुर्विध संघकी स्थापना करी। भगवान्के ७२००० सर्व साधु हुये (जिसमें) सुभूम प्रमुख ६६ गणधर पदधारक हुये॥ धारणी प्रमुख १००००० साधवियों हुई॥ १०००० वैक्रियलब्धि धारक हुये॥ ५४०० अवधि ज्ञानीभये॥ ६००० केवल ज्ञानीभये॥ ६५०० मनपर्यव ज्ञानीभये॥ १२०० चवदे पूर्वधारीभये॥ ४७०० वादी विरुदधारीभये॥ २१५००० श्रावक हुये॥ ४३६००० श्राविका हुई (इत्यादिक) बहुतसे जीवोंका उद्धार करके, अंतसमें चपानगरीमें, ६०० साधुवोंकेसाथ, १ मासका अनशन ग्रहण कीया। काउसग्ग मुद्रायें, आत्मगुणके ध्यानसें, सर्व कर्मकों खपायके, आषाढसुदि १४ के दिन, ७२००००० वर्षको आयुष्य पूरण करके। सिद्धि स्थानकों प्राप्ति भये। शासनदेव कुमारयक्ष। शासनदेवी चमा। राक्षसगण अश्वयोनी। कुंभराशि। अतरमान ३० सागरोपम। सम्यक्तपायेवाद तीसरे भवमें मोक्ष गये। इनोके वखतमें दूसरा द्विपृष्टनामा वासुदेव (अरु) अचल नामें वलदेव हुवा। इनका वेरी, तारक नामें दूसरा प्रतिवासुदेव हुवा। इति ५५ वोलगर्भित श्री वासुपूज्यस्वामी अधिकारः॥ १२॥ ※॥

॥※॥ अथ १३ मा विमलनाथस्वामी अधिकारः ॥※॥

॥※॥ कंपिलपुरी नगरीमें, इक्ष्वाकुवंशी, कृतवर्मनामें राजा हुवा (तिसके) श्यामानामें पट्टराणी। जिसकी कूखमें, सहस्रारनामें ८ मा देवलोकसें चवके, मिति वैशाखसुदि १२ के दिन भगवान उत्पन्न हुये, तव मातायें गजादि अग्निशिखापर्यंत १४ स्वप्न, प्रगटपणें मुखमें प्रवेशकर्त्ता देखा पीछे सर्व दिशा सुभिक्षसमें, मिति माघसुदि ३ के दिन, उत्तराभाद्रपद नक्षत्रे जन्मकल्याणक हुवा (उसीवखत) ५६ दिशा कुमारीयों मिलके, सूतिका महोत्सव किया पीछे ६४ इंद्र मिलके, मेरु पर्वतपर, भगवानकों लेजायके, जन्म महोत्सव कीया। तिस पीछे कृतवर्म राजायें, १० दिवस पर्यंत, मोटो जन्म महोत्सव करके, सर्व न्याती गोती प्रजागणकु मनसा भोजन करायके, विमल कुमर नाम स्थापन किया। (नाम स्थापनका यह हेतु है) कि जब भगवान् माताके गर्भमें आये। तव माताकी बुद्धि, अरु शरीर, दोनुं निर्मल

जे गने (इस्सें) विमल कुमर नाम स्थापन किया। वाराहका लंछनयुक्त, कं चनवर्ण, शरीर प्रमाण ६० धनुष ज्ञवा । ३ ज्ञान सहित, महा तेजस्वी, १००८ लक्षणालकृत, जोगावली कर्म निर्जरार्थे, विवाह करके, क्रमसें रा ज्यपद धारण किया। अवसर आये, लोकांतिक देवताके वचनसें, संवत्सर पर्यंत वर्सी दान देके, मिति माघ सुदि ४ के दिन, कंपिलपुर नामा नग रमें, छठ तप करके, जंबू वृक्षके नीचे, १००० पुरुषोंकेसाथ, दीक्षा ग्रहण करी। उस वखत चोथो मन पर्यव ज्ञान उत्पन्न जयो । प्रथम छठको पा रणो, जय राजाके घरे, परमान्न क्षीरसें ज्ञवो । दो मास छद्मस्थपणें विहार करके, कपिलपुरी नगरीमें आये। छठ तप सहित, पोषसुदि ६के दिन, लोकालोक प्रकाशक, केवल ज्ञान, केवल दर्शन उत्पन्न ज्ञवा। (तब) चतुर्निं काय देवगणका किया ज्ञवा, समोसरणमें, १२ परषदाके सन्मुख, जगवान् धर्मोपदेश देके, चतुर्विध संघकी स्थापना करी ॥ जगवान्के ६८००० सर्व साधु ज्ञये (जिसमें) मंदर प्रमुख ५७ गणधर पद धारक ज्ञये ॥ ध रा प्रमुख १००८०० सब साध्वी ज्ञई ॥ ९००० वैक्रिय लब्धि धारक जये ॥ ३६०० वादी विरुद धारक ज्ञये ॥ ४८०० अवधिज्ञानी ज्ञये ॥ ५५०० मनपर्यव ज्ञानी ज्ञये ॥ ५५०० केवल ज्ञानी ज्ञये ॥ ११०० चव दे पूर्वधारी ज्ञये ॥ २०८००० श्रावक ज्ञये ॥ ४२४००० श्राविका ज्ञई (इत्यादिक) बज्ञतसे जीवोंका उद्धार करके, अंतसमें, समेत शिख रजी पर्वत ऊपर, ६०० साधुवोंकेसाथ, १ मासका अनशन ग्रहण किया काउसग्ग मुद्रायें, आत्म गुणके ध्यानसें, सर्व कर्मका खपायके, मिति आषाढ वदि ७ के दिन, ६०००००० वर्षको आयुष्य पूरन करके, सिद्धि स्थान की प्राप्ति जये । शासन देव षन्मुख यक्ष। शासन देवी विदिता । मानवगण रागयोनि । मीन राशि । अंतर्मान ए सागरोपम, सम्यक्त्व पायेबाद तीसरे जव मोक्ष गये ॥ इनोंके वारे तीसरा स्वयम्भू वासुदेव, अरुभद्र नामा बलदेव तथा मेरक नामा प्रति वासुदेव ज्ञवा ॥ ※ ॥ इति ५५ बोल गर्भित श्री वि मल स्वामी अधिकार संपूर्णम् ॥ १३ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥※॥ अथ १४ मा श्री- ... ।९० ॥※॥

॥ ※ ॥ अयोध्या नगरीमें- ...राक... ज्ञवा

तिसके सुयशा नामें पट्टराणी। जिसकी कूखमें, प्राणत नामा, देवलोक सें चवके, मिति श्रावण वदि ७ के दिन, भगवान् उत्पन्न हुवा। तव मातायें गजादि अग्नि शिखापर्यंत, १४ स्वप्न प्रगटपणें मुखमें प्रवेश कर्त्ता देखा (पीछे) सर्व दिशा सुभिक्षसमें, मिति वैशाख वदि १३ के दिन, रेवती नक्षत्रे, जन्म कल्याणक हुवा (उसी वखत) ५६ दिशा कुमारीयों मिलके, सूतिका महोत्छव किया (पीछे) ६४ इंद्र मेरु पर्वतपर भगवान् कों ले जायके, जन्म महोत्छव कीया (तिस पीछे) सिंहसेन राजायें १० दिवसपर्यंत मोटो जन्म महोत्छव करके, सर्व न्याती गोती प्रजागणकों मनसा भोजन करायके, सर्वके सन्मुख, अनंतनाथ नाम स्थापन कीया (नाम स्थापनका यह हेतु है) कि भगवान् गर्भमें आये, तव रत्नजडित चित्र विचित्र मोटी दाममाला, स्वप्नमें मातायें देखी। तिस कारणसें, अनंतनाथ नाम स्थापन किया सीचाणेंकाललक्षनयुक्त, कंचनवर्ण, शरीर प्रमाण ५० धनुष हुवा। तीन ज्ञान सहित, महा तेजस्वी, १००८ लक्षणालंकृत, भोगावली कर्म निर्जरार्थे विवाह कीया, क्रमसे राज्यपद धारन कीया। अवसर आये, लोकांतिक देवताके वचनसें, संवत्सरपर्यंत मोटो दान देके, वैशाख वदि १४ के दिन, अयोध्या नगरीमें, छठ तप करके, अशोक वृक्षके नीचे, १००० पुरुषोंके साथ दीक्षा ग्रहण करी। उस वखत चोथो मनपर्यव ज्ञान उत्पन्न भयो। प्रथम छठको पारणो, विजय राजाके घरे परमान्न क्षीरसे हुवो॥ ३ वर्ष छद्मस्थपणें विहार करके, अयोध्या नगरीमें आये। वहा छठ तप सहित, वैशाख वदि १४ के दिन, लोकालोक प्रकाशक केवल ज्ञान उत्पन्न हुवा। उस वखत चतुर्निकाय देवगणका कीया हुवा समोसरणमें १२ परपदाके सन्मुख, भगवान् धर्मोपदेश देके, चतुर्विध संघकी स्थापना करी। भगवान्के ६६००० सर्व साधु हुवे (जिसमें) जस प्रमुख ५० गणधर पद धारक भये। पद्मा प्रमुख६२००० सर्व साध्वी हुई। ८००० वैक्रिय लब्धि धारक भये॥३२०० वादीविरुद धारक भये॥ ४३०० अवधिज्ञानीभये ५००० मनपर्यवज्ञानी भये॥ ५०० केवलज्ञानी भये॥१००० चवदे पूर्वधारीभये॥ २०६००० श्रावक भये॥ ४१४००० श्राविकाभई (इत्यादिक) बहुतसे जीवोंका उद्धार करके अंतसमें, समेतशिखरजी पर्वतपर, ७०० साधु

पांकेसाथ १ मासका अनशन ग्रहण कीया। कडुन्न गमुद्रार्थे, आत्मसुखके ध्यानसें, सोंकर्मोकू खपायके, मिति चैत्रसुदि ५ के दिन, ३०००००० वर्षको आयुष्य पूर्न करके, सिद्धिस्थानकों प्राप्ति भये ॥ शासनदेव पाताल यक्ष। शासनदेवी अंकुशा। देवगण। हस्तियोनि। मीनराशि। अंतर ४ सागरोपम। सम्यक्तपायेबाद तीनभवमें मोक्षगये॥ इनोंकेवारे, चोथा पुरुषोत्तमनामा वासुदेव (अरु) सुप्रभनामा बलदेव (तथा) मधुकैटभनामा प्रतिवासुदेव हुवा॥ इति ५५ बोलगर्भित श्री अनन्तनाथस्वामी अधिकारः॥

॥卐॥ अथ १५ मा श्री धर्मनाथस्वामी अधिकारः ॥卐॥

॥卐॥ रत्नपुरीनामा नगरीमें, इक्ष्वाकुवंशी, भानुनामें राजा हुवा (तिसके) सुव्रतानामें पट्टराणी। जिसकी कुखमें, विजयनामा अनुत्तर विमानसें चवके, मिति वैशाखसुदि ७ के दिन, भगवान् उत्पन्न हुवा। तब मातायें गजादि अग्निशिखापर्यंत १४ स्वप्न प्रगटपणें मुखमें प्रवेशकर्त्ता देखा (पीछे) सर्व दिशा सुभिक्षसमें, मिति माघसुदि ३ के दिन, पुष्यनक्षत्रे, जन्मकल्याणक हुवा॥ छप्पनदिशा ५६ दिशा कुमारीयों मिलके सूतिका महोत्सव कीया (पीछे) ६४ इन्द्र मेरुपर्वतपर भगवानकों लेजायके जन्म महोत्सव कीया। तिस पीछे भानुराजायें, १० दिवसपर्यंत बमो जन्ममहोत्सव करके, सर्व न्याती गोती प्रजागणकों, मनसा भोजन करायके, सर्वके सन्मुख, श्री धर्मनाथ नाम स्थापन किया॥ नाम स्थापनाका यह हेतु है। कि परमेश्वरके गर्भमें आनेसें, माता दानादिक धर्ममें तत्पर भई (इसस) धर्मकुमार नामस्थापन कीया। वज्रका लाछन युक्त, कंचनवर्ण, शरीरप्रमाण ४५ धनुष हुवा। तीन ज्ञानसहित, महातेजस्वी, १००८ लक्षणालंकृत, भोगावली कर्मनिर्जरार्थे विवाह करके, क्रमसें राज्यपद धारन कीया। अवसर आये लोकान्तिक देवताके वचनसें, संवत्सर पर्यंत मोटो दान देके, मिति माघसुदि १३ के दिन, रत्नपुरीनगरीमें, छट्ठतप करके, दधिपर्णनामा वृक्षके नीचे, १००० पुरुषांकेसाथ दीक्षा ग्रहण करी तत्काल चोथो मनपर्यवज्ञान उत्पन्न भयो। प्रथम छट्ठकोपारणो, धनसिंहके घरे, परमान्नक्षीरसें हुवो। दें [illegible] विहार करके, रत्नपुरी नगरीमें आये। छट्ठतप सहि[illegible]

केवल ज्ञान केवल दर्शन उत्पन्न हुवा(उसवखत)चतुर्निकाय देवगणका कीया हुवा समोसरणमें, १२ परपदाके सन्मुख, भगवान् धर्मोपदेश देके, चतु र्विध सघकी स्थापना करी। भगवान्के ६४००० सर्व साधु हुवे (जिस मे) अरिष्ट प्रमुख ४३ गणधर हुये ॥ आर्यशिवा प्रमुख ६२४०० सर्व साधवीयाँ हुई ॥ ७००० वैक्रिय लब्धि धारक हुवे॥२८०० वादी विरुद धारक हुवे॥ ३६०० अवधि ज्ञानी हुवे ॥ ४५०० केवल ज्ञानी हुवे ॥ ९०० चवदे पूर्वधारी हुवे ॥ २०४००० श्रावक हुवा ॥ ४१३००० श्रा विका हुई (इत्यादिक) बहुतसे जीवोंका उद्धार करके, अतसमें, समेत शिखरजी पर्वतपर, १०८ साधुवोंकेसाथ, १ मासका अनशन ग्रहण कीया काउसग्ग मुद्राई, आत्मगुणके ध्यानसें, सर्व कर्मोंकु खपायके, मिति ज्येष्ट सुदि ५ के दिन, १० लाख वर्षको आयुष्य पूरन करके, सिद्धिस्थानकों प्राप्त भये॥ शासनदेव किन्नर यक्ष। शासन देवी कदर्पा। देवगण। मंजा र योनी। कर्कराशि। अतरमान ३ सागरोपम। सम्यक्तपायेबाद तीसरेभवमें मोक्ष गये ॥ (इनोंकेवारे) ५ मा पुरुष सिंहनामा वासुदेव (अरु) सुदर्शन नामा वलदेव (तथा) निशुम्भ नामा प्रति वासुदेव हुवा॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ इति ५५ बोल गर्भित श्री धर्मनाथाधिकारः ॥ ※ ॥

॥※॥ १५ मा श्री धर्मनाथ स्वामीके पीछे, अरु १६ मा श्री शातिना थ स्वामीके पहिले, तीसरा मघवा नामा चक्रवर्त्ति (और) चोथा सनत्कु मार नामा चक्रवर्त्ति हुवा ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥※॥ अथ १६ मा शातिनाथ स्वामी अधिकारः ॥※॥

॥ ※ ॥ हस्तनापुर नामा नगरमें, इक्ष्वाकुवशी, विश्वसेन नामें राजा हुवा (तिसके) अचिरा नामे पट्टराणी, जिसकी कूखमें, सर्वार्थसिद्ध ना मा देवलोकसें चवके, मिति भाद्रवा वदि ७ के दिन, भगवान् उत्पन्न भये। तव मातायें, गजादि अग्निशिखापर्यंत, १४ स्वप्ना प्रगटपणे मुखमें प्रवेश कर्त्ता देखा (पीछे) सर्व दिशा सुभिक्षसमें, ज्येष्ट वदि १३ के दिन, भरणी नक्ष त्रे, जन्म कल्याणक हुवा ॥ उसीवखत ५६ दिशा कुमारीयों मिलके सूति का महोत्सव कीया। (पीछे) ६४ इन्द्र मेरु पर्वतपर, भगवानकों ले जायके, जन्म महोत्सव कीया (तिस पीछे) विश्वसेन राजायें १० दिवसपर्यंत, मोटो

बाँकेसाथ १ मासका अनशन ग्रहण कीया । काउसग्गमुद्रायें, आत्मगुणके ध्यानसें, सर्वकर्मांकू खपायके, मिति चैत्रसुदि ५ के दिन, ३०००००० वर्षको आयुष्य पूरन करके, सिद्धिस्थानकों प्राप्ति भये ॥ शासनदेव पाताल यक्ष । शासनदेवी अंकुशा । देवगण । हस्तियोनि । मीनराशि । अंतर्मान ४ सागरोपम । सम्यक्तपायेबाद तीसरेभवमें मोक्षगये ॥ इनोंकेवारे, चोथा पुरुषोत्तमनामा वासुदेव (अरु) सुप्रभनामा वलदेव (तथा) मधुकैटभनामा प्रतिवासुदेव हुवा ॥ इति ५५ बोलगर्भित श्री अनतनाथस्वामी अधिकारः ॥

॥※॥ अथ १५ मा श्री धर्मनाथस्वामी अधिकार. ॥※॥

॥ ※ ॥ रत्नपुरीनामा नगरीमें, इक्ष्वाकुवंशी, भानुनामे राजा हुवा (तिसके) सुव्रतानामें पट्टराणी । जिसकी कूखमें, विजयनामा अनुत्तर विमानसें चवके, मिति वैशाखसुदि ७ के दिन, भगवान् उत्पन्न हुवा । तव मातायें गजादि अग्निशिखापर्यंत १४ स्वप्न प्रगटपणें मुखमें प्रवेशकर्ता देखा (पीछे) सर्व दिशा सुभिक्षसमें, मिति माघसुदि ३ के दिन, पुष्यनक्षत्रे, जन्मकल्याणक हुवा ॥ उसीवखत ५६ दिशा कुमारीयों मिलके सूतिका महोत्सव कीया (पीछे) ६४ इंद्र मेरुपर्वतपर भगवानकों लेजायके जन्म महोत्सव कीया । तिस पीछे भानुराजायें, १० दिवसपर्यंत वडो जन्ममहोछव करके, सर्व न्याती गोती प्रजागणकों, मनसा भोजन करायके, सर्वके सन्मुख, श्री धर्मनाथ नाम स्थापन किया ॥ नाम स्थापनाका यह हेतु हे । कि परमेश्वरके गर्भमें आनेसें, माता दानादिक धर्ममें तत्पर भई (इस्सें) धमकुमर नामस्थापन कीया । वज्रका लाछन युक्त, कंचनवर्ण, शरीरप्रमाण ४५ धनुष हुवा । तीन ज्ञानसहित, महातेजस्वी, १००८ लक्षणालंकृत, भोगावली कर्मनिर्जरार्थे विवाह करके, क्रमसें राज्यपद धारन कीया । अवसर आये लोकांतिक देवतांके वचनसें, संवत्सर पर्यंत मोटो दान देके, मिति माघसुदि १३ के दिन, रत्नपुरीनगरीमें, छठ्ठतप करके, दधिपर्णनामा वृक्षके नीचे, १००० पुरुषांकेसाथ दीक्षा ग्रहण करी उसवखत चोथो मनपर्यवज्ञान उत्पन्न भयो । प्रथम छठ्ठकोपारणो, धनसिंहके घरे, परमान्नक्षीरसें हुवो । दो वर्ष छद्मस्थपणें विहार करके, रत्नपुरी नगरीमें आये । छठ्ठतप सहित, पोषसुद १५ के दिन, लोकालोक प्रकाशक,

॥※॥ अथ १७ मा श्री कुंथुनाथ स्वामी अधिकारः ॥※॥

॥ ※ ॥ गजपुर नामा नगरमें, इक्ष्वाकुवंशी, सूरनामा राजा हुवा (ति सके) श्री नामा पट्टराणी। जिसकी कूखमें, सर्वार्थ सिद्धि नामा देवलोकसें चवके, मिति श्रावण वदि ९ के दिन, भगवान् उत्पन्न भये। तव मातायें, ग जादि अग्नि शिखापर्यंत, १४ स्वप्न प्रगटपणे मुखमें प्रवेश कर्त्ता देखा (पीछे) सर्व दिशा सुभिक्ष समें, वैशाख वदि १४ के दिन, कृत्तिका नक्षत्रे, जन्म कल्याणक हुवा। उसी वखत ५६ दिशा कुमारीयाँ मिलके सूतिका महो च्छव कीया (पीछे) ६४ इन्द्र मेरुपर्वतपर भगवानकों ले जायके जन्म महो च्छव कीया (तिस पीछे) विश्वसेन राजायें १० दिवस पर्यंत, मोटो जन्म महोच्छव करके, सर्व न्याती गोती प्रजागणकों मनसा भोजन करायके, सर्व के सन्मुख, श्री कुंथु कुमर नाम स्थापन कीया॥ नाम स्थापनका यह हेतु है कि भगवान् गर्भमें आया, तव माता रत्नमई कुंथुवोंकी राशि देखती भई। इससें, कुंथु कुमर नाम दिया॥ वकराका लछनयुक्त, कनकवर्ण, शरीर प्रमा ण ३५ धनुष हुवा। ३ ज्ञानसहित, महा तेजस्वी, १००८ लक्षणालकृत भोगावली कर्मनिर्जरार्थें, चक्रवर्त्ति पद धारण करके, ६४ हजार स्त्रियाकों परण्या (पीछे) अवसर आये लोकांतिक देवताके वचनसें, मिति चैत्रवदि ५ के दिन, हस्तनापुर नगरमें, छठ्ठतप करके, भीलक वृक्षके नीचे १०० पुरुषोंकेसाथ दीक्षा ग्रहण करी (उसवखत) चोथो मनपर्यव ज्ञान उत्पन्न भयो। प्रथम छठ्ठको पारणो, व्याघ्रसिंघके घरे, परमान्नक्षीरसें हुवो। १६ वर्ष छद्मस्थपणें विहार करके, फिर हस्तनापुर नगरमें आये। वहां छठ्ठतप सहित, चैत्रसुदि ३ के दिन लोकालोक प्रकाशक केवल ज्ञान उत्पन्न हुआ (उसवखत) चतुर्निकाय देवगणका कीया भया समोसरणमें १२ परषदाके सन्मुख भगवान् धर्मोपदेश देके चतुर्विध संघकी स्थापना करी॥ भग वानके ६० हजार सर्व साधु हुये (जिसमें) साव प्रमुख ३५ गणधर पदधारक भये॥ दामिनी प्रमुख ६०६०० साध्वी हुई॥ ५००० वैक्रि यलब्धिवत भये॥ २००० वादीविरुदपद धारक भये॥ २५०० अवधि ज्ञानी भये॥३३४० मनपर्यव ज्ञानीभये॥३२०० केवल ज्ञानीभये॥६७० चवदे पूर्वधारीभये॥ १ लाख ७९ हजार श्रावक हुआ॥ ३ लाख ८१

जन्म महोत्छव करके, सर्व न्याती गोती प्रजागणकों मनसा भोजन करायके, सर्वके सन्मुख शांतिकुमर नाम स्थापन कीया ॥ नाम स्थापनका यह हेतु है, कि गर्भमे भगवान्के उत्पन्न होनेसें, पूर्वे जो मरीआदिक रोगोपद्रव बहुतथा, वो शांति हो गया (इस कारणसें) शांति कुमर नाम दिया । हिरणका लांछनयुक्त, कांचनवर्ण, शरीरप्रमाण ४० धनुष हूवा । ३ ज्ञान सहित, महातेजस्वी, १००८ लक्षणालंकृत, भोगावलीकर्म निर्जरार्थे, चक्र वर्तिपद धारण करके, ६४ हजार स्त्रियांकों परणया (पीछे) अवसर आये लोकांतिक देवताके वचनसें, मिति ज्येष्टवदि१४ केदिन, हस्तनापुर नगरमें, छठतप करके नंदीवृक्षके नीचे, १००० पुरुषोंकेसाथ दीक्षा ग्रहण करी (उसवखत) चोथो मनपर्यवज्ञान उत्पन्न हूवो । प्रथम छठको पारणो, सुमित्रके घरे परमान्नक्षीरसें हूवो । १ वर्ष छद्मस्थपणें विहार करके, फिर हस्तनापुर नगरमें आये । वहा छठतप सहित, पोषसुदि ९ के दिन, लोकालोक प्रका शक केवल ज्ञान केवल दर्शन उत्पन्न हूवा (उसवखत) चतुर्निकाय देवगण का कीया हूवा समोसरणमें, १२ परषदाके सन्मुख, भगवान् धर्मोपदेश देके चतुर्विध संघकी स्थापना करी । भगवान्के ६२ हजार सर्व साधु हूये (जिसमें) चक्रायुध प्रमुख ३६ गणधर पदधारक हूये ॥ सुचिप्रमुख ६१६०० साध्वीयों हूई ॥ ६००० वैक्रिय लब्धिवंत भये ॥ २४०० वादी विरुद धारक भये ॥ ३००० अवधि ज्ञानीभये ॥ ४००० मनपर्यव ज्ञानी भए ॥ ४०० केवल ज्ञानी भये ॥ ८०० चवदे पूर्वधारी हूये ॥ १ लाख १९ हजार श्रावक हूवा ॥ ३ लाख ९३ हजार श्राविका हूई ॥ (इत्यादिक) बहुतसे जीवोंका उद्धार करके, अंतसमें समेत शिखरजीपर वतपर, ९०० साधुवोंकेसाथ, १ मासका अणशन ग्रहण कीया । कावस्स ग्ग मुद्राइ आत्मगुणके ध्यानसें, सर्व कर्मोंकों खपायके, मिति ज्येष्ट वदि १३ के दिन, १ लाख वर्षको आयुष्य पूरण करके, सिद्धिस्थानकों प्राप्त भये । शासनदेव गरुड यक्ष । शासनदेवी निर्वाणी । मानव गण । हस्ति योनी । मेष राशि । अंतरमान अर्द्धपल्पोपम । सम्यक्त पायेबाद १२ मे भवमें मोक्ष गये ॥ ※ ॥ इति ५५ बोल गर्भित ५ मा चक्रवर्त्ती, १६ मा श्रीशांतिनाथ स्वामी अधिकारः ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥※॥ अथ १७ मा श्री कुंथुनाथ स्वामी अधिकारः ॥※॥

॥ ※ ॥ गजपुर नामा नगरमें, इक्ष्वाकुवंशी, सूरनामा राजा हुवा (तिसके) श्री नामा पट्टराणी। जिसकी कूखमें, सर्वार्थ सिद्धि नामा देवलोकसें चवके; मिति श्रावण वदि ९ के दिन, भगवान् उत्पन्न भये। तब मातायें, गजादि अग्नि शिखापर्यंत, १४ स्वप्न प्रगटपणे मुखमें प्रवेश कर्ता देखा (पीछे) सर्व दिशा सुभिक्ष समें, वैशाख वदि १४ के दिन, कृत्तिका नक्षत्रे, जन्म कल्याणक हुवा। उसी वखत ५६ दिशा कुमारीयो मिलके सूतिका महोत्सव कीया (पीछे) ६४ इन्द्र मेरुपर्वतपर भगवानको ले जायके जन्म महोत्सव कीया (तिस पीछे) विश्वसेन राजायें १० दिवस पर्यंत, मोटो जन्म महोत्सव करके, सर्व न्याती गोती प्रजागणकों मनसा भोजन करायके, सर्व के सन्मुख, श्री कुंथु कुमर नाम स्थापन कीया ॥ नाम स्थापनका यह हेतु है कि भगवान् गर्भमें आया, तब माता रत्नमई कुंथुवोंकी राशि देखती भई। इससें, कुंथु कुमर नाम दिया ॥ बकराका लछनयुक्त, कनकवर्ण, शरीर प्रमाण ३५ धनुष हुवा। ३ ज्ञानसहित, महा तेजस्वी, १००८ लक्षणालकृत भोगावली कर्मनिर्जरार्थे, चक्रवर्त्ति पद धारण करके, ६४ हजार स्त्रियाकों परण्या (पीछे) अवसर आये लोकांतिक देवताके वचनसें, मिति चैत्रवदि ५ के दिन, हस्तनापुर नगरमें, छठतप करके, भीलक वृक्षके नीचे १०० पुरुषोंकेसाथ दीक्षा ग्रहण करी (उसवखत) चोथो मनपर्यव ज्ञान उत्पन्न भयो। प्रथम छठको पारणो, व्याघ्रसिंघके घरे, परमान्नक्षीरसे हुवो। १६ वर्ष छद्मस्थपणे विहार करके, फिर हस्तनापुर नगरमें आये। वहा छठतप सहित, चैत्रसुदि ३ के दिन लोकालोक प्रकाशक केवल ज्ञान उत्पन्न हुआ (उसवखत) चतुर्निकाय देवगणका कीया भया समोसरणमें १२ परषदाके सन्मुख भगवान् धर्मोपदेश देके चतुर्विध संघकी स्थापना करी ॥ भगवानके ६० हजार सर्व साधु हुये (जिसमें) सांब प्रमुख ३५ गणधर पदधारक भये ॥ दामिनी प्रमुख ६०६०० साध्वी हुई ॥ ५००० वैक्रियलब्धिवंत भये ॥ २००० वादीविरुदपद धारक भये ॥ २५०० अवधि ज्ञानी भये ॥३३४० मनपर्यव ज्ञानीभये ॥३२०० केवल ज्ञानीभये ॥६७० चवदे पूर्वधारीभये ॥ १ लाख ७९ हजार श्रावक हुआ ॥ ३ लाख ८१

हजार श्राविका हुई (इत्यादिक) बहुतसे जीवोंका उद्धार करके, अंत समें समेतशिखरजी पर्वतऊपर,१००० साधुवोंकेसाथ, १ मासका अनशन कीया । काउसग्ग मुद्राई, आत्मगुणके ध्यानसें, सर्वकर्मोंकु खपायके, मिति वैशाखवदि १ के दिन, ९५ हज्जार वर्षको आयुष्य पूरण करके सिद्धि स्थानकों प्राप्ति भये । शासनदेव गधर्वयक्ष । शासनदेवी बला । छागयोनी । वृषराशि । अंतरमान पावपल्योपम । सम्यक्त पायेबाद तीनरेभवमें मोक्षगये॥ ॥ इति ५५ बोलगर्भित ६ ठा चक्रवर्त्ति, १७ मा श्री कुंथुनाथ स्वामीका अधिकार सपूर्णम् ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥※॥ अथ १८ मा श्री अरनाथस्वामी अधिकारः ॥※॥

॥ ※ ॥ गजपुरनामा नगरमें, इक्ष्वाकुवंशी, सुदर्शनाम राजा हुवा (तिसके) देवीनामें पट्टराणी हुई । जिसकी कूखमें सर्वार्थसिद्ध नामा देवलोकसें चवके, मिति फागणसुदि २ के दिन भगवान् उत्पन्न भये । तव मातायें गजादि अग्निसिखापर्यंत १४ स्वप्न प्रगटपणे मुखमें प्रवेशकर्त्ता देखा । पीछे सर्व दिशा सुभिक्षसमें, मिगसर सुद १० के दिन, रेवतीनक्षत्रे जन्मकल्याणक हुवा । उसीवख्त ५६ दिशा कुमारीयों मिलके सूतिका महोछव कीया पीछे ६४ इद्र मेरुपर्वतपर भगवानकों लेजायके जन्ममहोछव कीया । तिस पीछे सुदशनराजायें १० दिवसपर्यंत मोटो जन्ममहोछव करके, सर्व न्याती गोत्ती प्रजागणकों मनसाभोजन करायके, सर्वके सन्मुख, श्री अरनाथ कुमर नाम स्थापन कीया । नाम स्थापनाका यह हेतु है, कि भगवान् जब गर्भमें स्थित हुवा, तव मातायें स्वप्नमें, सर्व रत्नमई अरदेख्या (इसकारणसें) अरकुमर नाम दीया । नद्यावर्त्तका लछनयुक्त, कनकवर्ण, शरीरप्रमाण३० धनुष हुवा । ३ ज्ञानसहित, महातेजस्वी, १००८ लक्षणालंकृत, भोगावली कर्म निर्जरायें, चक्रवर्त्ति पदधारण करके,६४ हज्जार स्त्रियाकोंपरण्या (पीछे) अवसर आये लोकांतिक देवताके वचनसें, मिति मिगसरसुदि ११ के दिन, हस्तनापुर नगरमें, छठ्ठतप करके, आंबाका वृक्षके नीचे, १००० पुरुषोंकेसाथ दीक्षा ग्रहण करी (उसवखत) चोथो मनपर्यवज्ञान उत्पन्न भयो । प्रथम छठ्ठकोपारणो, अपराजितके घरे परमान्नक्षीरसे हुवो । तीनवर्ष छद्मस्थपणे विहार करके, फिर हस्तनापुरमें आये । यहां छठ्ठतप सहित, कार्त्तिकसुदि

१२ के दिन, लोकालोक प्रकाशक केवल ज्ञान उत्पन्न हुवा (उसवखत) चतुर्निकाय देवगणका कीया हुवा समोसरणमें १२ परिषदाके सन्मुख, भगवान् धर्मोपदेश देके चतुर्विध संघकी स्थापना करी। भगवान्के ५० हजार सर्व साधुभये (जिसमे) कुम्भ प्रमुख ३३ गणधर पदधारक भये। रक्षिता प्रमुख ६० हजार साध्वी हुई। ७३०० वैक्रिय लब्धिवत भये ॥ १६०० वादी विरुदपद धारकभये ॥ २५०० अवधि ज्ञानीभये ॥ २५५१ मनपर्यव ज्ञानीभये ॥ २८०० केवल ज्ञानीभये ॥ ६१० चवदे पूर्वधारी भये ॥ १ लाख ८४ हजार श्रावक हुये। ३ लाख ७२००० श्राविका हुई (इत्यादिक) बहुतसे जीवोंका उद्धार करके, अतसमें समेत शिखर जी पर्वतपर, १००० साधुवोंकेसाथ, १ मासका अनशन कीया। काउसग्ग मुद्राइ, आत्मगुणके ध्यानसें, सर्व कर्मोंकों खपायके, मिति मिगसरसुदि १० के दिन, ८४००० वर्षको आयुष्यमान पूरो करके, सिद्धिस्थानकों प्राप्ति भये। शासनदेव यक्षराज। शासनदेवी धारणी। देवगण। हस्तियोनी। मीनराशि। अतरमान १ हजार कोम्वर्ष। सम्यक्त पायेबाद तीसरे भवमें मोक्ष गये ॥ इहा १८ मा, तथा १९ मा, तीर्थंकरके बीचमें, ६ ठा पुरुष पुण्डरीक वासुदेव, तथा आनदनामा बलदेव, बलिनामा प्रतिवासुदेव हुये इस पीछे ८ मा सुभूमनामे चक्रवर्त्ति हुवा। इस पीछे, दत्तनामा ७ मा वासु देव, तथा नदनामा बलदेव, और प्रल्हादनामा प्रतिवासुदेव भये ॥ इति ५५ बोलगर्भित ७ मा चक्रवर्त्ति, १८ मा श्री अरनाथ स्वामीका अधिकार सं०

॥✻॥ अथ १९ मा श्री मल्लिनाथस्वामी अधिकारः ॥✻॥

॥✻॥ मथुरा नामा नगरीमें, इक्ष्वाकुवशी, कुंभनामे राजा हुवा। तिसके प्रभावतीनामें पटराणी हुई। जिसकी कूखमें, जयत विमानथी चवके, मिति फागुण सुदि ४ के दिन, भगवान् उत्पन्न भये। तब मातायें, गजादि अग्निशिखापर्यंत, १४ स्वप्न प्रगटपणे मुखमें प्रवेशकर्त्ता हुवा देखा (पीछे) सर्व दिशा सुभिक्षसमे, मिगसर सुदि ११ के दिन, अश्विनीनक्षत्रे जन्म कल्याणक हुवा। उसीवखत ५६ दिशा कुमारीयों मिलके सूतिका महोत्छव कीया। पीछे ६४ इन्द्र, मेरुपर्वतपर भगवानकों लेजायके, जन्ममहोत्छव कीया (तिस पीछे) सुदर्शनराजायें १० दिवसपर्यंत मोटो जन्ममहोत्छव

करके, सर्व न्याती गोती प्रजागणकों मनसा भोजन करायके, सर्वके सन्मुख श्री मल्लिकुमर नाम स्थापन कीया (नाम स्थापनका यह हेतु है) कि भगवान् जब गर्भमें आया तब भगवानकी माताकों सुगधवाले फूल मालाकी सय्याऊपर, सोनेंका दोहद उत्पन्न भया । सो देवतानें पूरण कीया (इस कारणसें) मल्लिकुमर नाम दीया । कलशाका लछनयुक्त, नीलवर्ण, शरीर प्रमाण २५ धनुष ज्ञवा । ३ ज्ञानसहित, महातेजस्वी, १००८ लक्षणालंकृत, विवाह् कियेविगर, कुमार अवस्थामें रहा (पीछे) अवसर आये लोकांतिक देवताके वचनसें, मिति मिगसरसुदि ११ के दिन, मथुरा नगरीमें, छठ्ठतप करके, अशोकवृक्षके नीचे, ३०० पुरुषोंकेसाथ दीक्षा ग्रहण करी (उसवखत) चोथो मनपर्यवज्ञान उत्पन्न भयो । प्रथम छठ्ठको पारणो, विश्वसेनकेघरे, परमान्नक्षीरसें ज्ञवो । किंचित्काल छद्मस्थपणें रहके, फिर उसीदिन मथुरानगरीमें । छठ्ठ तपसहित, मिगसर सुदि ११ के दिन लोकालोक प्रकाशक केवलज्ञान उत्पन्न ज्ञवा (उसवखत) चतुर्निकाय देवगणका कीया ज्ञवा समोसरणमें १२ परिषदाके सन्मुख भगवान् धर्मोपदेश देके, चतुर्विधसंघकी स्थापना करी । भगवानके ४० हज़ार सर्व साधु भये । (जिसमें) अभिक्षक प्रमुख २८ गणधर पदधारक ज्ञवे ॥ बंधुमती प्रमुख ५५ हज़ार सर्व साध्वी ज्ञई॥ २९०० वेक्रियलब्धिवंत भये ॥ १४०० वादी विरुद धारक भये ॥ २२०० अवधिज्ञानी भये ॥ १७५० मनपर्यव ज्ञानी भये ॥ २२०० केवलज्ञानी भये ॥ ६६८ चवदे पूर्वधारी ज्ञये ॥ १ लाख ८३ हज़ार श्रावक भये ॥ ३७०००० श्राविका ज्ञई, इत्यादिक बज्ञनसे जीवोंका उद्धार करके, अंतसमें समेतसिखरजी पर्वतऊपर, ५०० साधुवोंकेसाथ १ मासका अनशन कीया । काउसग्ग मुद्राइ, आत्मगुणके ध्यानसें, सर्वकर्मोंकों खपायके, मिति फागुणसुदि १२ के दिन, ५५ हज़ार वर्षको आयुष्यमान पूरो करके, सिद्धि स्थानकों प्राप्ति भये । शासनदेव कुबेरयक्ष । शासनदेवी धरणप्रिया । देवगण । अश्वयोनि । मेषराशि । अंतर मान ५४००००० वर्ष, सम्यक्तपायेबाद तीसरे भवमें मोक्ष गया ॥ ॥

॥ इति १९ मा श्री मल्लिनाथस्वामी अधिकारः १९ ॥ ॥

॥※॥ अथ २० मा श्री मुनिसुव्रतस्वामी अधिकारः ॥※॥

॥ ※ ॥ राजगृही नामा नगरीमें, हरिवंशी, सुमित्र नामें राजा हुवा (तिसके) पद्मावती नामें पट्टराणी भई । जिसकी कूखमे, अपराजित नामा अनुत्तर विमानसें चवके, मिति श्रावण सुदि १५ के दिन, भगवान् उत्पन्न भया । तव मातायें गजादि अग्नि शिखापर्यंत, १४ स्वप्न प्रगटपणें मुखमें प्रवेश कर्त्ता हुवा देखा, पीछे सर्व दिशा सुभिक्षसमें, ज्येष्ट वदि ८ के दिन, श्रवण नक्षत्रें, जन्म कल्याणक हुवा (उस वखत) ५६ दिशा कुमारीयों मिलके, सूतिका महोछव कीया (पीछे) ६४ इन्द्र, मेरु पर्वतपर भगवान् कों ले जायके, जन्म महोछव कीया । तिस पीछे, सुमित्र राजायें १० दिवसपर्यंत, वडो जन्म महोछव करके, सर्व न्याती गोती प्रजागणकों मनसा भोजन करायके, सर्वके सन्मुख, मुनि सुव्रत कुमर नाम स्थापन कीया। (नाम स्थापनका यह हेतु है) कि भगवान् गर्भमें स्थित हुवा, तव माता मुनिकी तरे, भले व्रतवाली होती भई (इस हेतुसे) मुनि सुव्रत नाम दीया । कच्छपके लंछनयुक्त । श्यामवर्ण, शरीर प्रमाण २० धनुष हुवा । ३ ज्ञान सहित, महा तेजस्वी, १०८ लक्षणालंकृत, भोगावली कर्म निर्जरार्थे, विवाह करके, क्रमसें राज्यपद धारण कीया । पीछे अवसर आये, लोकातिक देवताके वचनसें, मिति फागुण वदि १२ के दिन, राजगृही नगरीमें, छठ तप करके, चंपेका वृक्षके नीचे, १००० पुरुषोंकेसाथ, दीक्षा ग्रहण करी (उस वखत) चोथो मनपर्यव ज्ञान उत्पन्न भयो । प्रथम छठको पारणो, ब्रह्मदत्तके घरे, परमान्न क्षीरसें हुवो । ११ मास छद्मस्थपणें विहार करके, फिर राजगृही नगरीमें आये । वहा छठ तप सहित, फागुण वदि १२ के दिन, लोकालोक प्रकाशक, केवल ज्ञान उत्पन्न हुवा (उस वखत) चतुर्निकाय देवगणका कीया हुवा समोसरणमें, १२ परिषदाके सन्मुख, भगवान् धर्मोपदेश देके, चतुर्विध सघकी स्थापना करी । भगवानके ३० हजार सर्व साधु भये (जिसमें) मल्लि प्रमुख १८ गणधर हुये पुष्पवती प्रमुख ५० हजार सर्व साध्वी भई ॥ २००० वैक्रिय लब्धिवत भये ॥ १२०० वादी विरुद धारक भये ॥ १८०० अवधि ज्ञानी भये ॥ १५०० मनपर्यव ज्ञानी भये ॥ १८०० केवलज्ञानी भये ॥ ५०० चवदे

पूर्वधारी भये । १ लाख ७२ हजार श्रावक भये ॥ ३ लाख ५० हजार श्राविका भई (इत्यादिक) बहुतसे जीवोंका उद्धार करके, अतसमें समेत शिखरजी पर्वतऊपर, १००० साधुवोंके साथ, १ मासका अनशन कीया ॥ काउसग्ग मुद्राई, आत्मगुणके ध्यानसें, सर्व कर्मोंकों खपायके, मिति ज्येष्ट वदि ए के दिन, ३० हजार वर्षको आयुष्य मान पूरो करके, सिद्धि स्थानकों प्राप्ति भये । शासनदेव वरुण यक्ष । शासनदेवी नर दत्ता । देवगण । वानर योनि । मकर राशि । अंतरमान ६ लाख वर्ष । सम्यक्त पायेबाद, तीसरे भवमें मोक्ष गये ॥॥ इति ५५ बोल गर्भित २० मा श्री मुनि सुव्रत स्वामी अधिकारः ॥ ॥ ॥॥

॥॥ अथ २१ मा श्री नमिनाथस्वामी अधिकारः ॥॥

॥ ॥ मथुरा नामा नगरीमें, इक्ष्वाकुवंशी, विजय नामा राजा हुवा तिसके विप्रा नामें पट्टराणी भई । जिसकी कूखमे, प्राणत नामा देव लोकसें चवके, मिति आशोज सुदि १५ के दिन, भगवान् उत्पन्न भया । (तब) मातायें गजादि अग्नि शिखापर्यंत, १४ स्वप्न प्रगटपणें मुखमे प्रवेश कर्ता हुवा देखा (पीछे) सब दिशा सुभिक्षसमें, मिति श्रावण वदि ८ के दिन, अश्विनी नक्षत्रे जन्म कल्याणक हुवा (उसी वखत) ५६ दिशा कुमारीयों मिलके, सूतिका महोत्छव कीया (पीछे) ६४ इद्र मेरु पर्वतपर भगवानकों ले जायके जन्म महोत्छव कीया (तिस पीछे) विजय राजायें १० दिवसपर्यंत मोटो जन्म महोत्छव करके, सब न्याती गोती प्रजा गणकों मनसा भोजन करायके, सर्वके सन्मुख, श्री नमीनाथ कुमर नाम स्थापन कीया (नाम स्थापनका यह हेतु है कि) भगवान् माताके गर्भमे आये, तब वेरी राजायोंनेभी नमस्कार करा (इस कारणसें) नमी कुमर नाम दीया । कमलका लछनयुक्त । पीतवर्ण । शरीरका प्रमाण १५ धनुष हुवा । ३ ज्ञान सहित, महा तेजस्वी, १००८ लक्षणालकृत, भोगा वली कर्म निर्जरार्थे, विवाह करके, राज्यपद धारन किया । पीछे अवसर आये, लोकांतिक देवताके वचनसें, मिति आषाढ वदि ए के दिन, मथुरा नगरीमें छठ तप करके, १ हजार पुरुषोंकेसाथ, बकुल वृक्षके नीचे, दीक्षा ग्रहण करी । उस वखत चोथो मन पर्यव ज्ञान उत्पन्न भयो । प्रथम छठको पार

णो, दिन्न कुमारके घरे, परमान्न क्षीरसें भवो । ए मास छद्मस्थपणे विहार करके फिर मथुरा नगरीमें आये । वहा छठ्ठतप सहित, मिगसरसुदि ११ के दिन, लोकालोक प्रकाशक, केवल ज्ञान उत्पन्न भवा (उसवखत) चतुर्निकाय देवगणका कीया भवा समोसरणमें, १२ परिषदाके सन्मुख भगवान् धर्मोपदेश देके चतुर्विध संघकी स्थापना करी । भगवानूके २० हजार सर्व साधु भये (जिसमें) शुभप्रमुख १७ गणधर भये । अनिला प्रमुख ४१ हजार सर्व साध्वी भई ॥ ५००० वैक्रियलब्धिवत भये ॥ १००० वादी विरुद धारक भये ॥ १६०० अवधि ज्ञानी भये १२५० मनपर्यव ज्ञानी भये ॥ १६०० केवल ज्ञानीभये ॥ ४५० चवदे पूर्वधारीभये ॥ १ लाख ७० हजार श्रावक भये ॥ ३ लाख ४८ हजार श्राविका भई (इत्यादिक) बहुतसे जीवोका उध्धार करके, अंतसमें समेतशिखरजी पर्वतऊपर १००० साधुवोंकेसाथ १ मासका अनशनकीया । काउसग्ग मुद्राइ आत्मगुणके ध्यानसे, सर्व कर्मोकों खपायके, मिति वैशाखवदि १० के दिन, १० हजार वर्षको आयुष्यमान पूरो करके, सिध्दि स्थानकों प्राप्ति भये । शासनदेव भृकुटीयक्ष । शासनदेवी गंधारी । देवगण । अश्वयोनि । मेषराशि । अंतरमान ५००००० वर्ष, सम्यक्त पायेबाद तीसरेभवमें मोक्षगये ॥ इनोंके वारे हरिषेणनामा १० मा चक्रवर्त्ति भवा ॥ ओर २१ मा (तथा) २२ मा तीर्थंकरके अंतरमें, ११ मा जयनामा चक्रवर्त्ति भआ ॥ इति २१ मा श्री नमिनाथस्वामी अधिकार संपूर्णम् ॥ ※ ॥ ॥※॥

॥※॥ अथ २२ मा श्री नेमिनाथस्वामी अधिकारः ॥※॥

॥ ※ ॥ सोरीपुरनामा नगरमें, हरिवंशी, समुद्रविजयनामें राजा भवा तिसके शिवादेवी नामें पट्टराणी । जिसकी कूखमें, अपराजितनामें देव लोकसें चवके, मिति कार्त्तिकवदि १२ के दिन, भगवान् उत्पन्न भया । तब मातायें गजादि अग्निशिखापर्यंत १४ स्वप्ना प्रगटपणें मुखमें प्रवेशकर्त्ता देखा । पीछे सर्व दिशा सुभिक्षसमें, मिति श्रावणसुदि, ५ के दिन, चित्रा नक्षत्रे, जन्मकल्याणक भवा (उसीवखत) ५६ दिशा कुमारीयों मिलके सूतिका महोछव कीया (पीछे) ६४ इंद्र मेरुपर्वतपर भगवानकों लेजायके जन्ममहोछव कीया । तिस पीछे समुद्रविजय राजायें १० दिन पर्यंत मोटो

१८००० श्राविका भई ॥ इत्यादिक बहुतमे जीवोंका उद्धार करके, अंतसमें पावापुरी नगरीमें, छठ तपका अनशन कीया ॥ पद्मासन मुद्राइ, आत्मगुणकेध्यानसें, सर्व कर्मोंकों खपायके, मिति कार्त्तिकवदि अमावशके दिन, एकाकी, ७२ वर्षका आयुष्यमान पूरण करके, सिद्धि स्थानकों प्राप्ति भये शासनदेव ब्रह्मशांति यक्ष । शासनदेवी सिद्धायिका । मानव गण । महिष योनि । कन्या राशि । सम्यक्त पायेबाद २७ में भव मोक्ष गये, श्री महावीरस्वामी मोक्ष गये पीछे, तीन वर्ष, साढी आठ महिना गए, चौथा आरा उतरा, और पाचमा आरा सरू हुवा ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ इति २४ श्री वर्द्धमान स्वामीका ८८ बोल गर्भित अधिकार इसी तरें चोवीश भगवान्का नाम मात्र दृष्टात कहा ॥ अब २४ भगवान् के, १२ चक्रवर्त्ति, ९ वासुदेव, ९ बलदेव, ९ प्रति वासुदेवादि बमे २ उत्तम पुरष मोक्षगामी राजादिक भए, जिन सर्वका नाम मात्र दृष्टात इहा लिखता हु ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ १२ चक्रवर्त्ति अधिकारः ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ पहला श्री भरत चक्रवर्त्तिः ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ विनीता नयरीमें प्रथम भगवान् श्री ऋषभदेव नामें राजा हुवा जिनोंके सुमगला नामे राणी, जिसका पुत्र भरत नामें पहला चक्रवर्त्ति हुवा इनके ६४ हजार स्त्रीयाँ हुई, जिसमें मुख्य स्त्रीरत्न सुदामा नामें भई । जब चक्ररत्नादिक १४ रत्न उत्पन्न हुवा, तब इस भरत क्षेत्रके ६ खम में राज्य किया । अतमें आरीसा महलमें, शुद्ध भावनासें केवलग्यान पाय के चारित्र ग्रहण करके, ८४ पूर्व लाख वरषको आयुष्य पूरण करके मोक्षकों प्राप्त हुवा ॥ १ ॥ इति ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ दूसरा सगर चक्रवर्त्ति. ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अयोध्या नगरीमें, सुमित्र नामें राजा हुवा, जिसके जसवती नामें पटराणी, जिनके पुत्र सगर नामें दूसरा चक्रवर्त्ति हुवा । इनकै भद्रा नामें स्त्रीरत्न भई । जब चक्ररत्नादिक, १४ रत्न उत्पन्न हुए, तब भरत क्षेत्रके ६ खमकों साधके राज्य किया । अतमे चारित्र ग्रहण करके

७२ पूर्व लाख वरषको आयुष्य पूरण करके, सिद्धि स्थानको प्राप्त हुवा ॥

॥ ※ ॥ तीसरा मघवा नामे चक्रवर्त्तिः ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ सावत्थी नगरीमें, समुद्रविजय नामे राजा, जिसके सुभद्रवती नामें पट्टराणी हुई, जिनके पुत्र मघवानामें तीसरा चक्रवर्त्ति हुवा । इनके सुभद्रानामें स्त्रीरत्न हुई । अतमे शुभभावसे चारित्र लेके सर्व पाच लाख वरषको आयुष्य पुरण करके देवलोकको प्राप्त हुवा ॥ इति ॥ ३ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ चोथा सनत्कुमारनामे चक्रवर्त्तिः ॥ ※ ॥

॥※॥ हथनापुरनामा नगरमें, अश्वसेननामें राजा, जिसके सहदेवीनामें पट्टराणी, जिनकेपुत्र सनत्कुमार नामें चोथा चक्रवर्त्ति हुवा । इनके जया नामें स्त्रीरत्न भई । ६ खंडका राज्य किया, अंतमें शुभभावसें चारित्र ग्रहण करके, तीन लाख वरषका आयुष्य पूर्ण करके देवलोकको प्राप्त हुवा॥ इति॥

॥ ※ ॥ अथ पांचमा, श्री शांतिनाथ चक्रवर्त्तिः ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ हथनापुरनामा नगरमें, विश्वसेननामें राजा, जिसके अचिराना में पट्टराणी, जिनकेपुत्र शोलमा भगवान्, पाचमा चक्रवर्त्ति श्री शातिनाथ स्वामी हुवा, इनके विजयानामें स्त्रीरत्न भई, ७ खंडका राज्य किया, अव सर आये चारित्र लेके केवल ग्यानपायके सर्व एक लाख वरपको आयुष्य पूरण करके सिद्धिस्थानको प्राप्त हुवा ॥ इति ॥ ५ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ ६ ठा, श्री कुंथुनाथचक्रवर्त्तिः ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ हथनापुरनामा नगरमे, सूरनामें राजा, जिसके श्रीनामें पट्टराणी जिनके पुत्र १७ मा भगवान, ७ठा चक्रवर्त्ति श्री कुंथुनाथस्वामी हुवा । इनके कन्हसिरीनामे स्त्रीरत्न हुई, ७ खंडका राज्य किया । अवसर आये चारित्र लेके केवल ग्यान पायके, ७५ हजार वरपका आयुष्य पूरन करके मोक्षको प्राप्त हुवा ॥ इति ॥ ६ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ ७ मा श्री अरनाथनामे चक्रवर्त्तिः ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ हथनापुरनामा नगरमें, सुदर्शननामें राजा, जिसके देवीनामें पट्टराणी, जिनकेपुत्र १८ मा भगवान्, ७ मा चक्रवर्त्ति, श्री अरनाथस्वामी हुवा । इनके पदमश्रीनामें स्त्रीरत्न हुई । ७ खंडमें राज्य किया, अंतमें

चारित्र लेके केवल ग्यान पायके ६० हज़ार वरपका आयुष्य पूरण करके मोक्षकों प्राप्त ज़वा ॥ इति ॥ ७ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ ८ मा सुभूमनामे चक्रवर्त्ति ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ हथनापुरनामा नगरमे, कीर्तिवीर्यनामें राजा जिसके तारानामें पट्टराणी, जिनके पुत्र सुभूमनामें आठमा चक्रवर्त्ति ज़वा । इनके सूरश्री नामें स्त्रीरत्न ज़ई । ७ खम्मका राज्य किया । अतमें ३० हज़ार वरपका आयुष्य पूरण करके सातमी नरक पृथ्वीमे उत्पन्न ज़वा ॥ इति ॥ ८ ॥

॥ ॐ ॥ ९ मा पद्मनामे चक्रवर्त्तिः ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ वणारसी नामें नगरीमें, पद्मोत्तर नामा राजा, जिसके ज्वाला नामें पट्टराणी, जिसके पुत्र महापद्म नामें नवमा चक्रवर्त्ति ज़वा । इनके वसुंधरा नामें स्त्रीरत्न ज़ई । अतमें १९ हज्जार वरपको आयुष्य पूरण करके मोक्षकों प्राप्त ज़वा ॥ इति ॥ ९ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ १० मा हरिषेण नामे चक्रवर्त्तिः ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ कपिलपुर नामा नगरमे, हरि नामें राजा, जिसके मेरा नामें पट्टराणी, जिनके पुत्र हरिषेण नामें दशमा चक्रवर्त्ति ज़वा । इनके देवी नामें स्त्रीरत्न ज़ई । अतमें दश हज़ार वरपको आयुष्य पूरण करके सिद्धि स्थानकों प्राप्त ज़वा ॥ इति ॥ १० ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ ११ मा, जय नामे चक्रवर्त्तिः ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ राजगृही नामें नगरीमें, विजय नामें राजा, जिसके विप्रा नामें पट्टराणी, जिसके पुत्र जय नामें इग्यारमा चक्रवर्त्ति ज़वा । इनके वलज्जी नामें स्त्रीरत्न ज़ई । अतमें तीन हज़ार वरपको आयुष्य पूरण करके सिद्धि स्थानकों प्राप्त ज़वा ॥ इति ॥ ११ ॥ ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ १२ मा ब्रह्मदत्त नामे चक्रवर्त्ति ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ कपिलपुर नामा नगरमें, ब्रह्म नामें राजा, जिसके चूलणी नामें पट्टराणी, जिसके पुत्र ब्रह्मदत्त नामें बारमा चक्रवर्त्ति ज़वा । इनके कुरमती नामें स्त्रीरत्न ज़ई । अतमे १६ से वरपको आयुष्य पूरण करके सातमी नरक पृथ्वीमें नारकी पणें उत्पन्न ज़वा ॥ इति ॥ १२ ॥ ॐ ॥

॥※॥ १२ चक्रवर्त्ति समानऋद्धी अधिकारः ॥※॥

॥ ※ ॥ ये १२ चक्रवर्त्ति काश्यपगोत्रमें ऊये, इन सर्वका कंचनसमान शरीरकावर्ण ऊवा । इस नरतक्षेत्रका ६ खममें राज्य किया । नवनिधान १४ रत्न, १६ हज्जार यक्ष, ३२ हज्जार मुगट वद्धराजा, ६४ हज्जार अंतेउरी, एकेक राणीसाथे दोदो वरागना होय, तब एक लाख ८२ हज्जार वरागना, ८४ लाख हाथी, ८४ लाख घोमा, ८४ लाख रथ, ९६ कोटि प्यादा । ३२ हज्जार नाटक, ३२ हज्जार वमादेश, ३२ हज्जार वेलाउल । १४ हज्जार जलपथ । २१ हज्जार सन्निवेस । १६ हज्जार राजधानी ५६ अंतरद्वीप । ९९ हज्जार द्रोणमुख । ९६ कोटि ग्राम । ४९ हज्जार उद्यान । २८ हज्जार श्रेणि प्रश्रेणी । ८० हज्जार पमित । ७ कोमि कौटंबिक । १६ हज्जार आगर । ३२ कोमि कुल । १४ हज्जार महामंत्रवी, १४ हज्जार बुद्धिनिधान । १६ हज्जार म्लेच्छराज्य । २४ हज्जार कर्पट । २४ हज्जार सवाधन । १६ हज्जार रत्नाकर । २४ हज्जार खेमा सुन्य । २६ हज्जार द्वीप । ४८ हज्जार पाटण । ५० कोमि दीवमिया । ८४ लाख महानिसाण । १० कोमि धजापताका । ३६ कोमि अंगमर्दक । ३६ कोमि आनरण धारक । ३६ कोमि सूपकार । तीन लाख नोजन थानक । एक कोमि गोकुल । तीन कोमि हल । ३६० सुआर । ९९ कोमि माटविक ९९ कोमि दासीदास । ९९ लाख अंगरक्षक । ९९ कोमि नोई । ९९ कोमि कावमिया । ९९ कोमि मसूरिया । ९९ कोमि थइयायत । ९९ कोमि पटतारक । ९९ कोमि मीगवोला, १ कोमि ८० हज्जार रासन । १२ कोमि सुखासण । ६० कोमि तबोली, ५० कोमि पखालिया ॥ इत्यादि अनेक प्रकारकी ऋद्धी सर्व चक्रवर्त्तिके समान होती है ॥ इति ॥ ※ ॥

॥※॥ अथ नववासुदेव, बलदेवका दृष्टांत लि० ॥※॥

॥※॥ १ तृपृष्ठ वासुदेवः १ अचल बलदेवः ॥※॥

॥ ※ ॥ ११ मा नगवान् श्री श्रेयांसनाथ स्वामीके वारे, शोनपुरनामा नगरमें, प्रजापतिनामें राजा ऊवा, जिसके मृगावतीनामे पट्टराणी, जिसकी कूखसें सातमा देवलोकसें आयके, ७ स्वप्नसूचित तृपृष्टनामें पुत्र ऊवा ॥

और दूसरी भद्रानामे राणी, जिसकी कूखसें ४ स्वप्ना सूचित अचलनामें पुत्र हुवा। ये क्रमसें बधता थका अपना वैरी अश्वग्रीव प्रतिवासुदेवकों युद्धमें मारके, पहला वासुदेव हुवा। चक्रवर्त्तिसें आधा अर्थात् इस भरतक्षेत्रका तीन खण्डमें राज्य किया। नीलेवर्ण, देहमान ८० धनुषका हुवा, अतमें ८४ पूर्व लाख वरषका आयुष्य पूरण करके तृपृष्ट वासुदेव सातमी पृथ्वीमें गया। और बलदेवका उज्जलवर्ण, शरीर प्रमाण ८० धनुष हुवा, अतमें भाईका मरण देख वैराग्यसें चारित्र ग्रहण किया, क्रमसें केवलज्ञान पायके ८५ पूर्व लाख वरषका आयुष्य पूरण करके मोक्ष गया ॥ इति ॥ १ ॥ ※ ॥

॥※॥ २ द्विपृष्ट वासुदेवः, २ विजय बलदेवः ॥※॥

॥ ※ ॥ १२ मा तीर्थंकरके वारे, द्वारामतीनामा नगरमें, ब्रह्मनामें राजा, जिसके उमानामें पट्टराणी, जिसकी कूखमें १० मा देवलोकसें आयके, ७ स्वप्ना सूचित, द्विपृष्टनामें पुत्र हुवा ॥ और दूसरी सुभद्रानामें राणी, जिसकी कूखसें ४ स्वप्ना सूचित विजयनामें पुत्र हुवा। ये क्रमसें युवान अवस्थाकों प्राप्त हुवा, तब अपना वैरी तारकनामे प्रतिवासुदेवकों मारके, दूसरा वासुदेव, बलदेव हुवा। तीन खण्डमें राज्य किया, वासुदेवका नीला वर्ण, देहमान ७० धनुष हुवा। अतमे ७२ पूर्वलाख वरपका आयुष्य पूरण करके, छट्ठी नरक पृथ्वीमें गया। और विजयबलदेवका उज्जलवर्ण, शरीरप्रमाण ७० धनुष हुवा, अतमें शुद्धभावसें चारित्र लेके केवलज्ञान पायके ७३ पूर्वलाख वरपको आयुष्य पूरण करके मोक्षमें गया ॥ इति ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ ३ स्वयम्भु वासुदेव ३ भद्र बलदेवः ॥ ※ ॥

॥※॥ १३ मा तीर्थंकरके वारे, कोई द्वारका नामा नगरीके विषे, रुद्र नामें राजा हुवा। जिसके पृहवी नामें पट्टराणी, जिसकी कूखसें, ६ ठा देवलोकसें आयके, ७ स्वप्ना सूचित स्वयम्भू नामें पुत्र हुवा ॥ और सुप्रभा नामें दूसरी राणी, जिसकी कूखसें ४ स्वप्ना सूचित भद्र नामें पुत्र हुवा। ये क्रमसें युवान अवस्थाकों प्राप्त भया, तब अपना वैरी मेरुक नामें प्रतिवासुदेवकों मारके, तीसरा वासुदेव बलदेव हुआ। इस भरत क्षेत्रके तीन खण्डमें राज्य किया। वासुदेवका नीलावर्ण, देहमान ६० धनुष हुआ।

अतमें ६० पूर्व लाख वरपका आयुष्य पूरण करके, ठठी नरक पृथ्वीमें गया। और न्नद्र वलदेवका उज्जल वर्ण, शरीरप्रमाण ६० धनुपन्नया, अत में चारित्र अगीकार करके, केवल ग्यान पायके सर्व ६५ पूर्वलाख वरपको आयुष्य पूरण करके मोक्ष गया ॥ इति तीसरा वासुदेव, वलदेव दृष्टांतम् ॥

॥ ॥ अथ ४ पुरपोत्तम वासुदेवः, सुप्रभु वलदेवः ॥ ॥

॥ ※ ॥ १४ मा तीर्थंकरके वारे, वारवई नामा नगरीमें, एक सोम नामें राजा ज्ञवा। जिसके सीता नामें पट्टराणी, उसकी कूखसें ८ मा देव लोकसे आया ज्ञवा, ७ स्वप्ना सूचित, पुरपोत्तम नामें पुत्र ज्ञआ। और दूसरी सुदर्शना नामें राणी, जिसकी कूखसें ४ स्वप्ना सूचित सुप्रज्ञ नामें पुत्र ज्ञआ। ये जव युवान अवस्थाकों प्राप्त न्नया, तव अपना वैरी, मधु नामें प्रति वासुदेवकों मारके, चोथा वासुदेव, वलदेव, इस न्नरत क्षेत्रमें ज्ञआ। तीन खम्मे अखंम राज्य किया। वासुदेवका नीलावर्ण, और शरीर प्रमाण ५० धनुपका ज्ञवा। और अतमें ३० लाख पूरवको आयुष्य पूरण करके ठठी पृथ्वीमि गया ॥ और वलदेवका उज्जलवर्ण शरीर प्रमाण ५० धनुप ज्ञवा। अतमें ५५ पूर्व लाख वरपको आयुष्य पूरण करके मोक्ष गया ॥ इति चोथा वासुदेव, वलदेव, प्रति वासुदेव, दृष्टांतम् ॥ ॥ ※ ॥

॥ ॥ अथ ५ मा पुरपसिंह वासुदेवः, सुदर्शन वलदेवः ॥ ॥

॥ ※ ॥ १५ मा तीर्थंकरके वारे, अश्वपुरी नामा नगरीमें, शिव नामें राजा ज्ञवा। जिसके अम्मा नामें पट्टराणी, उसकी कूखसें, चोथा देवलोकसें आया ज्ञवा, ७ स्वप्ना सूचित, पुरपसिंह नामें पुत्र ज्ञवा। और दूसरी विजया नामें राणी, जिसकी कूखसें ४ स्वप्ना सूचित, सुदर्शन नामें पुत्र ज्ञवा। ये जव युवान अवस्थाकों प्राप्त ज्ञवा। तव अपना वैरी निसुन्न नामा प्रति वासुदेवकों मारके पाचमा वासुदेव, वलदेव इस न्नरत क्षेत्रमें न्नया। तीन खम्मे राज्य किया। इसमें वासुदेवका नीला वर्ण, सरीर प्रमाण ४५ धनुप ज्ञवा, अतमें १ लाख वरपका आयुष्य पूरण करके, ठठी नरक पृथ्वीमें गया ॥ और वलदेवका उज्जलवर्ण, शरीर प्रमाण ४५ धनुप ज्ञवा। अतमें एक लाख ७० हजार वरपको आयुष्य पूरण करके मोक्ष गया ॥ इति पाचमा वासुदेव, वलदेव, प्रति वासुदेव दृष्टांतम् ॥ ※ ॥ ॥※॥

॥※॥ अथ ६ पुरुषपुंडरीक वासु० आनंदबलदेवः ॥※॥

॥ ※ ॥ अगरमा जगणीसमा तीर्थंकरके अंतरमें, चक्रपुरीनामा नगरीमें महाशिवनामें राजा, जिसके लक्ष्मीनामें पट्टराणी, उनकी कूखसें पांचमा देवलोकसें आया हुवा, सात स्वप्न सूचित, पुरुष पुंडरीकनामें पुत्र हुवा । और दूसरी वैजयंतीनामें राणी, उसकी कूखसें, चार स्वप्न सूचित आनंद नामें पुत्र हुवा । ये दोनु जब युवान अवस्थाकों प्राप्त भये । तब अपना वैरी, बलीनामा छठा प्रतिवासुदेवकों मारके छठा वासुदेव बलदेव हुये । तीन खंडमें राज्य किया। इसमें वासुदेवका नीलावर्ण, सरीरप्रमाण २९ धनुष हुवा । अंतमें ६५ हजार वरषका आयुष्य पूरण करके, छठी नरक पृथ्वीमें गया । और बलदेवका उज्जलवर्ण, सरीरप्रमाण २९ धनुष हुवा । अंतमें शुभभावसें चारित्र लेके, केवलग्यान पायके, सब ८५ हजार वरषका आयुष्य पूरण करके सिद्ध गतिमें गया ॥ इति छठा वासुदेव बलदेव दृष्टांतम् ॥

॥※॥ अथ ७ मा दत्त वासुदेवः नंदन बलदेव ॥※॥

॥ ※ ॥ १९ मा तीर्थंकरके वारे, वणारसीनामा नगरीमें, अग्नसिंहनामें राजा हुवा । जिसके सेसवतीनामें पट्टराणी, उसकी कूखसें, पहला देवलोकसें आया हुवा, सात स्वप्न सूचित दत्तनामें पुत्र हुवा। और दूसरी जयंती नामें राणी जिसकी कूखसें चार स्वप्न सूचित नंदननामें पुत्र हुआ, ये दोनु जब युवान अवस्थाकों प्राप्त भये, तब अपना वैरी प्रल्हादनामा प्रतिवासुदेव कों चक्ररत्नसें मारके, सातमा वासुदेव बलदेव, हुये । तीन खंडमें राज्य किया ॥ इसमें वासुदेवका नीलावर्ण, सरीरप्रमाण २६ धनुष हुवा । अंतमें ५६ हजार वरषका आयुष्य पूरण करके, पांचमी नरक पृथ्वीमें गया ॥ और नंदन बलदेव, अपना भाईका मरण देखके, वैराग्यसें सर्वे चारित्र ग्रहण किया । क्रमसें केवल ग्यान पायके सर्व ६५ हजार वरषका आयुष्य पूरण करके मोक्ष गया ॥ इति सातमा वासुदेव बलदेव दृष्टांतम् ॥

॥※॥ ८ मा लछमण वासुदेव, रामचंद्र बलदेवः ॥ ※॥

॥ ※ ॥ २० मा तीर्थंकर श्री मुनिसुव्रत स्वामीकेवारे, अयोध्यानामा नगरीमें, दशरथनामें राजा हुवा, जिसके सुमित्रानामें पट्टराणी, उसकी

कूखसे तीसरा देवलोकसे आया हुवा, सात स्वप्न सूचित लछमणनामें पुत्र हुवा। और दूसरी अपराजिता नामें राणी जिसकी कूखसे चार स्वप्न सूचित रामचंद्र नामें पुत्र हुवा। ये दोनु जब युवान अवस्थाकों प्राप्त भये। तब शीताकों अपहरण करनेवाला, अपना वैरी, लंकाका राजा, रावण प्रतिवासुदेवकों मारके, आठमा वासुदेव बलदेव हुये। इस भरतक्षेत्रके ३ खम्मे राज्य किया, इसमे लछमण वासुदेवका नीलावर्ण, सरीर प्रमाण १६ धनुषका हुवा, अंतमें १२ हजार वरषका आयुष्य पूरण करके चोथी पृथ्वीमें उत्पन्न भया। और रामचद्र बलदेव, अपना भाईका मरण देखके, वैराग्यसें चारित्र ग्रहण किया। क्रमसें केवल ज्ञान पायके, सर्व १५ हजार वरषका आयुष्य पूरण करके, सिद्धगिरी पर्वत ऊपर मोक्ष गया॥ इसी रामचद्रजीको बहुतसे हिंदू लोक, अपना ईश्वरावतार मानते है॥ और रावणकों दशमुख वाला राक्षस कहते हैं, तथा लोकीक रामायणमेंभी रावणके १० मुख लिखे हैं, सो ठीक नही हैं, क्योंकि मनुष्यके स्वाभाविकही दशमुख कदापि नही हो सके हैं, पद्म चरित्रादिकमें लिखा हे, कि रावणके बमे बमेरोंकी परपराय सें, एक बमा नव माणिक रत्नका हार चला आता था, सो रावणने बालावस्थासें अपने गलेमें पहन लिया था। और वे नौंही माणक बहुत बमे थे। चार चार माणक दोनु स्कध तरफ जमे हुये थे। एक बीचमेंथा, ऐसें नव माणकमे नव मुख दीखता था, और एक रावणका असली मुख था इसवास्ते दशमुखवाला रावण कहा जाता हे। और रावणके समयसेंही हिमालयके पहामंमे बद्री नाथका तीर्थ उत्पन्न हुआ है। तिसकी उत्पत्ति जैन धर्मके शास्त्रोंसे ऐसे जानी जाती हे, कि यह असली पार्श्वनाथकी मूर्त्ति थी, तिसकाही नाम बद्रीनाथ रक्खा गया है। इसका विशेष अधिकार देखना होय तो पद्म चरित्र पार्श्वचरित्रसें जाण लैना॥ इति आठमा वासुदेव, बलदेव दृष्टांतम्॥ ※॥ ॥ ※॥

॥※॥ अथ ९ मा कृष्ण वासुदेवः, बलभद्र, बलदेवः, ॥※॥

॥ ※ ॥ २२ मा श्री नेमिनाथ भगवानूके वारे, शोरीपुर नामा नगरमें, समुद्र विजयजी नामें राजा, जिसका छोटा भाई वसुदेवजी हुवा, जिसके पूर्व नियाणेके योगसें ७२ हजार स्त्रीयाँ हुई, जिसमे मुख्य देवकी नामें

राणी, जिसकी कूखसें सातमा देवलोकसें आया हुवा सात स्वप्न सूचित कृष्ण नामें पुत्र हुवा । और दूसरी रोहणी नामें राणी । जिसकी कूखसें चार स्वप्न सूचित बलभद्र नामें पुत्र हुवा, इन दोनुकों कंसके भयसें वसुदेवजी अपना गोकुलमें, नंद गोवालियेके घरे, कितनेक वरष छिपे हुवे रक्खे । जब ये दोनुं युवानावस्थाकों प्राप्त भये । तब प्रथम तो अपना भाइयोंकों मारनेंवाला, कंसकों वैरी जानके मल्ल अखाड़ेमें आयके, कंसकों मारा, जब यादव लोक बहुतसे भयकों प्राप्त हुवे, कि कंसका सुसरा जरासिंध प्रति वासुदेव अभी सर्वमें मोटा राजा हैं, इससें कदास यादवोंको क्षय नहि कर देवै, इस भयसें शौरीपुर, तथा मथुरा नगरीसें, यादव सर्व निकलके समुद्रके किनारे जायके, उहां द्वारका नगरी बसायके कितनेक वरष सुखसें रहा । पीछे जब जरासिंध अपनी सेना लेके युद्ध करनेंकों आया । तब कृष्ण बलभद्र युद्धमें जरासिंध प्रति वासुदेवकों मारके, नवमा वासुदेव, बलदेव हुवा । इसमें वासुदेवका श्यामवर्ण, सरीरप्रमाण १० धनुष हुवा । ये, श्री नेमनाथस्वामीका बड़ा भक्त अविरति सम्यग् दृष्टि श्रावक हुवा । अंतमें सब एक हजार वरषका आयुष्य पूरण करके तीसरी पृथ्वीमें उत्पन्न भया । और बलदेवका उज्जल वर्ण, सरीरप्रमाण १० धनुष हुवा । जब द्वारकानगरी, यादवोंका क्षय हुवा, और अपना भाई श्रीकृष्णका कुसंबीवनमें जराकुमरके हाथसें मरण हुवा देखके, वैराग्यसें संसारको असार जाणके, शुद्धभावसें चारित्र ग्रहण किया । क्रमसें सोवर्ष चारित्र पालके, सर्व १२०० वरषको आयुष्य पूरण करके, पाचमा ब्रह्मदेव लोकमें देवतापणें उत्पन्न भया। आवती चौवीसीमें बारमा, तेरमा तीर्थंकरहोके दोनुं मोक्ष जासी ॥ ये कृष्ण, बलभद्र, जगतमें बहुत प्रसिद्ध है । क्योंकि बहुतसे लोक श्री कृष्ण वासुदेवकों साक्षात् ईश्वर, तथा ईश्वरका अवतार, जगत्का कर्त्ता मानते है । सो यह बात श्री कृष्ण वासुदेवके जीते हुये न हुई, किंतु उनके मरे पीछे लोक कृष्ण वासुदेवकों ईश्वरावतार माननें लगे हैं ॥ जिसका हेतु श्री त्रेसठ सलाका पुरुष चरित्रमें ऐसें लिखा है । कि जब कृष्ण वासुदेवनें कुसंबी वनमें शरीर छोड़ा, तब काल करके तीसरी वालु प्रभा पृथ्वी (पातालमें) गये, और बलभद्रजी एकसो वर्ष जैन दिक्षा पालके पाचमा ब्रह्मदेवलोकमें देवता

हुये, तहां अवधि ज्ञानसे अपना भाई श्री कृष्णको पातालमें तीसरी पृथ्वी में देखा। तब भाईके स्नेहसें वैक्रिय शरीर बनाकर श्री कृष्णकेपास पोंहचा। और श्री कृष्णसे आलिंगन करके कहा। किमैं बलभद्र नामा तेरे पिछले जन्मका भाई हुं, मैं काल करके पाचमा देवलोकमें देवता हुआ हुं, और तेरे स्नेहसे इहां तेरेपास मिलनेको आया हुं, सोमैं तेरे सुखवास्ते क्या काम करुं॥ इतना कहकर जब बलभद्रजीनें आपने हाथों ऊपर कृष्णजीको लिया, तब कृष्णका शरीर पारेकी तरे हाथसें छूटके भूमि ऊपर गिर पमा, फेर मिलकर सपूर्ण शरीर पूर्ववत् हो गया॥ इसीतरे प्रथम आलिंगन करनेंसे, फेर विरतांत कहनेंसे, और हाथोंपर उठानेंसें जान लिया। कि यह मेरे पूर्व भवका अति वल्लभ बलभद्र भाई है। तब श्री कृष्णजीनें सभ्रमसें उठके नमस्कार करा। तब बलभद्रजीनें कहा, हे भ्राता, जो श्री नेमिनाथ स्वामीनें कहा था। कि यह विषय सुख महा दुखदाई है सो प्रत्यक्ष तुमको प्राप्ति हुआ। और तुझ कर्म नियत्रितको मैं स्वर्गमेंभी नहि लेजा सक्ता हुं। परतु तेरे स्नेहसें तेरेपास मैं रहा चाहता हुं। तब कृष्णजीनें कहा, हे भ्राता, तेरे रहनेंसेंभी मैनें करे हुये कर्मका फल तो मुझको अवश्य भोगवनाही है। परतु मुझको इस दुःखसे वो दुःख बहुत अधिक है। जोमैं द्वारका, और सकल परिवारके दग्ध हो जानेंसे, एकला कुशब वनमें जरा कुमारके तीरसें मरा। और मेरे शत्रुओंको सुख, तथा मेरे मित्रोंको दुःख हुआ, जगतूमें सर्व यदुवशी बदनाम हुये, इसवास्ते हे भ्राता, तू भरतखममें जाकर, चक्र, शारग, शंख, गदाका धरनेंवाला, और पीला वस्त्र, तथा गरुम ध्वजाका धरनेवाला, ऐसा मेरा रूप बनाकर विमानमें बैठकर लोकोंको दिखलाव। तथा नीला वस्त्र हल मूशल शस्त्रका धरनेवाला ऐसा रूपसें तू विमानसे बैठके अपना सागीरूप सर्व जगे दिखलाकर लोकोंको कहो, कि रामकृष्ण दोनु हम अविनाशी पुरुष है। और स्वेछा विहारी है। जब लोकोंको यह सत्य प्रतीत हो जावेगा। तब अपना सर्व अपयश दूर हो जावेगा। यह श्रीकृष्णजीका कहना सर्व श्री बलभद्रजीनें अगीकार किया। और भरतखंममें आकर [illegible] बलभद्र, दोनुका रूप करके सर्व जगे विमानारूढ दिख लाया, अ[illegible] हनें लगा, कि भोलोको तुम कृष्ण,

बलभद्र, अर्थात् हमारे दोनोंकी सुंदर प्रतिमा बनाकर, ईश्वरकी बुद्धीसें बडे आदरसें पूजो, क्यों कि हमही जगत्के रचनेंवाले, और स्थिति संहारके कर्त्ता हे, और हम अपनी इच्छासें स्वर्ग (वैकुंठसें) चले आते हे । और द्वारका हमनेंही रचीथी, तथा हमनेंही उसका संहार करा है, क्यों कि जब हम, वैकुंठमें जानेंकी इच्छा करते हें, तब अपना सर्व वश द्वारका सहित दग्ध करके चले जाते हे । हमारे उपरांत और कोई अन्य कर्त्ता, हर्त्ता, नही है । ऐसा बलभद्रजीका कहना सुननेंसे प्राय केइग्राम, नगरके लोक कृष्ण बलभद्रजीकी प्रतिमा सर्व जगे बनाकर पूजनें लगे, तब अपनी प्रतिमाकी भक्ति करनेंवालाकों बलभद्रजीनें बहुत धनादिक सुख देके आनंदित किए । इसवास्ते बहुतसे लोक हरिभक्त हो गए । जबसें भक्त हुये तबसें पुस्तकोंमें श्री कृष्णजीकों पूर्णब्रह्म परमात्मा ईश्वरादि नामोंसें लिखादे लोकीकमें श्री कृष्ण होयेको पांच हजार वरष कहते हैं, इससें क्या जानें जबसें बलभद्रजीनें कृष्णजीकी पूजा करवाई, तबसेंही लोकोंनें कृष्णकों इश्वरावतार माना होय, और उन समयकों पांच हजार वरष हुआ होय, तो इस बातकों पांच हजार वरष हुआ होगा ॥ ॥ ※ ॥

॥※॥ इति नवमा श्री कृष्ण वासुदेव, बलभद्र बलदेवका दृष्टांत संपूर्णम् ॥

॥ ※ ॥ इसीतरे ६३ तेसठ शिलाका पुरषोंका दृष्टांत इहां नाममात्र लिखा है । इन सर्वका विस्तारसें संबध देखना होय, तो श्री हेमाचार्यजी महाराजकृत तेसठ शलाका पुरषोंका चरित्रादिकसें देख लेना ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ और जितने कालमें २४ भगवान् हुए हे, इतनें कालमें इग्यारे रुद्र हुए हे, जिनका किंचित संबध लिखता हुं ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ ११ रुद्र नाम, गति विचार लि० ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ १ श्री ऋषभदेव स्वामीके वारे, महारुद्र परणामका धरनेंवाला भीमवल नामें पहला रुद्र हुआ, अंतमें मरके सातमी नरक पृथ्वीमे गया ॥ इति ॥ ※ ॥ २ श्री अजितनाथ स्वामीके वारे जितशत्रु नामें दूसरा रुद्र हुवा, सो अंतमें मरके सातमी नरक पृथ्वीमें गया ॥ इति २ ॥ ※ ॥ ए श्री सुविधिनाथ स्वामीके वारे, रुद्र नल नामे तीसरा रुद्र हुआ । अंतमें मरके छठी नरक पृथ्वीमें गया ॥ इति ॥ ※ ॥ १० मा श्री शीतलनाथ स्वामीके

वारे, विश्वानर नामें चोथा रुद्र हुआ। अंतमें छठी नरक पृथ्वीमें गया॥ इति॥ ※॥ ११ मा श्री श्रेयांसनाथ स्वामीके वारे, सुप्रतिष्टनामें पांचमा रुद्र हुआ। अंतमें मरके छठी नरक पृथ्वीमें गया॥ इति॥ ※॥ १२ मा श्री वासुपुज्य स्वामीके वारे, अचल नामे छठा रुद्र हुआ। अतमें मरके छठी पृथ्वीमें गया॥ इति॥ ※॥ १३ मा श्री विमलनाथ स्वामीके वारे, पुन्दरीक नामें सातमा रुद्र हुआ। अतमें मरके छठी पृथ्वीमें गया॥ इति॥ ७॥ ※॥ १४ श्री अनतनाथ स्वामीके वारे, अजितधर नामें आठमा रुद्र हुआ। अतमें मरके पांचमी नरक पृथ्वीमें गया॥ इति॥ ७॥ ※॥ १५ मा श्री धर्मनाथ स्वामीके वारे, अजितवल नामें नवमा रुद्र हुआ। अतमें मरके चोथी नरक पृथ्वीमें गया॥ इति॥ ※॥ १६ मा श्रीशांतिनाथ स्वामीके वारे, पेढाल नामें दशमा रुद्र हुआ। अतमें मरके चोथी नरक पृथ्वीमें गया॥ इति १०॥ ※॥ २४ मा भगवान् श्री महावीरस्वामीके वारे, सत्यकी नामें इग्यारमा रुद्र हुआ। अतमें मरके तीसरी पृथ्वीमें गया॥ ये इग्यारमा रुद्र लोकीकमें वहुत मान्यताको प्राप्त हुआ थका है, इससे इनका इहां किंचित विस्तारसें दृष्टांत लिखते हैं

॥ ※॥ अथ ११ मा रुद्र सत्यकी दृष्टांत लि० ॥ ※॥

॥ ※॥ विशाला नगरीके, चेटक राजाकी छठी पुत्री सुज्येष्टा नामा कुमारी कन्यानें दिक्षा लीनीथी, अर्थात् जैन मतकी साध्वी हो गई थी, वो किसी अवसरमें उपाश्रयके अदर सूर्यके सन्मुख आतापना लेती थी, इस अवसरमें पेढाल नामा परिव्राजक अर्थात् सन्यासी विद्या सिद्ध था, सो अपनी विद्या देनेंकेवास्ते पात्र पुरषको देखता था। और उसका विचार ऐसा था, कि यदि ब्रह्मचारणीका पुत्र होवे तो सुनाथ होवेगा। तव तिस सन्यासीनें, रात्रीमें सुज्येष्टाको, नग्नपणें शीतकी आतापना लेतीको देखा, तव धुंव विद्यासें अंधकारमें अचेत करके उसकी योनीमें अपनें वीर्यका संचार करा, तिस अवसरमें सुज्येष्टाको ऋतु धर्म आ गया था इसवास्ते गर्भ रह गया, तव साध्वी साध्वीयोंमें गर्भकी चर्चा होनें लगी, पीछे अतिशय ज्ञानीनें कहा कि, सुज्येष्टानें विषय भोग किसीसें नही करा, अरु तिस विद्याधरका सर्व वृत्तात कहा, तव सर्वकी शंका दूर हो गई, पीछे

जब सुज्येष्टाके पुत्र जन्मा, तब तिस लमकेकों श्रावकनें अपनें घरमें ले जाके पाला, तिसका नाम सत्यकी रक्खा, एकदा समय सत्यकी, साध्वीयों केसाथ श्री महावीर भगवान्के समवसरणमें गया, तिस अवसरमें एक काल सदीपक नामा विद्याधर श्री महावीर स्वामीकों वंदना करके पूछनें लगा, कि मुझकों किससें भय है, तब भगवत्त श्री महावीर स्वामीने कहा कि यह जो सत्यकी नामा लमका है, इससें तुझकों भय है। तब काल सदीपक सत्यकीके पास गया, अवज्ञासें कहनें लगा, कि अरे तू मुझकों मारेगा, ऐसे कहकर जोरावरीसें सत्यकीकों अपनें पगोंमें गेरा, तब तिसके पिता पेढालनें सत्यकीका पालन करा, और अपनी सर्व विद्यायों सत्य कीकों देदई, पीछे जब सत्यकी महारोहणी विद्याका साधन करनें लगा, इस सत्यकीका यह सातमा भव रोहणी विद्या साधनमें लग रहा था, रोहणी विद्यानें इस सत्यकीके जीवकों पाच भवमें तो जीवसें मार गेरा, और छठे भवमे छे महिने शेष आयुके रहनेंसे, सत्यकीके जीवने विद्याकी इछा न करी, परतु इस सातमें भवमे तो तिस रोहणी विद्याकों साधनेका प्रारंभ करा तिसको विधि लिखते हे। अनाथ मृतक मनुष्यकों चितामें जलावे, और आले चममेकों शरीर ऊपर लपेटके पगके वामें अगुठेसें ख मा होकर जहा लग वो चिताका काष्ट जले, तहा लग जाप करे, इस विधिसें सत्यकी विद्या साध रहा था। उहा काल सदीपक विद्याधरभी आ गया, और चितामें काष्ट प्रक्षेप करके सात दिन रात्रीतक अग्नि बुझने नदीनी, तब सत्यकी इसीतरे सात दिन वामें अगूठेसें खमा रहा, ऐसा सत्य कीका सत्य देखके रोहणी देवी आप प्रगट होकर काल सदीपककों कहनें लगी कि मत विघ्नकर—क्यों कि में इस सत्यकीके सिद्ध होनेंवाली हूं, इसवास्तेमें सिद्ध हो गई हू, तब रोहणी देवीनें सत्यकीकों कहा, कि में तेरे शरीरमें किधरसें प्रवेश करु, सत्यकीने कहा मेरे मस्तकमें होकर प्रवेश कर, तब रोहणीने मस्तकमें होकर प्रवेश करा, तिससें मस्तकमें खमा पम गया, तब देवीने तुष्ट मान होकर तिस मस्तककी जगों तीसरे नेत्रका आ कार बना दिया, तब तो सत्यकी तीन नेत्रवाला प्रसिद्ध हूआ, पीछे सत्य कीने सोचा कि पेढालने मेरी माता राजाकी कुमारी बेटी साध्वीकों विगा

मा हे । ऐसा शोचकर अपनें पिता पेढालकों मार दिया, तब लोकोंने स त्यकीका नाम रुद्र (नयानक) रख दिया, क्यों कि जिसने अपना पिता कों मार दिया उससें और नयानक कौन है ॥ पीछे सत्यकीनें विचारा कि काल सदीपक मेरा वैरी कहा है, जब सुना काल सदीपक अमुक जगा में है, तब सत्यकी तिसके पास पौंहचा । फेर काल सदीपक विद्याधर तहासें नाग निकला, तोन्नी सत्यकी तिसके पीछे लगा, तब काल सदी पक हेठ ऊपर नागता रहा, परतु सत्यकीनें उसका पीछा न छोमा, फेर काल सदीपकनें सत्यकीके नुलानेंवास्ते तीन नगर बनाये, तब सत्यकीनें विद्यासे तीनों नगरन्नी जला दीये, तब काल सदीपक दोमके पाताल कल शमें चला गया, सत्यकीनें तहा जाकर काल सदीपककों मार माला, तिस पीछे सत्यकी विद्याधर चक्रवर्त्ति हुआ, तीन सध्यामें सर्व तीर्थंकरों कों वंदना करके नाटक करता हुआ, तब इंद्रने सत्यकीका नाम महेश्वर दीया, तिस महेश्वरके दो शिष्य हुये, एक नदीश्वर, दूसरा नादिया, तिनमें नादीया तो विद्यासें बैलका रूप बना लेता था, और तिस ऊपर महेश्वर चढके अनेक क्रीमा कुतूहल करता था, महेश्वर श्री महावीर नगवतका अविरति सम्यग् दृष्टि श्रावक था, परतु बमा नारी कामीथा, और ब्राह्मणों केसाथ उसके बमा नारी वैर हो गया था, इससें विद्याके बलसें सैकमों ब्राह्मणोंकी कुमारी कन्यायोंकों विषय सेवन करके बिगामा, और लोक तथा राजा प्रमुखकी बहु बेटियोंसें काम क्रीमा करने लगा, परतु उसकी विद्या योंके नयसें उसें कोई कुछ कह सक्ता नही था, और जो कोई मनान्नी क रता था सो मारा जाता था, महेश्वरनें विद्यासें एक पुष्पक नामा विमान बनाया तिसमें बैठके जहा इछा होती तहा चला जाता था, ऐसें उसका काल व्यतीत होता था, एकदा प्रस्तावें महेश्वर उज्जयन नगरमें गया तहा चम प्रद्योतकी एक शिवानामा राणीकों छोमके, दूसरी सर्व राणीयोंके साथ विषयन्नोग करा, औरन्नी सर्व लोकोंके बहु बेटीयोंकों बिगामना शुरू करा तब चम प्रद्योत राजाकों बमी चिंता हुई, अरु विचारा कि कोई ऐसा उपा य करीयें कि जिस्से इस महेश्वरका विनाश (मरणा) हो जावै । परतु तिसकी विद्याके आगे किसीका कोई उपाय नही चलता था, पीछे तिस

वर्षका आयु भोगवके कार्त्तिक वदि अमावश्याकी रात्रिके पीछले प्रहरमें पद्मासन किये हुये शरीरादि चार कर्मकी सर्व उपाधी छोडके निर्वाण हुए (मोक्ष पहुचे) तिस समयमें श्री गौतमस्वामी और श्रीसुधर्मस्वामी, यह दो बडे शिष्य जीते थे, शेष नववडे शिष्य तो श्री महावीरस्वामीके जीते हुये ही एक मासका अनशन करके केवल ज्ञान पायके मोक्ष चलेगये थे, यह इग्यारहही बडे शिष्य जातिके तो ब्राह्मण थे, चार वेद, और छे वेदांगादि सब शास्त्रोंके जानकार थे, इन इग्यारह पण्डितोंके चोतालीसर्से (४४००) विद्यार्थी थे ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ इनोंका सबध असे है कि:—जब भगवत श्रीमहावीरस्वामीकों केवलज्ञान हुआ, तिस अवसरमें मध्यपापा नगरीमें, सोमल नामा ब्राह्मण नें यज्ञ करनेंका आरभ करा था, और सर्व ब्राह्मणोंमें श्रेष्ठ विद्वान् जान कर इन पूर्वोक्त गौतमादि इग्यारेही आचार्योंकों बुलाया था॥ तिस समय तिस यज्ञ पाडाके ईशान कूणमें महासेन नामा उद्यानमें, श्रीमहावीर भगवतका समवसरण, रत्न सुवर्ण रोप्यमय क्रमसें तीन गढ संयुक्त देवोंनें बनाया तिसके बीचमें बैठके भगवत श्रीमहावीरस्वामी उपदेश करनें लगे, तब आकाश मार्गके रस्ते सैकडो विमानोंमें बैठे हूये चार प्रकारके देवता ओ भगवत श्रीमहावीरके दर्शनकों और उपदेश सुननेकों आते थे, तब तिनों यज्ञ करनेंवाले ब्राह्मणोने जाना कि, यह देव सर्व हमारे करे हूये यज्ञकी आहुतीयों लेनें आये है, इतनेमें देवता तो यज्ञ पाडेकों छोडके भगवानके चरणोंमे जाकर हाजर हुये, तथा और लोकभी श्रीमहावीर भगवतका दर्शन करके और उपदेश सुनके गौतमादि पण्डितोंके आगे कहनें लगे, कि:—आज इस नगरके बाहिर सर्वज्ञ सर्वदर्शी भगवान् आये है, नतो उसके रूपकी कोइ तारीफ कर सक्ता है, अरु न कोई उनके उपदेशसें संशय रहता है, और लाखों देवता जिनोंके चरणोंकी सेवा करते है इससें हमारे बडे भाग्योदय है, जो ऐसे सर्वज्ञ अरिहंत भगवतका हमने दर्शन पाया, ऐसा जब गौतमजीने सुना कि, सर्वज्ञ आया, तब मनमें ईर्षाकी अग्नि भभकी, अरु ऐसें कहने लगाकि:—मेरेसें अधिक और सर्वज्ञ कौन है? मैं आज इसका सर्वज्ञपणा उडा देता हु? इत्यादि गर्व संयुक्त भग

वान्-श्रीमहावीरकेपास पहुचा, और भगवानकों चौतीस अतिशय संयुक्त देखा, तथा देवता, इन्द्र, मनुष्योंसे, परिवृत देखा, तब बोलनेकी शक्तिसें हीन हुवा, भगवतके सन्मुख जाके खमा हो गया, तब भगवतने कहा किः— हे गौतम इन्द्रभूति तू आया, तब गौतमजीने मनमें विचारा कि, जो मेरा नामभी ये जानते है, तोभी मै सर्व जगे प्रसिद्ध हूं मुझे कौन नही जानता हे इन्नें मेरा नाम लीया इस बातमें कुछ आश्चर्य और सर्वज्ञ इसकों नही मानता हूं, किंतु मेरे मनमें जो सशय है तिसकों दूर कर देवे तोमें इसकों सर्वज्ञ मानुं तब भगवतनें कहा, हे गौतम ! तेरे मनमें यह सशय है — जीव है कि नही ? और यह सशय तेरेकों वेदोंकी परस्पर विरुद्ध श्रुतियोंसें हूवा है वो श्रुतियों यह है, सो कहते है ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ “ विज्ञानघनएवै तेभ्योभूतेभ्यः समुत्थाय तान्येवानुविनश्यति न प्रेत्य संज्ञास्तीतीत्यादि ” इस्सें विरुद्ध यह श्रुति हैः—सवैः अयमात्मा ज्ञानमय-इत्यादि इन श्रुतियोंका अर्थ जैसा तेरे मनमें भासन होता है, तैसाही प्रथम श्रुतिका अर्थ कहते है। नीलादि रूप होनेसें विज्ञानही चैतन्य है चैतन्य विशिष्ट जो नीलादि तिस्से जो घन सो विज्ञानघन सो विज्ञानघन इन प्रत्यक्ष परिछिद्यमान रूप पृथ्वी, अप्प, तेज, वायु, आकाश, इन पाच भूतोंसें उत्पन्न होकर फेर तिनके साथही नाश हो जाता है अर्थात् भूतोंके नाश होनेसें उनकेसाथ विज्ञानघनकाभी नाश हो जाता है, इस हेतुसें प्रेत्यसङ्ञा नही अर्थात् मरके फेर परलोकमें और कोई नर नारकका जन्म नही होता, इस श्रुतिसे जीवकी नास्ती सिद्ध होती है, और दूसरी श्रुति कहती है किः—यह आत्मा ज्ञान मय अर्थात् ज्ञान स्वरूप है इस्से आत्माकी सिद्धी होती है, अब ये दोनो श्रुतियों परस्पर विरोधी होनेसें प्रमाण नही हो शक्ती है और वहुत परस्पर आत्माके स्वरूपमें विरोधी मत है, कोई कहता है किः—“ एतावानेवपुरुषो, यावानिद्रियगोचरः ॥ भद्रेवृकपद पश्य, यद्वदस्य वहुश्रुता” ॥ १ ॥ ॥ ※ ॥ यहभी एक आगम कहता है तथा “ न रूपं भिक्षव. पुद्गलः ” अर्थात् आत्मा अमूर्त्ति है, यहभी एक आगम कहता है, तथा “ अकर्त्तानिर्गुणोभोक्ता आत्मा, अर्थः— अकर्त्ता सत्व, रज, अरु तम, इन तीनों गुणोसें सुख दुःखका भोगनेंवाला

आत्मा है, यह्न्नी एक आगम कहता है, अब इनमेंसें किसकों सच्चा और किसकों फूठा मानें परस्पर विरोधी होनेसें, सर्व तो कुछ सचे होही नही शक्ते है तथा युक्ति प्रमाणसेंन्नी मरके परलोक जानेंवाली आत्मा सिद्ध नही होती है ऐसा हे गौतम तेरे मनमें सशय है, अब इसका उत्तर कहता हू कि, तू वेद पदोका अर्थ नही जानता है इत्यादि कहके श्रीगौतमजीके सशयकों दूर करा, ये सर्व अधिकार मूलावश्यक और श्रीविशेषावश्यकसें जान लेना, मैंनें ग्रथके न्नारी और गहन हो जानेके सबबसें यहा नही लिखा क्योंकि सर्व इग्यारह गणधरोंके सशय दूर करनेंका कथनके चार हजार श्लोक है, पीछे जब गौतमजीका सशय दूर हो गया, तब गौतमजी पाचसो अपनें विद्यार्थियोंके साथ दीक्षा लेके श्रीमहावीर न्नगवतका प्रथम शिष्य हुवा ॥ ✻ ॥

॥ ✻ ॥ इसीतरे इंद्रन्नूतिकों दीक्षित सुनके, दूसरा न्नाई अग्निन्नूति बमे अभिमानमें न्नरकर चला और कहने लगाकि:, मेरे न्नाईकों इंद्रजाली येनें छलसें जीतके अपना शिष्य बना लीया, तो में अन्नी उस इंद्रजालीयेकों जीतके अपने न्नाईकों पीछा लाता हू इस विचारसें न्नगवत श्रीमहावीरजीकेपास पहुचा, जब न्नगवानकों देखा, तब सर्व आड वाड न्नूल गया मुखसें बोलनेंकीन्नी शक्ती न रही, और मनमें बमा अचन्ना हूआ, क्योंकि ऐसा स्वरूप न उसने कन्नी सुना था ओर कन्नी देखा था, तब न्नगवाननें उसका नाम लीया, अग्निन्नूतिनें विचारा कि यह मेरा नामन्नी जानते हैं, अथवा मैं प्रसिद्ध हू मुफे कान नही जानता हैं, परतु मेरे मनका सशय दूर करे तो मै इसकों सर्वज्ञ मानु, तब न्नगवतनें कहा हे अग्निन्नूति तेरे मनमें यह सशय हैं कि कम है किवा नही यह सशय तेरेकों विरुद्ध वेदपदोंसें हूआ है क्योंकि तू वेद पदोंका अर्थ नही जानता है, वे वेदपद यह है:— " पुरुषएवेदमिसर्वंयद्न्नूत यच्च न्नाव्य उतामृतत्वस्येशानोयदन्नेनाऽतिरोहति यदेजाति यन्नेजति यद्दूरे यउअतिके पदतरस्य यदुत सर्वस्यास्य वाह्यत इत्यादि " इसें विरुद्ध यह श्रुति हैं— " पुण्य·पुण्येनेत्यादि " और इन का अर्थ तेरे मनमें ऐसा न्नासन होता है कि, पुरुष अर्थात् आत्मा, एव शब्द अवधारणके वास्ते है, सो अवधारण कर्म और प्रधानादिकोंके व्यवच्छेद

वास्ते है, "इद सर्व " अर्थात् यह सर्व प्रत्यक्ष वर्तमान चेतन अचेतन वस्तु "ग्नि" यह वाक्यालंकारमें है यद्भूतं अर्थात् जो पीछे हूआ है और आगेकों होवेगा, जो मुक्ति तथा ससार सो सर्व पुरुष आत्मा ब्रह्मही है तथा उतशब्द अतिशब्दके अर्थमें है, और अपिशब्द समुच्चय अर्थमें है अमृतत्वस्य अमरणभावका अर्थात् मोक्षका ईसानःप्रभुः अर्थात् स्वामी (मालक) है, यदिति यच्चेति च शब्दके लोप होनेसें यदिति बना इसका अर्थ जो अन्न करकें वृद्धिकों प्राप्त होता है, "यदेजति ' जो चलता है ऐसे पशुआदिक और जो नही चलता है ऐसे पर्वतादिक और जो दूर है मेरु आदिक "यत्‌उअतिके " उ शब्दअवधारणार्थमें है, जो समीप अर्थात् नेंमे है सो सर्व पूर्वोक्त पदार्थ पुरुष अर्थात् ब्रह्मही है, इस श्रुतिसें कर्मका अभाव होता है अरु दूसरी श्रुतिसें तथा शास्त्रातरोंसें कर्म सिद्ध होते है, तथा युक्तिसें कर्मसिद्ध होते नही क्योंकि अमूर्त्त आत्माकों मूर्त्ति कर्म लगते नही, इसवास्ते मै नही जानता कि कर्म है वा नही यह सशय तेरे मनमें है, ऐसा कह कर भगवाननें वेदश्रुतियोंका अर्थ बराबर करके तिसका पूर्वपक्ष खंडन करा, सो विस्तारसें मूलावश्यक तथा विशेषावश्यकसें जानलेना अग्निभूतिनेंभी गौतमवत् दीक्षा लीनी ॥ २ ॥

॥ ☀ ॥ अग्निभूतिकी दीक्षा सुनके तीसरा वायुभूति आया, परतु आगे दोनों भाईयोंके दीक्षा ले लेनेंसें इसकों विद्याका अभिमान कुछभी न रहा, मनमें विचार करा कि मैं जाकर भगवानकों वदना (नमस्कार) करुंगा ऐसा विचारके आया आकर भगवतकों वदना (नमस्कार) करा। तब भगवतने कहा तेरे मनमें सशयतो है परतु क्षोभसें तूं पूछ नही शक्ता है, सशय यह है कि जो जीव है सो देहही है और यह सशय तेरेकों विरुद्ध वेदपद श्रुतिसें हूआ है, और तू तिन वेदपदोंका अर्थ नही जानता है वे वेदपद ये है:- "विज्ञानघन इत्यादि " पहिले गणधरकी श्रुति जाननी, इस्सें देहसें जीव (आत्मा) सिद्ध नही होता है, और इस श्रुतिसें विरुद्ध यह श्रुति है, (सत्येव लभ्यस्तपसा ह्येषब्रह्मचर्येण नित्यज्योतिर्मयो हि शुद्धोय पश्यति धीरायतयः सयतात्मान इत्यादि) इस श्रुतिसें देहसें भिन्न आत्मा सिद्ध होती है, इसवास्ते तुझकों सशय है, पीछे भगवान्नें यह सर्व सशय दूर

करा, तब तीसरा वायुभूतिनेंभी अपने पाच सौ विद्यार्थीयोंकेसाथ दीक्षा लीनी ॥ ३ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ वायुभूतिकी तरं शेष आठ गणधर क्रमसें आये, तिसमें चौथा अव्यक्तजी आया, तिनके मनमें यह संशय था कि पाचभूत है कि नही ए संशय विरुद्ध श्रुतियोंसे हुआ, वे परस्पर विरुद्ध श्रुतियों यह है—"स्वप्नोपम वै सकलमित्येष ब्रह्मविधरंजसाविज्ञेयइत्यादीनि" तथा इससें विरुद्ध यह श्रुति है "द्यावापृथिवी जनयन्देवइत्यादी" तथा पृथिवीदेवता, अप्पोदेवता, इत्यादीनि इनका अर्थ तेरे मनमें ऐसा भासन होता है—अर्थ, स्वप्न सरीखा वैनिपात अवधारणार्थे संपूर्ण जगत है "एप ब्रह्मविधि" अर्थात् यह परमार्थ प्रकार है, अंजसा सीधेन्यायसें जानना योग्य है, यह श्रुति पचभूतका अभाव कहती है, और श्रुतियों पाचभूतकी सत्ताकों कहती है इसवास्ते तेरेकों संशय है, तेरे मनमें यहभी है कि —युक्तिसें पाचभूत सिद्ध नही होते है, पीछे भगवाननें इसका पूर्वपक्ष खंडन करा वेद पदोंका यथार्थ अर्थ कराये, यह अधिकार उक्त ग्रथोंसें जान लेना ॥ यह सुनकर चौथा वायुभूतिनेंभी अपना पाचसै शिष्योंकेसाथ दीक्षा लीनी ॥ ४ ॥

॥ ※ ॥ तब पाचमा सुधर्म नामा पंडित आया, इसकाभी उसीतरे सर्वाधीकार जानलेना यावत् तेरे मनमें यह संशय है कि मनुष्यादि सर्व जैसें इस भवमें है तैसेंही अगले जन्ममें होते है कि, मनुष्य कुछ और पशुआ दिभी बन जाते है, यह संशय तेरेकों परस्पर विरुद्ध वेद श्रुतियोंसें हुआ है सो वेद श्रुतियों यह है—"पुरुषोवैपुरुषत्वमश्नुते पशवः पशुत्व इत्यादीनि" यह श्रुति जैसा इस जन्ममें पुरुष स्त्री आदि है वे पर जन्ममेंभी ऐसेही होवेंगे, इससे विरुद्ध यह श्रुति है "श्रगालोवैएषजायते यः सपुरुषोदह्यत इत्यादि इन सर्व श्रुतियोंका भगवानने अर्थ करके संशय दूर करा, तब अपनें पाचसे शिष्योंके साथ दीक्षा लीनी ॥ ५ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ तीस पीछे छठा मंडिक पुत्र आया तिसके मनमें यह संशय था, कि बंध मोक्ष है, वा नही हे यह संशयभी विरुद्ध श्रुतियोंसे हुवा है, सो श्रुतियों यह है "स एष विगुणोविभुर्न बध्यते, संसरति वा न मुच्यते मोचयति वा ॥ एष बाह्यमभ्यंतर वा वेदइत्यादीनि" इस श्रुतिका ऐसा

अर्थ तेरे मनमे भासन होता है, "एषअधिकृतजीवः" अर्थात् यह जीव जिसका अधिकार है "विगुण." अर्थात् सत्वादि गुण रहित सर्वगत सर्व व्यापक पुण्य पाप करके इसको बंध नही होता है, और ससारमें भ्रमण भी नही करता है, और कर्मोसें छूटताभी नही है, बधके अभाव होनेसें दूसरेंको कर्मबंधसे छोमाताभी नही है, इस कहनेसे आत्मा अकर्त्ता है, सोई कहता है, यह पुरुष अपणी आत्मासे बाहिर महत् अहंकारादि और अभ्यतर स्वरूप अपना जानता नही, क्योंकि जानना ज्ञानसे होता है, और ज्ञानजो है, सो प्रकृतिका धर्म है, और प्रकृति अचेतन है, बध मोक्ष नही इस श्रुतिसें बध मोक्षका अभाव सिद्ध होता है। अब इससे विरुद्ध श्रुति यह है सो कहते है "नही वैशरीरस्य प्रिया प्रिययोरपहतिरस्ति अशरीर वा वसंतं प्रिया प्रिये नस्पृशत इत्यादीनि' इसका अर्थ कहते हैः— सशरीरस्य, अर्थात् शरीर सहितको सुख दुःखका अभाव कदापि नही होता है, तात्पर्य यह है कि ससारी जीव सुख दुःखसे रहित नही होता है, और अमूर्त्ति आत्माको कारणके अभावसे सुख दु ख स्पर्श नही कर शक्ते है, इस श्रुतिसें बध मोक्ष सिद्ध होते है, तथा तेरे मनमे यहभी बात हैः— कि युक्तिसेभी बध मोक्ष सिद्ध नही होते हे इत्यादि सशय कहकर भगवानूने तिसके पूर्वपक्षको खंडन करके सशय दूर करा, तब मण्डितपुत्र साढेतीनसौ विद्यार्थियोंके साथ दीक्षित भया॥ ६ ॥ ॥

॥ ॥ ७ ॥ तिसके पीछे सातमा मौर्यपुत्र आया, तिसके मनमे यह सशय था किः— देवता है किंवा नही है यह सशय परस्पर विरुद्ध श्रुतियोसें हुआ वो श्रुतियो यह हैः "सएषयज्ञायुधीयजमानोंज सास्वर्गलोकं गच्छति इत्यादि श्रुतियो स्वर्ग तथा देवताओंकी सिद्धि करतीयां है, इससे विरुद्ध श्रुति यह हैः— अपामसोम अमृता अभूम् अगमामज्योतिर्विदामदेवान् ॥ किंनूनमस्मान्तृणवदरातिः किमुधूर्त्ति रमुतमर्त्यस्येत्यादीनि "तथा को जानाति मायोपमान् गीर्वाणानि इंद्रवरुणकुबेरादीन् इत्यादि"— इनका ऐसा अर्थ तेरे मनमें भासन होता है, कि— पाणीको पीते हुये एतावता सोमलताकारस पीते हूये अमृत ( ) धर्मवाले हम हुये है ज्योति स्वर्ग और देवताको हम नही [illegible]या देवता हम हूये है, यहभी

नही जानते देवता तृणेकी तरें हमारा क्या कर शक्ते है, यह श्रुति अभाव प्रतिपादन करती है, और यह भावकी प्रतिपादक है, " धूर्त्तिंजराअमृत मर्त्यस्य " अमृतत्व प्राप्तपुरुषकों क्या कर सक्ती है। इन श्रुतियोंका यथार्थ अर्थ करकें, और तिसका पूर्वपक्ष खंडन करके भगवतनें इनका संशय दूर करा, तब यहभी साढेतीनसो छात्रोंके साथ दीक्षित भया ॥ ७ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ ८ ॥ तिस पीछे आठमा अकंपिक आया उसके मनमेंभी वेदकी परस्पर विरुद्ध श्रुतियोंके पदोंसें, नरकवासो है कि नही। यह संशय उत्पन्न हूआ था, वो परस्पर विरुद्ध श्रुतियों लिखते हैः— " नारको वै एष जायते यः शूद्रान्नमश्नाति इत्यादि " इसका अर्थ— यह ब्राह्मण नारक होवेगा जो शूद्रका अन्न खाता है। इस श्रुतिसें नरक सिद्ध होता है, तथा " नह वैप्रेत्यनरके नारका सतीत्यादि सुगमार्थः। इस श्रुतिसें नरकका अभाव सिद्ध होता है। इनका अर्थ करकें और पूर्वपक्ष खंमन करकें भगवाननें तिसका संशय दूर करा तब अकंपिकनेंभी तीनसौ छात्रोंके साथ दीक्षा लीनी ॥८॥

॥ ※॥ ९ ॥ तिस पीछे नवमा अचलभ्राता आया, तिसकोंभी परस्पर वेदकी विरुद्ध श्रुतियोंके पदोंसें, पुण्य पाप है कि नही। यह संशय था, सो वेद पद यह है— " पुरुषएवेदग्निसर्वइत्यादि दूसरे गणधरवत्, इस्सें विरुद्धपद यह है:— " पुण्य पुण्येन कर्मणा भवति, पाप पापेन कर्मणा भवति इत्यादि " इस्में पुण्यपाप सिद्ध होते हैं, यह संशयभी भगवाननें दूर करा तब यहभी तीनसौ छात्रोंकि साथ दीक्षित भया ॥ ९ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ १० ॥ तिस पीछे दशमा मेतार्य आया। उसकोंभी वेदकी परस्पर विरुद्ध श्रुतियोंसे यह संशय हुवा था, कि परलोक है किंवा नही है वो श्रुतियों यह है.— विज्ञानघन, इत्यादि प्रथम गणधरवत् अभाव कथन श्रुति जाननी " तथा " सवै अयं आत्मा ज्ञानमय इत्यादि " परलोक भाव प्रतिपादक श्रुति जाननी। इनका तात्पर्य भगवाननें कहा, तब मेतार्यजीनें निःशंक होकें तीनसौ छात्रोंके साथ दीक्षा लीनी ॥ १ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ ११ ॥ तिस पीछे इग्यारहवा प्रभास नामा गणधर आया तिसके मनमेंभी वेद श्रुतियोंके परस्पर विरुद्ध होनेसें यह संशय था कि निर्वाण है कि नही है, वो श्रुतियों यह है:— " जरामर्यं वा एतत्सर्वं यदग्नि होत्रं "

इस्सें विरुद्ध श्रुति यह है:—" द्वेब्रह्मणी वेदितव्ये परमपरं च तत्र परं सत्य ज्ञानमनतब्रह्मेति " इनका यह अर्थ तेरी बुद्धिमें भासन होता है कि:—अग्निहोत्र जो है सो जीव हिंसा संयुक्त है, और जरा मरणका कारण है, अरु वेदमें अग्निहोत्र निरंतर करणा कहा है, तब ऐसा कौनसा काल है, कि जिसमें मोक्ष जानेका कर्म करीयें, इसवास्ते आत्माको मोक्ष (निर्वाण) कदापि नही हो शक्ता है, अरु दूसरी श्रुति मोक्ष प्राप्तिभी कहती है, इसवास्ते संशय हुआ है, इसका जब भगवानने उत्तर देके निशक करा तब तीनसौ छात्रोंके साथ दीक्षा लीनी ११॥ इसीतरे श्रीमहावीर भगवतके वैशाख शुदि दशमीके दिन मध्यपापानगरीके महासेन वनमे (४४००) शिष्य हुये, तिस पीछे राजपुत्र, श्रेष्ठिपुत्रादि, तथा राजपुत्री, श्रेष्टिपुत्री, राजाकी राणीयों आदिकनें दीक्षा लीनी। तथा जब भगवत श्रीमहावीरजी पावापुरीमें मोक्ष गये, तिसही रात्रिमें इंद्रभूति, अर्थात् गौतम गणधरकों केवल ज्ञान हुआ। तब इंद्रोंनें निर्वाण महोत्सव करके, ग्यानका उत्सव करा, और सुधर्मास्वामीजीकों श्रीमहावीर स्वामीजीकी गद्दीऊपर बैठाया। श्रीगौतमजीकों गद्दी इसवास्ते न हुई कि:, केवलज्ञानी पुरुष कोई पाट ऊपर नही बैठता है, क्योंकि केवली तो जो पूछे उसका उत्तर अपनें ज्ञानसेंही देता है, परंतु ऐसा नही कहता है, कि मै अमुक तीर्थंकरके कहनेसे कहता हुं, इसवास्ते केवलज्ञानी पाट ऊपर नही बैठता है, जेकर बैठे तो तीर्थंकरका शासन दूर हो जावे, यह कभी हो नहि शक्ता, जो अनादि रीतिकों केवली भग करे, इसवास्ते श्रीगौतमजी केवलज्ञानी था, इस्सें गद्दी ऊपर नही बैठे, और श्रीसुधर्म स्वामी बैठे ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ श्री सुधर्मस्वामी पचास वर्ष तो गृहस्थावास (घरमें) रहे, और तीस वर्ष श्रीमहावीर भगवतकी चरण सेवा करी, जब श्रीमहावीर निर्वाण हुआ, तिस पीछे बारावर्षतक छद्मस्थ रहे, और आठ वर्ष केवली रहे, क्योंकि श्रीमहावीर अर्हंतके पीछे केवली होकर बारावर्ष श्रीगौतमजी जीते रहे, और श्रीगौतमजीके निर्वाण पीछे, श्रीसुधर्मस्वामीजीकों केवल ज्ञान हुआ। केवली होकर आठ वर्ष जीते रहे, श्रीसुधर्मस्वामीजीकी सर्वायु एकसौ (१००) वर्षकी थी. सो श्रीमहावीरजीके वीशवर्ष पीछे मोक्ष

गये ॥ ३ श्रीसुधर्मस्वामीके पाट ऊपर, श्रीजंबूस्वामी बैठे। सो राजगृह नगर कावासी श्रीऋषभदत्त श्रेष्ठकी धारणी नामा स्त्रीनें जन्मेथे, निन्नानवे क्रोम सोनइये और आठ स्त्रीयोंको छोमकर दीक्षा लेता भया, शोलेवर्ष गृहस्थ वासमें रहे, वीश वर्ष व्रतपर्याय, और चौतालीस वर्ष केवलपर्याय पालके श्रीमहावीरके निर्वाण पीछे चौशठमें वर्षे मोक्ष गये ॥ ☓ ॥

॥ ☓ ॥ यह श्रीजंबूस्वामीके पीछे भरतक्षेत्रमें दश वातें विछेद होगई तिसका नाम लिखते है'—१ मनःपर्यायज्ञान, २ परमावधि ज्ञान, ३ पुलाक लब्धि ४ आहारकशरीर, ५ क्षपकश्रेणि, ६ उपशमश्रेणि, ७ जिनकल्पमु निकी रीति, ८ परिहार विशुद्धिचारित्र, तथा सूक्ष्मसंपराय, और यथाख्यात यह तीन तरेंके सयम, ९ केवलज्ञान, १० मोक्ष होना, यह दश वस्तु विछे द हो गई, श्रीमहावीर भगवतके केवली हुये पीछे जब चौदहवर्ष वीतेथे, तव जमाली नामा प्रथम निन्हव हुआ। और सोलावर्ष पीछे तिष्य गुप्त नामा दूसरा निन्हव हुवा। श्रीजंबूस्वामीकी आयु असी वर्षकी थी॥ ३ ॥

॥ ☓ ॥ ४ ॥ जंबूस्वामीके पाट ऊपर, प्रभवस्वामी बैठे। तिनकी उत्प त्ति ऐसें है, विंध्याचल पर्वतके पास जयपुर नामा पत्तन था, तिसका विंध्य नामा राजा था, तिसके दो पुत्र थे, एक वमा प्रभव, दूसरा छोटा प्रभु, विंध्यराजाने किसी कारणसें छोटे पुत्र प्रभुको राज तिलक दे दीया, तव वमा वेटा प्रभव गुस्से होकर, जयपुर पत्तनसें निकलकर, विंध्याचलकी विषम जगामें गाम वसाकर रहने लगा, और खात्रखनन, वंदिग्रहण रस्ते लूटनादि, अनेक तरेंकी चोरीयोंसें अपनें परिवारकी आजीविका करता था, एक दिन पाचसौ चोरोंको लेकर राजगृह नगरमें जंबूजीके घरकों लूटनें आया, तहा जंबूस्वामीनें तिसको प्रतिबोध करा, तव तिसने पाचसौ चोरोंके साथ दिक्षा श्रीजंबूजीके साथ लीनी इत्यादि जंबूजीका और प्रभवजीका अधिकार जंबूचरित्र, तथा परिशिष्ट पर्वादि ग्रथोंसे जान लेना प्रभवस्वामी तीसवर्ष गृहस्थ पर्याय, चौतालीश वर्ष व्रतपर्याय, तथा एकादश वर्ष युगप्रधान पदवी, सर्व पंचाशी वर्षकी आयुपूरी करके श्री महावीरसें पचहत्तरे वर्षे पीछे स्वर्ग गया ॥ ☓ ॥

॥ ☓ ॥ ५ ॥ श्रीप्रभवस्वामीके पाट ऊपर, श्रीशय्यंभव स्वामी बैठे, जि-

नोंनें मनक साधुकेवास्ते दशवैकालिक सूत्र बनाया, तिनकी उत्पत्ति ऐसें है: एकदा प्रस्तावें प्रभवस्वामीनें रात्रिमें विचार करा कि मेरे पाट ऊपर कौन बैठेगा, पीछे ज्ञान बलसें अपणे सर्वसंघमें पाट योग्य कोई न देखा, तब परदर्शनीयोंकों ज्ञान बलसें देखने लगा, तब राजगृह नगरमें शय्यंभव भट्टकों यज्ञ करते हुयेकों अपने पाट योग्य देखा, पीछे प्रभवस्वामी विहार करके, सपरिवारसें राजगृह नगरमें आये, तहां दो साधुओंकों आदेश दीया कि तुम यज्ञ पाडेमें जाकर भिक्षाके वास्ते धर्म लाभ कहो, और यज्ञ करने वालोंकों ऐसे कहो.—"अहोकष्ट महोकष्ट तत्त्व विज्ञायते नहि" तब तिन साधुओनें पूर्वोक्त गुरुका कहना सर्व कीया। जब ब्राह्मणोनें "अहो कष्ट" इत्यादि सुना, और तिस यज्ञ वाडेमें शय्यंभव ब्राह्मणनें यज्ञ दीक्षा लीनी थी, तिसने यज्ञ वाडेके दरवाजेमें खडेथके, अहोकष्ट इत्यादि मुनि योंका कहना सुनके विचार करने लगा, कि ऐसा उपशम प्रधान साधु होते है, इसवास्ते यह असत्य (झूठ) नही बोलते है, इस्सें मनमें संशय होगया, तब उपाध्यायकों पूछा कि तत्त्व क्या है, तब उपाध्यायनें कहा कि चार वेदमें जो कथन करा है सो तत्त्व है, क्योंकि वेदोंके शिवाय और कोई तत्त्व नही है, तब शय्यंभवनें कहा कि तू दक्षिणाके लोभसें मुझकों तत्त्व नही बतलाया है, क्योंकि राग द्वेष रहित, निर्मम, निःपरिग्रह, शांत, दांत, महांत मुनियोंका कहना झूठ नही होता है, और तूं मेरा गुरु नही तैंनें तो जन्मसें इस जगत्कों ठगनाही सीखा है, इसवास्ते तू शिक्षाके योग्य है, इसवास्ते यातो मुझे तत्त्व कह दे, नही तो तलवारसें तेरा शिरछेद करुगा, ऐसें कहके जब मियानसें तलवार काढी, तब उपाध्यायने प्राणांत कष्ट देखकें कहा हमारे वेदोंमभी ऐसे लिखा है और हमारी आम्नायभी यही है, जब हमारा कोई शिरछेद किया चाहे तब तत्त्व कहना नहीं तो नही कहना तिस वास्तेमे तुझकों तत्त्व कह देताहू कि इस यज्ञ स्थंभके हेठे अर्हतकी प्रतिमा स्थापन करी है, और नीचेही तिसकों प्रछन्न होकर पूजते है, तिनके प्रभावसें यज्ञके सर्व विघ्न दूर हो जाते हैं, जेकर यज्ञस्थंभके नीचे अर्हतकी प्रतिमा न रखें तो महातपा सिद्धपुत्र, और नारद, ये दोनों यज्ञकों विध्वंस कर देते हैं, पीछे उपाध्यायने यज्ञस्थंभ उखाडके अर्हतकी

प्रतिमा दिखाई और कहा कि यह प्रतिमा जिस देवकी है, तिस अर्हंतका कहा हुआ धर्म जीवदया रूप तत्व हैं, और यह जो वेद प्रतिपाद्य यज्ञ है वे सब हिंसात्मक रूप होनेसें विडम्बना रूप है, परतु क्याकरें जेकर हम ऐसें न करें तो हमारी आजीविका नहीं चलती है, अब तू तत्व जानले और मुझकों भेख दे, अरु तु परमार्हत होजा, क्योंकि मैंनें अपने पेटकेवास्ते तुझकों बहुत दिन बहकाया है, तब शिय्यंभवने नमस्कार करके कहा तू यथार्थ तत्वके कहनेसें सच्चा उपाध्याय है, ऐसा कहकर शिय्यंभवने तुष्टमान होकर यज्ञकी सामग्री जो सुवर्णपात्रादि थे, वे सर्व उपाध्यायकों दे दई, और प्रभवस्वामीके पास जाकर तत्वका स्वरूप पूछकर दीक्षा लेलीनी, शेष इनका वृत्तात परिशिष्टपर्वादि ग्रथसें जान लेना शिय्यंभवस्वामी अठाईस वर्ष गृहस्थावासमें रहे, इग्यारह वर्ष सामान्य साधु व्रतमें रहे, और तेवीस वर्ष युगप्रधानाचार्य पदवीमें रहे, इसीतरें सर्वायु बाशठ वर्ष भोगवके श्रीमहावीर भगवतके अठानवे वर्ष पीछें स्वर्ग गये ॥५॥

॥ ॐ ॥ ६ ॥ श्रीशिय्यंभवस्वामीके पाट ऊपरें यशोभद्र स्वामी बैठे, सो बावीश वर्ष गृहस्थावासमें रहे, और चौदहवर्ष व्रतपर्यायमें रहे, अरु पचास वर्ष तक युगप्रधान पदवीमें रहे, इसीतरें सर्वायु छ्यासी वर्षकी भोगके श्री महावीरसें (१४८) वर्ष पीछे स्वर्गमें गये ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ ७ ॥ श्रीयशोभद्रस्वामीके पाट ऊपर, श्री संभूतविजय स्वामी बैठे, सो बैतालीस वर्ष तक गृहस्थ रहे, और चालीश वर्ष व्रत पर्यायमें रहे, तथा आठ वर्ष युगप्रधान पदवीमें रहे, सर्वायु नब्बे वर्ष भोगके स्वर्गमें गये, ॥ ७ ॥—॥ ८ ॥ श्री संभूतिविजय स्वामीके पाट ऊपर, श्री भद्रबाहु स्वामी बैठे सो भद्रबाहु स्वामीने, १ आवश्यक निर्युक्ति, २ दशवैकालिक निर्युक्ति, ३ उत्तराध्ययन निर्युक्ति, ४ आचारागकी निर्युक्ति, ५ सूत्रकृदंग निर्युक्ति, ६ सूर्यप्रज्ञप्ति निर्युक्ति, ७ ऋषिभाषित निर्युक्ति, ८ कल्प निर्युक्ति, ९ व्यवहार निर्युक्ति, १० दशा निर्युक्ति, ये दशनिर्युक्तियों, और १ कल्प, २ व्यवहार, ३ दशाश्रुतस्कध, यह नवमे पूर्वसें उद्धार करके बनाये, और एक बहुत बड़ा भद्रबाहु नामें संहिता ज्योतिष शास्त्र बनाया, उवसग्गहर स्तोत्र बनाया, जैनमतीयों ऊपर बहुत उपकार

करा । इनही न्नद्रवाजजीका सगाचाई वराहमेहर हूआ, वो पहिले तो जैनमतका साधु ज्ञवा था, फेर साधुपणा गेमके वराही सहिता वनाई और जो वराह मिहर विक्रमादित्यकी सन्नाका पन्मित था, वो दूसरा वराहमिहर था, सहिता कारक वो नही हूआ, इसका सपूर्ण वृत्तात परिशिष्ट पर्वसें जान लेना, श्रीन्नद्रवाजस्वामी गृहस्थावासमें पैंतालीश वर्ष रहे, सत्तरे वर्ष व्रतपर्याय, अरु चौदह वर्ष युगप्रधान, सर्व मिलकर ठहत्तर वर्षकी आयु न्नोगके श्रीमहावीरसें एकसौसित्तर (१७०) वर्ष पीठे स्वर्ग गए ॥

॥ ※ ॥ ८ ॥ न्नद्रवाज स्वामीके पाट ऊपर श्रीस्थूलन्नद्र स्वामी वैठे इनका वज्जत वृत्तात है सो परिशिष्ट पर्वग्रथसें जान लेना, १ श्री प्रन्नवस्वामी, २ श्री शिय्यन्नवस्वामी, ३ श्री यशोन्नद्रस्वामी, ४ श्री संन्नूत विजय, ५ श्रीन्नद्रवाजस्वामी, ६ श्रीस्थूलन्नद्रस्वामी, यह ठहों आचार्य चौदह पूर्वकेवेत्ता थे, श्रीथूलन्नद्रस्वामी तीस वर्ष गृहस्थावासमें रहे, चौवीश वर्ष व्रत पर्याय, अरु पैतालीस वर्ष युगप्रधान पदवी, सर्वायु निन्नानवें वर्षकी न्नोगकें श्रीमहावीरके पीठे (२१५) वर्षं स्वर्ग गये, श्रीमहावीरसें दोसौ चौदह वर्ष पीठे आषाढा चार्यके शिष्य तीसरे निन्हव हूये ॥ ※ ॥

॥※॥ श्रीस्थूलन्नद्रस्वामीके वखतमें नवनदोंका एकसौ पचावन (१५५) वर्षका राज्य ऊछेद करके चाणाक्य ब्राह्मणनें चद्रगुप्तराजाकों राजसिंहासन ऊपर वैठाया, और चद्रगुप्तके संतानोंनें एकसौ आठ वर्षतक राज्य कीया चद्रगुप्त मोरपालका वेटा था, इसवास्ते चद्रगुप्तका मौर्यवंश कहते है, यह चंद्रगुप्त जैनमतका धारक श्रावक राजा था, यह चद्रगुप्त, तथा नवनदका वृत्तात देखना होवे, तदा परिशिष्ट पर्व, ऊत्तराध्ययनवृत्ति तथा आवश्यक वृत्तिसें देख लेना ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ श्री स्थूलन्नद्रस्वामीके पीठें ऊपरले चार पूर्व, प्रथम संहनन, प्रथम सस्थान व्यवछेद हो गये, तथा श्रीमहावीरसे दोसौ वीस (२२०) वर्ष पीठे अश्वमित्र नामा चौथा क्षणिकवादि निन्हव हूआ, और श्रीस्थूलन्नद्रजीके समयमें वारा वर्षका डुर्निक्ष (काल) पमा, ऊस समयमें चद्रगुप्तका राज था, तथा श्री महावीरके पीठे (२२८) वर्ष व्यतीत हूए तव गग नामा पाचमा निन्हव ज्ञआ ॥ ※ ॥ ८ ॥

॥ ४ ॥ ९ ॥ श्रीस्थूलभद्रजीके पाट ऊपर श्रीआर्यमहागिरि बैठे, सो आर्यमहागिरिके शिष्य, १ बहुल, २ बलिस्सह हुआ, फेर बलिस्सहका शिष्य श्रीउमास्वातीजी भया जिसनें तत्वार्थादि सूत्र रचे है और उमास्वातीका शिष्य श्यामाचार्य, जिसनें प्रज्ञापना (पन्नवणासूत्र) बनाया, यह श्यामाचार्य श्रीमहावीरसें तीनसौ छिहत्तर वर्ष पीछे स्वर्ग गया, और आर्य महागिरजी तीस वर्ष गृहवासमें रहे, चालीस वर्ष व्रतपर्याय, अरु तीस वर्ष युगप्रधान पदवी सवायु एकसौ वर्षकी भोगके स्वर्ग गया ॥ ॥९॥

॥ ॥१०॥ श्रीआर्यमहागिरजीके पाट ऊपर श्रीसुहस्तिसूरि, जिसने एक भीखारीकों दीक्षा दीनी, वो भीखारी काल करके चन्द्रगुप्तका वेटा बिंडुसार और बिंडुसारका वेटा अशोक और अशोकका वेटा कुणाल, तिस कुणालका वेटा सम्प्रति राजा हुआ, तिस सम्प्रति राजानें जैनधर्मकी बहुत वृद्धि करी, क्यों कि कल्पसूत्रके प्रथम उद्देसेमें श्रीमहावीरके समयमें अबकी निसवत बहुत थोमे देशोंमें जैनधर्म लिखा है, मारवाम, गुजरात, दक्षिण, पंजाब वगैरे देशोंमें जो जैनधर्म हे, सो सम्प्रति राजाहीसें फैला है, यद्यपि इस कालमें जैनी राजाके न होनेसें जैनधर्म सर्वजगें नही, परंतु संप्रति राजाके समयमें बहुत उन्नतिपर था, क्योंकि सम्प्रति राजाका राज्य मध्य सम और गंगापार और सिंधु पारके सर्व देशोंमें था, सम्प्रति राजानें अपने नौकरोंकों जैनके साधुओंका वेष बनाकर अपने सेवक राजाओंके जो शक, यवन, फारसादि, देशों थे, तिन देशोंमें भेजे, तिनोंने तिन राजाओंकों जैनके साधुओंका आहार विहार आचारादि सर्व बताया और समझाया पीछेसें साधुओंका विहार तिन देशोंमें कराकर लोकोंकों जैनधर्मी करा, और संप्रति राजानें (९९०००) निनानवें हजार जीर्ण (पुराने) जिनमंदिरोंका उद्धार कराया, अर्थात् पुराना टूटाफूटाकों नवा बनाया और छवीस हजार (२६०००) नवीन जिनमंदिर बनवाये और सोने, चांदी पीतल, पाषाण, प्रमुखकी सवा क्रोम प्रतिमा बनवाई, तिसके बनवाये मंदिर नमौल, गिरनार, शत्रुंजय, रतलाम प्रमुख अनेक स्थानोंमे खमे हमनें अपनी आखोसें देखे हे, और सम्प्रतिकी बनवाई जिनप्रतिमा तो हमनें सैकमों देखीहै, इस सम्प्रति राजाका वृत्तांत परिशिष्ट पर्वादि ग्रंथोंसे समग्र जान लेना॥

॥ ✻ ॥ श्रीसुहस्ती सूरि आचार्यने उज्जयनकी रहनेवाली भद्रासेठानीका पुत्र अवती सुकुमालकों दीक्षा दीनी, और जहा उस अवती सुकुमालनें काल करा था, तिस जगे तिस अवती सुकुमालके महाकाल नाम पुत्रनें जिनमंदिर वनवाया, और तिस मदिरमें अपने पिताके नामसे अवती पार्श्व नाथकी मूर्त्ति स्थापनकरी, कालातरमें ब्राह्मणोनें अपना जोर पाकर तिस मंदिरमें मूर्त्तिकों हेठे दावकर ऊपर महादेवका लिग स्थापन करके महाकाल (महादेवका) मदिर प्रसिद्धकर दीया, पीछे जव राजा विक्रम उज्जयनमें हुआ, तिस अवसरमें कुमुदचद्र, अर्थात् सिद्धसेन दिवाकर नामा जैनाचार्यनें कल्याणमदिर स्तोत्र वनाया, तव शिवका लिग फटकर विचमेंसु पूर्वोक्त श्रीपार्श्वनाथकी मूर्त्ति फिर प्रगट हुइ ॥ ९ ॥

॥ ✻ ॥ इनका संवध ऐसा है कि, विद्याधर गच्छमें, जव स्कदिलाचार्यका शिष्य वृद्धवादि आचार्य था, तिस अवसरमें, उज्जयनका राजा विक्रमादित्य था, तिसका मत्री कात्यायन गोत्री देवऋषिनामा ब्राह्मण, तिसकी देवसिका नामा स्त्री, तिनका पुत्र सिद्धसेन, सो, विद्याके अभिमानसें सारे जगतके लोकोंकों तृणवत् (घासफुसशमान) समझताथा, और ऐसा जानता था कि मेरे समान वुद्धिमान् कोइभी नही, और जो मुझकों वादमें जीत लेवे, तो मै उसकाही शिष्य वन जाऊंगा, पीछे तिसने वृद्धवादीकी वहुत कीर्त्ति सुनी उनके सन्मुख जाने वास्ते सुखासन ऊपर वैठकें भृगुकच्छ (भरौच) कीतरफ चला जाता था, तिस अवसरमें वृद्धवादीभी रस्तेमें सन्मुख आता हुआ मिला, तव आपसमें दोनोंका आलाप सलाप हूआ पीछे सिद्धसेनजीने कहा कि, मेरे साथ तुम वाद करो, तव वृद्धवादीने कहा कि वाद तो करु, परतु इस जगलमें जीते हारेका कहनेवाला कोइ शाक्षी नही, तव सिद्धसेनजीने कहा कि, यह जो गौ चरानेंवाले गोप हैं, येही मेरे तुमारे साक्षी रहे, ये जिसको कहदेंगे हारा सो हारा, तव वृद्धवादीनें कहा वहुत अछा येही साक्षी रहे, अव तुम वोलो, तवसिद्ध सेनजीनें वहुत सस्कृत भाषा वोली और चुप करी, तव गोपोंने कहा यह तो कुछभी नही जानता केवल ऊचा वोलके हमारे कानोंकों पीडा देता है, तव गोप कहने लगे, हे वृद्ध त वोल ? पीछे वृद्धवादी अवसर देखकें

कन्ना बाधकर तिन गोपोंकी नाषामें कहनें लगे, और थोमे थोमे कूदनेंनी लगे, जो छद उच्चारा सो कहते है " नविमारिये नविचोरियें, परदारागमण निवारिये ॥ थोवाथोवटाइयें, सग्गिमट्टेमट्टेजाइयें ॥ १ ॥ फेरनी बोले, और नाचनें लगे ॥ छद ॥ कालो कवल नीचोवट्ट, छठें नरिउ दीवड थट्ट ॥ एवम पडीठ नीठे झाड, अवरकिसोठे सग्ग निलाड ॥ २ ॥ यह सुनकर गोप बहुत खुशी हुये और कहनें लगे कि वृद्धवादी सर्वज्ञ हें, इसनें कैसा मीठा कानोंकों सुखदायी हमारे योग्य उपदेश कहा, और सिद्धसेन तो कुछ नही जानता, तब सिद्धसेनजीने वृद्धवादीकों कहा कि हे नगवान्! तुम मुझकों दीक्षा देकें अपना शिष्य बनाउ, क्योंकि मेरी प्रतिज्ञा थी, के जो गोप मुझे हारा कहेंगे, तो में हारा और तुमारा शिष्य बनुगा, यह सुनकर वृद्धवादीनें कहा, कि नृगुपुरमें राजसन्नाके बीच तेरा मेरा वाद होवेगा, परतु यह गोपोंकी सन्नामें वादही क्या है, तब सिद्धसेन कहा, मैं अवसर नही जानता तुम अवसरके ज्ञाता हो इसवास्ते मे हारा पीछें वृद्ध वादीने राजसन्नामें उसको पराजय करा, तब सिद्धसेननें दीक्षा लीनी, गुरुनें उनका नाम कुमुदचद्रजी दीया, पीछे जब आचार्य पदवी दीनी, तब फिर सिद्धसेन दिवाकर नाम रक्खा, पीछे वृद्धवादी तो और कहीकों विहार कर गये, और सिद्धसेन दिवाकरकों सर्वज्ञ पुत्र ऐसा विरुद दीया ऐसा विरुद बोलते हूए अवती नगरीके चौकमें लाये, तिस अवसरमें राजा विक्रमादित्य हाथी ऊपर चढा सन्मुख मिला तब राजानें सर्वज्ञ पुत्र ऐसा विरुद सुनके तिनकी परीक्षा वास्ते, हाथी उपर बैठेहीनें मनसें नमस्कार करा तब आचार्यनें धर्मलान कहा, राजानें पूछा कि विनाही वदना करे, आप मेरेकों धमलान क्यों कर कहा, क्या यह धर्मलान बहुत सस्ता है, तब आचार्यनें कहा यह धर्मलान क्रोमचितामणि रत्नोंसेंनी अधिक है जो कोई हमकों वदना करता है उसकों हम धर्मलान कहते हें और ऐसेंनी नही जो तुमने हमकों वदना नही करी तुमनेंनी अपनें मनसें वदना करी, तो मनही सर्व कार्यमें प्रधान है, इस वास्ते हमनें धर्म लान कहा है, और तुमनें मेरी परीक्षा वास्तेही मनमें नमस्कार करा है, तब विक्रमराजा तुष्टमान होकर, हाथीसें नीचें उतरकर सवसधकी

समक्ष वंदना करी, और एक क्रोम अशर्फी दीनी, परतु आचार्यने अशर्फीयां नही लीनी, क्योंकि वे त्यागी थे, और राजाभी पीछा नहीं लेता, तव आचार्यकी आज्ञासें सघपुरुषोनें जीर्णोद्धारमें लगादीनी, राजाके दफतरमें तो ऐसा लिखा है ॥ श्लोक ॥ धर्मलाभ इतिप्रोक्ते, दूरा डच्छ्रित पाणये ॥ सूरये सिद्धसेनाय, ददौकोटि धराधिपः ॥ १ ॥ श्री विक्रमराजाके आगें सिद्धसेन दिवाकरनें ऐसेंभी कहा था कि ॥ गाथा ॥ पुणे वास सहस्से । सयमि वरिसाण नवनवइकए ॥ होई कुमार नरिंदो, तुहविक्कमराय सारित्थो ॥ १ ॥ अन्यदा सिद्धसेन चित्रकूटमें गये, तहा वहुत पुराने जिनमदिरमें एक वमा मोटा स्थभ देखा, तव किसीकों पूछा कि यह स्थभ किसतराका है, यह सुनकर किसीनें कहा कि यह स्थभ औषध द्रव्यमय जलादि करकें अभेद्य वज्रवत् है, इस स्थभमे पूर्वाचार्योंने वहुत रहस्य विद्याके पुस्तक स्थापन करे है, परतु किसीसें यह स्थभ खुलता नही यह सुनकर सिद्धसेन आचार्यनें तिस स्थभकों सूघा तिसकी गधसें तिसकी प्रतिपक्षी औषधीयोंका रस, तिरसें वो स्थंभ कमलकी तरें खिम गया तव तिसमें पुस्तक देखा, तिसमें सु एक पुस्तक लेकर वाचा, तिसके प्रथम पत्रमें दो विद्या लिखी पाई, एक सरसों विद्या, और दूसरी सुवर्णविद्या, तिसमें सरसों विद्या उसकों कहते है कि, जो काम पमे तव मत्रवादी जितने सरसोंके दाने जपके जलाशयमें गेरे, उतनेही अश्वार वैतालीश प्रकारके आयुधों सहित वाहिर निकलके मैदानमें खमे हो जाते है तिनोंसें शत्रुकी सेना भग हो जाती है, पीछे जव वो कार्य पूरा हो जाता है तव अश्वार अदृश्य हो जाते हे, और दूसरी हेमविद्यासें विनामेहनतके जितना चाहे, उतना सुवर्ण हो जाता है तव ये, दो विद्या सिद्धसेनने लेलीनी, पीछे जव आगे वाचने लगा, तव स्थंभ मिल गया सर्व पुस्तक वीचमें रह गये, और आकाशसें देव वाणी हुइ, कि तू इन पुस्तकोंके वाचने योग्य नही आगे मत वाचना, वाचेंगा तो तत्काल मर जायगा, तव सिद्धसेनने डरकें विचार करा कि दो विद्या मिली सोही सही, पीछे चित्रोमसे विहार करके पूर्वदेशमें कुमार पुरमें गये, तहा देवपाल राजा था तिसकों प्रतिवोधके पक्का जैन धर्मी करा, तहा वो राजा सिद्धात श्रवण करता है, जव ऐसें कितनाक

काल व्यतीत हुआ, तब एकदा समय राजा भगना आया, और आसुसें नेत्र भरकर कहने लगा कि:— हे भगवन् हम बमे पापी है, क्यों कि आपकी ऐसी उत्तम गोष्टिका रस नही पीसके है कारण कि हम बमे संकटमें पमे है, तब आचार्यने कहा तुमको क्या संकट हुआ, राजा कहने लगा कि बहुत मेरे वैरी राजे एकठे होकर मेरा राज्य छीना चाहते है, तब फेर आचायने कहा, कि हे राजन् तू आकुल व्याकुल मत हो, जब मै तेरा साहाय करूं तो फेर तुझे क्या चिंता है, यह बात सुनकर राजा बहुत राजी हुआ, पीछे आचार्यनें राजाकों पूर्वोक्त दोनों विद्यायोंसें समथ कर दीया, तिन विद्यायोंसे परदल भग हो गया तिनका मेरा ममा सर्व राजानें लूट लीया, तब राजा आचार्यका अत्यंत भक्त हो गया, उससें आचार्य सुखोंमे पमके शिथिलाचारी होगया, यह स्वरूप वृद्धवादी जीनें सुना, पीछे दया करके तिनका उद्धार करने वास्ते तहा आये दरवाजे आगें खमे होकर कहला भेजा कि एक बूढा वादी आया है, तब सिद्ध सेननें बुलाकर अपनें आगे बैठाया वृद्धवादी सर्व अपना शरीर वस्त्रसें ढाक कर बोले.—"अण फुल्लियफुल्लमतोमहि" मारोवामोमिहिम्मिणकुसुमेहि ॥ अ चिनिरजणजिण, हिंमहिकाइत्रणेणवण ॥ १ ॥ इस गाथाको सुनकर सिद्ध सेननें विचारभी करा परतु अर्थ न पाया तब विचार करा कि क्या यह मेरे गुरु वृद्धवादी है जिनके कहेका मै अर्थ नही जानता हू पीछे जब वार वार देखने लगा तब जाना कि यह मेरा गुरु है पीछे नमस्कार करकें क्षमापन मागा, और पूर्वोक्त श्लोकका अर्थ पूछा तब वृद्धवादी कहनें लगे "अणफुल्लियेत्यादि" अणफुल्लियफुल्ल प्राकृतके अनल होनेसें अप्राप्त फूल फलोंको मत तोम, भावार्थ यह है कि योग जो है, सो कल्पवृक्ष है, किसतरे कि जिस योग रूप वृक्षमें तप नियम तो मूल है, और ध्यान रूप बमा स्कंध है, तथा समता पणा कविपणा, वक्तापणा, यश, प्रताप, मरण, उचाटन, स्तंभन, वशीकरणादि सिद्धियों कि जो सामर्था सो फूल है, अरु केवलज्ञान फल है, इससें अभी तो योगकल्पवृक्षके फूलही लगे है सो केवल ज्ञानरूप फल करकें आगे फलगे, इसवास्ते तिन अप्राप्त फल पुष्पोंको क्यों तोमता है अर्थात् मत तोम ऐसा भावार्थ है, तथा "मारोव

मोम्मिहि " जहा पाच महाव्रत आरोपा है तिनकों मत मरोम " म णकुसुमे त्यादि " मनरूप फूलें करी निरजन जिन पूजय (निरजन जिनकों पूज) " वनात् वनकिहिम्मसे ' राजसेवादि बुरे नीरस फल क्यों करता है इति पदार्थ, तव सिद्धसेन सूरिनें गुरु शिक्षाकों अपने शिर ऊपर धरके और राजाकों पूछके वृद्धवादी गुरुके साथ विहार करा, और निविघ्न चारित्र धारण करा, अनेक आचार्योंसे पूर्वोका ज्ञान सीखा, एकदा सिद्धसेनजीनें सर्वसघकों एकठो करकें कहा कि तुम कहोतो सर्वा गमोंकों मे सस्कृत भाषामें कर देउ, तव श्रीसघने कहा क्या तीर्थंकर गणधर सस्कृत नही जानते थे, जो तिनहोनें अर्द्धमागधी भाषामें आगम करे ऐसी वात कहनेसे तुमको पाराञ्चिक नाम प्रायश्चित्त लागा हम तुमसें क्या कहे तुम आपही जानते हो, तव सिद्धसेनने गुरुका वचन प्रमाण करके कहा कि, में मौन करकें वारावर्षका पाराञ्चिक नाम प्राय श्चित्त लेकें गुप्त मुख वस्त्रिका, रजोहरणादि लिग करकें और अवधूत रूप धारके फिरुगा, ऐसें कह कर गच्छको छोडके नगरादिकोंमे पर्यटन् करने लगे, वारा वर्षके पर्यतमे उज्जयन नगरीमें महाकालके मदिरमें शेफालि काके फूलो करके वस्त्ररगे पहने हुए सिद्धसेनजी जाके वैठा, तव पूजारी प्रमुख लोकोने कहा तुम महादेवकों नमस्कार क्यों नही करता सिद्धसेन तो वोलतेही नही है ऐसें लोकोंकी परपरासें सुनकर विक्रमादी त्यनेभी तहा आकर कहा " क्षीर लिलिक्षो भिक्षो किमिति त्वया देवोनवंद्यते " तव सिद्धसेननें कहा मेरे नमस्कारसें तुमारे देवका लिग फट जायगा फेर तुमकों महादुःख होवेगा, मै इस वास्ते नमस्कार नही करता हु तव राजानें कहा लिग तो फट जानेदो परतु तुम नमस्कार करो पीछे सिद्ध सेनजी पद्मासन वैठके कहने लगा, तथाहि ॥ श्लोक इंद्रवज्रा वृत्त ॥ स्वयम्भुव भूतसहस्रनेत्र, मनेकमेकाक्षरभावलिग ॥ अव्यक्तमव्याहत विश्व लोक, मनादिमध्यातमपुण्यपापं ॥ १ ॥ इत्यादि प्रथमही श्लोक पढनेसें लिगमेंसें धूआ निकला, तवलोक कहनें लगे शिवजीका तीसरा नेत्र खुला है, अव इस भिक्षुकों अग्निनेत्रसें भस्मकरेगा, तव तो विजलीके तेजकी तरें तमतमाट करता प्रथम अग्नि निकला, पीछे श्रीपार्श्वनाथजीका

विव प्रगट हूआ, तव वादी सिद्धसेननें कल्याणमंदिर नवीन स्तवन करके क्षमापन मागा, तव राजा विक्रमादित्य कहने लगा कि हे भगवन् यह क्या अदृश्यपूर्व देखनेमें आया यह कौनसा नवीन देव है और यह प्रगट क्यों कर हुआ, तव सिद्धसेनजीनें कहा, अवंतीसुकुमालका पुत्र महाकालनें पिताके नामसें अवंती पार्श्वनाथका मंदिर और मूर्ति वनाय स्थापन करी थी, तिसकी कितनेक वर्ष लोकोनें पूजा करी, अवसर पाकर ब्राह्मणोंने जिनप्रतिमाकों हेठ दावके ऊपर यह शिवलिंग स्थापन करा इत्यादि सर्व वृत्तांत कहा, और हे राजन् इस मेरी स्तुतिसें शासन देवताने शिवलिंग फाडके वीचमेंसें यह प्रतिमा प्रगट कर दीनी, अव तू सत्यासत्यका निर्णय कर ले, तव विक्रमादित्यनें एकसौ गाम मंदिरके खरच वास्ते दीये और देवके समक्ष गुरु मुखसें वारा व्रत ग्रहण करे, और सिद्धसेनकी वहुत महिमा करी अपने स्थानमें गया और वादींद्र (सिद्धसेनदिवाकरकों) गुरुने जिनधर्मकी प्रभावनासें तुष्टमान होकर संघमें लीया, अरु पूर्ववत् आचार्य वनाया ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ एकदा प्रस्तावे सिद्धसेन दिवाकर विहार करते हुये मालवेके देशमें जो ॐकारनामें नगर है, तहां गये तिस नगरके भक्त श्रावकोनें आचार्यकों विनती करी, जैसें हे भगवान् इसी नगरके समीप एक गाम था, तिसमें सुंदर नामा राजपुत्र ग्रामणी था, तिसकी दो स्त्रीयां थीं, एक स्त्रीके प्रथम पुत्री जन्मी वो स्त्री मनमें खीजी तिस अवसरमें उसकी सौकनभी प्रसूत होनेवाली थी, तव तिस वेटीवालोनें विचारा कि इसके पुत्र न होवे तो ठीक है, क्यों कि नहीं तों यह पतिकों वल्लभ हो जावेगी, तव दाईसें मिलके उससें पैदा हुआ पुत्रकों वाहिर गिरा दीया, और तत्कालका मरा हुआ लडका उसके आगें रख दीया, पीछे जो लडका वाहिर गेरा गया था, उसकों कुलदेवीनें गौकारूप करकें पाला जव आठ वर्षका हुआ तव इस ॐकार नगरके शिवभवनके अधिकारी भरटनें देखा और अपना चेला वना लीया, एकदा प्रस्तावे कन्यकुब्ज देशका आखोंसें आंधा राजाने दिग् विजय कार्यसें तहां पडाव करा तव रात्रिमें उस छोटे चेलेकों शिवभक्त व्यंतर देवतानें कहा कि शेष भोगराजाकों देना उसकी आंख

अच्छी हो जावेगी तैसेंही करा तिस्सें राजाकी आख अच्छी होगई तव राजाने सो गाम मदिरके खरच वास्ते दीये और यह त्रमा कहा जो शिव का मदिर है सोभी उसीने वनवाया, और हम इस नगरमें रहते हैं परंतु मिथ्या दृष्टियोंके वलवान् होनेंसें हम जिनमदिर वनाने नही पाते हैं इस वास्ते आपसें वीनती करते है, कि इस मदिरसें अधिक हमारा मदिर यहा वने तो ठीक है, और आप सर्वतरेंसें सामर्थ हो तिनका वचन सुनकर वादिद्रनें अवतीमें आकर चार श्लोक हाथमें लेकर विक्रमादित्यके द्वार पास आये, दरवाजे दारके मुखसें राजाकों कहाया "दिदृक्षु र्भिक्षुरायात। स्ति ष्ठति द्वारवारितः। हस्तन्यस्तचतुः श्लोकः। उतागच्छतुगच्छतु ॥१॥ तिस श्लोक कों सुनकर विक्रमादित्यनें वदलेका श्लोक लिखकर भेजा" दत्तानिदशलक्षा णि, शासनानिचतुर्दश ॥ हस्तन्यस्तचतु· श्लोकः ॥ उतागच्छतुगच्छतु ॥२॥ तिस श्लोककों सुनकर आचार्यनें कहा भेजा कि, भिक्षु तुमकों मिला चाहता है, परंतु धन नहीं लेता, तव राजाने सन्मुख बुलवाये और पिछानके कहने लगा, कि गुरुजी वहुत दिनों पीछे दर्शन दीया, तव आचार्य कहने लगे धर्मकार्यके करनेंसें वहुत दिन हुये चिरसें आना हुआ, अव चार श्लोक तुम सुनो ॥ अपूर्वेय धनुर्विद्या, भवताशिक्षिता कुतः ॥ मार्गणौघः समभ्येति, गुणोयातिदिगंतरे ॥ १ ॥ सरस्वती स्थितावक्रे, लक्ष्मीकरसरो रुहे ॥ कीर्त्तिःकिकुपिता राजन्। येन देशातरेगता ॥ २ ॥ कीर्त्तिस्तेजातजा ड्येव, चतुरभोधिमज्जनात् ॥ आतपाय धरानाथ, गतमार्त्तंडमंडल ॥ ३ ॥ सर्वदासर्वदोसीति, मिथ्या सस्तूयसेजनैः ॥ नारयोलेभिरे पृष्ठ। नवक्षपरयो षितः ॥ ४ ॥ यह चारों श्लोक सुनके राजा वहुत खुश हुआ, और आचार्यकों कहने लगा, जो मेरा राज्यमें सार है, सो मागो तो देदेउं, तव आचार्यनें कहा मुझेतो कुछभी नही चाहता, परतु ॐकार नगरमें चतुर्दार जैनमदिर शिवमदिरसें उचा वनाउ, और प्रतिष्ठाभी कराउ, तव राजानें वैसेंही करा तव जिनमत प्रभावना देखके सघ तुष्टमान हुआ, इत्यादि प्रकारसें जैनधर्मकी प्रभावना करते हुए दक्षिणदेशमें प्रतिष्ठानपुरमे जाकर अनशन करके देवलोक गये, तव तहासें सघने एक भटकों सिद्धसेनकी गच्छ पास खवर करनेको भेजा तिस भटनें सूरियोकी सभामें आधा श्लोक

पढा और वार वार पढताही रहा, वो आधा श्लोक यह है:— स्फुरंति वादिखद्योता । सांप्रत दक्षिणापथे ॥ जव वार वार यह अर्द्ध श्लोक सुना तव सिद्धसेनकी वहिन सावत्रीनें सिद्ध सारस्वत मन्त्रसें अर्द्ध श्लोक पूरा करा। नूनमस्तगतोवादी। सिद्धसेनोदिवाकरः ॥ १ ॥ पीछे तिस भट्टनें सव वृत्तांत सुनाया, तव सवकों वमा शोक हुआ ॥ इति सिद्धसेन दिवाकरका प्रसंगसें संवध कथन करा ॥ ॐ ॥ ॥ ※ ॥

॥※॥ यह श्रीआर्य सुहस्ति आचार्य तीन वर्ष गृहस्थावासमें रहे, और चौवीसवर्ष व्रत पर्याय तथा छेतालीश वर्ष युगप्रधान पदवी सर्व मिलकर एकसौ वर्षकी आयु भोगके श्रीमहावीरसें दोसौ एकानवे (२९१) वर्ष पीछे स्वर्ग गये, ११ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ १२ श्रीआर्य सुहस्तिसूरिके पाटऊपर, श्रीसुस्थित सूरि हुवा तिनोंनें क्रोमोंवार सूरिमन्त्रका जापकरा, इसवास्ते गच्छका कोटिक, ऐसा दूसरा नाम श्रीसंघनें रक्खा, क्योंकि श्री सुधर्मस्वामीसें लेकर दशपाटतक तो अनगार निग्रंथगच्छ नाम था,पीछे दूसरा कोटिक गच्छनाम हुवा

॥ ※ ॥ १३ श्री सुस्थितसूरिके पाट ऊपर श्रीइन्द्रदिन्नसूरि हुआ, इस अवसरमें श्री महावीरसें चारसौ त्रेपन (४५३) वर्ष पीछे गर्द्दभिल्लरा जाके उच्छेद करणेंवाला, दूसरा कालिकाचार्य हुआ, इसकी कथा कल्प सूत्रमें प्रसिद्ध है, और श्रीमहावीरसें (४५३) वर्ष पीछे भृगुकच्छ (भमों चमें) श्रीआर्य खपुटाचार्य विद्याचक्रवर्त्ती हुआ, इनका प्रवध श्रीप्रवंध चिंतामणिग्रंथ, तथा हारिभद्री आवश्यककी टीकासें जान लेना, और (४६०) वर्ष पीछे आर्यमंगु, वृद्धवादी, पादलिप्त तथा कल्याण मंदिरका कर्त्ता ऊपर जिसका प्रवध लिख आये सो सिद्धसेन दिवाकर हुआ, जिनोंने विक्रमादित्यकों जैनधर्मी करा सो विक्रमादित्य श्री महावीरसें (४७०) वर्ष पीछे हुआ, सो (४७०) वर्ष ऐसें हुए है— जिस रात्रिमें श्रीमहावीरजी निर्वाण हुए, उस दिन अवंति नगरीमें पालक नामा राजाकों राज्याभिषेक हुआ, यह पालक चंद्रप्रद्योतका पोता था तिसका राज्य (६०) वर्ष रहा, तिसके पीछे श्रेणिकका वेटा कोणिक और कोणिकका वेटा उदायी जव विना पुत्रके मरा, तव तिसकी गद्दी ऊपर नंद

नामा नाई बैठा, तिसकी गद्दीमें सर्व नदनामा नव राजे हुए, तिनका राज्य (१५५) वर्ष तक रहा, नवमें नंदकी गद्दी ऊपर मौर्यवंशी चंद्रगुप्त राजा हुआ, तिसका बेटा बिंदुसार, तिसका बेटा अशोक, तिसका बेटा कुणाल तिसका बेटा संप्रति महाराजादि हुए, इन मौर्यवंशीयोंका सर्व राज (१०८) वर्ष तक रहा, यह पूर्वोक्त सर्व राजे प्रायें जैनमत वाले थे, तिनके पीछे तीस वर्ष तक पुष्पमित्र राजाका राज्य रहा, तिस पीछे बलमित्र भानुमित्र, यह दोनों राजाका राज्य (६०) वर्ष तक रहा, तिस पीछे नभवाहन राजाका राज्य (४०) वर्षतक रहा, तिस पीछे तेरा वर्ष गर्द्दभिल्लका राज्य रहा, और चार वर्ष शकोंका राज्य रहा, पीछे विक्रमादित्यनें शकाकों जीतके अपना राज्य जमाया, यह सर्व (४७०) वर्ष हुए ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ १४ श्री इंद्रदिन्न सूरिके पाट ऊपर श्रीदिन्नसूरि हुये ॥

॥ ※ ॥ १५ श्रीदिन्न सूरिकें पाट ऊपर, श्री सिंहगिरी सूरि हुये ॥

॥※॥ १६ श्रीसिंहगिरिजीके पाट ऊपर श्री वज्रस्वामी हुये, जिनको बाल्याव स्थासें जातिस्मरण ज्ञान था, और आकाशगामनी विद्याभी थी, जिनोंने दूसरे वार वर्षीकालमें संघकी रक्षा करी, तथा जिनोंने दक्षिणपथमे बौद्धोंके राज्यमे श्रीजिनेंद्रपूजा वास्ते फूल लाके दीये, बौद्धराजाकों जैनमती करा, यह आचार्य पीछला दश पूर्वका पाठक हुआ, जिनोंसें हमारी वज्री शाखा उत्पन्न हुई, इनका प्रबंध आवश्यक वृत्तिसें जान लेना, सो वज्रस्वामी श्रीमहावीरसें पीछे चार सौ छानवे, और विक्रमादित्यके संवत छवीसमें जन्मे, और आठ वर्ष घरमें रहे, चौतालीस वर्ष सामान्य साधुव्रतमें रहे, और छत्तीस वर्ष युगप्रधान पदवी में रहे, सर्वायु अठासी वर्षकी भोगी, तथा इन आचार्यके समयमें जावड़ शाह सेठनें श्री शत्रुंजय तीर्थका विक्रम संवत् (१०८) में तेरहवा वमा उद्धार करा, तिसकी श्रीवज्रस्वामीनें प्रतिष्ठा करी, यह श्रीवज्रस्वामी श्रीमहावीरसें (५८४) वर्ष पीछे स्वर्ग गये, इन श्री वज्रस्वामीके समयमें दशमा पूर्व, और चौथा संहनन, और संस्थान, व्यवच्छेद होगये, यहां श्री सुहस्ती सूरि सें लेके श्रीवज्रस्वामी तक अपर पट्टावलियोंमे १ श्रीगुणसुंदरसूरि, २ श्रीकालिकाचार्य, ३ श्रीस्कंधलाचार्य, ४ श्रीरेवतीमित्र, सूरि, ५ श्रीधर्मसूरि, ६ श्रीभद्रगुप्ताचार्य, ७ श्रीगुप्ताचार्य, यह सात क्रमसें

युगप्रधान आचार्य हुये, तथा श्रीमहावीरसें पांचसौ तेतीस (५३३) वर्ष पीछे श्रीआर्यरक्षितसूरिनें सर्व शास्त्रोंके अनुयोग पृथग् पृथग् कर दीये ये प्रबंध आवश्यक वृत्तीसें जान लेना, तथा श्रीमहावीरसें (५४८) में वर्षे त्रैराशिके जीतनेवाले श्रीगुप्त सूरि हुये, तिनका प्रबंध उत्तराध्यनकी वृत्ति, तथा श्रीविशेषावश्यकसें जान लेना, जिसनें त्रैराशिक मत निकाला तिसका नाम रोहगुप्त था, वो श्रीगुप्तसूरिका चेला था, जिसका उलूक गोत्र था जब रोहगुप्त गुरुके आगे हारा, और मत कदाग्रह न छोडा तब अंतरंजिका नगरीके बलश्रीराजानें अपने राज्यसे बाहिर निकाल दीया, तब तिस रोहगुप्तनें कणाद नामा शिष्यकरा, उस्कों १ द्रव्य, २ गुण, ३ कर्म, ४ सामान्य, ५ विशेष, ६ समवाय, इन षट् पदार्थोंका स्वरूप बतलाया, तब तिस कणादनें वैशेषिक सूत्र बनाये तहांसें वैशेषिक मत चला ॥

॥ ※ ॥ १७ श्रीवज्र स्वामीके पाट ऊपर श्रीवज्रसेन सूरि बैठे, वे दुर्भिक्षमें श्रीवज्रस्वामीके वचनसें सोपारक पत्तनमें गये, तहा जिनदत्तके घरमें ईश्वरी नामा तिसकी भार्यानें लाख रूपकके खरचनेसें एक हांमी अन्नकी राखी, जिसमें विष (जहर) मालने लगी, क्योंकि उनोंनें विचारा था कि अन्न तो मिलता नही तिसवास्ते जहर खाके सर्व घरके आदमी मरजायेंगे तिस अवसरमें श्रीवज्रसेनसूरि तहा आये, वो उनकों कहनें लगे कि तुम जहर मत खाउ कलकों सुगाल हो जावेगा तैसेंही हुआ तब तिन शेठके चार पुत्रोंनें दीक्षा लीनी तिनके नाम लिखते हैः— १ नागेंद्र, २ चंद्र, ३ निरत्त, ४ विद्याधर, तिन चारोंसें स्वस्व नामके चार कुलबने यह वज्रसेनसूरि नववर्ष तक गृहस्थावासमें रहे और (११६) वर्ष समान साधुव्रतमें रहे, तथा तीन वर्ष युग प्रधान पदवीमें रहे सर्वायु (१२८) वर्षकी भोगके श्री महावीरसें (६२०) वर्ष पीछे स्वर्ग गये, तथा श्री वज्रस्वामी और वज्रसेन सूरिके बीचमें, आर्य रक्षित सूरि तथा श्रीदुर्बलिका पुष्यसूरि, यह दोनों युग प्रधान हुये, श्रीमहावीरसें (५८४) वर्ष पीछे गोष्टा माहिल सातमा निन्हव हुवा, तथा श्रीमहावीरसें (६०९) वर्ष पीछे श्रीकृष्णसूरिका शिष्य शिवभूति नामें था, तिसनें दिगंबर मत प्रवृत्त करा, सो अधिकार विशेषावश्यकादिकोंसें जान लेना ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ १८ श्रीवज्रसेन सूरिके पाट ऊपर श्रीचंद्रसूरि बैठा, तिनके नामसें गच्छका तीसरा नाम चंद्रगच्छ हुआ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ (१९) श्रीचंद्रसूरिके पाट ऊपर श्री सामंतभद्रसूरि हुये, सो पूर्वगत श्रुतिके जानकार थे ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ २० श्रीसामंतभद्र सूरिके पाट ऊपर, श्रीदेव सूरि हुये, तथा श्रीमहावीरसें (५९६) वर्ष पीछे कोरट नगरमें तथा सत्यपुरमें नाहमभंत्रीनें मंदिर बनवाया, प्रतिमाकी प्रतिष्ठा जज्जक सूरिनें करी, प्रतिमा श्रीमहावीरकी स्थापन करी जिसकों " जयउ वीरसच्चउरिमंडण कहते हैं ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ २१ श्रीवृद्धदेवसूरिके पाट ऊपर श्रीप्रद्योतनसूरि हुये ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ २२ श्री प्रद्योतन सूरिके पाट ऊपर, श्रीमानदेवसूरिहुये, इनके सूरिपद स्थापनावसरमें दोनों स्कधोंपर सरस्वती और लक्ष्मी साक्षात् देख कें यह चारित्रसें भ्रष्ट हो जावेगा ऐसा विचार करके खिन्न चित्त गुरुकों जानकें गुरुके आगे ऐसा नियम करा कि:— भक्तिवाले घरकी भिक्षा और दूध, दही, घृत, मीठा, तेल, अरु सर्व पकान्नका त्याग कीया, तब तिनके तपके प्रभावसें नाभोल पुर जो पालीके पास है तिसमें १ पद्मा, २ जया, ३ विजया, ४ अपराजिता, ए चार नामकी चार देवी सेवा करती देखी, कोइ मूर्ख कहने लगा कि ए आचार्य स्त्रीयोंका संग क्यों करता है तब तिन देवीयोंनें तिसकों सिक्षा दीनी, तथा तिसके समयमें तिक्षिला नगरीमें बहुत श्रावक थे तिनमें मरीका उपद्रव हुआ तिसकी शांतिकेवास्ते श्री मानदेव सूरिनें नाभोल नगरीसें शांतिस्तोत्र बनाकर भेजा ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ २३ श्री मानदेवसूरिके पाट ऊपर श्री मानतूंगसूरि हुये, जिनोंने भक्तामर स्तवन करकें, बाण अरु मयूर पण्डितोंकी विद्या करके चमत्कृत हुआ जो वृद्ध भोजराजा तिनकों प्रतिबोधा, और भयहर स्तवन करके नागराजाकों वश करा, तथा भत्तिब्भरेत्यादि स्तवन जिनोंने करे हे ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ २४ श्रीमानतुंगसूरिके पाट ऊपर श्री वीरसूरि बैठा सो वीरसूरिनें श्री महावीरसें (७७०) वर्षमें [illegible] प संवत्के तीनसौ वर्ष पीछे नागपुरमें श्रीनमि अर्हंतकी प्रतिम[illegible]री, यदुक्तं ॥ आर्या

गपुरे नमिभवन, प्रतिष्ठयामहितपाणिसौभाग्यः ॥ अभवद्वीराचार्य, त्रिभिः शतैः साधिके राज्ञः ॥ १ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ २५ श्री वीरसूरिके पाट ऊपर श्री जयदेवसूरि बैठे, ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ २६ श्रीजयदेवसूरिके पाट ऊपर श्री देवानंदसूरि बैठे, इस अवसरमे श्रीमहावीरसें (८४५) वर्ष पीछे वल्लभी नगरी भंग हुइ, तथा (८८२) वर्ष पीछे चैत्यस्थिति, तथा (८८६) वर्ष पीछे ब्रह्मदीपिका शाखा हुई ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ २७ श्रीदेवानंदसूरिके पाट ऊपर श्री विक्रमसूरि बैठे ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ २८ श्रीविक्रमसूरिके पाट ऊपर श्री नरसिंहसूरि बैठे, यतः ॥ नरसिंहसूरिरासी, दतोऽखिलग्रंथपारगोयेन ॥ यक्षोनरसिंहपुरे, मांसरतिस्त्या जितास्वगिरा ॥ १ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ २९ ॥ श्रीनरसिंहसूरिके पाट ऊपर श्रीसमुद्रसूरि हुए ॥ ॥श्लोकः ॥ वसंततिलकावृत्तम् ॥ खोमीणराज कुलजोपि समुद्रसूरि, र्गच्छ शशास किल य. प्रवणः प्रमाणी ॥ जित्वातदा क्षपनकान् स्ववशं वितेने नागहृदेभुजगनाथनमस्यतीर्थम् ॥ १ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ ३० श्रीसमुद्रसूरिके पाट ऊपर श्रीमानदेवसूरि हुए ॥ श्लोकः ॥ वसंततिलकावृत्तम् ॥ विद्यासमुद्रहरिभद्रमुनींद्रमित्रं, सूरिर्बभूवपुनरेवहि मानदेवः ॥ मांद्या त्प्रयातमपियोनघसूरिमंत्र, लेभेंविकामुखगिरा तपसोज्जयंते ॥ १ ॥ श्रीमहावीरसें एक हजार वर्ष पीछे सत्यमित्र आचार्यके साथ पूर्वोका व्यवच्छेद हुआ, यहा १ श्री नागहस्ति, २ रेवतीमित्र, ३ ब्रह्मदीप, नागार्जुन, ५ भूतदिन्न, ६ श्री कालकसूरि, ये छे युगप्रधान यथाक्रमसें श्रीवज्रसेनसूरि और सत्यमित्रके बीचमें हुए, इन पूर्वोक्त छे युगप्रधानोंमेंसे शक्राभिवंदित श्रीकालिकाचार्य श्रीमहावीरसें (९९३) वर्ष पीछे पंचमीसें चौथकी संवत्सरी करी, तथा श्री महावीरात् (९८०) वर्ष पीछे एक पूर्व विद्या धारक युगप्रधान श्री देवर्द्धिगणिः क्षमाश्रमण हुए, जिनोंने ग्याशन देवके सन्मुख सर्व साधुवोंको इकट्ठा करके सर्व सिद्धांत पुस्तकोंमें लिखाया इससें यह बडे प्रवचन प्रभावीक हुए, तथा श्री महावीरात (१०५५) वर्ष पीछे, और विक्रमादित्यसें (५८५) वर्ष पीछे, यकनी सा

पत्रीका धर्मपुत्र श्रीहरिनद्र सूरि स्वर्गवास ऊए, ये आवश्यकजी मूलसूत्रादि ककी वमी टीकाका, तथा (१४४४) प्रकरणोंका कर्त्ता ऊए ॥ तथा (११५) वर्ष पीछे श्री जिननद्रगणि युगप्रधान हूआ,

॥✻॥ ३१ श्री मानदेवसूरिके पाट ऊपर, श्रीविबुधप्रनसूरि ऊआ॥✻॥

॥✻॥ ३२ श्रीविबुधप्रनसूरिके पाट ऊपर, श्री जयानदसूरि ऊआ ॥✻॥

॥✻॥ ३३ श्रीजयानंदसूरिके पाट ऊपर, श्रीरविप्रनसूरि ऊआ, सो महावीरसें पीछे (११७०) वर्ष और विक्रमसंवत्सें (७००) वर्ष पीछे, नाम्रोल नगरमें श्रीनेमिनाथका प्रासाद (मदिरकी) प्रतिष्ठा करी, तथा श्रीवीरात् (११९०) वर्ष पीछे ऊमास्वाति युगप्रधान ऊआ ॥ ✻ ॥

॥✻॥ ३४ श्रीरविप्रनसूरिके पाट ऊपर, श्रीयशोदेवसूरि वैठे, यहां श्रीमहावीरसें (१२७२) वर्ष पीछे, और विक्रम सवतसें (८०२) के सालमें अणहल पुर पट्टन वनराज राजेने वसाया, वनराज जैनी राजा था, तथा श्रीवीरात् (१२७०) और विक्रमादित्यके सवत् (८००) के सालमें नाद्रपद शुक्ल तीजके दिन वप्पनट आचार्यका जन्म ऊआ, जिसनें गवालियरके आम नामा राजाकों जैनी वनाया, इनका विशेष चरित्र प्रबंध चिंतामणि ग्रथसें जान लेना ॥ ✻ ॥

॥ ✻ ॥ ३५ ॥ श्रीयशोनद्र सूरिपट्टे, श्रीविमलचंद्र सूरि ऊआ ॥ ✻ ॥

॥ ✻ ॥ ३६ ॥ श्रीविमलचद्र सूरिकेपाटऊपर श्रीदेवसूरिऊआ ये उपधान वाच्य ग्रथकाकर्त्ता और तिसकाल आश्रय सियलाचार मार्गकों त्याग करके शुद्धमार्ग धारन करनेंवाले नए इससें सुविहित पक्ष प्रसिद्ध नया

॥ ✻ ॥ ३७ ॥ श्रीदेवसूरि पट्टे, श्रीनेमिचद्र सूरि ऊये ॥ ✻ ॥

॥ ✻ ॥ ३८ ॥ श्रीनेमिचद्र सूरिके पाट ऊपर, श्रीउद्योतन सूरि नए ॥ इणोंसें ८४ गच्छकी थापना नइ ॥ इसका स्वरूप किंचित लिख ताऊ ॥ श्रीउद्योतन सूरजी महाराजकों शुद्ध क्रियापात्र वमे विद्वान् जाणके नर ८३ साधुवोंका शिष्य आयके महाराजके पास पढनें लगे ॥ और तिस अवसरमें एक अंनोहरनामा देशमें जिनचंद्रनामें आचार्य शिथला चारी चैत्यवासीथा, जिसके एक वर्द्धमानमुनि नामें शिष्य था, सो वर्द्धमान मुनि आगमकों पढते जहा (८४) चौराशी आशातनाका अधिकार

देखा कि भगवानके मदरमें चौराशी आशातना न करनी, तव अपना गुरुसें पूछा कि हे स्वामी आशातनाका तो ऐसा विचार लिखा है, और आप मदरमें रहते हैं, मदिरोंमें रहनेंसें कोई आशातना वचसक्ती नहीं है इससें ऐसा आचार तो मेरे दिलमें रुचता नहि, तव गुरूनें अनेक युक्तिसें समझाया, परंतु वर्द्धमान मुनिका चित्त शिथलाचार छोडके शुद्ध मार्ग धारन करनेंका भया, सर्व स्थानके आचार्योंकी गवेषणा करी तव श्रीउद्योतन सूरजी महाराजकों शुद्ध मार्गानुसारी क्रियावत सुना, इससें श्रीउद्योतन सूरिमहाराजकेपास आयके शिष्य होके रहा ॥ तव गुरूमाहाराज योग उपधान वहायके सर्व सिद्धात पढाए, अनुक्रमें योग्य जाणके आचार्य पद दीया गछलाभादि जाणके उत्तराखण्डके विषे विहार करनेंकों आज्ञादीवी, तव श्रीवर्द्धमानसूरि गुरूकी आज्ञा पाके उत्तराखण्डमें विहार करनें लगे, और श्रीउद्योतनसूरि महाराज (८३) तयाशी साधुवोंका शिष्यादिकके साथ विहारकरता थका मालवादेशका सघकेसाथ सिद्धगिरी तीर्थकी यात्रा करनेंको आया ॥ उहा ऋषभादि सर्व चैत्य विंबोंकों वंदन करके पिछली पाजसें उतरके सिद्धवडनीचे रात्रीकों रहे, तव उहा आधी रातके समें गाभेका आकार ऐसा रोहणीनक्षत्रमें वृहस्पतीका प्रवेश देखके गुरू महाराज कहनें लगे, कि यह समय ऐसा उत्तम है, कि जिसके मस्तकपर हाथ करें सो वडा प्रतापीक होय, तव (८३) साधुवोंका शिष्य बोला कि हमारै मस्तकपर वासचूर्ण करो, हम सर्व आपसें पढे हैं, इससें आपकेही शिष्य हैं तव गुरून कहा कि वासचूर्ण लावो तव शिष्य लोक उतावलसें सूके छाणकाचूर्ण करके गुरू माहाराजकों दिया, तव गुरूमाहाराज पिण तिसचूर्णकों मत्रके तयाशी (८३) शिष्योंके मस्तकपर कर दिया और अपना अल्प आऊखा जाणके उसी सिद्धवडनीचे अणशण करके देवलोक गए, और तयासी शिष्य आचार्य पदकों पायके जूदे जूदे देशोंमें साधुवोंके साथ विचरनें लगे, इसीतरे १ निजशिष्य, और तयासी साधुवोंका शिष्य आचार्य पदकों प्राप्त हुवा, इससें इहासे चौरासी गछ प्रसिद्ध हुआ ॥ ये (८४) चौरासी आचार्य बडे प्रतापीक भए ॥ ३८ ॥ ※

॥※॥ ३९ श्री उद्योतनसूरिपट्टे, श्री वर्द्धमानसूरिः भए, ये आचार्य पद

कौं प्राप्त होके, छे महिनातक आंविलकी तपश्या करी तव धरणेंद्र हाजर हुआ वंदन नमस्कार करके कहनें लगा, कि मेरे लायक कार्य होय सो कहो, तव महाराजनें श्री सीमंधर स्वामीकेपास भेजके सूरिमंत्र मंगवाया, पीछे उहासें विहार करके सरसापत्तन गए, तिस अवसरमें सोमनामा एक ब्राह्मणके शिवदाश, बुद्धिसागर, नामें दोय पुत्र था, और कल्याणवती नामें एक पुत्री थी, यह तीनों सोमेश्वर महादेवकों बहुत ध्यावन किया इससें सोमेश्वर महादेवका अधिष्टाता आयके हाजर हुवा, कहा वर माग तव तीनों बोला हमकों वैकुंठ देवो, तव देव कहनें लगा, कि अभी मुझकों वैकुठ न मिली है तो तुमकों कहासें देउ, पर जो तुमकों वैकुठकी इच्छा होय तो इहा श्री वर्द्धमान सूरि आएहैं उणोंकेपास जावो, तुमकों वैकुठ जाणेंका मार्ग बतावैगा, ऐसा कहकर देवता अदृश्य हो गया, तव तीनोंजणे स्नान करकै उपाशरै आके गुरू महाराजसें वैकुठका मार्ग पूछा,तव उसवखत एक भाईके मस्तकपर चोटीमें छोटी मछी स्नान करते रह गई थी सो देखायके विनय, दयामूल जिनधर्मका उपदेश दिया, तव तीनोंजणे प्रतिवोध पायके दिक्षालीवी तव गुरूमहाराज योगादिक वहायके सर्वसिध्दात पढायके शिवदाशका जिनेश्वर ऐसा नाम करा, एकदा जिनेश्वरनें कहा कि हे स्वामिन् जो आपकी आज्ञा होय तो गुजरात देशमें जावें, उहा जाणेंसें बहुत लाभ उत्पन्न होगा, तव श्री वर्द्धमानसूरि बोला कि गुजरातमें अभी हीनाचारी चैत्यवासियोंका वहोत प्रचार वध गया है, इससें वे लोक अनेक प्रकारसें उपद्रव करेंगे, तव श्री जिनेश्वर बोला कि जूवाके भयसें क्या वस्त्र माल देना चहिये, इससेती आप प्रसन्न चित्तसें आज्ञा देवो, तव गुरू महाराज श्री जिनेश्वर, बुद्धिसागरकों, आचार्यपद देके गुर्जर देशमें विहार करनेंकी आग्या दीवी, तव दोनों गुजरात देशमें विचरणें लगे, और कल्याणवती साधवीकों महत्तरापद देकर साधवीयोंकेसाथ विहार करनें की आग्यादीवी, पीछे श्रीवर्द्धमानसूरियें १३ तेरे बादशाहोंसें मान पाया हुआ चन्द्रावती नगरी स्थापक, पोरवाड़ गोत्रीय, श्रीविमलमंत्रीकों प्रतिवोध देके जैनधर्मी अपना श्रावक किया, और विछिन्न हुवा आबूजी तीर्थकों प्रगट करनेंका उपदेश दिया, तव विमलमंत्री गुरूका वचन अंगीकार

करके गुरूकों साथ लेके आबूजी आया, तव उहाके रहीस ब्राह्मण लोक या वात सुनके विमलमत्रीकों कहनें लगे कि यह हमारा तीर्थ है अनी हमारा मदर है तुमारा मंदर नहिं है, इससे जिनमदर नहि होनें देवेंगे, तव गुरूमहाराज एक पुष्पमालामत्रके विमलमत्रीके हाथमें दीनी, और कहा कि ब्राह्मणोंनें कहो कि ये सदैवसें जैनका तीरथ है, जो न मानो तो तुमारी कोई कन्याके हाथमें ये पुष्पमाला देवो, और डुगर ऊपर फिरो, जिस ठिकाणें तुमारी कन्याके हाथसें फूलमाला गिरपमे जहां हमारा तीर्थ, देव है ॥ इसीतरें करा ॥ जहा फूलमाला पमी उहा पूजाका उपगरणसहित तीनप्रतिमा प्रगट नई ॥ १ श्री आदिनाथ स्वामी ॥ २ अंबिकादेवी ॥ ३ चत्रालीनाथ क्षेत्रपाल ॥ ऐसी तीनप्रतिमाकों प्रगट हुई देखके ब्राह्मण लोक बमे आश्चर्यकों प्राप्त नए, तथापि ब्राह्मण जातीपणासें कहनें लगे तुमारा देव है तो देवकी पूजा करो, परतु मदर होनेंसें तो हम मरमिटेंगे, तव वमा दयाल उत्तम पुरुष विमलमत्रीनें विचार किया कि ये कोण गिणतीमें है,अनी मंदर वना सक्ताऊ, परतु ये निक्षुक है इनकों क्या जोर देखाउ,इससें इनोंकों वहोतसा द्रव्य देके, राजी करके जिन मंदर तैयार कराउ, ऐसा विचारके ब्राह्मणोंकों वहुतसा धन देके राजी किये, पीछे वहुमोला मकराणेंका पत्थर मंगवायके, वमा १ वावन (५२) जिनालामदर वनाया, और सारे मंदरमें ऐसी झीणी कोरणी कराई, जिस मंदरका सर्व पत्थर कोरणी मजूरीका,अठारै (१८) क्रोम ५३ त्रेपन लाख आसरे द्रव्य खरच हुवा, विमलमत्रीके करानेंसे विमलवसहि नाम प्रसिद्ध हुआ, पीछे सर्व तैयार होनेंसें स० १०८८ श्री वर्द्धमानसूरिनें प्रतिष्टाकरी पीछे अणशण करकें उसी वरषमें देवलोकगए ॥ ३९ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ ४० श्री वर्द्धमानसूरीके पाटऊपर श्री जिनेश्वरसूरि हुए सो स० १०७९ आचार्य पदकों प्राप्त होके श्री बुद्धिसागरसूरिकेसाथ मरुस्थल देशमें विहार करके क्रमसें गुर्जर देशमें अणहल्लपुर पट्टण गए, उहा दुर्लभ राजाका प्रोहत शिवशर्मा नामें ब्राह्मण जो अपना मामाथा तिसके घरमें गए, उहा शिवशर्मा ब्राह्मण अपना लमकाकों वेद पदोंका अर्थ वताय रहा था उसमें कितनेक वेदपदोंका उलटा अर्थ वतानें लगा तव गुरुवोला इसमुजब नहीं

है,हम कहें जिसमुजब है, तब सच्चा अर्थ सुनके प्रोहत बोला कि आपकों इस माफक वेदका अर्थको जाणपणो किसतरें हुवो, आपससारी अवस्थामें कोन नगरका, अरु किसका पुत्र हो, तब महाराजनें कहा कि, हम वणा रसी नगरीका, सोम नामे ब्राह्मणका पुत्र हैं, तब शिवशर्मा प्रोहतनें पिछाणा, कि येतो मेराभाणजा है, ऐसा जाणके बहुत भक्तीमान् हुआ, बहुमान पूर्वक अपनें मकानमें रक्खा, उहा रहते औरभी केई पदार्थोंमें प्रोहत के दिलमें संदेह था सो सर्व दूर किया, तब शिवशर्मा प्रोहत बहुत महा राजका रागी हुआ,तब उहाके चैत्यवासीयोंनें विचारा,कि श्री जिनेश्वर सूरिके इहा रहनेंसें अपना परदा खुल जायगा, अपनेकों कोई न मानेंगा, सर्व लोक इनोंके रागी हो जायगे, इससें कोई उपाय करनाचाहिये, ऐसा विचारके दुर्लभ राजाकेपास जायके चुगली किया, कि दिल्लीसें ग्रंथ गेटक चोर आए हैं, सो आपके प्रोहतके इहा रए हैं, तब राजा ऐसा वचन सुनके प्रोहतकों बुलाकर पूछनें लगा, कि तेरे घरे चौर आया सुना है तब प्रोहत बोला कि, मेरै घरमें चोरतो कोई नहिं आए हैं परतु शुद्धक्रिया पात्र साधु आए हैं जो उनोंकों चोर कहते होंगे सो आप चोर होवेंगे, तब राजा शुद्धा चार देखनेंकेलिये श्रीजिनेश्वर सूरीकों अपनेंपास बुलाया,और चैत्यवासियोंकों भी बुलाये, जब श्री जिनेश्वरसूरी राजाकी सभामें हाजर हुवा, तब राजायें नमस्कार करा, तब गुरूमहाराज पिण धर्मलाभ आशीर्वाद देके अपनें बैठवा योग्य स्थानके, कबली बिछाके, इरियावही पडिक्कमके, जमीनकी पडिले हणा करके, बैठे । तब राजायें विचारा, कि शुद्धआचार ऐसाही होता है ॥ और चैत्यवासी जो आए सो राजाकों आशीर्वाद देके, इसी तरै बिस्तरोंके ऊपर बैठ गये, तब राजायें चैत्यवासियोंका विरुद्ध आचार देख के श्री जिनेश्वरसूरी महाराजकों साधुका आचारपूछा तब, श्री जिनेश्वर सूरी महाराज बोला, कि आपका देवाधिष्टित स्थानका भंडार है, उसमें सर्व मत स्वरूपनिवेदक पुस्तक है, उसमेंसें आपके पंडितोंकेपास एक दोय पुस्तक मंगवावो, तब राजायें भंडारमेंसें पुस्तक मगवाया, जब पंडि तोंके प्रथम दशमी कालकजी पुस्तक हाथ लगा, सो राजसभामें लेके आये, तब गुरूमहाराज कहा, कि इस पुस्तककों चैत्यवासियोंके हाथमें

देके आप साधुका आचार सुनो, तब चैत्यवासी पुस्तक वाचते थके जहां बहुत साधुका आचार आनें लगा उहां गेरनें लगे, तब गुरूमहाराज बोला, कि राजसभामें दिनको चोरी होती है, तब राजायें पूछा किसतरेसें, गुरूनें कहा, कि इहा इणोंनें साधुके आचारका कई पत्रा गेर दिये हैं, तब राजा बोला कि, आप वाचो, गुरूमहाराजनें कहा, हमारे वाचनेंसें ये फेर कल्पित बात करेंगे, इससें आपके धर्म पक्षितोंकेपास ये पुस्तक बचावो, तब राजायें अपनें पक्षितोंकेपास उस पुस्तकमेंसें साधुका आचार सुना, तब उसी आचारमुजब श्री जिनेश्वरसूरीका सत्य आचार देखा, और चैत्यवासियोका उस पुस्तकसें विरुद्ध आचार देखा, इससें सारी सभाके सामनें राजाये कहा ॥ अतिशय पणें करके श्री जिनेश्वरसूरी सच्चा हुवा, इससें ये खरतरा हे, और चैत्यवासी हारगया, इससेती ये कमला हे ॥ हारा सो कमला थया ॥ जीता खरतर जाणिया ॥ तिणीकाल श्री संघमें । गच्छदोयवखाणिया ॥१॥ इसी तरे सुविहित पक्षधारक श्री जिनेश्वर सूरि, वीरसंवत् १५५० ॥ विक्रमसंवत् १०८० खरतर विरुदकों प्राप्त भए। *तबसें कोटिक गच्छ, चंद्रकुल, वयरी शाखा, खरतर विरुद, ऐसाभेद थिवर* साधु, नवा साधुवोंनें कहनें लगे, इहासें मूलकोटिक गच्छका नाम खरतर गच्छ प्रसिद्ध हुआ, अतिशयेन खरा सत्य प्रतिज्ञा येते खरतराः इत्यादि खरतर विरुदकों प्राप्त होनेंवाले श्री जिनेश्वरसूरी धर्म प्रभावीक भए ॥४०॥ ॥ तत्पट्टे ४१ मा ॥ श्री जिनचंद्र सूरी भये ॥

सो जब आचार्यपदको प्राप्त होके विहार करते प्रथम दिल्ली सहरमें गए उहां एक पुरषकों भाग्यशाली देखके ऐसा कहा कि तु दिल्लीका बादसाह होगा, जब वो पुरष बोला कि में जो बादशाह होउगा तो आपमुझे दरशण अवश्य दैना, फेर दिल्लीके आसपासमें महाराज विहार करनें लगे, जब वो पुरष मोजदीन नामें बादशाह हुवा, तब गुरुमहाराज फेर दिल्ली नगरमें गए, तब दिल्लीके संघनें बादशाहकों अरज करी हमारे पुज्य श्री जिनचंद्रसूरि महाराज आये हैं, सो उनका प्रवेश उच्छव करनेकी इच्छा है, तब मोजदीन बादशाहभी पूर्वोक्त वर देनेंवाले अपना गुरूकों आया जानके, संपूर्ण वाजित्रसहित संघकेसाथमें, आपसामने गया, प्रवेशउच्छव

सहित शहरमें लायके धनपाल नामा श्रीमालके वन्हे मकानमें उतारा करवाया, उहा रहते धनपाल श्रीमाल प्रमुख बहुतसे श्रीमालाकों प्रतिबोधके जैनीश्रावक किये, तवसें " श्रीमाल " जैनीश्रावक हुए, और कितनेक राज्याधिकारीयोंकों प्रतिवोधके जैनीश्रावक किये, उनोंकों बादशाहनें बहुत मान दिया इससें उनका "महतियाण" गोत्र हुआ, ये महतियाण गोत्रवाले कातो भगवानकों नमस्कार करै, का अपना धर्माचार्य जिन चद्रसूरि गुरुकों नमस्कार करै, और कोई देवगुरुकों नमस्कार न करै,फेर महाराजके उपदेशसें बादशाहभी बहुत सरल परिणामी हुआ, सारे देशमें पर्यूषणादिपर्व दिनोंमें, बहुत जीव हिंसा छेमाई, इसमाफक धर्मउद्योतक वन्हे प्रतापीक, सवेगरग शालादि, अनेक प्रकरण कर्ता श्रीजिनचद्र सूरिभए, अंतमें अणशण करके देवलोककों प्राप्त हुये ॥ ४१ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ ४२ ॥ मा श्रीजिनचंद्र सूरिके पाट ऊपर, छोटा गुरभाई, श्री अभयदेव सूरि भए ॥ इनका सबध किचिल्लिखताहु ॥ धारापुरी नामा नगरमें, धनानामें सेठ, जिसके धनदेवी नामें स्त्री, जिनके अभय कुमार नामें पुत्र हुआ, क्रमसें सर्व कला शीखके युवान अवस्थाकों प्राप्त भया, तब एकदा प्रस्तावे श्रीजिनेश्वर सूरी विचरते भए धारापुरी नगरीमें आए, जब नगरका सर्व लोक महाराजकों वादनेंकों गए, तब अभय कुमारभी अपनें पिताकेसाथ गया, श्रीजिनेश्वर सूरी महाराजके मुखसें धर्म उपदेश सुनके वैराग्यकों प्राप्त भया, संसारकों असार जाणके दिक्षा ग्रहण करी, क्रमसें बुद्धीके बलसें, सकलशास्त्र पढके आचार्यपदकों प्राप्त भया । एकदा व्याख्यानमें शृगारादि नवरसकों बहुत पोपण करा, तब सारी सभा बहुत आनदकों प्राप्त भई, परतु श्रीजिनेश्वर सूरि महाराज एकातमें ऐसा उलभा दिया, कि आत्मार्थीकों शृगारादिक रसका बहुत पोषन करना न चाहिये, ऐसा गुरूका वचन सुनके आत्मशुद्धीके अर्थ प्रायच्छित्तमागा, तब गुरू कहा, छे मासतक आविलकी तपस्या करै, और छाछकी आछ पीवै, जब शुद्धी हुवै, तब श्री अभयदेव सूरी गुरूका वचन तहत्ति करके इसी मुजब तपस्या करनें लगे । ऐसी कठन तपस्या करनेंसें, अत प्रांत आहारखानेंसें, कोई पूर्वकृत कर्मके योग, सरीरमें गलत कोढरोग उत्पन्न

होगया, तथापि धर्मसें चलित चित्त न हुआ, शरीरकी शुश्रूषा मात्रभी न करै, जब क्रमसें बहुत रोग बढनें लगा, तब श्री अभयदेव सूरीके अणशण करनेंकी इछा उत्पन्न भई, संघके आग्रहसें धवलिका नामें नगर गए, उहा तेरसकेदिन आधी रात्रकेसमें शाशन देवी प्रगट होके कहा कि हे स्वामिन् ये नवसूत्र कोकभीकों सुलझावो, तब गुरु महाराज बोले " कि हाथोंकी आगुली गलनेंसें सुलझावणेंकी समर्था रही नही, । तब शाशन देवी कहनें लगी, अभीतक आप बहुत कालतक श्रीवीर भगवानको शाशन दीपावोगे, अरु नवाग सुत्रकी टीका करोगे, इस्सें हे स्वामिन् आप रोग जानेंका उपाय सुनो ॥ स्थभनपुरके नजीक, सेढिका नदीके तीरे, खखर पलास वृक्षके नीचे, श्रीपार्श्वनाथ स्वामीकी अतिशय युक्त प्रतिमाहे उहा निरतर एक गाय आयके प्रतिमाके मस्तकपर सदा दूधकी धारा देके चली जावै है, उसी ठिकाणें सर्व संघकेसाथ आपजायके श्री पार्श्वप्रभुकी स्तवना करना जब उहासें श्री पार्श्वनाथ स्वामीकी प्रतिमा प्रगट होगा जिसके स्नात्रजलसें आपका रोग रहित दिव्य शरीर होवेगा, ऐसा स्वप्नमें कहके देवी अदृश्य होगई, जब प्रभात समय भया, तब उहासें विहार कर के स्थभनपुर गए, उहाके सर्व संघकों साथमेंलेके पूर्वोक्त स्थानके गए, उहा जाके नमस्कार करके "जयतिहुअण" इत्यादि बत्तीस गाथाको नवीन स्तोत्र करके स्तवना करता थका " फणफण फार फुरतिरयण० " इत्यादि शोलमाकाव्य बोलते, श्रीपार्श्वनाथ स्वामीकी प्रतिमा जमीनमेंसें प्रगट भई, फेर सारी स्तवना जब पूर्ण भई, तब सर्व संघ मिलके आनंदके साथ स्नात्र पूजा करके, भगवानका स्नात्रजल महाराजके सरीरपर सींचा । के तत्काल रोग रहित कचनवर्णा शरीर होगया, तब तो सर्व संघ, तथा नगरका लोक देखके बडे आश्चर्य मानभए, और जहा प्रतिमा प्रगट भई, तहा बहोत मनोहर उचा सिखरबद्ध मदर बनवाया, मदर तैयार होनेंसें श्री अभय देवसूरि महाराजनें उसी प्रतिमाकों स्थापन करी, तहा स्थभनक नामें महातीर्थ प्रशिद्ध हुवा, बहोत यात्री लोक आनें लगे, और जयतिहुअण स्तोत्र, गुरू महाराजनें किया, जिसके अतके दो काव्योंमें धरणेंद्र पद्मावतीकों आकर्षणरूप बीज मत्र गोपित रखाया इससें उसकों हर

कोई कार्यमें अपवित्रपणें स्त्री पुरुष वालकादिक गुणें जब धरणेंद्रकों आयके हाजर होना पमे, इससें धरणेंद्र हाथ जोमके गुरूमहाराजनें कहनें लगा कि ये दो गाथा आप नम्मार करो, जो शुद्धनावसें तीस काव्य सदा पमिक्रमणेंके आदमेंगुणेंगे, तो ठिकाणे वेठाही नुनका नुपद्रव दूर करुंगा, ऐसा धरणेंद्र पद्मावतीका वचनसें अतका दो काव्य नम्मार किया, संघकों वोलनेका मना किया, पीछे स्वप्नमें शाशन देवतायें नवकोकम्मा सूतका, सुलझावणें वावत कहा था, इसवास्ते नगवानके नवांग सुत्रोंकी टीका करी, वीर स० १५७१, विक्रम स० ११११, श्री स्थम्नणा पार्श्वनाथ प्रगट किया ॥ ओर वीर स० १५ए० ॥ विक्रम स० ११२०, में श्री नवाग सुत्रोंकी टीका करी ऐसे महाअतिशयी चारित्र पात्र चूमामणी निकेवल सर्व जीवेंकि नुपगारके अर्थ गावनगरोंमें विहारकरते थके वक्तत कालतक धर्मका नुद्योत करते रहे एकदा श्री अनय देवसूरीके प्रतिवोधक दो श्रावक अणशण करके देवलोकगए जब देवलोकमें जातेही ग्यानके नुपियोगसें जाना, कि हमारा धर्माचार्य श्री अनयदेव सूरि है, नुनोंके प्रसादसें ये देवलोकका सुख मिला हे, इससें अत्यत रागी नया थका महाविदेहमें श्री सीमधर स्वामीकेपास जाके हाथ जोडके ऐसा प्रश्ण किया कि हमारा धर्माचार्य श्री अनयदेवसूरी इहासें कोन गतिमें जावेंगे, और कितना नवमें मोक्ष जायगे, तव नगवान सीमधरस्वामीनें कहा कि तुमारा गुरु इहासे अणशण करके चोथे देवलोक जावेगा, नुहासे महाविदेह क्षेत्रमें नुपजके मोक्षजावेगा इस्सें ये नवसें तीसरे नवमें मोक्ष जावेगा ऐसा नगवानका वचन सुणके आनदित हुआ थका श्री अनयदेवसूरीके व्याख्यानावशरमें सारी सनाकेसामने दोनों देवता आयके कहा, ॥ नणिय तित्थयरेहिं । महाविदेहे नवमितइयमि, तुह्माणचेव गुरुणो ॥ मुरकेसिग्घ गमिच्छति ॥ १ ॥ इत्यादि ॥ इसमाफक शासन प्रनावीक श्री अनयदेवसूरि गुर्जर देशमें कप्पडवाणिज्य नामाग्रामके विषे अतमें अणशण करके वि स११६७ कालकरके चोथे देवलोक गए ॥ ४२ ॥ ✻ ॥

॥ ४३ ॥ श्री अनयदेवसूरिके पाटऊपर, श्रीजिनवल्लनसूरी नए ॥ तिके प्रथम कूर्चपूर गच्छीय चेत्यवासी श्रीजिनेश्वर सूरीकेशिष्य थे जब नुनों

केपास दशमी कालकजी सुत्र पढनें लगे तव वैराग्यकों प्राप्त होके गुरुकों कहा, कि साधुका आचार तो ऐसा है, और आप ऐसा सिथलाचारकों क्यु धारण किया है, तव गुरूनें कहा अभी हमारा ऐसाही कर्मोदय है, तव श्रीजिनवल्लभसूरी गुरूकों पूछके शुद्ध क्रियानिधान, परम सवेगी, श्रीजिन अभयदेवसूरीका शिष्य होगया, शुद्धचारित्र पालताथका अनुक्रमें सकल शास्त्रकों पढके गीतार्थ हुआ, एकदा विहार करते चीतोड नगरमें आए, उहा चमिकादेवीकों प्रतिवोधके जीवहिंसा छोमाई, चमिकादेवी पिण शुद्ध क्रियापात्र साधुजाणके वमी भक्तिमानभई, फेर उहाके सघनें साधारण द्रव्यसें ७२ वहोत्तर जिनालयमंमित श्री महावीरस्वामीका मदर वनाया, जिसकी प्रतिष्टा करी, और पिमविशुद्धिप्रकरण, षट्शीतिप्रकरण, संघपट्टा आदि अनेक ग्रथ किये। तथा दस हजार १०००० प्रमाणें वागमी लोकोंकों प्रतिवोधके जैनी श्रावक किये ॥ फेर उसी चित्रकूट नगरमें विक्रम स। ११६७ श्री अभयदेवसूरीके वचनसें श्रीदेवभद्राचार्यजीनें श्रीजिनवल्लभ सूरिकों आचार्यपदमें स्थापन किये, छे महिनातक आचार्यपद भोगवके, अतमें अणशण लेके कालकरके देवलोक गए, इस समय मधुकरा खरतर शाखा निकली ये प्रथम गछ भेद भया ॥ ४३ ॥ ※ ॥

॥ ४४ मा ॥ श्रीजिनवल्लभसूरिके पाट ऊपर, श्रीजिनदत्तसूरिः हुए ॥ सो वमा दादाजीके नामसें सवलोकमें प्रशिद्ध भए ॥ इनोंका किंचिद् अधिकार लिखता हु ॥ धधूका नाम नगरमें, हुवमगोत्रिय, वाछिगनामें एक मत्री हुवा, जिसके वाहम देवी नामें अस्त्री, उसकी कूखसें चद्र स्वम करके सूचित स। ११३२ जन्म हुआ, तव माता पितायें दश दिनका बहुत उछव करके सर्व स्वजनोंके सामनें सोमचद्र ऐसा नाम दिया, शुभलक्षणों सूचित पाच धाय माय करके पालीजताथका जव पाच वरषका भया, तव माता पितायें अछा पमितके पास पढानेंकों वैठाया, बुद्धीकेवलसें थोमा दिनोंमें वहोतसी कला विद्या शीखी, आठ वरषका हुये पीछे गुरूमहाराजके पास उपदेश सुनके वैराग्यकों प्राप्त भया, तव अपना माता पिताकी आग्या लेके स। ११४१ वाचक धमदेवगणिःके पास दिक्षा ग्रहण करी; अर्थात् जैन साधु भया, पीछे गुरूकेपास सपूर्ण शास्त्रोंका अभ्यास,

करनें लगा, इस अवसरमें गुरू महाराज सारंगपुरके विषे कुंअरपाल उपाध्यायकों अंतका अणशण दिराया, आराधना कराई, सो कुंवरपाल उपाध्याय मरके देवगतिकों प्राप्त भया, तव ग्यानके उपियोगसें पूर्वभवका संबध जाणके गुरूकेपास आया, गुरूकों नमस्कार करके सोमचंद्र मुनिकों कहनें लगा, कि, भो सोमचंद्र तुम आचार्य पदकों प्राप्त हुवोगे, परं तीन महुर्त्त देखनेंमें आवेगा, जिसमें पहले महुर्त्तमें मरणांत कष्टहे, अरु दूसरे महुर्त्तमें गच्छ भेद हे,इससें तीसरा महुर्त्त बहुत अच्छा हे, तीसरा महुर्त्तमें आचार्यपद ग्रहण करना, ऐसा कहकर देव अदृश्य होगया,पीछे कथंचित् भावी प्रबलयोग दूसरा महुर्त्तमें स । ११६९ मि । वै । वद६ के दिन श्री देव भद्राचार्यजीयें सूरी मंत्र देके श्रीसोमचंद्रजीकों आचार्यपदमें स्थापन किये, जब श्रीजिनदत्त सूरि ऐसा नाम प्रशिद्ध करा, पीछे विहार करते प्रथम चित्रकूट नगरमें गए, उहा श्री चिंतामणिपार्श्वनाथके, मंदरके स्थंभ में रही हुई विद्याम्नायकी पुस्तक विद्याबलसें प्रगटकरके ग्रहणकरी । फेर उज्जयणीनगरमें गए, उहां महाकालके मंदरके स्थंभमेंसे सिद्धसेन दिवाकरकी विद्याम्नाय पुस्तक विद्याबलसें आकर्षण करके ग्रहण करी फेर तीन क्रोड ह्रींकारजीका जाप किया, जाप करता चोसठ योगणीयोंनें महाराजकों छलनेका विचार किया, तब कोई वीर आयके महाराजकों खवर दीनी । के आज व्याख्यानमें ६४ योगणी आवेंगी,जब गुरूमहाराज श्रावकों पास ६४ पाटिया मंगायके, मंत्रके, श्रावकणयोंकों सोंपदिये, और कहा आज व्याख्यानमें ६४ स्त्रीयों नवी आवेंगी उनोंको पाटियाऊपर बैठाणा,पीछे जब व्याख्यानमें श्रावकणयोंके रूपसें योगणयों आई, नमस्कार करके श्रावकणयोंमें पाटियां ऊपर बैठगई, व्याख्यान पूरण हुए पीछे जब उठनें लगी तो उठनें नपाई कीलीजगई, तब तो अपनो अहंकार छोडके नमस्कार करके योगणियो कहनें लगी, कि हमे सर्व तो आपकों छलनें आईथी परंतु आप हम सर्वकों छललीनी, अब हम सर्व आपकी आग्याकारणियों होके रहसां, हमकों छोडो, जबगुरू महाराज कहा कि फेर कभी कोई खरतर आचार्यकों छलनामति, तब योगणियोंनें ऐसा वचन अंगीकार किया और सात बर दिया ॥ १ प्रतिग्राममें खरतर श्रावक दीप्तिवंत होगा ॥ २ प्राय

केपास दशमी कालकजी सुत्र पढनें लगे तब वैराग्यकों प्राप्त होके गुरुकों कहा, कि साधुका आचार तो ऐसा है, और आप ऐसा सिथलाचारकों क्यु धारण किया है, तब गुरूनें कहा अभी हमारा ऐसाही कर्मोदय है, तब श्रीजिनवल्लभसूरी गुरूकों पूछके शुद्ध क्रियानिधान, परम सवेगी, श्रीजिन अभयदेवसूरीका शिष्य होगया, शुद्धचारित्र पालताथका अनुक्रमें सकल शास्त्रकों पढके गीतार्थ हुआ, एकदा विहार करते चीतोड नगरमें आए, जहां चम्डिकादेवीकों प्रतिबोधके जीवहिसा छोडाई, चम्डिकादेवी पिण शुद्ध क्रियापात्र साधुजाणके बडी भक्तिमान्‌भई, फेर उहांके सघनें साधारण द्रव्यसें ७२ बहोत्तर जिनालयमंडित श्री महावीरस्वामीका मंदर बनाया, जिसकी प्रतिष्टा करी, और पिंडविशुद्धिप्रकरण, षट्शीतिप्रकरण, संघपट्टा आदि अनेक ग्रंथ किये। तथा दस हजार १०००० प्रमाणें बागडी लोकोंकों प्रतिबोधके जैनी श्रावक किये ॥ फेर उसी चित्रकूट नगरमें विक्रम स। ११६७ श्री अभयदेवसूरीके वचनसें श्रीदेवभद्राचार्यजीनें श्रीजिनवल्लभ सूरिकों आचार्यपदमें स्थापन किये, छे महिनातक आचार्यपद भोगवके, अंतमें अणशण लेके कालकरके देवलोक गए, इस समय मधुकरा खरतर शाखा निकली ये प्रथम गच्छ भेद भया ॥ ४३ ॥ ※ ॥

॥ ४४ मा ॥ श्रीजिनवल्लभसूरिके पाट ऊपर, श्रीजिनदत्तसूरिः हुए ॥ सो बडा दादाजीके नामसें सबलोकमें प्रशिद्ध भए ॥ इनोंका किंचित् अधिकार लिखता हु ॥ धधूका नाम नगरमें, हुबडगोत्रिय, वाछिगनामें एक मंत्री हुवा, जिसके बाहड देवी नामें अस्त्री, उसकी कूखसें चद्र स्वप्न करके सूचित स। ११३२ जन्म हुआ, तब माता पितायें दश दिनका बहुत उत्सव करके सब स्वजनोंके सामनें सोमचंद्र ऐसा नाम दिया, शुभलक्षणों सूचित पाच धाय माय करके पालीजताथका जब पाच वरषका भया, तब माता पितायें अच्छा पण्डितके पास पढानेंकों बैठाया, बुद्धीकेबलसें थोडा दिनोंमें बहोतसी कला विद्या शीखी, आठ वरपका हुये पीछे गुरूमहाराज के पास उपदेश सुनके वैराग्यकों प्राप्त भया, तब अपना माता पिताकी आग्या लेके स। ११४१ वाचक धर्मदेवगणिःके पास दिक्षा ग्रहण करी, अर्थात् जैन साधु भया, पीछे गुरूकेपास सपूर्ण शास्त्रोंका अभ्यास

हते नए, अहो स्वामिन् आप महंतहो, अव आज पी है इस नगरमें जो को ई आपकी परपराके सूरि आवेगे नुनोंका प्रवेश उत्सव हम लोक करेंगे आप कृपाकरके हम लोकोंनें कोई नोकरी नोलावो, तव महाराज वोला, मदरोंकी नक्ति करो, मदिरोंमे पमिलेहण करो और, चावल नेवेद्य, फल, जो खाणेकी चीज चढे सो लेवो करो, तवसे व ब्राह्मण म दिरोंकी नक्तिकरनें लगे, सो गभ्रप, नोजक नामसें प्रसिद्ध कुए उस वखतमे वहोतसी जैन मतकी प्रनावना नई, तथा फेर एकदा गुरूमहाराज उच्च नगरमें गए, उहा प्रवेस उत्सव समयें मनुष्योंके वाकुल्यसें उस नगरके मालक मुगलका पुत्र वाहनसें पमकै मरगया तव श्रावक सर्व खेदातुर नया थका गुरूमहाराजकों वीनती करी, तव गुरूमाहाराज यह वात सुनकै जिन मत प्रनावनाकैवास्तै व्यंतर प्रयोग कर्कै छै मासतक मरेनए मुगलपुत्र कों जीवाया,तथा फेर नागदेव नामें श्रावक, अवम इति दूसरा नामें, एकदा गिरनारपर्वतमें तीन उपवास करके अंविकाकों आराधन करके कहा कि हे माता इस समयमें नरतक्षेत्रके विषे युग प्रधान धारक कोण सूरि है, जिनकों में अपनें गुरूपणे स्थापन करू ऐसा पूछा, तव अंविकादेवी तिसकै हाथ मे सुवर्ण अक्षरोंसे एक श्लोक लिखा ॥ दासानुदासाइवसर्वदेवा । यदीयपा दाब्जतलेलुठंति ॥ मरुस्थलीकल्पतरुःसजीयात् । युगप्रधानोजिनदत्तसूरिः१॥ इसकाव्यको जो वाचेगे उनकों युग प्रधान जाणना, अवतिको श्रावक ठिका णें २ वहोत सूरिकों हाथ दिखलावै,परकोईनी अक्षर वाचणको समर्थ नहि नए पीछे एकदातिको पाटणनगरमे तावावामा पामेकै विषे श्रीजिनदत्तसू रीकै पास आकै हाथ दिखलाता नया, तव गुरूमाहाराज तिसकै हाथ लिखित स्वर्णाक्षर ऊपर वास चूर्णमालकै शिष्यनणी आज्ञादीवी तव शिष्यने उनहरफोंकू वाचे, जव नागदेव श्रावक परम नक्तिवत नया । इस मुजव कलिकालमे युग प्रधान पट धारक श्रीगुरूमाहाराज नए एकदा व्याख्यान करते थके श्रीगुरूमाहाराजने विद्यावलसे अपना स्मरण करता कुआ श्रावकका जहाज डूवता जानके तत्काल जहाजकों देववलसें समुद्रके पार उतारा, ये वात जवसंघकों मालुम नई तव वकुत महमा करनें लगे, तथा फेर एकदा श्रीगुरूमाहाराज प्रवल प्रवेश उत्सव करके मुलतान नगरमें गए, तदा

करके खरतर श्रावक निर्द्धन नहि होगा ॥३ संघमें मरी आदिकसें कुमरण नहीं होगा ॥ ४ अबम्ह शीलपालक साधवीके ऋतु न आवेगा ॥ ६ आपका नाम लेता बीजली आदि कोईतरेका उपद्रव सघमें न ऊवैगा ॥ ७ प्रायें खरतर श्रावक सिधू देशमें गया धनवंत होगा ॥ ऐसा सात वर देके फेर योगणियो कहनें लगी कि १ खरतर आचार्य सिधुदेश गयांथकां पचनदीकों साधन करै ॥ २ खरतर आचार्य दिनप्रति दो हजार (२०००) सूरिमत्रको जाप करै ॥ ३ खरतर साधु नित्य दो हजार नवकार मन्त्रको जाप करै ॥ ४ खरतर श्रावक दिनप्रति सवेर, साझे, दोनों कालमें सात स्मरण शुद्ध अक्षरांसें शुद्धचित्तसें गुण ते रहै, वा सुनते रहै ॥ ५ खरतर श्रावक दिन प्रति तीन खीचमीकी माला गुणते रहै, एक मणिका ऊपर एकनवकार १ उवसग्गह र. स्तोत्र गुणें, उसकों खीचमी माला कहते हैं ॥ ६ खरतर श्रावक मासमें दो आंबिल अवश्य करै, और दादाजीकी ध्यावनार रखे ॥ ७ खरतर साधु ऊी सक्ति सदा एकाशणो करै ॥ ये ७ वर पालनेंसें पूर्वोक्त ७ वर सफल होवेंगे ॥ ऐसा कहके फेर योगणियों कहनें लगी कि, दिल्ली १ अजमेर २, भरुअच्छ ३, उज्जैण ४, मुलतान ५, उचनगर ६, लाहोर ७ ॥ इन नगरोंमें पूर्ण शक्ति रहित खरतर गच्छ नायक रात्रवासी न रहै औसा कहकै अपणें ठिकाणें गई, तथा फेर अजमेर नगरमें पाक्षिक पमिक्रमण करते थके श्रीगुरूमहाराज वेरवेरऊवत्कार करती थकी बीजलीकों मन्त्रबल करकै पात्रकै अधोभाग में रक्खी, तब प्रतिक्रमण बाद पात्रके नीचेसें निकाली, जब उसनें कहाकि जिनदत्त नाम ग्रहण करणेंसें में नहि पडूंगी ऐसा वर देकै अपनें ठिकाणें गई, फेर एकदा गुरू माहाराज विहार करते थके वृद्ध नगर गए, तहा जिन मत उन्नतीकों नहि सहता थका ब्राह्मणलोक जिनमदिरमें मरी भई गऊकों माल गए, उहा मरी गऊ कों देखकै ब्राह्मण कहणें लगे,अहो जैनीयोंका देव गऊ घातक है ऐसा वचन सुनकै खेदातुर भए थके श्रावक लोक गुरूमहाराजसें वीनती करी तब गुरूमहाराज मन्त्रबलें व्यंतर प्रयोग करकै मरी थकी गऊ कों अच्छी करी, तब तिका गऊ अपणी इच्छासें उठकै, शिव मदरमें शिव मूर्तिऊपर आकै पमगई, तब नगरमें ब्राह्मणाकों अत्यत लज्जा उत्पन्न भई तब लज्जित भए थके ब्राह्मण गुरूमहाराजके चरणकमलमें पमकै ऐशा क

हते ज्ञए, अहो स्वामिन् आप महतहो, अब आज पीछे इस नगरमें जो को ई आपकी परंपराके सूरि आवेंगे उनोंका प्रवेश उत्सव हम लोक करेंगे आप कृपाकरके हम लोकोनें कोई नोकरी जोलावो, तब महाराज बोला, मंदरोंकी ज्ञक्ति करो, मंदिरोंमें पम्लिलेहण करो और चावल नैवेद्य, फल, जो खाणेंकी चीज चढै सो लेवो करो, तबसें वे ब्राह्मण मं दिरोंकी ज्ञक्तिकरने लगे, सो गंध्रप, जोजक नामसें प्रसिद्ध ज्ञए उस वखतमें बहोतसी जैन मतकी प्रज्ञावना ज्ञई, तथा फेर एकदा गुरूमहाराज उच्च नगरमें गए, उहा प्रवेस उत्सव समये मनुष्योंके बाज्ञल्यसें उस नगरके मालक मुगलका पुत्र वाहनसें पमके मरगया तब श्रावक सर्व खेदातुर ज्ञया थका गुरूमहाराजकों वीनती करी, तब गुरूमाहाराज यह बात सुनके जिन मत प्रज्ञावनाकैवास्तै व्यतर प्रयोग करके छै मासतक मरेज्ञए मुगलपुत्र कों जीवाया,तथा फेर नागदेव नामें श्रावक, अबम इति दूसरा नामें, एकदा गिरनारपर्वतमें तीन उपवास करके अंबिकाकों आराधन करकै कहा कि हे माता इस समयमें ज्ञरतक्षेत्रकै विषे युग प्रधान धारक कोण सूरि है, जिनकों में अपने गुरूपणे स्थापन करू ऐसा पूछा, तब अंबिकादेवी तिसकै हाथ मे सुवर्ण अक्षरोंसे एक श्लोक लिखा ॥ दासानुदासाइवसर्वदेवा । यदीयपा दाब्जतलेलुठंति ॥ मरुस्थलीकल्पतरुःसजीयात् । युगप्रधानोजिनदत्तसूरिः१॥ इसकाव्यकों जो वाचेगे उनकों युग प्रधान जाणना, अबतिको श्रावक ठिका णें २ बहोत सूरिकों हाथ दिखलावै,परकोईज्ञी अक्षर वाचणकों समर्थ नहि ज्ञए पीछे एकदातिको पाटणनगरमें तावावाला पामेकै विषे श्रीजिनदत्तसू रीकै पास आके हाथ दिखलाता ज्ञया, तब गुरूमाहाराज तिसके हाथ लिखित स्वर्णाक्षर ऊपर वास चूर्णमालके शिष्यज्ञणी आज्ञादीवी तब शिष्यनें उनहरफोंकू वाचे, जब नागदेव श्रावक परम ज्ञक्तिवत ज्ञया । इस मुजब कलिकालमें युग प्रधान पद धारक श्रीगुरूमाहाराज ज्ञए एकदा व्याख्यान करते थके श्रीगुरूमाहाराजनें विद्यावलसे अपना स्मरण करता ज्ञवा श्रावकका जहाज डूवता जानके तत्काल जहाजकों देववलसे समुद्रके पार उतारा, ये बात जबसंघको मालुम ज्ञई तब बज्ञत महमा करनें लगे, तथा फेर एकदा श्रीगुरूमाहाराज प्रबल- [illegible] उव करके मुलतान नगरमें गए, तदा

चार मार्गमें रहा थका, पत्तनमें वसनेंवाला, परपक्षीय अवमनामें श्रावक खरतर गच्छकी उन्नतीकों नहि सहता थका बोला, कि इस नगरमें इस आम्बरसें आप आए हो, पर अणहिल्लपत्तनमे इसतरेंसें आवोगे जबमें जानोंगा, यह बात सुनकै गुरूमहाराज बोले कि हमतो इसी प्रकार करकै आवेंगे, परतु तैल लवण आदि, चीज खाधे रखके सन्मुख मिलैगा, पीछे जब गुरूमाहाराज कितनें दिनबाद अणहलपुर पत्तन गए तब अवम श्रावक दैववससें निर्द्धन भया थका मुलतान नगरसेती भागके पत्तन जाकै तेल लवणादि व्यापार करकै आजीवका करनें लगा, उहा गुरूके प्रवेश उत्सव समय सन्मुख मिला, गुरू उल्लख करके बतलाया, तब गुरू ऊपर अतिद्वेप धारन करता थका कपट करकै खरतर श्रावक हो गया, एकदा श्रीगुरूमहाराजकों विप मिश्रित शाकरका जल पिलाया, तब गुरूमहाराज विप प्रयोग जानकै, तहाका राय भणसालीगोत्रीय, आभूनामें मुख्य श्रावक प्रतें, ए स्वरूप कहा तब आभूनामें श्रावक घर्मीमें जोजन जावे ऐसा उठ ऊपर नोंकरकों चढाकै, पाल्हणपुर सेती विप अपहारिणी जमी मंगवाके निर्विप कीए, तबयो अवम लोकमें नदीजता थका मरकै व्यतर भया, व्यतर होके फेर श्रावकोंमें उपद्रव करनें लगा, तब गुरूमाहाराज विद्यावलसें सर्व उपद्रव दूर किया, और व्यंतरभी भागके अपनें स्थानक गया, तथा फेर एकदा विक्रमपुरमें मरीका उपद्रव प्रगट भया, तब गुरूमाहाराज उस उपद्रवको दूर करा, तब दुःखित भए थके महेश्वरीलोक बोले, कि हे स्वामिन् हमारे ऊपर रुपा करके हमारे कुटबको उपद्रव दूर करो, तब गुरूमहाराजनें उनोंका वचन ग्रहण करके उन लोकोंका उपद्रव दूर करते भए, तब महेसरी गोत्रका श्रावक भया, तथा कितनेक शिवमत वाले श्रावक नहि भए, तब तिनमेंसें जिसकै चार पुत्र था उसका एक पुत्र ग्रहण करा, जिसके तीन पुत्रीथी तिससें एक पुत्री ग्रहण करी, ऐसें (५००) पाचसें शिष्य साधु हुए, ७०० सातसें साधवी हुई, इसीतरें श्रीजिनदत्तसूरिमहाराज बहोत नगरोंके विषे विहार करते रजपूत ब्राह्मणा दिककों प्रतिबोधके नाहटा, राखेचा, भणसाली, नवलरका, भागा, वाफणा इत्यादि गोत्रअलरुता "एक लाख पचीस हजार श्रावक करा," तथा

श्रीगुरूमाहाराज मुलतान नगरके विषै लूणीया गोत्रीय हाथी साहके ऊपर कृपा करकै पडिकमणेमें तिसकों, अजियजियसव्व भय । यह स्तोत्र दीया, तथा अणहिल्लपत्तनके विषै, बोथरा गोत्रीय श्रावकाकों जयतिहुअण वरक प्पहरकजयजिणधन्नतरि । यहस्तोत्र दीया, फेर गुरूमाहाराज मेमता नगरकै विषै, गणधर चोपडा गोत्रीय श्रावकांकों उवसग्गहर पास । यह स्तवन दीया । फेर जलऊपर कवलीतिरणादि प्रकार करकै पचनदी पचपीर साधक, संदेह दोलावली आदि अनेक ग्रथकारक, नानाविद्यासहित, परम उपकारी परमयश सौभाग्यधारक महाप्रभावीक श्रीजिनदत्तसूरिः संवत् १२११ आषाढ सुदि एकादशीके दिन अजमेर नगरमें अणशणकरकै पहला सोधर्मनामा देवलोकमें टकलनामा विमानमें ४ पल्योपमके आऊखे महर्द्धिक देवतापणें उत्पन्न भए ॥ यदुक्त ॥ भणिय तित्थयरेहिं । महाविदेहे भवंमितइयमि । तुह्माणतेगुरुणो । मुरके सिग्घगमिस्सति ॥ १ ॥ टकलय मिविमाणे । सपइसोहम्मकप्पमझमि । चउपलिउवमआउ । देवोजाउ महह्वीउ ॥ २ ॥ श्रीजिनवल्लभसूरि पट्ट प्रभाकर श्रीजिनदत्तसूरी महाराजके शिष्यादि सर्व संघके सामनें देवतायें आयके ऐसा वचनकहा, इसीतरे बडे प्रभावीक श्रीजिनदत्तसूरि महाराजकों बडादादाजीके नामसें सर्व संघपूजनें ध्यावनें लगे ॥ ४४ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ तत्पट्टे ४५ मा । श्री जिनचंद्रसूरिः भए, पिता साहरासलक माता देल्हणदेवी तिसके पुत्र स । ११९१ मि । भाद्रवा सुद ८ के दिन जन्म, सं । १२११ वैशाख सुदि ५ के रोज विक्रमपुरके विषै रासलकृत नदीमहोत्सव सहित श्रीजिनदत्तसूरियें आप आचार्यपदमें स्थापन कीए, ऐसे श्रीजिनचंद्रसूरि नरमणिमण्डित भाल स्थल खोमीया क्षेत्रपाल सेवित भए, अथ अन्यदा श्रीगुरूमहाराज गुर्जर देश प्रति जाते थके,श्रीमालगोत्री मदनपाल श्रीचंद्रादिकके आग्रह करकै दिल्लीनगर गए, उहा बाद शाहकों अनेक चमत्कार देखाके अपना भक्तिवंत किया अरु बहुत सा धर्मका उद्योत किया, पीछे एकदा गुरूमहाराज अपनी अंत अवस्था जानके मदनपालकों कहाकि हमारै मस्तकमें मणि है, तिसकों अग्नि संस्कारसमयमें दूधसें भराभया पात्र रक्षण करकै तुम ग्रहण कर

दिन दिल्लीनगरकै विषै दिक्षा, सं। १२३३ से कार्त्तिक सुदि १३ त्रयोदशीकेदिन श्रीजयदेवाचार्यँ आचार्यपदमें स्थापन किये पीछे विहार करते श्रीजिनपतिसूरि एकदा बब्बर नामा पत्तनकै विषै गए,तहा ३६ छत्तीस वादियाकों जीतकै वहोत जिन शासनकी प्रभावना करी,तथा फेर एकदा आसापुरमें श्री मालज्ञाती हाजी साहनें मदिर बनवाया, उसकी प्रतिष्टाकै अवसरमें मणिग्रह ण करनेंवाला योगीनें जिन प्रतिमाकों स्तम्भन करदी तब चिंता सहित श्रीजि नपतिसूरिनें अपना गुरूकों आराधन किया, तब श्रीजिनचद्रसूरि महाराज प्रगट होकै चूर्ण दिया, पीछे प्रभातसमय गुरू उन प्रतिमा ऊपर चूर्ण माला तिस करकै प्रतिमा जलदी उठ गई,तब योगी प्रसन्न भयाथका मणिकों पीछी देदीवी, श्रीगुरूमहाराजकी महिमा वहोत फैली, तथा फेर एकदा श्री गुरूमहाराज, अजमेर नगरमें चतुर्मासी रहे, तब उहाके रहनेंवाले रामदेवादिक श्रावकाक अगामी, खेमगामवासी छाजेम गोत्री मत्री उद्धरण साहकी प्रससा करे, एकदा रामदेव श्रावक मत्री ऊधरणसे जायके मिले, तब तिस मत्रीयें रामदेवप्रतें वहोत आदर सहित अपनें घरलायके विधिसें भोजन करा कै भक्तिकरी, तिस अवसरमें मत्रवीकी स्त्री देवमंदिरमें देववदन करनेंकेवास्तैचली जब सामा, कचूकी, अनेक वस्त्रसें भरी छावमीया साथमे ग्रहण करी, तब रामदेवनें पूछा किसवास्तै इतना वस्त्रग्रहण कीएहें तब सेवक लोक कहते भए, कि यह वस्त्र साधर्मिक स्त्रीयाकों देनेंकेवास्तै हमेसा लेजाते हें तब रामदेव कहनें लगा कि श्रीजिनपतिसूरजी महाराज जो तुमारी प्रशसा करी सो योग्य है, कि जिसकै घरमें ऐसे धर्मकार्य होते है, अथ एकदा ऊध रण मत्रवीनें नागपुरमें देवघर कराया, तब बिंब प्रतिष्टा निमत्त मंत्रवीयें अपना कुलगुरुकों बुलवाए, पर कोई कारण करकै मऊर्त्त ऊपर न आए और ऊधर णकी स्त्री खरतर गच्छके श्रावककी पुत्री थी, तिसनें मंत्रवीके कुलगुरुप्रतेंही नाचारी मानकै शुद्ध सवेग रगधारी श्रीजिनपतिसूरि महाराजकों बुलवाए तिके मऊर्त्तकै ऊपर तहा आए, तब तिनोंकेपास सेती प्रतिष्टा करवाई ऊध रण मत्री कुटंब सहित खरतर गच्छीय श्रावक होगए, तिस मत्रवीके कुलधर नामें पुत्र भया जिसनें वाहड़मेर नगरमे उचा तोरण सहित मदिर बनवाया तथा फेर मरोट नगरमें रहनेंवाले नेमिचद्र भंडारीनें परिक्षा करकै शुद्ध सं

ना, मार्गमें विश्राम लेनेंकेवास्ते सेढीकों न रखना ऐसा कहके महा
राज सर्व आयु २६ वरसको पालकें स। १२२३ भाद्रवा वदि १४ चतुर्द
शीके रोज अणशण करकै स्वर्ग गए॥ तदा सर्व श्रावक मिलकै अग्नि स
स्कार करनेंकेवास्तै जाते थके भरवजार माणक चोकतक आए, तब कोई
कार्यपणेंकरकै पहली कहा गुरूकावचन भूलके विश्रामकेवास्तै सेढिकोंनीचै
रखदीनी मणिग्रहण करनेंकेवास्ते, दुग्धपात्रभी न रखा,पर तहा एक विद्यावान्
योगी मणिग्रहणकरनेकी इच्छासें दुग्धपात्र भरके एकात बैठ गया पीछे फेर
वहोत यत्न करकै सीढीकों उठानें लगे तो पिण सीढी उठे नही,तब सर्व नगरकै
विषै या बात फैली अनुक्रमसें बादशाहनेंभी सुनी तहा बादशाह आप
आयकै वहोत उठानेंका उपाय करा, परसेढी जगासें सिरकी नहि, तब बा
दशाह बोला कि सत्य है यह देव, ये जनका सेवमा जीताभी चमत्कारी था
और मुवाभी चमत्कारी हुवा, इसका स्थान इहांईज हुवो, तब श्रावकोंनें
तहांई अग्निसस्कार करा,तिस अवसरमें गुरुके मस्तकसेती मणी फमाकशब्द
करकै योगीनें रख्खा था सो दुग्धपात्रमें पमी, योगी उसकों ग्रहण करकै अ
पनें ठिकाणें गया, तब मदनपाल कहाकि गुरूमहाराज पहली मेरेसें
कहा था, परमें जलदीकैं सववसें भूल गया, तब सर्व साधु श्रावक तिसकों
उलभा दिया अरु तिसी ठिकाणें श्री जिनचद्रसूरीकी छतरी वनवाई बादशाह
प्रमुख सर्व लोकोंनें वहोत वहुमान करा, सर्व लोक जातदेनें लगे, तिस ठि
काणेकी अभीतक यात्रियोंसें पूजा होती है, इसमाफक प्रभावीक श्रीगुरूम
हाराज भए, इहासेती चतुर्थपाटकै विषै अतिशयवत जिनचद्रसूरी नाम दे
णा, ऐसा पद्मावतीनें वर दिया॥ ४५॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ इनोंके समयमें श्री देवचद्र सुरीका शिष्य तीन क्रोम ग्रथका
कर्ता कलिकालमें सर्वज्ञ विरुद धारक पाटणका कुमारपाल राजाकों प्रतिबो
धक श्री हेमाचार्यजी भए स। ११६६ सूरिपद, स। १२२९ देवलोक, इनों
का विशेष अधिकार कुमारपाल चरित्रसें जाणना॥ ❋ ॥ ॥ ❋ ॥

॥ ❋ ॥ तत्पट्टे ४६ मा श्रीजिनपतिसूरि भए, तिके मालू गोत्रीय
साह यशोवर्द्धन पिता, सूहवदेवी माता, स। १२१० चेत्र वद ८ के
दिन मूलनक्षत्रे जन्म हुवा, स। १२१८ फागुण वदि ८ अष्टमीके

दिन दिल्लीनगरकै विषै दिक्षा, सं । १२३३ से कार्तिक सुदि १३ त्रयोदशीकेदिन श्रीजयदेवाचार्यें आचार्यपदमें स्थापन किये पीछे विहार करते श्रीजिनपतिसूरि एकदा वब्बर नामा पत्तनकै विषै गए,तहा ३६छत्तीस वादियाकों जीतकै बहोत जिन शासनकी प्रभावना करी,तथा फेर एकदा आसापुरमें श्री मालज्ञाती हाजी साहनें मदिर वनवाया, उसकी प्रतिष्टाकै अवसरमे मणियह ण करनेंवाला योगीनें जिन प्रतिमाकों स्तम्भन करदी तव चिता सहित श्रीजि नपतिसूरिनें अपना गुरूकों आराधन किया, तव श्रीजिनचद्रसूरि महाराज प्रगट होकै चूर्ण दिया, पीछे प्रभातसमय गुरू उन प्रतिमा ऊपर चूर्ण माला तिस करकै प्रतिमा जलदी उठ गई,तव योगी प्रसन्न भयाथका मणिकों पीछी देदीवी, श्रीगुरूमहाराजकी महिमा वहोत फैली, तथा फेर एकदा श्री गुरूमहाराज, अजमेर नगरमें चतुर्मासी रहे, तव उहाके रहनेंवाले रामदेवादिक श्रावकोंक अगाभी, खेमगामवासी छाजेम गोत्री मत्री उधरण साहकी प्रससा करे, एकदा रामदेव श्रावक मत्री ऊधरणसें जायके मिले, तव तिस मत्रीयें रामदेवप्रते वहोत आदर सहित अपनें घरलायके विधिसें भोजन करा कै भक्तिकरी, तिस अवसरमें मत्रवीकी स्त्री देवमंदिरमे देववदन करनेंकैवास्तैचली जव सामा, कचूकी, अनेक वस्त्रसे भरी छावमीया साथमें ग्रहण करी, तव रामदेवनें पूछ किसवास्तै इतना वस्त्रग्रहण कीएहैं तव सेवक लोक कहते भए, कि यह वस्त्र साधर्मिक स्त्रीयाकों देनेंकेवास्तें हमेसां लेजाते हैं तव रामदेव कहनें लगा कि श्रीजिनपतिसूरजी महाराज जो तुमारी प्रसंसा करी सो योग्य है, कि जिसके घरमें ऐसे धर्मकार्य होते हैं, अव एकदा ऊध रण मत्रवीनें नागपुरमें देववर कराया, तव विंव प्रतिष्टा निमत्त मंत्रीयें अपना कुलगुरुकों वुलवाए, पर कोई कारण करकै मऊर्त्त ऊपर न आए और ऊध णकी स्त्री खरतर गच्छके श्रावककी पुत्री थी, तिसनें मंत्रीके [illegible] नाचारी मानकै शुद्ध सवेग रगधारी श्रीजिनपतिसूरि [illegible] तिके मऊर्त्तकै ऊपर तहा आए, तव तिनोंकेपास मेती [illegible] रण मत्री कुटव सहित खरतर गच्छीय श्रावक होगए, [illegible] नामें पुत्र भया जिसने वाहडमेर नगरमे ऊचा तोरण [illegible] तथा फेर मरोट नगरमें रहनेंवा: भमारीनें [illegible]

वेगवत श्रीगुरूप्रतें जानकै चारित्रकी इच्छा करता थका अवम नामें अपणा पुत्र गुरूमहाराजके भेट करा, इसमाफक श्रीजिनपतिसूरि सर्व आयु ६७ सत्तसठ वरसको पालके स । १२७७ पाल्हणपुर नगरमें स्वर्गगए ॥ ४६ ॥ इनोंके समयमें स । १२१३ अंचलनाम गछ हुवा, सं । १२२६ सार्द्ध पौर्णमीयक मत हुवा, स । १२५० आगमिया मत हुवा सं । १२८५ चित्रवाल गछके चैत्यवासी जगचंद्राचार्यजीसें तपा नाम गछ प्रचलित भया,

श्रीजिनपतिसूरिपट्टे ४७ मा श्रीजिनेश्वरसूरि भए, तिणोंका स । १२४५ मार्गशिर सुदि एकादशीके दिन भरणी नक्षत्रमें जन्मः तथा मरोटनगरके भमारी नेमिचंद्र पिता लक्ष्मी माता, अवम ऐसा मूलनाम, स । १२५५ खेम नगरके विषेदीक्षा देके वीरप्रभ नाम दिया फेर स।१२७८ माघसुदि ७ के दिन जालोरनगरमें मालूगोत्री साह खीमसीनें १२ वारे हाजार रुपये खरच करकै नदीमहोत्सव करा, सर्व देवाचार्यनें सूरिमंत्र करकै पद स्थापना करी, इस माफक श्रीजिनेश्वरसूरि स । १३३१ आसोज वदि ६ के दिन अणशण करकै स्वर्ग गए, इनोंके वारेमें स । १३३१ जिन सिद्दसूरिसेती लघु खरतर शाखा निकली, यह तीसरा गछभेद ॥ ४७ ॥ ॥४७॥

श्रीजिनेश्वरसूरि पट्टे ४८ मा श्रीजिनप्रबोधसूरि भए, साह श्रीचद पिता, सिरियादेवी माता, तिनके पुत्र स । १२८५ जन्म, पर्वत ऐसामूलनाम, स । १२९६ फागुण वदि ५ पचमीके दिन हस्त नक्षत्रमें थिराद नगरकै विषे दीक्षा ग्रहण करी, प्रबोधमूर्त्ति ऐसा दिक्षाका नाम भया अनुक्रमें वाचक पद प्राप्त भए, सवत् ॥१३३१॥ आसोज वदि पचमीके दिन सक्षेप करकै पाट महोछव भया, पीछै सवत्॥१३३१॥ फागुण वदि ८ अष्टमीके दिन विस्तार करकै स्वाति नक्षत्रमें जालोर वसणेवाले मालूगोत्रीय साहखीमशानें २५ हजार रुपया खरच करकै पाट महोछव करा, इसमाफक श्रीजिनप्रबोधसूरि निर्मल चारित्र आराधन करकै स । १३४१ स्वर्ग गए ॥ ४८ ॥

तत्पट्टे ४९ मा श्रीजिन चद्रसूरि भए ॥ तिके समियाणा गाममें रहणेवाले छाजेहडगोत्रीय मत्रीदेवराज पिता कमलादेवी माता, खभराय मूलनाम स । १३२६ मिगशिर सुदि ४ चोथकू जन्म सं । १३३२ जालोर नगरके विषे दीक्षा स । १३४१ वैशाख सुदि ३ तीज सोमवारके दिन मालू गोत्रीय साहखीम

सीनें १२ वारे हजार रुपया खरच करकै महोत्छव करा इसमाफक गुरूमा हाराज देशोंमें विचरते थके वहोत राजस्थानमें मान्यनीक भए जिसमें मुख्य दिल्लीके वादशाह, तथा चीतोमगढका राजा, जेसलमेरका राजा, मंडोरका राजा, यह मोटे ४ राजे तो महाराजके परम भक्त भए, महाराजकै ध र्मोपदेशसें आपापणें राज्यादिकमें जीव दयादिक धर्म उनती करी,सर्वराजादिक खरतर गच्छकों राज गच्छ कहनें लगे, वादशाहनें आदि लेके फुरमाणभी अ पनी २ मोहर छापका लिखके दीया, सो आजतक खरतर गच्छके प्राचीन भमारोंमें है, ऐसे गुरूमाहाराज कलिकाल केवली विरुद विख्यात अनेक वादीयाकों जीतनेंवाले जिनशासनोन्नति करनेंवाले श्रीजिन चंद्रसूरजी स। १३७६ कुसुमाण ग्राममें स्वर्ग गए ॥ तिस वखतमें खरतर गच्छकों राज गच्छ विरुद मिला ॥ ४९ ॥ ॥✲॥

॥ तत्पट्टे ५० मा श्रीजिन कुशलसूरिजीमहाराज भए॥ तिके समियाणा गामके वसणेंवाले, छाजेहड गोत्रीय, मंत्री जिल्हागर पिता, जयतश्रीमाता, सं। १३३० जन्म, स। १३४७ दीक्षा सं। १३७७ ज्येष्ट वदि एकादशीकै दिन श्रीराजेंद्राचार्यें सूरिमंत्र, दिया, तव पाटणके वसणेंवाले साहतेजपालनें नंदीमहोत्छव करा, २४०० चोवीससै साधू साधवी भणी, तथा७००सातसैं वेषधारी जैनपंमितादिककों वस्त्रादिक दीया, तथा तिस अवसरमें दिल्लीनगरके रहनेंवाले महतीयाण गोत्रीय, विजयसिंह श्रावक उहा जायकै वहोत द्रव्य खरच करके नंदीमहोत्छव करा, तथा स। १३८० साहतेजपालनें निकाला संघकै साथ सेत्रुंजै तीर्थ गए, तहा गुरूमहाराज मानतुंग नामें खरतर वसीके मंदिरमें २७ सत्तावीसअंगुल प्रमाणें श्री आदिनाथ विंवकी प्रतिष्टा करी तथा भीमपल्हि नगरमे भुवनपालनें वनवाया ७२ वहोत्तर जिनालयमंमित श्रीवीरस्वामीके मंदिरकी प्रतिष्टाकरी, तथा जेशलमेर नगरमें, जस धवलनें मंदिर वनवाया श्रीचिंतामणि पार्श्वनाथकी प्रतिष्टाकरी,तथा फेर जालोर नगरमें श्रीपार्श्वनाथकी प्रतिष्टा करी, तथा आगरा नगरमें रहनेंवाले श्रीसंघकै आग्र हसें साथ होकै सेत्रुंजयकी यात्रा करकै आषाढ वदि ७ सप्तमीके दिन पाटण नगरमें आए तथा श्रीगुरुमहाराजकै १२०० वारेसै साधु संप्र दायमें भए, १०५ एकशो पाच साधवीयोंका संप्रदाय भया, तथा श्रीगुरु

महाराज विनयप्रभादिक शिष्याकों उपाध्याय पद दीया, जिस विनय प्रभ उपाध्याये निर्द्धन भया अपनें भाईकों संपत्तिके वास्तै मंत्र गर्भित गौतमरासबनायकै दिया, तिसकै गुणनेंसें अपनाभाई फेर धनवंत भया इसमाफक वहोत श्रावक प्रतिबोधक, परम जिनधर्म प्रभावक, श्रीजिन कुशलसूरि सं। १३८९ फागुण वदि अमावसके रोज, देराउर नगरमें ८ आठ दिनतक अणशण करकै स्वर्ग प्राप्त भए। तिके अभीतक दादोजी ऐसे नाम करकै सर्व जगतमें प्रसिद्ध हैं, प्रतिनगरमें गुरूमाहाराजके चरण कमल पूजीज रयेहैं, सोमवती पूनमकों प्रथम दर्शन दिया, तिस कारणसें सोमवार पूनमकों विशेष करकै पूजा होती है ॥ ५० ॥

॥ तत्पट्टे ५१ मा श्रीजिनपद्मसूरि भए, तिके छाजेहडवंश भूषण सं। १३८२ जन्म सं। १३८९ ज्येष्ट सुदि ६ छठके रोज श्रीदेराउर नगरमें साह हरपालने नंदीमहोत्सव करा, तब आठमें वरसे तरुण प्रभ आचार्यं सुरिमंत्र दीया, अथ एकदा श्रीगुरुमहाराज वाहडमेर नगरमें श्रीमहावीरस्वामीके मंदिरमें देव वंदन करनेंवास्ते गए तहां देव मंदिरको दरवाजो छोटो, प्रतिमावडी देखकें, पंजाबदेशके रहनेंवालेथे तिसवास्तै तिस देशकी भाषा करकै कहा, बूहा नढा, यानें दरवजा छोटा, वसही वड्डी यानें प्रतिमाबडी, अदंर क्यू माणित्ति यानें भीतर किस्तरेसें माई, ऐसे प्रगट बालभाव वचन सुनकें, श्रीगुरुमहाराजके पासमें रहा थका, विवेक समुद्र उपाध्यायें कहा, कि मौन करो, ततो व्याख्यान स्थिति प्रवर्त्तन करते थके, तिन उपाध्यायकेसाथ, श्रीगुरुमहाराज गुर्जर देशमे आए तहां पाटणके पास सरस्वती नदीके तट ऊपर रात्रवासी रहे परतिस वखतमें गुरुमहाराजकों ऐसी चिंता उत्पन्न भई के सवेरे संघके अगाभी इस भाषा करके किस्तरें व्याख्यान करगा, ऐसी चिंता करते थके गुरु महाराजके भाग्यसें अर्द्ध रात्र समयमें सरस्वती नदीकी अधिष्टायका सरस्वती देवी प्रगट होके ऐसा वर दिया, अहो स्वामी प्रभात समयमें आप संघके अगाभी जो कुछ कहोगे, तिससें सकल संघ प्रसन्न होगा अब प्रभात समयमें संघके अगाभी गुरु महाराज अपणी इच्छासें अर्हं तो भगवत इंद्र महिता, इत्यादि नवीन काव्य बनायके उपदेश दिया तब

समस्त संघ श्री गुरु महाराजको व्याख्यान सुन करके बहोत ... तहाँ गुरु महाराज वाल वस्त्र कूर्चात सरस्वती ... इस माफक श्रीजिनपद्मसूरि सं १४०० वैशाख सुदि १४ ... के रोज पाटण नगरमें स्वर्ग गए ॥ ५१ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ तत्पट्टे ५२ मा श्री जिनलब्धि सूरि भए, पाटण नगरके वसनें वाले, नवलखा गोत्रीय, साह ईस्वरदासनें नदी महोत्सव करा, तरुण प्रभाचार्यें सूरि मंत्र दीया, अनुक्रमें गुरुमहाराज सर्व सिद्धांत सिरोमणि, ग्रंथ विधान लायक भए, तिके सं । १४०६ नागपुर नगरमें स्वर्ग गए ॥५२॥

॥ ॥ तत्पट्टे ५३ मा श्रीजिनचंद्रसुरि भए ॥ तिके सं। १४०६ माघ सुदि १० दशमीके रोज, नागपुर निवासी, श्रीमाल साह ... नें नदीमहोत्सवसहित पद स्थापना करी, तरुण प्रभाचार्यैसूरि मंत्र दिया, ऐसे श्रीजिनचंद्रसूरि सं। १४१५ आषाढ वदि १३ त्रयोदशी के रोज स्तम्भन तीर्थविषै स्वर्ग गए॥५३॥

॥ ॥ तत्पट्टे ५४ मा श्री जिनोदय सूरि भए, तिके ... पुर वसनेंवाले, मालूगोत्रीय, साह रुद्रपाल पिता, धारल देवी माता, सं । १३७५ जन्म, समरो, ऐसा मूलनाम सं । १४१५ ... सुदि २ दूजके दिन, स्तम्भन तीर्थके विषै, लूणीया गोत्रीय साह ... नंदि महोत्सव करके श्री तरुण प्रभाचार्यैं पद स्थापना करी, ... स्तंभन तीर्थ विषै श्री अजितनाथ मंदिरकी प्रतिष्टा करी, तथा ... यात्रा करके ... पाच प्रतिष्टा करी, इस माफक पांच ... करनेवाले फेर १२ वारे गामके विषै अमारि डूंडी फिरानें ... साधु ... के परवार करकै अनेक देश विहार करतेथके, ... दय सूरि सं। १४३२ भाद्रवा वदि ११ एकादशीके रोज ... स्वर्ग गए । तिनोंके वारे सं । १४२२ वेगम खरतर शाखा ... ५४ ॥

॥ ॥ श्री जिनोदय सूरिपट्टे ५५ ... सूरि ... मान तिके सं । १४३२ फागुण वदि ६ ... नगरमें ... णा व धरणनें नदी महोत्सव किया सूरि पदमें ... धारण प्रमाणें न्याय ग्रंथ पढे और सर्व सिद्धांत ... दी आई सं । १४६१ ... स्वर्ग गए ...

॥ ✱ ॥ तत्पट्टे ५६ मा श्री जिनभद्र सूरि भए तत्प्रबंधोयथा ॥ प्रथम स। १४६१ श्री सागर चंद्राचार्यें, श्री जिनराज सूरि पट्टे श्री जिनवर्द्धन सूरिकों स्थापन कीएथे, तिके एकदा जेशलमेरगढमें श्री चिंतामणि पार्श्व नाथके पासमें रही क्षेत्रपालकी मूर्त्ति देखके स्वामी सेवकका बराबर बैठना अयुक्त है, ऐसा विचार करके क्षेत्रपालकी मूर्त्तिकों उठायके दरवज्जेके विषै स्थापन करी तब क्रोधायमान भया थका क्षेत्रपाल जहां तहां गुरूमहाराज का चतुर्थ व्रतका भंगपणा दिखलाने लगा, इसीतरे एकदा गुरूमहाराज चित्रकूटके विषै गए, तहां पिण देवता तिसी तरेसें करा, तब सर्व श्रावक चतुर्थ व्रतका भंग जानके यह पूज्य पदके योग्य नहि है ऐसा विचार करा क्रमसें वर्द्धमान सूरि व्यंतर प्रयोग करकै ग्रथलीभूत भए थके पिप्पलक ग्राममें जाकै रहे, कितनेक शिष्य पासमें रहे, तब सागर चंद्राचार्य प्रमुख समस्त साधु वर्ग एकत्र होकै, गच्छकी स्थिति रखणे वास्ते, नवीन आचार्य स्थापन करना, ऐसा विचार करा, तब नवीनगोरा नाम क्षेत्रपालकों आराधन करके, और सब देशके खरतर गच्छीय सघकी अनुमति हस्ताक्षर मगवायके सब साधुमंडली एकठी करकै भाणसोल ग्राम आए, तहां श्रीजिनराजसूरियें एक अपणे शिष्यकों वाचक शीलचंद्रगणीकेपास पढनेकेवास्ते रक्खा था सो समस्त शास्त्रका पारगामी भया, भणसाली गोत्रीय, भादोमूल नाम सं। १४५१दीक्षा ग्रहण करी, अनुक्रमें पचवीस वर्षके भए, तब तिनकों योग्य जानके श्रीसागरचंद्राचार्यें सातभंडाराक्षर मिलाय के स। १४७५ माघसुदि पूर्णमासीकेदिन, भणशाली नालाभाहनें सवा लक्ष रुपये खरच करकै नंदीमहोत्सव सहित सूरि पदमें स्थापन किए ॥ सप्त भकार लिखे है॥ १ भाणसोल नगर ॥२भणशालिक गोत्रीय ॥३भादो नाम ॥४भरणी नक्षत्र ॥५ भद्राकरण ॥ ६ भट्टारक पद ॥ ७ जिनभद्र सूरि ॥ इस माफक बने प्रभावीक श्री जिनभद्र सूरि विचरते थके, आबूजी, गिरनारजी, जेशलमेर प्रमुख ठिकाणोंके विषै बिंब तथा नवीन चैत्योंकी प्रतिष्टा करते भए, ठिकाणें ठिकाणें पुस्तकोंके भंडार स्थापन किये, अंतमें स। १५१४ मिगशर वदि नवमीके दिन कुंभल मेरु नगरमें देवलोककों प्राप्त भए, इनोंके वारे

संवत् १४७४ श्री जिनवर्द्धन सूरिसैं, पिप्पलक खरतर शाखा निकली यह पांचमा गच्छ भेद भया ॥ ५६ ॥ ✽ ॥ ॥ ✽ ॥

॥ ✽ ॥ ५७ ॥ श्री जिनभद्र सूरिके पाट ऊपर, श्री जिनचंद्र सूरि भए ॥ तिके जेशलमेर वासी, चम्म गोत्रीय, साह वच्छराज पिता, वाल्हा देवी माता स । १४८७ जन्म स । १४९२ दिक्षा स । १५१४ वैशाख वदि २ द्वितियाके दिन कुम्भल मेरु रहवासी कूकम चोपडा गोत्रीय साहस मरसिंहनें नंदी महोच्छव किया, श्री कीर्त्ति रत्नाचार्यं पद स्थापना करी, फेर विचरते थके अर्बुदाचल ऊपर, नवफणा पार्श्वनाथ बिंबप्रतिष्ठा कारक, श्री धर्मरत्नसूरि,गुणरत्नसूरि प्रमुख अनेक मण्डलाचार्य पद स्थापक श्रीजिनचंद्र सूरि वि. । स । १५३० जेशलमेर नगरमें देवलोकको प्राप्त भए ॥५७॥✽॥

॥ ✽ ॥ इनोंके वारे वि । स । १५०८ अहमदावादमें लोंके लेख कनें प्रतिमा उत्थापन करी । स । १५२४ लुपक मत प्रचलित भया, इनमें भेप धारक स । १५३३ में भूणा नाम रिषि भया, इनकी किंचित् उत्पत्ति लिखता हुं, अहमदावादमें दशाश्रीमाली लोंका नामें एक लेखकथा, सो जतियोंकी पुस्तकों लिखता था, एक दिन तपगच्छका ग्यानजी जतीकी पुस्तक लिखी, जिसमें बहुत खोट रह गई, जब ग्यानजी कुछ कठोर वचन बोले, तब लोंका लडनें लगा, तब धक्का देके लोंकाकों निकाल दिया, पीछे भीबडी जायके राजकारभारी लखमसी नाम वाणियेके सामनें कूका, तब लखमसीनें हकीकत पूछी, लोंकेनें कहा, सच्चा धर्म कहता तपा जत्या मनें मारयो, तब लखमसी वोला इहा तुं थारो मत चलाव, मैं तेरा पक्ष हुं, जब बहुत लोकोंने रुपए दलद्री होता जानके मंदर प्रतिमाका उत्थापन किया मन आए सो ग्रंथ माने, बत्तीस सुत्रकों सच्चा करके मान्या, परंतु मेरी माथी सो वाक थी, इसी न्यायसें, ३२ सुत्रकों सच्चा मान्या, परतु उनमें पचांगी प्रमाणका, तथा प्रतिमा पूजनका अधिकारकों कूठा मान्या, इससें मनोमती हुवा, २५ वरष गृहस्थपणे लुपक मतकी प्ररूपणा करी, पीछे लोंकेके उपदेशसें एक भाणा नाम वाणियेके वेटेनें भेप धारण किया उस का भूणारिषि नाम हुवा पीछे परवारवधता इसमें तीन गादी हुई नागोरी, गुजराती, उत्तरादि, इत्यादि इति लुपकोत्पत्तिः ॥ ॥ ✽ ॥ ॥ ✽ ॥

॥ ※ ॥५८॥ श्री जिनचद्र सूरीके पाट ऊपर, श्री जिनसमुद्र सूरि भए तिके वाहमेरवासी, पारख गोत्रीय, देको साह पिता, देवल देवी माता स। १५०६ जन्म, स। १५२१ दिक्षा। स। १५३० मावसुदि तेरस के दिन जेशलमेरके वासी सघपति सोनपालनें नदी महोत्त्व किया, श्री जिनचंद्र सूरियें स्व हस्तसें पद स्थापना करी, फेर विहार करते पचनदी सोम यक्षादि साधक, परम चारित्रवंत श्री जिनसमुद्र सूरिः वि। स। १५५५ अहमदावाद नगरमे देवलोक गये ॥ ५८ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥※॥५९॥ श्रीजिनसमुद्रसूरिके पाटऊपर, श्रीजिनहससूरिः भए॥ तिके सेत्रावा नगरवासी, चोपमा गोत्रीय, साह मेघराज पिता, कमला देवी माता, स। १५२४ जन्म, स। १५५६ वैशाख सुदि ३ के दिन रोहणी नक्षत्रे श्रीबीकानेर नगरमे करमसी मत्रियें लक्ष द्रव्य खरच करके आचार्य पदका उत्त्व किया, तथा भामासरजीके मदरकेपास, मोटा श्रीनमिनाथजीका बिंव चैत्यकी प्रतिष्टा कराई, पीछे एकदा आगरा नगरमें रहनेंवाले स। डुगरसीजी मेघराजजी पोमदत्त प्रमुख सघने बहुत आग्रह करके बीनती भेजके महाराजकों बुलाया तब गुरूमहाराजभी उहां गए, तब बादशाहें भेजे हाथी घोडा पालखी वाजित्र चामरादि आडम्बर करकै सहित, गुरूमहाराज का प्रवेश महोछव करा तथा सघनें गुरुभक्ति सघभक्त्यादिकमें, दोय लक्ष रुपिया खरच करा पीछे फेर कोइ चुगलखोरके चुगली करनेंसें बादशाहनें फेर गुरुमहाराजको बुलवाए, धवलपुरमें रखे, तब देवकासानिध सेंती गुरुमहाराज बादशाहके चित्तकों प्रसन्न करकै, पाचसौ बंदीवानाकों छोडायकें अमारकुमी पिटवायके उपासर आए, तब समस्तसव बहुत हर्षित भए फेर गुरुमहाराज अति सौभाग्य धारक, तीन नगरकै विषै तीन प्रतिष्टा कारक अनेक सघपति प्रमुखपद स्थापक पाटण नगरमें तीन दिनका अणशण करके सा।१५८२ मे स्वर्ग गए॥ तिस वखतमें सा १५६४ मरुदेशके विषै आचार्य शातिसागरसेती,आचार्य खरतर शाखा निकली यह छठा गच्छ भेद भया तथा इनोंके वखतमें सा। १५६२ कडुआमत हुवा, सा।१५७० में लुकामतसें निकलके बीजानामा भेषधरनेंबीजामत निकाला, सा। १५७२ नागपुरी तपामेंसें निकलके पार्श्वचंद्रजीनें अपनें नामसें पार्श्वचद्र मत निकाला ॥ ५९ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ तत्पट्टे ६० मा श्रीजिन माणिक्य सूरि भए ॥ तिके कूकम चोपमा गोत्रीय साहजीवराज पिता, पद्मादेवी माता; स । १५४९ जन्म सं । १५६० दीक्षा स । १५८२ भाद्रवा वदि ९ नवमीके दिन साहदेव राजनें नदी महोत्सव किया, श्री जिनहंस सूरियें अपणें हाथ करकै पद स्थापना करी फेर गुर्जर देश सिंधु देशादिकमें विहार कारक पच नदीसाधक श्रीजिनमाणिक्यसूरि कितनेक वरषतक जेशलमेरगढमें रहे, तहामुनि सर्व सिथलाचारी हो गए, प्रतिमा उत्थापक मत वहोत फैला, तव वीकानेरके वासी वच्छावत मंत्री सग्राम सिंहनें गच्छ स्थिति रखणेंवास्ते, श्रीगुरुमहाराजकों वुलवाए तवभावसेती क्रिया उद्धार करकै, श्रीगुरुमहाराजनें विचारा, कि पहले देराउर नगरमें श्री जिनकुशलसूरिजी महाराजकी यात्रा करके पीछे सर्व परिग्रह त्यागके विहार करुगा, इसवास्ते गुरुमहाराज यात्राकेवास्तै देराउर गए, तहा गुरुदर्शन करके जेशलमेर पीछा आतेवखतमें गुरुमहाराजकों मा र्गमें जलअभावसें त्रिषा परीशह वहोत उत्पन्न भया, जलरातको मिला, तब गुरुमहाराज दिलमें विचार करा मेंनें इतनें वरषतक रात्रिकों चोविहार पच्च क्खाण करा जिसकों एक दिनकैवास्ते कैसें खण्डन करु, ऐसा विचारकै तहां हीज स । १६१२ आषाढ सुदि पंचमीके दिन अणशण करकै काल प्राप्त होकै स्वर्ग गए ॥ ※ ॥ ६० ॥ ॥ ※ ॥ ॥※॥

॥※॥ तत्पट्टे६१ मा श्री जिनचद्रसूरि हुए तिके वडली गामवासी रीहड गोत्रीय, साह श्रीवतपिता सिरियादेवी माता, स।१५९५जन्म स।१६०४दीक्षा स । १६१२ भादवा सुदि ९ नवमीके दिन जेशलमेर नगरमें राउल माल देव कारित नदी महोत्सव करकै सूरिपदमें प्रात भए, तिसहीज रात्रकै विषै श्रीजिन माणिक्यसूरि प्रगट होकै सेवाकी पोथीमें रहा आम्नाय सहित सूरि मत्र पत्र श्रीजिनचद्रसूरिकों दिया, फेर श्री जिनचद्रसूरि, सवेगरगमें वासित चित्त भयाथका गच्छकैविषै शिथिलपणा देखके, सर्व परिग्रहका त्याग करकें, वच्छावत मंत्रि सग्राम सिंहका पुत्र कर्मचदके आग्रह करके, वीकानेरन गरमें गए, तहा प्राचीन उपाश्रयकों शिथलाचारी यति लोकोंके रोका भया देख कै मत्रवीनें अपणी अश्वशाला महाराजकों दीवी, उसनी वहोत गुरुकी भक्ति करी, गुरुमहाराज क्रिया उद्धार करके सुविहित साधु मार्ग अंगी

कार करा, अपणें समान साधुवाकेसाथ विहार करकै, ठिकाणें २ प्रतिमा उथापक मत खमन करते थके, अपणी समाचारी दृढ करते थके अनुक्रमें गुर्जर देशमें गए, तहा अहमदावाद नगरमें, काकनी व्यापार करकै आजीवका करता थका, मिथ्यात्वी कुलोत्पन्न, पोरवाल ज्ञातीय सिवा सोमजी नामें दोनू भाईकों प्रतिवोध देके सर्व कुटंव सहित धनवंत श्रावक करा, जिणोंनें सेत्रुजयकी यात्रा करके सर्व देशोंके जैन लोककों एकेक मोहर, एकेक थालकी लहाणी दीनी, तथा पाटण नगरमें एकदा तप गच्छी विजय दान सूरीका शिष्य, धर्मसागर गणिः लोकोंकै अगामी श्री अभय देवसूरि खरतर गच्छमें नहि भए इत्यादि कितनेक वचन उत्सुत्र कहा, तव गुरूमहाराज पाटण चौमास करके शास्त्रसंवाद करकै चोरासी गच्छीयमुनि लोकोंके सामनें धर्मसागरकों जीता, तव सर्व कहनें लगे, नवांगीटीका रचन करनेंवाले श्रीअभयदेवसूरि खरतर गच्छमें भए, ऐसा सर्वनें अंगीकार करा, फेर तिनके वनाया भया कुमति कुद्दालनामें ग्रथकू असुध करा, तथा फेर फलोधी पार्श्वनाथके मंदिरमें तपगच्छवालानें ताला लगाया भया हाथफरस करके उघाडा, सर्व लोक आश्चर्यमान भए, पीछे फेर एकदा मंत्रि कर्मचंद्र प्रमुखसें गुरुमहाराजको अति महत्व सुनके वादशाहनें दर्शनकें वास्तै वुलवाया, गुरुमहाराज लाहोर नगर जाकै, अकव्वरकों प्रतिवोध दिया तव अकव्वर वादशाह गुरुका सुद्ध आचार व्यवहार देखकै अमृतके समान अत्यंत मिष्ट वाणी सुन करकै, गुरूकै वचनसें पर्युषणादिक सव पर्व तिथियोंमें कोइ सहरमें जीव हिंसा न करसकै ऐसी उदघोषणा अपणें राज्यमें दिराई, फेर एक वर्ष तक खंभ नगरकै पास समुद्र नदीमें मछादिक नहि मारसकै ऐसा हुकम करिवाया इसीतरे जीव दयाधर्मको वहोत विस्तार कियो, गुरूका महा अतिशय देखकै, वादशाहनें युग प्रधान, राज गच्छ विरुद दिया, पहले परवन्नोंकी नकल देखकै उसी मुजव ए नवमो हरा परवन्ना लिखकै दिया, जिसमें सारास इतनाहे, कि महारे राज्यमें जहा श्रीजिनचंद्रसूरजी महाराज पधारे उहा राजादिक सर्व लोक भक्ति साच वेंगे, ओर सिद्धाचलजी, गिरनारजी, शिखरजी प्रमुख सर्व तीर्थोंमें, तथा उनका ठिकाणें २ धर्म स्थानकोंमें कोइ जीव [illegible] करें, गुरुकी

आज्ञा मुजब कार्य करै, इत्यादि परवना खरतर गच्छके भंमारोंमें है, तथा अकब्बर बादशाहके आग्रहसें तिस अवसरमें गुरुमहाराजनें जिन सिंहसूरिकों अपणें हाथसेती आचार्यपदमें स्थापन करा,तव अति प्रसन्न भया थका बच्छावत मन्त्रीकर्मचन्द्रनें महोत्सव करा, तहा नवग्राम ए, नवहस्ति ए, पाचसै ५०० घोमा जैन याचकादिककों दानमें दिया, इस्तरेंसें सवाक्रोम द्रव्य खरच करा, फेर मन्त्रवीनें अनेक प्रकारसे खरतर गच्छकी महिमा करी, तथा फेर स। १६५२ श्री गुरूमहाराजनें पचनदी साधन करी, तहा पाचपीर मानभद्र खोमीया क्षेत्रपालदेवादिककों साधन किये, इस माफक वहोत जिनशासन की उन्नती करणेंवाले भए, फेर गुरूमहाराजके समयराज १, महिमाराज२, धर्म निधान ३, रत्न निधान ४, ज्ञान विमल ५, इत्यादि ए५ पचाण वैशिष्य भए, ऐसे श्री जिनचद्र सूरजी महाराज, सर्व आयु ७५ पचत्तर वरसको पाल करके स। १६७० आसोजवदि २ दूजके दिन वेना तटमे स्वर्ग प्राप्त भए। तिस वखतमें स। १६२१ भावहर्ष उपाध्यायसे ती भाव हर्षीय खरतर शाखा निकली, यह सातमा गच्छ भेद भया॥६१॥

॥※॥ श्रीजिनचद्र सूरि पट्टे ६२ मा श्रीजिनसिंह सूरि भए, तिके गणधर चोपमा गोत्रीय, साह चापसी पिता, चतुरगीदेवी माता, स। १६१५ मिगशिर सुदि १५ पूर्णमाशीके दिन खेतासर गाममें जन्म, मानसिंह मूलनाम स। १६२३ मिगशर वदि ५ पचमीके दिन वीकानेरमें दिक्षा, सं। १६४० माघ सुदि ५ पचमीके दिन जेशलमेरमें वाचकपद सं। १६४ए फागुण सुदि२ दूजके दिन,लाहोर नगरमें, वीकानेर रहनेंवाले बच्छावतमत्रि कर्म चदनें सवाक्रोम द्रव्य खरचके आचार्यपदका उच्छव किया स।१६७० वेना तटमें सूरिपद, स।१६७४ पोष वदि१३ तेरसके दिन मेमता नगरमें स्वर्ग गए६२

॥※॥ तत्पट्टे ६३ मा श्री जिनराज सूरि भए, तिके वोथरा गोत्रीय साह धर्मसीपिता, धारलदेवी माता, स। १६४७ वैशाख सुदि ७ सातमके दिन जन्म, स। १६५६ मिगशिर सुदि ३ तीजके दिन वीकानेरमें दिक्षा राजसमुद्र दिक्षानाम, स। १६६० आसाउलिपुरमें श्री जिनचंद्र सूरियें वाचक पद दीया, स। १६७४ फागुण सुदि ७ सातमके दिन मेमता नगरमें चोपमा गोत्रीय साह करणनें महोच्छव किया, सूरि पदकों प्राप्त भए

श्री जिनराज सूरिनाम हुवा ॥ फेर श्री जिनराज सूरि, लोद्रव पत्तनकै विषे श्री जेशलमेर निवासी, भणशाली थेरू साहनें उद्धार करा श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ चैत्यकी प्रतिष्ठा करी, तथा स।१६७५ वैशाख सुदि १३ त्रयोदशी शुक्रवारके दिन श्री राजनगर निवासी पोरवाम ज्ञातीय सघपति सोमजीका पुत्र रूपजीनें बनवाया श्रीशत्रुंजय ऊपर चतुर्मुख देवालयमें श्रीरिखभादि चौमुखजिनकों आदलेके ५०१ पाचसें एक प्रतिमाकी प्रतिष्ठा करी, तथा फेर भाणुवम्म ग्रामकै विषे साह चापसीके बनवाया देवघर मम्मन श्रीअमृत आदि पार्श्वनाथ प्रमुख ८० अशी बिंबकी प्रतिष्ठा करी, तथा मेमता नगरमें गणधर चोपमा गोत्रीय सघपति श्री आशकरण साहके करवाया श्रीशांति नाथ स्वामीके चैत्यकी प्रतिष्ठा करी, इस तरेसें राजनगरादि अनेक नगरोंकै विषे श्रीजिन चैत्योंकी प्रतिष्ठा करी, इस माफक श्री जिनमत उन्नती कारक, अंबिका प्रदत्त वरधारक, घघाणी नगरमें चिरकालकी जमीनमें रही प्रतिमाकों प्रसस्तीका अक्षर देखकै प्रगट कारक, इत्यादिक महा प्रतापी, समस्त तर्क, व्याकरण, छंद, अलंकार, कोश, काव्यादि, विबधशास्त्र पारीण, नैषधी काव्य की, जैनराजी टीका प्रमुख, अनेक ग्रंथ रचन करणे वाले, श्रीवृहत् खरतर गच्छ नायक श्री जिनराज सूरि स। १६९९ आषाढ सुदि ९ नवमीके दिन पत्तनमें स्वर्ग गए, ॥ इनोंकेवारे स। १६८६ जिनसागर सूरिसें लघु आचार्य खरतर शाखा निकली, यह ८ मा गच्छ भेद भया॥

॥※॥ तत्पट्टे ६४ मा श्रीजिनरत्नसूरि भये ॥ तिके सेरूणागाम निवासी लुणिया गोत्रीय साह तिलोकसी पीता, तारादेवी माता, रूपचंद्र मूलनाम निर्मल वैराग्य करके मातासहित दिक्षा ग्रहण करी, फेर स। १६९९ आषाढ सुदि ७ सातमके दिन श्रीजिनराजसूरजी महाराजनें स्वहस्तसें सूरि मंत्र दिया, फेर शुद्धचारित्रपात्र श्रीजिनरत्नसूरि स। १७११ श्रावण वदि ७ सातमके दिन आगरा नगरमें स्वर्ग गये ॥ ६४ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ स। १७०० में उपाध्याय श्रीरंग विजय गणिसे, रंगविजय खरतर शाखा निकली, यह ९ मा गच्छ भेद भया। फेर तिस वखतमें तिन मायसें श्री सार उपाध्याय सेती, श्री सारीय खरतर शाखा निकली, यह १० मा गच्छ भेद भया ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥ ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ तत्पट्टे ६५मा श्रीजिनचंद्रसूरि भए ॥ तिके गणधर चोपड़ा गोत्रीय साहसहस करण पिता, सुपियारदेवी माता, हेमराज मूलनाम, हर्षलाभ दीक्षा नाम सं। १७११ भाद्रवा सुदि १० दशमीके दिन, श्री राजनगरमें, नाहटा गोत्री,साहजयमल्ल तेजसी,मातृकस्तूरवाईनें आचार्य पदका महोत्छव कीया, पीछे गुरूमहाराज योधपुरवासी साह मनोहरदासनें निकाला संघकेसाथ श्रीसत्रुंजयकी यात्रा करी, तथा मनोवर नगरमें संघपति साह मनोहरदासनें वनवाया चैत्य शृंगार श्रीरिखभादि २४ चौवीस तीर्थंकर विंबोंकी प्रतिष्टा करी, इसमाफक नानादेशमें विहार करनेंवाले सर्व सिद्धांत पारगामी श्रीजिनचंद्रसूरि सं । १७६३ श्री सूरतवंदरमें स्वर्ग गए ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ इनोंकेवारे ढुंढकमत प्रचलित भया, इनकी किंचित् उत्पत्ती लिखता हुं॥सूरत नगरमें एक वोहरावीरजी नामें दशा श्रीमाली भया जिसके फूला नामें वालविधवा वेटी थी,उसनें लवजी नामें एक पुत्रकों गोदलिया सो लुंपकाके उपासरे पढनेंकों जाताथा लुंपकाकी संगतसे वैराग्य पायके वजरंगजी लोंकिपासे दिक्षालीवी,दो वर्षपीछे गुरुकों कहनें लगा कि शास्त्रमुजव आचार नहि क्युपालते हो, गुरू कहा इस कालमें उत्कृष्ट दया नहि होती हे तव लवजी वोला तुम भ्रष्टाचारी हो में तुमारा मत छोडके जुदी दिक्षा लेसु, ऐसा कहके दो जती भूणाजी,सुखजीकों, लेकर तीन जिणा आपही भेष धारण किया, मुंहआगे मुंहपत्ती वाधी, इनका नवीन मत देखके कोई घरमें उतरण नदिया, तव वहुत दिन उजडे हुए, टूटे फूटे ढुंढमकानमें रहे इससेंती ढुंढिया नाम हुवा, तीनोंने मत चलानें वावत वहुत कष्ट किया तव वुगलेके माफक ऊपरकी ढुंग फुफा देखके घणा लुंपक पक्षी गुजराती वणिया माननें लगे, क्यु कि अग्यानी लोक ऊपरकी फुफा देखते हें जिसमें गुजराती प्रायें हठग्राही ऐसे होते हे, कि जिसका पक्ष करते हें जो वात पकड लेते हें, सो मुसकिलसें छोडते हें, इसीवास्ते कईफिरके एकांतिक मतवाले प्रायें गुजरात देशसेंही निकले हें, ऐसा जैनतत्वादर्शमें, पीतावरीमुनी आत्मारामजी लिखते हें, ये ढुंढकमत उत्पत्ती कही, इसी ढुंढको मेंसें तेरे पंथी भीषमजी प्रमुख निकल्या, सो इनकों उत्थापके आ

दूगम बाबू इंद्रचदजीकों सिद्धगिरीजाके निनाणों यात्रा करनेंका उपदेश दिया, तब इद्रचदजी पिण तत्काल सघ निकालके छहरीपालते थके गुरू महाराजके साथ हुए, उहासें विहार करते चंपा नगरी गए, उहा वीकानेरके सघनें बनवाया भया, श्री जिनमदरकी वमे उच्छवकेसाथ प्रतिष्टा करी, फेर उहासें विहार करके, शिखरजी, बनारस प्रमुख, सर्व तीर्थोकी यात्रा करते हुए, जयपुर, कृष्णगढ, अजमेर, पाली, पचतीर्थी, आबूजी, सखेश्वरापार्श्वनाथ, तारगा, गिरनारजी प्रमुखकी यात्रा करते स। १९०२ आषाढ मासमें श्री सिद्धगिरी गए उहा चौमास रहके निनाणों यात्रा करी, फेर गोगा, भावनगर, अमदावाद, घूलेवादिककी यात्रा करके, बीकानेरका राजा श्री रत्नसिहजी महाराज प्रमुख, सर्व सघके आग्रहसें स। १९०२ मि। फागुण वद ७ दिन बीकानेर आये, स। १९०४ मि। माघसुद १० के दिन श्री सघके बनाया भया श्री सुपार्श्वनाथ स्वामीके मदरकी प्रतिष्टा करी, स। १९०५ वैशाख सुद ५ के दिन श्री चितामणजीके मदरमे श्रीजिन विंबोंकी प्रतिष्टा करी, स। १९०६ मिगशर सुद १३ के दिन मनोवर पुरमें खरतर गछ अधिष्टायक गोरानाम क्षेत्रपालकों प्रशन्न किया, फेर स। १९१४ आषाढसुद १ दिन श्री बीकानेर नगरमे बिंब प्रतिष्टा करी, स। १९१६ मि। वैशाख वद ६ के दिन नालगाम दादावाडीमें सघका बनवाया नवीन मदरकी तथा जिनबिंबोंकी प्रतिष्टा करी, इत्यादि बहुत उपगारी धर्म उद्योतक, आचार्य गुणधारक, श्रीजिनसौभाग्य सूरि सं। १९१७ माघसुद ३ रात्रकों चार प्रहरतक अणशण करके श्री बीकानेरमें देवलोककों प्राप्त भए ॥ ७१ ॥

॥ ※ ॥ श्रीजिन सौभाग्य सूरिकेपाटऊपर श्री जिनहंससूरि भए, तिके कुजटी गामवासीय गोलछा गोत्र, साहमनसुख पिता, जयादेवी माता, स। १९०० जन्म हिमतराम जन्मनाम, स। १९१७ फागुण वदि ५ पचमीके दिन वीकानेर नगरमें दिक्षा लीनी, चोपमा कोठारी, गेंवरचदजीनें दिक्षा महोछव करा, हितवल्लभ दिक्षा नाम भया, स। १९१७ फागुणवदि ११ एकादशीके दिन आचार्य पदकों प्राप्त भये, तब बच्छावत अमरचदजी तथा झालरापाटण निवासी, गजेंम चूरा मलजी, तथा गोलछा ग्यानचदादि

कर्ने वहुत द्रव्य खरच करके नंदीमहोछव किया, तथा वीकानेरका महाराज श्रीसिरदार सिहजीनें दोयचार वेर गुरूमहाराजका दरशण किया, गजनेरा दिकमें गुरूमहाराजकी तथा सर्वसाधुमन्डलीकी वहुत भक्ति करी, फेर वीकानेरका सत्तावीसंसे गामनगरोंमे, तथा देशणोक, आगरा मिरजापुर, आदि देशोंमें विहार करते मुर्शिदावाद गए, उहा स । १९२४ मि । फागुण वद ४ चौथके दिन दूगम्ड प्रतापचदजीका पुत्र रायवहादर लक्ष्मीपति सिंह, धनपति सिहके, करायाभया १ श्री ऋषभदेव, २ श्री वासुपुज्य, ३ श्रीनेमिनाथ, ४ श्रीमहावीर, ये चारमहाराजका पाडुका, श्रीसम्मेतसिखरजी पर्वत ऊपर जूदा जूदा चार ठिकाणें प्रतिष्टा करके स्थापन किये, सं । १९२६ मि । फागुण सुद सातमके दिन, अजीमगंजका समस्त श्रीसंघके बनाया हुवा रामवागमें, श्रीअष्टापदजी मंदर, तथा जिन विंबोंकी प्रतिष्टा करी, श्रीसघनें वहुत द्रव्य खरचके अठाई महोछव किया, फेर क्रमसें दिल्ली, रिणी, राजगढ, चुरू, इत्यादि क्षेत्रोंमेंविहार करते स । १९२९ मि । जेष्ट वद ९ नवमीके दिन वीकानेर नगरमे गए, स । १९३१ मिति जेष्ट सुद १० दशमीके दिनमाण कचौकमें उपाध्याय श्रीलक्ष्मी प्रधानजी गणिके उप देशसें तथा अंग मदतसें बनवाया हुवा, नवीन श्रीकुंथुनाथ स्वामीका मंदर की प्रतिष्टा करी, स । १९३७ श्रीचितामणजीके मंदरमे संघका किया उछवेकसाथ श्रीजिनविंवोंकी प्रतिष्टा करी, इत्यादि शुभकार्य करनेंवाले सोम्य गुणधारक श्रीजिनहंससूरिः स। १९३५ मिति कार्त्तिक वद १२ वारसकेदिन चार पहरका अणशण करके वीकानेर नगरमें देवलोकको प्राप्त भए ॥७२॥

॥ ७३ ॥ श्री जिनहंससूरिके पाट ऊपर श्री जिनचद्रसूरि भए, सो गोलछा गोत्रीय स । १९३५ मि । माघसुद ११ के दिन आचार्य पद धारक, सोम्यगुणधारी वत्तमनकालमे विद्यमान विचरते हैं ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ ग्रंथ प्रशिद्धकर्त्ता गुर्वावली ॥ ※ ॥

॥※॥ श्रीमहावीर स्वामीसें पूर्वोक्त कोटिक खरतरगछ आचार्योंके पंरपरामें पाटे, श्री जिनचद्रसूरि हुए, जिनोंके शिष्य पुज्य उपाध्याय पद धारक श्री उदय तिलकजी भए, सो वीकानेरका मुकीम अवीरचंदजी मरके देवता हुवाथा उसकों प्रतिवोधके अपनें वश्यमें किया, और इसी देवताके मद

तसैं दिल्लीमें बैठे, बीकानेरके राजाकों अनेक तरहके चमत्कार देखाके अपना आग्याकारी किया, तब राजानेंभी बहुतसा मान बधाया, अरु अपना गुरूपणें स्थापन किया, इत्यादि अनेक गुणधारक सर्व अंग उपांग कों जाणनेवाले परम उपगारी धर्म उद्योतक हुए ॥ १ ॥ ※ ॥

॥ २ ॥ तिनोंके शिष्य पुज्य श्री अमरशीजी गणिः हुए ॥

॥ ३ ॥ तिनोंके शिष्य पुज्यश्री लक्ष्मी चद्रजी गणिः हुए ॥

॥ ४ ॥ तिनोंके शिष्य पुज्य श्री विजमालजी गणि॰ हुए ॥

॥ ५ ॥ तिनोंके शिष्य पुज्य श्री हाथी रामजी गणि॰ हुए ॥

॥ ६ ॥ तिनोंके शिष्य पुज्य श्री विद्या विशालजी गणिः हुए ॥

॥ ७ ॥ तिनोंके शिष्य विद्यमान, पुज्य उपाध्याय श्री लक्ष्मी प्रधानजी गणिःके आग्यानुसार, बीकानेर, कलकत्ता, मुबईमें, जैनपाठशाला स्थापक तथा ग्यानवृद्धग्रंथ, रत्नसागर प्रथम भाग, तथा दूसरा भागादि धर्म सग्रहके हजारों पुस्तक प्रशिद्धकारक, जैनका सेवक, मैं एक अल्पबुद्धिया, मुनि मोहनलाल मुक्तिकमल नामकहु ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ जो ये पुस्तककों विनय बहुमानयुक्त वाचेंगे, पढेंगे, सुनेंगे, जिनोंके परवारम सदैव क्षेम, कुशल, जय, कल्याण, होते रहेंगे ॥

॥ ※ ॥ जबलग मेरु अडिग्गहै, जबलग ससिहर सूर ॥ तब लग या पोथी सदा, रहजो गुणभरपूर ॥ १ ॥ शुभंभवतु, श्रीरस्तु, कल्याणमस्तु ॥ इतिश्री खरतरगच्छीय पुज्य उपाध्याय श्री लक्ष्मीप्रधान गणि., तच्छिष्य पण्डित मोहनलाल मुक्तिकमल मुनि॰ विरचिते आचाररत्नाकर द्वितीय प्रकाशे कोटिकगच्छ गुर्वावली संपूर्णम् ॥ ※ ॥

॥ इति जैनइतिहास समाप्तः ॥